



Digitized by the Internet Archive
in 2013



CATALOGUE DES MANUSCRITS

DE LA

BIBLIOTHÈQUE ROYALE DE BELGIQUE



MINISTÈRE DE L'INTÉRIEUR ET DE L'INSTRUCTION PUBLIQUE

CATALOGUE
DES
MANUSCRITS

DE LA
BIBLIOTHÈQUE ROYALE DE BELGIQUE

PAR
J. VAN DEN GHEYN, S. J.
Conservateur à la Section des Manuscrits

TOME DEUXIÈME
Patrologie



BRUXELLES
HENRI LAMERTIN, LIBRAIRE-ÉDITEUR
20, RUE DU MARCHÉ AU BOIS, 20

POLLEUNIS ET CEUTERICK, IMPRIMEURS, 37, RUE DES URSULINES

1902

THE GETTY CENTER
LIBRARY

CONCORDANCE

DES

COTES DE L'INVENTAIRE AVEC LES NUMÉROS DU PRÉSENT CATALOGUE

| COTES DE L'INVENTAIRE | NUMÉROS DU PRÉSENT CATALOGUE | COTES DE L'INVENTAIRE | NUMÉROS DU PRÉSENT CATALOGUE | COTES DE L'INVENTAIRE | NUMÉROS DU PRÉSENT CATALOGUE |
|-----------------------------|------------------------------------|-----------------------------|------------------------------------|-----------------------------|------------------------------------|
| 48 | 1058 | 490-94 | 1052 | 1373-81 | 1465 |
| 49-62 | 1117 | 506-07 | 1200 | 1399-404 | 1531 |
| 65 | 1076 | 518-20 | 1530 | 1413-16 | 958 |
| 66-76 | 1033 | 563-75 | 962 | 1458-59 | 1466 |
| 87-96 | 994 | 593-94 | 1181 | 1520-42 | 1467 |
| 112-14 | 995 | 595 | 1463 | 1555-56 | 1239 |
| 119-24 | 1122 | 596-600 | 1436 | 1610-28 | 1486 |
| 136 | 1083 | 601-02 | 1315 | 1650 | 1520 |
| 140 | 1074 | 608-09 | 1199 | 1651-52 | 1316 |
| 144 | 1264 | 615-24 | 1018 | 1653 | 1269 |
| 147 | 1079 | 625-36 | 1125 | 1705-10 | 1097 |
| 148 | 1150 | 638-42 | 1288 | 1711-12 | 1506 |
| 149-50 | 1095 | 647-50 | 1496 | 1713 | 990 |
| 163-66 | 1001 | 655-56 | 1233 | 1730-33 | 956 |
| 200 | 1014 | 657-66 | 1126 | 1764-65 | 1426 |
| 227 | 1073 | 668 | 1343 | 1770-77 | 1501 |
| 229-30 | 1259 | 679-81 | 1422 | 1779 | 1282 |
| 235-37 | 1006 | 684 | 1149 | 1782-84 | 951 |
| 238 | 1015 | 689-705 | 1034 | 1787 | 1454 |
| 239 | 1258 | 706-07 | 922 | 1805-08 | 1303 |
| 242-65 | 965 | 708-19 | 1391 | 1809 | 1225 |
| 269 | 996 | 756-57 | 903 | 1819 | 1529 |
| 272-74 | 1047 | 807-10 | 1462 | 1831-33 | 932 |
| 276-77 | 1267 | 828 | 1285 | 1834-37 | 961 |
| 279 | 1265 | 846-57 | 1151 | 1838-39 | 1178 |
| 284 | 1266 | 870-72 | 1301 | 1840-48 | 1437 |
| 285-87 | 1211 | 886-87 | 1212 | 1850-56 | 1030 |
| 291 | 1148 | 893-98 | 1368 | 1878-88 | 1188 |
| 292 | 1238 | 899-901 | 1497 | 1893-99 | 952 |
| 308 | 1096 | 903-04 | 1057 | 1900-05 | 1063 |
| 309 | 1080 | 959-60 | 1086 | 1916-17 | 1414 |
| 310 | 1512 | 1048 | 989 | 1918-25 | 966 |
| 312-20 | 1124 | 1052-53 | 918 | 1927-44 | 1187 |
| 324-28 | 1123 | 1054-66 | 1127 | 1949 | 1045 |
| 364 | 1479 | 1067-74 | 1128 | 1950-53 | 1528 |
| 365-79 | 920 | 1075-78 | 919 | 2004-10 | 1382 |
| 383 | 1022 | 1130-31 | 1268 | 2011-15 | 1427 |
| 387 | 1202 | 1176 | 1464 | 2016-24 | 1425 |
| 390 | 1255 | 1211 | 1177 | 2037-48 | 1035 |
| 418 | 1458 | 1216-34 | 1129 | 2049-50 | 1213 |
| 444-52 | 1103 | 1235-53 | 1130 | 2057-62 | 1093 |
| 453-54 | 1201 | 1258-59 | 1204 | 2102-03 | 1193 |
| 458-63 | 1483 | 1274 | 1077 | 2137-38 | 1304 |
| 464-66 | 969 | 1314-20 | 1205 | 2194-95 | 1355 |
| 472-79 | 988 | 1326-27 | 1084 | 2196-215 | 1468 |
| 480-85 | 1461 | 1351-72 | 1131 | 2247-52 | 1132 |

| COTES DE L'INVENTAIRE | NUMÉROS DU PRÉSENT CATALOGUE | COTES DE L'INVENTAIRE | NUMÉROS DU PRÉSENT CATALOGUE | COTES DE L'INVENTAIRE | NUMÉROS DU PRÉSENT CATALOGUE |
|-----------------------------|------------------------------------|-----------------------------|------------------------------------|-----------------------------|------------------------------------|
| 2274-75 | 1299 | 4164-66 | 1519 | 5504-12 | 1024 |
| 2283-84 | 1167 | 4232-34 | 917 | 5518 | 1144 |
| 2285-301 | 1505 | 4236-39 | 1477 | 5540 | 906 |
| 2342-51 | 1098 | 4288 | 1429 | 5541-42 | 1244 |
| 2352-54 | 1418 | 4327 | 1184 | 5543-45 | 1356 |
| 2382-86 | 1293 | 4337-40 | 991 | 5546 | 1357 |
| 2395-410 | 1428 | 4341-42 | 1283 | 5547-50 | 1358 |
| 2415-18 | 1423 | 4343-44 | 1281 | 5560 | 1069 |
| 2475-81 | 1388 | 4399-402 | 1415 | 5562 | 1245 |
| 2499-510 | 1118 | 4404 | 941 | 5563 | 1068 |
| 2512 | 1262 | 4455-56 | 943 | 5565 | 1053 |
| 2517 | 1237 | 4484-86 (1) | 1345 | 5574 | 1048 |
| 2524-27 | 1455 | 4535 | 913 | 5606-10 | 953 |
| 2529-32 | 1294 | 4592-95 | 1133 | 6106-09 | 904 |
| 2551 | 1494 | 4654 | 1438 | 6112-13 | 1411 |
| 2573-75 | 931 | 4682 | 1078 | 7522 | 1071 |
| 2603-19 | 1504 | 4687 | 1329 | 7571 | 1039 |
| 2635-37 | 1389 | 4699-703 | 1043 | 7683-86 | 1194 |
| 2641-47 | 1371 | 4712 | 1056 | 7811 | 924 |
| 2665-66 | 1488 | 4764-66 | 1286 | 7875 | 1261 |
| 2750-65 | 933 | 4774-79 | 1367 | 7980 | 1070 |
| 2766-70 | 1180 | 4785-93 | 970 | 7981-82 | 1072 |
| 2772-89 | 1381 | 4794-95 | 1377 | 7997-8002 | 1340 |
| 2810-13 | 1169 | 4800-01 | 1439 | 8084-107 | 1399 |
| 2823-24 | 1300 | 4815-18 | 1297 | 8234 | 929 |
| 2839-43 | 1101 | 4820-25 | 1110 | 8258-60 | 1260 |
| 2854-57 | 1386 | 4831-35 | 1060 | 8261-70 | 1320 |
| 2861-62 | 1222 | 4877-86 | 1274 | 8301 | 1182 |
| 2864-71 | 1339 | 4890-94 | 1276 | 8327-42 | 1031 |
| 2897-902 | 963 | 4922-24 | 942 | 8386-96 | 1111 |
| 2994-3002 | 1210 | 4925-27 | 1143 | 8410-13 | 982 |
| 3003 | 1277 | 4929-32 | 1485 | 8414-19 | 945 |
| 3075-83 | 1469 | 5041-46 | 1107 | 8425-27 | 1061 |
| 3093-95 | 1480 | 5122-26 | 1134 | 8435 | 1412 |
| 3264 | 1263 | 5138-41 | 1108 | 8436-38 | 946 |
| 3363 | 926 | 5193 | 1323 | 8536-43 | 1489 |
| 3364 | 928 | 5216 | 1295 | 8640-42 | 1040 |
| 3379-80 | 1241 | 5246-52 | 1109 | 8654-72 | 1324 |
| 3401 | 1527 | 5321-22 | 1517 | 8714-19 | 1326 |
| 3436-40 | 1291 | 5339-44 | 1511 | 8720 | 1342 |
| 3446-84 | 916 | 5354-61 | 1352 | 8732 | 1516 |
| 3493-504 | 1290 | 5408-11 | 1236 | 8733-35 | 1226 |
| 3514 | 1270 | 5424-25 | 1349 | 8775-76 | 1390 |
| 3527 | 992 | 5436-37 | 1369 | 8794-99 | 1403 |
| 3553-57 | 1344 | 5447-58 | 1330 | 8841-42 | 1401 |
| 3598 | 1533 | 5459 | 1158 | 8860-67 | 1351 |
| 3629 | 1271 | 5460-61 | 1229 | 9005 | 1154 |
| 3639 | 1196 | 5463-67 | 1104 | 9006 | 1154 |
| 3672-90 | 1503 | 5468 | 971 | 9013 | 1156 |
| 3716-30 | 1292 | 5469 | 1067 | 9014 | 1156 |
| 3829 | 1456 | 5473 | 1021 | 9015 | 1155 |
| 3895-96 | 1217 | 5474-77 | 1009 | 9016 | 1155 |
| 3936-37 | 1419 | 5478-83 | 1025 | 9046 | 1165 |
| 4077 | 1186 | 5499 | 909 | 9070-77 | 1350 |
| 4087-100 | 1400 | 5500-03 | 1003 | 9121-23 | 1163 |

(1) Ce volume a, par erreur, été coté 1345 (4485), voir p. 287.

TABLE DE CONCORDANCE

VII

| COTES DE L'INVENTAIRE | NUMÉROS DU PRÉSENT CATALOGUE | COTES DE L'INVENTAIRE | NUMÉROS DU PRÉSENT CATALOGUE | COTES DE L'INVENTAIRE | NUMÉROS DU PRÉSENT CATALOGUE |
|-----------------------------|------------------------------------|-----------------------------|------------------------------------|-----------------------------|------------------------------------|
| 9124 | 1163 | 9936 | 1298 | 11422-23 | 1424 |
| 9136 | 910 | 9964-66 | 1179 | 11424-26 | 1416 |
| 9137 | 1513 | 9968-72 | 975 | 11427-30 | 1421 |
| 9170-73 | 1347 | 9983-86 | 979 | 11431-33 | 1431 |
| 9294 | 1153 | 9987-91 | 974 | 11444-45 | 1164 |
| 9295 | 1153 | 10001-02 | 1509 | 11446-47 | 1524 |
| 9297-302 | 1166 | 10020-21 | 1191 | 11568 | 1492 |
| 9311-19 | 1322 | 10038-53 | 978 | 11728 | 1195 |
| 9320-24 | 1319 | 10066-77 | 977 | 11733-39 | 1160 |
| 9327-28 | 1354 | 10098-105 | 1334 | 11740-48 | 1392 |
| 9349-54 | 1105 | 10106-13 | 1420 | 11752-64 | 1135 |
| 9355-57 | 1085 | 10260-63 | 1002 | 11765-68 | 1136 |
| 9358 | 1059 | 10264-73 | 1026 | 11775 | 1161 |
| 9371 | 967 | 10274-80 | 939 | 11776 | 1459 |
| 9372 | 972 | 10468 | 1215 | 11777 | 1460 |
| 9373 | 1227 | 10500-01 | 1394 | 11860-65 | 1137 |
| 9376 | 921 | 10543-44 | 1050 | 11881-83 | 1432 |
| 9377 | 954 | 10559-61 | 1442 | 12013 | 1152 |
| 9379-80 | 1004 | 10586 | 1272 | 12014-41 | 1387 |
| 9381-82 | 1054 | 10587 | 1273 | 12042-49 | 1138 |
| 9383 | 1279 | 10588-90 | 1278 | 12050-52 | 1216 |
| 9384-89 | 1331 | 10591-92 | 1119 | 12053-62 | 993 |
| 9398-99 | 1170 | 10595-98 | 1443 | 14042-52 | 1139 |
| 9485-88 | 927 | 10599-600 | 1112 | 14370-71 | 1532 |
| 9512-14 | 1007 | 10608 | 1408 | 14586-90 | 976 |
| 9515-16 | 998 | 10611-14 | 1374 | 14670 | 1413 |
| 9517-20 | 1100 | 10752 | 1020 | 14782 | 1396 |
| 9521-22 | 1042 | 10779-80 | 955 | 14870 | 947 |
| 9531-32 | 1348 | 10781-82 | 964 | 14920-22 | 1087 |
| 9534-36 | 925 | 10784-86 | 936 | 15003-48 | 1223 |
| 9553 | 1302 | 10787-90 | 1206 | 15070 | 1230 |
| 9578-80 | 1406 | 10791 | 1051 | 15071 | 1305 |
| 9581-95 | 1372 | 10792-95 | 1106 | 15093-109 | 1140 |
| 9607 | 1407 | 10796-800 | 1102 | 15110 | 1168 |
| 9608-19 | 1498 | 10801-06 | 1189 | 18239 | 1395 |
| 9620-22 | 1481 | 10807-11 | 980 | 18391 | 1380 |
| 9641 | 1145 | 10819 | 1248 | 18682-84 | 1094 |
| 9645-49 | 1440 | 10820 | 1249 | 18716-19 | 1037 |
| 9668 | 1518 | 10846-47 | 923 | 19020 | 1405 |
| 9669-81 | 1373 | 10855 | 907 | 19076 | 930 |
| 9706-25 | 1360 | 10862-65 | 1410 | 19077 | 1027 |
| 9726 | 1247 | 11052 | 1393 | 19118 | 1234 |
| 9728-34 | 1441 | 11055-58 | 1430 | 19259-65 | 1036 |
| 9737-38 | 1409 | 11080-81 | 1159 | 19387 | 1444 |
| 9739-40 | 1522 | 11085 | 1478 | 19600 | 1296 |
| 9799-809 | 1327 | 11196-97 | 1235 | 19609 | 1346 |
| 9837-40 | 1361 | 11259 | 1183 | 19623-26 | 1038 |
| 9843-44 | 1325 | 11261 | 1198 | 19693 | 1231 |
| 9845-48 | 1218 | 11285-86 | 1473 | 19820-21 | 1176 |
| 9849 | 1246 | 11328 | 1321 | 20006-17 | 1445 |
| 9850-52 | 1221 | 11351-52 | 973 | 20019 | 1173 |
| 9875-80 | 1379 | 11353 | 1197 | 20020-25 | 1383 |
| 9884-89 | 1378 | 11354 | 937 | 20026-27 | 1312 |
| 9915 | 1332 | 11357 | 938 | 20030-32 | 1508 |
| 9916-17 | 1287 | 11373 | 1192 | 20034 | 1242 |
| 9918-19 | 1333 | 11381 | 983 | 20132 | 905 |
| 9932-34 | 1359 | 11385 | 950 | 20269 | 1075 |
| 9935 | 1521 | 11386 | 1366 | 20415-20 | 997 |

| COTES DE L'INVENTAIRE | NUMÉROS DU PRÉSENT CATALOGUE | COTES DE L'INVENTAIRE | NUMÉROS DU PRÉSENT CATALOGUE | COTES DE L'INVENTAIRE | NUMÉROS DU PRÉSENT CATALOGUE |
|-----------------------------|------------------------------------|-----------------------------|------------------------------------|-----------------------------|------------------------------------|
| 20716-19 | 1099 | II. 955 | 1447 | II. 1115 | 1029 |
| 20760-83 (1) | 1120 | 959 | 1336 | 1116 | 1055 |
| 20790 | 1171 | 960 | 949 | 1117 | 1308 |
| 20942 | 1514 | 963 | 1113 | 1121 | 1082 |
| 20950-51 | 1162 | 967 | 1121 | 1130 | 1091 |
| 21188 | 1032 | 968 | 1114 | 1134 | 940 |
| 21189 | 1028 | 972 | 1049 | 1139 | 1476 |
| 21205-09 | 934 | 974 | 1376 | 1144 | 1507 |
| 21210-14 | 1526 | 976 | 1370 | 1146 | 1209 |
| 21547 | 1011 | 977 | 1482 | 1147 | 1318 |
| 21574 | 1066 | 978 | 959 | 1167 | 1451 |
| 21836 | 948 | 979 | 1525 | 1394 | 1474 |
| 21837 | 1010 | 980 | 1284 | 1400 | 1309 |
| 21838 | 1398 | 989 | 1203 | 1401 | 1005 |
| 21842 | 1065 | 994 | 1385 | 1402 | 1314 |
| 21843 | 1088 | 1002 | 1064 | 1403 | 1452 |
| 21844 | 968 | 1003 | 1089 | 1412 | 1313 |
| 21847 | 1457 | 1005 | 1146 | 1635 | 1041 |
| 21848 | 1434 | 1007 | 1338 | 1636 | 984 |
| 21849 | 1250 | 1008 | 1362 | 1685 | 1495 |
| 21850 | 1251 | 1010 | 1176 | 1766 | 1510 |
| 21851 | 1252 | 1012 | 1219 | 2206 | 1017 |
| 21852 | 1253 | 1015 | 1208 | 2207 | 1471 |
| 21853 | 1254 | 1019 | 1435 | 2214 | 902 |
| 21860 | 1335 | 1021 | 1008 | 2295 | 1353 |
| 21864 | 1289 | 1046 | 1402 | 2297 | 1116 |
| 21865 | 1470 | 1050 | 1023 | 2311 | 1092 |
| 21869 | 911 | 1052 | 1448 | 2313 | 1487 |
| 21871 | 1175 | 1054 | 1280 | 2335 | 1141 |
| 21887 | 981 | 1055 ^{bis} | 1397 | 2433 | 1341 |
| 21948 | 1499 | 1058 | 1449 | 2510 | 1472 |
| 21968 | 1214 | 1061 | 1232 | 2511 | 1044 |
| | | 1062 | 1363 | 2526 | 1046 |
| II. 190 | 1185 | 1064 | 1450 | 2531 | 1019 |
| 192 | 1515 | 1065 | 912 | 2533 (2) | 1417 |
| 591 | 908 | 1069 | 1337 | 2535 | 1500 |
| 924 | 986 | 1070 | 1174 | 2539 | 1220 |
| 930 | 1310 | 1071 | 985 | 2543 | 1000 |
| 931 | 1224 | 1072 | 1115 | 2548 | 1328 |
| 933 | 914 | 1073 | 1484 | 2553 | 1275 |
| 935 | 1090 | 1074 | 1062 | 2554 | 1364 |
| 936 | 1490 | 1076 | 1491 | 2555 | 1365 |
| 938 | 1433 | 1080 | 1256 | 2556 | 1453 |
| 939 | 1243 | 1083 | 901 | 2561 | 935 |
| 940 | 1081 | 1088 | 1502 | 2564 | 1375 |
| 944 | 1475 | 1089 | 1523 | 2565 | 1016 |
| 945 | 1446 | 1094 | 1257 | 2567 | 1240 |
| 947 | 999 | 1096 | 1306 | 2569 | 1157 |
| 948 | 1311 | 1097 | 960 | 2570 | 944 |
| 949 | 957 | 1100 | 1012 | 2571 | 1228 |
| 950 | 1493 | 1101 | 1307 | 2587 | 987 |
| 951 | 1317 | 1105 | 1013 | 2620 | 1404 |
| 952 | 1207 | 1108 | 1147 | 2636 | 1190 |
| 954 | 1384 | 1114 | 915 | 2766 | 1142 |

(1) Ce volume a été par erreur, p. 151, coté 1120 (20760-82).

(2) Ce volume est par erreur, p. 335, coté 1417 (II. 2535), au lieu de 1417 (II. 2533).

CATALOGUE DES MANUSCRITS

DE LA

BIBLIOTHÈQUE ROYALE DE BELGIQUE

III. PATROLOGIE

901. (II. 1083). — DIONYSIUS AREOPAGITA. Opera.

1. (F. 1-96). [HUGONIS DE SANCTO VICTORE expositiones super DIONYSII AREOPAGITAE caelesti hierarchia]. = *PL.*, t. CLXXV, col. 962 sqq. *Inc. mutil.* ... deret. Oportet ergo, ut estimo, primum exponere.

2. (F. 97-98). Praefatio ANASTASII apostolice sedis bybliothecharii ad excellentissimum Karolum. = *PL.*, t. CXXII, col. 1025-30.

3. (F. 98^v-100). Gloriosissimo catholicorum regum Carolo IOHANNES extremus sophie studentium. = *PL.*, t. CXXII, col. 1031, avec la préface en vers, *ibid.*, col. 1030.

4. (F. 100^v-148). DIONYSIUS AREOPAGITA. De [caelesti et ecclesiastica] hierarchia. = *PL.*, t. CXXII, col. 1035-1112.

5. (F. 148-195). DIONYSII AREOPAGITE episcopi Athenarum ... de divinis nominibus. = *PL.*, t. CXXII, col. 1111-72.

6. (F. 195-198). DIONYSIUS AREOPAGITA. De mystica theologia. = *Ibid.*, col. 1171-76.

7. (F. 198-210). EIUSDEM epistole diverse. = *Ibid.*, col. 1175-94.

8. (F. 210-210^v). POLICRATI successoris archiepiscopi Ephesi ex epistola ad Victorem. = *PG.*, t. V, col. 1357.

9. (F. 210^v-212). CLEMENTIS presbiteri Alexandriae ducis scholae in sermone : *Quis salvatur dives?* = *PG.*, t. IX, col. 647-51, n. XLII.

Tous ces traités sont accompagnés d'un commentaire écrit dans les marges.

Parchemin ; 212 feuillets ; 0^m,332 × 0^m,233 ; XIV^e siècle ; deux colonnes ; initiales rouges et bleues. F. 212, on lit cette note : *Hunc librum scripsit Nicholaus de Nastia.*

Orate pro eo ad Deum. Ce volume provient de l'abbaye d'Alne; plus tard il a été le n. 4664 de la collection Phillipps; la Bibliothèque royale l'a acquis en 1888. Demi-reliure, toile anglaise; au dos le titre doré : *Dionysii Areopagite opera et epistolae.*

902. (II. 2214). — DIONYSIUS AREOPAGITA. Opera.

1. (F. 1^v). Index.
2. (F. 2-39^v). DIONYSII ARIOPAGITE episcopi Athenarum ... de divinis nominibus = *PL.*, t. CXXII, col. 1111-72.
3. (F. 40-42^v). DIONYSIUS de mystica theologia. = *Ibid.*, col. 1171-76.
4. (F. 42^v-53). Epistolare divini DIONYSII. = *Ibid.*, col. 1175-94.
5. (F. 53^v-81^v). DIONYSII ARIOPAGITE episcopi Atheniensium de ecclesiastica hierarchia. = *Ibid.*, col. 1069-1112.
6. (F. 82-107). Beati IHERONIMI super evangelium *Missus est angelus.* *Inc.* Sicut prudens pater familias profert de thesauro suo nova et vetera. *Des.* Non enim post hanc vitam contemplatio iustorum interciditur, sed eterna consummatione redintegratur.
7. (F. 107-107^v). Sanctilogium filialis congratulationis in honore beate Marie virginis. *Inc.* O virgo Israel praeobilissima. *Des.* et absorbetur in aeternum felicissime. Amen.
8. (F. 108). Hymne notée : *Ihesu lumen cordium, sponse Syon formose.*

Parchemin; 108 feuillets; 0^m,24 × 0^m,14; XV^e siècle; quelques jolies lettrines enluminées et rehaussées d'or; initiales rouges et bleues. F. 1^v, on lit : *Liber canonicorum regularium in Korssendonck prope Turnout*, et f. 1 : *Phillipps MS. 6928.* Ce volume fut acquis par la Bibliothèque royale en 1898, à une vente chez Sotheby à Londres (1), pour fr. 87,50. Reliure veau raciné; au dos, le titre doré : *Dionysius Areopagita.*

903. (756-57). — S. DIONYSIUS AREOPAGITA. De caelesti et ecclesiastica hierarchia.

1. (F. 7). Versus IOHANNIS SCOTI ad Karolum imperatorem Romanorum. = *PL.*, t. CXXII, col. 1029.
2. (F. 7). Epistola eiusdem. = *Ibid.*, col. 1031.
3. (F. 7 et 7^v). Versus de laudibus Dyonisii Areopagite. = *Ibid.*, col. 1037.
4. (F. 8-8^v). Prologus in quatuor libros sancti Dyonisii Ariopagite quos IOHANNES SCOTUS ERIUGENA transtulit de greco in latinum. = *Ibid.*, col. 1033-36.
5. (F. 8^v-9^v). Prefacio ANASTASII apostolice sedis bibliothecarii ad excellentissimum et christianissimum regem Karolum. = *Ibid.*, col. 1025-30.

(1) Voir *Bibliotheca Phillipica*, London, 1898, p. 37, n. 307.

6. (F. 9^v-10^v). AMBROSII oratoris et monachi Camadulensis ordinis prefacio in translationem librorum sancti Dyonisii Ariopagite (1).

7. (F. 10^v-11). Prologus IOHANNIS SARRACENI ad magistrum Iohannem de Sarabiriis (2).

Les feuillets 11^v-12 sont blancs.

8. (F. 12^v-67). DIONYSII AREOPAGITE ... de celesti ierarchia.

Les versions de Scot (*PL.*, t. CXXII, col. 1037), du pseudo-Anastase, d'Ambroise Traversari et de Jean Sarazin sont disposées sur quatre colonnes en regard.

Les feuillets 66, 67^v et 68 sont blancs.

9. (F. 69). Prologus in ecclesiasticam ierarchiam.

10. (F. 69^v-138). [DIONYSII AREOPAGITAE] de ecclesiastica ierarchia.

Même disposition que pour le traité précédent (cf. *PL.*, tom. cit., col. 1069 sqq.).

Les deux feuillets de garde en parchemin contiennent des fragments d'antiphonaire.

Papier, filigrane de la lettre *P* et de l'écu surmonté de la croix (3); 138 feuillets, plus six de garde; 0^m,295 × 0^m,21; XV^e siècle; initiales rouges et bleues; titre courant; ancienne pagination i-cxxx; signatures *a 4 - f 5*. F. 1^v, il y a cette note au crayon: *Bibliotheca Martiniane* (4), et f. 7 et 138, l'estampille rouge *R.F.* de la bibliothèque nationale de Paris. Reliure ancienne restaurée, ais de bois recouverts de veau brun estampé; au dos, le titre doré: *Dionysii Areopagitae de celesti hierarchia, de ecclesiastica hierarchia, Ambrosio Camaldulensi interprete, XV saec*; plus bas, le monogramme couronné de Léopold I^{er}.

904. (6106-09). — DIONYSIUS AREOPAGITA. Opera.

1. (F. 2-3^v). Tabula tocius presentis operis.

2. (F. 4-35). [DIONYSIUS. De caelesti hierarchia]. = *PL.*, t. CXXII, col. 1037.

3. (F. 35-74^v). EIUSDEM de ecclesiastica hierarchia. = *Ibid.*, col. 1069.

4. (F. 74^v-128). DIONISII AREOPAGITE Atheniensis episcopi ad Thimotheum episcopum Ephesinum de divinis nominibus. = *Ibid.*, col. 1111.

5. (F. 128-131^v). EIUSDEM ad Thimotheum Ephesi episcopum de mistica theologia. = *Ibid.*, col. 1171.

6. (F. 132-148^v). Epistole sancti Dionisii. = *Ibid.*, col. 1175.

Papier; 148 feuillets, plus quatre feuillets blancs à la fin du volume; 0^m,28 × 0^m,22; XV^e siècle (1436), car f. 132, on lit la note suivante: *Absolvi Ambrosius*

(1) Sur la version de Denis l'Aréopagite par Ambroise Traversari, voir FABRICIUS-MANSI, *Bibl. lat. med. et infim. act.*, t. I, p. 83.

(2) Cf. *Histoire littéraire de la France*, t. XIV, p. 191-92.

(3) Voir SOTHEY, *Principia typographica*, t. III, pl. E, n. 3.

(4) Il s'agit sans doute de Val-Saint-Martin, près Louvain. Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 213.

peccator dionysii opuscula in monasterio fontis boni XV kl. aprilis anno dominice incarnationis M^oCCCC^oXXX^oVI^o indictione XV emendavi et cum greco contuli in heremo III idus aprilis. Laus Deo semper (1); écriture italienne; jolies initiales rouges et bleues; le feuillet 4 est richement enluminé et enguirlandé, on y remarque dans une lettrine une représentation de S. Denis. F. 2, on lit : *Scriptus liber anno 1436, quem F. Thomas Pacensis Pallantinus ordinis Predicatorum vetustatis amantissimus antiquitati sacravit anno 1559. Emit hunc postea Alardus Mylenus presbyter in auctione publica apud Scrotum anno 1563*; f. 1, il y a la note suivante : *Andreas Kemmerius I. U. D. (2) in perpetuum amoris signum Patribus Societatis Iesu me dono dedit. Lovanii 2^a octobris 1598, et f. 2 : Coll. Societatis Iesu Lovanii*. Reliure ancienne, ais de bois recouverts de peau de truie, estampée de fleurs de lis.

905. (20132). — S. IGNATIUS. Opera.

1. (F. 1-2). Index.
2. (F. 3-3^v). Scriptum IGNATHI martyris discipuli Iohannis evangelisti ad Mariam.
3. (F. 3^v-5^v). Alia epistola EIUSDEM ad Trallianos.
4. (F. 5^v-8). EIUSDEM ad Magnesianos scripta de Smyrna.
5. (F. 8-9). Epistola eiusdem ad Tharsenses scripta de Philippis.
6. (F. 9-11^v). Epistola eiusdem ad Philippenses.
7. (F. 11^v-14). Alia EIUSDEM ad Philadelphenses.
8. (F. 14-16). Alia ad Smyrnenses.
9. (F. 16-16^v). Alia epistola EIUSDEM ad Policarpum episcopum.
10. (F. 16^v-18). Alia EIUSDEM ad Anthiocenses.
11. (F. 18-19). Alia EIUSDEM ad Hyronem dyaconum ecclesie Antiochene.
12. (F. 19-22). Alia EIUSDEM ad Ephesios.
13. (F. 22-23^v). Epistola prima IGNATHI episcopi scripta ... ad Romanos (3).
14. (F. 23^v-25^v). Epistola POLICARPI martyris Smyrneorum episcopi ... ad Philippenses (4).
15. (F. 25^v). Epistola IGNATHI ad sanctum Iohannem evangelistam.
16. (F. 25^v). Epistola EIUSDEM ad eundem (5).
17. (F. 25^v-26). Epistola IGNATHI ad Virginem Mariam; epistola Virginis Marie ad Ignatium (6).

(1) A moins, ce qui est plus probable, que cette date de 1436 ne soit celle de l'achèvement de la version d'Ambroise Traversari.

(2) Sur André Kemmerius, professeur à l'Université de Louvain, voir VALÈRE ANDRÉ, *Fasti academici*, pp. 153, 201.

(3) Pour ces douze premières lettres, voir F. X. FUNK, *Patres apostolici*, Tubingae, 1901, t. II, p. 55-213. M. Funk a utilisé ce manuscrit pour son édition, voir p. LXX.

(4) *Ibid.*, t. I, p. 297 sqq.

(5) Voir FUNK, *op. cit.*, t. II, p. 214-16, pour les deux lettres de S. Ignace à S. Jean.

(6) *Ibid.*, p. 217.

18. (F. 26). De vita et moribus sancte Marie Virginis. Sanctus EPIPHANIUS (1).

Papier, au filigrane de la lettre *P* surmontée d'une croix; 0^m.207 × 0^r.137; XVI^e siècle, sauf l'index écrit en 1736; deux colonnes; ancienne pagination cclxx-cclxxxiii. Demi-reliure, dos en maroquin rouge.

906. (5540). — HEGESIPPUS. De iudaica captivitate.

1. (F. 1-1^v). Quid post mortem Iudae Machabei et fratrum eius actum sit. *Inc.* Post mortem Iudae Machabei. *Des.* contra quos Vespasianus magister militie missus est.

2. (F. 1^v). [De morte Ottonis imperatoris].

Inc. Quis dabit aquam capiti ?

Quis succurret pauperi ?

Des. Si non submittis legibus

Hostes eius pedibus.

3. (F. 1^v). De Henrico Cesare tertio et Leone papa septimo. *Inc.* Cesar tantus erat quantus et orbis. *Des.* Romanos onerans viribus aviis ad civile decus excoluisti.

4. (F. 1^v). De Cuonrado imperatore patre supradicti Cesaris (2).

5. (F. 2-105^v, 107-107^v). S. EGESIPPI iudaice captivitatis libri quinque ab AMBROSIO episcopo de greco in latinum translati (3). = *PL.*, t. XV, col. 1691 sqq. (4).

6. (F. 105^v-106^v). Visio Karoli tertii imperatoris (5).

Parchemin; 107 feuillets; 0^m.302 × 0^m.23; XI^e siècle, sauf les ff. 1, 105 et 106 qui sont du XII^e; deux colonnes; élégantes letrines en toutes couleurs. F. 1, on lit : *Liber Sancti Petri in Gemblus*, et f. 106^v : *Liber Sancti Petri Gemblacensis*. Reliure du XVII^e siècle, veau raciné; au dos, le titre doré : *Egesipp. de iuda. captivi*.

907. (10855). — HEGESIPPUS. De bello iudaico.

TITRE. Libri HEGESIPPI translati a sancto Ambrosio Mediolanensi episcopo. = *PL.*, t. XV, col. 1691 sqq.

Parchemin; 105 feuillets; 0^m.247 × 0^m.17; XII^e siècle; deux colonnes; quelques capitales ornées. Au revers de la couverture, la cote *LL*, 6-12, de la bibliothèque de Saint-Laurent à Liège. Reliure, veau raciné et estampé portant sur les deux plats la date de 1587, et au dos le titre doré : *Egesippus de bello iudaico*.

(1) Cf. *PG.*, t. XLI, p. xii, ε'.

(2) Voir *MG.* Ser., t. XI, p. 274.

(3) Le feuillet 107 a été mal relié, il doit suivre le feuillet 103.

(4) Sur cet ouvrage, cf. E. SCHÜRER, *Geschichte des jüdischen Volkes im Zeitalter*, Leipzig, 1890, t. I, p. 72-75.

(5) Publiée dans *Histoire de l'Académie royale des Inscriptions et Belles-Lettres*, t. XXXVI, Paris, 1774, p. 213-21.

908. (II. 591). — HEGESIPPUS. De excidio Hierusalem.

1. (F. 1-2^v). [HEGESIPPUS. De bello iudaico]. Fragment. *Inc.* ... facto consuluit. *Des.* Hiis in Iudea gestis Gaius audendum aliquid ratus in Parthos... = *PL.*, t. XV, col. 1076-80.

2. (F. 3-124). EGESIPPI viri clarissimi oratorisque eximii de excidio urbis iherusalem = *Ibid.*, col. 1691 sqq.

Parchemin; 124 feuillets; 0^m,29 × 0^m,225; XIV^e siècle; deux colonnes; très jolies lettrines en toutes couleurs, rehaussées d'or; plusieurs feuillets sont encadrés de guirlandes de fleurs. F. 3, une miniature représente l'auteur écrivant son livre et f. 13^v, une autre où est figuré le siège de Jérusalem. Ce volume a été légué à la Bibliothèque royale de Belgique, en mai 1883, par M. A. L. V. de Robaulx de Soumoy. Reliure, veau raciné; au dos, le titre doré : *Manuscrit traduit du grec en latin par Saint Ambroise.*

909. (5499). — ORIGENES. Homelie in Sacram Scripturam, interprete RUFINO.

1. (F. 1^v). Table des matières.

2. (F. 2-36^v). [ORIGENIS] in Genesi omelie XVII. = *PG.*, t. XII, col. 145-262.

3. (F. 36^v-65). In Exodo omelie XIII. = *Ibid.*, col. 297-396.

4. (F. 65-113^v). In Levitico omelie XVII. = *Ibid.*, col. 405-574.

5. (F. 113^v-174^v). In Numeris omelie XXVIII. = *Ibid.*, col. 583-806.

6. (F. 175-205^v). In Iesu Nave omelie XXVI. = *Ibid.*, col. 823-948.

7. (F. 205^v-217). In Iudicum omelie VIII. = *Ibid.*, col. 951-90.

8. (F. 217-222). In Regum omelia I. = *Ibid.*, col. 995-1012.

9. (F. 222-228^v). In Cantica Cantorum omelie II. = *PG.*, t. XIII, col. 35-58.

10. (F. 229^v-240). In Esaiam omelie VIII. = *Ibid.*, col. 219-54.

11. (F. 248-265^v). In Hieremiam omelie XIII. = *Ibid.*, col. 255-542.

12. (F. 265^v-271). In Ezechiel omelie II. = *Ibid.*, col. 665-87.

Parchemin; 271 feuillets; 0^m,33 × 0^m,255; XI^e siècle; deux colonnes; très belles lettrines. F. 1, on lit la note : *Liber monasterii Gemblacensis ordinis sancti Benedicti in Brabantia.* Reliure du XVII^e siècle; veau raciné; au dos, le titre doré : *Homilis (sic) Origenis in Genes. Exod.*

910. (9136). — ORIGENES. Homelie, interprete RUFINO.

1. (F. 1). Table des matières.

2. (F. 1-29^v). Omelie ORIGENIS in Genesi. = *PG.*, t. XII, col. 145.

3. (F. 29^v-52^v). In Exodo. = *Ibid.*, col. 297.

4. (F. 52^v-90^v). In Levitico. = *Ibid.*, col. 405.

5. (F. 90^v-137). In Numeris. = *Ibid.*, col. 583.

6. (F. 137-162). In Iosue. = *Ibid.*, col. 823.

7. (F. 162-171). In libro Iudicum. = *Ibid.*, col. 951.

8. (F. 171-175). In libro Regum. = *Ibid.*, col. 995.

9. (F. 175-183^v). In Isaia. = *PG.*, t. XIII, col. 219.
10. (F. 183^v-205^v). In Hieremiam. = *Ibid.*, col. 255.
11. (F. 205^v-209^v). In Hiezechielem. = *Ibid.*, col. 665.

Parchemin; 209 feuillets, plus quatre de garde; 0^m,415 × 0^m,31; XII^e siècle; deux colonnes; très belles letrines; titre courant. F. 1, on voit deux fois la cote *K-K*, 2-3, de l'ancienne bibliothèque de Saint-Laurent, à Liège. Reliure veau raciné; au dos, le titre doré: *Origenis homiliae in Vet. Test.*, reproduit à l'intérieur sur une étiquette en maroquin rouge; plus bas, les armes de Belgique et l'inscription: *Bibl. royale.*

911. (21869). — ORIGENES. Homeliae.

1. (F. 1^v-59). ADAMANTH ORIGENIS in Genesi. = *PG.*, t. XII, col. 145.
2. (F. 59-102). ADAMANTH ORIGENIS in Exodo. = *Ibid.*, col. 297.

Parchemin; 102 feuillets; 0^m,29 × 0^m,217; XII^e siècle; deux colonnes; letrines très élégantes; signatures I-XII. F. 1, il y a la note à moitié effacée: *Liber monasterii [Parcensis]*. Au verso de la couverture, il y a la cote *I. theca II* et sur les deux plats les armoiries de l'abbaye ont été grattées. Reliure veau; au dos, le titre doré: *Origene. in Gen. et Exo.*, tranche rouge.

912. (II. 1065). — ORIGENES. Homeliae in Pentateuchum.

1. (F. 1-1^v). [HIERONYMI epistola de scriptis Origenis] (1).
2. (F. 2-39^v). ADAMANTH ORIGENIS in Genesi omelie XVII. = *PG.*, t. XII, col. 145.
3. (F. 39^v-71^v). ADAMANTH ORIGENIS in Exodo. = *Ibid.*, col. 297.
4. (F. 71^v-125). ORIGENIS liber in Leviticum. = *Ibid.*, col. 405.
5. (F. 125-201^v). ORIGENIS homelie in Numeris. = *Ibid.*, col. 583.
6. (F. 201^v). Vers sur Origène.

Inc. Ille Origenes ego doctor verissimus olim.

Des. His me coniectum impia tela premunt.

7. (F. 202^v-203). [Regula Cisterciensium]. *Inc.* Qui in aliquo festo non cantaverit, postea potest dicere tractum. *Des.* omne cirotheca-
rum genus tam de corio quam de panno interdicitur.

8. (F. 203). De negligentia sacrificii, ex concilio Aurelianensi et Pio papa.

Parchemin; 203 feuillets; 0^m,362 × 0^m,258; XII^e siècle; deux colonnes; superbes letrines en toutes couleurs; titre courant; signatures I-XXV. F. 1, il y a la note: *Liber sancte Marie de Alna, servanti benedictio fiat* (2). Ce volume a été acquis en 1888 de Sir Thomas Phillipps, dans la collection duquel il portait le n. 4645. Demi-reliure, toile anglaise; au dos, le titre: *Origenes in Genesin, Exodum, Leviticum, Numeros. Comparatio Marci Terentii Varronis cum Origene.*

(1) Cette lettre a été publiée par le Dr E. Klostermann dans les *Sitzungsberichte der königl. preussischen Akademie der Wissenschaften zu Berlin*, 1897, p. 855-70. Cf. HARNACK, *Geschichte der altchristlichen Litteratur*, 1893, t. I, p. 334-35.

(2) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 243, decuria nona.

913. (4535). — ORIGENES. Homeliae.1. (F. 1-1^v). [Capitula].2. (F. 1^v-2). Praefacio.3. (F. 2-72^v). Omelie sive orationes in Ihesum Nave ADAMANTII ORIGENIS de graeco translate XXVI in Ihesum filium Nave. *Des. mutil.* (Homil. XXV). Et ab Ihesu in terra repromissionis accipiant, ubi prima sors cecidit ad ... = *PG.*, t. XII, col. 823 sqq.

Parchemin; 72 feuillets, plus trois de garde; 0^m,185 × 0^m12; XIII^e siècle; quelques jolies letrines en toutes couleurs et à personnages. Au deuxième feuillet de garde, en tête, il y a la note: *Sub custodia incerta fratris Lamberti van den Bulcke Hantwerpiani monachi loci divi Bernardi super Schaldam*, puis, f. 1: *Collegii Societatis Iesu Bruxellis 1656, M.B.* Demi-reliure, dos en maroquin rouge.

914. (II. 933). — ORIGENES. Libri περὶ ἀρχῶν.1. (F. 1-3). [RUFINI prologus in libros περὶ ἀρχῶν ORIGENIS]. = *PL.*, t. XXII, col. 733-35. *Inc. mutil.* ... in altero odio habita sit.2. (F. 3^v-4). Capitula.3. (F. 4-71^v). [ORIGENIS περὶ ἀρχῶν libri quatuor, interprete RUFINO Aquileiensi presbytero]. = *PG.*, t. XI, col. 111.4. (F. 71^v-111^v). Liber sancti AMBROSII de officiis. = *PL.*, t. XVI, col. 9.

Parchemin; 111 feuillets; 0^m,324 × 0^m,225; XIII^e siècle; deux colonnes; quelques letrines ornées. Ce volume, qui porte, f. 1, l'ex-libris de Sir Thomas Phillipps: *Sir T. P. Middle Hill, 325*, a été acquis par la Bibliothèque royale en 1888 pour fr. 20. Reliure moderne, toile, dos et coins en peau de truie.

915. (II. 1114). — ORIGENES. Super Cantica Canticorum.1. (F. 1-117^v). ORIGENES super Cantica Canticorum. = *PG.*, t. XIII, col. 37-198.2. (F. 117^v-146). Liber IOHANNIS episcopi de compunctione cordis. = *PG.*, t. LVII, col. 393 sqq.3. (F. 146^v-147). [HIERONYMUS]. De Deo.4. (F. 147^v-149^v). Breve et memoriale scriptum de conversatione laicorum fratrum secundum instituta beati Bernardi. *Des. mutil.* caseo aut lacte vescuntur...

Parchemin; 149 feuillets; 0^m,228 × 0^m,16; XIII^e siècle; curieuses letrines; signatures I-XVIII. F. 147^v, on lit la note: *Liber sancte Marie de Alna* (1). Dans la suite, ce volume a fait partie de la collection de Sir Thomas Phillipps avec la cote n. 4695 et a été acquis par la Bibliothèque royale en 1888. Demi-reliure, toile anglaise; au dos, le titre doré: *Origenes in Cantica*.

(1) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 243, decuria nona.

916. (3446-84). — ORIGENES. Super Cantica. — Autres traités des Pères.

1. (F. 2). Table des matières.
2. (F. 3-4). Domini FRANCISCI PETRARCHÉ poete laureati planctus peccatoris ad modum septem psalmorum (1).
3. (F. 4^v-6). Sermo sancti BERNARDI de septem gradibus confessionis. = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 647-53.
4. (F. 6^v-8). Notabilis sermo qualiter descenditur de peccato in peccatum. BERNARDUS (2). = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 841-46, nn. 4-12.
5. (F. 9-79). ORIGENES super cantica, opus egregium de incarnatione Domini. *Inc.* Ut Deo amabilis qua pro officio misterii suscepti. *Des.* Ut videamus ipsorum illuminationem montium eternorum... Amen.
6. (F. 79^v-100^v). Soliloquium beati AUGUSTINI. = *PL.*, t. XL, col. 863 sqq.
7. (F. 101-117). IOHANNES CRISOSTOMUS. De compunctione cordis. = *PG.*, t. LVII, col. 393 sqq.
8. (F. 117^v-118). AMBROSIUS. De moribus et honesta vita. = *PL.*, t. XVII, col. 749-52.
9. (F. 118-119^v). Vita Secundi philosophi (3).
10. (F. 120-128^v). Difficultatum solucio de sacramento eukaristie. *Inc.* Quoniam, ut ayt mellifluus Bernardus. *Des.* sed, sicut est, in maiestate sua, cognoscemus.
11. (F. 129). De memoria passionis Christi.
12. (F. 129^v-130^v). [Pius papa]. De miseria et stulticia curialium (4).
13. (F. 131-154). Sex libri EFFREM monachi (5).
14. (F. 154-162). HUGO. De arra anime. = *PL.*, t. CLXXVI, col. 931 sqq.
15. (F. 162-174). Omelia beati IOHANNIS CRISOSTOMI de superscriptione psalmi quinquagesimi. = *PG.*, t. LV, col. 565.

(1) Ces psaumes se trouvent dans le premier volume des *Francisci Petrarchae opera quae extant omnia*. Basileae, 1581, fol. Cf. NICERON, *Mémoires ... des hommes illustres*, Paris, 1734, t. XXVIII, p. 386.

(2) En fait, ce sermon est de Nicolas de Clairvaux.

(3) Cf. H. MARTIN, *Catalogue des manuscrits de la bibliothèque de l' Arsenal*, Paris, 1886, t. II, pp. 114, 187.

(4) Voir *Aeneae Sylvii libellus aulicorum miseras copiose explicans*, Moguntiae, 1517, fol. b ij.

(5) Ce sont les sermons nn. 1, 5, 6, 8, 7, 4 signalés dans *Sancti Ephraem Syri opera omnia*, Romae, 1732, t. I, col. LXXX.

16. (F. 174^v-182). DONATUS moralisatus (1).

17. (F. 182^v-188^v). Liber beati AUGUSTINI de vita christiana. = *PL.*, t. XL, col. 1031.

18. (F. 189-190^v). Sermo de episcopo ordinato. *Inc.* Ut signaculum similitudinis Dei. *Des.* Sepelitur in quarto, tui dominatur consuetudo etc.

19. (F. 191-224^v). Sermo de passione Domini. *Inc.* Perit iustus et nemo est qui aspiciat in corde suo. *Des.* qua translatus est in gloriam aeternam quam nobis omnibus praestare dignetur Ihesus Christus dominus noster. Amen.

20. (F. 225-230). Reprehensio praelatorum. *Inc.* Scienti bonum et non facienti peccatum est illi. *Des.* ut melius possint intelligi que memorasse sufficiat.

21. (F. 230^v-232^v). Tractatus de quinque floribus mundi. *Inc.* Quicumque voluerit esse amicus huius mundi. *Des.* et ad amicitiam Dei frequenter aspirare ad quem... Amen.

22. (F. 233-236). YSIDORUS de institutione bone vite (2).

23. (F. 236-236^v). HUGO. De disciplina scolarium. = *PL.*, t. CLXXVI, col. 993.

24. (F. 236^v). Epistola IGNACII ad Mariam (3).

25. (F. 237-241^v). AUGUSTINUS. De XII abusioibus. = *PL.*, t. XL, col. 1079.

26. (F. 241^v-258^v). Tractatus sive disputacio probans et magis declarans materiam conceptionis beate Marie Virginis. *Inc.* Sapientia aperuit ora mutorum. *Des.* cum pia quadam importunitate requirere et procurare. Amen.

27. (F. 259-284^v). Cordiale quatuor novissimorum. *Inc.* Memorare novissima et in eternum non peccabis. *Des.* Ach, ach, ach, utinam saperent et intelligerent ac novissima providerent.

28. (F. 285-299^v). Tractatus de matrimonio. *Inc.* De quibus autem scripsistis mihi. *Des.* non tamen ita perfecte significat sicut primum etc.

29. (F. 299^v-303^v). Omelia ORIGENIS feria quinta post Pascha (4).

30. (F. 303^v-305^v). Dominica tertia post Epyphaniam Domini sermo magistri IACOBI DE LAUSIS (5).

(1) Cf. *Ioannis Gersonii opera omnia*, t. IV, p. 835.

(2) C'est le traité extrait des œuvres d'Isidore décrit *PL.*, t. LXXXI, col. 503-94, n. 15-17.

(3) Cf. supra p. 4, n. 905.

(4) Cf. l'édition latine des homélies attribuées à Origène, *PG.*, t. XVII, col. 1277.

(5) Sur Jacques de Lausanne, voir QUÉTIF-ECHARD, *Scriptores ordinis praedicatorum*, t. I, p. 547-49. Le sermon qui se trouve ici, est publié dans *Sermones dominicales et festivales ... per IACOBUM DE LAOSANA*. Paris, 1530.

31. (F. 306-306^v). Saul rex an sit dampnatus. — Salomon an sit salvatus (1).

32. (F. 307-315^v). Speculum monachorum. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 1189.

33. (F. 315^v-316). Epistola domni FLORENCII (2).

34. (F. 316). Sex necessaria ad perfectam actionem.

35. (F. 316^v-318). Sermo de antichristo. *Inc.* Nota de adventu Christi ad iudicium videnda sunt duo. *Des.* ne illic cum iniquis iudicetur.

36. (F. 318-322). De vanitate seculi. *Inc.* Videte quomodo caute ambuletis. *Des.* cum sanctis et electis eorum meritis et precibus possideat, quod nobis praestare dignetur... Amen.

37. (F. 322^v-327). Courts extraits. — De fuga seculi. — De dampnabili vita seculari. — De terribili hora mortis iniquorum. — De magnitudine penarum purgatorii. — De securitate quam habent iusti in hora mortis et de immensitate celestium gaudiorum. — De laude vite solitarie.

38. (F. 327-332^v). Sermo de nativitate beati Iohannis Baptiste, domini ROTHOMAGENSIS. *Inc.* Quis putas puer iste erit. *Des.* quod nobis bibere concedat qui est benedictus... Amen.

39. (F. 333-334). Cur Deus homo.

40. (F. 334-339). De indulgenciis. *Inc.* Indulgentiam ipsius fuis lacrimis postulemus. *Des.* quantum ad dimissionem pene, quod est minus bonum.

41. (F. 339-339^v). Doctrina bona et multum utilis pro religiosis ymmo omnibus fidelibus.

42. (F. 339^v-341^v). BASILIUS (3). De laude vite solitarie. = *PL.*, t. CXLV, col. 246-51.

43. (F. 341^v). De corpore Christi.

Papier; divers filigranes, tête de bœuf surmontée de la croix, le tau, la croix ansée; 341 feuillets; 0^m,31 × 0^m,20; XV^e siècle, car f. 224^v et 285^v, on lit la date 1468 et Anno Domini 1468. F. 1, il y a la note : *Liber conventus sancte Gertrudis in Buscoducis*. Demi-reliure moderne; dos en maroquin rouge, avec les titres dorés des principaux traités, et le monogramme couronné de Léopold I^{er}.

917. (4232-34). — ORIGÈNE et autres Pères, en grec.

1. (F. 1-29). Ὠριγένους in S. Iohannis evangelium. — Extraits, cf. *PG.*, t. XIV (4).

(1) Le premier de ces extraits est de *Nicolaus de Lyra super primo regum ultimo super verbo "Arripuit igitur gladium suum"*, le second de *Dominus Michael de Banonia super ps.* 88.

(2) Probablement de Florent Radewijns, un des fondateurs de la Congrégation de Windesheim. Cf. Acqvoov, *Het Klooster te Windesheim*, t. I, pp. 61-62.

(3) En fait, ce traité est de Pierre Damien.

(4) Et aussi B. CORDERIUS, *Catenae Patrum in Ioannem*, Antverpiae, 1630, p. **3.

2. (F. 30-57). Σευήρου ἐπισκόπου Ἀντιοχείας in Iohannem. *Inc.* Ἀπὸ λόγου κγ'. Εἰπὼν τό· ἐν ἀρχῇ ἦν ὁ λόγος. *Des.* ἐγράφη μόνον ὅσον ἡμῶν ἐφικτόν.

3. (F. 58-88). Θεοδώρου Μοψουεστίας in Iohannem. = *PG.*, t. LXVI, col. 728-84.

Les feuillets de garde, en parchemin, contiennent un fragment des heures de la Passion, en flamand.

Papier; 88 feuillets, plus quatre de garde; 0^m,213 × 0^m,16; XVII^e siècle. Ce volume provient des Jésuites d'Anvers (1). Couverture en parchemin.

918. (1052-53). — S. CYPRIANUS. Opera.

1. (F. 1). Table des matières.

2. (F. 1^v-5^v). Liber sancti CIPRIANI Cartaginensis episcopi [ad Donatum]. = *PL.*, t. IV, col. 191.

3. (F. 5^v-7). Liber sancti CIPRIANI de disciplina ad Rogatianum presbiterum. = *Ibid.*, col. 235.

4. (F. 7-12^v). Sermo sancti CIPRIANI de disciplina et habitu virginum. = *Ibid.*, col. 441.

5. (F. 12^v-16^v). De bono pudicitie. = *Ibid.*, col. 819.

6. (F. 16^v-26). De lapsis. = *Ibid.*, col. 467.

7. (F. 26-34^v). De ecclesie unitate. = *Ibid.*, col. 493.

8. (F. 34^v-37). De eo quod idola non sint dii. = *Ibid.*, col. 565.

9. (F. 37-44). De patientia. = *Ibid.*, col. 621.

10. (F. 44-48^v). De zelo et livore. = *Ibid.*, col. 637.

11. (F. 48^v-54^v). EIVSDEM de mortalitate. = *Ibid.*, col. 583.

12. (F. 54^v-61^v). Epistola CIPRIANI ad Demetrianum. = *Ibid.*, col. 545.

13. (F. 61^v-70^v). Ad Fortunatum de exhortatione martyrii. = *Ibid.*, col. 651.

14. (F. 70^v-79^v). De dominica oratione. = *Ibid.*, col. 521.

15. (F. 79^v-84). Ad Cecilium de sacramento corporis et sanguinis Domini. = *Ibid.*, col. 372.

16. (F. 84-86). Ad clerum de deprecando Deo pro peccatis nostris. = *Ibid.*, col. 230.

17. (F. 86-91^v). Ad Novatianum. = *PL.*, t. III, col. 1205.

18. (F. 91^v-92^v). Ad Tyberitanos. = *Ibid.*, t. IV, col. 351.

19. (F. 92^v-100). Sermo S. CIPRIANI de opere et elemosinis. = *Ibid.*, col. 601.

Parchemin; 100 feuillets, plus deux de garde; 0^m,295 × 0^m,22; XI^e siècle; deux colonnes; belles et grandes lettrines fleuronées. F. 2, on lit : *Liber sancti Panta-*

(1) Cf. H. OMONT, *Catalogue des manuscrits grecs de la bibliothèque royale de Bruxelles*, p. 12, n. 14.

leonis Coloniensis ; f. 100 : *Hoc Hermannus opus statuit vir relligiosus ductus amore Dei sancti quoque Pantaleonis, hinc levis fiat ei posthac sedes requiei*, et f. 1 : *Collegii Societatis Iesu Brugis ex dono R^{mi} D. Iacobi Pamelii*. Reliure ancienne restaurée, veau raciné.

919. (1075-78). — S. CYPRIANUS. Opera.

1. (F. 1^v). *Contenta et laus Cypriani ex LACTANTIO, de institutio-nibus*, V, 1.

2. (F. 2-48). *Epistola Cypriani episcopi et martiris ad Donatum de erroribus mundi et contemptu eius (PL., t. IV, col. 191)*; puis lettres *ad Demetrianum (PL., t. IV, col. 545)*, puis lettres nn. 57, 54 (*ibid.*); puis les lettres *ad Cornelium papam (PL., t. III)*, puis nn. 59, 61, 62, 6, 65, 68, 64, 66, 44, 50, 51, 32, 14, 7, 9, 10, 11, 13, 17, 19, 3, 24, 53, 36, 58.

3. (F. 48^v-50). *Oratio CYPRIANI quam sub die passionis sue dixit.* = *PL., t. IV, col. 905.*

4. (F. 50-54^v). *De zelo et livore.* = *Ibid., col. 637.*

5. (F. 54^v-61). *De patientia.* = *Ibid., col. 621.*

6. (F. 61-66^v). *De mortalitate.* = *Ibid., col. 583.*

7. (F. 66^v-76). *CYPRIANUS super dominicam orationem.* = *Ibid., col. 521.*

8. (F. 76-79^v). *De duobus montibus.* = *Ibid., col. 909.*

9. (F. 79^v-90^v). *Quod idola dii non sunt.* = *Ibid., col. 565.*

10. (F. 90^v-96). *De habitu virginis.* = *Ibid., col. 441.*

11. (F. 96-103). *De catholice ecclesie unitate.* = *Ibid., col. 493.*

12. (F. 103-109^v). *De opere et elemosina.* = *Ibid., col. 602.*

13. (F. 109^v-112^v). *Ad Tybaritanos epistola.* = *Ibid., col. 351.*

14. (F. 112^v-121). *Ad Fortunatum [de laude martyrii].* = *Ibid., col. 651.*

15. (F. 121-126). *Ad Cecilium de sacramento calicis.* = *Ibid., col. 372.*

16. (F. 126-126^v). *De Numidico confessore.* = *Ibid., col. 326.*

17. (F. 126^v-127^v). *Ad Moysen et Maximum confessores.* = *Ibid., col. 288.*

18. (F. 127^v-135). *De laude martyrii.* = *Ibid., col. 787.*

19. (F. 135-166). *Libri CYPRIANI ad Quirinum.* = *Ibid., col. 675* sqq.

20. (F. 166-183). *Epistola ad Anthonianum.* = *Ibid., col. 347.* — Autres lettres nn. 76, 70, 72, 31, 37, due ad Cornelium (t. III, nn. 6 et 5), 67.

21. (F. 183-200). [De singularitate clericorum]. = *Ibid., col. 835.*

22. (F. 200-207^v). Lettres nn. 25, 7, 34, 76 (2^a pars), ad Cornelium (t. III), 69.

23. (F. 207^v-211). *De disciplina et bono pudicitie.* = *Ibid., col. 819.*

24. (F. 211-216). [ANONYMUS ad Novatianum de lapsis]. = *PL.*, t. III, col. 1205.

25. (F. 216). Ex libro gloriosi IHERONIMI, *de viris illustribus*, de beato Cypriano. = *PL.*, t. XXIII, col. 677.

L'explicit porte : *Explicit epistolare gloriosi martiris Cypriani Cartaginensis archiepiscopi, qui quanta eloquentia quantaque doctrina inter catholicos doctores refulserit epistole eius splendidissime verborum ornatu sententiarumque ubertate optime testificantur. Per manus fratris Cornelii de ligno* (1). *Ora lector ex caritate pro eo quatenus meritis et precibus gloriosi huius martiris finaliter a Domino perpetuam memoriam consequatur et partem aliquam in aeterna beatitudine cum sancto Cypriano habere mereatur. Amen.*

26. (F. 216^v-217). Passio beati Cypriani episcopi et martiris. = *BHL.*, n. 2013.

27. (F. 217-218). Sermo beati AUGUSTINI in die natali sancti Cypriani. = *PL.*, t. XXXVIII, col. 1410-12.

28. (F. 217^v-221^v). Index des lettres de S. Cyprien.

29. (F. 221^v-223^v). HUGO DE SANCTO VICTORE ordinis canonicorum regularium super iherarchiam. = *PL.*, t. CLXXV, col. 1035-39.

Parchemin et papier, au filigrane de la main surmontée d'une croix ; 223 feuillets ; 0^m,286 × 0^m,22 ; XVI^e siècle ; deux colonnes. Ce volume semble provenir du prieuré de Corsendonck, auquel appartenait le scribe Corneille de Ligno, et en outre, f. 1, il y a la cote de cette bibliothèque *X. 4*. L'estampille rouge *R. F.* de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 2 et 223^v. Reliure du XVII^e siècle, veau brun estampé.

920. (365-79). — S. CYPRIANUS, S. AUGUSTINUS. Opera et epistolae, avec d'autres traités.

1. (F. 1-1^v). Fragments d'homélie de S. AUGUSTIN. *Inc. mutil.* ... meritorum. Nam etsi conabuntur maioris etatis aliqua merita suspicari. *Des. mutil.* agnoscant vasa ex eadem massa in honorem facta quid e ...

2. (F. 2^v). Table et *Registrum epistolarum beati Augustini in hoc volumine contentarum.*

3. (F. 3-26). Epistole beatissimi CYPRIANI episcopi et martiris ad Donatum de erroribus mundi (*PL.*, t. IV, col. 191), ad Demetrianum (*ibid.*, col. 545), ad Cornelium papam de confessione (*ibid.*, col. 358), ad eundem de pace lapsis danda (*ibid.*, col. 350), ad eundem magnifice confortativa (*PL.*, t. III, col. 732), ad Cornelium de Novato et Novaciano (*ibid.*, col. 743), ad eundem (*ibid.*, col. 731), epistola

(1) Religieux de Corsendonck, mort le 23 septembre 1533. Cf. J. VAN DEN GHEYN, *L'Obituaire du prieuré de Corsendonck*, ANNALES DE L'ACADÉMIE ROYALE D'ARCHÉOLOGIE D'ANVERS, 1901, 29 avril, 23 septembre, 4 décembre.

CIPRIANI ad Cornelium 6^{ta} quod adversus eum accusationem non acceperit, (*ibid.*, col. 725), eiusdem ad eundem de episcopatu eius (*ibid.*, col. 722), CIPRIANI Cornelio de confessoribus regressis (*ibid.*, col. 754), CYPRIANUS ad Magnum de Novatiano (*PL.*, t. IV, col. 416), ad eundem de iis qui in lecto baptisma consequuntur (*ibid.*, col. 416), CIPRIANUS ad Iulianum de hereticis baptizandis (*PL.*, t. III, col. 1073), ad Stephanum de concilio (*ibid.*, col. 1083).

4. (F. 26-30^v). FIRMIANUS ad Cyprianum episcopum. = *PL.*, t. IV, col. 413.

5. (F. 30^v-34). Sententia 87 episcoporum. = *PL.*, t. III, col. 1089-1116.

6. (F. 34-37^v). Epistola CYPRIANI ad Fidum de Victore quodam presbitero (*PL.*, t. IV, col. 359), ad Engratium (*ibid.*, col. 360), ad Pomponium (*ibid.*, col. 364), ad Rogatianum (*ibid.*, col. 235).

7. (F. 37^v-39^v). CIPRIANUS de Marciale et Basilide. = *PL.*, t. III, col. 1019.

8. (F. 39^v-51^v). CIPRIANI epistola ad Epictetum et plebem Assuritanorum (*PL.*, t. IV, col. 389), ad clerum et plebem furnis consistentem (*ibid.*, col. 399), de Victore (*ibid.*, col. 399), de quinque presbiteris (*ibid.*, col. 332), ad Maximum et Nicostratum (*ibid.*, col. 340), epistola Maximi, Urbani, Sydonii et Macharii ad Cyprianum (*ibid.*, col. 342), ad Romanos (*ibid.*, col. 315), item ad Romanos (*ibid.*, col. 262), exemplar epistolarum XIII quas misit CYPRIANUS Romanis (*ibid.*, col. 327), ad clerum de quinque presbiteris qui tamen pacem lapsis dederunt (*ibid.*, col. 250), ad martyres et confessores qui lapsis pacem petierunt dari (*ibid.*, col. 253), ad plebem (*ibid.*, col. 256), ad clerum propter lapsos (*ibid.*, col. 259), clero de his qui ad pacem festinant (*ibid.*, col. 260), ad clerum non temere pacem dandam, ubi et dicit se solum idoneum non esse (*ibid.*, col. 269), ad Caldonium (*ibid.*, col. 372), clero de redditione episcopi urbici (*ibid.*, col. 228), ad clerum de Optato hyppodiacono et Sature lectore (*ibid.*, col. 287), ad Fortunatum et ceteros de his qui per tormenta superantur (*ibid.*, col. 348), ad clerum de cura pauperum (*ibid.*, col. 328), ad martyres et confessores (*ibid.*, col. 245), ad Lucium de exilio reversum (*ibid.*, col. 358), item ad Lucium et qui cum eo sunt (*ibid.*, col. 422).

9. (F. 51^v-53). Oratio CYPRIANI, item oratio beati CYPRIANI quam sub die passionis sue dixit. = *PL.*, t. IV, col. 905.

10. (F. 53-56). De zelo et livore. = *Ibid.*, col. 637.

11. (F. 56-60^v). CIPRIANUS martir de patientia. = *Ibid.*, col. 621.

12. (F. 60^v-65). Sermo beati CIPRIANI de mortalitate. = *Ibid.*, col. 583.

13. (F. 65-71^v). CIPRIANUS martir super orationem dominicam. = *Ibid.*, col. 521.

14. (F. 71^v-75). CIPRIANUS de duobus montibus, monte Syon et monte Syna contra iudeos. = *Ibid.*, col. 909.

15. (F. 75-77). Quod ydola dii non sunt. = *Ibid.*, col. 655.

16. (F. 77-83^v). CIPRIANUS de lapsis. = *Ibid.*, col. 467.

17. (F. 83^v-87^v). CIPRIANUS de habitu virginis. = *Ibid.*, col. 441.

18. (F. 87^v-92). De ecclesie catholice unitate. = *Ibid.*, col. 493.

19. (F. 92-97). De opere et elemosina. = *Ibid.*, col. 601.

20. (F. 97-99^v). Epistola ad Tibaritanos. = *Ibid.*, col. 351.

21. (F. 99^v-106). Epistola ad Fortunatum [de exhortatione martyrii]. = *Ibid.*, col. 651.

22. (F. 106-109). Epistola ad Cecilium de sacramento altaris. = *Ibid.*, col. 372.

23. (F. 109-116^v). S. CIPRIANUS de confessoribus ad Rogatianum (*ibid.*, col. 326), de Numidico confessore (*ibid.*, col. 326), ad Moysen et Maximum confessores (*ibid.*, col. 265), ad eosdem de laude martyrii (*ibid.*, col. 787), ad presbyteros et diaconos (*ibid.*, col. 231).

24. (F. 116^v-142^v). Ad Quirinum [testimonia libri tres adversus iudeos]. = *Ibid.*, col. 675.

25. (F. 142^v-148). Liber beati CIPRIANI ad Anthonianum. = *Ibid.*, col. 347.

26. (F. 148). Epistola Maximi, Urbani, Sydonii et Macharii ad Cyprianum. = *Ibid.*, col. 342.

27. (F. 148-148^v). Table des œuvres de S. Cyprien.

Le feuillet 149 est blanc.

28. (F. 150-174). Epistolae beati AUGUSTINI ad Aurelium de vitandis conviviis (*PL.*, t. XXXIII, col. 90), ad eundem de monachis (*ibid.*, col. 227), ad Alipium senem de conversione Dioscori (*ibid.*, col. 1012), ad Eudoxium insule Caprarie abbatem (*ibid.*, col. 187), ad Celestinum diaconum de charitate (*ibid.*, col. 868), ad Restitutum diaconum de sufferentia malorum in ecclesia (*ibid.*, col. 1065), ad Largum de ammonitione bonorum (*ibid.*, col. 938), ad Bonifatium comitem de exhortatione eterne vite (*ibid.*, col. 992), epistola ad Crisinum (*ibid.*, col. 1059), ad Maximum medicum Thenitanum eunomianistam (*ibid.*, col. 748), ad Evodium de visionibus sompniorum (*ibid.*, col. 698), ad Italicam si corporeus oculus videt substantiam Dei (*ibid.*, col. 318), CONSENTII ad beatum Augustinum (*ibid.*, col. 449), AUGUSTINI ad Consentium responsiva (*ibid.*, col. 452), ad Sixtum presbiterum urbis Rome (*ibid.*, col. 867), eiusdem ad eundem (*ibid.*, col. 874).

29. (F. 175-179). Altercatio beati AUGUSTINI episcopi et comitis Pascentii Arriani Hypone regio praesente Laurentio viro clarissimo iudice ab utrisque partibus electo. = *PL.*, t. XXXIII, col. 1156-62.

30. (F. 179-188^v). Divi AURELII AUGUSTINI Yponensis episcopi contra Felicianum. = *PL.*, t. XLII, col. 1157.

Les feuillets 189-190^v sont blancs.

31. (F. 191-273). Compendium breve et utile aliquarum materia-
rum communium ad fidem et doctrinam catholicam spectantium (1).

32. (F. 273-277^v). Tractatus magistri Iohannis GERSONIS de cogni-
tione castitatis vel de pollutione diurna et eius causis (2).

33. (F. 277^v-288). Opusculum tripartitum de preceptis decalogi, de
confessione et de arte moriendi per eximie sacre theologie profes-
so-rem magistrum IOHANNEM GERSON, alme universitatis parisiensis
cancellarium (3).

34. (F. 288-288^v). Distinctio EIUSDEM magistralis et brevius de modo
excommunicationis et irregularitatum et absolutionis ab eisdem (4)

35. (F. 288^v-291). Tractatus EIUSDEM cancellarii parisiensis contra
sectam flagellatorum sub aliquibus considerationibus (5).

36. (F. 291-294). Tractatus magistri IOHANNIS GERSON de statibus
ecclesiasticis (6).

37. (F. 294-300). Epistola EIUSDEM missa ad provincialem ordinis
Celestinatorum de humanitate Christi et diversis susceptionibus (7).

38. (F. 300-303^v). Tractatus magistri IOHANNIS GERSON cancellarii
parisiensis de unitate ecclesiastica (8).

39. (F. 303^v-304^v). Quaedam decisa EIUSDEM vel secundum alios per
magistrum WILHELMUM BLOCK doctorem circa celebrationem missarum
et valorem misse. *Inc.* Intentio conferentis temporalia est quod pro
eo dicatur missa ad satisfaciendum Deo. *Des.* Ideo qui onus recusat
subire non cupiat lucrum.

40. (F. 304^v-315). Tractatus magistri HENRICI DE GORCHEM sacre
theologie professoris egregii et alme universitatis Coloniensis vice-
cancellarii de sacramento altaris et de effectu Eucharistie in missa
valde notabilis (9).

41. (F. 316-322^v). Tractatus magistri IOHANNIS GERSON de examina-
tione doctrinarum (10).

42. (F. 322-322^v). Exemplum quoddam de seductione mulieris
quod accidit anno millesimo quadringentesimo vicesimo (11).

(1) ELLIES DU PIN, *Ioannis Gersonii opera*, t. I, col. 233 sqq.

(2) *Ibid.*, t. III, col. 335-45.

(3) *Ibid.*, t. I, col. 425 sqq.

(4) *Ibid.*, t. II, col. 403.

(5) *Ibid.*, t. II, col. 660.

(6) *Ibid.*, t. II, col. 529.

(7) *Ibid.*, t. I, col. 450-57.

(8) *Ibid.*, t. II, col. 113.

(9) FABRICIUS-MANSI, *Bibl. lat. med. et inf. aet.*, t. III, p. 215.

(10) ELLIES DU PIN, *Ioannis Gersonii opera*, t. I, col. 7.

(11) *Ibid.*, t. I, col. 19.

43. (F. 322^v-328). Collatio de Ioseph et Maria eius sponsa magistri IOHANNIS GERSON in concilio Constantiensi facta in festo Nativitatis beate Marie Virginis ad laudem eiusdem (1).

Parchemin; 328 feuillets, plus trois de garde; 0^m,33 × 0^m,22; XV^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et bleues; signatures; diverses écritures. Ce volume provient de Rouge-Cloître, dont il y a la cote de bibliothèque *A primum*, au verso du troisième feuillet de garde. L'estampille rouge, *R. F.*, de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 3 et 328. Reliure ancienne, ais de bois recouverts de veau estampé avec la marque *Roedencloester* (2); restes de fermoirs en cuivre.

921. (9376). — S. CYPRIANUS. Epistolae.

1. (F. 1). Tabula huius libri.
2. (F. 1-1^v). De baptizandis hereticis. = *PL.*, t, III, col. 1035.
3. (F. 1^v-4). CYPRIANUS de duobus montibus Syna et Syon. = *PL.*, t. IV, col. 909.
4. (F. 4-7). CYPRIANUS ad Donatum. = *Ibid.*, col. 192.
5. (F. 7-10^v). CYPRIANUS de habitu virginum. = *Ibid.*, col. 441.
6. (F. 10^v-16^v). CYPRIANUS de lapsis. = *Ibid.*, col. 467.
7. (F. 16^v-22^v). CYPRIANUS de oratione dominica. = *Ibid.*, col. 521.
8. (F. 22^v-27). CYPRIANUS de unitate catholice ecclesie. = *Ibid.*, col. 493.
9. (F. 27-31^v). CYPRIANUS adversus Demetrianum hereticum. = *Ibid.*, col. 544.
10. (F. 31^v-35). CYPRIANUS de mortalitate. = *Ibid.*, col. 583.
11. (F. 35-38^v). CYPRIANUS de elemosina et opere. = *Ibid.*, col. 601.
12. (F. 38^v-42^v). CYPRIANUS de bono patientie. = *Ibid.*, col. 626.
13. (F. 42^v-45). CYPRIANUS de zelo et livore. = *Ibid.*, col. 637.
14. (F. 45-49^v). CYPRIANUS ad Antonianum. = *Ibid.*, col. 347.
15. (F. 49^v-52^v). CYPRIANUS de sacramento calicis. = *Ibid.*, col. 372.
16. (F. 52^v-53). CYPRIANUS ad Rogatianum de confessoribus. = *Ibid.*, col. 326.
17. (F. 53-54). CYPRIANUS ad Cornelium. = *PL.*, t. III, col. 851.
18. (F. 54-54^v). CYPRIANUS item ad Cornelium. = *Ibid.*, col. 731.
19. (F. 54^v-55). CYPRIANUS de Numidico confessore. = *Ibid.*, col. 324.
20. (F. 55-56^v). CYPRIANUS de Marciale et Basilide. = *Ibid.*, col. 402.
21. (F. 56^v-57). CYPRIANUS ad Moysen et Maximum presbiteros. = *Ibid.*, col. 265.
22. (F. 57-61^v). CYPRIANUS ad eosdem de laude martyrii. = *Ibid.*, col. 787.

(1) *Ibid.*, t. III, col. 1345.

(2) Cf. [J. WEALE], *Bookbindings*, p. 173, n. 340.

23. (F. 62-64). Exhortatio CYPRIANI ad martyres. = *Ibid.*, col. 349.

24. (F. 64-67). CYPRIANUS ad Fortunatum. = *Ibid.*, col. 651-56, 667-76.

Parchemin; 67 feuillets, plus cinq de garde; 0^m,35 × 0^m,237; XVI^e siècle (1522), car on lit f. 67 : *Per N. Ioannem Piscatorem scriptus. 1522. Visi[tatione] Marie*; deux colonnes; grandes initiales en bleu; signatures *at-h5*. Ce volume provient de Saint-Laurent à Liège, car la cote de cette bibliothèque *MM. 3-3* se trouve f. 1. On voit l'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris, aux faisceaux, f. 1. Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré, fort inexact, reproduit à l'intérieur sur une étiquette en maroquin rouge : *Cypriani epistolae. Ambrosius in Lucam XII. saec.*; en dessous, les armes de Belgique et l'inscription : *Bibl. royale*.

922. (706-07). — S. CYPRIANUS. Opera.

1. (F. 1). Table des matières.

2. (F. 2-5^v). [CECILII CIPRIANI ad Donatum]. *Inc. mutil. celitus spiritus hausto in novum.* = *PL.*, t. IV, col. 192.

3. (F. 5^v-8^v). CECILII CIPRIANI martiris de eo quod idola dii non sunt. = *Ibid.*, col. 655.

4. (F. 8^v-14^v). CECILII CIPRIANI martiris de disciplina et habitu virginum. = *Ibid.*, col. 441.

5. (F. 15-19). CECILII CIPRIANI martiris de bono pudicitie. = *Ibid.*, col. 819.

6. (F. 19-28^v). CECILII CIPRIANI epistola de lapsis. = *Ibid.*, col. 467.

7. (F. 28^v-36^v). CECILII CIPRIANI martiris de ecclesiae unitate. = *Ibid.*, col. 493.

8. (F. 36^v-43^v). CECILII CIPRIANI martiris de patientia. = *Ibid.*, col. 621.

9. (F. 43^v-48^v). CECILII CIPRIANI de zelo et livore. = *Ibid.*, col. 637.

10. (F. 48^v-55^v). CECILII CIPRIANI ad Demetrianum. = *Ibid.*, col. 543.

11. (F. 55^v-62). CECILII CIPRIANI martiris de mortalitate. = *Ibid.*, col. 583.

12. (F. 62-72^v). CECILII CIPRIANI martiris de exhortatione martirii ad Fortunatum. = *Ibid.*, col. 651.

13. (F. 72^v-74^v). CECILII CIPRIANI martiris de deprecando pro peccatis. = *Ibid.*, col. 240.

14. (F. 74^v-80^v). CECILII CIPRIANI ad Novatianum hereticum. = *PL.*, t. III, col. 1205.

15. (F. 81-90). CECILII CYPRIANI de dominica oratione. = *PL.*, t. IV, col. 521.

16. (F. 90-97^v). CECILII CIPRIANI de opere et elemosinis. = *Ibid.*, col. 501.

17. (F. 97^v-98^v). CECILII CYPRIANI ad Tyberianos. — F. 98, il y a cette note marginale : *Hic plus quam dimidium epistole istius deest.* = *PL.*, t. IV, col. 351.

18. (F. 98^v-103). CECILII CIPRIANI episcopi et martiris gloriosi ad Cęcilium de sacramento corporis et sanguinis Domini. = *Ibid.*, col. 372.

19. (F. 104-105^v). Epistola Sancti IOHANNIS CRISOSTOMI ad Ciriacum episcopum. = *PG.*, t. LI, col. 681-85.

Parchemin; 105 feuillets, plus deux de garde; 0^m,307 × 0^m,215; XVI^e siècle (1561), car on lit f. 105^v: *Anno ab inundante diluvio IIIIM. Vc. LXP libri huius ornamenta claruere*. Très jolies initiales ornées de dessins variés et rehaussées d'or, écriture romaine renouvelée. F. 62, on lit dans un médaillon, en capitales dorées: *In Colonia Michaelis Forestii Gallici opus pro reverendo doctore Paulo de Gherislem M. N. divinarum et humanarum rerum scrutatore*. Cette note est reproduite plus bas, par deux fois, et f. 103, il y a l'explicit: *Cecilię Cipriani Cartaginensis episcopi et martiris epistolarum liber explicit feliciter in Colonia. M. F. F. 1*, on lit: *Liber domus Sanctę Barbare in Colonia ordinis Carthusiensis ex legatione magistri Pauti de Gerislem sacre theologie professoris*. L'estampille rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris, se trouve f. 2 et 105^v. Reliure ancienne, veau raciné et estampé.

923. (10846-47). — ARNOBIUS. *Contra gentes*.

1. (F. 1). *De sex etatibus*.

2. (F. 1^v-70). *Liber ARNOVII contra gentes*. = *PL.*, t. V, col. 718 sqq.

3. (F. 70^v-82). [MARCII MINUCHII FELICIS Octavii]. = *PL.*, t. III, col. 239 sqq.

Parchemin; 82 feuillets; 0^m,225 × 0^m,18; XII^e siècle. Au sujet de sa provenance, ce manuscrit renferme les notes suivantes, sur le premier feuillet de garde: *Iohannes Livineius cathedralis Antverp. canonicus et cantor, aliquot pagellis perturbatum codicem in ordinem componebat M.D.XCVIII*; au verso de ce feuillet et f. 1, il y a la cote ✱ *MS. 67* de la bibliothèque des anciens hollandistes; f. 1, on lit: *Colleg. Societ. Iesu Antverp. D. P. 1599* et en dessous, van Hulthem a écrit: *Bibliotheca publ. Bruxellensis, 1774. Codex a Gallis ablatus 1794, Bibliothecę Bruxell. restituitur 18 Xbris 1815*. Reliure du XVII^e siècle, veau raciné; au dos, le titre doré: *Arnobius contra gentes*.

924. (7811). — LACTANTIUS. *Opera*.

1. (F. 1^v-185^v). *Divinarum institutionum libri VI*. = *PL.*, t. VI, col. 111 sqq.

2. (F. 186). [S. AUGUSTINI fragmentum de extremo iudicio]. = *Ibid.*, col. 821.

3. (F. 186-204^v). *De ira Dei*. = *PL.*, t. VII, col. 77 sqq.

4. (F. 204^v-222^v). *De opificio hominis*. = *Ibid.*, col. 9 sqq.

5. (F. 222^v-223). AUGUSTINUS, de Lactantii operibus, HIERONYMUS de eodem; HIERONYMUS de viribus illustribus, de Lactantio.

Parchemin; 223 feuillets; 0^m,32 × 0^m,22; XV^e siècle; écriture italienne; le f. 2 est richement enluminé; initiales rouges et bleues. Ce volume provient de Tongerlo, car f. 2, on lit: [*Liber bibliothecę Tongerloensis, 1708*]. Reliure du XVII^e siècle, veau brun estampé, fermoirs en cuivre; tranche verte.

925. (9534-36). — EUSEBIUS. *Historia ecclesiastica*.

1. (F. 1-122^v). *Ecclesiastica historia EUSEBII Cesariensis* (1).
2. (F. 123-136^v). *Reductorium morale super libros Machabeorum*.
3. (F. 137-175). SIMONIS DE CASSIA ordinis divi Augustini de gestis Salvatoris super evangelia libri duo (2).

Parchemin; 175 feuillets; 0^m,317 × 0^m,23; X^e siècle, sauf les feuillets 1-7, 35, 36, 56-68, 79-86, 93-98, 115-175, qui sont du XV^e, d'après les notes f. 122^v : *Finita per fratrem Gerardum de Gynghelim monachum professum et sacristam monasterii sancti Laurentii extra muros leodienses, anno Domini M^o. cccc^o xliiii^o, xxii^o die mensis maii, orate pro eo*, et f. 136^v : *Scripta per manus fratris Gerardi de Gynghelim, anno Domini millesimo cccc^o. xxxvi^o, xxviii^o novembris*. Deux colonnes; quelques curieuses letrines. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 1 et f. 175^v. Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré : *Eusebii historia ecclesiastica, Reductorium morale, de gestis Salvatoris*, reproduit à l'intérieur sur une étiquette de maroquin rouge; plus bas, les armes de Belgique et l'inscription : *Bibl. royale*.

926. (3363). — EUSEBIUS. *Chronicon*, interprete HIERONYMO.

1. (F. 1-3^v). *Epistola EUSEBII HIERONYMI ad Vincentium et Gallienum*. = *PL.*, t. XXVII, col. 33-40.
2. (F. 4-9^v). *EUSEBII praefatio interpretata*. = *Ibid.*, col. 39-62.
3. (F. 10^v-165^v). *EUSEBII Chronicon*. = *Ibid.*, col. 77 sqq.
4. (F. 166^v). *Epistola MIRAËI ad Heribertum Rosweydam*.
5. (F. 167-168). *Index in Chronicon Eusebii Pamphili*.

Papier; 168 feuillets, plus dix-neuf et vingt-deux feuillets blancs au commencement et à la fin; 0^m,31 × 0^m,20; XVIII^e siècle. Ce volume provient de l'ancienne bibliothèque des hollandistes, il y portait la cote *L. 32*, qui se trouve au verso de la couverture. Reliure parchemin.

927. (9485-88). — EUSEBIUS. *Chronicon*.

1. (F. 1-5^v). *Tableaux généalogiques des descendants d'Adam, de Noé et d'Abraham*.
2. (F. 6-54^v). *Cronica EUSEBII et HIERONIMI, cronographia PROSPERI*. = *PL.*, t. XXVII, col. 77 sqq.
3. (F. 55-96^v). [*MARTINI POLONI chronicon*] (3).

En tête du volume, formant le n. 9485, se trouve une plaquette imprimée : *Ioannis Chifletii canonici Tornacensis τοῦ μακαρίτου*,

(1) Version de Rufin. Cf. HARNACK, *Geschichte der altchristlichen Litteratur*, t. I, p. 563.

(2) Voir sur les éditions de cet opuscule, OSSINGER, *Bibliotheca Augustiniana*, p. 215.

(3) Sur les éditions de cette chronique voir POTTHAST, *Bibl. hist. med. aevi*, 2^a ed., 1896, t. I, p. 771-72.

iudicium de fabula Ioannae papissae. Antverpiae, ex officina Plantiniana, 1666.

Parchemin; 96 feuillets, plus trois de garde; 0^m,337 × 0^m,24; XV^e siècle, car f. 54^r, on lit cette note : *Anno Domini M. cccc. lxxi. olimpiade ccc. x. ab inicio mundi v^m. vi^e. lxxix, ut patet ex precedentibus sub Frederico 3^o, centesimo et vicesimo imperatore ab Octaviano sub romano pontifice Paulo 2^o, 212^o a beato Petro apostolo.* Quelques lettrines très soignées en toutes couleurs; initiales rouges et bleues. F. 6, on lit : *Bibliothecae Ioan. Iac. Chifletii 1650*, et f. 2 : *Collegii Societatis Iesu Bruxellis MB. Dono clarissimi domini Ioannis Iacobi Chifletij anno 1663.* L'estampille rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris, se trouve f. 96^r. Reliure, veau brun raciné, à filets d'or; au dos, le titre doré : *Martini Pol. hist.*; tranche rouge.

928. (3364). — EUSEBIUS. Chronicon.

Traduction de S. JÉRÔME. = *PL.*, t. XXVII, col. 77 sqq.

Papier; 10 feuillets; 0^m,215 × 0^m,165; XVIII^e siècle.

929. (8234). — EUSEBIUS. De martyribus Palaestinae.

TITRE. Ex codice Vaticano n^o 6263, pag. 1^a. EUSEBIJ Pamphili opusculum de martyribus qui Cesaree Palestine sub Diocletiano et Maximino passi sunt VINCENTIO MARINERIO VALENTINO interprete (1).

Papier; 51 feuillets, plus deux de garde en tête et deux à la fin du volume; 0^m,275 × 0^m,197; XVII^e siècle. Reliure veau raciné.

930. (19076). — S. ATHANASIUS (2). Liber contra hereticos Arrium, Sabellium et Fotinum. = *PL.*, t. LXII, col. 179 sqq. *Des. mutil.* Confusio Sabellii : nature apertius... (col. 235, n. X).

Parchemin; 39 feuillets; 0^m,258 × 0^m,163; XIII^e siècle; signatures A₁-A₃. Reliure moderne, peau de chamois.

931. (2573-75). — ATHANASIUS. Opera.

1. (F. 1-62). Altercatio ATHANASII gloriosissimi Alexandrinorum contra Arrium, Sabellium, Fotinum hereticos de fide sancte Trinitatis. = *PL.*, t. LXII, col. 179 sqq.

2. (F. 63-92). [MARTINUS Laudunensis]. Exhortacio ad constanciam suscepti propositi cuidam novicio Carthusiensi directa (3).

3. (F. 92^v). Epistola PETRI Blesensis invectiva in quendam qui ab ordine Carthusiensi recessit. = *PL.*, t. CCVII, col. 262.

(1) Cf. HAGIOGR. BOLLAND., *Bibl. hagiogr. graeca*, p. 86.

(2) En fait, ce traité est de Vigile de Tapse.

(3) Cette lettre a été publiée dans *Maxima Patrum Bibliotheca*, t. XXVII, cf. J. VAN DEN GHEYN, *Catalogue des manuscrits de la Bibliothèque royale de Belgique*, t. I, p. 210, n. 375 (II. 2320).

Papier, filigrane de la lettre *P*; 92 feuillets; 0^m,21 × 0^m,135. Au verso de la couverture, on lit : *Liber fratrum carthusiensium prope Wesaliam*, f. 1 : *Liber Carthusiae Wesaliensis*, de même sur le dernier feuillet de garde : *Liber fratrum Carthusiensium prope Wesaliam*. L'estampille rouge de la Bibliothèque impériale de Paris se trouve f. 1 et 92^v. Reliure ancienne, veau brun estampé.

932. (1831-33). — S. EPHREM. De iudicio Dei.

1. (F. 1). [Sermon]. *Inc. mutil.* ... misericordiam tuam, et fac me participem latronis illius. *Des.* gloria Spiritui sancto qui renovavit nos in infinita secula seculorum. Amen.

2. (F. 1-38). Liber domni EFFREM de iudicio Dei et de resurrectione et de regno celorum (1).

3. (F. 38^v-39). Miraculum per sanctum Hilarium in sinodo Romae ostensum. = *BHL.*, n. 3893.

4. (F. 39). Quidam flos de vitis Patrum. [De Iohanne abbate parvulo].

Inc. In gestis patrum veterum
Quoddam legi ridiculum.

Des. Cum angelis non potuit,
Vir bonus esse meruit.

5. (F. 39-39^v). [De camera Christi]. *Inc.* Camera Christi cum homine Dei. *Des.* ut inveniatur in nobis talem mansionem. Qui vivit et regnat per secula. Amen.

6. (F. 40-140^v). [HINCMARUS. Contra Gotescalcum]. = *PL.*, t. CXXV, col. 473-618.

7. (F. 141-141^v). Fragment du traité de S. AUGUSTIN, *In Iohannem*, tr. XXIX, § 4 sqq., = *PL.*, t. XXXV, col. 1629-30.

Parchemin; 141 feuillets; 0^m,26 × 0^m,22; X^e siècle; signatures I-XIII. Ce volume provient de l'ancienne bibliothèque des bollandistes, dont il porte l'ex-libris **Ms. 116.*, au revers de la couverture. Reliure ais de chêne brut.

933. (2750-65). — S. EPHREM. Homeliae.

1. (F. 1-8). Omelia sancti EFFREM de futuro iudicio.

2. (F. 8^v-16). [Omelia sancti EFFREM].

3. (F. 16^v-21). [Omelia sancti EFFREM].

4. (F. 21-27). Omelia sancti EFFREM dyaconi.

5. (F. 27^v-33). Omelia beati EFFREM dyaconi.

6. (F. 33-41^v). Omelia sancti EFFREM diaconi (2).

7. (F. 42-67^v). [REGINO PRUMIENSIS]. Tonarius (3).

(1) Cf. *Sancti Ephraem Syri opera omnia*, Romae, 1732, t. I, col. LXXXI, n. 5.

(2) Cf., pour ces six homélies, *ibid.*, t. I, col. LXXXI, nn. 4-8 et 1.

(3) Sur l'œuvre musicale de Reginon de Prum, voir GERBERT, *Scriptores*, t. I, p. 230 et E. DE COUSSEMAKER, *Scriptorum de musica medii aevi nova series*, qui, t. II, p. 1-72, a reproduit ce manuscrit.

8. (F. 67^v-77). [S. HIERONYMUS]. De Deo, de Filio Dei, de Spiritu sancto. = *PL.*, t. XXIII, col. 1305-8.

9. (F. 77-77^v). Antiennes diverses, entre autres *de sancto Quirino*.

10. (F. 78-82). Vita sancti Hugberti episcopi. = *BHL.*, n. 3994 (1).

11. (F. 82^v-89^v). Chartes concernant les abbayes de Stavelot et de Malmédy (2).

a) De officio advocatie ecclesie Malmundariensis comiti de Lusceleburch concessio.

b) Diploma SIGEBERTI, regis Francorum.

c) Confirmatio GRIMOALDI de villa Germiniaci data S. Remaclo.

d) Diploma SIGEBERTI.

e) Praeceptum CHLODOVEI regis Papolino abbati.

f) Praeceptum THEODORICI regis abbati Godoino.

g) Praeceptum HLUDOWICI regis abbati Wirundo.

12. (F. 89^v-104). Vita seu transitus sancti Gregorii pape urbis Rome. = *BHL.*, n. 3640.

13. (F. 104^v). Charte de l'abbé Henri de Stavelot, 1309.

14. (F. 105-111^v). Vita S. Hieronymi presbyteri. = *BHL.*, n. 3869.

15. (F. 111^v-130^v). Expositio in canticis canticorum ... domni GREGORII pape urbis Rome. = *PL.*, t. LXXIX, col. 267.

16. (F. 131-138). Sermons et notes divers.

17. (F. 138^v-153). Vita S. Severini Coloniensis episcopi et confessoris. = *BHL.*, n. 7648.

18. (F. 154-186^v). Vita beatissimi Mauri monachi. = *BHL.*, n. 5773.

Parchemin, en grande partie palimpseste ; 186 feuillets ; 0^m,23 × 0^m,15 ; X^e-XIII^e siècle ; les ff. 46-63 sont à deux colonnes. Ce volume provient probablement de l'abbaye de Stavelot (3) ; l'estampille rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 1 et 186^v. Reliure ancienne, ais de chêne frustes ; sur le premier plat on a découpé dans le bois, d'une façon grossière, ces mots : *In adventum Domini* (4).

934. (21205-09). — S. EPHREM. Opera.

1. (F. 1-1^v). Contenta in hoc libro.

2. (F. 2-9^v). Liber sancti CYPRIANI martiris de duodecim abusivis seculi. = *PL.*, t. IV, col. 869-82.

(1) Cf. *Catal. codd. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. I, p. 345.

(2) La première et la troisième de ces chartes semblent inédites, les cinq autres sont publiées dans MARTENE ET DURAND, *Veterum scriptorum ... amplissima collectio*, t. II, col. 7, 6, 14, 12, 23. Cf. PERTZ, *Archiv*, t. VII, pp. 835, 841 ; *Bulletin de la Commission royale d'histoire*, t. IV, 1841, p. 76 ; *ibid.*, V^e série, t. VII, 1897, p. 8.

(3) MARTENE ET DURAND, *op. cit.*

(4) Voir une description de ce volume dans FÉTIS, *Biographie universelle des musiciens*, t. VIII, p. 178 ; *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. I, p. 345.

3. (F. 10-10^v). Oratio sancti EFFREM quam libris sequentibus prae-
posuit (1).
4. (F. 10^v-15). Libri domni EFFREM de iudicio Dei et resurrectione et
de regno celorum (2).
5. (F. 15-18). EIUSDEM de beatitudine anime (3).
6. (F. 18-21^v). EIUSDEM de penitencia (4).
7. (F. 22-25^v). Eiusdem domni EFFREM in luctaminibus (5).
8. (F. 25^v-30^v). Eiusdem domni EFFREM de die iudicii (6).
9. (F. 30^v-57). Monita sancti EFFREM (7).
10. (F. 57-58^v). Divers extraits très courts.
11. (F. 58^v-65^v). Sentencie de diversis opusculis beati IERONIMI
pertinentes ad monachos.
12. (F. 65^v-71). Legenda beati Lazari martiris. = *BHL.*, n. 4802.
13. (F. 71-71^v). Prières diverses indulgenciées par le pape Jean XXII.
14. (F. 71^v-73^v). De gloria coniugatorum, de gloria martirum, de
gloria canonicorum.
15. (F. 74-84^v). Liber pastoris nuncius penitencie.
16. (F. 84^v-125^v). Pastor nuncius penitentie de XII mandatis cum
similitudinibus (8).
17. (F. 126-148). Flosculi paradisi, ex manipulo florum IOHANNIS
VALEIS alias Galensis (9).

A la fin de ce traité, on lit cette note, f. 148 : *Nota quod est liber quidam cuius titulus est Flores paradysi, et habetur in monasterio Vallis sancti Lamberti ordinis Cysterciensis prope Leodium, et puto quod isti flosculi non sunt excepti ex illo libro, sed placuit fratri Leodiensi qui istos scripsit ponere pro titulo Flosculi paradisi, sed posui pro titulo Flosculi seu excepta secundum ordinem alphabeti. Habentur*

(1) *Opera S. Ephrem*, t. I, col. LXXXI, n. 3.

(2) *Ibid.*, n. 5.

(3) *Ibid.*, n. 6.

(4) *Ibid.*, n. 8.

(5) *Ibid.*, n. 7.

(6) *Ibid.*, n. 4.

(7) *Ibid.*, n. 1.

(8) Sous ces deux rubriques (nn. 15 et 16), on a ici la *Versio vulgata* du célèbre *Pasteur d'Herma*s, souvent publiée du reste. Sur les éditions et les manuscrits, voir O. DE GEBHARDT-HARNACK, *Patrum apostolicorum opera*, fasc. III, Lipsiae, 1877, p. XII-XXIV; AD. HARNACK, *Geschichte der altchristlichen Litteratur*, Leipzig, 1893, t. I, p. 50-51; F. X. FUNK, *Patrum apostolici*, Tubingae, 1901, p. CXLIII-IV; H. DELEHAYE, *Un manuscrit de l'ancienne version latine du Pasteur d'Herma*s, dans *Bulletin critique*, t. XV, 1894, p. 14-16.

(9) Au sujet de *Iohannes Valensis*, *Galensis* ou *Gualensis* et l'édition de son traité *Manipulus florum*, voir ANTONIUS, *Bibliotheca universa franciscana*, t. II, p. 227.

etiam in narratione Anselmi de mirabilibus mundi et scripsit illa excerpta frater Iacobus dictus Cylar de Hoyo.

Les feuillets 148^v-149^v sont blancs.

18. (F. 150-162). Excerpta de exhortationibus sanctorum patrum.

19. (F. 163-167^v). Hore de compassione Domini et dolore beate Marie Virginis... edita sanctissimo domino nostro papa Iohanne XXII^o.

Papier; 167 feuillets; 0^m,215 × 0^m, 135; XV^e siècle; signatures 1-xx. F. 148, on lit : *Istum librum fecit scribi nonnus Iudetus monachus huius loci. Orate pro eo.* F. 1^r, il y a la note : *Liber monasterii sancti Iacobi Leodiensis*, et à l'intérieur du second plat de la couverture : *Iste liber est ecclesie sancti Iacobi in leodio*, et f. 2, il y a les anciennes cotes *E. 91, B. 75* de cette bibliothèque. Reliure veau raciné, avec le titre doré : *Ciprianus de 12 abusionibus sacculi. Ms. B. 75.*

935. (II. 2561). — S. HILARIUS. Opera.

1. (F. 2-109^v). HYLARI Pictaviensis episcopi contra Arrianos de Trinitate libri XII. = *PL.*, t. X, col. 23.

2. (F. 109^v-124^v). Liber beati HYLARI episcopi contra omnes hereses. = *Ibid.*, col. 479.

3. (F. 124^v-129^v). Liber sancti HYLARI episcopi contra Constantium Augustum. = *Ibid.*, col. 577.

4. (F. 129^v-130^v). Liber sancti HILARI episcopi ad Constantium. = *Ibid.*, col. 557-64.

5. (F. 131-132). EIVSDEM ad eundem quem Constantinopoli eidem ipse tradidit. = *Ibid.*, col. 563-72.

6. (F. 132-132^v). Exemplum blasphemie Auxentii. = *Ibid.*, col. 617-18.

7. (F. 132^v-134). Liber sancti HILARI episcopi adversus Arrianum Auxentium Mediolanensium episcopum. = *Ibid.*, col. 609-17.

Parchemin; 134 feuillets, plus dix de garde en papier; 0^m,36 × 0^m,25; XII^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et bleues; signatures 1-xvi. Au premier feuillet, une note de l'abbé F. A**^(LLARD) sur le contenu de ce manuscrit, et la cote *Phillipps MS. 23027*. Ce volume a été acquis par la Bibliothèque royale en 1900. Reliure parchemin.

936. (10784-86). — S. HILARIUS. Opera.

1. (F. 1). Index.

2. (F. 1^v-137). Sancti HILARI de Trinitate. = *PL.*, t. X, col. 23 sqq.

3. (F. 137-155^v). De synodis fidei catholice contra Arrianos. HILARIUS. = *Ibid.*, col. 479.

4. (F. 155^v-156^v). Epistola eiusdem HYLARI ad catholicos de Auxentio. = *Ibid.*, col. 609. *Des. mutil.* divinitatis atque substantie esse.... (col. 616, n. 11).

Parchemin; 156 feuillets; 0^m,26 × 0^m,158; XIII^e siècle; signatures r-xx en rouge. F. 1, il y a la note: *Liber Sancti Laurentii extra muros Leodienses*. Le timbre rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris, se trouve f. 1 et f. 156^v. Reliure moderne; peau de truie estampée, avec l'inscription en relief sur les plats: *Regia Bibl. Belgica*.

937. (11354). — S. BASILE et S. GRÉGOIRE DE NYSSE. In Hexaemeron; en grec.

1. (F. 1-73). BASILII magni Hexaemeron. = *PG.*, t. XXIX. *Inc. mutil.* (col. 9, n. 3) ... ἐπίπεδον λέγω σχῆμα τὸ ὑπὸ μιᾶς γραμμῆς περιεχόμενον.

2. (F. 74-124^v). Τοῦ ἐν ἀγίοις πατρὸς Γρηγορίου ἀρχιεπισκόπου Νύσσης ἢ γένεσις. = *PG.*, t. XLIV, col. 125-240. *Des. mutil.* (col. 240, in fine cap. xxix) ἀλλὰ συντηρούσας ἐν ἑαυταῖς κεκρυμμένην μὲν, ζῶσαν ...

Parchemin; 124 feuillets; 0^m,181 × 0^m,125; XIII^e siècle. F. 1, il y a la note *D. P. Societatis Iesu Antv.*; au dos et au revers de la couverture l'ex-libris des anciens hollandistes ✱ *MS 150*. Reliure vélin, fermoirs en cuir, tranche rouge.

938. (11357). — S. BASILIUS. Contra Eunomium, en grec.

Τοῦ ἐν ἀγίοις πατρὸς ἡμῶν ἀρχιεπισκόπου Καισαρείας Καππαδοκίας Βασιλείου μεγάλου λόγος ἀντιρητικός κατὰ τοῦ δυσεβοῦς Εὐνομίου. = *PG.*, t. XXIX, col. 498 sqq.

Papier; 128 feuillets; 0^m,195 × 0^m,130; XVI^e siècle. Sur le premier feuillet de garde, on lit: *Iohannes Livineus cathedralis Antverpiensis canonicus et cantor. Redemi ex libris Ioh. Doverini, patricii Bruxellensis, ac Leodiensis canonici, 1593, Leodij*, et f. 1: *Collegij Societatis Iesu Antverpie D. P.* L'estampille rouge *R. F.* de la bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 1 et f. 128. Élégante reliure du XVII^e siècle, veau brun estampé, fers dorés, tranche en couleur (1).

939. (10274-80). — S. BASILIUS. Opera.

1. (F. 1). Index.

2. (F. 2-12). Disputatio fidei inter Arrium hereticum et Athanasium diaconum. = *PL.*, t. LXII, col. 155.

3. (F. 12-13). Excarpsum de ecclesiastica historia de condemnatione Arrii. = *PL.*, t. XXI, col. 467-69, 472, 484-86.

4. (F. 13^v-18). Vita sancti Hieronimi presbyteri. = *BHL.*, n. 3871.

5. (F. 18-19). [Capitulare Aquisgranense anni 817 de regularibus monasteriis] (3).

(1) Ce volume et le précédent ont été décrits par H. OMONT, *Catalogue des manuscrits grecs de la bibliothèque royale de Bruxelles*, p. 12, nn. 15 et 16.

(2) Cf. *PG.*, t. XXVIII, col. 459 sqq.

(3) Publié *MG.*, Legum sectio II, Capitularia regum Francorum, t. I, p. 344 sqq.

6. (F. 19). [Duae epistolae GREGORII magni]. Fragments. = *PL.*, t. LXXVII, col. 578.

7. (F. 19^v). Fragments d'hymnes notées : *Salve sancta parens... Recordare, virgo mater... Ave regina caelorum.*

8. (F. 20-70^v). Dialogus BASILII et Iohannis.

9. (F. 71-94). Apologeticum GREGORII NAZANZENI de greco in latinum translatum (1).

10. (F. 94^v-99). Sancti AMBROSII de dignitate sacerdotali seu cura pastorali libellus. = *PL.*, t. XVII, col. 567.

11. (F. 99^v). Ex concilio Bonifacii pape ... quod liceat monachis sacerdotali officio ministrare.

12. (F. 99^v). Ex decreto beati Gregorii pape.

13. (F. 100-100^v). Messe de S. Lambert, avec séquence. = *RH.*, n. 10172.

Parchemin; 100 feuillets; 0^m,295 × 0^m,215; XII^e siècle; les feuillets 2-19 et 100 sont à deux colonnes. Ce volume provient de Saint-Laurent à Liège, car f. 1, il y a la cote *MM.*, 4-9 de cette bibliothèque. L'estampille rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 1 et 100^v. Reliure veau raciné (2).

940. (II. 1134). — S. BASILIUS. Opera.

1. (F. 1-2^v, 153-154^v). Fragments de bréviaire.

2. (F. 3-24^v). Omelie EUSEBII Cesariensis ad monachos (3).

3. (F. 24^v-26^v). Sermo FAUSTI ad monachos. = *PL.*, t. LXVII, col. 1059.

4. (F. 26^v-29). Sermo EIUSDEM. = *Ibid.*, t. LVIII, col. 883.

5. (F. 29-31). Sermo EIUSDEM. = *Ibid.*, t. LXVII, col. 1069.

6. (F. 31-42^v). Liber sancti BASILII ad monachos.

7. (F. 42^v-97^v). Regula sancti Patris nostri BASILII Cesariensis episcopi (4).

8. (F. 97^v-105). Ex dictis Patrum.

9. (F. 105-129). AURELII CASSIODORI ... de anima. = *PL.*, t. LXX, col. 1279.

10. (F. 129-134^v). Liber PHILIPPI abbatis de salute primi hominis. = *PL.*, t. CCIII, col. 593.

11. (F. 135-144^v). Liber SENECE de verborum copia (5).

(1) Cf. *PG.*, t. XXXV, col. 407 sqq.

(2) Voir *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. II, p. 393-94.

(3) Publié dans *Maxima Patrum Bibliotheca*, Lugduni, 1677, pp. 656-61, 664-66, 661-64.

(4) Voir le manuscrit suivant n. 942 (4922-24) nn. 3 et 4.

(5) Sur ce traité, qui est attribué à Martin de Braga, voir CASPARI, *Martin von Bracara*, p. xxxii sqq. et B. HAURÉAU, *Notices et extraits de quelques manuscrits de la Bibliothèque nationale*, t. II, 1891, p. 195 sqq.

12. (F. 144^v-147). Epistole SENECE ad Paulum et Pauli ad Senecam (1).

13. (F. 147-150^v). SENEGA Lucillo (2).

14. (F. 150^v-151^v). Ammonitio beati MACHARII abbatis ad monachos. = *PL.*, t. LXVII, col. 1163.

15. (F. 151^v-152). De penitentia monachi et secularis. = *Ibid.*, t. LVIII, col. 875.

16. (152-152^v). De laude et utilitate psalmodum.

Parchemin; 154 feuillets; 0^m,212 × 0^m,14; XIII^e siècle. F. 3 et f. 152^v, il y a la note : *Liber sancte Marie de Alna* (3). Plus tard, ce volume a fait partie de la collection Phillips avec la cote 4715 et a été acquis par la Bibliothèque royale en 1888. Demi-reliure, toile anglaise; au dos, le titre doré : *Eusebii Caesariensis omeliae*.

941. (4404). — S. BASILIUS. In Hexameron.

1. (F. 1). Prefacio EUSTACH in exameron beati Basillii episcopi. = *PG.*, t. XXX, col. 869.

2. (F. 1-57). Exameron beati Basillii episcopi Cesaree. = *Ibid.*, col. 870-968.

Les feuillets 57^v et 58 sont blancs.

3. (F. 58^v). Fragment d'hymne à la croix.

Inc. Inclita perpetuis, o crux veneranda, diebus.

Parchemin; 58 feuillets, plus huit feuillets blancs au commencement du volume; 0^m,222 × 0^m,142; XV^e siècle. F. 58^v, on lit : *F. Philippus de Bruxella religiosus sancti Michaelis in Antverpia*. Demi-reliure moderne, dos en maroquin rouge.

942. (4922-24). SS. BASILIUS, PACHOMIUS. Regulae.

1. (Feuille de garde et f. 1-1^v). Fragments de vers mnémotechniques sur les livres de l'Ancien Testament.

2. (F. 3-8). Capitula in regulam sancti Basillii antistitis.

3. (F. 8^v-89^v). Regula sancti patris nostri BASILLI episcopi (4).

4. (F. 90-108). Epistola EIUSDEM super institutionem monachorum (5).

5. (F. 108^v-110^v). Prologus sancti IERONIMI presbiteri in regulam sancti Pachomii abbatis (6).

6. (F. 111-114). Capitula in regulam beati patris nostri Pachomii.

(1) Cf. A. HARNACK, *Geschichte der altchristlichen Litteratur*, 1893, t. I, p. 763-65.

(2) Epistola XXIV, p. 65-71, des L. ANNAEI SENECAE *philosophi epistolae quae exstant, ex recensione I. Lipsii et Io. Fr. Gronovii*. Lugdun. Batavor., 1649.

(3) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 250, decuria quinta.

(4) Publiée dans LUCAE HOLSTENII *Codex regularum*, t. I, p. 67-108.

(5) *Ibid.*, p. 455-64.

(6) *Ibid.*, p. 25-26.

7. (F. 114-141). Precepta patris PACHOMII hominis Dei (1).

8. (F. 141^v-142^v). [Epistola patris nostri PACHOMII ad Syrum] (2).

Parchemin; 142 feuillets; 0^m,135 × 0^m,09; XV^e siècle. F. 2^v, il y a cette note : *Liber domus Capelle b. Marie iuxta Angiam*. Reliure ancienne, fort délabrée; ais de bois recouverts de peau de truie; au dos, le titre doré : *Regulae Basilij et Pachomij M.S.*, restes de fermoirs en cuivre.

943. (4455-56). — S. BASILIUS. Opera.

1. (F. 1). Table des matières.

Les feuillets 1^v-2 sont blancs.

2. (F. 2^v-3). Divers extraits des Pères de *ieiunio*.

3. (F. 3^v). DES. ERASMUS Roterodamensis ornatissimo viro D. Ioanni Cholero praeposito Cariensi (3).

4. (F. 4-10). BASILII magni de *ieiunio oratio prima*, Erasmo interprete (4).

5. (F. 11^v-16). EIUSDEM de *ieiunio oratio secunda*, eodem Erasmo interprete (5).

Les feuillets 16^v-17^v sont blancs.

6. (F. 18-66). Divi patris nostri BASILII vere magni de Spiritu sancto ad Amphiloichium Iconii episcopum, interprete Erasmo Roterodamo (6).

7. (F. 66^v-71). Sancti patris nostri BASILII archiepiscopi Cesarie Cappadociae expositio in propheta Esaia, D. Erasmo Roterodamensi interprete (7).

Papier; 71 feuillets; 0^m,20 × 0^m,14; XVI^e siècle. Ce volume provient de l'ancienne bibliothèque des bollandistes, il en porte, f. 1, l'ex-libris : ✱ *MS. 153*; f. 3, on lit : *Societatis Iesu Antwerpiae D[omus] P[ro]fessae*. Demi-reliure moderne, dos en maroquin rouge; au dos, le titre doré : *Bti Basilii Erasmo interprete, de laudibus ieiunii, super Isaiam*.

944. (II. 2570). — S. GREGORIUS NAZIANZENUS. Opera.

1. (F. 1-2^v, 3^v). Passio sancte Katherine virginis. *Inc.* Sanctam ecclesiam apostolorum praedicatione fundatam. *Des.* qui ab Alexandria trium ebdomadarum itinere distat translatum ad laudem et gloriam ...

(1) *Ibid.*, p. 26-36.

(2) *Ibid.*, p. 41-42.

(3) Voir DESIDERII ERASMI *Roterodami opera omnia*, Lugduni Batavorum, 1706, t. VIII, col. 535-36.

(4) *Ibid.*, col. 535-41.

(5) *Ibid.*, col. 541-46.

(6) *Ibid.*, col. 493-534.

(7) *Ibid.*, col. 483-90.

2. (F. 4-26^v). Apologeticus GREGORII NAZANZENI episcopi de greco in latinum translatus (1).
3. (F. 26^v-33). EIUDEM de epiphaniis sive de natali Domini.
4. (F. 33-40^v). EIUDEM liber de communibus vel secundis epyphaniis.
5. (F. 40^v-47). EIUDEM de Pentecoste et de Spiritu sancto, dicta in aeclesia Constantinopolitana.
6. (F. 47-54^v). EIUDEM liber in semetipso de agro regressus.
7. (F. 54^v-59). Liber EIUDEM de Hieremia, dicta presente imperatore apud quem et intercedit pro quadam periclytata.
8. (F. 59-66^v). Liber de reconciliatione monachi (2).
9. (F. 66^v-73^v). Liber GREGORII NAZANZENI episcopi de grandinis vastatione, cum pater episcopus reticeret.
10. (F. 74-83). Liber sancti LAURENTII de duobus temporibus. = *PL.*, t. LXVI, col. 89.
11. (F. 83^v-84). [De septuagesima].

Parchemin; 84 feuillets; 0^m,343 × 0^m,252; X^e siècle, sauf les feuillets 1-2^v, 3^v qui furent écrits au XII^e siècle sur deux colonnes; très belles et très curieuses lettres au trait, relevées de quelques couleurs, entrelacs et personnages. F. 3, une intéressante miniature représente S. Grégoire de Nazianze offrant son livre au Christ assis sur le globe terrestre; dans une grande auréole on lit :

*Celum perpetuo virtutis iure guberno,
Atque meis pedibus incurvat pondera mundus.*

Au-dessus du Christ, il y a les archanges Gabriel et Raphael, et à côté la Vierge et S. Jean-Baptiste; en dessous, à gauche et à droite de S. Grégoire se trouvent divers saints et lui-même tient par la main le scribe du livre, qui, en habit de bénédictin, prononce cette prière. *Aufer hinc scelera quot sunt hic grammata scripta. Postulat extensis Gregorius brachiis.* F. 1, il y a la note: *Liber monasterii Stabulensis*, et f. 4: *Iste liber pertinet monasterio Stabulensi in Ardenna* (3). Plus tard, ce volume a fait partie de la collection Phillipps, car f. 1, il y a la cote: *Phillipps MS., 12349*. Ce volume a été acquis par la Bibliothèque royale en 1900. Reliure ancienne; ais de bois recouverts de veau; au dos, le titre doré *Gregor · Nazian · opera MS.*

945. (8414-19). — S. GREGORIUS NAZIANZENSUS. Opera.

1. (F. 3^v). Table des matières.
2. (F. 3^v-25). Vita et actus sancti Zwitberti. = *BHL.*, n. 7491.

(1) La *Praefatio Rufini ad Apronianum* se trouve *PG.*, t. XXXVI, col. 735-36. Au sujet de l'édition des autres morceaux contenus dans ce manuscrit, voir *ibid.*

(2) Cette pièce se termine par la rubrique suivante, en capitales rustiques: *Usque huc contuli de codice sanctae Melanie Rome.*

(3) Cf. TH. GOTTLIEB, *Ueber Mittelalterlichen Bibliotheken*, Leipzig, 1890, p. 285, n. 30; *Catalogue d'une belle collection de livres et de manuscrits précieux sur vélin du VIII^e et du IX^e siècle*, Gand, 1847, p. 25-26, n. 272.

3. (F. 25-26). Epistola exhortatoria domini RIXFRIDI, episcopi Traiectensis, ad sanctum Ludgerum, episcopum Monasteriensem, super inquisitione miraculorum et canonizatione sancti Zwitberti episcopi. = *BHL.*, n. 7492.

4. (F. 26-35^v). Epistola sancti LUDGERI, episcopi Monasteriensis rescripta domno Rixfrido, episcopo Traiectensis ecclesiae, super miraculis Zwitberti episcopi. = *BHL.*, n. 7492.

5. (F. 36-56^v). Appollogeticus sancti GREGORII NAZANZENI de greco in latinum translatus per RUFINUM (1).

6. (F. 56^v-62). EUSDEM liber de communibus vel secundis epiphaniis.

7. (F. 62-68). Liber sancti GREGORII NAZANZENI de epiphaniis sive de natali Domini translatus e greco in latinum per RUFINUM presbiterum.

8. (F. 68-72). Liber S. GREGORII episcopi Nazanzeni de Iheremie dictis ... translatus e greco in latinum per RUFINUM presbiterum.

9. (F. 72-74). Vita sancti Plechelmi. = *BHL.*, n. 6867.

10. (F. 74-100^v). Vita sancti Ludgeri confessoris et Monasteriensis episcopi. = *BHL.*, n. 5942.

11. (F. 100^v-101^v). Vita sanctissimi confessoris Christi Liudgeri. — Additions au texte précédent.

Parchemin; 101 feuillets; 0^m,252 × 0^m,173; XV^e siècle; très jolies lettres rehaussées d'or; initiales en toutes couleurs. F. 2, on lit : *Sum Theodori a Renesse Wulpii. N. B. Hic liber nobis ab eodem nobilissimo et humanissimo Domino donatus*; l'ex-libris ✱ *MS. 78* des anciens bollandistes se trouve f. 1 et au verso de la couverture. Reliure ancienne veau brun estampé (2).

946. (8436-38). — S. GREGORIUS NYSSENUS. De virginitate, en grec.

Τοῦ ἐν ἁγίοις πατρὸς ἡμῶν Γρηγορίου ἐπισκόπου Νύσσης ἐπιστολὴ προτροπικὴ εἰς τὸν κατ' ἀρετὴν βίον περὶ παρθενίας. = *PG.*, t. XLVI, col. 317 sqq.

Les deux feuillets de garde, en parchemin, du XIV^e siècle, contiennent des fragments d'un traité de médecine, en latin.

Papier; 61 feuillets; 0^m,236 × 0^m,170; XVI^e siècle. Sur le premier feuillet de garde, on lit : *Ioannis Livinei Torrentij Teneramundani*, et l'on voit l'ex-libris de la bibliothèque des anciens bollandistes ✱ *MS. 154*. Reliure parchemin (3).

(1) Cf. supra n. 944 (II. 2570), 2^e, ainsi que pour les autres pièces de S. Grégoire de Nazianze qui se trouvent dans ce manuscrit.

(2) Voir une description de ce volume dans *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. II, p. 209-10.

(3) Cf. H. OMONT, *Catalogue des manuscrits grecs de la bibliothèque royale de Bruxelles*, p. 13, n. 20.

947. (14870). — S. GREGORIUS NYSSEUS. De beatitudinibus, en grec.

Τοῦ ἐν ἁγίοις πατρὸς ἡμῶν Γρηγορίου ἐπισκόπου τῆς Νύσσης εἰς τοὺς μακαρισμοὺς λόγοι. = *PG.*, t. XLIV. col. 1193 sqq.

Papier; 65 feuillets, plus six de garde; 0^m,198 × 0^m,170; XVI^e siècle (1593), car f. 65^v, il y a cette note : Τελευτήσαντος φεῦ τοῦ λογοθέτου, ἀνεπλήρωσα ἐγὼ τὸ ἐλλείπον τοῦτο τοῦ Ζριᾶ τρέχοντος ἔτους, ἐν μηνὶ σεπτεμβρίῳ, ἰνδ. β'. Au verso de la couverture, on lit : † Τὸ παρὸν βιβλίον δὲ περιέχει λόγους τοῦ Νύσσης Γρηγορίου, ἐγράφη διὰ χειρὸς τοῦ ποτὲ λογοθέτου Ἀλεξάνδρου, υἱοῦ δηλαδὴ ἱέρακος τοῦ μεγάλου λογοθέτου τοῦ τὸ ἀδαμᾶσον ἔτος ἐν τῷ πατριαρχικῷ οἰκουμενικῷ θρόνῳ τῆς Κωνσταντινουπόλεως ἀκμάσαντος, οὗ καὶ ἡ ἐν τῷ τέλει τοῦ βιβλίου ἐσχάτη σελὶς ἰδιοχείρως ὑπάρχει, ἀναπληρώσαντος τὸ ἐλλείπον διὰ τὸ τελευτῆσαι τὸν ρηθέντα υἱὸν αὐτοῦ πρὸ τοῦ λαβεῖν πέρας τὸ βιβλίον καθὰ κάκεινος ἐκείση σημειοῖ ἰδίᾳ χειρὶ. Deux colonnes. Sur le premier feuillet de garde, l'ex-libris gravé de Frédéric North, *Earl of Guilford*. Reliure orientale; maroquin noir estampé; au dos, le titre doré : Γρηγορίου Νύσσης λόγοι (1).

948. (21836). — S. GREGORIUS NYSSEUS. In psalmos, en grec.

1. (F. 1-2^v). Πίναξ τῶν κεφαλαίων τοῦ λόγου τοῦ εἰς τὰς ἐπιγραφὰς τῶν ψαλμῶν.

2. (F. 3-92). Τοῦ ἐν ἁγίοις πατρὸς ἡμῶν Γρηγορίου Νύσσης ἐξήγησις εἰς τὰς ἐπιγραφὰς τῶν ψαλμῶν. = *PG.*, t. XLIV, col. 432-608.

Papier; 92 feuillets, plus cinq de garde; 0^m,210 × 0^m,150; XVI^e siècle, car f. 92, d'une écriture un peu différente du reste du texte, il y a la note : † τὸ παρὸν βιβλίον ἐγράφη διὰ χειρῶν ἱερέως Ἰωάννου τοῦ Εὐρπιώτου τοῦ ἐπικεκλημένου, εἰσχίον α.φο.Ϛ' μηνὶ αὐγούστῳ. Sur le premier feuillet de garde, au verso, on lit : *Ex libris Wilhel[m] Lindani 1576* (2). Ce volume fut acquis en mai 1863, à la vente des livres de Van Alstein (3), pour fr. 1,65. Reliure parchemin blanc (4).

949. (II. 960). — S. GREGORIUS NYSSEUS. Opera ex versione BURGONDIONIS Pisani (5).

1. (F. 1^v). Index.

Le feuillet 2 est blanc.

2. (F. 3-50). [BURGONDIONIS Pisani liber sancti GREGORII Nysseni].

3. (F. 51-112). Explanatio super Apocalypsim.

4. (F. 113-143^v). [Explanatio in Cantica Canticorum].

(1) Voir H. OMONT, *Catalogue des manuscrits grecs de la bibliothèque royale de Bruxelles*, p. 12-13, n. 19.

(2) Guillaume Lindanus fut évêque de Ruremonde et de Gand. Voir *Biographie nationale*, t. XII, p. 212-16.

(3) N. 315 du catalogue.

(4) Voir une description de ce volume par H. OMONT, *op. cit.*, p. 12, n. 18.

(5) Voir FABRICIUS-MANSI, *Bibl. lat. med. et inf. aet.*, t. I, col. 304.

Parchemin; 143 feuillets, plus trois de garde à la fin; 0^m,247 × 0^m,148; XIII^e siècle. F. 2^v et 3, on lit : *Liber sancte Marie de Camberone*, et au bas d'un grand nombre de pages, il y a la note : *de Camberone*. F. 2^v, se trouve l'ex-libris *Sir T. P. Middle Hill 355*. Ce volume a été acquis en 1888 pour 60 francs. Reliure moderne, chagrin brun estampé, avec l'inscription en relief : *Regia Bibl. Belgica*.

950. (11385). — NONNUS (1). Scholiae in Gregorium theologum, en grec.

1. (F. 1^v). Note, en latin, sur la traduction faite par BILLIUS des scholies de Nonnus.

2. (F. 2-79^v). Συναγωγὴ καὶ ἐξήγησις ὧν ἔμνησθη ἱστοριῶν ὁ ἐν ἀγίοις πατὴρ ἡμῶν Γρηγόριος ὁ θεολογὸς τῶν ἐν πρώτῳ στηλιτευτικῶν. = *PG.*, t. XXXVI, col. 98.

3. (F. 80-111^v). Συναγωγὴ καὶ ἐξήγησις ὧν ἔμνησθη ἱστοριῶν ὁ ἐν ἀγίοις πατὴρ ἡμῶν Γρηγόριος ὁ θεολογὸς... ἐν στηλιτευτικῷ δευτέρῳ. = *Ibid.*, col. 1035.

4. (F. 112-129). Συναγωγὴ καὶ ἐξήγησις ὧν ἔμνησθη ἱστοριῶν ὁ ἐν ἀγίοις Γρηγόριος ὁ θεολογὸς ἐν τῷ εἰς Βασιλείον τὸν μέγαν ἐπιταφίῳ, οὗ ἡ ἀρχὴ ᾿Εμελλεν ἄρα. = *Ibid.*, col. 1057.

5. (F. 129-145^v). Συναγωγὴ καὶ ἐξήγησις ὧν ἐμνήσθη ἱστοριῶν ὁ ἐν ἀγίοις πατὴρ ἡμῶν Γρηγόριος ὁ θεολογὸς ἐν τῷ εἰς τὰ φῶτα λόγῳ, οὗ ἡ ἀρχὴ Πάλιν Ἰησοῦς ὁ ἐμὸς καὶ πάλιν. = *Ibid.*, col. 1065.

Papier; 145 feuillets; 0^m,208 × 0^m,145; XVI^e siècle. F. 2, on lit, au bas de la page : *De Scot*, et au haut : *Societatis Iesu Antverpiae D. P.* Le timbre rouge de la Bibliothèque nationale de Paris *R.F.* se trouve f. 2 et 145^v. Reliure, veau estampé au chiffre *IHS* (2).

951. (1782-84). — S. AMBROSIUS. Opera.

1. (F. 1^v-70^v). Liber exameron beati AMBROSI antistitis. = *PL.*, t. XIV, col. 123 sqq.

2. (F. 71-88^v). Liber eiusdem de paradiso. = *Ibid.*, col. 275.

3. (F. 88^v-105). De Chain et Abel. AMBROSIUS. = *Ibid.*, col. 315.

4. (F. 105-105^v). Sermo. *Inc.* Fratres, operamini neque seducamini. *Des.* tu pro nobis supplica, tibi laus et gloria per eterna secula. Amen.

Sur les deux feuillets de garde du commencement et de la fin, fragments d'un acte notarié passé à Liège en 1352.

Parchemin; 105 feuillets, plus quatre de garde; 0^m,27 × 0^m,18; X^e siècle. Ce volume provient des Chartreux de Zeelhem près Diest, car sur les deux feuillets

(1) Sur Nonnus, voir E. PATZIG, *De Nonnians in IV orationes Gregorii Nazianzenii commentariis*. Lipsiae, 1890.

(2) Ce manuscrit est décrit par H. OMONT, *Catalogue des manuscrits grecs de la bibliothèque royale de Bruxelles*, p. 12, n. 17.

de garde du commencement on lit : *Domus Carthusiensium prope Diest. — Pertinet ad Carthusiam prope Diest, V, 2* ; et f. 1^v : *Pertinet ad Carthusiam prope Dyest.* F. 1, 1^r et 2 : *Societatis Iesu Locanii M. B.* Demi-reliure moderne.

952. (1893-99). — S. AMBROSIUS. Opera.

1. (F. 1). Table des matières.
2. (F. 1^v-14). Liber sancti AMBROSII Mediolanensis episcopi de resurrectione. = *PL.*, t. XVI, col. 1315.
3. (F. 14-21). Tractatus sancti AMBROSII de interpellatione sancti Iob. = *PL.*, t. XIV, col. 797.
4. (F. 21-30). EIUSDEM de David interpellatione. = *Ibid.*, col. 811.
5. (F. 30-34^v). Eiusdem tractatus de interpellatione Iob. = *Ibid.*, col. 827.
6. (F. 34^v-41^v). De interpellatione David. = *Ibid.*, col. 837.
7. (F. 41^v-58). EIUSDEM de Tobia. = *Ibid.*, col. 759.
8. (F. 58-65^v). [Apologia David]. = *Ibid.*, col. 851.
9. (F. 65^v-73). Expositio sancti AMBROSII in psalmo quinquagesimo. = *Ibid.*, col. 1067.
10. (F. 73-86^v). [De poenitentia David]. = *Ibid.*, col. 887.

Parchemin; 86 feuillets; 0^m,25 × 0^m,17; XI^e siècle; très jolies lettres. F. 1, on lit : *Liber canonicorum regularium vallis sancti Martini in lovanio*, et f. 44^v et 86^v : *Est liber hic sancti Martini lovaniensis* (1). L'estampille rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris se voit f. 1 et 86^v. Reliure ancienne restaurée, veau brun; sur le plat, étiquette avec la cote à l'encre rouge *E. XIX*.

953. (5606-10). — S. AMBROSIUS. Opera.

1. (F. 1^v-78). Sancti AMBROSII de Spiritu sancto libri III. = *PL.*, t. XVI, col. 703 sqq.
2. (F. 79-89^v). [AMBROSIUS]. De incarnatione. = *PL.*, t. XVI, col. 817.
3. (F. 89-125). IPSIUS. De fide. = *Ibid.*, col. 527-590, les deux premiers livres.
4. (F. 125-139^v). Gesta episcoporum Aquileiae adversum hereticos arrianos.
 - a) [Epistola concilii Aquileiensis ad episcopos Galliae] (2).
 - b) [Epistola eiusdem concilii ad Gratianum et Valentinianum et Theodosium imperatores] (3).
 - c) Nomina episcoporum qui supter scripserant hanc (4).
 - d) [Gesta] (5).

(1) Cf. SANDERUS, *Bibl. belgic. ms.*, part. II, p. 209.

(2) LABBE, *Sacrosancta Concilia*, t. II, col. 992.

(3) *Ibid.*, col. 993-95.

(4) *Ibid.*, col. 978-79.

(5) *Ibid.*, col. 979-92.

5. (F. 140-150). AMBROSII de fide. = *PL.*, t. XVI, col. 552, caput primum — col. 566.

6. (F. 150). Versus.

Inc. Ambrosii quicunque legis pia dogmata patris.

Des. ... tribuas regna subire poli.

Parchemin; 150 feuillets; 0^m,23 × 0^m,17; XI^e siècle; rubrique en capitales rustiques; signatures *A-M*. F. 1, on lit: *Monasterii Gemblacensis*. Reliure du XVII^e siècle, veau raciné; au dos, titre doré: *D. Ambros. de Spirit.*; tranche rouge.

954. (9377). — S. AMBROSIIUS. In Lucam.

Liber sancti AMBROSII Mediolanensium episcopi in evangelio secundum Lucam digestus. = *PL.*, t. XV, col. 1527 sqq.

Parchemin; 108 feuillets; 0^m,35 × 0^m,24; XI^e siècle; deux colonnes; très jolies lettrines. F. 1, il y a la note: *Liber Sancti Laurentii extra muros leodienses*. Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré reproduit à l'intérieur du volume sur une étiquette en maroquin rouge: *S. Ambrosius in Lucam*; en dessous, les armes de Belgique et l'inscription *Bibl. royale*.

955. (10779-80). — S. AMBROSIIUS. Opera.

1. (F. 1). Index écrit au XV^e siècle.

2. (F. 1^v). Titres des divers traités.

3. (F. 2-67). [S. AMBROSIIUS. De fide ad Gratianum Augustum libri quinque]. = *PL.*, t. XVI, col. 527 sqq.

4. (F. 67-111). Liber sancti AMBROSII episcopi ad Gratianum Augustum de Spiritu sancto. = *Ibid.*, col. 703 sqq.

5. (F. 111-123^v). EIUDEM liber de incarnatione Domini. = *Ibid.*, col. 817 sqq.

6. (F. 128^v-134). EIUDEM de misteriis. = *Ibid.*, col. 389 sqq.

7. (F. 134-145^v). De sacramentis. = *Ibid.*, col. 417 sqq.

8. (F. 145^v-156^v). Tractatus EIUDEM de Nabuthe. = *PL.*, t. XIV, col. 731 sqq.

9. (F. 156^v). Diverses notes.

a) Vers.

Sepe per equoreas iam palmula mersa procellas,
Tandem littoreis nos fessos appulit oris,
Exin securi letum pcana pericli
Prosequimur Domino, cui laus sit summa sub evo.

b) Hymne. = *RH.*, n. 14717.

c) Préceptes pour le chant, avec neumes. *Inc.* Caute, cantor, cantus cane. *Des.* Cane canulis creatorem.

Parchemin; 156 feuillets; 0^m,279 × 0^m,207; XII^e siècle; superbes lettrines en toutes couleurs. F. 1, il y a la cote *MM, 3-12* et la note: *Liber sancti Laurentii martiris in leodio. Si quis abstulerit vel furatus fuerit, anatema sit. Fiat, fiat.* Sur

le même feuillet, on lit : *Fuit hoc volumen religatum anno 1486 mense novembri a nonno Petro Mychaelis de Attenhoven requisitis ad hoc de laboribus suis lucratis per licentiam. Oretis pro eo. Obiit anno 1496°, VII^o idus mai cuius laboribus in ecclesia et pro commo fratrum reparata sunt multa, pro quibus omnibus habeat vitam eternam. Amen.* Le timbre rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 1^v et f. 156^v. Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré reproduit à l'intérieur sur une étiquette de maroquin rouge : *Ambrosius de divinitate etc. XII saec*; en dessous, les armes de Belgique et l'inscription *Bibl. royale*.

956. (1730-33). — S. AMBROSIUS. Opera.

1. (F. 1-115^v). S. AMBROSII epistolae. Les lettres publiées dans *PL.*, t. XVI, nn. 7, 65, 67, 27, 4, 28, 37, 39, 79, 38, 29, 30, 31, 33, 69, 76, 81, 70, 71, 77, 34-36, 72, 53, 54, 58, 50, 43, 24, 44, 48, 49, 45, 83, 2, 47, 55, 46, 32, 86, 88, 3, 68, 52, 85, 87, 66, 59, 25, 15, 16, 91, 64, 8, 5, 6, 60, 84, 90, 89, 19, 73-75, 78, 80, 26, 72, 56, 17, 18, 40, 21, 20.

2. (F. 115^v-123). De obitu Theodosii imperatoris. = *PL.*, t. XVI, col. 1385 sqq.

3. (F. 123-125^v). Tractatus de sanctis Gervasio et Protasio martiribus inventis et depositis. = *BHL.*, n. 3513.

4. (F. 125^v-136^v). De Nabuthe. = *PL.*, t. XIV, col. 731 sqq.

Parchemin; 136 feuillets, plus deux de garde; 0^m,29 × 0^m,185; XIII^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et vertes. F. 1, il y a la note : *Ex parte confratris nostri f. Iohannis Vlimmerii*, et f. 125^v : *Ex parte P. Ioannis Vlimmerii* (1). L'estampille rouge de la bibliothèque nationale de Paris se voit f. 1 et 125^v. Demi-reliure moderne; dos en maroquin rouge, avec les titres dorés des divers traités et le chiffre couronné de Léopold I^{er}.

957. (II. 949). — S. AMBROSIUS. Opera.

1. (F. 1). Index.

2. (F. 2-96). Explanatio AMBROSII Mediolanensis urbis episcopi in evangelio Luce. = *PL.*, t. XV, col. 1527 sqq.

3. (F. 96^v-101^v). Passio vel vita sancti Albani martiris. = *BHL.*, n. 201.

4. (F. 102-189^v). [HONORIUS AUGUSTODUNENSIS]. Speculum ecclesie. = *PL.*, t. CLXXII, col. 815 sqq.

Parchemin; 189 feuillets; 0^m,31 × 0^m,237; XIII^e siècle; deux colonnes; quelques jolies lettrines en toutes couleurs; signatures *A-K*, *I-XI*. F. 2 et 188^v, on lit la note : *Liber sancte Marie de Camberone*, et la cote *de Camberone* se trouve ff. 9, 16, 21, 28, 35, 41, 52, 59, 67, 76, 85, 93, 102, 110, 116, 125, 133, 137, 144, 149, 155, 161,

(1) Vlimmerius, chanoine de Saint-Augustin, mort à Louvain en 1597. Voir pour ses travaux, FOPPENS, *Bibl. belgica*, p. 747. On peut conclure de cette note du manuscrit 1730-33 que ce volume a appartenu au prieuré de Val-Saint-Martin. En effet, Sanderus, *Bibl. belg. us.*, part. II, p. 209, signale dans la bibliothèque de ce monastère un volume *Ambrosii epistolae*.

163, 174, 183. F. 1, il y a l'ex-libris de Thomas Phillipps : *Sir T. P. Middle Hill 343*
Ce volume a été acquis par la Bibliothèque royale en 1888. Reliure moderne, veau brun estampé, avec l'inscription : *Regia Bibl. Belgica* ; fermoirs en cuivre (1).

958. (1413-16). — S. AMBROSIUS. Opera.

1. (F. 1). Table des matières.
2. (F. 1^v-63^v). Beati AMBROSII archiepiscopi in exameron. = *PL.*, t. XIV, col. 123 sqq.
3. (F. 63^v-80^v). EIUDEM de paradyso. = *PL.*, t. XIV, col. 275 sqq.
4. (F. 80^v-100). EIUDEM de Cain et Abel. = *Ibid.*, col. 315 sqq.
5. F. 100-114). S. AUGUSTINUS. De heresibus. = *PL.*, t. XLII, col. 21 sqq.

Parchemin ; 114 feuillets ; 0^m,29 × 0^m,21 ; XIII^e siècle ; deux colonnes ; signatures 1-XIII. F. 1, il y a une note de provenance grattée, où on lit encore : *Liber [iste Carthusie prope] diesthemium (?) est*. Demi-reliure moderne ; dos en maroquin brun avec le titre doré des divers traités.

959. (II. 978). — S. AMBROSIUS. Liber Hexameron.

1. (F. 1-88^v). Liber hexameron sancti AMBROSII. = *PL.*, t. XIV, col. 123 sqq.
2. (F. 88^v). [Epistola de sacerdote qui occidit latronem].

Parchemin ; 88 feuillets ; 0^m,275 × 0^m,174 ; XIII^e siècle ; très jolies lettrines ; initiales en vert ; signatures 1-X. F. 88^v, on lit : *Liber sancti Gilleni. Servanti benedictio, tollenti maledictio, fiat, fiat, amen* (2). Au verso de la couverture, se trouve l'ex-libris *Sir T. P. Middle Hill, 369*. Ce volume a été acquis par la Bibliothèque royale en 1888 pour 100 fr. Reliure moderne, veau estampé, avec l'inscription : *Regia Bibl. Belgica*.

960. (II. 1097). — S. AMBROSIUS. Opera.

1. (F. 1-64^v). [AMBROSIUS. De officiis]. = *PL.*, t. XVI, col. 23 sqq. *Inc. mutil.* quia servivimus ipsi.
2. (F. 64^v-78). Epistola sancti AMBROSII episcopi ad Vercellenses. = *Ibid.*, col. 1189-1220.
3. (F. 79-90). De consolatione Valentiniani (3). = *Ibid.*, col. 1357 sqq.
4. (F. 90-161). Exameron sancti AMBROSII episcopi Mediolanensis. = *PL.*, t. XIV, col. 123 sqq. *Des. mutil.* aut egritudinis inequa[litate]..

Parchemin ; 161 feuillets ; 0^m,305 × 0^m,22 ; XIII^e siècle ; deux colonnes ; quelques belles lettrines ; signatures 1-XXI. Ce volume provient de l'abbaye d'Alne (4) ; plus

(1) Voir une description de ce volume dans *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. II, p. 439-40.

(2) Ce volume portait autrefois dans cette bibliothèque la cote *QQQ*. Cf. A. PONCELET, S. I., *Annales de l'abbaye de Saint-Ghislain*, p. 391.

(3) En marge, on lit cette note : *Liber iste non legatur in conventu*.

(4) Voir SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 243, decuria nona.

tard il a été le n. 4678 de la collection Phillipps. La Bibliothèque royale l'a acquis en 1888. Demi-reliure, toile anglaise ; au dos, les titres dorés des divers traités.

961 (1834-37). — S. AMBROSIUS. Opera.

1. (F. 1-88^v). Liber beati AMBROSI Mediolanensis episcopi in exameron. = *PL.*, t. XIV, col. 123 sqq.

2. (F. 89-112^v). Liber beati AMBROSI episcopi de paradiso voluptatis. = *Ibid.*, col. 275 sqq.

3. (F. 113-142). Liber beati AMBROSI episcopi de Abel et Cayn. = *Ibid.*, col. 315 sqq.

4. (F. 142^v-166^v). Liber beati AMBROSI episcopi de sacramentis. = *PL.*, t. XVI, col. 417 sqq.

Parchemin ; 166 feuillets ; 0^m,257 × 0^m,173 ; XV^e siècle (1467), car on lit, f. 88^v : *Scriptus ac finitus per manus fratris Henrici Testelt anno Domini M^occcc^olxxii^o, orate fideliter pro eo.* Initiales rouges et bleues. Au verso du premier feuillet de garde, il y a la cote : *W. A.*, et au verso du second, la note : *Iste liber pertinet fratribus monasterii de Korsendonck ordinis canonicorum regularium situm prope Turnhout.* L'estampille *R.F.* de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 1 et 142^v. Reliure ancienne restaurée, veau brun estampé, sur le premier plat, l'étiquette : *Ambrosius in exameron cum aliis in Korsendonck.*

962. (563-75). — S. AMBROSIUS. Opera.

1. (F. 1^v). Table des matières.

2. (F. 2-50). AMBROSIUS. De officiis. = *PL.*, t. XVI, col. 25 sqq.

3. (F. 50^v-69). [AMBROSIUS]. Liber de Abraham et Ysaac. = *PL.*, t. XIV, col. 417 sqq.

4. (F. 69^v-77^v). Liber EIUDEM de Esau. = *Ibid.*, col. 569 sqq.

5. (F. 78-86). Liber EIUDEM de Nabot Ysraelita. = *Ibid.*, col. 731 sqq.

6. (F. 86-98^v). Liber EIUDEM de patriarcha Iacob. = *Ibid.*, col. 597 sqq.

7. (F. 99-109). Liber beati AMBROSI de patriarcha Ioseph. = *Ibid.*, col. 641 sqq.

8. (F. 109-116). Liber EIUDEM de benedictionibus patriarcharum. = *Ibid.*, col. 673 sqq.

9. (F. 116-135^v). Liber EIUDEM de excessu et de resurrectione fratris sui Satyri. = *PL.*, t. XVI, col. 1289 sqq.

10. (F. 136-148^v). Dicta beati IERONIMI presbiteri de vita sancte Paule. = *BHL.*, n. 6548.

11. (F. 148^v-151^v). Narratio beati IERONIMI de captivo monacho. = *BHL.*, n. 5190.

12. (F. 151^v-153^v). Vita Frontonii. = *BHL.*, n. 3189.

13. (F. 153^v-155^v). Vita S. Marine monache = *BHL.*, n. 5528.

14. (F. 153-161^v). Beati Fursei viri admodum religiosissimi vita. = *BHL.*, n. 3209.

15. (F. 161^v-165^v). Vita beati Fursei secunda. = *BHL.*, n. 3213.

Parchemin; 165 feuillets; 0^m,33 × 0^m,22; XIV^e siècle, les ff. 136-165, et XV^e siècle; deux colonnes; capitales rouges et bleues; quelques initiales ornées. Ce volume provient du monastère de Corsendonck, car f. 1, il y a cette note: *Liber canonicorum regularium in Korsendonck*, puis f. 135^v, en rouge: *Ihesus autem tacebat. Korsendonck*, et sur le premier plat, une étiquette sous corne porte cette inscription: *Ambrosius de officiis cum aliis in Kors[endonck]*; sur le premier plat à l'intérieur, il y a la cote: *W. 4*. L'estampille rouge *R. F.* de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 2 et 165^v. Reliure ancienne, veau estampé sur ais de bois; restes de fermoirs (1).

963. (2897-902). — S. AMBROSIUS. Opera.

1. (F. 1^v). Table des matières.
2. (F. 2-31). Liber sancti AMBROSII episcopi de bono mortis. = *PL.*, t. XIV, col. 539 sqq.
3. (F. 31-59^v). Liber EIUDEM de Esau et fuga seculi. = *Ibid.*, col. 569 sqq.
4. (F. 60-104^v). Liber EIUDEM de Iacob et vita beata. = *Ibid.*, col. 597 sqq.
5. (F. 105-154^v). Liber magistri RICARDI DE SANCTO VICTORE super psalmum *Afferte Domino filii Dei*. = *PL.*, t. CXCVI, col. 285 sqq.
6. (F. 155-160). Sermo sancti AMBROSII episcopi de corporis et anime misera vita. = *PL.*, t. XL, col. 1332 sqq.
7. (F. 160-175^v). Sermo sancti IOHANNIS episcopi de patientia et gratiarum actione. = *PG.*, t. LX, col. 723-30.

Parchemin; 175 feuillets; 0^m,165 × 0^m,115; XV^e siècle; jolies initiales. F. 1^v, il y a cette note: *Iste liber pertinet Bethleem monasterio canonicorum regularium prope Lovanium*; f. 2: *Bethleem*; f. 175^v: *Pertinet in Bethleem prope lovanium liber iste*. Demi-reliure moderne; dos en maroquin rouge, avec les titres dorés des différents traités; plus bas, le monogramme couronné de Léopold I^{er}.

964. (10781-82). — S. AMBROSIUS. Opera.

1. (F. 1-9^v). Libellus beati AMBROSII (2) episcopi de bono mortis. = *PL.*, t. XIV, col. 539 sqq.
2. (F. 10-11^v). IOHANNIS CRISOSTOMI de penitentia. — Court extrait.

Papier; 11 feuillets, plus six de garde en tête du volume et six à la fin; XV^e siècle; deux colonnes. Le timbre rouge de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 1 et f. 11^v. Reliure moderne veau raciné; au dos, titre doré reproduit à l'intérieur du volume *Ambrosi. De bono mortis, etc.*; en dessous, les armes de Belgique et l'inscription *B. R.*

965. (242-65). — S. AMBROSIUS. Opera.

1. (F. 1-1^v). Table des matières.
2. (F. 1^v). Tabula legendorum in refectorio.

(1) Voir une description de ce manuscrit dans *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxellensis*, t. I, p. 250-51.

(2) La rubrique primitive portait *Augustini*.

3. (F. 2). Vers en l'honneur de S. Ambroise.

Inc. Quid tibi sancta fides, pater o memorande, rependet?

Des. Perpetuam infelix his nequeat studiis.

Les feuillets 2^v-3^v sont blancs.

4. (F. 3-4^v). Epistola fratris IOHANNIS DE LAPIDE (1) de operibus S. Ambrosii ad Iohannem de Amerbach magistrum parisiensem.

5. (F. 4^v). [Divisio operum S. Ambrosii in tria volumina].

6. (F. 5-6). Liber de dignitate humane conditionis. = *PL.*, t. XVII, col. 1015 sqq.

7. (F. 6-6^v). Liber de misterio pasche. = *Ibid.*, col. 672 sqq.

8. (F. 7^v-9^v). Annotatio capitulorum super libros hexaameron sancti AMBROSII.

9. (F. 10-51^v). Libri hexaameron sex. = *PL.*, t. XIV, col. 123 sqq.

10. (F. 51^v-70^v). De virginibus libri quatuor. = *PL.*, t. XVI, col. 187 sqq.

11. (F. 70^v-77^v). Liber de viduis. = *Ibid.*, col. 233.

12. (F. 77^v-84). Adhortatio ad virgines. = *Ibid.*, col. 335 sqq.

13. (F. 84^v-92). De institutione virginis. = *Ibid.*, col. 305 sqq.

14. (F. 92-94). Liber ad virginem devotam. = *PL.*, t. XVII, col. 579 sqq.

15. (F. 94-113^v). De vocatione omnium gentium. = *Ibid.*, col. 1073 sqq.

16. (F. 113^v-125^v). De paradiso. = *PL.*, t. XIV, col. 275 sqq.

17. (F. 126-139^v). De Cain et Abel. = *Ibid.*, col. 315 sqq.

18. (F. 139^v-155). De Noe et arca. = *Ibid.*, col. 361 sqq.

19. (F. 155^v-158). De dignitate sacerdotali. = *PL.*, t. XVII, col. 567 sqq.

20. (F. 158-161^v). Orationes ad misse celebrationem. = *Ibid.*, col. 751 sqq.

21. (F. 161^v-166). De fide orthodoxa contra Arrianos. = *Ibid.*, col. 549 sqq.

22. (F. 166-173). De incarnationis dominice sacramento. = *PL.*, t. XVI, col. 817 sqq.

23. (F. 173). [PAULINUS DE NOLA]. Causa praecedentis tractatus. *Inc.* Causa huius tractatus, ut refert Paulinus Nolanus episcopus, hec fuit. *Des.* Debitum, fratres, cupio solvendum etc. Ut supra. = *Ibid.*, col. 817.

24. (F. 173-176). Annotatio epistolarum sancti AMBROSII ... per X libros digestarum.

(1) Au sujet de Jean de Lape, chartreux de Bâle, voir TH. PETREIUS, *Bibliotheca Cartusiana*, Coloniae, 1609, p. 207-9. T utefois cette lettre n'est pas citée dans la liste de ses ouvrages.

25. (F. 176-176^v). [Epistola GRATIANI et S. AMBROSII]. = *Ibid.*, col. 875-79.

26. (F. 176^v-182^v). Sancti AMBROSII oratio funebris de obitu Valentiniani imperatoris. = *Ibid.*, col. 1357 sqq.

27. (F. 182^v-191). [SIRICII et AMBROSII epistolae]. = *Ibid.*, col. 1121 sqq. et lettres nn. 42, 63, 23.

28. (F. 191-195^v). Sancti AMBROSII episcopi ad Demetriadem (1).

29. (F. 195^v-197^v). Relatio sancti AMBROSII de passione sanctae Agnetis. = *BHL.*, n. 156.

30. (F. 197^v-200). Sermo de misericordia (2).

31. (F. 201-230). De fide ad Gratianum. = *PL.*, t. XVI, col. 527 sqq.

32. (F. 230-238^v). Ad Gratianum de Spiritu sancto. = *Ibid.*, col. 703 sqq.

33. (F. 238^v-258^v). De penitentia. = *Ibid.*, col. 465 sqq.

34. (F. 258^v-263). De excessu fratris sui Satiri. = *Ibid.*, col. 1289 sqq. Les feuillets 263^v-264 sont blancs.

35. (F. 264^v-272). De fide resurrectionis. = *Ibid.*, col. 1315 sqq.

Les feuillets 272^v-274 sont blancs.

Parchemin; 274 feuillets; 0^m,39 × 0^m,275; XVI^e siècle (1546, cf. f. 274^v), et f. 248^v, il y a la note : *Anno Domini millesimo quingentesimo nono usu Cameracensis dyocesis : ipso die Odulphi confessoris*; deux colonnes; initiales rouges et bleues; titre courant; ancienne pagination i-cclxxi. F. 274^v, on lit : *Liber monasterii Rubecallis in Zonia iuxta bruxellam. Hoc volumen pro prima et maiori parte scripsit frater Hubertus de icijse professus in dicto monasterio* (3). *Ultimam vero partem complevit frater Cornelius Wischaven sacerdos professus etiam in eodem monasterio* (4). *Oratur igitur pro ipsis ferventer ex charitate. Item multa in isto volumine scripta sunt festivis diebus. Non venundetur. — Orate dilectissimi fratres pro me fratre huberto de icijse confratre vestro. Anno xv^c. xvi ianuarii xviii.* Reliure ancienne, veau brun estampé; traces de fermoirs.

966. (1918-25). — S. AMBROSIIUS. Opera.

1. (F. 1-1^v). Epistola beati AMBROSII episcopi ad Marcellam sororem suam virginem. = *PL.*, t. XVI, col. 187-89.

2. (F. 1^v-39^v). Liber beati AMBROSII episcopi de virginitate. = *Ibid.*, col. 189 sqq.

3. (F. 39^v-53). Liber eiusdem beati AMBROSII de viduis. = *Ibid.*, col. 233 sqq.

(1) Cette lettre, qui n'est pas de S. Ambroise, est publiée dans l'édition des œuvres de Prosper d'Aquitaine, Paris, 1711, in-fol., p. 933.

(2) Ce sermon se trouve dans l'édition des sermons de S. Zénon, Vérone, 1739, in-4^o, p. 348.

(3) Voir HAGIOGRAPHI BOLLANDIANI, *Anecdota ex codicibus hagiographicis Iohan-nis Gielemans*, Bruxellis, 1895, p. 257.

(4) *Ibid.*, p. 256.

4. (F. 53-55). *Serino eiusdem* de Gedeone. = *PL.*, t. XVI, col. 703-8.
5. (F. 55-55^v). *Serino eiusdem* de eo quod scriptum est : *Si filii Abrahe estis*. = *Ibid.*, col. 665. *Des. mutil.* cum iudeis et incredulis de...
6. (F. 56-103^v). De vocatione omnium gentium. = *Ibid.*, col. 1073 sqq.
7. (F. 104-104^v). ERASMI ROTERODAMI prologus quem in methodo sua edidit in suam translationem testamenti novi ex greco in latinum (1).
8. (F. 104^v-189^v). [HENRICUS HERP]. Directorium aureum internam spiritualem contemplativamque vitam sectari cupientibus (2).
9. (F. 190-207^v). [HENRICUS HERP]. Tractatulus de effusione cordis. *Inc. mutil.* (c. XII)... di sunt non tam scientifici quam experti et veri.
10. (F. 208-229^v). Tres collationes venerabilis memorie patris HENRICI HERP. *Des. mutil.* sanctis et amicis Dei. Dum de...
11. (F. 230-243). [PETRUS DORLANDUS]. DIALOGUS inter castam virginem Ceciliam et Franciscum. *Des. mutil.* hec sunt Cecilia et Katherina. Iterum ille ... (3).

Parchemin ; 243 feuillets ; 0^m,24 × 0^m,16 ; XVI^e siècle ; les ff. 230-243 sont à deux colonnes. L'estampille rouge, *R.F.*, de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 1 et f. 243^v. Reliure moderne, veau brun estampé ; au dos, les titres dorés des principaux traités et le chiffre couronné de Léopold I^{er}.

967. (9371). — S. AMBROSIUS. In psalmum CXVIII.

1. (F. 1-115^v). Expositio de psalmo centesimo VIII^o X^{mo} sancti AMBROSIJ Mediolanensis urbis episcopi. = *PL.*, t. XV, col. 1197 sqq.
2. (F. 115^v). Vers.

Inc. Nini Semiramis que tanto coniuge felix.

Des. Cuius ad inferias hic cum Iove Mars tenet aras.

Parchemin ; 115 feuillets ; 0^m,365 × 0^m,245 ; XII^e siècle ; deux colonnes. Sur le feuillet de garde, on lit : *Liber sancti Laurentii in leodio, si quis cum furatus fuerit anathema sit* ; au haut du feuillet, il y a la cote *M-M*, 3-2 ; au verso du même feuillet, on lit : *Liber monasterii sancti Laurentii*. Reliure veau raciné ; au dos, le titre doré : *S. Ambrosius in psalmum CXVIII, XII sacc.* ; plus bas les armes de Belgique et l'inscription : *Bibl. royale*.

(1) ERASMI *Opera omnia*, t. V, col. 76.

(2) Sur Henri de Herp, voir S. DIRKS, *Histoire littéraire et bibliographique des frères mineurs de l'observance de S. François*, p. 7-13. La traduction latine du *Directorium* a pour auteur Pierre Blomevenna. Sur les éditions de ce traité et des deux suivants, voir S. DIRKS, *op. cit.*, p. 12.

(3) Au sujet de Pierre Dorland, voir *Biographie nationale*, t. VI, p. 131-33. L'ouvrage que nous signalons ici, a été publié à Louvain chez Thierry Martens, en 1513, sous le titre : *Devotissimi patris Petri Dorlandi ordinis Carthusiensis, de natiuitate, conversione et vita invictissimae martyris beatissimaeque virginis Katherinae oratione soluta non inelegans libellus*.

968. (21844). — S. AMBROSIUS. Super psalmo centesimo decimo octavo.

1. (F. 1). Courts extraits des œuvres de S. AMBROISE.

2. (F. 2). Notes d'É. MATTHIEU au sujet de ce manuscrit.

3. (F. 3-122^v). Expositio beati AMBROSI episcopi de psalmo centesimo octavo decimo. = *PL.*, t. XV, col. 1197 sqq.

Parchemin; 122 feuillets; 0^m,367 × 0^m,25; XII^e siècle; deux colonnes; quelques belles letrines; initiales rouges et vertes; signatures 1-xv. F. 1 et 122^v, il y a la note : *Liber sancti Martini Tornacensis servanti benedictio. Amen. Amen* (1). Ce volume a été acquis en 1863 à la vente Van Alstein pour fr. 37,40. Demi-reliure moderne; au dos, le titre : *Ambrosius. Expositio de psalmo CXVIII. Saec. XII.*

969. (464-66). — S. AMBROSIUS. Opera.

1. (F. 2-109^v). Expositio sanctissimi AMBROSI Mediolanensis archiepiscopi in psalmum centesimum decimum 8^{um}. = *PL.*, t. XV, col. 1197 sqq.

Les feuillets 110-114^v sont blancs.

2. (F. 115-221). Explanatio beati AMBROSI episcopi super Lucam evangelistam. = *Ibid.*, col. 1527 sqq.

3. (F. 221^v-222). Tabula. Evangelia secundum cursum anni ... de quibus tractat beatus Ambrosius super Lucam.

Parchemin; 222 feuillets, plus deux de garde; 0^m,315 × 0^m,22; XV^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et bleues; ancienne pagination 1-cxii et 1 à 105; titre courant dans la seconde partie du volume; signatures. F. 114, il y a la note : *Liber monasterii Rubecallis in Zonia iuxta Bruzellanam*; ff. 2 et 222^v, l'estampille rouge, *R.F.*, de la Bibliothèque nationale de Paris. Reliure ancienne veau raciné et estampé; très jolis fers.

970. (4785-93). — SS. AMBROISE, AUGUSTIN, JÉRÔME. Extraits.

1. (F. 1-4). Table alphabétique des matières.

2. (F. 5-10^v). AMBROSIUS super Lucam.

3. (F. 10-24). AMBROSIUS ex libro super *Beati immaculati*.

4. (F. 24-27). AMBROSIUS super epistolas Pauli.

5. (F. 27-30^v). Ex libris beati AMBROSI de patriarchis, ex libro secundo de Noe et archa.

6. (F. 31-33). Ex libro de bono mortis.

7. (F. 33-49^v). Ex libro de Iacob et vita beata, et divers autres courts extraits.

8. (F. 50-122^v). Courts extraits des diverses œuvres de S. AUGUSTIN.

9. (F. 123-125^v). Extraits de S. JÉRÔME.

10. (F. 126-133^v). Ex omeliis IOHANNIS CRISOSTOMI.

(1) Voir A. D'HERBOMEZ, *Les Manuscrits de l'abbaye de Saint-Martin de Tournai aujourd'hui conservés à la bibliothèque royale de Bruxelles*, p. 22.

11. (F. 134-136^v). Fragment. *Inc. mutil.* ... indicium. Manifeste sibi exigat de Deo quod velit.

12. (F. 136^v-138^v). Ex apologetico beati GREGORII Nazianzeni episcopi.

13. (F. 138^v-140^v). Ex sermonibus beati LEONIS pape.

14. (F. 140^v-142). SENECA, in libro de tragediis.

15. (F. 142-143). SENECA de naturalibus quaestionibus, ex libro II^o.

16. (F. 143-145^v). TULLIUS, de officiis in libro III^o, in libro de amicitia, de senectute, ex libro Tusculanarum MARCI TULLII CICERONIS.

17. (F. 146-147). AUGUSTINUS ex libro quaestionum veteris et novi testamenti.

Parchemin; 147 feuillets; 0^m,258 × 0^m,18; XIII^e siècle; les feuillets 134-145^v sont à deux colonnes; signatures I-XX. F. 147^v, on lit: *Liber S. Marie de villari in brabantia*. Demi-reliure moderné; dos en maroquin rouge avec les titres dorés des divers traités et le chiffre couronné de Léopold I^{er} (1).

971. (5468). — PSEUDO-AMBROSIUS. Commentarius in epistolas Pauli.

1. (Verso du premier feuillet de garde). Note du XVIII^e siècle sur l'Ambrosiaster.

2. (F. 1-186). [Ambrosiaster]. = *PL.*, t. XVII, col. 45 sqq.

3. (F. 186^v). [BALDERICI chronicon episcoporum Cameracensium]. — Fragments, lib. I, c. 93-95, 96-97, 103 (2).

Parchemin; 186 feuillets; 0^m,333 × 0^m,235; XII^e siècle; très jolies lettrines. F. 186, on lit: *Liber sancti Petri Gemblacensis*. Reliure du XVII^e siècle; veau raciné, titre doré: *S. Ambros. sup. epis. S. Pauli*.

972. (9372). — PSEUDO-AMBROSIUS. Super epistolas Pauli.

1. (F. 1). Table des matières.

2. (F. 1^v-143). Tractatus sancti AMBROSII episcopi Mediolanensis in epistola ad Romanos, Corinthios, Galathas, Ephesios, Philippenses, Thessalonicenses, Colossenses, Titum, Timotheum, Philemonem. = *PL.*, t. XVII, col. 45 sqq.

Parchemin; 143 feuillets; 0^m,375 × 0^m,258; XII^e siècle; deux colonnes; très belles lettrines. F. 1, il y a la cote *M-M, 3-1* et la note: *Liber sancti Laurentii in Leodio*, qui se trouve répétée f. 143. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris, aux faisceaux, se voit f. 1 et f. 143^v. Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré: *S. Ambrosius in epistolas S. Pauli XII saec.*, reproduit à l'intérieur du volume sur une étiquette en maroquin rouge; plus bas, les armes de Belgique et l'inscription *Bibl. royale*.

(1) Voir une description de ce manuscrit dans P. THOMAS, *Catalogue des manuscrits de classiques latins de la bibliothèque royale de Bruxelles*, p. 15.

(2) Cf. LE GLAY, *Chronique d'Arras et de Cambrai, par Balderic*, Paris, 1834.

973. (11351-52). — NEMESIUS. De natura hominis, en grec.

Le texte commence seulement au chapitre II : Διαφωνείται σχέδον. = *PG.*, t. XL, col. 536.

Il est précédé d'un exemplaire imprimé de la traduction de Nemesius par NICAISE VAN ELLEBODE, Anvers, Plantin, 1564, in-8° (1).

Papier; 83 feuillets; 0^m,246 × 0^m,170. F. 1 du manuscrit, on lit : Οὐδίκτωρος Γισελίνου δῶρον ἀφοᾶ', *Io. Livineij ex dono Victoris Gislini*. Demi-reliure; dos en maroquin rouge, avec le titre doré : *Nemesii de natura hominis* et le chiffre couronné de Léopold I^{er} (2).

974. (9987-91). — PRUDENTIUS. Carmina.

1. (F. 1-17). [PRUDENTII liber Cathemerinon]. = *PL.*, t. LIX, col. 775-858. *Inc. mutil.* v. 43 prooemii, *ibid.*, col. 775. *Des. post hymnum X.*

2. (F. 17-61^v). Liber perhistephanon. = *PL.*, t. LX, col. 275-591.

Voici l'ordre des hymnes : 1, 5, 4, 6-9, 11, 13, 14, 2, 3, 10.

3. (F. 62-62^v). Hymnus natalis Domini. = *PL.*, t. LIX, col. 888-901.

4. (F. 62^v-64^v). Hymnus Epyphaniae. = *Ibid.*, col. 901-914.

5. (F. 64^v-65^v). Hymnus de Trinitate. = *Ibid.*, col. 915-22.

6. (F. 65^v-68). Contra heresim qui Patrem passum affirmant. = *Ibid.*, col. 921-34.

7. (F. 68-69^v). Contra unionitas. = *Ibid.*, col. 935-50, v. 320.

A cause d'un feuillet arraché entre les feuillets 68 et 69, il manque les vers 210-273.

8. (F. 69^v-73). Adversus Iudaeos. = *Ibid.*, col. 950, v. 321-col. 967, v. 551.

9. (F. 73-76^v). Contra homuncionitas. = *Ibid.*, col. 967, v. 552-col. 983.

10. (F. 76^v-79^v). De natura animi. = *Ibid.*, col. 984-997, v. 952.

11. (F. 79^v-81^v). Adversum fantasmaticos qui Christum negant verum corpus habuisse. = *Ibid.*, col. 997, v. 953-col. 1006 (3).

12. (F. 81^v-96^v). Amartiginia. = *Ibid.*, col. 1007-78.

13. (F. 97-126). Psychomachia. = *PL.*, t. LX, col. 4-90.

14. (F. 127-154^v). Contra Simaccon. = *Ibid.*, col. 118-258. *Des. mutil.*, v. 964.

Il y a dans ce volume un certain nombre de gloses interlinéaires en ancien haut-allemand, publiées par E. STEINMEYER et E. SIEVERS, *Die althochdeutschen Glossen*, Berlin, t. II, 1882, p. 572-74 (4).

(1) Sur cette édition voir *PG.*, t. XL, col. 485.

(2) Voir une description de ce manuscrit par H. OMONT, *Catalogue des manuscrits grecs de la bibliothèque royale de Bruxelles*, p. 14, n. 27.

(3) L'ensemble des nn. 5-11 forme la pièce intitulée *Apotheosis*.

(4) Cf. *Zeitschr. f. deutsch. Alterthum*, t. V, 1845, p. 199-200; t. XIV, 1869, p. 12; t. XVI, 1873, p. 1-2, 92-94 et J. H. GALLÉE, *Altsächsische Sprachdenkmäler*, 1894, p. 319-23.

Parchemin ; 154 feuillets, les feuillets 21, 44, 88 sont comptés deux fois ; 0^m,24 × 0^m,165 ; XI^e siècle ; les feuillets 1-4, 15^v-16, 19-22, 38^v-44^{bis}, 62-64^v, sont à deux colonnes. La *Psychomachia* est ornée de curieux dessins au trait, dont les sujets sont indiqués par les rubriques suivantes, f. 97 : Ubi Abraham obtulit filium suum Isaac ; f. 97^v : Ubi quinque reges predati sunt Loth ; Abraham post predones currit ; f. 98 : Abraham, devictis hostibus, recepit Loth ; cum victoria revertitur ; f. 98^v : Abraham decimas offert ; Melchisedech Deo sacrificium offert ; Abraham sub arbore cum angelis loquitur ; f. 99 : Prudentius orat ; f. 99^v : Fides pugnat contra veterum culturam deorum ; f. 100 : Fides veterum culturam deorum prosternit et pede calcat ; Fides martyribus sanctis coronas offert ; f. 100^v : Pudicitia contra Libidinem pugnat ; Fides Libidinem cum saxo percutit ; f. 101 : Pudicitia Libidinem transfigit gladio ; Pudicitia extinctam Libidinem increpat ; f. 102 : Pudicitia gladium suum lavat in Iordane flumine ; f. 102^v : Pudicitia gladium suum sub altare recondit ; Pudicitia inter varias acies vitiorum intrepide stat ; f. 103 : Ira Patientiam conto percutit ; Ira Patientiam increpat ; Ira lanceam suam iacit contra Patientiam ; f. 103^v : Iacula fracta iacent que miserat Ira contra Patientiam ; Ira Patientiam gladio percutit ; f. 104 : Gladius Ire frangitur, Patientia intrepida perseverante ; Ira gladio suo se interficit ; f. 104^v : Patientia victrix Iram mortuam increpat ; Patientia cum Iob per medias acies transit ; f. 105 : Patientia Iob alloquitur ; Patientia, devictis viciis, virtutibus associatur ; f. 105^v : Superbia inter turmas effreni volitat equo ; Superbia ; f. 106 : Superbia comminatur turbis ; Humilitas et Spes intrepide stant ; f. 107 : Superbia inruere nititur super Humilitatem et spem ; Superbia cadit in foveam ; f. 107^v : Humilitas deridet eam iacentem ; f. 108 : Superbia iacet, Humilitati Spes offert gladium ; Humilitas amputat caput Superbie ; Humilitas caput Superbie affert secum ; f. 108^v : Superbiam extinctam Spes increpat ; f. 109 : Humilitas ascendit in celum ; Luxuria in cena sedet ; f. 109^v : Luxuria, auditus tubis, ad bellum currit ; Luxuriam mirantur viri in curru ; Luxuria blandimentis virtutes decipit ; f. 110 : Viri, deiectis armis, secuntur Luxuriam ; cuncta acies versis signis ad deditionem transit ; f. 110^v : Sobrietas increpat acies suadens eis ne sequantur Luxuriam ; f. 111^v : Sobrietas crucem Domini officii curru Luxuriae ; f. 112 : Sobrietas lapidem iacit et percutit os Luxuriae ; Sobrietas increpat Luxuriam extinctam ; f. 112^v : Iocus cymbala proiciens fugit ; Amor qui et Cupido sagittas vel faretram linquens fugit ; Pompa ornamentis suis se exuens fugit ; f. 113 : Voluptas, laceratis pedibus per spinas, fugit ; Sobrietas vel cetera virtutes abstinent se ab spoliis ; f. 113^v : Avaritia aurum inter harenas legit ; Avaritia spolia sub latere sinistro figit ; f. 114 : Multitudo vitiorum quae Avaritia nigro lacte creat ; Avaritia plurimos sternit, alios cecos errare sinit ; f. 114^v : Avaritia, dum aliquid ostendit, iaculo percutere vult ; Avaritia multos precipitat in incendio ; f. 116 : Avaritia fallit ; Avaritia hos quos fallit ligat ; f. 116^v : Virtutum acies dubitat, Avaritiam non plene cognoscens ; Largitas pugnat contra Avaritiam et spolia eius pauperibus erogat ; f. 117 : Largitas cum gaudio turmas alloquitur ; f. 117^v : Pax venit, effugiunt metus et labor et vis ; Tubae silent, gladii recordantur ; f. 118 : Avaritia stupefacta fatiscit ; Largitas Avaritiam ligat ; f. 118^v : Largitas Avaritiam genibus et calcibus perfodit ; Largitas de spoliis Avaritiae pauperes recreat ; f. 119 : Virtutum legio gaudet victo certamine ; concordia iubet reducere signa in castris ; turmae psallentium equitum et pedestrium ; f. 119^v : Virtutes urbem ingrediuntur ; f. 120 : Discordia occulte vulnerat Concordiam ; Discordia virtutibus insidiatur et capitur ; f. 120^v : Discordia circumdantur virtutes strictis mucronibus ; f. 121 : Fides Discordiam percutit ; virtutes dividunt Discordiam ; f. 121^v : Virtutes aedificant tribunal ; f. 122 : Fides et Caritas conscendunt tribunal ; concurrunt turmae ex omnibus castris ; f. 122^v : Caritas virtutum turmas alloquitur ; f. 123^v : Item Fides virtutum turmas alloquitur ; f. 124 : Fides et Caritas

metiuntur locum ut templum Domino edificetur; f. 124: Templum Domini; f. 125^v: Domus interior ubi Sapientia sedet; f. 126: Prudentius gratias agit Deo. F. 1, on lit la note: *Theodoro Pulmanno* (1) *Ioannes Haechtius dono dabat anno M.D.LXXX, die XI decembris*, puis le volume a appartenu aux bollandistes, car f. 1, il y a la cote de leur bibliothèque *MS. 66. Reliure moderne, veau raciné, filets; au dos, le titre doré, reproduit à l'intérieur sur une étiquette en maroquin rouge: *Prudentii Carmina, IX saec.*, en dessous, les armes de Belgique et l'inscription *Bibl. royale* (2).

975. (9968-72). — PRUDENTIUS. Carmina.

1. (F. 1^v). De Prudentio.
2. (F. 1^v-17). [Liber Cathemerinon]. = *PL.*, t. LIX, col. 775 sqq.
3. (F. 17-49). Liber peristephanon. = *PL.*, t. LX, col. 275-591.
4. (F. 49-51^v). Tituli historiarum.
5. (F. 51^v-63). Apotheosis. = *PL.*, t. LIX, col. 921-1006.
6. (F. 63-73^v). Amartigenia. = *Ibid.*, col. 1007-78.
7. (F. 74-115). [Psychomachia]. = *PL.*, t. LX, col. 4-90.
8. (F. 115^v-116). [De lapidibus pretiosis]. — Court extrait.
9. (F. 116^v-136^v). Liber contra Symmachum. = *Ibid.*, col. 118-258.
10. (F. 137-138^v). [SERVIUS]. Centimetrum. *Des. mutil.* Alma Venus Paphon ingre.... (3).

Il y a, au cours du volume, un grand nombre de gloses en ancien haut-allemand (4).

Parchemin; 138 feuillets; 0^m,255 × 0^m,20; XI^e siècle; deux colonnes, sauf les feuillets 74-115. La *Psychomachia* est ornée des dessins au trait qui accompagnent ordinairement ce traité (5). F. 116, on lit la note: *Codex monasterij sancti Maximinij extra muros Treverorum. Si quis abstulerit anathema sit; f. 1: Societatis Iesu Antverpie D. P.* et l'ex-libris de l'ancienne bibliothèque des bollandistes *MS. 63. Le timbre rouge de la Bibliothèque nationale de Paris, aux faisceaux, se voit f. 1 et 138^v. Superbe reliure moderne, peau de truie très blanche, estampée, avec jolis fers et l'inscription *Regia Bibl. Belgica.* Sous corne, dans un cadre en cuivre: PRVDENTIVS, étiquette de l'ancienne reliure, clous et fermoirs en cuivre ciselé (6).

(1) Au sujet de Théodore Poelman, voir MAX ROOSES, *Christophe Plantin*, Anvers, 1882, p. 106-8.

(2) Voir une description de ce volume dans R. STETTNER, *Die illustrierten Prudentiushandschriften*, 1895, p. 43-46, où l'on trouvera la bibliographie complète de ce manuscrit souvent étudié; STEINMEYER et SIEVERS, *Die althochdeutschen Glossen*, t. IV, 1898, p. 397.

(3) Éd. KEIL, p. 461, l. 19.

(4) Publiées dans *Zeitschr. für deutsch. Alterth.*, t. V, 1845, p. 200-3; t. XVI, 1873, pp. 2, 94-107; puis par STEINMEYER et SIEVERS, *Die althochdeutschen Glossen*, t. II, p. 557-71, n. DCCCVIII.

(5) Voir ci-dessus, p. 47, n. 974 (9987-91).

(6) Voir une description de ce volume dans R. STETTNER, *Die illustrierten Prudentiushandschriften*, 1895, p. 123 sqq.; P. THOMAS, *Catalogue des manuscrits de classiques latins de la bibliothèque royale de Bruxelles*, 1896, p. 45-46; STEINMEYER et SIEVERS, *Die althochdeutschen Glossen*, t. IV, 1898, p. 396-97.

976. (14586-90). — PRUDENTIUS. Opera.

1. (F. 1-3^v). [PRUDENTIUS. Hymnus ieiunantium]. = *PL.*, t. LIX, col. 834 sqq. *Inc. mutil.* v. 33.
2. (F. 3^v-4). Hymnus post ieiunium. = *Ibid.*, col. 856.
3. (F. 4-6). Hymnus omni hora. = *Ibid.*, col. 862.
4. (F. 6-7). Hymnus circa exsequias defuncti. = *Ibid.*, col. 875.
5. (F. 7-8). [Hymnus VIII kalendas ianuarii]. = *Ibid.*, col. 888.
6. (F. 8-8^v). [Hymnus de epiphania]. = *Ibid.*, col. 901. *Des. mutil.* v. 104.
7. (F. 9-51). Liber peristephanon. = *PL.*, t. LX, col. 277.
8. (F. 52-68^v). AURELII PRUDENTII CLEMENTIS liber apotheoseos. = *PL.*, t. LIX, col. 915 sqq.
9. (F. 68^v-83). Amartigenia. = *Ibid.*, col. 1007.
10. (F. 84^v-102). Psychomachia. = *Ibid.*, col. 11.
11. (F. 102^v-103). [De computo].

Parchemin; 103 feuillets; 0^m,228 × 0^m,141; XI^e siècle; sont à deux colonnes les feuillets 3^v-4, 6-8^v, 12-19, 27^v-35^v; très curieuses lettrines. Ce volume provient de l'abbaye de Parc; sur les deux plats de la couverture les armoiries de ce monastère ont été grattées. Reliure veau, tranche rouge.

977. (10066-77). — PRUDENTIUS. Psychomachia.

1. (F. 1-3^v). Fragment de bréviaire, avec neumes gothiques.
2. (F. 4). Index.
3. (F. 4^v-65). SOLINUS. De situ orbis terrarum et singulis mirabilibus (1).
4. (F. 66-79^v). Allegoriarum obscuritates satis profunde de veteri testamento.
5. (F. 80-84). Interpretatio dictionum hebraicarum bibliae.
6. (F. 84-85). [Glossaire gréco-latin]. *Inc. Absida. lucida. Des. Chen. ansen (sic).*
7. (F. 85^v-86). Glose in primam et extremam partem sicomachie Prudentii.
8. (F. 86^v-87). In natali sancti Nicholai pontificis (antiennes des vêpres, répons et versets des leçons, antiennes à laudes). — Antiphone de assumptione sancte Mariae.
9. (F. 87^v) Fragment d'homélie. *Inc. Septem columnis septem signantur dona Spiritus sancti. Des. nos flores misticos dicitur tenere.*
10. (F. 88-88^v). Diverses notes, surtout de grammaire.
11. (F. 89-111^v). HIERONIMUS, secundum quosdam, super expositionem dictionum difficilium bibliae.

(1) Cf. TH. MOMMSEN, *C. Iulii Solini collectanea rerum memorabilium*, Berolini, 1895, p. XXXI.

12. (F. 112-139). [PRUDENTIUS. *Psychomachia*]. = *PL.*, t. LX, col. 4-90.
13. (F. 139^v). Notes grammaticales. Fragment de glossaire latin.
14. (F. 140-156^v). *Physiolus de natura animantium* (1).
15. (F. 157). [De numeris].
16. (F. 157^v-158). Notes diverses.
17. (F. 158^v-160^v). [Mico. Dictionnaire métrique] (2).
- Inc.* A. Hoc omnes discutunt ante alfabetam puellam.
18. (F. 161). [BOETIUS. *Commentarius in Ciceronis topica*]. Fragment. *Inc.* Exortatione tua, Patrici rethorum peritissime.
19. (F. 161^v-162). Notes de grammaire.
20. (F. 163). [De villa nuncupata Lytte iacente supra Mosam prope Buscum ducis et pertinente ad ecclesiam leodiensem].
21. (F. 163-163^v). Fragment de bréviaire : office de la S^{te} Croix.

Parchemin ; 163 feuillets ; 0^m,265 × 0^m,165 ; XII^e siècle ; les feuillets 99-163 sont du XI^e et forment un autre manuscrit ; la note du f. 163 est du XV^e siècle ; sont sur deux colonnes les ff. 1-3, 5-8, 66-79, 89^v-111^v, 157-160^v ; les ff. 80-85 sont à trois colonnes. La *Psychomachia* de Prudence est ornée des dessins ordinaires au trait, relevés ici par quelques couleurs ; curieux dessins aussi dans le *Physiologus* (3). F. 4, il y a la cote LL, 6-1 et la note : *Liber sancti Laurentij prope Leodium*, et f. 80 : K-K, 5-15. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 1 et f. 161^v. Reliure moderne, veau raciné ; au dos, le titre doré reproduit sur une étiquette à l'intérieur du volume : *Solinus de situ orbis etc. X-XVII saec.* ; en dessous, les armes de Belgique et l'inscription : *Bibl. royale* (4).

978. (10038-53). — PRUDENTIUS. Opera.

1. (F. 1-11). Opusculum PROBE uxoris Adelfi. Excerptum virgiliano opere de veteri lege, de adventu Domini, de nativitate, de passione, de resurrectione, de ascensione. = *PL.*, t. XIX, col. 805-18.
2. (F. 11-11^v). Versus BEDE presbiteri de planctu et amaritudine presentis vite et horribili futuri iudicii die. = *PL.*, t. XCIV, col. 633. *Des. mutil.* v. 38.
3. (F. 12-19). Dialogus inter BERNONEM Augiensis cenobii abbatem et Gerongum monachum de ieiuniis quatuor temporum qualiter per sua sabbata sint observanda. = *PL.*, t. CXLII, col. 1087 sqq.

(1) Le texte de ce *Physiologus* a été publié par C. CAHIER ET A. MARTIN, *Mélanges d'archéologie*, t. II, pp. 107-230 ; t. III, pp. 203-83 ; t. IV, pp. 56-87.

(2) Cf. le manuscrit n. 10470 de la Bibliothèque royale de Belgique.

(3) Reproduits dans C. CAHIER ET A. MARTIN, loc. cit.

(4) Au sujet de ce volume, voir *Bulletin de l'Académie royale de Belgique*, t. IX, 1^{re} part., 1842, p. 228-31 ; *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. II, p. 393, note 2 ; P. THOMAS, *Catalogue des manuscrits de classiques latins de la bibl. royale de Belgique*, p. 61 ; CAHIER ET MARTIN, *op. cit.*, t. II, p. 89-90 ; STETTINER, *Die illustrierte Prudentiushandschriften*, pp. 61-69.

4. (F. 19-29^v). [RUPERTUS TUITIENSIS. De laesione virginitatis]. = *PL.*, t. CLXX, col. 545 sqq.

5. (F. 29^v-39^v). Sententie ex libro sancti AMBROSII super Lucam excerpte. = *PL.*, t. XV, col. 1533 sqq.

6. (F. 39^v-49). Scala celi magistri HUGONIS. *Inc.* Primus gradus est penitentia. *Des.* cum altero possit habitare.

7. (F. 49-49^v). [De afflictionibus]. *Inc.* Vince dolorem, anima, esto in cunctis casibus firma. *Des.* morbum suum secum transfert.

8. (F. 49^v-54^v). Versus quos spiritus nequam composuit (1). — Expositio eorum undecim versuum.

9. (F. 55-64^v). [HERMANNUS CONTRACTUS]. Collocutio invectiva ovis et lini. = *PL.*, t. CXLIII, col. 445 sqq.

10. (F. 65-79^v). Sychomachia PRUDENTII. = *PL.*, t. LX, col. 4 sqq.

11. (F. 79^v-83). Glose in prima et extrema parte eiusdem libri.

12. (F. 83-96). Vita sancte Marie Egyptiace. = *BHL.*, n. 5419.

13. (F. 96-96^v). De mortis acerbitate.

Inc. Quo caro, quo mundus, quo mundi gloria tendat.

Des. Plus onerat, dives sic preit, immo perit.

14. (F. 96^v). Vers satiriques (2).

Inc. Ecce non paulizat
Paulus, sed saulizat.

Des. Codro claudunt fores
Censuum censores.

15. (F. 97-144^v). Anticlaudianus ALANI de Antirufino. = *PL.*, t. CCX, col. 481 sqq.

Le feuillet 145 est blanc.

16. (F. 146-176). MACROBIUS. [Somnium Scipionis] (3).

17. (F. 176^v). Deux diagrammes astrologiques.

18. (F. 177-177^v). Fragment. *Inc.* mutil. ... randam videret etiam secreta nature. *Des.* mutil. quae duobus prae[dict]is supradiximus...

Entre les feuillets 73 et 74 se trouve insérée sur deux feuillets de papier la table des matières de ce volume, écrite au XVII^e siècle.

Parchemin ; 177 feuillets ; 0^m,213 × 0^m,107 ; XIII^e siècle ; initiales rouges et vertes et quelques letrines rehaussées d'or ; signatures I-V, I-VIII. Le timbre rouge de la Bibliothèque nationale de Paris, aux faisceaux, se trouve f. 177^v. Reliure moderne, veau raciné ; au dos, le titre doré reproduit à l'intérieur sur une éti-

(1) Publiés par le B⁹ⁿ DE REIFFENBERG, *Bulletin de l'Académie royale de Bruxelles*, t. IX, 1^{re} partie, 1842, p. 143.

(2) Publiés par le B⁹ⁿ DE REIFFENBERG, *Bulletin de l'Académie royale de Bruxelles*, t. IX, 1^{re} partie, 1842, p. 148-49.

(3) Cf. l'édition de Macrobe par FR. EYSSENHARDT, Teubner, Leipzig, 1893, p. 476 sqq.

quette : *Probae centones. Bernonis dialogus etc. XII saec.* ; en dessous, les armes de Belgique et l'inscription : *Bibl. royale* (1).

979. (9983-86). — PRUDENTIUS. Carmina.

Ce volume se compose de l'édition de Prudence par THÉODORE PULMANN : *Aurelius Prudens Clemens Theodori Pulmanni Cronenburgii et Victoris Giselini opera, ex fide decem librorum manuscriptorum, emendatus et in eum, eiusdem Victoris Giselini commentarius. Antverpiae, ex officina Christophori Plantini M. D. LXIV. Cum privilegio* (2).

Cette édition a été interfoliée et porte des variantes de manuscrits dont une liste se trouve f. 3. Cette collation semble avoir été faite par VICTOR GISELIN (3).

Papier ; 385 feuillets ; 0^m,23 × 0^m,165 ; XVI^e siècle. F. 1, on lit le nom propre *V. Giselinus* et au-dessus : *Ex libris Iani Lernutii* (4) [*ex*] *legato Victoris G[iselini]*. Reliure moderne, veau raciné ; au dos, le titre doré, reproduit à l'intérieur sur une étiquette en maroquin rouge : *Prudentii Carmina* ; en dessous, les armes de Belgique et l'inscription : *Bibl. royale*.

980. (10807-11). — CHROMATIUS. Opera.

1. (F. 1^v-4). Liber sancti CHROMATI episcopi de octo dominicis beatitudinibus. = *PL.*, t. XX, col. 323-28.

2. (F. 4^v-30). Eiusdem CHROMATI tractatus de sermone Domini quem locutus est in monte. = *Ibid.*, col. 351-68.

3. (F. 30-36^v). De venerabilium patrum IHERONIMI et AUGUSTINI dictis collecta.

4. (F. 36^v-39). Sermo exortatorius sancti AUGUSTINI de vitanda ebrietate*. = *PL.*, t. XXXIX, col. 2307, n. 295.

5. (F. 39-40^v). De octo generibus mendacii ex libro sancti AUGUSTINI de mendacio. = *PL.*, t. XL, col. 505.

6. (F. 40^v-41). Contra eos qui ad mentiendum patrocinantur sibi de scripturis exempla. = *Ibid.*, col. 540, n. 32.

7. (F. 41-41^v). Item AUGUSTINUS ex libro contra mendacium. = *Ibid.*, col. 539, n. 31.

8. (F. 42-66). Opusculum LANFRANCI contra Berengarium hereticum. = *PL.*, t. CL, col. 407 sqq.

* *Ita corr.*
cod. vitando
mendacio.

(1) Voir une description de ce manuscrit dans *Bulletin de l'Académie royale de Bruxelles*, 1842, 1^e part., p. 140-149 ; *ibid.*, 2^e part., p. 576-78 ; *Annuaire de la Bibliothèque royale*, 1844, p. 77-87 ; *Zeitschr. f. deutsches Alterthum*, t. XI, 1859, p. 215 sqq. ; *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. II, p. 393 ; P. THOMAS, *Catal. des manuscrits de classiques latins de la bibl. royale de Bruxelles*, p. 57.

(2) C'est la seconde édition de Prudence publiées par Pulman et Giselin. Sur ces éditions voir L. ROERSCH dans *Biographie nationale*, t. VII, p. 791.

(3) Voir la notice sur Giselin dans *Biographie nationale*, t. VII, p. 787-92.

(4) Cf. *ibid.*, t. XI, p. 631-38.

9. (F. 66-68). Prefatio IHERONIMI presbiteri quam suo super Matheum commento preponit. = *PL.*, t. XXVI, col. 15-22.

Parchemin; 68 feuillets; 0^m,244 × 0^m,159; XII^e siècle. On lit, f. 1 : *Iste liber pertinet monasterio sancti Laurentij prope Leodium*; *Liber sancti Laurentii martiris. Si quis eum abstulerit, anathema sit*, et f. 68^v : *Liber sancti Laurentii prope Leodium*. Les cotes *KK*, 6-17 et *LL*, 2-9 se trouvent f. 1 et f. 42. Reliure moderne, veau raciné, avec le titre doré reproduit à l'intérieur du volume sur une étiquette en maroquin rouge : *Variorum opuscula theologica saec. XI*; plus bas, les armes de Belgique et l'inscription : *Bibl. royale*.

981. (21887). — RUFINUS. *Historia ecclesiastica*.

1. (F. 1^v). Index.

2. (F. 2-181). RUFINUS. *Ecclesiastica hystoria*. = *PL.*, t. XXI, col. 461 sqq.

3. (F. 181^v-188). *Genealogia comitum flandrensium* (1).

4. (F. 188-196^v). *Quedam epistole comitum flandrensium qui fuerunt imperatores Constantinopolitani*.

a) *Epistola BALDUINI* (2).

b) *Alia epistola EIUSDEM* (3).

c) *HENRICI imperatoris Constantinopolitani de quatuor imperii hostibus* (4).

d) *BERENGARIAE reginae Legionis ad Blancam reginam Francorum* (5).

Parchemin; 196 feuillets; 0^m,317 × 0^m,221; XII^e siècle; deux colonnes; très jolies letrines en vert et en rouge; titre courant en rouge; signatures I-XXII. F. 2, 181, 196^v, on lit : *Liber sancte Marie de Camberone*, et ff. 6, 9, 13, 17, 21, 25, 29, 34, 39, 44, 48, 52, 56, 61, 66, 72, 76, 80, 86, 90, 96, 101, 107, 112, 116, 120, 124, 128, 133, 138, 143, 149, 153, 157, 162, 167, 171, 176, 180, 186, 191, 195, se trouve l'inscription : *de Camberone*. Au verso du premier plat de la couverture, il y a l'ex-libris : *P. P. C. Lammens*. Ce volume fut acquis par la Bibliothèque royale à la vente des livres de Lammens en 1841, pour 319 francs. Demi-reliure, veau; au dos, le titre doré : *Historia ecclesiastica, genealogia et epistolae comitum Flandriae*.

982. (8410-13). — RUFINUS. *Historia monachorum*.

1. (F. 1). [Oratio ad B. Virginem].

2. (F. 1^v-2). *De occultis Dei iudiciis*.

(1) Publiée *MG.*, scr., t. IX, p. 317-25.

(2) Publiée par MIRAEUS, *Codex donationum piarum*, t. I, p. 110; BOUQUET, *Recueil des hist. de France*, t. XVIII, p. 520; C. WINS, *Éloge de Baudouin de Constantinople*, Mons, 1856, p. 75 sqq.

(3) MARTENE ET DURAND, *Thes. nov. anecd.*, t. I, p. 79.

(4) *Ibid.*, t. I, p. 821.

(5) Cette lettre sur la victoire d'Alphonse VIII sur les Maures à la bataille de Las Navas de Tolosa a été plusieurs fois publiée, entre autres par BOUQUET, *Recueil des hist. de France*, t. XIX, p. 254.

3. (F. 2-28). [RUFINI historia monachorum]. = *PL.*, t. XXI, col. 389-462.
4. (F. 29). Table du précédent traité.
5. (F. 29^v-109). [Verba seniorum]. = *PL.*, t. LXXIII, col. 851-1022.
6. (F. 109-110). De paenitentia.
7. (F. 110-111). Vita sancte Marine. = *BHL.*, n. 5528.
8. (F. 111^v-112). Oratio sancti EFFREM (1).
9. (F. 112-114^v). Tractatus domni EFFREM de iudicio Dei et resurrectione et regno caelorum et de munditia anime (2).
10. (F. 114^v-116^v). De beatitudine anime (3).
11. (F. 116^v-118^v). Liber EIUSDEM de penitentia (4).
12. (F. 118^v-121). De luctaminibus (5).
13. (F. 121-124). De penitentia (6).
14. (F. 124-130^v). Monita S. EFFREM diaconi ad monachos (7).
15. (F. 130^v-136^v). Admonitio EIUSDEM (8).
16. (F. 136^v-139). EIUSDEM unde supra (9).
17. (F. 139-140). Ex dictis BASILII Cesariensis episcopi.
18. (F. 140). Prières diverses.

Parchemin; 140 feuillets; 0^m,26 × 0^m,17; XIII^e siècle; deux colonnes. Demi-reliure; dos en maroquin rouge; au dos, les principaux traités, avec le chiffre couronné de Léopold I^{er}.

983. (11381). — PALLADIUS. Historia Lausiaca, en grec.

1. (F. 1-1^v). Index.
2. (F. 2-59^v). Τοῦ μακάρος καὶ ἀγιωτάτου Παλλαδίου ἐπισκόπου Ἐλενοπόλεως πρὸς Λαύσον πραιπόσιτον διηγήματα περὶ τοῦ βίου τῶν ἀγίων πατέρων. = *BHG.*, p. 102.

Papier; 59 feuillets; 0^m,202 × 0^m,160; XVII^e siècle (1614), car on lit, f.59^v : *EMS. Bibliothecae Augustanae ταύτας τὰς διηγήσεις descripsit fide qua debuit Daniel Davidis ex fratre nepos, Hoeschelius, anno S. N. 1614, mense ianuario* (10). L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 2 et f. 59^v.

(1) Cf. *Ephraem Syri opera omnia*, Romae, 1723, t. I, p. xcviij, sub verbis *Obsecro te*.

(2) *Ibid.*, sub verbis *Gloria omnipotenti Deo*.

(3) *Ibid.*, p. lxxxj, n. 6.

(4) *Ibid.*, n. 8.

(5) *Ibid.*, n. 7.

(6) *Ibid.*, n. 4.

(7) *Ibid.*, n. 1.

(8) *Ibid.*, p. xcix, sub verbis *Recordatus sum diei illius*. Cf. *ibid.*, p. 53 sqq.

(9) *Ibid.*, p. lxxxiii, n. 4, de *conversatione monastica*.

(10) Voir, au sujet du célèbre humaniste David Hoeschel, *Allgemeine deutsche Biographie*, t. XIII, p. 176-77.

Demi-reliure moderne, maroquin rouge; au dos, le titre doré : *Palladii vitae patrum* (1).

984. (II. 1636). — S. HIERONYMUS. Epistolae.

1. (F. 1-17). Catalogia GENNANDI episcopi Constantinopolitanae aecclisiae. = *PL.*, t. LVIII, col. 1059-1120.

2. (F. 17-69). [HIERONYMI epistolae]. = *PL.*, t. XXX, col. 182-88; t. XXII, nn. 37, 21, 10, 146, 120, 147, 16, 17, 45.

3. (F. 69-71^v). [Epistola PAULINI Nolani]. = *PL.*, t. LXI, col. 300.

4. (F. 72). [Epistola INNOCENTII papae] clero et populo, principibus et baronibus Albiensis diocesis (2). *Inc.* Universitatem vestram latere non volumus. *Des.* ecclesie Albiensi restituant.

5. (F. 72^v-73). Capitula libri Gennandii Constantinopolitane episcopo (3).

6. (F. 73-155). [Epistolae HIERONYMI]. = *PL.*, t. XXII, nn. 130, 123, 79, 57, 118, 76, 46, 77, 70, 146, 73, 85, 74, 125, 97.

7. (F. 155-155^v). Epistola DIONISII Liddensis episcopi ad papam Theophilum. = *PL.*, t. XXII, n. 94.

8. (F. 155^v-156^v). ANASTASH episcopi urbis Romae ad Venerium episcopum Mediolani (4).

9. (F. 156^v-160). In Esaia parvula abbreviatio de capitulis paucis. = *PL.*, t. XXIV, col. 937.

10. (F. 160-174^v). [Epistolae HIERONYMI]. = *PL.*, t. XXII, nn. 127, 145, 47, 55, 34.

11. (F. 174^v-180). [S. IOHANNES CHRYSOSTOMUS] in Eucropium (*sic*). = *PG.*, t. LI, col. 391 sqq.

12. (F. 180^v). Extrait. *Inc.* Descendi in ortum aromatum. *Des.* videbis me h. et. n. potest.

13. (F. 180^v). INNOCENTIUS dilectis filiis R. monacho, P. capellano et militibus castris curie beati Petri (5).

(1) Sur ce volume. voir H. OMONT, *Catalogue des manuscrits grecs de la bibliothèque royale de Bruxelles*, p. 15, n. 34.

(2) Voir, au sujet de cette lettre inédite, datée de Pise, *III idus Iunii* [1135], E. D'AURIAC, *Histoire de l'ancienne cathédrale et des évêques d'Alby*, Paris, 1858, pp. 52-54, 194-96. Dans cette pièce, Innocent II annonce qu'il a excommunié Humbert, évêque d'Albi, au concile de Pise.

(3) Sous ce titre erroné se trouve indiquée la suite des pièces qui sont contenues dans ce volume.

(4) Sur les diverses publications de cette lettre, voir J. VAN DEN GHEYN, S. J., *La Lettre du pape Anastase I^{er} à S. Venerius, évêque de Milan, sur la condamnation d'Origène*, dans *REVUE D'HISTOIRE ET DE LITTÉRATURE RELIGIEUSES*, t. IV, 1899.

(5) Cf. K. HAMPE, *Reise nach Frankreich und Belgien im Frühjahr 1897*, *NEUES ARCHIV*, t. XXIII, p. 611-12. M. Hampe attribue cette lettre à Innocent II et la croit datée de l'année 1135 (*III idus Iunii*).

Parchemin; 180 feuillets; 0^m,32 × 0^m,215; X^e siècle, sauf les feuillets 72 et 180^v écrits au XIII^e; curieuses capitales et titres en diverses couleurs; signatures *a-t*. Au verso de la couverture, premier plat intérieur, il y a l'ex-libris: *Ex bibliotheca P. C. Lammens*; plus tard, ce manuscrit passa dans le cabinet de Jean de Meyer (1), à la vente des livres duquel il fut acquis par la Bibliothèque royale en 1869 pour 220 francs. Demi-reliure; au dos, le titre doré: *Gennadii et Hieronymi opuscula M. S.*

985. (II. 1071). — S. HIERONYMUS. Epistolae.

1. (F. 1). Capitula.
2. (F. 1^v-2). *Expositio fidei IHERONIMI presbiteri ad Damasum papam romanum.* = *PL.*, t. XLV, col. 1716-18.
3. (F. 2^v-119^v). [*HIERONYMI epistolae*]. = *PL.*, t. XXIII, col. 723; puis t. XXII, nn. 53, 118, 99, 133, 106; t. XXVIII, col. 1123; t. XXIX, col. 117; t. XXX, col. 13; t. XXII, nn. 130, 117, 54, 79; t. XXX, col. 50, 210; t. XXII, nn. 37, 59, 11, 26, 27, 41, 42, 44, 43, 38, 29, 34, 32, 28, 22, 24, 30, 127, 39, 75, 77, 123, 148, 121, 120, 22, 13, 45, 46, 25, 11, 31.
4. (F. 120^v). *RADULPHI episcopi Leodiensis decreta adversus incendiarios et rerum ecclesiarum depredatores* (2).

Parchemin; 120 feuillets; 0^m,362 × 0^m,26; XIII^e siècle; deux colonnes; très jolies letrines en diverses couleurs; titre courant; signatures *r-xv*. F. 120^v, il y a la note: *Liber sancte Marie de Alna* (3). Ce volume a été acquis en 1888 de Sir Thomas Phillipps, dans la bibliothèque duquel il portait le n. 4661. Demi-reliure, toile anglaise, coins en cuir; au dos, le titre doré: *S. Hieronymi epistolae*.

986. (II. 924). — S. HIERONYMUS. Epistolae.

1. (F. 1-2). [*De sigillis Apocalypseos*].
2. (F. 3-3^v). Table des lettres.
3. (F. 3^v-85). [*HIERONYMI epistolae*]. = *PL.*, t. XXII, nn. 19, 20, 18; t. XXX, col. 148; t. XXII, nn. 146, 58; t. XXX, col. 188; t. XXII, nn. 52, 14, 60, 69, 66, 57, 82, 84; puis *planctus ORIGENIS* (4), puis t. XXII, nn. 78, 62, 15, 16, 21, 73, 17, 124; t. XLV, col. 1716-18; t. XXII, nn. 72, 140, 129; t. XXX, col. 116; t. XXII, nn. 47, 71; t. XXX, col. 278; t. XXII, n. 50.
4. (F. 85-89). *Epistola EPIPHANI ad Iohannem Iherosolimitanum episcopum a IHERONIMO translata.* = *PL.*, t. XXII, n. 51.
5. (F. 89-97). *IHERONYMUS adversus Helvidium de virginitate sancte Marie.* = *PL.*, t. XXIII, col. 183 sqq.

(1) Voir *Catalogue des livres et manuscrits formant la bibliothèque de feu M. Jean de Meyer*, Gand, 1869, p. 142, n. 869.

(2) Ce titre a été ajouté au XIX^e siècle. Voir ce document imprimé dans MARTÈNE ET DURAND, *Thesaurus novus anecdotorum*, t. I, p. 492.

(3) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 241.

(4) Voir plus bas, p. 64, n. 992 (3527). Cf., sur cette pièce, A. MOLINIER, *Catalogue des manuscrits de la Bibliothèque Mazarine*, t. I, pp. 242, 453, 465.

6. (F. 97-98). IERONYMUS Vigilantium blasphemum arguit. = *PL.*, t. XXII, n. 61.

7. (F. 98-162^v). [HIERONYMI epistolae]. = *PL.*, t. XXII, n. 109; t. XXIII, col. 339; *ibid.*, col. 355 sqq.; t. XXII, nn. 1, 70, 74, 5, 76, 68; t. XXX, col. 145; t. XXII, nn. 147, 6, 8, 125, 10, 7, 9, 12, 2, 102, 4; t. XXX, col. 182; t. XXII, nn. 85, 118, 99, 77, 3, 107, 64. *Des. mutil.* (t. XXII, col. 620). Duoque lapides in superhumerali vel Christum signi[ficant].

Parchemin; 162 feuillets; 0^m,45 × 0^m,31; XIII^e siècle; deux colonnes; jolies initiales rouges et bleues. Ce volume provient de l'abbaye de Villers, mais il ne reste aucune indication de cette provenance. F. 1, il y a l'ex-libris : *Sir T. P. Middle Hill, 315*. Reliure moderne, veau brun estampé, avec l'inscription : *Regia Bibliotheca Belgica*; fermoirs en cuivre.

987. (II. 2587). — S. HIERONYMUS. Opera.

1. (F. 1-1^v). Fragment. *Inc.* Omnia creans cum Patre semper et Spiritu sancto. *Des.* et vere de Patre quia procedit.

2. (F. 2-3^v). [Epistola PSEUDO-HIERONYMI ad Oceanum de vita clericorum]. = *PL.*, t. XXX, col. 287. *Inc. mutil.* ... prima temptamina sunt clericorum (n^o II).

3. (F. 3^v-7^v). Epistola alia ad eundem de unius uxoris viro. = *PL.*, t. XXII, n. 69. *Des. mutil.* Cumque essemus...

4. (F. 8-10^v). Fragment. *Inc.* Sodome et Gomorre iustus erumpens. *Des.* consocians scriptura divina gratiam benedictionis.

5. (F. 11). [Epistola ad Desiderium]. = *Ibid.*, n. 47, col. 492. *Inc. mutil.* in memet reversus satis dolui.

6. (F. 11-14^v). Epistola sancti IERONIMI de tribus virtutibus. = *PL.*, t. XXX, col. 116-22.

7. (F. 14^v-16^v). Epistola ad Dardanum de terra repromissionis. = *PL.*, t. XXII, n. 129. *Des. mutil.* receperunt plus (col. 1104, n. 4).

8. (F. 17-18). [Epistola EPIPHANII]. *Inc. mutil.* quam Adam donaverat. = *Ibid.*, n. 51.

9. (F. 18-18^v). Ad Lucinium. = *Ibid.*, n. 71. *Des. mutil.* Egredere terra et (col. 670, n. 2).

10. (F. 19-19^v). [Ad Riparium]. = *Ibid.*, n. 109. *Inc. mutil.* destrueret aut in templo converteret (col. 907, n. 1 *in fine*).

11. (F. 19^v-20^v). Epistola ad eundem Riparium (1). = *PL.*, t. XXIII, col. 339. *Des. mutil.* quis enim, o insanum capud (col. 343, n. 5).

12. (F. 21). [Epistola ad Augustinum]. = *PL.*, t. XXII, n. 141. *Inc. mutil.* scit quid dicam prudentia tua (col. 1180).

(1) Sous ce titre peu exact, il y a le commencement du traité *Contra Vigilantium*.

13. (F. 21). Epistola III [ad Augustinum]. = *Ibid.*, n. 142.
14. (F. 21-21^v). Item IIII ad Augustinum et ad Alipium episcopos. = *Ibid.*, n. 143.
15. (F. 21^v-23). Explanatio fidei ad eosdem missa episcopos. = *PL.*, t. XLV, col. 1716-18.
16. (F. 23-24^v). Epistola sancti IERONIMI ad Heliodorum exhortatoria ad contemptum mundi. = *PL.*, t. XXII, n. 14.
17. (F. 24^v-32). Epistola eiusdem ad Nepotianum de vita clericorum. = *Ibid.*, n. 52.
18. (F. 32-36^v). Epistola ad Nepotianum (1) de omnibus divine ystorie libris. = *Ibid.*, n. 53.
19. (F. 36^v-38). Epistola ad Amandum de diversis questionibus. = *Ibid.*, n. 55.
20. (F. 38-44^v). Liber ad Pammachium de optimo genere interpretandi. = *Ibid.*, n. 57.
21. (F. 44^v-45). Epistola PAMMACHII et OCEANI ad beatum Ieronimum. = *Ibid.*, n. 83.
22. (F. 45-48^v). Epistola sancti IERONIMI ad eosdem de libris Origenis. = *Ibid.*, n. 84. *Des. mutil.* et quasi ad Mitridatis litteras, omnis ... (col. 751, n. 10).
23. (F. 49). [Epistola ad Adrianum]. *Inc. mutil.* ... per lxx annos templi solitudo permansit.
24. (F. 49-49^v). Epistola EPIPHANI ad Iohannem episcopum Constantinopolitanum. = *Ibid.*, n. 51. *Des. mutil.* per multos diaconos iussimus ... (col. 518, n. 1).
25. (F. 50-55^v). [HIERONYMUS ad Helvidium]. Fragments. = *PL.*, t. XXIII, col. 192, n. 9; col. 194, n. 11; col. 190, n. 7; col. 192, n. 9; col. 188, n. 4; col. 190, n. 7; col. 198, n. 15; col. 201, n. 17; col. 196, n. 13; col. 198, n. 15; col. 194, n. 19; col. 196, n. 13.
26. (F. 56). [Ad Lucinium]. = *PL.*, t. XXII, n. 71. *Inc. mutil.* ... auctoritatibus edidere (col. 672, n. 6).
27. (F. 56-56^v). Liber contra Helvidium de virginitate sancte Marie. = *PL.*, t. XXIII, col. 183. *Des. mutil.* vestigiis persequuntur, pugnancia ... (col. 185, n. 4).
28. (F. 57-64^v). Fragment d'un traité de droit canon. *Inc. mutil.* ... de re ut XII. q. II. Socrates. *Des. mutil.* et in defensione ut in fine exponemus. — On relève dans ce fragment les rubriques suivantes : *De Iudeis et Saracenis. De hereticis. De apostatis. De infantibus et languidis expositis. De homicidio.*

Parchemin; 64 feuillets; 0^m,323 × 0^m,235, pour les 56 premiers feuillets; 0^m,216 × 0^m,153, pour les autres; XIII^e siècle, les 56 premiers feuillets, les autres

(1) *Sic*, au lieu de : *ad Paulinum*.

sont du XIV^e; deux colonnes. La première partie du manuscrit a de fort belles lettrines et porte les signatures VIII, X, XI, XII, XVII; la seconde partie a la pagination XIII-XX. F. 57, 60 et 64, on lit : *De scriptorio abbatis de Camberone*. F. 1, il y a l'ex-libris : *Sir I. P. Middle Hill, 2523*. Ce volume fut acquis par la Bibliothèque royale en 1900. Demi-reliure, toile anglaise.

988. (472-79). — S. HIERONYMUS. Opera.

Les deux premiers feuillets sont blancs.

1. (F. 2-3^v). Table des matières.

Le feuillet 4 est blanc.

2. (F. 5-51^v). EUSEBII IHERONIMI contra Iovinianum. = *PL.*, t. XXIII, col. 211 sqq.

3. (F. 51^v-66). Epistola beati IHERONIMI ad Demetriadem virginem qualiter oportet virginem conversari. = *PL.*, t. XXX, col. 15 sqq.

4. (F. 66-71). Epistola exhortatoria beati IERONIMI ad Cellantiam. = *PL.*, t. XXII, ep. 148.

5. (F. 71-76). Epistola AUGUSTINI ad beatum Ieronimum de origine anime. = *Ibid.*, col. 1182 sqq.

6. (F. 76-84^v). Explanatio fidei a sancto IERONIMO ad Damasum (*PL.*, t. XLV, col. 1716-18), epistola ad Helyodorum monachum (*PL.*, t. XXII, ep. 14), ad Asellam (*ibid.*, ep. 45), ad Castorinam materterram (*ibid.*, ep. 13), ad Marcellam de exitu Lee (*ibid.*, ep. 23), ad Marcellam de vita Aselle (*ibid.*, ep. 24), ad Exuperantium (*ibid.*, ep. 145), ad Rusticum (*ibid.*, ep. 122).

7. (F. 84^v-95). Liber beati IERONIMI ad Eustochium de virginitate servanda. = *Ibid.*, ep. 22.

8. (F. 95-117). Epistola ad Nepotianum (*PL.*, t. XXII, ep. 52), ad Rusticum (*ibid.*, ep. 125), ad Paulam de morte Blesille (*ibid.*, ep. 39), ad Helyodorum, epytaphium Nepotiani (*ibid.*, ep. 60), ad Pammachium de morte Pauline (*ibid.*, ep. 66), ad Oceanum de morte Fabiole (*ibid.*, ep. 77), ad Praesidium (*PL.*, t. XXX, col. 182 sqq.).

9. (F. 117-122^v). Epistola beati IERONIMI ad Paulinum presbiterum de institutione clericorum vel monachorum et diversis divine historie expositionibus. = *PL.*, t. XXII, ep. 53.

10. (F. 122^v-127). Epistola DAMASI ad Iheronimum (*PL.*, t. XXX, col. 294), rescriptum IHERONIMI ad Damasum (*ibid.*, col. 294), ad Susannam lapsam (*ibid.*, col. 210), ad Thyrasium (*ibid.*, col. 278).

11. (F. 127-129). Epistola beati IERONIMI de tribus virtutibus (*ibid.*, col. 116 sqq.).

12. (F. 129-131^v). Epistola beati IERONIMI ad Rufinum (*PL.*, t. XXII, ep. 74), ad Florentium (*ibid.*, ep. 4), ad eundem (*ibid.*, ep. 5), ad Castriicianum (*ibid.*, ep. 68).

13. (F. 132-132^v). Epistola beati HIERONIMI de honorandis parentibus (*PL.*, t. XXX, col. 145 sqq.).

14. (F. 132^v-170). Epistola ad Fabianum lapsum (*PL.*, t. XXII, ep. 147), ad Cromathium, Iovinum et Eusebium (*ibid.*, ep. 7), ad Alexandrum et Minervum monachos (*ibid.*, ep. 119), ad Lucinium Belicum (*ibid.*, ep. 71), ad Iulianum (*ibid.*, ep. 118), ad Ageruchiam (*ibid.*, ep. 123), ad Furiam de viduitate (*ibid.*, ep. 54), ad Salvinam de morte Nebridii (*ibid.*, 79), ad matrem et filiam in Galliis (*ibid.*, ep. 117), ad Aletam (*ibid.*, ep. 107), ad Principiam de vita Marcelle (*ibid.*, ep. 127), ad Marcellam de blasphemia in Spiritum sanctum (*ibid.*, ep. 42), DAMASI ad beatum Iheronimum de quinque quaestionibus de Genesi (*ibid.*, ep. 35), rescriptum beati IHERONIMI ad Damasum (*ibid.*, ep. 36), ad Damasum de Seraphin (*ibid.*, ep. 18), ad Evangelium de Melchisedech (*ibid.*, ep. 78), ad Marcum presbiterum (*ibid.*, ep. 17).

15. (F. 170-171). Epistola beati IHERONIMI contra Vigilantium (*ibid.*, ep. 61).

16. (F. 171-187^v). Epistola sancti IHERONIMI ad Riparium (*PL.*, t. XXII, ep. 109), ad Riparium et Desiderium (*PL.*, t. XXIII, col. 339), ad Algatiam (*PL.*, t. XXII, ep. 121), ad Marcellam de quinque questionibus (*ibid.*, ep. 59).

17. (F. 187^v). Table des lettres suivantes.

18. (F. 187^v-196). Epistola sancti IHERONIMI ad Hedibiam (*PL.*, t. XXII, ep. 120).

19. (F. 196-202). Epistola beati IHERONIMI contra Helvidium de virginitate sancte Marie perpetua. = *PL.*, t. XXIII, col. 183 sqq.

20. (F. 202-202^v). Epistola ad Theodosium et ceteros anachoritas (*PL.*, t. XXII, ep. 2), ad Paulam et Eustochium (*PL.*, t. XXIX, col. 117), ad Sophronium de psalterio (*PL.*, t. XXVIII, col. 1123).

21. (F. 203-217^v). Epistola de obitu beati Iheronimi per EUSEBIUM eiusdem discipulum. = *BHL.*, n. 3866 (1).

22. (F. 226^v-228^v et f. 217^v-219). Epistola beati AUGUSTINI episcopi ad Cyrillum de laude beati Iheronimi presbiteri et doctoris. = *BHL.*, n. 3867.

23. (F. 219-226^v). Epistola CYRILLI ad beatum Augustinum episcopum super quibusdam beati Iheronimi miraculis et prodigiis rescripta. = *BHL.*, n. 3868 (2).

24. (F. 228^v). Vers sur l'amitié et sur la mort.

Inc. Congaudent paria paribus, fortissimus inter
Equales sive pares est nodus amoris.

Des. Sic post conteritur perdens in morte colorem.

(1) Il manque dans ce manuscrit les ch. I, IX et la première partie du ch. XI.

(2) Il manque la seconde partie du chap. III, le chap. IV et le commencement du ch. V, le ch. VIII-XII et la dernière partie du ch. XIII, puis les ch. XIV, XIX et XXI.

Parchemin; 228 feuillets, plus deux de garde; 0^m,31 × 0^m,22; XIV^e siècle (1396), car f. 228^v, on lit cette note : *Iste liber est cenobii sancti pauli in Zonia scriptus et ligatus anno M^o.CCC.XC. sexto*. Deux colonnes, trois ou quatre initiales ornées, ancienne pagination i-cxxviii, signatures a-i-iiii-a-i-c-iiii; titre courant. Ce volume provient de Rouge-Cloître, comme l'atteste, outre la note citée plus haut, le distique suivant, qu'on lit f. 2^r:

*Est Rubeecallis possessio codicis huius
Quem qui reppererit obsecro reddat ei.*

L'estampille rouge *R.F.* de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 5 et 228^v. Reliure ancienne restaurée, veau brun estampé, traces de fermoirs (1).

989. (1048). — S. HIERONYMUS. Opera.

1. (F. 1-3). De symbolo. = *PL.*, t. XLV, col. 1716-18.
2. (F. 3-4). [S. HIERONYMI epistolae]. = *PL.*, t. XXII, lettres nn. 15 et 16.
3. (F. 4-10). IERONYMUS ad Damasum. De gradibus ecclesie. = *PL.*, t. XXX, col. 148 sqq.
4. (F. 10-25). [S. HIERONYMI epistolae]. = *PL.*, t. XXII, nn. 21, 18, 35, 36, 19, 20, 62.
5. (F. 25-27^v). Sermo ORIGENIS de tribus virtutibus. = *PL.*, t. XXX, col. 116 sqq.
6. (F. 27^v-30). De honorandis parentibus. = *Ibid.*, col. 145 sqq.
7. (F. 30-73). Lettres. = *PL.*, t. XXII, nn. 52, 57, 97, 66, 14, 52, 60, 101, 102, 103, 111, 110, 105, 56, 57, 104, 112, 115, 116, 126.
8. (F. 73-78). Liber sancti AUGUSTINI episcopi ad sanctum Ieronimum de origine anime. = *PL.*, t. XXXIII, col. 720 sqq.
9. (F. 78-82). Libellus sancti AUGUSTINI ad beatum Ieronimum quomodo observator legis in uno offendens fiat omnium reus ex sententia Iacobi. = *Ibid.*, col. 733 sqq.
10. (F. 82-83). Lettres de S. Jérôme. = *PL.*, t. XXII, nn. 134, 141, 142, 143.
11. (F. 83-86^v). Sanctus AUGUSTINUS Optato episcopo de origine anime. = *Ibid.*, n. 144.
12. (F. 86^v-90). Disputacio de racione anime. = *PL.*, t. XXX, col. 261.
13. (F. 90^v-136). Lettres de S. Jérôme. = *PL.*, t. XXII, n. 58; t. XXX, col. 288; t. XXII, nn. 69, 129, praefacio in psalmos ad Sophronium, *PL.*, t. XXVIII, col. 1123; *PL.*, t. XXII, nn. 1, 122, 70, 145, 47, 71, 76, 68, 4, 5, 7, 11, 17, 74, 72, 55, 146, 73, 140, 147, 6, 8, 125, 10, 9, 12, 2, 119.

(1) Voir une description de ce manuscrit dans *Catalogus cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxellensis*, ed. BOLLANDIANI, t. I, p. 249-50.

14. (F. 136-138). Epistola Pauli ad Thessalonicenses prima.

15. (F. 138-139^v). Lettres de S. Jérôme. = *PL.*, t. XXII, nn. 31, ad Marcellam, 45, 13.

Papier, au filigrane de l'ancre; 139 feuillets; 0^m,30 × 0^m,20; XV^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et bleues; ancienne pagination 1-cxxxviii. Demi-reliure moderne, dos en maroquin rouge avec le titre doré: *Bⁱ Hieronymi Epistolae saec. XV*; plus bas, le monogramme couronné de Léopold I^{er}.

990. (1713). — S. HIERONYMUS. Opera.

1. (F. 1-80). Lettres de S. Jérôme. = *PL.*, t. XXII, nn. 125, 123, 53, 58, 60, 52, 75; t. XXXX, p. 270, 147, 66, 73, 46, 77, 78, 117, 61, 109.

2. (F. 80^v-86^v). Contra Vigilantium. = *PL.*, t. XXIII, col. 337 sqq.

3. (F. 86^v-142). Lettres de S. Jérôme. = *PL.*, t. XXII, nn. 55, 102, 74, 12, 11, 13, 10, 7, 2, 17, 8, 76, 14, 44, 54, 18, 20, 21, 40.

4. (F. 142-152^v). De virginitate genitricis Dei Marie contra Helvidium. = *PL.*, t. XXIII, col. 183 sqq.

5. (F. 152^v-201^v). Lettres de S. Jérôme, nn. 57, 79, 118, 15, 69, 120, 1, 121. *Des. mutil.* (*PL.*, t. XXII, col. 1024) esse cognosco: non absque re arbitror si...

Parchemin; 201 feuillets; 0^m,28 × 0^m,19; XV^e siècle; jolies lettrines rehaussées d'or; la première initiale forme une petite miniature représentant S. Jérôme. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 1 et 201^v. Demi-reliure moderne, maroquin brun; au dos, le titre doré: *Bⁱ Hieronymi epistolae XV saec.*; plus bas, le chiffre couronné de Léopold I^{er}.

991. (4337-40). — S. HIERONYMUS. Epistolae.

1. (F. 1-48^v). Liber sancti Iohannis episcopi Constantinopolitani de cordis compunctione (1).

2. (F. 49-55^v). Epistola sancti Hieronymi presbiteri ad Rusticum monachum. = *PL.*, t. XXII, col. 1073.

3. (F. 56-60). Alia epistola ad Paulinum presbiterum. = *Ibid.*, col. 579.

4. (F. 60-67). Epistola ad Nepotianum presbiterum. = *Ibid.*, col. 527.

5. (F. 67-71). Epistola ad Heliodorum monachum. = *Ibid.*, col. 347.

6. (F. 71-74^v). Epistola ad Iulianum excitatoria. = *Ibid.*, col. 960.

7. (F. 74^v-80^v). Epistola ad Furiam de viduitate servanda. = *Ibid.*, col. 570.

(1) Cf. G. SCHMITZ, *Monumenta tachygraphica codicis Parisiensis lat. 2718*. Fasc. 2. *S. Iohannis Chrysostomi de cordis compunctione*. Hannoverae, 1882-83.

8. (F. 80^v-82^v). Epistola de vita clerici vel monachi. = *PL*, t. XXX, col. 288.

9. (F. 83-87^v). Epistola ad Pammachium de dormitione Pauline. = *PL*, t. XXII, col. 639.

10. (F. 87^v-91^v). Ad matrem et ad filiam commorantes in Gallia. = *Ibid.*, col. 953.

11. (F. 91^v-97). Epistola de morte Nebridii et de viduitate servanda. = *Ibid.*, col. 724.

12. (F. 97-99). Epistola ad Vigilantium presbiterum. = *Ibid.*, col. 602.

13. (F. 99-103). [Epistola S. BERNARDI] ad Cartusienses fratres. = *PL*, t. CLXXXII, col. 108.

14. (F. 103-115). [S. BERNARDI] ad Haimericum cancelarium [de diligendo Deo]. = *Ibid.*, col. 973 sqq.

15. (F. 115-117). [Epistola S. BERNARDI ad abbatem Alpensem G.]. = *Ibid.*, col. 459.

16. (F. 117). [Epistola S. BERNARDI ad R. Cisterciensem abbatem] (1).

17. (F. 117-121). [Epistola S. BERNARDI ad papam Eugenium]. = *Ibid.*, col. 427.

18. (F. 121^v-123^v). Fragment d'un commentaire ascétique. *Inc.* Saul dum querit asinas et David dum pascit oves. *Des.* quarta manifesta salvatorum electio.

19. (F. 124-124^v). Fragments de comptes.

Parchemin ; 124 feuillets ; 0^m,235 × 0^m,155 ; XIII^e siècle ; quelques lettrines. Au sujet de la provenance de ce volume, on lit f. 1 : *Liber fratrum praedicatorum ecclesie beati Pauli brugensis. Quem si quis abstulerit anathemati subiaceat, fiat, fiat*, et au haut du même feuillet : *Societatis Ihesu Lovanii, Y 1*. Reliure ancienne, ais de bois recouverts de peau de truie.

992. (3527). — S. HIERONYMUS. Epistolae.

1. (F. 1-2). Table des matières.

2. (F. 2-5). De fide et symbolo apud Niceam expositio. = *PL*, t. XLV, col. 1716-18.

3. (F. 5-6^v). Epistola IERONIMI ad Damasum de fide. = *PL*, t. XXII, col. 355.

4. (F. 6^v-43^v). IERONIMUS ad Damasum de 7 gradibus ecclesie. = *PL*, t. XXX, col. 148 sqq.

5. (F. 13^v-21). IERONIMUS ad Damasum de frugi et luxurioso filiis. = *PL*, t. XXII, col. 379.

(1) Cette lettre ne se trouve pas dans la collection de MIGNÉ.

6. (F. 21-27^v). IERONIMUS ad Damasum de Seraphim. = *Ibid.*, col. 361.
7. (F. 27^v-28). Epystole DAMASI pape ad Ieronimum presbiterum. = *Ibid.*, col. 451.
8. (F. 28-32). Rescriptum IERONIMI ad Damasum. = *Ibid.*, col. 453.
9. (F. 32-33^v). Epistola DAMASI pape ad beatum Ieronimum presbiterum. Rescriptum IERONIMI ad Damasum. = *Ibid.*, col. 357.
10. (F. 33^v-34). IERONIMUS Tranquillino. = *Ibid.*, col. 606.
11. (F. 34-36^v). Sermo ORIGENIS de tribus virtutibus. = *PL.*, t. XXX, col. 116.
12. (F. 36^v-38). Cuius supra de honorandis parentibus. = *Ibid.*, col. 145.
13. (F. 38-40). Planctus seu lamentatio ORIGENIS translatus a beato Ieronimo presbitero (1).
14. (F. 40^v-45). Epistola EPIPHANII Cypri episcopi ad Iohannem Ierosolymitanum episcopum translata a Ieronimo presbitero. = *PL.*, t. XXII, n. 51.
15. (F. 45-112^v). Lettres de S. JÉRÔME. = *Ibid.*, nn. 57, 97, 66, 14, 52, 60, 101, 102, 103, 111, 110, 105, 56, 67, 104, 112, 115, 116, 126, 131, 132, 134, 141, 143.
16. (F. 112^v-118). Sanctus AUGUSTINUS Optato episcopo de origine anime. = *Ibid.*, n. 144.
17. (F. 118-124). Disputacio de racione anime. = *PL.*, t. XXXIII, col. 261.
18. (F. 124-129^v). Epistola IERONIMI ad Paulinum. = *PL.*, t. XXII, col. 579.
19. (F. 127^v-127^v). Epistola IERONIMI ad Oceanum. = *PL.*, t. XXX, col. 288.
20. (F. 129^v-138^v). Lettres de S. JÉRÔME. = *PL.*, t. XXII, nn. 69 et 129.
21. (F. 138^v-139^v). Epistola IERONIMI ad Sophronium. = *PL.*, t. XXVIII, col. 1123.
22. (F. 139^v-141^v). Lettre de S. JÉRÔME. = *PL.*, t. XXII, n. 1.
23. (F. 141^v-44). HIERONIMUS ad Tirasium. = *PL.*, t. XXX, col. 278.
24. (F. 143-196). Lettres de S. JÉRÔME. = *PL.*, t. XXII, nn. 122, 70, 145, 47, 71, 76, 68, 4, 7, 11, 17, 74, 72, 55, 146, 73, 140, 147, 6, 8, 125, 9, 12, 2, 102, 31, 25, 45, 13.

Papier, filigrane de l'ancre et de la lettre P; 196 feuillets, plus sept feuillets blancs au commencement et sept à la fin du volume; 0^m,295 × 0^m,21; XV^e siècle. Sur une étiquette en parchemin insérée entre les folios 196 et 197, on lit : *Cest volume des Epistres Monseigneur Saint Jérôme appartient a moy Loys Dommesent maistre des comptes à Lille*. Reliure veau brun estampé.

(1) Voir plus haut, p. 56, n. 986 (II. 924).

993. (12053-62). — S. HIERONYMUS. Opera.

1. (F. 1). Index.

2. (F. 2-48^v). PROSPER. De vita contemplativa. = *PL.*, t. LIX, col. 415-520.

3. (F. 49-63). Devota consideratio dominice passionis scripta ex dictis mellifluis sancti AUGUSTINI.

4. (F. 63^v-64). Sermo beati AMBROSIUM de moribus et honesta vita. = *PL.*, t. XVII, col. 749.

5. (F. 64^v-79). Meditationes beati BERNARDI. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 485-508.

6. (F. 79^v-82^v). Courts extraits des Pères.

7. (F. 83-93). Conditiones que attenduntur in oratione secundum RAY. CHOSTIS. — Autres courts extraits et sentences diverses.

Les feuillets 93^v-94^v sont blancs.

8. (F. 95-123). [S. HIERONYMI epistolae]. = *PL.*, t. XXII, lettres nn. 14, 144, 71 § 3 et 4; nn. 4, 3 § 4-6; 125, 118, 52, 58, 146.

9. (F. 123^v-147^v). Dyalogus SEVERI SULPITII de gestis sancti Martini. = *BHL.*, n. 5614-16.

10. (F. 147^v-149^v). [Narrationes de miraculis in obitu et de prima translatione]. = *BHL.*, n. 5619-23.

11. (F. 150-165^v). [S. HIERONYMI epistolae]. = *PL.*, t. XXX, col. 182-88; *ibid.*, col. 239-42; *ibid.*, col. 278-82; t. XXII, n. 82; t. XXX, col. 242-45; t. XXII, n. 139; t. XX, col. 1037 (1); t. XXIII, col. 723.

12. (F. 166-174). Sermo IHERONIMI de assumptione Marie virginis. = *PL.*, t. XXX, col. 122.

13. (F. 174^v-176^v). In festo visitationis beate Marie. — Sous ce titre est donnée ici la bulle de BONIFACE IX pour la célébration de la fête de la Visitation (2).

14. (F. 176^v-178). Sermo de visitatione eiusdem. *Inc.* Quamquam, fratres karissimi, huius diei solennitas et festi mira sublimitas. *Des.* promisit patribus nostris Ihesus Christus Dominus noster qui vivit ...

15. (F. 178-181). [Sermones S. MAXIMI de apostolis Petro et Paulo]. = *PL.*, t. LVII, col. 397-402, 391-96.

16. (F. 182-184). Sermo in festo Petri ad vincula. *Inc.* Misit Herodes rex manus ... Tres huius execrandi nominis reges exstitisse. *Des.* et eripiat me de manu Herodis et de omni exercitu plebis Iudeorum.

(1) Cette lettre n'est pas de S. Jérôme, c'est la pièce attribuée à BACHIARIUS et intitulée : *De reparatione lapsi*.

(2) Voir *Bullarium romanum*, Aug. Taurin., 1859, t. IV, p. 602-4.

17. (F. 184-185^v). Sermo beati AUGUSTINI in visitatione beate Marie. = *PL.*, t. XXXIX, col. 2131, n. 6 — col. 2134.

18. (F. 185^v-188). Sermo beati GREGORII pape in assumptione eiusdem. = *PL.*, t. XCVI, col. 250.

19. (F. 188^v-189). In festo sancti Iohannis ante portam latinam. *Inc.* Iohannes ewangelista et apostolus ex verbis suis cognoscitur non parvam accepisse gratiam. *Des.* magister enunciet litemque dissolvat.

20. (F. 189^v-190^v). Sermones MAXIMI de sancto Iohanne Baptista. = *PL.*, t. LVII, col. 387-90.

21. (F. 190^v-194^v). Sermo de privilegiis sancti Iohannis Baptiste editus a sancto BERNARDO. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 991-1002.

22. (F. 195-196). [Sermo de evangelio *Ecce nos reliquimus*]. = *PL.*, t. XXVI, col. 138 sqq.

23. (F. 196-197). De sancto Laurencio sermones MAXIMI. = *PL.*, t. LVII, col. 413-14, 675-78.

24. (F. 198-199). In festo omnium sanctorum. = *PL.*, t. XXXIX, col. 2135-37.

25. (F. 199^v-200). Sermo pucher (*sic*) sancti IOHANNIS episcopi de pluribus martiribus. *Inc.* Qui sanctorum merita religiosa caritate miratur. *Des.* et florent sicut lilium in medio angelorum.

26. (F. 201). Sermo sancti MAXIMI de sancto Augustino vel alio doctore. = *PL.*, t. LVII, col. 415-18.

27. (F. 201-201^v). Sermo in die sancte Barbare vel alterius virginis. *Inc.* Videte, dilectissimi, quanta virginitatis sint merita. *Des.* et cotidie coronatus. Per Dominum nostrum ...

28. (F. 201^v-202). Sermo in festo Margarete vel alterius virginis de virginitate. = *PL.*, t. XI, col. 288.

29. (F. 202^v-203). In octava dedicationis. = *PL.*, t. XCIV, col. 434-36.

30. (F. 203-204). In festo unius martiris vel plurimorum. *Inc.* Post insignes apostolorum triumphos. *Des.* et non dilexerunt animas suas usque ad mortem.

31. (F. 204-205^v). De sancto Laurencio sermo. *Inc.* Fratres, nunc pugnatorum sanctorum. *Des.* tu rectissime glorificantis quem predicamus, o spiritus fortitudinis.

32. (F. 205^v-206^v). Dominica quarta post octavam Epiphanie. *Inc.* O beati, o veraces Dei discipuli. *Des.* et omnem creaturam iussione inclinat ubi vult Ihesus Christus Dominus noster ... Amen.

33. (F. 207-208). De sancto Stephano sermo MAXIMI. *Inc.* Scilicet dicit aliquis : Grandis labor est. *Des.* pervenire possitis adiuti Christi gratia Domini Salvatoris.

34. (F. 208-210^v). Sermo AUGUSTINI de miraculis sancti Stephani. = *PL.*, t. XLI, col. 766-71, nn. 10-21.

35. (F. 210^v-211). Sermo IOHANNIS episcopi de innocentibus. *Inc.*

O beata lactentium gloria. *Des.* non virtutis est humane, sed muneris divini.

36. (F. 211^v-212). Sermo pulcherrimus FULGENTI episcopi. *Inc.* Magnum bonum est, fratres karissimi. *Des.* in iudicio tue cogitationis intelligas.

37. (F. 212^v-213). Sermo MAXIMI in kalendis ianuarii, in octavis natiuitatis et circumcisione. = *PL.*, t. LVII, col. 255-58.

38. (F. 213^v-214). Dominica tertia post octavam Epiphanie. *Inc.* Quia dispensantis et providentis. *Des.* hinc talia mirabilia facienti.

39. (F. 215-229^v). IHERONIMUS ad Pammachium et Marcellam pro se contra accusatorem defensio. = *PL.*, t. XXIII, col. 397 sqq. *Des. mutil.* sed quomodo apud angelos non... *ibid.*, col. 420, n. 29.

Papier; 229 feuillets; 0^m,22 × 0^m,145; XV^e siècle (1444-45), car on lit, f. 48^r : *Liber tertius Prosperi de vita contemplativa pertinens Anthonio Estournel et ab eo scriptus anno Domini 1444^{to}, finitus quarta decima die mensis marcii. A. Estournel*; f. 68 : *Actum anno Domini millesimo quadringentesimo quadragesimo quinto in cardinali monacho Parisius tertia die aprilis. A. Estournel*; f. 79 : *Meditationes beati Bernardi quas scripsit A. Estournel, anno Domini millesimo cccc. xlv^o.* F. 1, il y a la note : *Liber fratrum regularium in sancto Leonardo iuxta Leodium et venit ex parte domni ac magistri Anthonii Esternel canonici Leodiensis. Oretis fideliter pro anima ipsius, parentum ac omnium amicorum et benefactorum suorum.* A l'intérieur de la couverture, l'ex-libris de Le Candele. Demi-reliure veau; au dos, le titre doré : *Manuscrit.*

994. (87-96). — HIERONYMUS. Epistolae.

1. (F. 1-1^v). Tabula epistolarum istius prime partis.
2. (F. 2). Epistola beati Augustini ad sanctum Hieronymum. = *PL.*, t. XXII, col. 829-30.
3. (F. 2). Rescriptum Iheronimi ad Augustinum. = *Ibid.*, col. 830-31.
4. (F. 2^v). Iheronimus ad Augustinum. = *Ibid.*, col. 831-32.
5. (F. 2^v). Epistola Augustini ad Presidium. = *Ibid.*, col. 915-66.
6. (F. 3-5). Epistola Augustini ad Iheronimum. = *Ibid.*, col. 909-15.
7. (F. 5-5^v). Rescriptum IHERONIMI ad sanctum Augustinum. = *Ibid.*, col. 834-37.
8. (F. 5^v-7). Rescriptum Augustini ad Iheronimum. = *Ibid.*, col. 647-51.
9. (F. 7-8^v). Epistola Augustini ad sanctum Hieronymum. = *Ibid.*, col. 565-68.
10. (F. 8^v-9). [Epistola S. Augustini ad S. Hieronymum]. = *Ibid.*, col. 832-34.
11. (F. 9-14^v). Rescriptum Iheronimi ad Augustinum de omnibus obiectis. = *Ibid.*, col. 916-31.
12. (F. 14^v). Iheronimus ad Augustinum episcopum. = *Ibid.*, col. 935-36.

13. (F. 14^v-21^v). Rescriptum [Augustini ad Iheronimum]. = *Ibid.*, col. 936-53.

14. (F. 21^v-22). [Epistola Iheronimi ad Augustinum]. = *Ibid.*, col. 1161-26.

15. (F. 22). Iheronimus ad Augustinum. = *Ibid.*, col. 1179-80.

16. (F. 22). Item post subscriptionem. = *Ibid.*, col. 1180-81.

17. (F. 22-22^v). Iheronimus Augustino et Alipio episcopis. = *Ibid.*, col. 1181-82.

18. (F. 22^v-24^v). [HERONYMI] expositio fidei Niceni consilii ad Cyrillum episcopum Alexandrinum. = *PL.*, t. XXX, col. 176-81.

19. (F. 24^v-31^v). Liber beati Iheronimi contra Helvidium haereticum obloquentem gloriosae virgini Marie matri Domini nostri et eius virginali integritati. = *PL.*, t. XXIII, col. 183.

20. (F. 31^v-40). Altercatio Helladii Luciferiani et orthodoxi a beato IHERONIMO conscripta. = *Ibid.*, col. 155.

21. (F. 40-41^v). IHERONIMUS adversus Vigilantii blasphemias. = *PL.*, t. XXII, n. 61.

22. (F. 41^v-42^v). Ad Riparium presbyterum adversus Vigilantium pretactum. = *Ibid.*, col. 906-09.

23. (F. 42^v-46^v). Item ad Riparium et Desiderium presbyteros contra blasphemantem Vigilantium. = *Ibid.*, t. XXIII, col. 337.

24. (F. 46^v-51^v). Epistola IHERONIMI ad Thesiphontem urbicum. = *Ibid.*, col. 1147-61.

25. (F. 51^v-52). Epistola IHERONIMI ad Marcum presbyterum Calcinde. = *Ibid.*, col. 359-61.

26. (F. 52-93^v). Libri duo S. IHERONIMI adversus Iovinianum haereticum. = *PL.*, t. XXIII, col. 211.

27. (F. 93^v-100^v). EIUSDEM appologetica ad Pammachium pro libris contra Iovinianum. = *PL.*, t. XXII, n. 48.

28. (F. 100-100^v). Epistola IHERONIMI ad Pammachium. = *Ibid.*, col. 511-12.

29. (F. 100^v-110^v). Epistola IHERONIMI ad Eustochium de virginitate servanda. = *Ibid.*, col. 394-425.

30. (F. 110^v-111). Ad eandem de acceptis muneribus. = *Ibid.*, col. 445-46.

31. (F. 111). Ad virgines Hermonenses. = *Ibid.*, col. 344-45.

32. (F. 111-116^v). Ad Demetriadem virginem. = *Ibid.*, col. 1107-24.

33. (F. 116^v-124). Ad eandem qualiter oportet virginem conversari. = *PL.*, t. XXX, col. 24-45.

34. (F. 124-127^v). Ad Furiam de viduitate servanda. = *PL.*, t. XXII, col. 550-60.

35. (F. 127^v-130). Ad Salvinam de morte Nebridii et de viduitate servanda. = *Ibid.*, col. 724-32.

36. (F. 130-135^v). Epistola beati IHERONIMI ad Cellanciam et ne uxor maritum dimittat sine illius consensu, causa religionis. = *Ibid.*, col. 1204-20.

37. (F. 135^v-138). Ad Susannam lapsam de virginitate amissa et poenitentia facienda. = *PL.*, t. XXX, col. 210.

38. (F. 138-142^v). Ad Fabiolam de vestibus sacerdotalibus. = *Ibid.*, col. 603-22.

39. (F. 142^v-150). Ad eandem de mansionibus Israhelitice plebis. = *Ibid.*, col. 698-724.

40. (F. 150-152). Ad Oceanum de morte Fabiolae. = *Ibid.*, col. 690.

41. (F. 152^v-155^v). Ad Paulam epitaphium Blesille filie sue. = *Ibid.*, col. 465.

42. (F. 155^v-158). Epistola ad Palmacium de morte Pauline vidue. = *PL.*, t. XXII, col. 639-47.

43. (F. 158^v-59^v). Epistola consolatoria ad Tyrasium de dormitione filie. = *PL.*, t. XXX, col. 278.

44. (F. 159^v-160^v). Ad Theodoram super dormitionem Lucinii. = *PL.*, t. XXII, col. 685-90.

45. (F. 160^v-165). Epitaphium Nepotiani a IHERONIMO editum ad Theodorum presbiterum. = *Ibid.*, col. 589-602.

46. (F. 165-169). Ad Ageruciam de monogamia. = *Ibid.*, col. 1046 sqq.

47. (F. 169-172^v). Ad Aletam de institutione filiae suae. = *Ibid.*, col. 867-78.

48. (F. 172^v-174^v). Ad matrem et filiam in Galliis commorantes. = *Ibid.*, col. 953-60.

49. (F. 174^v-177^v). Arguit IHERONYMUS Sabinianum diaconum lapsum. = *Ibid.*, col. 1195-1204.

50. (F. 177^v-186^v). Tabula quaestionum ad Hebiadam (*sic*) — Ad Hebiadam (*sic*) de XII quaestionibus. = *Ibid.*, col. 980-1006.

51. (F. 186^v-197). Capitula XI quaestionum ad Algasiam. — Epistola beati IHERONYMI ad Algasiam de XI quaestionibus. = *Ibid.*, col. 1006-38.

52. (F. 197-198^v). De tribus virtutibus, fortitudine, sapientia et prudentia. = *PL.*, t. XXX, col. 116.

53. (F. 198^v-201). Ad Oceanum de patientia habenda in tribulationibus. = *Ibid.*, col. 282.

54. (F. 201-201^v). Epistola IHERONYMI ad Marcellinum et Anapsichiam de anima. = *PL.*, t. XXII, col. 1085-87.

55. (F. 201^v-205). Disputatio de anima sub modo dialogi Iheronymi et Augustini. = *PL.*, t. XXX, col. 261.

56. (F. 205^v-208). Epistola beati IHERONYMI presbiteri ad Deme-
triadem virginem qualiter oportet virginem conversari. = *Ibid.*,

col. 15. — Une note sur la paternité de cette épître se trouve au commencement du f. 205^v.

57. (F. 208-209). *Scriptum beati Hieronymi de ortu heresis Luciferianae.* = *PL.*, t. LXIX, col. 1045.

58. (F. 209^v). *Iheronimus Sophronio. Quod liber psalmodum unus sit et non plures.* = *PL.*, t. XXVIII, col. 1123.

59. (F. 209^v-210). *Epistola Iheronimi ad Paulam et Eustochium de correctione psalterii.* = *PL.*, t. XXIX, col. 117.

Parchemin; 210 feuillets (dont le dernier n'est qu'un quart de feuillet); 0^m,355 × 0^m,258; XV^e siècle; deux colonnes; ancienne pagination en chiffres romains à l'encre rouge, i-ccviii; initiale ornée au commencement. Sur une étiquette encadrée de cuivre, placée sous corne et incrustée dans le plat de devant, à l'extérieur, on lit : *Primum volumen epistolarum beati Iheronimi, in Korsendonck* (1). Les ff. 1 et 209^v portent l'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris au chiffre *R. F.* Reliure ancienne veau estampé; dos restauré en maroquin brun; traces de fermoirs.

995. (112-14), — S. *HIERONYMUS. Epistolae.*

1. (F. 1-1^v). *Tabula epistolarum ... secundum ordinem alphabeti.*

2. (F. 2). *Capitula duodecim quaestionum ad Hedibiam.*

3. (F. 2-9). *Epistola gloriosi Iheronimi presbiteri et doctoris eximii ad Hedibiam de duodecim questionibus.* = *PL.*, t. XXII, n. 120.

4. (F. 9-9^v). *Capitula undecim questionum ad Algaciam.*

5. (F. 9^v-18). *Epistola Iheronimi ad Algaciam de undecim questionibus.* = *Ibid.*, n. 121.

6. (F. 18-18^v). *Epistola beati Iheronimi ad Azellam de fictis amicis detrahencium.* = *Ibid.*, n. 45.

7. (F. 18^v-19). *Iheronimus ad Marcellam de vita Azelle virginis.* = *Ibid.*, n. 24.

8. (F. 19-20). *Epistola beati Iheronimi ad Marcellam de quinque questionibus novi Testamenti.* = *Ibid.*, n. 59.

9. (F. 20-20^v). *Epistola beati Iheronimi ad Marcellam de onaso.* = *Ibid.*, n. 40.

10. (F. 20^v). *Iheronimus ad Marcellam de detractoribus suis.* = *Ibid.*, n. 27.

11. (F. 20^v-21). *Iheronimus ad eandem de muneribus.* = *Ibid.*, n. 44.

12. (F. 21). *Epistola Iheronimi ad Marcellam de decem nominibus.* = *Ibid.*, n. 25.

13. (F. 21-21^v). *Iheronimus ad eandem de hebreis nominibus et verbis.* = *Ibid.*, n. 26.

(1) SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 55.

14. (F. 21^v). Iheronimus ad Marcellam de blasphemia in Spiritum sanctum irremissibili. = *Ibid.*, n. 42.

15. (F. 21^v-23). Iheronimus ad Marcellam de ephod et theraphim. = *Ibid.*, n. 29.

16. (F. 23-24). Iheronimus ad eandem de quibusdam questionibus. = *Ibid.*, n. 34.

17. (F. 24). Epistola beati Iheronimi ad Marcellam excusatoria. = *Ibid.*, n. 32.

18. (F. 24-24^v). Iheronimus ad Marcellam de dyapsalmate. = *Ibid.*, n. 28.

19. (F. 24^v-25). Iheronimus Marcelle de fide et dogmate contra Montanum. = *Ibid.*, n. 41.

20. (F. 25-25^v). Epistola beati Iheronimi ad Marcellam nobilem viduam de Ophir et Tharsis. = *Ibid.*, n. 37.

21. (F. 25^v-26^v). Epistola consolatoria beati Iheronimi ad Marcellam. = *PL.*, t. XXX, col. 50.

22. (F. 26^v-27). Iheronimus ad Marcellam de urbe secedendum. = *Ibid.*, t. XXII, n. 43.

23. (F. 27-29). Epistola exhortatoria Paule et Eustochii ad Marcellam de locis sanctis. = *Ibid.*, n. 46.

24. (F. 29-29^v). Epistola beati Iheronimi ad Marcellam de obitu Lee. = *Ibid.*, n. 22.

25. (F. 29^v-30). Epistola beati Iheronimi ad eandem de egrotatione Bresille. = *Ibid.*, n. 38.

26. (F. 30-33). Epistola beati Iheronimi ad Paulam. Epytaphium Blesille filie eius. = *Ibid.*, n. 39.

27. (F. 33). Ad Paulam et Eustochium de emendacione psalterii.

N. B. Il n'y a que le titre, avec la note : *Require in alio volumine epistolarum ad mares fo.* (1).

28. (F. 33-35). Epistola beati Iheronimi ad Principiam virginem de vita et obitu Marcelle. = *Ibid.*, n. 127.

29. (F. 35). Epistola beati Iheronimi ad Principiam, expositio psalmi xliiii^{ti} Eructavit. — Titre seul, avec la note : *Require in alio volumine epistolarum ad mares, fo.*

30. (F. 35-37). Epistola Iheronimi ad Pammachium de morte Pauline. = *Ibid.*, n. 66.

31. (F. 37-38). Epistola beati Iheronimi ad Innocencium de septies percussa. = *Ibid.*, n. 1.

31. (F. 38). Epistola ad Thyrasium ad Theodoram. — Titres seuls et la note : *Require in alio volumine etc.*

(1) Ce volume se trouve aussi à la Bibliothèque royale. Voir plus bas, p. 73-75, n. 996 (269), et pour la pièce en question, p. 74, n. 18.

33. (F. 38-41^v). Epistola beati Iheronimi ad Fabiolam de vestibus sacerdotalibus. = *Ibid.*, n. 64.

34. (F. 41^v-47^v). Epistola beati Iheronimi ad Fabiolam de xlii mansionibus israelitice plebis. = *Ibid.*, n. 78.

35. (F. 47^v-50). Epistola beati Iheronimi ad Oceanum de morte Fabiole. = *Ibid.*, n. 77.

36. (F. 50-57). Epistola beati Iheronimi ad Eustochiam virginem de dormicione et vita sanctae Paule. = *Ibid.*, n. 108.

37. (F. 57-64^v). Epistola beati Iheronimi ad Eustochium de virginitate servanda. = *Ibid.*, n. 22.

38. (F. 64^v-65). Epistola beati Iheronimi ad eandem de acceptis muneribus. = *Ibid.*, n. 31.

39. (F. 65-75). Ordo vivendi Deo eximii doctoris Iheronimi ad Eustochium sacram Deo virginem. = *PL.*, t. XXX, col. 391-426.

40. (F. 75). Epistola beati Iheronimi ad virgines Hermonenses. = *Ibid.*, n. 11.

41. (F. 75-83^v). Epistola beati Iheronimi ad Aniciam Demetriadem qualiter oportet virginem conversari. = *PL.*, t. XXX, col. 15.

42. (F. 83^v-88). Epistola beati Iheronimi ad Aniciam Demetriadem virginem de virginitate et institutione vite. = *PL.*, t. XXII, n. 130.

43. (F. 88-90^v). Epistola beati Iheronimi ad Aletam de institutione filie. = *Ibid.*, n. 107.

44. (F. 90^v-94). Epistola beati Iheronimi ad Mautitum filiam de laude virginitatis. = *PL.*, t. XXX, col. 163.

45. (F. 94-95^v). Epistola beati Iheronimi de testamento Geroncii. = *Ibid.*, col. 45.

46. (F. 95^v). Causa epistole cur scribit ad matrem et filiam in Galliis commorantem. = *PL.*, t. XXII, n. 117.

47. (F. 96-97^v). Epistola beati Iheronimi ad matrem et filiam in Galliis commorantes. = *Ibid.*, n. 117.

48. (F. 97^v-104). Ad Therachiam de vera circumcissione. = *PL.*, t. XXX, col. 15.

49. (F. 104-107). Epistola beati Iheronimi ad Furiam de viduitate servanda. = *PL.*, t. XXII, n. 46.

50. (F. 107-109). Epistola beati Iheronimi ad Salvinam de morte Nebridii et viduitate servanda. = *Ibid.*, n. 79.

51. (F. 109-112^v). Epistola beati Iheronimi ad Ageruciam de monogamia. = *Ibid.*, n. 123.

52. (F. 112^v-117). Epistola beati Iheronimi exhortatoria ad Cellanciam. = *Ibid.*, n. 148.

53. (F. 117). Epistola beati Iheronimi ad Castorinam materteram. = *Ibid.*, n. 13.

54. (F. 117-120). Epistola beati Iheronimi ad Susannam lapsam. = *PL.*, t. XXX, col. 210.

55. (F. 120-122). Epistola beati Iheronimi ad virginem exulem consolatoria. = *Ibid.*, col. 55.

56. (F. 122^v). [Epitaphium Paule]. = *PL.*, t. XXII, col. 906.

57. (F. 123-136). Sermones beati Iheronimi presbyteri.

a) De nativitate Domini nostri Ihesu Christi. = *PL.*, t. XXX, col. 220.

b) De epiphania Domini. = *Ibid.*, col. 221.

c) De quadragesima. = *Ibid.*, col. 223.

d) De parascheve. = *Ibid.*, col. 224.

e) De vigiliarum libro. = *Ibid.*, col. 232.

f) De vigilia Pasche. = *Ibid.*, col. 210.

g) De die Pasche. = *Ibid.*, col. 224-26.

h) Ad neophitum de psalmo. = *Ibid.*, col. 211.

i) De annunciatione salvatoris. = *Ibid.*, col. 143.

k) Alius sermo de annunciatione salvatoris. *Inc.* Cum omnis devotio christiane religionis de illo fonte emanavit. *Des.* Cum et ipsi eadem salvati sunt gratia. Qui vivit et regnat in secula seculorum. Amen.

l) De assumptione beate Marie virginis. = *Ibid.*, col. 122.

Le dernier feuillet de garde contient un fragment de dictionnaire.

Parchemin; 136 feuillets; 0^m,375 × 0^m,275; XV^e siècle; deux colonnes; quelques jolies lettrines; initiales rouges et bleues; ancienne pagination 1-cxxxv; signatures *ar-r*. Au premier feuillet de garde, on lit la note: *Liber monasterii vallis S. Martini in Lovanio ex parte confratris nostri P. Henrici Vranx ex primoribus huius oppidi qui profitebatur anno Domini .xiiij^e.liiij, mortuus vero primus iubilearius anno xv^e.iiij*, et f. 68: *Est liber hic sancti Martini lovaniensis* (1). F. 2 et 136^v, l'estampille rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris. Reliure ancienne, peau de truie estampée; sur le premier plat, l'étiquette sous corne encadrée de cuivre: *Epistole beati Iheronimi presbyteri ad feminas et sermones eiusdem*.

996. (269). — S. HIERONYMUS. Epistolae ad diversos viros.

1. (F. 2-2^v). Tabula epistolarum gloriosi Ieronimi presbyteri quas ad diversos viros scripsit.

Le feuillet 3 est blanc.

2. (F. 3-27). Epistolae. A savoir les lettres *PL.*, t. XXII, nn. 56, 101, 21, 103, 111, 110, 105, 67, 104, 112; t. XXXIII, col. 720; t. XXII, nn. 116, 131, 132, 134, 141, 142.

3. (F. 27-30). Disputatio de anima sub modo dyalogi extracta ex dictis sanctorum IHERONIMI et AUGUSTINI. = *PL.*, t. XXX, col. 261.

4. (F. 30-31). Suite des lettres. A savoir, *PL.*, t. XXII, nn. 126 et 143.

(1) Cf. SANDERUS, *Bibl. belgic. ms.*, part. II, p. 217.

5. (F. 31-32^v). Expositio fidei Nyceni consilii a beato IHERONIMO ad Augustinum et Alipium missa. = *PL.*, t. XXX, col. 176-81.
6. (F. 32^v-37). Tractatus fidei et credulitatis ac conversacionis vite christianorum beati IHERONIMI presbiteri. *Inc.* David gloriosus in psalmo sic dicit. *Des.* inimicis et credentibus profuisse.
7. (F. 37^v-40). IHERONIMUS de essencia Trinitatis et deitatis et dictis de Deo, alias intitulatur de membris Domini. = *PL.*, t. XLII, col. 1199-1208.
8. (F. 40-40^v). Epistola beati IHERONYMI ad sanctum Damasum papam de fide catholica. = *PL.*, t. XIII, col.
9. (F. 40^v-41). Explanatio fidei a beato IHERONIMO ad Damasum papam missa. = *PL.*, t. XLV, 1716.
10. (F. 41-49^v). Suite des lettres. = *PL.*, t. XXII, nn. 15, 16, 35, 36, 19, 20, 21.
11. (F. 49^v-50). Epistola beati IHERONIMI ad Damasum papam de Seraphin et calculo. = *Ibid.*, n. 18.
12. (F. 50-53^v). Lettres. = *PL.*, t. XXII, n. 18 et t. XXX, col. 94-96.
13. (F. 53^v-60). Tractatus super Canticum canticorum Origenis. = *PL.*, t. XXIII, col. 117 sqq.
14. (F. 60-64^v). Deux titres et l'*incipit* des lettres suivantes : IHERONIMUS *ad Damasum de panibus et de decimis* et *Epistola ad Damasum de septem gradibus ecclesie*.
15. (F. 64^v-70). Suite des lettres. = *PL.*, t. XXII, nn. 146, 73, 55, 72, 129, 12, 2, 119, 10, 76, 68.
16. (F. 70-71). Epistola beati Iheronimi ad eundem Dardanum de diversis generibus musicorum. = *PL.*, t. XXX, col. 213.
17. (F. 71-72). Epistola. = *PL.*, t. XXII, n. 70.
18. (F. 72-72^v). Epistola ad Paulam et Eustochium de emendatione psalterii, ad Sophronium de psalterio. = *PL.*, t. XXIX, col. 117-20 et t. XXVIII, col. 1123-28.
19. (F. 72-103). Suite des lettres. = *PL.*, t. XXII, nn. 106, 44, 140, 53, 58, 122, 125, 14, 52, 60.
20. (F. 103-104). Epistola ad Oceanum de vita clericorum. = *PL.*, t. XXX, col. 288.
21. (F. 104-106). Ad eundem de patientia habenda in tribulationibus. = *Ibid.*, col. 282.
22. (F. 106-108^v). Lettres. = *PL.*, t. XXII, nn. 69, 77, 66; de ces deux dernières il n'y a que le titre avec le renvoi : *Require in alio volumine epistolarum ad feminas* (1).
23. (F. 108-110). Ad Thyrasium super dormitione filie. = *PL.*, t. XXX, col. 278.

(1) C'est le volume analysé plus haut, p. 70-73, n. 995 (112-14).

24. (F. 110). Lettres. = *PL.*, t. XXII, nn. 1 (titre seul) et 47.
 25. (F. 110-111). Epistola ad Desiderium de lectoribus. = *PL.*, t. XXIII, col. 723.
 26. (F. 111-112^v). Lettres. = *Ibid.*, nn. 71, 75.
 27. (F. 112^v-114^v). Epistola ad Presidium diaconum de cereo. = *PL.*, t. XXX, col. 182.
 28. (F. 114^v-116^v). Lettre. = *PL.*, t. XXII, n. 147.
 29. (F. 116^v-117^v). [BACHIARIUS]. Ad Evagrium de levita lapso et a nemine consolato. = *PL.*, t. XX, col. 1037.
 30. (F. 117^v-120^v). Lettres. = *Ibid.*, nn. 118, 6, 8, 7, 9, 145.
 31. (F. 120^v-121). De parentibus honorandis. = *PL.*, t. XXX, col. 145.
 32. (F. 121-122^v). Epistola beati Iheronimi de tribus virtutibus, fortitudine, sapientia et prudentia, haec invenitur inter omelias Origenis in Iheremiam et a Iheronimo translata est. = *Ibid.*, col. 116.
 33. (F. 122^v-132). De homine perfecto. = *Ibid.*, col. 75.
 34. (F. 132-135^v). Epistola de vindicta et iuramento atque obedientia et scientia, = *Ibid.*, col. 105.
 35. (F. 135^v-140^v). Lettres. = *PL.*, t. XXII, nn. 12, 2, 119, 10, 76, 68.
 36. (F. 140^v-145). Epistola beati Iheronimi ad quendam amicum egrotantem. = *PL.*, t. XXX, col. 61.
 37. (F. 145-146). Epistola beati Iheronimi ad quendam qui dicit se paenitentem et conversantem in seculo. = *Ibid.*, col. 242.

Parchemin; 146 feuillets; 0^m,37 × 0^m,28; XV^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et bleues; très belle lettrine f. 4; ancienne pagination en chiffres romains i-cxliiij; signatures A₁-S₄. F. 1, il y a cette note : *Liber monasterii vallis S. Martini Lovaniensis (1) ex parte v. patris et confratris nostri P. Henrici Franca ex primoribus oppidi, professi anno 1454, qui primus iubilarius huius conventus obiit anno 1504*. L'estampille rouge *R. F.* de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve ff. 4 et 146. Reliure très élégante; ais de bois recouverts de veau estampé; très jolis fers (2). Sur le plat, ancienne étiquette : *Epistole beati Iheronimi ad mares, B. XLX*.

997. (20415-20). — S. HIERONYMUS. Opera.

1. (F. 1-10^v). Tractatus compendiosus de arte moriendi magistri IOHANNIS GERSON (3).
2. (F. 10^v). Prières.
3. (F. 11-33^v). Dialogus rationis et conscientie... nuper editus per magistrum HENRICUM DE HASSIA (4).
4. (F. 34-46^v). [De astrologia]. *Inc.* In nomine Domini dixit

(1) Cf. SANDERUS, *Bibl. belgica ms.*, part. II, p. 217.

(2) Voir la description de cette reliure [J. WEALE], *Bookbindings*, p. 174, n. 343.

(3) Cf. ELLIES DU PIN, *Iohannis Gersonii opera omnia*, t. I, p. 447 sqq.

(4) Voir FABRICIUS-MANSI, *Bibl. lat. med. et inf. act.*, t. II, p. 216 sqq.

Abluali qui est Avicenna astrologus. *Des. mutil.* Si autem fuerit dominus domus...

Le feuillet 47 est blanc.

5. (F. 48-71^v). IHERONIMI presbiteri in libros Regum. = *PL.*, t. XXIII, coi. 1329 sqq. *Des. mutil.* Erat enim ibi archa...

6. (F. 72-81^v). Questiones a magistro IOHANNE breviter (1).

7. (F. 82-92). Opus tripartitum de salute corporis editum Bononie per domnum GUILLERMUM DE SALICETO medicine doctorem solemnissimum (2). *Inc. mutil.* ... porte versus septentrionem, si est estas.

Papier: 92 feuillets; diverses dimensions, 0^m,20 × 0^m,135; 0^m,18 × 0^m,115; XV^e siècle; les feuillets 34-35, 48-81 sont à deux colonnes. Demi-reliure maroquin rouge; au dos, les titres dorés des différents traités.

998. (9515-16). — S. HIERONYMUS. In Ezechielem.

1. (F. 1-224). Tractatus sancti HIERONIMI presbiteri in Hiezechielem prophetam libri quatuordecim. = *PL.*, t. XXV, col. 15 sqq.

2. (F. 224^v-225^v). [Lectiones de sancta Scolastica]. = *BHL.*, n. 7514.

Parchemin; 225 feuillets; 0^m,323 × 0^m,232; XI^e siècle; Deux colonnes; quelques jolies lettrines et initiales peintes en vert. F. 1, on lit: *Liber ecclesiae beati Laurentii in Leodio*. Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré: *Hieronymus in Ezechiel. Leg. S. Scholasticae*. Ce titre se trouve aussi à l'intérieur du volume sur une étiquette en maroquin rouge; en dessous, les armes de Belgique et l'inscription: *Bibl. royale* (3).

999. (II. 947). — S. HIERONYMUS. Super Ezechielem.

1. (F. 1-1^v, 202-202^v). [AUGUSTINUS. De libero arbitrio]. Fragments. = *PL.*, t. XLIV.

2. (F. 2^v-200^v). Beati IHERONIMI presbiteri in Ihezechiel. = *PL.*, t. XXV, col. 15 sqq.

3. (F. 200^v-201). [Commentarius super historiam Heliae].

Parchemin; 201 feuillets; 0^m,318 × 0^m,224; XII^e siècle; deux colonnes; très belles lettrines en rouge et en vert; titre courant en rouge; signatures I-XXV. F. 2 et 201, il y a la note: *Liber sancte Marie de Camberone* (4), et f. 2, l'ex-libris: *Sir T[homas] P[hilippus] Middle Hill, 3-11*. Ce volume a été acquis par la Bibliothèque royale en 1888 pour fr. 70. Reliure moderne, peau de truie estampée avec l'inscription: *Regia Bibl. Belgica*; fermoirs en cuivre ciselé.

(1) Peut-être de Gerson? Du reste, tous ces extraits sont fort fragmentaires.

(2) Voir pour les diverses éditions de ce traité, HAIN, *Repertorium bibliographicum*, t. IV, n. 11450-53.

(3) Au sujet de ce volume, voir *Cat. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.* t. II, p. 337.

(4) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. I, p. 356.

1000. (II. 2543). — S. HIERONYMUS. In Ezechielem.

1. (F. 1-110). Explanatio*n*is IERONIMI super Ezechielem liber IX ad finem. = *PL.*, t. XXV, col. 265 sqq.

2. (F. 110-121^v). Sermo sancti IERONIMI presbiteri de assumptione sancte Marie virginis. = *PL.*, t. XXX, col. 122.

Sur le premier feuillet de garde, il y a de ce volume une description imprimée, en anglais, extraite d'un catalogue de vente.

Parchemin; 121 feuillets, plus six de garde; 0^m,283 × 0^m,213; XII^e siècle; deux colonnes; initiales en couleurs. Il manque quatre feuillets entre ff. 81 et 82. On croit que ce volume vient de Saint-Martin à Tournai, mais rien ne permet de l'affirmer. F. 110^v, on lit : *Ex libris Petri Gossin advocati, 1786*, et f. 1 : *Phillipps ms. 23032*; ce volume a été acquis en 1900. Reliure parchemin.

1001. (163-66). — S. HIERONYMUS. In Ezechielem.

1. (F. 1-134). In Ezechielem. = *PL.*, t. XXV, col. 15-490.

2. (F. 134-146^v). Liber EUSEBII IERONIMI hebraicarum questionum. = *PL.*, t. XXIII, col. 935 sqq.

3. (F. 146^v-159^v). Liber locorum de Genesi. = *Ibid.*, col. 859 sqq.

4. (F. 159^v-179). Dialogus beati IERONIMI contra Pelagium hereticum. = *Ibid.*, col. 495 sqq.

Parchemin; 179 feuillets; 0^m,35 × 0^m,25; XV^e siècle (1470), car f. 134, on lit : *Scriptus per fratrem Petrum Caltiserem de Brekelvelde monachum domus sancte Barbare in Colonia Carthusiensis ordinis, anno Domini Mcccclxx etatis sue li professionis xxvi vero. Orate pro eo propter Deum*, et f. 179^v : *Scriptus per fratrem Petrum de Brekelvelde. Orate pro eo propter Deum*. Au verso de la couverture, on lit : *Liber domus sancte Barbare in Colonia ordinis Carthusiensis*. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris, *R.F.*, se trouve f. 1 et 179^v. Deux colonnes, quelques belles capitales, initiales rouges et bleues; signatures *a ... a3-rA*. Reliure ancienne, peau de truie.

1002. (10260-63). — S. HIERONYMUS. Opera.

1. (F. 1). [Vitia et virtutes contrariae].

2. (F. 1^v-2). PUBLII OPTATIANI panegyricus dictus Constantino Augusto. = *PL.*, t. XIX, col. 395 sqq.

Les feuillets 2^v-3 sont blancs.

3. (F. 3). Index.

4. (F. 4-66). HIERONIMUS presbiter super Danihelem prophetam. = *PL.*, t. XXV, col. 495 sqq.

5. (F. 66-89). HIERONIMI libri illustrium virorum. = *PL.*, t. XXIII, col. 601 sqq.

6. (F. 89^v-185). BEDA in septem epistolas canonicas. = *PL.*, t. XCIII, col. 9 sqq.

7. (F. 185). Six vers.

Inc. Dominus omnium omnia vegetans, omnibus omnia factus.

Des. Hanc et nos poscimus fidem, hanc fidei spem, spei salutationem.

Parchemin; 175 feuillets; 0^m,278 × 0^m,185; XI^e siècle; très jolies lettrines; capitales rustiques. Les lettres des signatures *A-X* sont ornées de curieux dessins. Au sujet de la provenance de ce volume, on remarque, f. 1, la cote *LL, 1-2*, et f. 3^v, l'inscription : *Liber ecclesie sancti Laurentii iuxta Leodium*, et f. 175 : *Liber sancti Laurentii in leodio*; f. 175^v, il y a le nom propre : *Randulfus*. Reliure veau brun; au dos, le titre doré : *Daniel. Epist. can.*

1003. (5500-03). — S. HIERONYMUS. Opera.

1. (F. 1-231). *Explanatio in Isaia propheta libri numero XVIII Hieronymi presbiteri.* = *PL.*, t. XXIV, col. 17 sqq.
2. (F. 231^v-233). *Libellus Martini episcopi ad Mironem regem de III virtutibus.* = *PL.*, t. LXXII, col. 21 sqq.
3. (F. 233-233^v). *Sermo S. Augustini de corporis et anime misera vita.* = *PL.*, t. XL, col. 1332.
4. (F. 233^v-234^v). *Sermo sancti Iohannis episcopi de patientia et gratiarum actione.* = *PG.*, t. LX, col. 723-30.
5. (F. 234^v). *Testamentum Marci Grunni Corococte Porcelli* (1).

Parchemin; 234 feuillets; 0^m,33 × 0^m,24; XI^e siècle; deux colonnes; grandes et belles lettrines. Ce volume a appartenu autrefois à l'abbaye de Gembloux, car on lit, f. 231, cette note en vers écrite en capitales rustiques :

*Olbertus hoc egregium, Petre sancte, volumen
Conficiendo tue contulit ecclesiae;
Tu Deus aetherae quem custodem dedit aulae,
Codicis auctori gaudia redde poli.*

F. 228, on lit : *Karissimo socio suo I. de Gramept Sigebertus de Gemblaco in dilectionem* (2). Reliure du XVII^e siècle, avec le titre doré : *Hieronymi sup. Isaiam comment.*

1004. (9379-80). — S. HIERONYMUS. In Isaiam.

1. (F. 1^v). Alphabet grec et transcription en grec du *Pater noster*.
2. (F. 1^v-215). HIERONYMUS. *Explanatio in Isaiam prophetam.* = *PL.*, t. XXIV, col. 17 sqq.
3. (F. 215^v). Alphabet et numération en grec.

Parchemin; 215 feuillets; 0^m,35 × 0^m,243; XII^e siècle; deux colonnes. F. 1, il y a la cote *MM., 4-3* et la note : *Liber sancti Laurentii extra muros leodienses*. Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré qui se trouve aussi à l'intérieur sur une étiquette en maroquin rouge : *Hieronymus in Isaiam*; en dessous, les armes de Belgique et l'inscription : *Bibl. royale*.

(1) Voir, pour les diverses éditions de cette pièce, V. DE VIR, *Totius latinitatis lexicon opera et studio Aegidii Forcellini*, Prati, 1858-60, t. I, p. ccxxxv.

(2) *Compte rendu des séances de la Commission royale d'histoire*, 2^e série, t. XI, p. 447.

1005. (H. 1401). — S. HIERONYMUS. Super Isaiam.

1. (F. 1). Lectiones Isaie prophetae que ad missas in ecclesia leguntur et in hoc volumine continentur.

2. (F. 1^v-140). Pars prima explanationis sancti HIERONYMI presbiteri super Isaiam prophetam. = *PL.*, t. XXIV, col. 17 sqq.

Il manque trois feuillets entre f. 32 et 33, soit les chapitres VII, 3-IX, 1.

En tête du volume, description très détaillée extraite d'un catalogue anglais imprimé.

Parchemin; 140 feuillets, plus six de garde en tête et six à la fin du volume; 0^m,315 × 0^m,24; XII^e siècle; deux colonnes; très belles lettrines. Ce volume est probablement écrit de la main d'Alulfe, moine de Saint-Martin, à Tournai. F. 1, il y a la note: *Liber sancti Martini Tornacensis*, et f. 140: *Liber sancti Martini Tornacensis servanti benedictio. Amen* (1). Plus tard, ce volume a été le n^o 23031 de la collection Phillipps; il est entré dans la Bibliothèque royale en 1891. Reliure parchemin.

1006. (235-37). — HIERONYMUS. Commentarius in Isaiam et Ieremiam.

1. (F. 1, 1^v, 282-282^v). Fragments des *Constitutiones papales scripte 1361*.

2. (F. 2-2^v, 281-281^v). Fragments de bréviaire.

3. (F. 3-212^v). Beati HIERONYMI presbiteri explanaciones in Ysaiam prophetam. = *PL.*, t. XXIV, col. 17 sqq.

Les feuillets 213-215^v sont blancs.

4. (F. 216-280^v). Beati HIERONYMI presbiteri explanaciones Iheremie prophete. = *Ibid.*, col. 679 sqq.

Parchemin; 282 feuillets; 0^m,405 × 0^m,29; XV^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et bleues; signatures *A1-O1, a1-i1*. F. 2, on lit deux fois: *Est liber hic sancti Martini Lovaniensis* (2); f. 3, il y a la note: *Ex parte P. Henrici Francx Lovaniensis canonici regularis professi anno 1454, quiq[ue] obiit primus iubilearius anno 1504; f. 214^v: Pertinet monasterio canonicorum regularium vallis Sancti Martini in Lovanio ex parte fratris Henrici Francx eiusdem monasterii canonici et presbiteri professi; f. 280^v: Liber monasterii S. Martini ex parte dilecti confratris nostri P. Henrici Francx, qui fuit ex primoribus oppidi, professus anno XIII liii; obiit vero primus iubilearius huius domus anno Domini XV liii*. L'estampille rouge, aux faïsseaux, de la Bibliothèque nationale de Paris, se trouve f. 3 et 280. Reliure ancienne, veau estampé, très jolis fers.

1007. (9512-14). — S. HIERONYMUS. In Ieremiam.

1. (F. 1^v-116^v, 122-122^v). Explanatio sancti HIERONYMI in libro Iheremie (3). = *PL.*, t. XXIV, col. 679 sqq.

(1) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. I, p. 100, n. 22.

(2) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 217.

(3) F. 1, il y a cette note: *Nota quod gloriosus doctor Iheronimus scripsit . XX . libros super Iheremiam prophetam quorum . VI . primi habentur in isto volumine,*

2. (F. 117-121^v). Enchiridion XISTI (1). — Ce traité est précédé des extraits de S. Jérôme qui en font mention (2).

Parchemin; 122 feuillets; 0^m,31 × 0^m,23; X^e siècle; deux colonnes; f. 1^v et 2, il y a de très jolies lettrines. F. 1, on lit la note: *Liber conventus sancti Laurentii Leodiensis*, et l'on voit la cote de bibliothèque MM., 4-5. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris, aux faisceaux, se trouve f. 1 et f. 121^v. Reliure moderne veau raciné; au dos, le titre doré: *Hieronymus in Ieremiam, Enchiridion Xisti*, reproduit à l'intérieur sur une étiquette de maroquin rouge; plus bas, les armes de Belgique et la cote: *Bibl. royale*.

1008. (II. 1021). — S. HIERONYMUS. Explanatio Hieremiae prophetae. = *PL.*, t. XXIV, col. 679 sqq.

Sur le premier feuillet de garde, on a collé une description imprimée de ce volume, tirée d'un catalogue anglais d'une vente de livres, et sur le troisième une note manuscrite de l'abbé F. A[LLARD].

Parchemin; 80 feuillets, plus neuf de garde en papier; 0^m,363 × 0^m,262; XI^e siècle; deux colonnes; superbes lettrines; signatures 1-x. F. 2 et f. 80, on lit: *Liber sancti Martini Tornacensis, servanti benedictio, auferenti maledictio. Amen*. Plus tard, ce volume a appartenu à la collection de Cheltenham, où il portait le n^o 23026; il a été acquis par la Bibliothèque royale en 1888, pour fr. 350. Reliure parchemin.

1009. (5474-77). — S. HIERONYMUS. Expositio in Hieremiam.

1. (F. 1-79^v). Sancti HIERONIMI commentarius in Hieremiam. = *PL.*, t. XXIV, col. 679 sqq.

2. (F. 80-83). Enchyridion XISTI (3).

Les feuillets 83^v-84 sont blancs.

3. (F. 84^v-96). [Epistola SIGEBERTI Gemblacensis ad Trevirenses de ieiunio quatuor temporum]. Responsio ... missa dominis Treverensibus. = *PL.*, t. CLX, col. 813-25.

4. (F. 96-96^v). Epistola dubitantium utrum iuste arguatur regula Bernonis missa dominis Leodiensibus. = *Ibid.*, col. 825-26.

5. (F. 96^v-98). Responsio ad eandem epistolam. = *PL.*, t. CLX, col. 826-30.

Parchemin; 98 feuillets; 0^m,325 × 0^m,235; XII^e siècle; deux colonnes; très jolies initiales ornées. F. 1, il y a la note: *Iste liber pertinet monasterio sancti Petri Gemblacensis*. Reliure du XVII^e siècle; veau raciné, au dos, le titre doré: *Hieron. in Hie. prophe.*, tranche rouge.

tres ultimi reperiuntur apud regulares VII fontium in Brabancia, sed XI medii non inveniuntur quod deplorant Cassiodorus, Rabanus et Iohannes Andree.

(1) Cf. A. ELTER, *Gnomica. I. Sexti Pythagorici, Clitarchi, Evagrii Pontici sententiae*. Lipsiae, 1892, p. IX-XXVIII.

(2) A. HARNACK, *Geschichte der altchristl. Litteratur*, t. I, p. 765-69.

(3) Cf. A. ELTER, *op. cit.*

1010. (21837). — S. HIERONYMUS. Explanationes in prophetas minores.

1. (F. 1). [Praefatio HIERONYMI in Sophoniam]. = *PL.*, t. XXV, col. 1337.

2. (F. 1^v). Index.

3. (F. 2-41). Explanatio in Abacuc. = *Ibid.*, col. 1273.

4. (F. 41-70). Explanatio in Sophoniam prophetam. = *Ibid.*, col. 1338.

5. (F. 70-88). Explanatio in Aggeum. = *Ibid.*, col. 1387.

6. (F. 88-160^v). Explanatio in Zachariam prophetam. = *Ibid.*, col. 1415.

7. (F. 160^v-178). Explanatio in Malachiam. = *Ibid.*, col. 1541.

Parchemin; 178 feuillets; 0^m,267 × 0^m,185; XII^e siècle; deux colonnes; lettrines très élégantes; signatures 1-xxii. Ce volume provient de l'abbaye de Parc; à l'intérieur du premier plat de la couverture, il y a la cote : *I. theca VIII*, et à l'extérieur sur les deux plats les armoiries de l'abbaye ont été grattées. Plus tard, ce volume a appartenu à Lammens, car il y a au verso de la couverture, l'ex-libris : *Ex bibliotheca P. V. C. Lammens*. Il a été acquis par la Bibliothèque royale en 1863 à la vente des livres de Van Alstein. Reliure veau; au dos, le titre doré : *Hieronim. in V ultim. proph. min.*; tranche rouge.

1011. (21547). — S. HIERONYMUS. Commentarii biblici.

Commentaires sur Osée, Joel, Amos, Abdias, Michée, Nahum, Habacuc, Sophonias, Aggée, Zacharie. *Des. mutil.* ch. xiv de Zacharie, v. 13. = *PL.*, t. XXV, col. 815-1533.

Parchemin; 119 feuillets; 0^m,232 × 0^m,17; XIII^e siècle; trois colonnes; très curieuses lettrines; initiales rouges et bleues. F. 1, on lit la note : *Liber sancte Marie de clauastro dicto Himmerode treverensis diocesis*. Reliure du XVI^e siècle; ais de bois recouverts de peau de truie estampée aux armes de deux abbés avec les initiales *F. R. A. H.* d'un côté et *C. H.* de l'autre; reste de fermoirs en cuivre; tranche rouge.

1012. (II. 1100). — S. HIERONYMUS. In prophetas minores.

1. (F. 1). Fragments d'antiphonaire noté : *Dominica prima in adventu*.

2. (F. 2-57). Sancti HIERONYMI in Osee propheta. = *PL.*, t. XXV, col. 815.

3. (F. 57-74). Beati HIERONIMI in Iohel propheta. = *Ibid.*, col. 947.

4. (F. 74-116^v). In Amos prophetam. = *Ibid.*, col. 989.

5. (F. 116^v-125). Explanatio in Abdiam prophetam. = *Ibid.*, col. 1097.

6. (F. 125-139^v). In Ionam prophetam. = *Ibid.*, col. 1117.

7. (F. 139^v-175). Explanations in Micheam prophetam. = *Ibid.*, col. 1153.

8. (F. 175-177). Dividationes partium a V^{ta} littera in e incipientem.

Parchemin; 177 feuillets; 0^m,33 × 0^m,23; XIII^e siècle; deux colonnes; très belles letrines. F. 177, il y a la note : *Liber hic Ane monachorum virginis alme* (1), et f. 1, la cote *4681 Ph[illipps]*. Ce volume a été acquis par la Bibliothèque royale en 1888. Demi-reliure; au dos, le titre doré : *S. Hieronymus in prophetas minores*.

1013. (II. 1105). — S. HIERONYMUS. In prophetas minores (2).

1. (F. 1^v-25). Beati IERONIMI explanatio super Naum prophetam. = *PL.*, t. XXV, col. 1231.

2. (F. 26-63). Explanatio in Abacuc prophetam. = *Ibid.*, col. 1273.

3. (F. 63-91). In Sophoniam. = *Ibid.*, col. 1338.

4. (F. 91-107). Explanatio beati IERONIMI in Aggeum prophetam. = *Ibid.*, col. 1387.

5. (F. 107-179). Explanatio Zacharie prophete. = *Ibid.*, col. 1415.

6. (F. 179^v-200). Explanatio in Malachiam. = *Ibid.*, col. 1541.

Parchemin; 200 feuillets; 0^m,33 × 0^m,23; XIII^e siècle; deux colonnes; très curieuses letrines; initiales rouges et vertes; titre courant; signatures 1-xxv. F. 200^v, on lit : *Liber sancte Marie de Alua*, et f. 1, la cote *4686 Ph*. Ce volume fut acquis par la Bibliothèque royale en 1888. Demi-reliure toile anglaise; au dos, le titre doré : *S. Hieronymus in prophetas minores*.

1014. (200). — S. HIERONYMUS. Explanaciones in XII prophetas.

1. (F. 1-186). Explanaciones sancti IHERONIMI presbiteri in Osee (f. 1-35), Iohel (f. 35-40^v), Amos (f. 40^v-65), Abdiam (f. 65-70), Ionam (f. 70-77^v), Micheam (f. 77^v-97^v), Naum (f. 97^v-108), Abacuc (f. 108-124^v), Sophoniam (f. 124^v-137), Aggeum (f. 137-144^v), Zachariam (f. 144^v-176^v), Malachiam (f. 176^v-186). = *PL.*, t. XXV, col. 815 sqq.

2. (F. 186-190). Tabula ... secundum ordinem librorum XII prophetarum iuxta litteras alphabeti.

Parchemin; 190 feuillets; 0^m,35 × 0^m,255; XV^e siècle (1460), car f. 186, on lit la note : *Scripti per fratrem Henricum de Dissen de Osnaburgis monachum huius domus sancte Barbare videlicet in Colonia Carthusiensis ordinis, emendati pariter et tabulati anno Domini millesimo quadringentesimo sexagesimo in octavis nativitatibus beatissime Dei genitricis Marie virginis*; deux colonnes; quelques initiales en or et en couleur; titre courant; signatures a-z. Au verso du premier plat de la couverture, on lit sur une étiquette : *Liber domus sancte Barbare in Colonia ordinis Carthusiensis, in quo continentur explanationes sancti Iheronimi in xij prophetas*. L'estampille rouge, aux faïsses, de la Bibliothèque nationale de Paris, se trouve ff. 1 et 190^v. Reliure ancienne, veau estampé.

1015. (238). S. HIERONYMUS. Libri explanacionum in XII prophetas.

Commentaires sur Osée (f. 2-39), Joël (f. 39-50^v), Amos (f. 50^v-82),

(1) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, decuria tertia, p. 241.

(2) Ce volume fait suite au précédent, n. II. 1100. Il est écrit de la même main. Cf. SANDERUS, *ibid.*

Abdias (f. 82-87^v), Jonas (f. 87^v-96^v), Michée (f. 96^v-118^v), Naum (f. 118^v-130^v), Habacuc (f. 130^v-148^v), Sophonie (f. 148^v-162), Aggée (f. 162-170), Zacharie (f. 170-206), Malachie (f. 206-215^v). = *PL.*, t. XXV, col. 815 sqq.

Parchemin; 216 feuillets; 0^m,375 × 0^m,27; XV^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et bleues; quelques letrines. F. 1, il y a la note : *Pertinet ad monasterium vallis sancti Martini Lovaniensis ex parte confratris nostri P. Henrici Vranca ex primoribus oppidi, professus anno xiiij^e lvij; obiit vero primus iubilearius anno xv.iiij.* F. 216^v, on lit : *Est liber hic sancti Martini Lovaniensis.* F. 1 et 215^v, l'estampille rouge *R. F.* de la Bibliothèque nationale de Paris. Demi-reliure moderne; dos en basane rouge, avec le titre doré : *Bⁱ Iheronimi explanationes in duodecim prophetas, XV saec.*, avec le chiffre couronné de Léopold I^{er}.

1016. (II. 2565). — S. IHERONYMUS. In prophetas minores.

1. (F. 1-51). Explanatio in Osee prophetam. = *PL.*, t. XXV, col. 815 sqq.

2. (F. 51-68). Explanatio sancti IHERONIMI in Iohel prophetam. = *Ibid.*, col. 947 sqq.

3. (F. 68-109). In Amos explanationes beati IHERONIMI. = *Ibid.*, col. 989 sqq.

4. (F. 109-116). Explanationum liber in Abdiam prophetam. = *Ibid.*, col. 1007 sqq.

5. (F. 116-128^v). Explanatio in Ionam prophetam. = *Ibid.*, col. 1117 sqq.

6. (F. 128^v-163). Explanatio in Micheam. = *Ibid.*, col. 1151 sqq.

7. (F. 163-181). Explanatio in Naum prophetam. = *Ibid.*, col. 1231 sqq.

8. (F. 181-211). In Abacuc explanationes beati IHERONIMI presbiteri. = *Ibid.*, col. 1273 sqq.

9. (F. 211-233). Explanatio in Sophoniam prophetam. = *Ibid.*, col. 1337 sqq.

10. (F. 233^v-246). Explanationum liber beati IHERONIMI in Aggeum prophetam. = *Ibid.*, col. 1387 sqq.

11. (F. 246^v-299). Explanatio beati IHERONIMI presbiteri in Zachariam prophetam. = *Ibid.*, col. 1415 sqq.

12. (F. 299-313^v). Liber explanationum beati IHERONIMI presbiteri in Malachiam prophetam. = *Ibid.*, col. 1541 sqq.

Parchemin; 313 feuillets; 0^m,35 × 0^m,245; XV^e siècle; deux colonnes; superbe calligraphie; très belles letrines en toutes couleurs et rehaussées d'or; initiales rouges et bleues; signatures *A₁-V₄*, *A₁-Fu₁*. Au verso du dernier feuillet, il y a la note : *Istud egregium volumen XII^{im} prophetarum scriptum est per manus fratris Petri de Lovanio alias van den Vekene.* F. 1, de très jolies miniatures représentent les douze prophètes, et f. 2^v, S. Jérôme en costume de cardinal et un chanoine régulier de l'Ordre de Saint-Augustin en habit de chœur. Ce qui fait penser, surtout

en comparant ce volume au n. II. 2531 (1), au prieuré de Bethléem, près Louvain. Sur le premier feuillet de garde, il y a l'ex-libris : *Sir T. P. Middle Hill 2843*. Ce volume fut acquis par la Bibliothèque royale en 1900. Reliure parchemin.

1017. (II. 2206). — S. HIERONYMUS. Commentarius super Matthaëum.

1. (F. 1^v-4^v). Incipiunt capitula ... in commentarium super Matheum.
2. (F. 4^v-47). Incipit in Matheum liber primus. = *PL.*, t. XXVI, col. 21-70. Le prologue *ad Eusebium* manque.
3. (F. 47^v-87). Incipit *EIUSDEM* liber secundus. = *Ibid.*, col. 69-114.
4. (F. 87-125). Incipit liber tertius. = *Ibid.*, col. 113-160. *Des. mutil.* libr. III, cap. 74 : ... *alios ob honestatem morum virtutibus deditos. Intravit ...*

Parchemin; 125 feuillets; 0^m,165 × 0,145; IX^e siècle. Ce volume contient seize cahiers avec les signatures *QR. I. ... II. ... III.*, etc. Manquent les feuillets 2 et 3 du premier cahier et la feuille 7 du XIII^e cahier. Les cahiers sont de huit feuillets, à l'exception des cahiers IV et V qui en ont chacun neuf. Ce manuscrit appartenait autrefois au monastère de Parc-lez-Louvain. F. 1^v, on lit : *Liber S. Marie de parco, si quis abstulerit anathema sit*, et les armes du monastère, aujourd'hui grattées, se trouvaient sur le plat. Sur le revers de la couverture, il y a la cote : *I. theca. ii.* De là le volume a passé dans la bibliothèque Phillipps à Cheltenham. On trouve en effet l'estampille du baronnet à l'intérieur de la couverture, et f. 1, on lit : *Phillipps MS. 4532*. Ce volume a été acheté, à Londres, en juin 1898, pour 1550 fr. (1). Reliure veau; tranche rouge; sur le dos, le titre erroné : *Glossa super Matth.*, répété f. 2^v.

1018. (615-24). — S. HIERONYMUS. Opera.

1. (F. 2 de garde verso). Subscripta ... in hoc volumine.
2. (F. 1-2). Capitula in Matheo evangelista beati IERONIMI presbiteri.
3. (F. 2^v-62^v). Liber sancti IHERONIMI in Matheo evangelista. = *PL.*, t. XXVI, col. 21-218.
4. (F. 62^v-75). Explanatio sancti IHERONIMI super Marcum evangelistam. = *PL.*, t. XXX, col. 589-644.
5. (F. 75-99^v). Expositio beati IHERONIMI presbiteri super Ecclesiasten. = *PL.*, t. XXIII, col. 1009 sqq.
6. (F. 99^v-110). [S. HIERONYMI]. Super Cantica explanatio. *Inc.* Veri amoris quem magister gentium Paulus. *Des.* paravit sibi imputribilem materiam tabularum. Deo gratias.
7. (F. 111-120). Beati IHERONIMI presbiteri ... translatio duorum tractatum Origenis super Cantica canticorum. = *Ibid.*, col. 1117 sqq.
8. (F. 120-132). Epistola beati IHERONIMI de homine perfecto. = *PL.*, t. XXX, col. 75.

(1) Voir plus bas, p. 85, n. 1019 (II. 2531),

(2) Cf. *Bibliotheca Phillipica*, London, 1898, p. 117, n. 882.

9. (F. 132-136^v). Epistola beati IHERONIMI de vindicta et iuramento atque obedientia et scientia. = *Ibid.*, col. 105.

10. (F. 136^v-142). Epistola beati IHERONIMI ad quendam amicum egrotantem consolatoria. = *Ibid.*, col. 61.

11. (F. 143-151^v). Vita S. Paule edita a sancto Iheronimo presbitero. = *BHL.*, n. 6548.

12. (F. 151^v-166). Epistola sancti CYRILLI episcopi iherosolimitani ad Augustinum doctorem de miraculis sanctissimi Iheronimi doctoris eximii. = *BHL.*, n. 3868.

13. (F. 166-169). Epistola sancti doctoris AUGUSTINI ad Cyrillum episcopum ... de excellentia beatissimi Iheronimi episcopi. = *BHL.*, n. 3867.

14. (F. 170-176). Liber sancti IHERONIMI de predestinatione et divina gratia. *Inc.* Quidam de predestinatione et divina gratia disputantes. *Des.* a quo in futuro omnibus revelanda sunt. Deo gracias.

Parchemin; 176 feuillets, plus deux de garde au commencement et à la fin; 0^m,32 × 0^m,22; XV^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et bleues. Au verso du premier feuillet de garde, il y a la note: *Istud volumen est monasterii sancti Pauli vulgater (sic) dicti Rubeecallis in Zonia. Reportetur igitur ad praedictum monasterium propter Domini preceptum et amorem.* Reliure ancienne restaurée, veau brun estampé (1).

1019. (H. 2531). — S. IHERONYMUS. Opera.

1. (F. 1). Index.

2. (F. 2-41). Expositio beati IHERONIMI super Ecclesiasten. = *PL.*, t. XXIII, col. 1009 sqq.

3. (F. 41^v-59). Super Cantica explanatio (2).

4. (F. 59^v-70^v). Explanatio sancti IHERONIMI super Apokalipsym. = *Inc.* Diversi marina discrimina transvadentes. *Des.* qui cum Cherinto heretico sentiunt.

5. (F. 70^v-87^v). Explanatio sancti IHERONIMI super Marcum. = *PL.*, t. XXX, col. 589-644.

6. (F. 87^v-98^v). Liber sancti IHERONIMI de praedestinatione et divina gracia (3).

Le feuillet 99 est blanc.

7. (F. 100-159). Liber ORIGENIS in Genesi. = *PG.*, t. XII, col. 145 sqq.

8. (F. 159-203). ADAMANTH ORIGENIS in Exodo. = *Ibid.*, col. 297 sqq.

Parchemin; 203 feuillets; 0^m,33 × 0^m,215; XVI^e siècle; deux colonnes; signatures a-z. Superbes letrines; plusieurs pages sont richement encadrées de

(1) Voir une description de ce manuscrit dans *Catalogus codic. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. I, p. 267-8.

(2) Voir le volume précédent, p. 84, n. 6°.

(3) *Ibid.*, n. 14°.

fleurs. Au revers de la couverture, on lit : *Pertinet monasterio [de Belleem] volumen istud*, et f. 203 : *Iste liber pertinet monasterio de Belleem scriptus per manus fratris Nycholai de Dygest alias Bormans*. Les initiales *N. B.* du copiste se trouvent aussi f. 59^v. F. 1, il y a la cote : *Sir T. P. Middle Hill 2844*. Ce volume fut acquis en 1900. Reliure parchemin.

1020. (10752). — S. HIERONYMUS. Opera.

1. (F. 1-5^v). Praefatio sancti HIERONYMI in corpore epistolarum beati Pauli apostoli. *Inc.* Primum quaeritur quare post evangelia que supplementum legis sunt. *Des.* sed sub notaciones breves singulis versibus ac verbis appositas.

2. (F. 5^v). [PETRUS AUREOLUS. De sancto Paulo]. — Court extrait.

3. (F. 6^v-97^v). Gloses sur les épîtres de S. Paul. — Deux gloses, l'une du XII^e, l'autre du XIV^e siècle.

Parchemin ; 97 feuillets ; 0^m,227 × 0^m,145 ; XII^e et XIV^e siècles ; deux colonnes ; quelques curieuses lettrines. F. 6, une intéressante miniature représente quelques scènes de la vie de S. Paul. Ce manuscrit provient de Saint-Laurent à Liège, car f. 1, il y a la cote *KK, 6-1*. Reliure moderne, veau raciné ; au dos, le titre doré : *Glossae in epist. S. Pauli XII saec.*, reproduit sur une étiquette en maroquin rouge, à l'intérieur du volume ; en dessous, les armes de Belgique et l'inscription *Bibl. royale*.

1021. (5473). — S. HIERONYMUS. Breviarium super psalterium.

Cf. *PL.*, t. XXVI, col. 821-1267. *Des. mutil.* Lavabo per singulas noctes lectum (Ps. CXLVIII).

Parchemin ; 178 feuillets ; 0^m,32 × 0^m,242 ; XI^e siècle ; deux colonnes ; très jolies lettrines. Ce manuscrit appartenait autrefois à l'abbaye de Gembloux, mais toute indication positive de cette provenance a disparu. Reliure du XVII^e siècle, veau raciné, titre doré : *Hieronimu. Super psalteri.*

1022. (383). — S. HIERONYMUS. Breviarium in psalmos.

C'est le traité publié, *PL.*, t. XXVI, col. 821-1270.

Parchemin ; 205 feuillets ; 0^m,325 × 0^m,22 ; XVI^e siècle (1523), car f. 205^v, on lit : *Finit expositio psalmorum anno Domini 1523*. Deux colonnes, initiales rouges et bleues, titre courant, ancienne pagination I-CCIII. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 1 et f. 205^v. Reliure moderne veau brun estampé ; au dos, le titre inexact : *Origenis commentarii in psalterium, anno 1423*.

1023. (II. 1050). — S. HIERONYMUS. In Didimum de Spiritu sancto.

1. (F. 1). Index.

2. (F. 1^v-30). HIERONIMUS in Didimum de Spiritu sancto. = *PL.*, t. XXIII, col. 101 sqq.

3. (F. 30-43). Expositio beati GREGORII episcopi urbis Rome in Canticum canticorum. = *PL.*, t. LXXIX, col. 267 sqq.

4. (F. 43^v-66^v). Vita Aurelii Augustini. = *BHL.*, n. 785.
5. (F. 67-75). Vita sancti Symeonis monachi. = *BHL.*, n. 7963 (1).
6. (F. 75^v-81^v). Vita sancti Amoris. = *BHL.*, n. 392 (2).
7. (F. 81^v-85). Vita sancti Alexis confessoris. = *BHL.*, n. 288.
8. (F. 85-88). Passio sancti Georgii martyris. = *BHL.*, n. 3375.
9. (F. 88-90). Passio sancti Gordiani martyris. = *BHL.*, n. 3612.
10. (F. 90^v-104). De nativitate sanctae Mariae. = *BHL.*, n. 5334.
11. (F. 104^v-107^v). Assumptio sanctae Mariae. = *BHL.*, nn. 5351-52.
12. (F. 108--128^v). De virtutibus sancti Andreae apostoli. = *BHL.*, n. 430.
13. (F. 128^v). [Epistola ANSELMI Laudunensis ad Heribrandum abbatem sancti Laurentii Leodiensis]. = *PL.*, t. CLXII, col. 1587.
14. (F. 129-130^v). Registre des chartes conservées à Alne. — Fragment concernant les *Karte de Fontanis, Karte de Beasart, Decime de Viscurt, Decime de Fontanis, Decime de Beasart.*

Parchemin; 130 feuillets; 0^m,234 × 0^m,172; XI^e siècle. F. 1, on lit : *Liber sancte Marie de Alna* (3) et *4627 Ph.[illipps]*. Ce volume a été acquis par la Bibliothèque royale en 1888. Demi-reliure, toile anglaise; au dos, les titres dorés des différents traités (4).

1024. (5504-12). — SS. HIERONYMUS, AUGUSTINUS et autres Pères. Divers traités.

1. (F. 1-95). Explanatio beati HIERONIMI presbiteri in epistolas Pauli. = *PL.*, t. XXVI, col. 307 sqq.
2. (F. 95-95^v). Epistola EIUSDEM ad Marcellam de Tharsis. = *PL.*, t. XXII, col. 461-63.
3. (F. 96-96^v). Retractatio beati AUGUSTINI episcopi in expositione epistole Pauli ad Romanos. = *PL.*, t. XXXII, col. 620-22.
4. (F. 96^v-105^v). Liber quaestionum AUGUSTINI in epistola ad Romanos. = *PL.*, t. XXXV, col. 2063 sqq.
5. (F. 105^v-106). Retractatio eiusdem AUGUSTINI in epistolis Pauli ad Galathas. = *PL.*, t. XXXII, col. 622-23.
6. (F. 106-122). Explanatio EIUSDEM in epistola ad Galathas. = *PL.*, t. XXXV, col. 2105 sqq.
7. (F. 122-127). Retractatio et libellus AUGUSTINI de origine animae ad beatum Hieronymum. = *PL.*, t. XXXII, col. 649, et t. XXXIII, ep. 166.

(1) Dans ce manuscrit les nn. 28-34 sont omis.

(2) Dans ce manuscrit, le texte est suivi de quatre vers qui ont été publiés *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. II, p. 479.

(3) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 251, decuria septima.

(4) Voir une description de ce volume dans *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. II, p. 478-79.

8. (F. 127-130^v). EIU^SDEM ad eundem de sententia Iacobi apostoli. = *PL.*, t. XXXIII, ep. 167.

9. (F. 130^v-131). Rescriptum HIERONIMI. = *PL.*, t. XXII, ep. 134.

10. (F. 131). Item ad eundem. = *Ibid.*, ep. 141.

11. (F. 131-134^v). Epistola AUGUSTINI ad Optatum episcopum de origine anime. = *PL.*, t. XXXIII, col. 857 sqq.

12. (F. 134^v-135). HIERONIMUS ad Marcellinum et Anapsychie de anima. = *PL.*, t. XXII, ep. 126.

13. (F. 135-135^v). Epistola HIERONIMI ad Alyppium et ad Augustinum episcopos. = *Ibid.*, ep. 143.

14. (F. 135^v-136). Expositio fidei sancti HIERONIMI. = *PL.*, t. XLV, col. 1716.

15. (F. 136-139^v). Epistola HIERONIMI ad Pammachinum de optimo genere interpretandi. = *PL.*, t. XXII, ep. 57.

16. (F. 139^v-142^v). Epistola EPIPHANII Cipri episcopi ad Iohannem Constantinopolitanum, a Hieronimo translata. = *Ibid.*, ep. 52.

17. (F. 142^v-143). Scriptum IGNATHI martyris ... ad Mariam (1).

18. (F. 143-144^v). Epistola EIU^SDEM ad Trallianos (2).

19. (F. 144^v-146). EIU^SDEM ad Magnesianos (3).

20. (F. 146-154^v). EIU^SDEM ad Tarsenses, ad Philippenses, Philadelphienses, Smyrnenses, Polycarpum, Antiocenses, ad Hironem diaconum, Ephesios (4).

21. (F. 154^v-155). Epistola prima IGNATHI episcopi scripta de Smirna per Ephesios.

22. (F. 155-157^v). Passio sancti Ignatii martiris. = *BHL.*, n. 4257.

23. (F. 157^v-158^v). [EUSEBIUS et HIERONYMUS de Ignatio]. = *BHL.*, n. 4260.

24. (F. 158^v). Laus HIRONIS in eum, discipuli eius et successoris, qui ei per revelationem fuerat ostensus quod esset successurus cathedram ipsius (5).

25. (F. 158^v-159^v). Epistola sancti POLICARPI episcopi et martiris (6).

Parchemin; 159 feuillets; 0^m,315 × 0^m,235; XI^e siècle; très belles initiales; rubriques en capitales rustiques. Ce volume provient de Gembloux, mais il ne reste aucune indication de la provenance. Reliure du XVII^e siècle, veau raciné; titre doré, au dos : *Erplanat. B. Hier. in epist. Pauli.*

(1) LIGHTFOOT, *The apostolic Fathers*, t. II, sect. 2, p. 629-31.

(2) *Ibid.*, p. 622-26.

(3) *Ibid.*, p. 613-17.

(4) *Ibid.*, pp. 631-35, 618-22, 597-601, 602-605, 635-39, 639-43, 606-13. Cf. aussi pour les lettres d'Ignace, plus haut p. 4.

(5) Ce texte est publié dans *Catal. cod. hagiogr. reg. Bruxell.*, t. I, p. 518. Cf. sur des éditions antérieures, LIGHTFOOT, *The apostolic Fathers*. t. II, p. 892.

(6) LIGHTFOOT, *op. cit.*, t. II, p. 901 sqq.

1025. (5478-83). — S. HIERONYMUS. Opera.

1. (F. 1-1^v). Capitula librorum sive epistolarum sancti Hieronimi presbiteri.
2. (F. 1^v). Ex libro AUGUSTINI de heresibus ad Quodwultdeum dyaconum = *PL.*, t. XLII, col. 45.
3. (F. 2-40). Libri sancti HIERONIMI contra Iovinianum. = *PL.*, t. XXIII, col. 211.
4. (F. 40^v-46). Epistola sancti HIERONIMI apologetica ad Pammachium super eisdem libris. = *PL.*, t. XXII, lettre n. 48.
5. (F. 46-46^v). Item HIERONIMUS ad Pammachium. = *Ibid.*, n. 49.
6. (F. 46^v-52). HIERONIMUS. Contra Helvidium de virginitate sancte Marie. = *PL.*, t. XXIII, col. 183.
7. (F. 52-87^v). [HIERONYMI epistolae]. = *PL.*, t. XXII, nn. 14, 52, 125, 22, 39, 60, 66, 77, 35 et 36.
8. (F. 87^v-96). Tractatus HIERONIMI de Cantico canticorum post Origenem translatus. = *PL.*, t. XXIII, col. 1116.
9. (F. 96-120). Suite des lettres de S. Jérôme. = *PL.*, t. XXII, nn. 18, 19, 20, 15, 16, 56, 101, 102, 103, 111, 110, 105, 67, 104, 112, 115, 116.
10. (F. 120-122). Epistola HIERONIMI ad Praesidium. = *PL.*, t. XXX, col. 182.
11. (F. 122-126). Lettres. = *PL.*, t. XXII, nn. 85, 58, 55.
12. (F. 126^v-127^v). Epistola HIERONIMI ad Oceanum de vita clericorum. = *PL.*, t. XXX, col. 288.
13. (F. 127^v-136^v). Lettres. = *PL.*, t. XXII, nn. 69, 146, 73, 17, 1, 72.
14. (F. 136^v-139^v). HIERONIMI ad Susannam lapsam. = *PL.*, t. XVI, col. 365.
15. (F. 139^v-142). Lettres. = *PL.*, t. XXII, nn. 11, 37, 129.
16. (F. 142-144). Epistola HIERONIMI de tribus virtutibus. = *PL.*, t. XXX, col. 116.
17. (F. 144-145^v). Lettres. = *PL.*, t. XXII, nn. 47, 71.
18. (F. 145^v-147). HIERONIMUS ad Tyrasium de dormitione filiae. = *PL.*, t. XXX, col. 278.
19. (F. 147-150). Lettres. = *PL.*, t. XXII, nn. 50, 61, 119.
20. (F. 150-153^v). Item HIERONIMUS ad Riparium et Desiderium pros (*sic*) adversus Vigilantium. = *PL.*, t. XXIII, col. 339.
21. (F. 153^v-157). Lettres. = *PL.*, t. XXII, nn. 70, 74, 4, 5, 76, 68.
22. (F. 157-158). Epistola HIERONIMI de honorandis parentibus. = *PL.*, t. XXX, col. 145.
23. (F. 158-208^v). Lettres. = *PL.*, t. XXII, nn. 147, 6, 8, 10, 7, 9, 12, 2, 118, 98, 145, 122, 121, 59, 11, 26, 25, 41, 42, 27, 44, 43, 38, 29, 34, 32, 28, 22, 24, 123, 13, 54, 79, 64, 117.
24. (F. 208^v-236). Lettres. = *PL.*, t. XXII, nn. 107, 75, 45, 99, 127, 120, 148, 30, 106.

25. (F. 236-243). Altercatio Luciferiani et orthodoxi a HIERONIMO conscripta. = *PL.*, t. XXIII, col. 155.

26. (F. 243^v). [Versus].

Inc. Singula contemplor et in his moror, noto summa.

Des. Tu quoque cantus in hoc me mihi digna dabis.

Parchemin; 243 feuillets; 0^m,328 × 0^m,235; XII^e siècle; deux colonnes; superbes lettrines. F. 1^v, on lit : *Pertinet monasterio Gemblacensi in perpetuum*, et f. 243^v : *Liber Sancti Petri in Gemblus, si quis abstulerit ei anathema*. Reliure du XVII^e siècle, avec le titre doré au dos : *D. Augustinu . contra Iovinianum*; tranche rouge.

1026. (10264-73). — S. HIERONYMUS. Opera.

1. (F. 1-1^v). Liber HIERONIMI presbiteri contra Luciferianum. *Des.* *mutil.* ut non sibi tantum luceat, sed omnibus pro[sit]... = *PL.*, t. XXIII, col. 155-60.

2. (F. 2-35^v). Liber sancti HIERONIMI presbiteri contra Iovinianum. = *PL.*, t. XXIII, col. 211 sqq.

3. (F. 35^v, 47-47^v). Excerptum de *Tripertita historia* qua occasione exorta sit Luciferiana heresis. = *PL.*, t. LXIX, col. 1045 (1).

4. (F. 35^v-42^v). Liber sancti HIERONIMI presbiteri contra Helladium Luciferianum. = *PL.*, t. XXIII, col. 155 sqq.

5. (F. 42^v-46^v). Epistola EIUSDEM ad Thesiphontem. = *PL.*, t. XXII, col. 1147-61.

6. (F. 48-79). Dialogus sancti HIERONIMI sub nomine Attici et Critoboli. = *PL.*, t. XXIII, col. 493 sqq.

7. (F. 79-93). Liber apologeticus OROSII presbiteri. = *PL.*, t. XXXI, col. 1173 sqq.

8. (F. 93-111^v). Apologeticum sancti PAMPHILI martyris pro Origene de periarchon, translatum a RUFINO de greco in latinum (2).

9. (F. 111^v-114). Opusculum RUFINI de adulteratione librorum Origenis (3).

10. (F. 114-138^v). Liber apologeticus RUFINI obiectis Iheronimi respondentis. = *PL.*, t. XXI, col. 541 sqq.

11. (F. 139). Epistola HIERONIMI ad Rufinum post reconciliatorem. = *PL.*, t. XXII, col. 735.

12. (F. 139-145). Liber sancti presbiteri HIERONIMI contra dogma Origenis de resurrectione carnis. = *PL.*, t. XXIII, col. 367, n. 15 sqq.

13. (F. 145-145^v). Descriptio EUSEBII HIERONIMI de formulis hebraicarum litterarum. = *PL.*, t. XXX, col. 307.

(1) Voir plus haut p. 70, n. 994 (87-96).

(2) Sur les éditions de cette pièce voir la notice de Schöneman, *PL.*, t. XXI, col. 37, n. V; O. BARDENHEWER, *Patrologie*, Freiburg-in-B., 1894, p. 176.

(3) Voir, au sujet de ce traité, *PL.*, t. XXI, col. 15.

14. (F. 145^v-163). Liber interpretationis hebraicorum nominum. = *PL.*, t. XXIII, col. 771 sqq.

15. (F. 163-178^v). IHERONIMUS in libro locorum ab Eusebio Pamphili ... in greco ... sed .. in latinum diligentius translato. = *Ibid.*, col. 861 sqq.

16. (F. 178^v-190). Glose divinatorum librorum.

17. (F. 190^v). Index.

18. (F. 191^v-237). Hebraice questiones in libro Geneseos [et aliis libris scripturae sacrae]. = *Ibid.*, col. 935 sqq.

19. (F. 237-237^v). Disputatio de ieiuniis.

20. (F. 237^v-238^v). Sermo beati AUGUSTINI episcopi ad Seleucianam utrum apostoli fuerint baptizati. = *PL.*, t. XXXIII, col. 1086-89.

Parchemin; 238 feuillets; 0^m,277 × 0^m,18; XIII^e siècle; les feuillets 1-190 sont à deux colonnes; quelques grandes initiales en rouge. Ce volume provient de Saint-Laurent à Liège, car sur le second feuillet de garde, il y a la cote *MM, 4-11*, de cette bibliothèque, et p. 190^v, en tête de l'index, on lit cette note : *Sequentia annotavit frater Io[hannes] de Yride* (1). *Orate pro eius salute*. Le timbre rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris, se trouve f. 238^v. Reliure veau raciné.

1027. (19077). — S. IHERONYMUS. Contra Iovinianum.

Liber sancti IHERONIMI presbiteri contra Iovinianum hereticum. = *PL.*, t. XXIII, col. 211 sqq.

Parchemin; 71 feuillets; 0^m,257 × 0^m,165; XIII^e siècle; signatures 1-ix. Demi-reliure moderne, dos et coins en peau de truie.

1028. (21189). — S. IHERONYMUS. Opera.

1. (F. 1). Index.

2. (F. 1^v-51^v). Beati IHERONIMI presbiteri de hebraicis quaestionibus. = *PL.*, t. XXIII, col. 935 sqq.

3. (F. 51^v-60^v). IHERONIMUS. De quadraginta duabus mansionibus israhelatici populi. = *PL.*, t. XXII, col. 698.

4. (F. 60^v-61). Descriptio IHERONIMI de formulis hebraicarum litterarum. = *PL.*, t. XXX, col. 307.

5. (F. 61-80). Liber interpretacionis hebraicorum nominum. = *PL.*, t. XXIII, col. 771-858.

6. (F. 80-98). EUSEBII IHERONIMI liber locorum ab Eusebio Cesariensi episcopo prius quidem in greco edito, sed ab eodem Iheronimo in latinum translato. = *Ibid.*, col. 859 sqq.

(1) Sur Jean de Yride, voir DOM BERLIÈRE, *Mélanges d'histoire bénédictine*, t. I, 1897, p. 81-88; cf. *Catalogue des manuscrits de la Bibliothèque royale de Belgique*, I, 1901, p. 201.

7. (F. 98-116). Glose divinatorum librorum.
8. (F. 116^v). Courts extraits de S. Jérôme.

Parchemin; 116 feuillets; 0^m,287 × 0^m,198; XIII^e siècle; deux colonnes; très jolies lettrines de diverses couleurs; signatures *a-n*. F. 1, il y a la note à moitié effacée : *Liber bibliothecae Parcensis*, et sur le premier plat intérieur la cote *I. theca VIII* de cette bibliothèque. Reliure veau brun; sur les deux plats, les armoiries de l'abbaye du Parc ont été grattées; au dos, le titre doré : *Hieron. Opusc.*

1029. (II. 1115). — S. HIERONYMUS. Explanatio in Isaiam prophetam, en deux volumes.

Le tome premier contient les livres I-IX. *Des. mutil.* et os meum non interroga[stis]. = *PL.*, t. XXIV, col. 17-339.

Dans le second, il y a les livres X-XVIII. = *Ibid.*, col. 349 sqq.

Parchemin; 199 et 196 feuillets; 0^m,293 × 0^m,215; XIII^e siècle; deux colonnes; quelques lettrines; signatures 1-xxv, 1-xxiv. Le volume provient de l'abbaye d'Alne (1), plus tard il a appartenu à Sir Thomas Phillipps avec la cote 4727 et a été acheté par la Bibliothèque royale en 1888. Demi-reliure toile anglaise; au dos, le titre doré : *S. Hieronymus in Isaiam, vol. I, II.*

1030. (1850-56). — S. HIERONYMUS. S. BERNARDUS. Opera.

1. (F. 1). Table des matières.
2. (F. 2-6^v). [ODONIS abbatis sermo] in nativitate beate Marie virginis. *Inc.* Fecunde virginis amplectitur celum praesentia. *Des.* quicquid illud sit quod inter Mariae manus invenerit.
3. (F. 6^v-21). [Omilia super *Stabat iuxta crucem*]. *Inc.* Sicut christiane religionis defectus. *Des.* ut illa te tandem assumat in gloriam tuam ubi regnat cum filio suo qui est ... Amen.
4. (F. 21-29^v). [Omilia super *Loquente Iesu ad turbas extollens vocem quedam mulier*]. *Inc.* Rem valde presumptuosam humane infirmitati. *Des.* deliciis affluamus ab omnimoda gloria tua. Amen.
5. (F. 29^v-51^v). [De laude S. Iohannis evangeliste]. *Inc.* Scripturus, donante Christo Ihesu Domino Deo nostro, de sanctissimo hominum. *Des.* in quo feliciter epularis per Christi misericordiam, participes efficiamur. Amen.
6. (F. 52-59). Tractatus pulcher de laude virginitatis, incerto auctore. = *PL.*, t. XXX, col. 163-75.
7. (F. 59-67^v). Epistola beati IERONIMI presbiteri ad Demetriadem virginem. = *PL.*, t. XXII, n. 130.
8. (F. 68-71). IERONIMUS ad Principiam de vita Marcelle. = *Ibid.*, n. 127.
9. (F. 71-73^v). IERONIMUS ad Pammachium de morte Pauline. = *Ibid.*, n. 66.

(1) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 241, decuria *tertia*.

10. (F. 73^v-79). Epistola sancti ac beatissimi IERONIMI presbiteri ad Rusticum monachum. = *Ibid.*, n. 122.

11. (F. 79-82). Ad Heliodorum monachum exhortatoria. = *Ibid.*, n. 14.

12. (F. 82^v-101^v). [Lettres de S. Jérôme]. = *Ibid.*, n. 45; t. XXX, col. 163; t. XXII, nn. 24, 122, 97, 145.

13. (F. 101^v). [De signis in fine mundi].

14. (F. 102-134^v). Tractatus domni BERNARDI abbatis Clarevalensis super psalmum *Qui habitat*. = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 185-254.

15. (F. 134^v-143^v). [Sermons de S. BERNARD]. = *Ibid.*, col. 147-49, 471-75, 645-47.

16. (F. 143^v-145^v). Deux autres sermons *de eucharistia*, et [de virtutibus].

17. (F. 145^v-152^v). De S. Bernardo proluxa oratio (1).

18. (F. 152^v). De hiis qui duxere coreos per annum integrum in Saxonia. = *BHL.*, n. 5156.

Les deux feuillets de garde collés sur les plats contiennent des fragments d'un traité de droit canon.

Parchemin; 152 feuillets; 0^m,245 × 0^m,17; XIV^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et bleues. F. 1, il y a la note : *Pertinet ad librariam canonicorum regularium vallis sancti Martini in lovanio*; de même, f. 75 : *Est liber hic sancti Martini lovaniensis*. Reliure ancienne; ais de bois recouverts de veau brun estampé; jolis fers; restes de fermoirs.

1031. (8327-42). — S. HIERONYMUS. Opera.

1. (F. 1-68^v). Liber de contemptu mundi. *Inc.* Optatus mihi dies advenerat, in quo visitante me divina elementia exoneratus sum ab ecclesiastici regiminis gravissima cura. *Des.* In manus tuas commendo spiritum meum.

2. (F. 69-103^v). [BURLAEUS]. Libellus de vita et moribus philosophorum (2).

3. (F. 104-120^v). Liber B. abbatis in orationem dominicam. *Inc.* Quia frequenter in evangelio monemur a Domino instanter. *Des.* quia prius nemo querebat. Hec Augustinus.

4. (F. 120^v-129). [De salutatione angelica]. *Inc.* Salute Mariam que multum laboravit in vobis. *Des.* quia in ipso vivificasti me. Hec Bernardus.

5. (F. 129-132). Omelia ORIGENIS super *Maria stabat ad monumentum foris plorans*.

(1) Ce sont les chapitres 7, 8, 13, 15, 16 du livre I du *Magnum exordium Cisterciensis Ordinis*. Rixheim, 1871.

(2) Sur cet ouvrage souvent imprimé, voir BRUNET, *Manuel du libraire*, 5^e éd., t. I, p. 1407-8.

Le feuillet 132^v est blanc.

6. (F. 133-145^v). Liber beati IERONIMI presbiteri de illustribus viris. = *PL.*, t. XXIII, col. 601.

7. (F. 145^v-154). Catalogus GENNADII Massiliensis de viris illustribus. = *PL.*, t. LVIII, col. 1053.

8. (F. 154-157^v). Cathalogus YSIDORI Hispalensis episcopi de viris illustribus. = *PL.*, t. LXXXIII, col. 1081.

9. (F. 158-163). Additamentum ad S. Isidori viros illustres. — Extraits de Julien de Tolède, de Braulio, de Félix.

10. (F. 157^v, 164-179^v). CASSIODORI senatoris in librum de institutionibus divinarum scripturarum. = *PL.*, t. LXX, col. 1105 sqq.

11. (F. 179^v-181). Decretalis epistola a GELASIO papa cum LXX episcopis eruditis conscripta. = *PL.*, t. LIX, col. 159-69.

12. (F. 181-181^v). Epistola beati IERONIMI de gradibus Romanorum.

13. (F. 181^v-182). Historia Iude et Thamar.

14. (F. 182-182^v). Nomina et interpretationes apostolorum. = *BHL.*, n. 652.

15. (182^v-205). [ISIDORUS]. Liber de naturis animalium. = *PL.*, t. LXXXII, col. 433-38, 423-33, 440-72.

16. (F. 205-207^v). [ISIDORUS]. De piscibus. = *Ibid.*, col. 450.

17. (F. 208-209^v). [ISIDORUS]. De arboribus. = *Ibid.*, col. 606.

18. (F. 209^v-215). [ISIDORUS]. = *Ibid.*, col. 397-419.

Parchemin; 215 feuillets; 0^m,27 × 0^m,18; XIV^e siècle, sauf les feuillets 158-163, qui ont été écrits sur papier au XVII^e siècle; les feuillets 104-132 sont à deux colonnes; quelques letrines rehaussées d'or; le traité *de animalibus* est orné de curieux dessins. F. 1, on lit: *Liber fratris Brunonis (?) ordinis Praedicatorum*, et f. 104: *Societatis Iesu Ant. D. P.*; au revers de la couverture, il y a l'ex-libris des anciens hollandistes * *MS. 202*. Reliure parchemin.

1032. (21188). — S. HIERONYMUS. Opera.

1. (F. 1). Index.

2. (F. 2-64^v). HIERONIMI presbiteri urbis Rome liber de hebraicis questionibus. = *PL.*, t. XXIII, col. 935 sqq.

3. (F. 64^v-65). Descriptio EUSEBII HIERONIMI de formulis hebraicarum litterarum. = *PL.*, t. XXX, col. 307.

4. (F. 65-85^v). S. HIERONIMI presbiteri liber interpretationis hebraicorum nominum. = *PL.*, t. XXIII, col. 771 sqq.

5. (F. 85^v-106). Liber locorum ab Eusebio Pamphilo Cesariensi episcopo prius quidem in greco edito, sed ab eodem Hieronimo in latinum diligentius traducto. = *Ibid.*, col. 859 sqq.

6. (F. 106^v-125^v). Expositio nominum divinatorum librorum.

Parchemin; 125 feuillets; 0^m,278 × 0^m,177; XIV^e siècle; initiales rouges et bleues. F. 1, on lit la note: *Pertinet hic liber magistro Henrico de Zoemeren sacre theologie*

professori. Si quis eum abstulerit vel hunc titulum deleverit anathema sit, et au haut du même feuillet : *Bibliothecae Parcensis*. Du reste, à l'intérieur du plat de la couverture, il y a la cote bien connue de cette bibliothèque : *I. theca VIII*. Reliure veau ; sur les deux plats, les armoiries de l'abbaye de Parc ont été grattées ; au dos, le titre doré : *Hieron. Opusc.*

1033. (66-76). — S. HIERONYMUS. Libri et epistolae contra diversas haereses.

1. (F. 2-2^v). Tabula librorum et epistolarum beati IHERONIMI presbiteri contra diversas hereses.

2. (F. 3-9^v). Altercatio Luciferiani et orthodoxi ab eodem beato IHERONIMO. = *PL.*, t. XXIII, col. 135 sqq.

3. (F. 9^v-15). Liber beati IHERONIMI presbiteri contra Helvidium hereticum. = *Ibid.*, col. 183 sqq.

4. (F. 15-33^v). Liber primus beati IHERONIMI contra Iovinianum hereticum. = *Ibid.*, col. 211 sqq.

5. (F. 33^v-46^v). Liber secundus beati IHERONIMI contra Iovinianum. = *Ibid.*, col. 281 sqq.

6. (F. 46^v-51^v). Epistola apologetica beati IHERONIMI ad Pammachium super libris contra Iovinianum. = *PL.*, t. XXII, col. 493-511.

7. (F. 51^v-52). Epistola beati IHERONIMI ad Pammachium secunda. = *Ibid.*, col. 511-512.

8. (F. 52-52^v). Epistola beati IHERONIMI ad Marcum presbiterum Calcide de hereticis. = *Ibid.*, col. 359-61.

9. (F. 52^v-53^v). Epistola beati IHERONIMI ad Dompnionem contra Vigilantium hereticum. = *Ibid.*, col. 511-16.

10. (53^v-54). Epistola beati IHERONIMI adversus blasphemias Vigilantii heretici. = *Ibid.*, col. 602-606.

11. (F. 54-55). Epistola beati IHERONIMI ad Riparium presbiterum adversus Vigilantium. = *Ibid.*, col. 906-909.

12. (F. 55-57^v). Epistola beati IHERONIMI ad Riparium et Desiderium presbiteros contra blasphemantem Vigilantium. = *PL.*, t. XXIII, col. 337 sqq.

13. (F. 57^v-58). Epistola beati IHERONIMI presbiteri ad Riparium presbiterum. = *PL.*, t. XXII, col. 1164-65.

14. (F. 58). Epistola beati IHERONIMI ad Ampronium. = *Ibid.*, col. 1165-66.

15. (F. 58). Epistola beati IHERONIMI ad Severum (1).

16. (F. 58-59). Tractatus beati IHERONIMI, presbiteri de diversis lepre generibus. = *Ibid.*, col. 245.

17. (F. 59-60). Epistola beati IHERONIMI ad Pammachium et Oceanum contra hereticos invectiva. = *Ibid.*, col. 239.

(1) VALLARSI, *Hieronimi opera*, t. XI, p. 363.

18. (F. 60). Epistola beati IHERONIMI ad Theophilum Alexandrinum episcopum prima. = *PL.*, t. XXII, col. 607.

19. (F. 60-60^v). Epistola beati IHERONIMI ad eundem secunda. = *Ibid.*, col. 754.

20. (F. 60^v). Epistola THEOPHILI ad beatum Iheronimum. = *Ibid.*, col. 755.

21. (F. 60^v). Epistola beati IHERONIMI ad Theophilum episcopum tertia. = *Ibid.*, col. 755.

22. (F. 60^v-61). Epistola beati IHERONIMI ad Theophilum episcopum quarta. = *Ibid.*, col. 812-13.

23. (F. 61). Epistola THEOPHILI ad beatum Iheronimum. = *Ibid.*, col. 756.

24. (F. 61-63). Epistola beati IHERONIMI ad Theophilum episcopum contra Iohannem episcopum Iherosolomitatum fautorem hereticorum. = *Ibid.*, col. 736-43.

25. (F. 63-72^v). Expositio symboli a RUFINO presbitero Aquilegie ad Laurentium presbiterum conscripta. = *PL.*, t. XXI, col. 335.

26. (F. 72^v-73^v). Epistola IHERONIMI ad Rufinum presbiterum Aquilegie de iudicio Salomonis. = *PL.*, t. XXII, col. 682-35.

27. (F. 73^v-74). Epistola beati IHERONIMI presbiteri ad Florentinum de horto amicicie. = *Ibid.*, 335-36.

28. (F. 74-75). Epistola beati IHERONIMI ad Rufinum presbiterum de Bonoso. = *Ibid.*, col. 332-35.

29. (F. 75-77^v). Epistola S. EPIPHANI Salamine Cipriorum episcopi ad Iohannem Iherosolimitanum episcopum ... a beato IHERONIMO presbitero translata. = *Ibid.*, col. 517-27.

30. (F. 77^v-80^v). Liber beati IHERONIMI ad Pammachium de optimo genere interpretandi. = *Ibid.*, col. 567-579.

31. (F. 80^v-81). Prologus RUFINI in apologeticum EUSEBI ... pro Origene. = *PL.*, t. XXI, col. 15.

32. (F. 81-94^v). Apologeticum pro Origene. = *Ibid.*, col. 15.

33. (F. 94^v-97). Opusculum apologeticum RUFINI presbiteri ad Macharium de adulteratione librorum Origenis. = *Ibid.*, col. 15.

34. (F. 97-97^v). Prefacio RUFINI presbiteri in quatuor libros periarchon Origenis. = *PL.*, t. XXII, col. 733-35.

35. (F. 97^v-98). Epistola beati IHERONIMI ad Rufinum. = *Ibid.*, col. 735-36.

36. (F. 98). Epistola PAMMACHI et Oceani ad beatum Iheronimum de transferendo libros periarchon Origenis post Rufinum. = *Ibid.*, col. 743.

37. (F. 98-100^v). Rescriptum beati IHERONIMI ad Pammachium et Oceanum de erroribus Origenis. = *Ibid.*, col. 743-52.

38. (F. 100^v). Epistola beati IHERONIMI ad Paulam. = *Ibid.*, col. 752-54.

39. (F. 100^v-120^v). RUFINI presbiteri ad Apronianum. = *PL.*, t. XXI, col. 541 sqq.

40. (F. 120^v-136). Liber ... beati IHERONIMI ad Pammachium et Marcellam. = *PL.*, t. XXIII, col. 397-456.

41. (F. 136-137). Apologia quam pro se misit RUFINUS presbiter ad Anastasium romane urbis episcopum. = *PL.*, t. XXI, col. 623-27.

42. (F. 137-146^v). Liber beati IHERONIMI adversus Rufinum. = *PL.*, t. XXIII, col. 457 sqq.

43. (F. 146^v-152). Liber beati IHERONIMI presbiteri adversus Rufinum contra erroneum dogma Origenis de resurrectione carnis. = *Ibid.*, col. 367-96.

44. (F. 152-152^v). Epistola beati IHERONIMI ad Pammachium et Marcellam de libro sancti Theophili Alexandrini episcopi contra errores Origenis. = *PL.*, t. XXII, col. 790-92.

45. (F. 152^v). Epistola beati IHERONIMI ad Tranquilleum quomodo Origenem legere debeat. = *Ibid.*, col. 606.

46. (F. 152^v-156). Epistola beati IHERONIMI ad Avitum. = *Ibid.*, col. 1059-72.

47. (F. 156-159^v). Epistola beati IHERONIMI presbiteri ad Thesiphontem. = *Ibid.*, col. 1147-61. On lit au bas du f. 156 cette note : *Caveat lector ne quicquam variet in hac epistola secundum exemplaria istius terræ quorum nonnulla in hoc loco comperi esse corrupta.*

48. (F. 159^v-186). Prologus dialogi sancti IHERONIMI Dialogus sancti IHERONIMI sub nominibus Attici et Critoboli. = *PL.*, t. XXIII, col. 495 sqq.

49. (F. 186-198). Liber apologeticus OROSII presbiteri contra Pelagium (1).

Le dernier feuillet de garde contient un fragment de psaume. Il y a de nombreuses notes marginales, avec les corrections données par ÉRASME, dans son *Opus epistolarum divi Hieronymi Stridonensis una cum scholiis*.

Parchemin; 198 feuillets, plus trois de garde; 0^m,41 × 0^m,285; XV^e siècle; deux colonnes; jolies initiales rouges et bleues; f. 3, il y a une superbe lettrine; ancienne pagination en chiffres romains i-cxcv; signatures A-I. F. 1. on lit cette note : *Liber monasterii canonicorum regularium vallis sancti Martini in lovanio*, puis une autre main a ajouté : *Ex parte F. Henrici Vrancx professi canonici regularis noni anno 1454, quique obiit primus iubilearius anno 1504*. F. 114, on lit aussi : *Est liber hic sancti Martini lovaniensis* (2). L'estampille rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 3 et 197^v. Reliure ancienne; ais

(1) Publié dans S. HAVERCAMPUS, *Pauli Orosii presbyteri Hispani adversus paganos historiarum libri septem ut et apologeticus contra Pelagium*, etc. Leyde, 1738, p. 588-634 et reproduit *PL.*, t. XXXI, col. 1173 sqq.

(2) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 217.

de bois recouverts de veau estampé; traces de clous et de fermoirs. Sur le plat de devant, à l'extérieur, une étiquette encadrée de cuivre et sous corne porte ce titre : *Epistole beati Iheronimi presbiteri contra diversos hereticos cum nonnullis aliorum opusculis.*

1034. (689-705). — S. HIERONYMUS, RUFINUS, S. IGNATIUS, ETC. Opera.

1. (F. 1-2^v). Tabula illorum que continentur in isto volumine.

2. (F. 3-24). Liber EUSEBII IERONIMI hebraycarum questionum. = *PL.*, t. XXIII, col. 935 sqq.

3. (F. 24-34). De mansionibus Ysraelitici populi. = *PL.*, t. XXII, col. 698-724.

4. (F. 34-39^v). Epistola IERONIMI ad Tesiphontem contra eos qui dicunt posse hominem esse sine peccato si velit. = *Ibid.*, col. 114-51.

5. (F. 39^v-76). Dialogus sancti IERONIMI nomine Attici et Critoboli. = *PL.*, t. XXIII, col. 495 sqq.

6. (F. 76^v-94). Liber apologeticus OROSU presbiteri. = *PL.*, t. XXXI, col. 1173 sqq.

7. (F. 94-116^v). Apologeticum sancti Pamphili martiris pro Origene de periarchon translatum a RUFINO de graeco in latinum.

8. (F. 116^v-120). Opusculum RUFINI de adulteratione librorum Origenis (1).

9. (F. 120-121). Prologus RUFINI presbiteri in primo liber periarchon Origenis presbiteri. = *PL.*, t. XXII, col. 733-35.

10. (F. 121-125). Pammachius et Oceanus Ieronimo presbitero. — Ieronimus Pammachio et Oceano. = *Ibid.*, col. 743-52.

11. (F. 125-157^v). Libri duo RUFINI contra Ieronimum. = *PL.*, t. XXI, col. 541 sqq.

12. (F. 157^v-182). IERONIMI ad Pammachium et Marcellam pro se contra accusatorem defensio. = *PL.*, t. XXIII, col. 397 sqq.

13. (F. 182-182^v). Epistola eiusdem (IERONIMI) ad eundem (Rufinum). = *PL.*, t. XXII, col. 600.

14. (F. 182^v-183^v). Apologia de sancta Trinitate quam pro se misit RUFINUS presbiter ad Anastasium romane urbis pontificem. = *PL.*, t. XXI, col. 623-27.

15. (F. 183^v-198^v). Liber IERONIMI adversus Rufinum. = *PL.*, t. XXIII, col. 457 sqq.

16. (F. 198^v-207). Liber [IERONIMI] contra dogma Origenis de resurrectione carnis. = *Ibid.*, col. 367-96.

17. (F. 207-207^v). Epistola CHROMACHII et HELIODORI ad Ieronimum de nataliciis sanctorum. — Rescriptum IERONIMI. = *PL.*, t. XXX, col. 297.

(1) Au sujet de ces deux opuscules de Rufin, cf. *PL.*, t. XXI, col. 15.

18. (F. 207^v-208^v). [Nomina apostolorum]. = *BHL.*, n. 652.

19. (F. 208^v-233^v). [GENNADIUS, De viris illustribus]. = *PL.*, t. LVIII, col. 1053.

20. (F. 233^v-254^v). IGNATIÏ epistolae ad Mariam, ad Trallianos, ad Magnesianos, ad Tarcenses, ad Philippenses, ad Philadelphenses, ad Smyrnenses, ad Policarpum, ad Antiocenses, ad Hyronem, ad Ephesios, de Smyrna per Ephesios (1).

21. (F. 255-260). Passio sancti Ignatii martiris. = *BHL.*, n. 4258.

22. (F. 260^v). Laus HIRONIS in S. Ignatium (2).

23. (F. 260^v-262^v). Epistola POLICARPI martyris (3).

Papier, au filigrane de la lettre *P* ; 262 feuillets, plus neuf de garde au commencement et dix à la fin ; 0^m,292 × 0^m,20 ; XV^e siècle ; deux colonnes ; initiales rouges et bleues ; ancienne pagination r-clxii. F. 3, on lit : *Coll. Societatis Iesu Lovanii* ; sur le second feuillet de garde en tête, il y a la cote *F. 3*. Demi-reliure moderne ; dos en maroquin brun, avec le titre doré : *B^u Hieronymi opera varia cum aliis opusculis Gennadii, b^u Ignatii Antiocheni, Hironis et beati Polycarpi, XV saec.* ; plus bas, le chiffre couronné de Léopold I^{er}.

1035. (2037-48). — S. HIERONYMUS. Opera.

1. (F. 1^v). Table des matières.

2. (F. 2-26). Ordo vivendi Deo eximii doctoris IHERONIMI ad Eustochium sacram Deo virginem. = *PL.*, t. XXX, col. 391 sqq.

3. (F. 26-26^v). Regula aurea. *Inc.* Silentium diliges. *Des.* obsequiosum in omnibus exhibere.

4. (F. 26^v). [De superbia].

5. (F. 27-46). Prologus sancti IHERONIMI presbiteri in regulam sancti Pachomii abbatis. — Capitula. — Praecepta patris Pachomii. = *PL.*, t. XXIII, col. 65 sqq.

Les feuillets 46^v-47 sont blancs.

6. (F. 47^v-72). Epistola beati BERNARDI ad fratres de monte Dei. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 307 sqq.

7. (F. 73-75). Regula sanctorum patrum SERAPIONIS et MACHARII, PAFNUTII et alterius MACHARII. = *PL.*, t. CIII, col. 435-42.

8. (F. 75^v-76). Epistola beati MACHARII data ad monachos. = *Ibid.*, col. 451.

9. (F. 76^v-110). Liber magistri RICARDI DE SANCTO VICTORE de statu interioris hominis post lapsum. = *PL.*, t. CXCVI, col. 1115 sqq.

10. (F. 111-127). Tractatus WILHELMI SANCTI THEODORICI de dignitate amoris. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 379 sqq.

11. (F. 128-157). Liber seu tractatus de tribus votis substantia-

(1) Voir plus haut, pp. 4, 88.

(2) Cf. supra, p. 88, n. 24.

(3) LIGHTFOOT, *The apostolic Fathers*, t. II, p. 901 sqq.

libus monasticis quem composuit ... HENRICUS [DE COESVELD] prior Cartusiensium prope montem sancte Gertrudis in Hollandia (1).

12. (F. 158-164^v). Tractatus de laude doctrine salubris venerabilis magistri IOHANNIS GERSON cancellarii Parisiensis (2).

13. (F. 164^v). Responsio prefati auctoris super questione utrum liceat alicui scribere notabiliter in festivis diebus (3).

14. (F. 165-169). Institutiones, dilatationes et confirmationes sanctorum pontificum romanorum URBANI quarti, MARTINI quinti et EUGENII quarti super festivitate excellentissimi et dignissimi sacramenti corporis et sanguinis Christi (4).

15. (F. 169^v-177^v). Tractatus domni PETRI DE YLIACO episcopi Cameracensis de duodecim honoribus sancti Ioseph (5).

16. (F. 178-181). Vita sancte Berlendis virginis. = *BHL.*, n. 1184.

17. (F. 182-186). Sermo in solempnitate gloriose virginis Christi Gertrudis. *Inc.* Quotiens de virginibus recitatur sermo. *Des.* et iocunditatis eterne regnum possideas, ut regnes... Amen.

Parchemin; 186 feuillets; 0^m,235 × 0^m,165; XV^e siècle; quelques capitales ornées. F. 1^v et 186, on lit : *Iste liber pertinet monasterio Rubeevallis in Zonia iuxta Bruxellam*. L'estampille rouge *F. R.* de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 2 et f. 186. Demi-reliure moderne; dos en maroquin brun avec les titres dorés des différents traités; puis, plus bas, le chiffre couronné de Léopold I^{er} (6).

1036. (19259-65). — S. HIERONYMUS. Opera.

1. (F. 1). Note sur ce manuscrit par le B^{ou} DE REIFFENBERG.

2. (F. 2-6). Divers extraits très courts *ex chronica martiniana*. — *Epitahalamium mysticum theologi et theologie sub typo Iacob et Rachel*. Les feuillets 6^v-8^v sont blancs.

3. (F. 9-39). Physiologus magistri THEOBALDI doctoris et episcopi de naturis XII animalium (7).

4. (F. 39-40^v). Courts poèmes.

a) *Inc.* Si fortuna modo gravis est conversa repente.
Des. Multaque contingunt quo mediante mala.

(1) Cf. FABRICIUS-MANSI, *Bibl. lat. med. et inf. act.*, t. II, p. 213; PETREIUS, *Bibliotheca Cartusiana*, p. 126-27.

(2) Voir ELLIES DU PIN, *Ioannis Gersonii opera omnia*, t. II, col. 694-703.

(3) *Ibid.*, col. 703.

(4) Cf. pour ces pièces, CHAPEAVILLUS, *Gesta pontificum Leodiensium*, t. II, p. 657.

(5) Voir L. SALEMBIER, *Petrus de Alliaco*, p. XLII.

(6) Voir une description de ce manuscrit dans *Cat. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. I, p. 327.

(7) Voir sur ce traité HAIN, *Repertorium bibliographicum*, t. II, p. 405 sqq. et THIERFELDER, *Ein Handschrift des Physiologus Theobaldi*, dans SERAPEUM, t. XXIII, 1862, pp. 225-31, 241-49.

b) [De mensa].

Inc. Si vis servire, tu debes plurima scire.

Des. Hic residet quasi sus et surgit velut asellus.

c) Nota pulchra de medicis.

Inc. Vita brevis, morbus gravis est et caput acutum.

Des. Sed Deus est medicus nomine reque simul.

5. (F. 41-67^v). ORIGÈNES de cantico canticorum cum epistola IHERONIMI presbiteri ad Damasum. = *PL.*, t. XXIII, col. 1117 sqq.

6. (F. 67^v). Enigma.

Bos portat spinam de qua capit auca rapinam,

Quod capit ipsa bovi dat vitulo vel ovi.

7. (F. 68-70^v). Speculum monachorum beati BERNARDI abbatis. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 1175-78.

8. (F. 71-75). Liber beati BERNARDI abbatis de honestate vite. = *Ibid.*, col. 1167.

9. (F. 75^v-81^v). Beati IHERONIMI cardinalis presbiteri ad Rusticum (1).

10. (F. 82-86). Oratio beati AUGUSTINI episcopi sumpta ex libro eius qui *Speculum* vel *Manuale* dicitur.

11. (F. 86-88). Oratio EIUSDEM ad Deum et ad omnes sanctos.

12. (F. 88-88^v). Sentences, en vers.

13. (F. 89-103). Tractatulus quidam perutilis studiosis scolaribus.
Inc. Ut iuvenes scolares scire valeant qualiter semetipsos habitabunt.
Des. Et in hoc finitur presens tractatulus qui editus est amore ad laudem Domini nostri Amen.

14. (F. 103-104). Vers, entre autres : *Notabile fidei catholice de Salomone.*

Inc. De Salomone trado quid dicat catholicorum.

Des. Asserunt hunc omnes salutem promeruisse.

14. (F. 105-126^v). AURELI PRUDENTII CLEMENTIS sichomarchia (*sic*), id est pugna anime. = *PL.*, t. LX, col. 9 sqq.

15. (F. 126^v-127). Vers, en latin et en flamand.

A noter l'indication météorologique suivante :

Data terremotus.

Terruit tellus occupata frugibus altis

Augusti furie vigilia Bartholomei,

c'est-à-dire 23 août 1504.

Papier; 127 feuillets; 0^m,14 × 0^m,10; XVI^e siècle (1513), car f. 39, on lit : *Anno MV^eXIII, VIII marcii*; f. 67^v : *Anno MV^eXIII die XVIII ianuarii*; f. 75 : *Anno*

(1) Absolument apocryphe; préface à la collection des prières connues sous le nom de Psautier de S. Jérôme.

Domini M^oV^eXIII, XXX^a ianuarii, et f. 126^v : *Explicit... M^oV^eXIII, V^{ta} ianuarii*. Ce volume provient de Bethléem, près Louvain, car au verso de la couverture, il y a l'étiquette : *Beth. Lov.* Ce manuscrit a été acquis, à une vente à Gand, le 31 janvier 1844, pour fr. 0,83. Très jolie reliure ancienne restaurée ; ais de bois recouverts de veau brun estampé ; fers très élégants caractéristiques de l'atelier de Bethléem.

1037. (18716-19). — S. HIERONYMUS. De viris illustribus.

1. (F. 1-17). Liber HIERONYMI presbiteri de illustribus viris. = *PL.*, t. XXIII, col. 601.

2. (F. 17-28). [GENNADIUS. De scriptoribus ecclesiasticis]. = *PL.*, t. LVIII, col. 1053.

3. (F. 28-32^v). Beati YSIDORI Ispalensis episcopi liber de illustribus viris. = *PL.*, t. LXIII, col. 1081.

4. (F. 32^v-45). Liber SIGEBERTI Gemblacensis de viris illustribus. = *PL.*, t. CLX, col. 547.

5. (F. 45-49). [HENRICUS Gandavensis : supplementum ad catalogum Sigeberti] (1).

Sur le plat intérieur de la couverture, note du B^{on} DE REIFFENBERG au sujet de ce manuscrit.

Parchemin ; 49 feuillets ; 0^m,252 × 0^m,172 ; XIV^e siècle ; initiales rouges et bleues ; titre courant en rouge. Ce volume provient de l'abbaye de Parc, car sur le plat intérieur, il y a la cote *I. theca VIII*, et les armoiries sont grattées sur les deux plats extérieurs. Plus tard, ce manuscrit a appartenu à Ed. Lavalleye à Gand, et à la vente de ses livres, le 9 mai 1842, la Bibliothèque royale l'a acquis pour fr. 26,40. Reliure veau ; au dos, le titre doré : *Trac. viro. illus.*

1038. (19623-26). — S. HIERONYMUS. De viris illustribus.

1. (F. 1). Vers.

Inc. Temptas apis flores ubi gratas sentis odores.

Des. Quam meditando queas mentis purgare tenebras.

2. (F. 1^v-20). Liber HIERONYMI presbiteri de viris illustribus. = *PL.*, t. XXIII, col. 601.

3. (F. 20-32). Liber GENNADI episcopi de viris illustribus = *PL.*, t. LVIII, col. 1053.

4. (F. 32-36). Liber YSIDORI episcopi de viris illustribus. = *PL.*, t. LXIII, col. 1081.

5. (F. 36^v-39). Decretale in urbe Roma ab Ormisda papa editum de scripturis divinis. = *PL.*, t. LIX, col. 166.

6. (F. 39-45). Excerpta de libris AUGUSTINI AURELI de gratia et libero arbitrio et de correptione.

7. (F. 45-62^v). Exhortatio AUGUSTINI ut amor noxius relinquatur. — Courts extraits, cf. *PL.*, t. XXXIX, col. 1654 sqq. *Des. mutil.* Quapropter saluberrime

(1) Voir l'édition de Cologne de 1580, cf. *PL.*, t. CLX, col. 546.

Parchemin; 62 feuillets; 0^m,215 × 0^m,144; XIII^e siècle; quelques capitales en couleurs. F. 1, on lit: *Liber... stabulensis*. D'ailleurs, ce volume fut acquis le 25 janvier 1847, à Gand, à la vente des manuscrits de Stavelot pour fr. 95 (1). Demi-reliure parchemin.

1039. (7571). — S. HIERONYMUS. Regula S. Pachomii.

1. (F. 1-3^v). Miraculum de iconia B. Mariae Constantinopolitana.
2. (F. 3^v-4^v). Alia miracula de quadam muliere (2).
3. (F. 5-5^v). Praefatio HIERONYMI de praeceptis B. Pachomii patris nostri (3).
4. (F. 6-11^v). Exordium praeceptorum patris nostri PACHOMII (4).
5. (F. 12-15). Praecepta et instituta patris PACHOMII (5).
6. (F. 11^v, 16-17). Eiusdem patris nostri PACHOMII praecepta atque iudicia (6).
7. (F. 18-31). Epistolae S. PACHOMII (7).
8. (F. 31-33^v). Verba per litteras patris nostri Pachomii in lingua abscondita de his quae futura sunt (8).
9. (F. 34-35). Epistola patris nostri PACHOMII ad omnia monasteria de Pascha (9).

Papier; 35 feuillets; 0^m,332 × 0^m,21; XVII^e siècle. Ce volume est un recueil provenant des anciens bollandistes et formé par le P. Rosweyde. Demi-reliure, dos en maroquin rouge.

1040. (8640-42). — HENRICUS GRAVIUS. Notae in Hieronymum.

Ce volume se compose de trois parties.

La première comprend *S. et beatissimi Hieronymi Stridonensis presbyteri hierosolymitani de illustribus ecclesiae doctoribus ad sua usque tempora libellus. Helmaestadi, excudebat Iacobus Lucius anno MDCXI.*

La troisième est *S. Gennadii Massiliensis presbyteri de illustribus viris libellus*. Le premier feuillet ayant été arraché, il n'y a plus d'indication ni de lieu ni de date d'impression.

(1) Voir *Catalogue d'une belle collection de livres et de manuscrits précieux sur velin*, Gand, 1847, p. 11, n. 41.

(2) Au sujet de ces miracles de la Vierge, voir MUSSAFIA, *Studien zu den mittel-atterlichen Marienlegenden*, fasc. I, Wien, 1887, p. 28, n. 33 et p. 53, n. 110^a.

(3) LUCAE HOLSTENII *Coder regularum*, t. I, p. 25-26.

(4) *Ibid.*, p. 26-33.

(5) *Ibid.*, p. 33-34.

(6) *Ibid.*, p. 34.

(7) *Ibid.*, p. 38 sqq.

(8) *Ibid.*, pp. 45, 46.

(9) *Ibid.*, p. 46-47.

Entre ces deux imprimés sont intercalés seize feuillets de notes manuscrites sur certaines œuvres de S. Jérôme. Elles portent ce titre : HENRICI GRAVII *Noviomagi ordinis Praedicatorum sua manu* (1).

Papier; 16 feuillets pour la partie manuscrite; 0^m,215 × 0^m,17; XVII^e siècle. Ce volume provient de l'ancienne bibliothèque des bollandistes, car leur ex-libris * MS. 27 se trouve au premier feuillet. Demi-reliure, dos en basane rouge.

1041. (H. 1635). — S. AUGUSTINUS. Confessiones.

1. (F. 1^v). *Retractatio confessionum AURELI AUGUSTINI Yponensis episcopi*. = *PL.*, t. XXXII, col. 632.

2. (F. 2-126). [S. AUGUSTINI confessionum libri i-xiii]. = *PL.*, t. XXXII, col. 660 sqq.

Parchemin; 126 feuillets; 0^m,341 × 0^m,23; XII^e siècle (1156), car f. 126, on lit : *Hic liber scriptus est anno ab incarnatione Domini millesimo centesimo quinquagesimo sexto*. Deux colonnes; très jolies lettrines en toutes couleurs; signatures a-m. Ce volume provient de l'abbaye de Saint-Ghislain, où il était coté DD (2). Plus tard, il appartient à J. de Meyer (3), à la vente des livres duquel il fut acquis par la Bibliothèque royale, en 1869, pour 187 francs. Reliure du XVII^e siècle, veau raciné.

1042. (9521-22). — S. AUGUSTINUS. Confessiones.

1. (F. 1-92^v). *AURELI AUGUSTINI confessionis libri*. = *PL.*, t. XXXII, col. 660 sqq.

2. (F. 92^v-106^v). *Exhortationum liber EIUDEM* (4) *ad quendam comitem carissimum sibi*. = *Ibid.*, t. XCIX, col. 197 sqq.

3. (F. 106^v-107^v). *Oratio devota*. = *Ibid.*, col. 279-82.

4. (F. 108-115^v). *Liber beati Augustini de decem cordis*. = *Ibid.*, t. XXXVIII, col. 75-91.

Parchemin; 115 feuillets; 0^m,31 × 0^m,197; XII^e siècle; deux colonnes; quelques curieuses lettrines. F. 1, il y a la cote MM, 3-9 et la note : *Liber monasterii sancti Laurentii prope leodium*. Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré qui est aussi à l'intérieur sur une étiquette de maroquin rouge : *Augustini confessiones, etc.*; avec les armes de Belgique et l'inscription *Bibl. royale*.

1043. (4699-703). — S. AUGUSTINUS. Confessions et autres traités de divers auteurs.

1. (F. 1-2). Table alphabétique des matières.

Les feuillets 2^v-3 sont blancs.

(1) Sur Henri Gravius, cf. QUÉTIF-ECHARD, *Scriptores ordinis Praedicatorum*, t. II, p. 142; FOPPENS, *Biblioth. belg.*, p. 448-49.

(2) Cf. A. PONCELET, S. J., *Annales de l'abbaye de Saint-Ghislain*, p. 371.

(3) *Catalogue de la bibliothèque de feu M. Jean de Meyer*, n. 91.

(4) En fait de S. Paulin de Nole.

2. (F. 2^v). *Retractatio in libris confessionum sancti AUGUSTINI episcopi.* = *PL.*, t. XXXII, col. 632.

3. (F. 2^v-121). [Libri confessionum S. AUGUSTINI]. = *Ibid.*, col. 660.

4. (F. 121^v-162^v). Didascalion HUGONIS de studio legendi. = *PL.*, t. CLXXVI, col. 739.

5. (F. 162^v-170^v). Liber compositus a magistro PETRO LANGOBARDO qui intitulatur *quare*.

6. (F. 170^v-171^v). Versus magistri GOBERTI Laudunensis canonici de statu clericorum (1).

7. (F. 172-173^v). Fragments d'antiphonaire, avec neumes.

Parchemin; 174 feuillets; 0^m,34 × 0^m,24; XII^e siècle; deux colonnes; superbes letrines en toutes couleurs; ancienne pagination 1-cxviii, signatures 1-xviii. F. 174^r, on lit: *Liber sancte Marie de Villari*. Reliure veau raciné, avec le titre doré: *Retracta. Confessio. S. Augusti*.

1044. (II. 2511). — S. AUGUSTINUS. Confessiones.

1. (F. 1-113). AUGUSTINUS. Confessionum liber. = *PL.*, t. XXXII, col. 660 sqq.

2. (F. 113-114). AURELI AUGUSTINI episcopi ad Bonifacium. = *PL.*, t. XXXIII, col. 854-57.

3. (F. 114-114^v). Ad Bonifacium de reparatione lapsi. = *Ibid.*, col. 812-13, n. 45-46.

4. (F. 114^v). AUGUSTINUS ad Meritum. Extrait. = *Ibid.*, col. 297, n. 2.

5. (F. 114^v-115). AUGUSTINUS ad Donatistas. Extrait. = *Ibid.*, col. 483, cap. V, n. 16.

Parchemin; 115 feuillets; 0^m,268 × 0^m,177; XIII^e siècle; signatures 1-xiii. F. 1, il y a les notes suivantes: *Liber S. Petri in Angia.* — *Bibliotheca Weissenaviensis*. Au verso de la couverture, il y a l'ex-libris: *Ex bibliotheca Henrici Dominici van den Nieuwenhuysen, Mechliniensis presbiteri*. Ce manuscrit fut acquis en 1900, à une vente chez Fiévez, à Bruxelles, pour 220 francs. Reliure, peau de truie estampée; fermoirs en cuivre.

1045. (1949). — S. AUGUSTINUS. Confessiones.

1. (F. 1-2). Tabula super libros confessionum Augustini.

2. (F. 3-130). S. AUGUSTINUS. Libri confessionum XIII. = *PL.*, t. XXXII, col. 660 sqq.

Parchemin; 130 feuillets; 0^m,26 × 0^m,17; XV^e siècle; anciennes signatures a-qq. F. 2^v, il y a la note: *Liber canonicorum regularium in Korsendonck*. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris, R. F. se trouve ff. 3, 129^v et 130. Reliure ancienne, ais de bois recouverts de peau de truie estampée.

(1) Voir FABRICIUS-MANSI, *Bibl. lat. med. et inf. act.*, t. III, p. 66. Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 240.

1046. (H. 2526). — S. AUGUSTINUS. Epistolae.

1. (F. 1). Index.

2. (F. 1^v-189). S. AURELIU AUGUSTINI Hypponenſis epiſcopi epiſto-
larum liber. = *PL.*, t. XXXIII, nn. 22, 60, 227, 48, 192, 249, 203, 220,
244, 171, 170, 197, 198, 199, 236, 86, 212, 210, 160, 161, 163, 159, 162,
164, 41, 243, 92, 119, 120, 191, 194, 18, 20, 19, 1, 32, 5-9, 14, 13, 10, 4,
214, 215, 154, 155, 152, 153, 117, 118, 121, 149, 90, 91, 23, 173, 130,
111, 257, 96, 259, 100, 97, 265, 244, 101, 267, 99, 58, 110, 77, 78, 122,
244, 260, 261, 264, 188, 145, 248, 205, 33, 21, 38, 232, 242, 3, 141, 46,
47, 258, 131, 139, 134, 133, 176, 49, 43, 87, 44, 53, 105, 89, 34, 35,
52, 76, 88, 51, 238-240, 150, 228, 92, appendix 1-16, puis nn. 148, 262,
196, 189, 213, 132, 135, 137, 136, 143, 233, 234, 235, 98, 25, 27, 38,
31, 24, 32, 109, 26, 16, 17, 127, 102, 147, 190, 54, 55, 169, 178, 217,
250, 204, 156, 157, 186, 211, 185, 187, 61, 36, 125, 126, 256, 124, 247,
251, 114, 113, 115, 116, 253-255, 64, 65, 56, 69, 83, 63, 62, 267, 70,
218, 208, 268, 85, 59, 57, 84, 252.

Parchemin; 189 feuillets; 0^m,49 × 0^m,30; XII^e siècle; deux colonnes; superbes
letrines en toutes couleurs. F. 1^v, une jolie miniature représentant S. Augustin;
signatures 1-xxiii. Au revers de la couverture et f. 1^v, il y a l'ex-libris: *Sir*
T. P. Middle Hill, 3524. Ce volume a été acquis par la Bibliothèque royale en
1900. Reliure veau brun sur ais de bois; tranche rouge.

1047. (272-74). — S. AUGUSTINUS. Epistolae.

1. (F. 1). Témoignages de divers auteurs sur S. Augustin.

2. (F. 2-4^v). Annotatio epistolarum Augustini episcopi.

3. (F. 5-299). Epistolare beati AUGUSTINI episcopi. = *PL.*, t. XXXIII,
lettres nn. 132, 135, 137, 136, 138, 92, 143, 28, 40, 47, 48, 39, 74, 73,
72, 71, 75, 81, 82, 41, 233-235, 98, 25, 27, 30, 21, 24, 32, 119, 243, 26,
16, 17, 127, 214, 215, 93, 154, 155, 153, 117, 118, 149, 91, 23, 173, 130,
22, 227, 48, 192, 249, 203, 220, 244, 171, 170, 236, 86, 212, 210, 160,
161, 163, 119, 191, 194, 18, 20, 19, 1, 32, 2, 5-9, 14, 13, 10, 4, 111, 257,
96, 97, 259, 100, 265, 197, 144, 101, 267, 99, 58, 110, 77, 78, 222, 245,
261, 260, 264, 188, 145, 248, 120, 33, 21, 38, 112, 232, 242, 3, 141, 46,
47, 258, 131, 133, 176, 49, 43, 87, 44, 53, 105, 89, 34, 35, 52, 76, 88, 51,
56, 238-241, 150, 228, 92, appendix nn. 1-16, puis nn. 148, 262, 196,
80, 189, 213, 190, 54, 55, 169, 157, 217, 250, 120, 204, 156, 157, 186,
211, 61, 36, 125, 126, 256, 124, 247, 251, 114, 113, 115, 116, 253-255,
64, 65, 56, 69, 83, 63, 62, 267, 70, 218, 208, 268, 85, 59, 58, 84, 252, 166,
167, 172, 195.

4. (F. 299). Epistola IHERONIMI ad Alipium et Augustinum. = *Ibid.*,
n. 202.

Parchemin; 299 feuillets; 0^m,36 × 0^m,25; XV^e siècle (1455), car on lit f. 299:
Anno Domini M^occclv^o die VI^a novembris finitum est hoc volumen per manus fra-

tris nostri Livini de Mechlinia (1), *oretis pro eo propter Deum*; deux colonnes; nombreuses notes marginales. Sur le plat de la couverture, une étiquette sous corne avec encadrement de cuivre porte ce titre : *Epistole beati Augustini episcopi in Korsendonck*; f. 1, il y a la cote *W. 3*, et f. 1^v : *Liber canonicorum regularium in Korsendonck*. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris *R. F.* se trouve f. 5 et f. 299^v. Ancienne reliure peau de truie; traces de fermoirs et de coins en cuivre.

1048. (5574). — S. AUGUSTINUS. Epistolae.

1. (F. 1). TITRE. D. Aurel. Augustini aliorumque quorundam epistolae duodecim in bibliotheca Vaticana repertae neque hactenus typis excusae.

2. (F. 1^v). Index epistolarum.

3. (F. 2-9). Table alphabétique des matières.

4. (F. 10-12^v). Epistula sancti AUGUSTINI ad Caelestinum papam. = *PL.*, t. XXXIII, col. 953.

5. (F. 12^v-14). Ad Oceanum de origine animarum. = *Ibid.*, col. 778.

6. (F. 14). Ad Valerium. = *Ibid.*, col. 88.

7. (F. 14-15^v). Ad Sapidam virginem. = *Ibid.*, col. 1082.

8. (F. 15^v-18). AUGUSTINUS Alipio. = *Ibid.*, col. 474.

9. (F. 18-23^v). Ad sanctam Albinam. = *Ibid.*, col. 476.

10. (F. 23^v-24^v). AUGUSTINUS sancte Albine, Piniano et Melanie. = *Ibid.*, col. 471.

11. (F. 24^v-28). PAULINUS et THERASIA Augustino. = *Ibid.*, col. 347.

12. (F. 28-32). AUGUSTINUS Paulino et Therasiae. = *Ibid.*, col. 351.

13. (F. 32-33). AUGUSTINUS et ALIPIUS ad Castorium. = *Ibid.*, col. 238.

14. (F. 33-33^v). Ad Cristinum familiaris. = *Ibid.*, col. 1070.

15. (F. 33^v-34). Ad Celerem. = *Ibid.*, col. 223.

16. (F. 34-35). Ad Xantippum de Abundantio presbytero. = *Ibid.*, col. 234.

17. (F. 35-35^v). Ad Cresconium. = *Ibid.*, col. 428.

18. (F. 35^v-36). Ad Rusticum. = *Ibid.*, col. 1070.

19. (F. 36). Ad Nobilium episcopum. = *Ibid.*, col. 1086.

20. (F. 36-39). Ad Iohannem episcopum contra librum Pelagii. = *Ibid.*, col. 774.

21. (F. 39-40). Ad Lampadium de fato. = *Ibid.*, col. 1061.

22. (F. 40-43^v). Ad Ceretium episcopum. = *Ibid.*, col. 1034.

Les feuillets 44-48^v sont blancs.

23. (F. 49-50^v). NECTARIUS Augustino. = *Ibid.*, col. 386.

24. (F. 50^v-59^v). AUGUSTINUS Nectario. = *Ibid.*, col. 388.

(1) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 47.

Papier; 59 feuillets, plus trois de garde en tête et deux à la fin du volume 0^m,315 × 0^m,22; XVIII^e siècle. F. 1, on lit cette note : *Domus Professae Societatis Iesu Antverpiae, 1663, dono P. Gerardelli*. Reliure parchemin.

1049. (II. 972). — S. AUGUSTINUS. Liber quaestionum.

1. (F. 1-3^v). Capitula libri sequentis numero centum XXVII.

2. (F. 3^v). Versus.

Hoc cui syroma placet, placeant simul hec maronia :
Qui legitis flores et humi nascentia fraga,
Frigidus, o pueri, fugite, hic latet anguis in herba.

3. (F. 4). Autres vers.

Augustine pater, datur hic sicophante character
Pondere pervacuus, proh dolor, esse tuus;
Tuque leoninus confingeris hic asininus,
Hac vice qua fronesis secma capit frenesis.

4. (F. 3^v-169). Liber questionum sancti AUGUSTINI veteris et novi testamenti numero CXXXVII. = *PL.*, t. XXXV, col. 2207-2386.

Il y a un grand nombre de notes marginales écrites au XI^e siècle.

Plusieurs *Quaestiones* n'ont pas dans ce volume le même ordre que dans les éditions. Voici la concordance :

| ÉDITIONS. | | Ms. II. 972. |
|---------------|---|--------------|
| N. LXXII-IV | = | LXXVI-VIII |
| N. LXXV | = | LXXIX |
| N. LXXVI-VIII | = | LXXII-III |
| N. LXXIX | = | LXXV |

A remarquer aussi que dans la *Quaestio 105* (*PL.*, col. 2348, lin. 50) les mots *non quaerent* sont immédiatement suivis de *immutari negatur* (col. 2357, lin. 69). De même après *quem* de la *quaestio 118* (col. 2362, lin. 45) suit immédiatement le passage *latibula* de la *quaestio 115* (col. 2348, lin. 50).

5. (F. 169). Vers du scribe.

Ut gaudere solet fessus iam nauta labore
Desiderata diu litora nauta videns,
Haud aliter scriptor optato fine libelli
[Laeta]tur viso, lassus et ipse quidem.

Parchemin; 109 feuillets; 0^m,257 × 0^m,165; X^e siècle; signatures 1-xxi. L'ordre des cahiers II et III, XIII et XIV a été interverti par le relieur. F. 3^v, on lit : *Liber Sancti Gilleni* (1), et en effet, au verso du premier plat de la couverture, se trouve sur une étiquette la cote ZZZ de cette bibliothèque. Plus tard, ce volume a appartenu à Sir Thomas Phillipps, n. 363; la Bibliothèque royale l'a acquis en 1888 pour

(1) Cf. A. PONCELET, S. J., *Annales de l'abbaye de Saint-Ghislain*, p. 394.

fr. 250. Reliure moderne, veau brun estampé avec l'inscription : *Regia Bibl. Belgica* ; fermoirs en cuivre ciselé.

1050. (10543-44). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1-20^v). [Liber hippiatricus].

2. (F. 20^v). Carmen pro verme. *Inc.* Mortuus est iste vermis, Domine. *Des.* in loco ubi natus es arescas.

3. (F. 21-75). AUGUSTINI de mirabilibus novi et veteris testamenti. = *PL.*, t. XXXV, col. 2149.

Papier; 75 feuillets, plus huit de garde; 0^m,205 × 0^m,142; XV^e siècle. L'estampille rouge de la Bibliothèque impériale de Paris se trouve f. 21 et f. 75^v. Demi-reliure maroquin rouge; au dos, les titres dorés des deux traités et le chiffre couronné de Léopold I^{er}.

1051. (10791). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1^v). [Retractatio in librum sequentem]. = *PL.*, t. XXXII, col. 640.

2. (F. 1^v-137). [S. AUGUSTINUS. De Genesi libri duodecim]. = *PL.*, t. XXXIV, col. 245 sqq.

Parchemin; 137 feuillets; 0^m,29 × 0^m,205; XI^e siècle; très belles lettres; signatures *A-R*. F. 2, il y a une très curieuse miniature au trait représentant l'écrivain sacré inspiré par un ange. F. 1, on lit : *Liber sancti Laurentii prope Leodium*. L'estampille rouge, avec faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris, se trouve f. 2 et f. 137^v. Reliure moderne veau raciné; au dos, le titre doré : *Augustinus de Genesi XII saec.* reproduit sur une étiquette en maroquin rouge; en dessous, les armes de Belgique et l'inscription *Bibl. royale*.

1052. (490-94). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1^v). Table.

Le feuillet 2 est blanc.

2. (F. 3-92^v). AURELI AUGUSTINI de Genesi ad litteram. = *PL.*, t. XXXIV, col. 245 sqq.

3. (F. 93-119^v). [EIVSDEM] liber retractationum. = *PL.*, t. XXXII, col. 584 sqq.

4. (F. 119^v-121^v). [Epistole S. Augustini]. — A savoir les lettres nn. 221-224, *PL.*, t. XXXIII, col. 997-1002.

5. (F. 121^v-132). De diversis hereticis. = *PL.*, t. XLII, col. 21 sqq.

6. (F. 132-133). Electio Heraclii* venerabilis presbiteri ad succedendum in episcopatu beato Augustino. = *PL.*, t. XXXIII, col. 966-68.

Parchemin; 133 feuillets, plus un de garde; 0^m,35 × 0^m,225; XIV^e siècle; deux colonnes. F. 1^v, on lit : *Sum Augustini Hunaei Mechliniani theologi lovaniensis*. — *Ex dono M. A. Hunnaei sum bibliothecae Societ. Iesu Lovanij*, et f. 3 : *Coll. Societatis Iesu Lovan. M. B.* Reliure ancienne, veau raciné et estampé, très jolis fers.

1053. (5565). — S. AUGUSTINUS. Tractatus in Iohannem.

1. (F. 1). [Extrait]. *Inc. mutil.* ... propter radicem videlicet Abrahamae. *Des.* Omnem fraternitatem que vobiscum in Christo est ego et qui mecum sunt plurimum salutamus. Data Constantinopoli consulatu piissimorum Theodosii XII et Valentiniani IIII.

2. (F. 1^v-255^v). AURELIJ AUGUSTINI omeliae numero centum viginti quatuor in evangelio secundum Iohannem habite ad populum. = *PL.*, t. XXXV, col. 1379 sqq.

Parchemin; 255 feuillets; 0^m,327 × 0^m,24; XI^e siècle; deux colonnes; très belles lettrines; titres en caractères lapidaires et capitales rustiques. F. 255^v, il y a la note: *Sum monasterii sancti Petri Gemblacensis ordinis divi Benedicti in Brabantia degentis, anno Domini scriptum (1) millesimo quingentesimo quadragesimo nono pridie idus septembris. In hoc tante lucubrationis volumine assidue immorare et sancte individueque Trinitatis fidem ... poteris dinoscere.* Reliure du XVII^e siècle: veau raciné; au dos, le titre doré: *Homiliae B. August. in evang. Ioan.*

1054. (9381-82). — S. AUGUSTINUS. Homeliae in Iohannem.

1. (F. 1^v-237). AURELIJ AUGUSTINI omeliae numero centum viginti quatuor in evangelium secundum Iohannem. = *PL.*, t. XXXV, col. 1379 sqq.

2. (F. 237-238^v). Epistola W[AZELINI] abbatis sancti Laurentii ad G. abbatem Flonensis ecclesie, an communio altaris tradenda sit viro qui praecedenti nocte cognovit uxorem (2).

Parchemin; 238 feuillets; 0^m,348 × 0^m,245; XII^e siècle; deux colonnes; très jolies lettrines; capitales rustiques. F. 2, il y a la cote *M-M, 3-6* et la note: *Liber sancti Laurentii prope Leodium, et f. 238^v, on lit: Liber sancti Laurentii iuxta Leodium. Si quis furatus fuerit anatema sit. Amen.* Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré: *August. Homil. in Ioannem*, reproduit aussi sur une étiquette en maroquin rouge à l'intérieur du volume; plus bas, les armes de la Belgique et l'inscription *Bibl. royale*.

1055. (II. 1116). — S. AUGUSTINUS In Iohannem. Deux volumes.

TOME PREMIER

Tractatus beati AUGUSTINI episcopi in evangelio secundum Iohannem. Tr. I-XXXVIII. = *PL.*, t. XXXV, col. 1379-1681.

TOME DEUXIÈME

1. (F. 1-161). Tractatus tricesimus nonus sancti AUGUSTINI episcopi super Iohannem. Tr. XXXIX-CXXIV. = *PL.*, t. XXXV, col. 1681-1976.

2. (F. 162-164). Omelia beati MAXIMI. = *PL.*, t. LVII, col. 301.

(1) Cette date ne porte que sur le dernier feuillet du manuscrit.

(2) Cette pièce est publiée dans MABILLOX, *Vetera Analecta*, Paris, 1723, pp. 471-73.

3. (F. 164-167). Omelia sancti IOHANNIS episcopi de ieiuniis et geneleos lectione.

4. (F. 167-168^v). Sermo beati IOHANNIS episcopi.

5. (F. 168^v-170). Sermo beati IOHANNIS episcopi.

6. (F. 170-171). Sermo beati IOHANNIS episcopi.

7. (F. 171^v-172^v). Sermo beati IOHANNIS episcopi (1).

8. (F. 172^v-175). Sermo beati LEONIS pape. = *PL.*, t. LIV, col. 313-17.

9. (F. 175-176). Sermo beati LEONIS pape. = *Ibid.*, col. 332-37.

10. (F. 176-177^v). Sermo beati LEONIS pape. = *Ibid.*, col. 349-52.

11. (F. 177^v-178^v). Sermo sancti AUGUSTINI (2) episcopi. = *PL.*, t. LXV, col. 741-42.

12. (F. 178^v-179). Sermo sancti AUGUSTINI episcopi (3).

13. (F. 179-181). Sermo beati LEONIS pape. = *PL.*, t. LIV, col. 337-42.

Parchemin; 175 et 181 feuillets; 0^m,337 × 0^m,24; XIII^e siècle; deux colonnes: très belles letrines; initiales rouges et vertes; signatures I-XXII et I-XXII. F. 1 du premier volume, il y a la note: *Liber beate Marie de Alna diocesis Leodiensis* (4), et f. 181: *Liber sancte Marie de Alna, si quis eum abstulerit vel folium absciderit [anathema sit]*. Plus tard, ces deux volumes ont fait les nn. 4696 et 4724 de la collection Phillips à Cheltenham; ils ont été acquis par la Bibliothèque royale en 1888. Demi-reliure, toile anglaise; dos en maroquin rouge, avec les titres dorés des divers traités.

1056. (4712). — S. AUGUSTINUS. In Iohannis evangelium tractatus.

1. (F. 1). Table alphabétique des matières.

2. (F. 2-170). [In Iohannis evangelium tractatus]. A partir du traité XLIV jusqu'à la fin. = *PL.*, t. XXXV, col. 1713-1976.

Parchemin; 170 feuillets; 0^m,325 × 0^m,23; XIII^e siècle; deux colonnes; grandes et belles capitales; signatures I à XVIII. F. 1^v et 170, on lit: *Liber sancte Marie de Villari in brabantia*. Demi-reliure moderne, dos en maroquin rouge, avec le titre doré: *B^u Augustini Sermones, XIII^u sacc.*, avec le chiffre couronné de Léopold I^{er}.

1057. (903-04). — S. AUGUSTINUS. In Iohannis evangelium tractatus CXXIV.

1. (F. 3-126). [S. AURELI AUGUSTINI in Iohannis evangelium]. Tractatus I-XLVIII. = *PL.*, t. XXXVI, col. 1379-1746.

2. (F. 126-128^v). Quatre sermons. *Inc. a)* Nunc, inquit, iudicium est mundi; *b)* Audistis, carissimi, Dominum dicentem; *c)* Plenitudinem dilectionis; *d)* Cum Dominus Iesus commendasset charitatem.

3. (129-149^v). Tractatus XLIX-LXV. = *Ibid.*, col. 1746-1807.

(1) Voir pour ces homélies nn. 3-7, MIGNÉ, *Patrol. curs. compl.*, S. Iohannis Chrysostomi, t. IV, col. 581-86, 448-51, 525-32; t. IX, col. 722 sqq.

(2) En fait, ce sermon est de S. Fulgence.

(3) C'est le sermon qui a été publié par MAI, *Nova Bibliotheca Patrum*, t. I, p. 156.

(4) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 241, decuria sexta.

4. (F. 150-154^v). Tractatus LXXIV-LXXIX. = *Ibid.*, col. 1826-1839.
5. (F. 154-154^v). Indication des traités LXXX-XCIV.
6. (F. 154^v-162^v). Tractatus XCV-C. = *Ibid.*, col. 1870-93.
7. (F. 162^v-190). Tractatus CIV-CXXIV. = *Ibid.*, col. 1901-76.
8. (F. 190-210). Les traités omis dans les feuillets précédents, avec cette note : *Prudens lector hos sermones locis suis deficientes restituit et adaptet*. Ce sont de l'édition, *PL.*, t. XXXV, les traités nn. 66-73, 80-94, 101-103.

Les feuillets 1, 2, 211 contiennent des fragments d'antiphonaire et de bréviaire, office noté de S^{te} Marie-Madeleine.

Parchemin; 211 feuillets; 0^m,30 × 0^m,23; XIV^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et bleues. F. 1^v, il y a la cote de bibliothèque W. 3, probablement de Corsendonck, et f. 3 et 210 l'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris. Reliure ancienne restaurée, peau de truie estampée.

1058. (48). — AUGUSTINUS. Expositio in evangelia et epistolas.

1. (F. 1-197). [Expositio in evangelium Iohannis]. *Inc. mutil.* ... levasse oculos in montes. Nisi enim montes ista dicerent. *Des.* etiam ipse compellerer meum terminare sermonem. Amen. Deo gracias. = *PL.*, t. XXXV, col. 1382, n. 7-col. 1976.

2. (F. 197^v-228). Divi AURELII AUGUSTINI hipponensis episcopi expositio in epistolam beati Iohannis evangeliste. = *Ibid.*, col. 1977-2062.

3. (F. 228-234). Divi AURELII AUGUSTINI hipponensis episcopi expositionis epistole Pauli ad Romanos inchoate, salutatione tantum expedita, liber unus. = *Ibid.*, col. 2087-2107.

4. (F. 234-241). Divi AURELII AUGUSTINI hipponensis episcopi expositionis quarundam propositionum ex epistola ad Romanos liber. = *Ibid.*, col. 2063-88.

5. (F. 241-254^v). Divi AURELII AUGUSTINI hipponensis episcopi in librum expositionis epistole Pauli ad Galatas prefatio. = *Ibid.*, col. 2105-48.

6. (F. 254^v-256). [Retractationes].

a) Ex libro primo *Retractationum* sancti AUGUSTINI in expositionem epistole Pauli ad Galathas. = *PL.*, t. XXXII, col. 622-23.

b) Retractatio eiusdem in expositionem epistole Pauli ad Romanos inchoata. = *Ibid.*, col. 623-24.

c) Retractatio eiusdem in expositionem quarundam propositionum ex epistolis Pauli ad Romanos. = *Ibid.*, col. 620-22.

Parchemin; 256 feuillets; 0^m,36 × 0^m,255; XV^e siècle; deux colonnes; jolies initiales rouges et bleues; f. 197^v, belle lettrine fleuronnée; titre courant en rouge; ancienne pagination n-cclv à l'encre rouge et signatures *a-e*; le premier feuillet a été arraché; au verso de la couverture, il y a une inscription à moitié

effacée, où on peut lire encore : *W. 3. Hoc volumen scriptum est labore ac diligentia religiosi admodum patris fratris Ioannis Mol, huius domus... professor... in Facons... quondam rector fuit.* Ces indications semblent se rapporter au prieuré de Corsendonck. L'estampille rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris, se trouve f. 1 et f. 256. Demi-reliure moderne, dos en basane rouge, avec le titre doré : *Beatus Augustini expositio in evangelia et epistolas. XIV. saec.* ; plus bas, le monogramme couronné de Léopold I^{er}.

1059. (9358). — S. AUGUSTINUS. In epistolas S. Pauli.

1. (F. 1). Table des matières.
2. (F. 1^v-171^v). AUGUSTINUS super epistolam Pauli ad Corinthios, Galathas, Ephesios, Philippenses, Colossenses, Thessalonicenses, primam et secundam ad Titum, ad Philemonem, ad Hebreos (1).
3. (F. 172-172^v). [Homelia super *Ecce nos reliquimus omnia*]. = *PL.*, t. XXVI, col. 138 sqq.

Parchemin; 172 feuillets; 0^m,365 × 0^m,245; XII^e siècle; deux colonnes; très curieuses lettrines. F. 1, on lit : *Liber ecclesie sancti Laurentii extra muros leodienses*, et f. 171^v : *Liber sancti Laurentii prope Leodium*. Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré : *Augustinus in epistolas S. Pauli*, avec les armes de Belgique et l'inscription : *Bibl. royale*.

1060. (4831-35). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1-1^v). Table alphabétique des matières.
2. (F. 2). Généalogie de S. Servais.
3. (F. 2^v-89). Tractatus sancti AUGUSTINI in epistola sancti Iohannis. = *PL.*, t. XXXV, col. 1977 sqq.
4. (F. 89-98^v). Liber sancti AUGUSTINI episcopi de disciplina christiana. = *PL.*, t. XL, col. 699 sqq.
5. (F. 98^v-106^v). Liber enchyridion SIXTI martyris.
6. (F. 107). Praefatio RUFINI presbiteri (2).
7. (F. 107^v-108). Sermo sancti BERNARDI abbatis Clare vallis. = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 761-65.
8. (F. 108^v). Prières à la S^{te} Vierge : *Ave spes nostra et O felix Maria et omni laude dignissima*.

Parchemin; 108 feuillets; 0^m,23 × 0^m,155; XIII^e siècle; grandes et belles capitales; signatures I-XIII. F. 2 et f. 108^v, on lit : *Liber sancte Marie de Villari in brabantia*. Reliure veau raciné.

1061. (8425-27). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1^v-76^v). Expositum beati AUGUSTINI episcopi de epistolis sancti Iohannis evangeliste. = *PL.*, t. XXXV, col. 1977 sqq.

(1) Traité extrait des diverses œuvres de S. Augustin.

(2) Sur les éditions de l'*Enchyridion* de Sixtus, traduit par Rufin, voir *PL.*, t. XXI, col. 40-41; cf. aussi plus haut, p. 80.

2. (F. 77-122). Liber RICHARDI [DE SANCTO VICTORE] de duodecim patriarchis. = *PL.*, t. CXCVI, col. 1 sqq.

3. (F. 122-125^v). [De paradiso terrestri].

Parchemin; 125 feuillets; 0^m,238 × 0^m,165; XIII^e siècle; signatures I-XVI. Au sujet de la provenance de ce volume, il y a les notes suivantes, f. 125^v : *Iste liber pertinet in Adewart ordinis S. [Bernardi] (1): f. 1 : Liber sancte Marie in ; et en dessous : Liber Cornelij Duijn Aemstelredamensis, Hagae Comitatus Hollandiae anno Domini M. Dcviij, et f. 1^v : D. P. Societatis Iesu Ant[verpie].* L'ex-libris des anciens bollandistes *MS. 118 se trouve sur le plat intérieur. Reliure ais de bois recouverts de veau estampé; fermoirs en cuivre.

1062. (II. 1074). — S. AUGUSTINUS. In epistolam Iohannis apostoli.

1. (F. 1-1^v, 170-170^v). Fragment de bréviaire du X^e siècle.

2. (F. 2^v-169). AURELIU AUGUSTINI in epistola Iohannis apostoli. = *PL.*, t. XXXV, col. 1977 sqq.

3. (F. 169). De oratione. Magister STEPHANUS Cantuariensis archiepiscopus. — Extrait.

Parchemin; 170 feuillets; 0^m,275 × 0^m,195; XIII^e siècle; très curieuses lettrines de diverses couleurs. F. 169^v, on lit : *Liber Sancte Marie de Alna (2), et f. 2 : 4654 Ph[illipps].* Ce volume a été acquis par la Bibliothèque royale en 1888. Demi-reliure, toile anglaise, Bretherton, 1848; au dos, le titre doré : *S. Augustini in epistolam S. Iohannis apostoli.*

1063. (1900-05). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1-97^v). Expositio magistri NYCHOLAI TRIVET doctoris sacre pagine ordinis praedicatorum super regulam beati Augustini episcopi (3).

Le feuillet 98 est blanc.

2. (F. 99-118). Epistola de competentibus ad quodquam officium presidendi.

3. (F. 118^v-122). Epistola beati DIONISII ad Thimotheum de transitu beatorum apostolorum Petri et Pauli. = *BHL.*, n. 6671.

Les feuillets 122^v-123^v sont blancs.

4. (F. 124-157^v). Expositio beati AUGUSTINI episcopi in Apokalipsim Iohannis apostoli. = *PL.*, t. XXXV, col. 2417 sqq.

5. (F. 158-159^v). Omelia beati AUGUSTINI episcopi in die iudicii. = *PL.*, t. LXVII, col. 1079.

6. (F. 160-191). Epylogus sententiarum currens per singulas distinctiones.

(1) Sur ce monastère cistercien, situé près de Groningue, voir JANAUSCHEK, *Origines Cistercienses*, t. I, p. 194.

(2) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 243.

(3) Voir QUÉTIF-ECHARD, *Scriptores ordinis praedicatorum*, t. I, p. 561-65.

Parchemin; 191 feuillets; 0^m,235 × 0^m,175; XV^e siècle (1444 et 1445), car on lit, f. 97^v : *Anno Domini 1444^o in profesto inventionis sancte crucis*, et f. 157^v : *Anno Domini 1445, in profesto sancti Laurentii martiris*. Quelques capitales rouges et bleues; le premier feuillet est encadré. On lit, f. 1 : *Liber monasterii sancte Marie viridis vallis in Zonia*, et f. 191 : *Liber monasterii beate Marie viridis vallis in Zonia ordinis canonicorum regularium*. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris *R. F.* se trouve f. 1 et f. 190^v. Reliure moderne, veau brun estampé.

1064. (II. 1002). — S. AUGUSTINUS. In psalmos.

1. (F. 1-140). Expôsitio AURELII AUGUSTINI ypponenensis episcopi de psalmo I ad L. = *PL.*, t. XXXVI, col. 87-395. *Inc. mutil.* (Ps. V.) ... iniustitiam et concepit dolorem et peperit iniquitatem.

2. (F. 140-144). [S. ANSELMII orationes]. = *PL.*, t. CLVIII, nn. 20, 50-52, 49, 64, 67-69, 72 et 74.

Parchemin; 144 feuillets; 0^m,345 × 0^m,242; XII^e siècle; jolies initiales; signatures a-t. F. 144, il y a la note : *Liber sancti Martini Tornacensis, servanti benedictio, auferenti maledictio. Amen* (1). F. 1, il y a l'ex-libris : *Sir T. P. Middle Hill 2026*. Ce volume fut acquis par la Bibliothèque royale en 1888. Demi-reliure moderne de Bretherton, en toile anglaise; au dos, le titre doré : *S. Augustinus in psalmos I ad 50, orationes ad B. Virginem*.

1065. (21842). — S. AUGUSTINUS. Super psalmos CI-CXVIII.

1. (F. 1-1^v). Table des matières.

2. (F. 2-120). Tractatus AUGUSTINI de psalmo centesimo primo ad centesimum decimum nonum. = *PL.*, t. XXXVI, col. 1293-1605.

Parchemin; 129 feuillets; 0^m,33 × 0^m,23; XII^e siècle; deux colonnes; magnifiques lettrines; signatures I-VII. F. 1, on lit la note : *Liber sancti Martini Tornacensis*; f. 2 : *Liber sancti Martini Tornacensis*; f. 120 : *Liber sancti Martini Tornacensis, servanti benedictio, auferenti maledictio* (2). Demi-reliure moderne; au dos, le titre : *Augustinus. Tractatus de psalmo CI ad CXVIII*.

1066. (21574). — S. AUGUSTINUS. Super psalmum CXIX-CL.

1. (F. 1^v-153). Tractatus Augustini episcopi super psalmum centesimum decimum nonum ad centesimum quinquagesimum. = *PL.*, t. XXXVI, col. 1597-1966.

2. (F. 153^v). Liste des tenanciers de l'abbaye de Saint-Martin à Tournai, sous les rubriques suivantes : *Hi sunt hospites qui tenent XI ortos intra murum et ortum nostrum*. — *Hi sunt qui XXII ortos tenent secus pomerium in eodem censu ... ad manlos ... ultra sanctum Bricium*.

(1) Cf. A. D'HERBOMEZ, *Les Manuscrits de Saint-Martin de Tournai actuellement conservés à la bibliothèque royale de Bruxelles*, p. 10-11.

(2) Cf. A. D'HERBOMEZ, *Les Manuscrits de l'abbaye de Saint-Martin de Tournai actuellement conservés à la bibliothèque royale de Bruxelles*, p. 21-22.

Parchemin; 153 feuillets; 0^m,356 × 0^m,255; XII^e siècle; deux colonnes; très jolies lettrines; signatures 1-xviii. F. 1 et f. 153^v, on lit cette note : *Liber sancti Martini Tornacensis. Servanti benedictio. Amen* (1). Sur le plat intérieur de la couverture l'ex-libris de la bibliothèque de Borluut de Noortdonck, à la vente des livres duquel ce manuscrit fut acquis par la Bibliothèque royale pour fr. 132, le 27 avril 1858. Reliure moderne, plein veau fauve, avec filets; au dos, le titre doré; *S. Augustinus super psalmos. M.S. XIII^{mi} sæculi.*

1067. (5469). — S. AUGUSTINUS. In psalmos.

1. (F. 1-125). Decades AURELI AUGUSTINI super psalterium. Explication des psaumes 1-50. = *PL.*, t. XXXVI, col. 67-395.

2. (F. 125^v). Vers.

Inc. Inpennis aquila penetrat patris alta sophie.

Des. Gamelion alech depascitur amne marino.

Parchemin; 125 feuillets; 0^m,34 × 0^m,26; XII^e siècle; deux colonnes; belles lettrines et capitales élégantes; signatures A-M. F. 1, on lit : *Liber monasterii Gemblacensis.* Reliure du XVII^e siècle; veau raciné; titre doré au dos : *Exposit.* *D. Aug. a. ps. 1 usq. ad 50.*

1068. (5563). — S. AUGUSTINUS. Quinquagena secunda super psalmos.

1. (F. 1). Fragment. *Inc. mutil* ... impietas dicitur apostatare a Deo. *Des. mutil.* Incorruptionem enim desi...

2. (F. 1^v-182^v). Expositiones psalmorum a quinquagesimo primo usque ad centesimum AURELI AUGUSTINI episcopi. = *PL.*, t. XXXVI, col. 599-1293.

Parchemin; 182 feuillets; 0^m,34 × 0^m,25; XII^e siècle, sauf le f. 182, qui est du XVI^e siècle; deux colonnes. Ce volume provient de l'abbaye de Gembloux, mais toute indication de cette provenance a disparu; du reste, le premier feuillet est à moitié coupé. Reliure du XVII^e siècle; titre doré, au dos : *Exp. psal. D. Aug. a 51. usque ad cen.*; tranche rouge.

1069. (5560). -- S. AUGUSTINUS. Quinquagena tertia super psalterium.

Explication des psaumes 101-150. = *PL.*, t. XXXVI, col. 1293-1966.

Parchemin; 231 feuillets; 0^m,345 × 0^m,26; XI^e siècle; deux colonnes; très belles lettrines. F. 1^r, il y a la note : *Liber ecclesie sancti Petri Gemblacensis.* Reliure du XVII^e siècle; au dos, le titre doré : *Expositio psal. a 100 usque . ad fine.*

1070. (7980). — S. AUGUSTINUS. Quinquagena prima super psalmos.

1. (Feuillet de garde et 212-212^v). Fragment d'un *Ars dictaminis.*

(1) Voir A. D'HERBOMEZ, *Les Manuscrits de l'abbaye de Saint-Martin de Tournai actuellement conservés à la bibliothèque royale de Bruxelles*, p. 20-21.

2. (F. 1^v-211). Tractatus AURELII AUGUSTINI episcopi super psalterium. = *PL.*, t. XXXVI, col. 67-395.

Parchemin; 212 feuillets; 0^m,357 × 0^m,22; XIII^e siècle; deux colonnes; lettrines élégantes en toutes couleurs. F. 211^v, il y a la note : *Liber sancte Marie tungerloensis ecclesie, quicumque eum abstulerit, anathema sit. Amen*, et f. 1^v : *Biblioth. Tongerl.* Reliure du XVII^e siècle, veau brun estampé.

1071. (7522). — S. AUGUSTINUS. Secunda quinquagena super psalmos.

Expositiones psalmodum a L^{mo} I^{mo} usque ad C^{num} AURELII AUGUSTINI. = *PL.*, t. XXXVI, col. 599-1293.

Parchemin; 197 feuillets; 0^m,365 × 0^m,25; XII^e siècle; deux colonnes; superbes lettrines; f. 1^v, miniature représentant S. Augustin. F. 197 et 197^v, on lit la note : *Liber sancte Marie de Tongerlo.* Reliure moderne, cuir et toile.

1072. (7981-82). — S. AUGUSTINUS. Super psalmos tertia quinquagena.

1. (Feuillet de garde). Fragment d'un *Ars dictaminis* (1).

2. (F. 1-134). Tractatus AURELII AUGUSTINI episcopi super psalmos 101-117. = *PL.*, t. XXXVI, col. 1293-1501.

3. (F. 134^v). Extrait. *Inc.* Primogenitus Nachor fratris Abraham. *Des.* antequam Aaron in sacerdotium eligeretur.

4. (F. 135-135^v). Benedictio campane.

5. (F. 136-291^v). Tractatus AURELII Augustini episcopi de psalmo 109-150. = *Ibid.*, col. 1445-1966.

Parchemin; 291 feuillets; 0^m,305 × 0^m,20; XII^e siècle; deux colonnes; très belles lettrines; signatures 1-xv. F. 291^v, il y a la note : *Liber sancte Marie de Tongerlo, si quis eum abstulerit, anathema sit. Fiat. Fiat.* Reliure veau estampé.

1073. (227). — S. AUGUSTINUS. Super psalterium quinquagena prima.

1. (F. 1-1^v). Prologus.

2. (F. 1^v-237^v). Decades beati AUGUSTINI episcopi in psalterium dene et quine. *Des. mutil.* Alio loco ait : *Ecce venit princeps mundi, acutus inspector ... (Ps. L).* = *PL.*, t. XXXVI, col. 67-590 (n. 9).

Parchemin; 238 feuillets, plus deux de garde; 0^m,405 × 0^m,29; XV^e siècle; deux colonnes; très belles capitales; initiales rouges et bleues; titre courant, en rouge; signatures *ai-s.t.* Ce volume provient de Saint-Martin de Louvain, car f. 1, on lit : *Est liber hic sancti Martini Lovaniensis, ex parte confratris nostri Henrici Vrancx qui fuit ex primoribus huius oppidi Lovaniensis, qui fuit in ordine professorum nonus anno scilicet Domini 1454. Moritur autem primus iubilicarius quondam*

(1) Cf. n. 1070 (7980).

confessor in Arschot, anno 1504; de même, f. 2 : *Liber canonicorum regularium vallis sancti Martini in Lovanio ex parte Henrici Vrancx eiusdem monasterii professi* ; puis f. 66 : *Est liber hic sancti Martini lovaniensis* ; et l. 238^r : *Liber canonicorum regularium sancti Martini in Lovanio*, Il y a encore les notes suivantes au sujet de la valeur de ce manuscrit : F. 1 : *Precium trium quinquagenarum harum XVI rhenensium* ; f. 2^r : *Tres quinquagene D. Augustini fuerunt capte XVI rhenensibus aureis*, et f. 238^r : *Nota quod he tres quinquagene Aurelii Augustini in psalmis constiterunt XVI rhenensibus aureis*. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris se voit f. 3. Reliure ancienne, veau estampé; sur le premier plat sous corne et encadrée de cuivre l'étiquette : *Aurelii Augustini quinquagena prima super psalterium*.

1074. (140). — S. AUGUSTINUS. Quinquagena secunda super psalmos.

1. (F. 3^v). Prière : *Conversi ad Dominum Deum patrem.* = *PL.*, t. XXXVII, col. 1966.

2. (F. 4-176). Tractatus beati AUGUSTINI de psalmo quinquagesimo primo. Quinquagena secunda. = *PL.*, t. XXXVI, col. 711 (n. 7)-1293.

Les trente-deux premiers feuillets du volume manquent, le traité *inc. mutil.* (au psaume LVIII) guis ac profuit, sed conversis omnibus profuit.

Parchemin; 176 feuillets, plus quatre de garde en papier; 0^m,41 × 0^m,285; XV^e siècle; deux colonnes; ancienne pagination xxxiiij-cciiij; signatures *ei-D*₂; initiales rouges et bleues. Ce volume provient de Saint-Martin à Louvain, car f. 1, il y a cette note : *Liber monasterii canonicorum regularium vallis sancti Martini in lovanio* (1), et f. 2 : *Pertinet ad monasterium canonicorum regularium vallis sancti Martini in Lovanio. Ex parte fratris Henrici Vrancx eiusdem monasterii canonici professi, anno 1454. Obiit primus iubilaris anno 1504.* F. 3^r, on lit : *Summa expositorum pro tribus quinquagenis D. Augustini — XVI rh[enenses]*. L'estampille rouge, *R. F.*, de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 176. Reliure ancienne restaurée, veau estampé; jolis fers; sur le premier plat, le titre sous corne : *Aurelij Augustini quinquagena secunda super psalterium David*; traces de fermoirs.

1075. (20269). — S. AUGUSTINUS. Quinquagena tertia super psalmos. = *PL.*, t. XXXVI, col. 1293-1966.

Parchemin; 166 feuillets; 0^m,394 × 0^m,28; XVI^e siècle (1504), car f. 166, on lit : *Quinquagena tertia anno Domini 1504, die octava augusti per manus fratris Henrici de Dyest professi in sancto Martino lovaniensi*. Le premier feuillet est entouré d'une guirlande de fleurs, on y voit aussi les armoiries d'un abbé. Sur le premier feuillet de garde, il y a la note suivante : *Geertruyt Buisse es geboren int iaer ons heeren XV^e acht en sestig den lesten meert. Ende de voirseide Gertruyt es gecleet ter banc int iaer ons heeren XV^e seven en tachtentich den achtsten november. Heeft oyc de selve haer professie gedaen int iaer ons heeren XV^e negentich den iersten sondach*

(1) Cf. SANDERUS, *Bibl. belgic. ms.*, part. II, p. 210.

van den advent den tweesten decembris. Demi-reliure moderne: dos en maroquin rouge; au dos, le titre doré : *Bⁱ Augustini super psalmos anno 1504*; plus bas, le chiffre couronné de Léopold I^{er}.

1076. (65). — S. AUGUSTINUS. Quinquagena prima de psalmis.

1. (F. 1-2^v). Prologus AURELI AUGUSTINI episcopi in libro psal-morum prophete David. *Inc.* Iste liber apud Hebreos propter diversas causas tribus modis intitulum. *Des.* iens in consilio impiorum.

2. (F. 2^v). Prologus super primam decadem AUGUSTINI episcopi. = *PL.*, t. XXXVI, col. 65-66.

3. (F. 2^v-259). Decades numero XV AURELI AUGUSTINI super psalte-rium. = *Ibid.*, col. 67-599.

Parchemin; 259 feuillets, plus quatre de garde; 0^m,385 × 0^m,275; XV^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et bleues; quelques lettrines; titre courant, signa-tures *a-r-F. III. F. 259*, il y a cette note: *Liber monasterii sancti Pauli in Zonia Came-racensis dyocesis in Brabantia, reddatur eidem, ligatus anno Domini M cccc^o xiiij^o*. L'estampille rouge *R. F.* de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 1 et f. 259. Superbe reliure, veau brun estampé; très jolis fers, avec l'inscription: *Roeden-cloester* (1).

1077. (1274). — S. AUGUSTINUS. Super psalmos.

Commentaire sur les psaumes I-XXXIII. = *PL.*, t. XXXVI, col. 67-395.

Les feuillets de garde, au commencement et à la fin, contiennent des fragments de bréviaire.

Parchemin; 161 feuillets; 0^m,28 × 0^m,185; XV^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et bleues. Dans la première lettrine, f. 1, joli dessin représentant le pro-phète David. Ce volume provient de Corsendonck, car on lit sur une étiquette placée sous corne sur le premier plat: *Augustinus super Beatus vir usque Iudica in Korsendonck*, et sur le plat intérieur, il y a la cote *W. 3* de sa bibliothèque. L'estampille rouge *R. F.* de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 1 et 165^v. Reliure ancienne, ais de bois recouverts de veau estampé.

1078. (4682). — S. AUGUSTINUS. Quinquagena secunda psal-morum.

1. (F. 1-206^v). Quinquagena secunda beati AUGUSTINI episcopi. = *PL.*, t. XXXVI, col. 599-1293.

2. (F. 206^v-212). Tabula eiusdem operis secundum alphabetum.

Parchemin; 212 feuillets, plus quatre de garde; 0^m,39 × 0^m,285; XIV^e siècle; deux colonnes; quelques jolies lettrines; initiales rouges et bleues; titre courant; ancienne pagination en chiffres romains. A en juger par la reliure, le volume semble venir de Rouge-Cloître. Reliure veau estampé, avec trois différents fers, quartefeuille, lion rampant, double aigle.

(1) La reliure est décrite en détail dans [J. WEALE], *Bookbindings*, p. 174, n. 342.

1079. (147). — S. AUGUSTINI super psalmos quinquagena secunda.

1. (F. 1^v). Prière. *Inc.* *Conversi ad Dominum Deum. Des. et ad beatitudinem.* = *PL.*, t. XXXVII, col. 1966.

2. (F. 1^v-251^v). Tractatus beati Augustini de psalmo quinquagesimo primo, quinquagena secunda. = *PL.*, t. XXXVI, col. 599-1293.

Parchemin; 251 feuillets, plus trois de garde : 0^m,39 × 0^m,275; XV^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et bleues; signatures *a1 ... a4-K4*. Au verso du second feuillet de garde, on lit cette note: *Augustinus super secunda quinquagena psalterij et dono dedit dominus Wilhelmus Raiscop librarius. Orate pro eo.* L'estampille rouge *R.F.* de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 2 et f. 251^v. Reliure ancienne restaurée, veau raciné et estampé.

1080. (309). — S. AUGUSTINUS. Super psalmos tertia quinquagena.

1. (F. 1-256^v). Titre. *In hoc corpore habentur decades AURELI AUGUSTINI episcopi de centesimo primo psalmo usque in finem centesimi quinquagesimi.* = *PL.*, t. XXXVII, col. 1293-1966.

2. (F. 257-258^v). Fragments d'homélie. *Inc. mutil. ... cum dicitur : quis enim ex vobis volens turrim edificare. Des. mutil. videntur perdidisse quod ... accipiunt hoc apparere quod non ...*

Parchemin; 258 feuillets; 0^m,375 × 0^m,265; XII^e siècle; deux colonnes; très jolies letrines en toutes couleurs fleuronées; initiales rouges et bleues; signatures I-XXXII. F. 1, il y a cette note : *Monasterii S. Cygiranni* (1), et f. 257^v, l'estampille rouge *R.F.* de la Bibliothèque nationale de Paris. Très belle reliure moderne, veau brun estampé, avec le titre en relief sur le plat : *Regia Bibl. Belgica*; fermoirs en cuivre.

1081. (II. 940). S. AUGUSTINUS. Super psalmos CI ad CL.

Tractatus beati AUGUSTINI de psalmo CI^o ... de psalmo centesimo quinquagesimo. = *PL.*, t. XXXVII, col. 1293-1966.

Parchemin; 139 feuillets; 0^m,465 × 0^m,315; XII^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et vertes; signatures I-XVIII. F. 1, on lit : *Libor sancte Marie de Camberone*, et f. 139^v : *Iste liber est sancte Marie de Camberone quem qui abstulerit anathema. Io. de Aldenarda me fecit.* Sur un grand nombre de feuillets, au bas des pages, il y a la note : *De Camberone*, et f. 1, l'ex-libris : *Sir T. P. Middle Hill, 334*. Ce volume fut acquis en 1888, pour 100 francs. Reliure ancienne, ais de bois recouverts de peau de truie.

1082. (II. 1121). — S. AUGUSTINUS. Super psalmos.

1. (F. 1^v-152^v). [AUGUSTINUS super psalmo CI ad CL]. = *PL.*, t. XXXVII, col. 1293-1966.

(1) Probablement le monastère de Saint-Cyran en Braine, de l'ordre de S. Benoît, au diocèse de Bourges, puis de Nevers. Cf. *Gallia christ.*, t. II, col. 131 sqq.

2. 152-156). Liber sancti AUGUSTINI doctoris eximii Iponensis episcopi de disciplina christiana. = *PL.*, t. XL, col. 669 sqq.

3. (F. 156-158). Omelia EUSEBII (1) de corpore et sanguine Domini. = *PL.*, t. XXX, col. 271.

4. (F. 158-158^v). Omelia sancti Hylarii de sacramentis, in libro VIII^o de sancta Trinitate. = *PL.*, t. X, col. 246-49.

5. (F. 158^v). S. AUGUSTINUS de corpore et sanguine Domini. Ex libro de verbis Domini. = *PL.*, t. XXXVIII, col. 729.

6. (F. 158^v-159). Sanctus GREGORIUS in quarto libro Dialogorum. = *PL.*, t. LXXV, col. 425-29.

7. (F. 159-161). Ex libris sancti AMBROSII de sacramentis. = *PL.*, t. XVI, col. 437-50.

8. (F. 161-162). Courts extraits de S. AUGUSTIN, S. LÉON, BÈDE, S. CYRILLE.

9. (F. 162-163). Ex dialogo sancti BASILII de dignitate sacerdotii. — Court extrait.

10. (F. 163-164). [PASCHASIUS RADBERTUS]. De apparitionibus corporis et sanguinis Domini. *Inc.* Nemo qui sanctorum vitas et exempla legerit. *Des.* Michi ille panis Dei descendit de celo qui vitam dat huic mundo. = *PL.*, t. CXX, col. 1316-19.

11. (F. 164-165). Cuiusdam de corpore et sanguine Domini. *Inc.* Intuentes sententiam apostoli qua dicitur quia animalis homo non percipit. *Des.* mox ut Dominus voluerit et per quemcunque elegerit tibi satisfactorius erit.

12. (F. 165-168^v). Compilatio domni abbatis HERIGERIE de corpore et sanguine Domini (2).

13. (F. 168^v-169^v). Ex libro confessionum domni RATHERII de corpore et sanguine Domini. = *PL.*, t. CXXXVI, col. 402-404.

14. (F. 169^v-170). In expositione HAIMONIS in epistola sancti Pauli ad Corinthios. = *PL.*, t. CXVII, col. 572-73.

15. (F. 170-170^v). [De Eucharistia]. = *PL.*, t. CLXXI, col. 1192-94.

Inc. Tollimur e medio fatis urgentibus omnes.

Des. Fit cibus ipsa caro, panis imago manet.

Parchemin; 170 feuillets; 0^m,348 × 0^m,255; XIII^e siècle: deux colonnes; très belles lettrines; initiales rouges et bleues; signatures r-xxi. F. 170^v, on lit: *Liber sancte Marie virginis de Alna* (3). *Si quis abstulerit, anathema sit.* Plus tard, ce volume a formé le n. 4689 de la collection Phillipps à Cheltenham; il a été acquis par la Bibliothèque royale en 1888. Demi-reliure, toile anglaise; au dos, les divers titres dorés des traités.

(1) Cette homélie est attribuée à Faustus de Riez et à S. Césaire.

(2) Sur les éditions de ce traité, voir *PL.*, t. CXXXIX, col. 957.

(3) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 241, decuria quinta.

1083. (136). — S. AUGUSTINI, super psalmos quinquagena tertia. Titre, f. 206^v : *Tractatus beati AUGUSTINI episcopi de psalmo centesimo quinquagesimo, quinquagena tertia anno Domini 1461 ipso die beati Gregorii pape per manus Petri Traiecti fratris domus domni Florencij in Davetria, oretis propter Deum pro eo* (1). = *PL.*, t. XXXVII, col. 1293-1966.

Parchemin; 206 feuillets; 0^m,40 × 0^m,285; XV^e siècle (1461); deux colonnes. F. 1 et 1^v, belles letrines et encadrements; initiales rouges et bleues, titre courant en rouge, ancienne pagination en chiffres arabes 1-206. L'estampille rouge *R.F.*, de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 1 et f. 206^v. Demi-reliure moderne, dos restauré en veau brun.

1084. (1326-27). — S. AUGUSTINUS. Super psalmos 106-118.

1. (F. 1-27^v). [AUGUSTINUS]. Tractatus in psalmum 106-113, puis 116-117. *Inc. mutil...* conculcatur. Et videte. = *PL.*, t. XXXVII, col. 1429-1473, 1474-1501.

Entre les feuillets 24 et 25 il y a une lacune. = *Ibid.*, col. 1473-1474.

2. (F. 27^v-75). Sermones 32 de psalmo 118. = *Ibid.*, col. 1501-1596.

3. (F. 75^v-84^v). [HONORIUS AUGUSTODUNENSIS, de imagine mundi]. *Des. mutil.* dominum non VIII, sed X kalendas aprilis. = *PL.*, t. CLXXII, col. 115.

Parchemin; 84 feuillets; 0^m,319 × 0^m,212; XIII^e siècle; Jeux colonnes. Demi-reliure, dos en maroquin rouge avec le titre doré : *B^u Augustini sermones super psalmos. Honorii solitarii de imagine mundi XIII saec.*; plus bas, le chiffre couronné de Léopold I^{er}.

1085. (9355-57). — S. AUGUSTINUS. In psalmos 119-133.

1. (F. 1). Acte d'EVERELMUS, abbé de Saint-Laurent, à Liège, 1166.

2. (F. 1-1^v). De duobus clericis quorum unus alteri post mortem apparuit. *Inc.* Civitas est Britannie Namnetis dicta nomine. *Des.* ut dicant hec mutatio dextere excelsi qui vivit et regnat...

3. (F. 2-120). Tractatus beati AUGUSTINI episcopi de psalmo centesimo nono decimo de psalmo centesimo tricesimo tertio. = *PL.*, t. XXXVII, col. 1596-1736.

4. (F. 120^v-122). In cena Domini lectiones in primo, secundo, tertio nocturno.

5. (F. 122-125^v). In Parasceve in primo, secundo, tertio nocturno.

6. (F. 125^v-127^v). Sabbato sancto, in primo, secundo, tertio nocturno.

(1) Voir Acqouy, *Het Klooster te Windesheim*, t. I, p. 43-45.

7. (F. 127^v-128^v). In Pasca sermo beati GREGORII pape. = *PL.*, t. LXXVI, col. 1177, n. 6. *Des. mutil.* In nocte quippe agnum comedimus quia in (col. 1178, n. 7 in fine).

Parchemin; 125 feuillets; 0^m,37 × 0^m,25; XII^e siècle; deux colonnes; quelques belles lettrines fort curieuses, animaux et grotesques. Reliure veau raciné; au dos, le titre doré : *Augustinus in psalmos*, avec les armes de Belgique et l'inscription *Bibl. royale*.

1086. (959-60). — S. AUGUSTINUS. Tractatus super psalterium.

1. (F. 2-219^v). B. AUGUSTINI tractatus super psalterium. Ps. 109-150. = *PL.*, t. XXXVII, col. 1445-1962.

Le feuillet 220 est blanc.

2. (F. 221-259^v). Sermones venerandi patris [HENRICI ERP guardiani minorum de observantia Mechliniae] de adventu. — Édition incunable, sans lieu ni date (1).

Papier, au filigrane de l'écu de France; 259 feuillets, plus deux de garde; 0^m,29 × 0^m,205; XV^e siècle (1489-90), car f. 1, il y a la date de 1490 et f. 219^v, il y a la note : *Et sic finitur expositio beati Augustini episcopi et doctoris excellentissimi super tertiam sive ultimam quinquagenam psalterii ad laudem omnipotentis Dei anno Domini 1489^o feria 2^a post dominicam infra octavas epiphanie Domini ante vespas per fratrem Iohannem de Antwerpia ordinis sancte crucis in Namurco*. Quelques lettrines, capitales en rouge; titre courant. F. 1^v, on lit cette note : *Pertinet monasterio fratrum ordinis sancte crucis in Namurco servanti benedictio*. L'estampille rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris, se trouve f. 2 et 259^v. Reliure du XVII^e siècle; veau brun estampé.

1087. (14920-22). — S. AUGUSTINUS. Sermones.

1. (F. 1^v-2). Index.

2. (F. 3-10). Sermo S. Augustini de penitentia. = *PL.*, t. XXXIX, sermon n. 351.

3. (F. 10-14). Sermo EIUDEM de eo quod *Oculus non vidit* = *PL.*, t. XXXVIII, n. 127.

4. (F. 14-15^v). Sermo de sacrificio vespertino sancti AUGUSTINI. = *Ibid.*, t. XXXIX, n. 342.

5. (F. 15^v-18^v). Sermo de quinquagesimo pasche. = *PL.*, t. XXXVIII, n. 270.

6. (F. 18^v-20^v). Sermo de amore Dei. = *PL.*, t. XXXIX, n. 344.

7. (F. 20^v-22). Tractatus de natale Machabeorum. = *PL.*, t. XXXVIII, n. 300.

8. (F. 22-25^v). De eo quod scriptum est *Querite et invenietis*. = *Ibid.*, n. 105.

(1) Cf. S. DIRKS, *Histoire littéraire et bibliographique des Frères Mineurs de l'observance de S. François*, p. 10, qui cite ce volume de la Bibliothèque royale.

9. (F. 25^v-28). De versu psalmi XXXII : *Deus quis similis erit tibi?* = *Ibid.*, n. 24.

10. (F. 28-32). De eo quod scriptum est ... *Iocundabitur iustus in Domino.* = *Ibid.*, n. 21.

11. (F. 32-35). De eo quod scriptum est ... *Fidem posside cum proximo.* = *Ibid.*, n. 41.

12. (F. 35-38^v). Sermo de continentia et sustinentia. = *Ibid.*, n. 38.

13. (F. 38^v-40^v). De eo quod scriptum est ... *Cor mundum crea in me Deus.* = *Ibid.*, n. 20.

14. (F. 40^v-42^v). Sermo de pace et caritate. = *PL.*, t. XXXIX, n. 358.

15. (F. 42^v-46^v). Sermo de eo quod scriptum est ... *Concordia fratrum et amor proximorum.* = *Ibid.*, n. 359.

16. (F. 46^v-50). De eo quod commonemur a scandalo cavere. = *PL.*, t. XXXVIII, n. 81.

17. (F. 50-51). Sermo de natali Domini. = *Ibid.*, n. 194.

18. (F. 51-52). Sermo de epiphania. = *PL.*, t. XXXIX, n. 374.

19. (F. 52-52^v). Sermo de fide. *Des. mutil.* non solum sine murmure, sed eciam cum delectatione faciamus.

20. (F. 53-54^v). Sermo de diversitate timoris et mortis in die martirum. = *PL.*, t. XXXVIII, n. 65.

21. (F. 54^v-57^v). Sermo de seminatore verbi. = *Ibid.*, n. 150.

22. (F. 57^v-61^v). Sermo de eo quod in Esaia scriptum est : *Qui autem dediti mihi erunt.* = *Ibid.*, n. 45.

23. (F. 61^v-65). De tertia actione penitentiae. = *PL.*, t. XXXIX, n. 351, cap. IV.

24. (F. 65-70^v). De utilitate agendaee penitentiae. = *Ibid.*, n. 352.

25. (F. 70^v-72^v). Sermo habitus ad mensam Cipriani. = *PL.*, t. XXXVIII, n. 13.

26. (F. 72^v-74^v). Sermo de versu psalmi noni : *Tibi derelictus est pauper.* = *Ibid.*, n. 14.

27. (F. 74^v-76^v). Sermo habitus in regione tertia in basilica Petri Cartagine. = *Ibid.*, n. 15.

28. (F. 76^v-78). Sermo die dominica in basilica Celerine. = *Ibid.*, n. 48.

29. (F. 78-81). Sermo in mensa sancti Cipriani in die dominica. = *Ibid.*, n. 49.

30. (F. 81-82). Sermo in natale sancti Stephani. = *Ibid.*, n. 319.

31. (F. 82-84^v). Sermo de capitulo apostoli ... *Non enim quod volo bonum hoc facio.* = *Ibid.*, n. 151.

32. (F. 84^v-86^v). Sermo de psalmo XI^o nono. = *Ibid.*, n. 17.

33. (F. 86^v-88^v). Sermo de caritate vel dilectione. = *PL.*, t. XXXIX, n. 349.

34. (F. 88^v-89^v). Sermo de ... parabola seminantis.
35. (F. 89^v-91). Sermo de capite evangelii ... *Si vis venire ad vitam.* = *PL.*, t. XXXVIII, n. 85.
36. (F. 91-92). Sermo de capitulo evangelii ... *Cuius filius sit Christus.* = *Ibid.*, n. 91.
37. (F. 92-92^v). Sermo de servo qui talentum acceperat. = *Ibid.*, n. 94.
38. (F. 92^v-94). Sermo de avaritia. = *Ibid.*, n. 107.
39. (F. 94-95). Omelia sancti AUGUSTINI de eunucho regni celorum.
40. (F. 95-101). Sermo de capitulo.... *Confiteor tibi, Pater* (1).
41. (F. 101-106). Sermo habitus in basilica Tricillarum. = *Ibid.*, n. 53.
42. (F. 106-109). Sermo habitus in basilica Fausti de messe et seminatore.
43. (F. 109-113^v). Sermo ... de visione Dei. = *Ibid.*, n. 23.
44. (F. 113^v-114^v). De die dominica.
45. (F. 114^v-116). De die martyrum. = *Ibid.*, n. 141.
46. (F. 116-120). Sermo sancti AUGUSTINI de vocatione Pauli. = *Ibid.*, n. 278.
47. (F. 120-121^v). Sermo paschalis. = *Ibid.*, n. 233.
48. (F. 121^v-123). Alius sermo. = *Ibid.*, n. 234.
49. (F. 123-125^v). Alius sermo paschalis. = *Ibid.*, n. 116.
50. (F. 125^v-128). Alius sermo paschalis. = *Ibid.*, n. 244.
51. (F. 128-129). Alius sermo. = *Ibid.*, n. 249.
52. (F. 129-131). Tractatus sancti AUGUSTINI de capitulo evangelii die sabbato.
53. (F. 131-131^v). Sermo de die dominica. = *Ibid.*, n. 63.
54. (F. 131^v-150^v). Expositio sancti AUGUSTINI in epistola ad Galatas. = *PL.*, t. XXXV, col. 2105 sqq.
55. (F. 151-153). [Libellus CECILII CIPRIANI de XII abusivis seculi]. = *PL.*, t. IV, col. 869-76. *Inc. mutil. in fine cap. VII.* Ecce Christus non contendit neque clamavit.
56. (F. 153-166^v). Sermo ex predicationibus beati Eligii. *Des. mutil.* qui ita affluenter ministrabat plebi adipem.
57. (F. 167-168). [Liber sancti VALERIANI Cimelensis episcopi de bono discipline]. = *PL.*, t. XL, col. 1217 sqq.
- Parchemin; 168 feuillets: 0^m,28 × 0^m,193; X^e siècle; quelques belles initiales. Reliure veau raciné; au dos, le titre doré: *Opera D. Augusti.*

1088. (21843). — S. AUGUSTINUS. Sermones.

1. (F. 1^v-2^v). Index.

2. (F. 2^v-148^v). [Sermones de verbis Domini].

(1) MAI, *Bibliotheca nova Patrum*, t. I, p. 289.

Ce sont les soixante-quatre sermons dont la liste est donnée *PL.*, t. XXXIX, col. 2429-31.

3. (F. 148^v-150). *EIUSDEM* de scripturis veteribus ac novis contra Arrianos. = *Ibid.*, n. 384, col. 1689-90.

Parchemin; 150 feuillets; 0^m,150 × 0^m,212; XII^e siècle; deux colonnes; très jolies letrines en toutes couleurs; signatures I-IV. F. 150, il y a la note à moitié enlevée : *Liber sancte M[arie de Camberone]*, et l'inscription de *Camberone* se lit ff. 2^v, 6, 8^v, 12, 14^v, 18, 20^v, 24, 26^v, 30, 32^v, 36, 38^v, 42, 44^v, 48, 50^v, 54, 56^v, 60, 62^v, 65^v, 70, 72^v, 76, 78^v, 82, 85, 88, 91, 94, 97, 100, 103, 106, 109, 113, 116, 118^v, 122, 125, 128, 131, 134, 137, 140, 143, 146, 149 (1). Au verso de la couverture se trouve l'ex-libris : *Ex bibliotheca P. P. C. Lammens* (2). Ce manuscrit fut acquis par la Bibliothèque royale en mai 1863, à la vente des livres de Van Alstein, pour fr. 133,10 (3). Reliure moderne, veau raciné; filets; au dos, le titre doré : *Sermones sancti Augustini*.

1089. (II. 1003). — S. AUGUSTINUS. Sermones.

1. (F. 1^v). Capitula sermonum sancti AUGUSTINI de verbis Domini in evangelio secundum Mattheum.

2. (F. 1^v-44^v). AURELII AUGUSTINI yponensis episcopi de verbis Domini in evangelio secundum Mattheum sermones XXVIII.

C'est la série des sermons indiquée, *PL.*, t. XXXIX, col. 2429, nn. 1-11, puis le sermon, *PL.*, t. XXXVIII, n. 307, ensuite les nn. 12, 15, 17-23 de la liste, col. 2429-31.

3. (F. 44^v-64^v). AURELII AUGUSTINI Yponensis episcopi sermones XVI de verbis Domini in evangelio secundum Lucam. = *PL.*, t. XXXIX, col. 2441, nn. 24, 37, 26-28, puis le sermon, *PL.*, t. XL, col. 669, ensuite les nn. 29-33, 35, 25, 36 de la série, *PL.*, t. XXXIX, col. 2431.

4. (F. 64^v-96^v). [AUGUSTINI episcopi sermones ... in evangelio secundum Iohannem]. *Des. mutil.* (Sermo XX) qui nullo continetur loco discedat ... = *PL.*, t. XXXIX, col. 2431, nn. 38, 39, puis t. XXXVIII, le sermon n. 52, ensuite les nn. 40-42 de la série t. XXXIX, col. 2431, les sermons 127 et 128 du t. XXXVIII, puis les nn. 44-46, 48-53 de la série col. 2431 du t. XXXIX, le sermon 142 du t. XXXVIII, et les nn. 57 et 58 de la col. 2431, t. XXXIX.

5. (F. 97-97^v). Fragment du IX^e siècle, Ezechiel, XLIII, 19-
XLIV, 12.

Parchemin; 97 feuillets; 0^m,342 × 0^m,24; XII^e siècle; f. 1^v, une très jolie letrine ornée, en rouge et en vert; ailleurs, très belles initiales aux mêmes couleurs; deux colonnes; signatures I-XII. F. 1^v, il y a la note : *Liber sancti Martini Tornacensis*,

(1) SANDERUS, *Bibl. belgica ms.*, part. 1, p. 350, l. 10.

(2) *Catalogue des livres de Lammens*, t. II, p. 13.

(3) *Catalogue de la vente*, n. 463.

servanti benedictio, auferenti maledictio (1), et f. 1, l'ex-libris : *Sir T. P. Middle Hill, 2027*. Ce volume fut acquis en 1888 pour 40 francs. Demi-reliure, toile anglaise, de Brelherton ; au dos, le titre doré : *S. Augustinus de verbis Domini*.

1090. (II. 935). — S. AUGUSTINUS. Sermones.

1. (F. 1-2). Capitula.

2. (F. 2^v-162^v). [Sermones de verbis Domini].

Les soixante-quatre sermons dont la liste se trouve, *PL.*, t. XXXIX, col. 2429-31.

3. (F. 162^v-164). EIUDEM de scripturis veteribus ac novis contra Arrianos. = *Ibid.*, n. 384, col. 1689-90.

4. (F. 164^v-165^v). Vita et passio sancti Marci evangelistae. = *BHL.*, n. 5276.

Parchemin ; 165 feuillets ; 0^m,32 × 0^m,234 ; XIII^e siècle ; letrines rouges et vertes. F. 165^v, il y a la note : *Liber sancte Marie de Villari*, et f. 1, l'ex-libris de Thomas Phillipps : *Sir T. P. Middle Hill, n. 322*. Le volume a été acquis en 1888. Reliure toile et peau de truie (2).

1091. (II. 1130). — S. AUGUSTINUS. Sermones.

1. (F. 1^v-2^v). Capitula.

2. (F. 2^v-175). Beati AUGUSTINI de verbis Domini.

C'est la série de sermons signalée *PL.*, t. XXXIX, col. 2429-31, nn. 1-64.

3. (F. 175-176^v). EIUDEM de scripturis veteribus ac novis contra Arrianos. = *PL.*, t. XXXIX, col. 1689-90.

Parchemin ; 176 feuillets ; 0^m,285 × 0^m,185 ; XIII^e siècle ; deux colonnes ; très jolies letrines de diverses couleurs ; signatures I-XII. Ce volume provient de l'abbaye d'Alne (3), plus tard il a formé le n. 4711 de la collection Phillipps ; il a été acquis par la Bibliothèque royale en 1888. Demi-reliure, toile anglaise ; au dos, le titre doré : *S. Augustini sermones de verbis Domini*.

1092. (II. 2311). — S. AUGUSTINUS. Sermones.

1. (F. 1^v-4). Sermo beati AUGUSTINI de [annuntiatione] S. Marie. = *PL.*, t. XXXIX, col. 2107.

2. (F. 4-6^v). Sermo beati AUGUSTINI de assumptione sancte Dei genitricis. = *PL.*, t. XCVI, col. 254.

3. (F. 7-8^v). [PETRUS DAMIANUS]. Sermo de ammirabili annuntiatione S. Marie. = *PL.*, t. XXXIX, col. 2104.

(1) VOIR A. D'HERBOMEZ, *Les Manuscrits de Saint-Martin de Tournai actuellement conservés à la bibliothèque royale de Bruxelles*, p. 11.

(2) Voir une description de ce manuscrit dans *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. II, p. 439-40.

(3) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 241, decuria quinta.

4. (F. 8^v-9^v). Sermo S. AUGUSTINI de gloriosa assumptione sancte Dei genitricis Marie.

5. (F. 9^v-10^v). Sermo beati AUGUSTINI de nativitate sancte Dei genitricis Marie. = *PL.*, t. XCVI, col. 279.

6. (F. 10^v-14). Sermo de venerabili assumptione S. Marie. = *Ibid.*, col. 2129-34.

7. (F. 14-14^v). Sermo S. AUGUSTINI de nativitate sancte Genitricis Dei Marie.

8. (F. 14^v-18^v). Sermo de assumptione beate virginis Marie.

9. (F. 18^v-19). [De dedicatione ecclesie sanctae Mariae maioris Romae] (1).

10. (F. 19-20^v). [De die dominica].

11. (F. 21-24). [Orationes rythmice ad Deum et ad beatam Virginem Mariam]. = *RH.*, nn. 925, 21000, 10883, 3498 et 1094.

12. (F. 24^v-48^v). Miracula beate Dei genitricis.

Série de trente-huit miracles, où l'on retrouve les récits publiés par PEZ, *Pothonis liber de miraculis S. Dei genitricis Mariae*, Viennae, 1731, nn. 1, 6, 12, 15, 9, 7; puis la *Paenitentia Theophili*; ensuite le miracle publié par NEUHAUS, *Die Quellen zu Adgar*, p. 11-12; puis PEZ, nn. 7, 10, 2, 3, 4, 19; ensuite *PL.*, t. CXX, col. 1298; FITA, *Estudios historicos*, t. III, p. 245-46; VINCENT. BELLOVAC., *Speculum historiale*, lib. VIII, cap. 84; MUSSAFIA, *Die von Gauthier de Coincy benützten Quellen*, p. 19; PEZ, nn. 5, 11, 13, 14, 15, 1, 17; NEUHAUS, *op. cit.*, p. 48-51; *PL.*, t. CLVIII, col. 946; PEZ, nn. 18 et 39; *PL.*, t. CLV, col. 564-67; t. CLVI, col. 573-74; t. CLXVI, col. 568-72, ensuite NEUHAUS, *op. cit.*, p. 11-12, puis *Cur festum Marie celebretur in sabbato*.

Viennent ensuite sept autres miracles :

a) Miraculum de quodam canonico. *Inc.* Sollicitudinis tue, pater reverende, crebra precatione flexus.

b) De quodam sacerdote. *Inc.* Erat similiter in alio loco quidam officio clericus, ordine sacerdos.

c) De armigero qui festum S. Marie preda temeravit. *Inc.* Multitudinem seu magnitudinem beneficiorum que Christi mater generi humane incessanter amministret.

d) De milite per eius ereptionem correcto. *Inc.* Miles quidam, ut paucis absolvam, nocte que proximum tornizandi praecessit diem.

e) De villico per eam a captivitate absoluto. *Inc.* Frequenti fama vulgatum est quod Capellensium sororum quidam villicus ab Arnesbergensibus inique captus.

(1) Cf. FLORAVANTI MARTINELLI, *Roma ex ethnica sacra*, 1653, p. 239-32; *Analecta Bollandiana*, t. IV, p. 168; t. XVII, p. 155-57; A. MUSSAFIA, *Die mittelalterlichen Marienlegenden*, t. I, p. 32.

f) Quomodo eius iniuriam fratres. C. luerint. *Inc.* Dicam praeterea quid in Classensi contigit monasterio (1).

g) Legitur quod tempore Leonis imperatoris iniqui Constantinus quidam iudeus.

13. (F. 49-59^v). Passio beate Margarete. = *BHL.*, n. 5303.

14. (F. 60-63). Historia de nativitate sancte Marie. = *BHL.*, n. 5341.

15. (F. 63^v-68). [Miracula beatæ Mariæ virginis].

On a ici la série de miracles signalée par A. MUSSAFIA, *Studien zu den mittelalterlichen Marienlegenden*, fasc. I, Wien, 1887, p. 60, d'après le manuscrit de Leipzig n. 819, à partir du n. 38 : *Huius sacratissime virginis nativitas*, puis les miracles relevés par Grégoire de Tours, ensuite celui indiqué par MUSSAFIA, *op. cit.*, p. 60, note 2 : *Quidam religiosus Ludolfus nomine monasterii quod est Ostbroke.*

Puis les récits suivants :

a) Nunc vero aliud miraculum ... In monasterio Cloniacensi erat ... quidam monachus.

b) *Paenitentia Theophili*, suivi de l'hymne notée : *Ave sponsa sunamitis.*

c) Ex opusculis RUOTBERTI abbatis doctissimi (2).

d) Ex dialogis GREGORII (lib. IV, cap. 7). = *PL.*, t. LXXVII, col. 348.

16. (F. 68). Oratio RUOTBERTI [Tuitiensis] abbatis. = *PL.*, t. CLXVIII, col. 962.

17. (F. 69-75^v). Translatio sancti Nicholai de Mirrea in Barum. = *BHL.*, nn. 6190-93.

18. (F. 76-79). De translatione sancti Stephani prothomartiris. = *BHL.*, n. 7882.

19. (F. 79-83^v). De virtutibus sancte Marie Magdalene. = *BHL.*, n. 5439.

20. (F. 83^v-84^v). De beata Maria Magdalena quomodo cum beato Maximino mare transierit. = *BHL.*, n. 5443.

21. (F. 84^v-87^v). De translatione sancte Magdalene Viceliacum de Aquensi civitate. = *BHL.*, n. 5489.

22. (F. 87^v-91^v). De felicissima peccatrice Afra. = *BHL.*, nn. 108 et 109.

23. (F. 92-104). Vita sancti Servatii. *Inc.* Octaviam que et Tungris quasi tunderis sive tu ungeris. *Des.* in basilica in aggere publico ... cuius regnum et imperium permanet in secula seculorum. Amen.

24. (F. 104-108). [Miracula sancti Servatii]. *Inc.* Translati ad

(1) Cf. A. MUSSAFIA, *Studien zu den mittelalterlichen Marienlegenden*, fasc. I, Wien, 1887, p. 9 et 57, n. xxv, 54, Gozo.

(2) Il s'agit de Rupert de Deutz. Voir *PL.*, t. CLVIII, col. 837.

superos Servatii opera postuma. *Des.* in bona spe assumptus est ad Dominum. Ac de his hactenus.

25. (F. 108^v-115). [Translatio sancti Servatii]. = *BHL.*, n. 7621.

Parchemin; 115 feuillets; 0^m,258 × 0^m,175; XIII^e siècle. F. 1^v, on lit : *Pracsens liber vocatur dat pellenboeck*, et f. 1 : *Phillipps ms. 7411*. Ce volume fut acquis en 1899, à une vente à Londres, chez Sotheby, pour fr. 775 (1). Reliure anglaise, veau brun estampé; au dos, le titre doré : *Augustini sermones etc. Ms. super memb.*

1093. (2057-62). — S. AUGUSTINUS. Sermones de symbolo.

1. (F. 1). Table des matières.
 2. (F. 2-77^v). Vita S. Richardi episcopi Cicestrie. = *BHL.*, n. 7209.
 3. (F. 78-117). AURELI AUGUSTINI doctoris Yponensis episcopi sermones de symbolo. = *PL.*, t. XL, col. 627-28.
 4. (F. 118-181^v). Ordinarius ecclesie Saresberiensis in Anglia(2).
 5. (F. 182-212). Eulogium virginale. — Recueil de prières en l'honneur de la Vierge.
 6. (F. 213-215). Les cinq joies et les litanies de la S^{te} Vierge.
 7. (F. 215-230^v). Prières diverses.
- Le feuillet 231 est blanc.
8. (F. 232-246^v). [BONAVENTURA. Lignum vite](3).

Parchemin; 246 feuillets; 0^m,22 × 0^m,145; XV^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et bleues. F. 1, on lit : *Ex legato magistri Karoli Viruli pertinet pro nunc ad monasterium vallis sancti Martini Lovaniensis* (4). L'estampille rouge R. F. de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 2 et f. 246^v. Demi-reliure moderne (5).

1094. (18682-84). — S. AUGUSTINUS. Sermones.

1. (F. 1-2). Sermo S. AUGUSTINI episcopi in natale beati Laurentii martyris Christi (6).
2. (F. 2-2^v). Sermo beati MAXIMI episcopi. *Inc.* Post apostolorum victoriam letus Laurentius ingressus est pugnam. *Des.* quem passio atque victoria levavit ad Ihesum Christum Dominum nostrum.
3. (F. 2^v-4). Item beati MAXIMI. *Inc.* Licet ingentia sacra tenuis sermo non explicit. *Des.* toto Christum corpore deprecatus.
4. (F. 4-7). Sermo beati AUGUSTINI episcopi unde supra. = *PL.*, t. XXXVIII, n. 314.

(1) Cf. *Bibliotheca Philippica*, London, 1899, p. 125, n. 1163.

(2) Cf. WORDSWORTH, *Ordinale Sarum sive directorium sacerdotum*, London, 1901.

(3) Éditée, *Diri Bonaventurae opera omnia*, Moguntiae, 1608, t. VI, p. 403.

(4) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 211.

(5) Voir une description de ce manuscrit dans *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. I, p. 327.

(6) Publié par MAI, *Nova Bibl. Patrum*, t. I, p. 111.

5. (F. 6-7). Sermo beati AUGUSTINI episcopi. = *PL.*, t. XXXIX, n. 87, col. 1913.

6. (F. 7-8^v). Item beati AUGUSTINI. = *Ibid.*, n. 207, col. 2128.

7. (F. 8^v-10). Sermo beati AUGUSTINI episcopi. = *Ibid.*, n. 316, col. 2351.

8. (F. 10-11). Sermo beati AUGUSTINI episcopi de eodem. *Inc.* Gloriosa memoria beatissimorum Stephani et Laurentii. *Des.* satietatem dominici vultus obtineatis in celo. Amen.

9. (F. 11-14^v). Miraculum beati Laurentii de calice = *BHL.*, n. 4777.

10. (F. 14^v-19^v). Passio S. Iustini presbyteri et martiris. = *BHL.*, n. 4585.

11. (F. 19^v-20^v). Hymne notée. = *RH.*, n. 19523.

Parchemin; 20 feuillets; 0^m,23 × 0^m,15; XIV^e siècle; très élégantes capitales en bleu d'outremer. Ce manuscrit a été acquis par la Bibliothèque royale à la vente des livres d'Ed. Lavalleye à Gand, le 9 mai 1860 (1), pour fr. 44. Demi-reliure moderne, dos en maroquin rouge (2).

1095. (149-50). — S. AUGUSTINUS. Sermones de verbis Domini et de verbis Apostoli.

1. (F. 1-1^v). Tabula in sequentem librum.

2. (F. 2-94^v). [Sermones] beati AUGUSTINI de verbis Domini.

Ce sont les soixante-quatre sermons édités *PL.*, t. XXXIX, dans l'ordre signalé *ibid.*, col. 2429-31, et le premier de la série *De verbis apostoli*, cf. *ibid.*, col. 2431.

3. (F. 95-146). Liber de verbis Apostoli.

Les sermons nn. 1-32 édités *PL.*, t. XXXIX, dans l'ordre indiqué *ibid.*, col. 2431-32; puis entre les nn. 18 et 19, un sermon (f. 127-129^v), qui commence : Nemo, fratres karissimi, de resurrectione desperet. *Des.* qui in sanctis suis diligit Deus, ... in saecula saeculorum. Amen.

4. (F. 147^v). Table.

Parchemin; 146 feuillets; 0^m,355 × 0^m,25; XV^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et bleues; titre courant en rouge; signatures *br-orr*. L'estampille rouge, *R. F.*, de la Bibliothèque nationale de Paris se voit f. 1 et f. 146. Reliure ancienne restaurée, peau de truie estampée.

1096. (308). — S. AUGUSTINUS. Sermones de verbis Domini et de verbis Apostoli.

1. (F. 1-4). Sequentes sermones beati AUGUSTINI de verbis Apostoli sequuntur sermones eiusdem de verbis Domini.

(1) Voir n. 50 du *Catalogue des manuscrits de Lammens*.

(2) Ce volume est décrit dans *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. II p. 425.

2. (F. 4-111). [Sermones de verbis Domini].

C'est la série des sermons signalée sous le titre d'*Ordo vetus* dans *PL.*, t. XXXIX, col. 2429-31.

3. (F. 111-111^v). Item *EIUSDEM* de scripturis veteribus ac novis contra Arrianos. = *PL.*, t. XXXIX, col. 1689-90.

4. (F. 112-172). [Sermones de verbis Apostoli]. Les trente-deux premiers sermons de la série indiquée *PL.*, t. XXXIX, col. 2431-32.

Parchemin; 172 feuillets; 0^m,33 × 0^m,23; XV^e siècle; deux colonnes; initiales rouges; ancienne pagination en chiffres romains r-clxix; signatures ar-xii. Sur le plat intérieur de la couverture, une ancienne étiquette porte: *Liber monasterii sancti Pauli in Zonia sive rubee vallis cameracensis dyocesis in brabantia iuxta bruxellas*. L'estampille de la Bibliothèque nationale de Paris, *R. F.*, se voit ff. 1 et 172. Reliure ancienne restaurée, veau brun estampé.

1097. (1705-10). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1-5). Divers extraits de S. AUGUSTIN. *Inc.* De Floro flora fuit hec exceptio tracta. Fundamentum aliud nemo potest ponere. *Des.* quoniam videbis eum sicuti est.

2. (F. 5^v-47). AUGUSTINUS. De sermone Domini in monte. = *PL.*, t. XXXIV, col. 1229 sqq.

3. (F. 47-79). [Sermones beati AUGUSTINI episcopi ad fratres de heremo]. = *PL.*, t. XL, col. 1235 sqq., les sermons nn. 43, 5, 26, 44, 14, 15, 17-22, 1-4, 6-13.

4. (F. 79-90). [THOMAS A KEMPIS]. De imitatione Christi. — C'est le livre I tout entier.

5. (F. 90^v-107). Liber beati AUGUSTINI de opere monachorum. = *PL.*, t. XL, col. 547 sqq.

6. (F. 107^v-119). [S. AUGUSTINUS]. Sermones. = *PL.*, t. LVII, col. 1082 (1); t. XXXIX, col. 1886; *ibid.*, col. 1093; de morte; t. XXXIX, col. 1695; *ibid.*, col. 2025; t. XL, col. 1358, *ibid.*, col. 1357; *MAI, Nova Patrum Bibl.*, t. I, p. 142, puis un autre sermon: *Inc.* Fratres karissimi, quod audivimus dici, fratres, diebus istis. *Des. mutil.* Dimitte michi quia peccavi tibi. Non ...

Parchemin; 119 feuillets; 0^m,29 × 0^m,195; XV^e siècle; deux colonnes, sauf les ff. 107^v-119^v. F. 1, on lit la note: *Lovaniensis collegii Societatis Iesu*. L'estampille rouge *R. F.* de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 1 et 109^v. Demi-reliure moderne; dos en maroquin rouge.

1098. (2342-51). — S. AUGUSTINUS. Sermones.

1. (F. 1^v). Table des matières.

2. (F. 2-53). Vita sancti Augustini episcopi. = *BHL.*, n. 787.

(1) Ce sermon est de S. CÉSaire.

3. (F. 53-57^v). Tituli omnium librorum quos edidit beatus Augustinus episcopus. = *BHL.*, n. 786.
4. (F. 58-63^v). Vita beate Monice vidue matris sancti Augustini patris nostri (1).
5. (F. 63^v-67). De translatione eiusdem. = *BHL.*, n. 6002.
6. (F. 67^v-75^v). Tractatus beati AUGUSTINI episcopi de essentia divina. = *PL.*, t. XLII, col. 1199 sqq.
7. (F. 76-79^v). Legenda brevis et vera de beato Augustino venerabili episcopo (2).
8. (F. 79^v-81^v). Varia de ordine Augustinensium et de S. Augustino.
9. (F. 82-85). Sermo beati AUGUSTINI episcopi de honestate mulierum. = *PL.*, t. XXXIX, col. 2031.
10. (F. 85-94). Sermo beati AUGUSTINI episcopi de oratione (3).
11. (F. 94-98). Sermo sancti AUGUSTINI de igne purgatorio. = *PL.*, t. XXXIX, col. 1946.
12. (F. 98-102^v et 105-106^v). AUGUSTINUS. De tribus habitaculis. = *PL.*, t. XL, col. 991.
13. (F. 102^v-105). Sermo EIUDEM de laudando Deum. = *PL.*, t. XXXIX, col. 2211.

Parchemin; 106 feuillets; 0^m,21 × 0^m,14; XV^e siècle; deux colonnes, à partir du f. 82. Quelques capitales, initiales rouges et bleues. F. 1^v, il y a la note : *Iste liber pertinet monasterio de Eensteyn in Zwynudraco* (4). L'estampille rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 2 et f. 106^v. Reliure ancienne restaurée, veau brun estampé; titre sous corne encadré de cuivre: *Vita sancti Augustini et sancte Monice matris eius cum pluribus aliis*.

1099. (20716-19). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1-7^v). [Liber de conflictu vitiorum et virtutum]. *Inc. mutil...* retrahens, vel terrenis negotiis implicare. *PL.*, t. XL, col. 1098, cap. xiv. *Des. mutil.* species vestimentorum eius particulam *Ibid.*, col. 1104, cap. xxxvii.

2. (F. 8). [S. AUGUSTIN. Sermo]. *Inc. mutil.* erubescunt peccare et erubescunt rogare. *Des. mutil.* sed et mihi ipsi dico in secula seculorum.

3. (F. 8). Sermo sancti AUGUSTINI de divite. *Inc.* Audite itaque qui estis in populo et stulti aliquando sapite. *Des.* et misericordes misericordiam consequentur a Domino nostro... qui est benedictus... Amen.

(1) Cf. *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. I, p. 328.

(2) Cf. *ibid.*, p. 329.

(3) Publié par MAI, *Nova Patrum bibliotheca*, t. I, p. 464.

(4) Voir au sujet de ce monastère de la Congrégation de Windesheim, situé à Zwynudrecht, en face de Dordrecht, J. ACQUOY, *Het Klooster te Windesheim*, t. III, p. 19-21.

4. (F. 8^v-9). De pace. = *PL.*, t. XXXIX, col. 1858-59.
5. (F. 9-9^v). De flagellis. *Inc.* Quem enim diligit Deus corrigit. *Des.* quia victorem formidinis dyabolum cum seculo superastis.
6. (F. 10-10^v). De nativitate Christi (1).
7. (F. 10^v-12). Sèrmon. *Inc.* Ad te manum meam. *Des.* et animam humilem exaltavit... Amen.
8. (F. 12-13). Sèrmon. *Inc.* In hodiernum convivium qui solemni frequentia convenistis. *Des.* perpetuam unitatem teneamus ut cum sanctis omnibus in regnis celestibus triumphemus.
9. (F. 13-13^v). [Sermo S. AUGUSTINI] (2).
10. (F. 13^v-14). De latrone in cruce (3).
11. (F. 14-15^v). De cruce Christi. = *PL.*, t. XXXIX, col. 2047.
12. (F. 15^v-16). De pace. = *Ibid.*, col. 1931.
13. (F. 16^v-18^v). De caritate. *Des. mutil.* O caritas quam magnas vi ... = *Ibid.*, col. 1952.
14. (F. 19-24). Tractatus de amoris reprobatione. = *Inc. mutil.* et eas singulis amantibus. *Des.* quia eiusdem sponsi voce testante, nescimus diem neque horam.
15. (F. 25). Les empeschemens que la parsonne a de venir à perfection. — Extraits d'un traité ascétique, en français.
16. (F. 26-37^v). Collation ou sermon pour la nativité de Notre-Seigneur, en français.

Parchemin, les feuillets 1-7, 19-24, en papier, le reste; 37 feuillets; diverses dimensions; 0^m,26 × 0^m,20 et 0^m,135 × 0^m,95; XII^e, XIV^e, XV^e et XVI^e siècle. F. 24^v, il y a la note: *Pertinet ad monasterium vallis sancti Martini in Lovanio collatum eidem a magistro Iohanne de Brande* (4); et f. 37^v: *De par le tout vostre petit orateur Frère Jan de Saint Aubin.* Demi-reliure maroquin rouge.

1100. (9517-20). — S. AUGUSTINUS. Sermones.

1. (F. 1-8). Annotatio precipuarum sententiarum divi Aurelii Augustini.
2. (F. 9-9^v). Annotatio sermonum de verbis Domini.
3. (F. 10-111^v). Divi AURELII AUGUSTINI Hipponensis episcopi de verbis Domini Salvatoris.

C'est la série des 64 sermons signalée *PL.*, t. XXXIX, col. 2429-31.

4. (F. 112). Divi Aurelii Augustini Hipponensis episcopi sermonum de verbis Apostoli quorundamque aliorum summaria ac brevis annotatio.

(1) Publié dans l'édition de Venise de 1742 des œuvres de S. Fulgence, p. 356.

(2) Voir MAL, *Nova Patrum bibliotheca*, t. I, p. 60.

(3) *Ibid.*, t. I, p. 69.

(4) SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 227.

5. (F. 113-192). De verbis apostoli sermones.

Série des 37 sermons indiqués, *ibid.*, col. 2431-32.

6. (F. 192-234^v). Beatissimi GREGORII pape totius ecclesie luminis preclarissimi in septem psalmos penitenciales explanatio admodum utilis. = *PL.*, t. LXXXIX, col. 547.

7. (F. 235-240). Materiarum ac sententiarum precipue notandarum in sermonibus divi Aurelii Augustini de verbis apostoli summaria brevisque annotatio.

Parchemin; 240 feuillets; 0^m,32 × 0^m,212; XVI^e siècle, car f. 8, on lit : *Finis 1521 . A. B.* ; deux colonnes ; titre courant ; initiales rouges et bleues ; ancienne pagination en rouge 1-184. Ce volume provient de Saint-Laurent à Liège, car f. 1, il reste la cote *MM. 3-8* de cette bibliothèque. L'estampille rouge, *R. F.*, de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 1 et f. 240^v. Reliure moderne veau raciné ; au dos, le titre doré : *Augustinus de verbis Domini . Gregorius in psalmos poenitentiales*, qui se trouve aussi à l'intérieur sur une étiquette en maroquin rouge ; plus bas, les armes de Belgique et l'inscription *Bibl. royale*.

1101. (2839-43) — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1-21). Libellus sancti AUGUSTINI de disciplina christiana. = *PL.*, t. XL, col. 667.

2. (F. 21-26^v). Sermo sancti ERACLII presbiteri discipuli sancti Augustini episcopi ipso praesente habitus. = *PL.*, t. XXXIII, col. 966-68.

3. (F. 26^v-34). Sermo sancti IOHANNIS Constantinopolitani episcopi de compunctione cordis. = *PG.*, t. XLVII, col. 393 sqq.

4. (F. 34^v-41^v). EIUSDDEM secundus de cordis compunctione. = *Ibid.*, col. 411 sqq.

5. (F. 42-66). Alexandri regis Macedonum et Dindimi regis Bragmanorum de philosophia per litteras facta conlatio (1).

6. (F. 66^v-74). Epistolae SENECAE ad apostolum Paulum et Pauli ad eundem (2).

7. (F. 75-108^v). De concordia testimoniorum sancti GREGORII pape urbis Rome. *Des. mutil.* Paulus previdit qui utraque tam... = *PL.*, t. LXIXX, col. 659-78.

Parchemin; 108 feuillets ; 0^m,203 × 0^m,135 ; IX^e siècle. Denui-reliure moderne.

1102. (10796-800). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1). Index.

2. (F. 1^v). Notes sur les traités suivants.

(1) Sur les éditions de cette lettre souvent publiée, cf. FABRICIUS-HARLES, *Bibliotheca graeca*, Hamburgi, 1793, t. III, p. 28.

(2) Voir ci-dessus, p. 29.

3. (F. 2-25). Liber sancti AUGUSTINI episcopi de octo questionibus ad Dulcitiu. = *PL.*, t. XL, col. 147 sqq.

4. (F. 25-62). Liber EIUSDEM de fide et operibus. = *Ibid.*, col. 197 sqq.

5. (F. 62-81^v). Liber de cura pro mortuis gerenda. = *Ibid.*, col. 591 sqq.

6. (F. 81^v-125). Ad Pollentium de adulterinis coniugiis. = *Ibid.*, col. 451 sqq.

7. (F. 125-153). Tractatus beati AUGUSTINI de continentia. = *Ibid.*, col. 349.

8. (F. 153-158). Liber de duabus animabus. = *PL.*, t. XLII, col. 93.

Il n'y a que la *Retractatio*, t. XXXII, col. 608-12, et le commencement du livre. *Des. mutil.* indigens illud despicerere.

Parchemin; 158 feuillets; 0^m.245 × 0^m.175; X^e siècle, sauf les feuillets 1-5, qui sont du XIV^e siècle. Ce volume provient de Saint-Laurent à Liège, car f. 1, il y a la cote *MM, 3-14*, et plus loin on lit, f. 1 : *Iste liber pertinet ad sanctum Laurentium extra muros leodienses*, et f. 2 : *Liber sancti Laurentii iuxta Leodium*. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris, aux faisceaux, se trouve f. 2 et f. 158^r. Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré, reproduit à l'intérieur sur une étiquette en maroquin rouge : *Augustinus de octo questionibus, X saec.*; en dessous, les armes de Belgique et l'inscription *Bibl. royale*.

1103. (444-52). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1^v). Table des matières.

2. (F. 2-12^v). Liber sancti AUGUSTINI ad Paulum et Eutropium de perfectione iustitiae hominis. = *PL.*, t. XLIV, col. 291 sqq.

3. (F. 11^v-28^v). EIUSDEM ad Thimasium et Iacobum de natura et gratia. = *Ibid.*, col. 247 sqq.

4. (F. 28^v-31). Epistolae duae AURELI AUGUSTINI episcopi ad Valentinum de gratia et libero arbitrio. = *Ibid.*, col. 875-80.

5. (F. 31-44^v). Liber AURELI AUGUSTINI ad Valentinum monachum de gratia et libero arbitrio. = *Ibid.*, col. 881 sqq.

6. (F. 44^v-57). EIUSDEM de correptione et gratia. = *Ibid.*, col. 915 sqq.

7. (F. 57-59^v). Epistola PROSPERI ad Augustinum de querela Gallorum. = *PL.*, t. XLV, col. 1833 sqq.

8. (F. 59^v-62). Epistola HILARII ad Augustinum de eadem re. = *PL.*, t. XXXIII, col. 1007 sqq.

9. (F. 62-74). Liber sancti AUGUSTINI de predestinatione sanctorum. = *PL.*, t. XLIV, col. 959 sqq.

10. (F. 74-90^v). Liber EIUSDEM de dono perseverantiae. = *PL.*, t. XLV, col. 993 sqq.

11. (F. 90^v-109). AURELI AUGUSTINI doctoris contra Pelagianos et Celestianos hereticos yppomnesticon liber. = *Ibid.*, col. 1611.

12. (F. 109-151^v). Liber sancti HIERONIMI presbiteri contra Iovinianum hereticum. = *PL.*, t. XXIII, col. 211.

13. (F. 152-153^v). Fragments d'une commentaire sur les Décrétales. *Inc.* Non est aliquomodo quilibet decipiendus. *C.* Nec artificiose. *Des.* qui nesciens dormivit cum eius sorore. *C.* In lectum.

Parchemin; 153 feuillets; 0^m,34 × 0^m,24; XI^e siècle; deux colonnes; grandes et belles capitales; titres en majuscules rustiques. F. 1, il y a la note: *Reddatur Augustino Hunnaco Maglenano*; f. 151^v: *Sum Augustini Hunnaci. Ex dono M. N. Aug. Hunnaci sum Bibliothecae Societ. Iesu. Lovanii*, et f. 153^v: *Sum Augustini Hunnaci*; f. 2: *Collegii Societatis Iesu Lovanii, V. 1*. Demi-reliure moderne; dos en maroquin brun, avec le titre doré: *B^e Augustini de praelectione iustitiae hominis cum aliis eiusdem tractatibus*; plus bas, le chiffre couronné de Léopold I^{er}.

1104. (5463-67). — S. AUGUSTINUS. Opera, et autres traités de divers auteurs.

1. (F. 1, 59). Vers.
2. (F. 1^v-6^v). AUGUSTINUS super simbolum. = *PL.*, t. XL, col. 629.
3. (F. 6^v-19). [AUGUSTINUS]. De symbolo. = *Ibid.*, col. 637.
4. (F. 19-26). [AUGUSTINUS]. De simbolo sermo tertius. = *Ibid.*, col. 651.
5. (F. 26-32^v). [AUGUSTINUS]. De symbolo sermo quartus. = *Ibid.*, col. 659.
6. (F. 32^v-36^v). Sermo sancti AUGUSTINI de quatuor virtutibus caritatis. = *PL.*, t. XLVII, col. 1127.
7. (F. 36^v-42). Sermo S. AUGUSTINI ad competentes de renovatione vite. = *PL.*, t. XL, col. 677.
8. (F. 42-47). [S. AUGUSTINUS]. De quarta feria. = *Ibid.*, col. 685.
9. (F. 47-52^v). [S. AUGUSTINUS]. De cataclismo. = *Ibid.*, col. 693.
10. (F. 52^v-58^v). [S. AUGUSTINUS]. De tempore barbarico. = *Ibid.*, col. 690.

11. (F. 59^v). Table des homélies suivantes de S. Jean Chrysostome.

12. (F. 60-101^v). Omelie sancti IOHANNIS CRISOSTOMI.

1. De eo quod dicitur in ps. viii^o *Patientia pauperum non peribit in aeternum*. 2. De eo quod dicit Ysaïas propheta *Cantate Domino canticum novum*. 3. De eo quod dicitur in psalmo cxxi^o *Fiat pax in virtute tua*. 4. De eo quod scriptum est in psalmo lxxxiiii^o *Non in aeternum irascaris nobis*. 5. De eo quod scriptum est in psalmo xxxiii^o *Quis est homo qui vidit vitam*. 6. De eo quod scriptum est in psalmo cxlii^o *Non intres in iudicium cum servo tuo Domine*. 7. De eo quod scriptum est in psalmo viii^o *Narrabo omnia mirabilia tua*. 8. De eo quod scriptum est in psalmo xxiii^o *Dirige me in veritate tua*. 9. De eo in psalmo xxv^o *Redime me Domine*. 10. De libro Iudicum, ubi Iepte perrexit ad pugnam. 11. De eo quod in Ysaïa propheta *Potestatis et pacis eius non erit finis*. 12. De eo quod in eodem propheta *Gaude Syon, ecce rex tuus venit tibi*. 13. De eo quod in psalmo lxxi^o *Descendet sicut pluvia in vellus*. 14. De psalmo cxviii^o

Bonitatem fecisti cum seruo tuo. 15. De eo quod ... in Zacharia propheta *Ecce vir oriens nomen eius.* 16. De ... psalmo xxviii^o *Domine Deus meus in eternum confitebor tibi.* 17. De eo quod Petrus ait ad Dominum *Domine, si peccaverit in me frater meus.* 18. De ... psalmo xxvi^o *Dominus illuminatio mea.* 19. De psalmo nonagesimo *Qui habitat in adiutorio altissimi.* 20. De ... psalmo lxxviii^o *Exaudi me, Domine.* 21. De lapsu primi hominis. 22. Item de Adam et Eva. 23. De ... psalmo xciii^o *Quis consurget mihi adversus malignantes.* 24. De David ubi dicit : *Qui sum ego, Domine mi.* 25. De ... psalmo cxviii^o *In proximo es, Domine.* 26. De expositione simboli. 27. De expositione orationis dominice. 28. Item de expositione simboli. 29. De psalmo xxi^o *Dominus regit me et nichil mihi deerit.* 30. De eo quod scriptum est in evangelio *Nolite esse sicut hypocrite et pharisei.*

13. (F. 101^v-111^v). Cronographia cuiusdam sibi ut visum est [et est RATHERII, Lobienensis abbatis, postmodum Veronensis ac demum Leodiensis episcopi] (1).

14. (F. 111^v-112^v). EIUDEM de quadragesima (2).

15. (F. 112^v-116). EIUDEM sermo in cena Domini (3).

16. (F. 116-118). Sermo EIUDEM de die sancto pasche (4).

17. (F. 118-119). EIUDEM post Pascha (5).

18. (F. 119-119^v). In octavis Pasche (6).

19. (F. 119^v-120^v). Item sermo de die sancto Pasche (7).

20. (F. 120^v-121^v). De ascensione Domini (8).

Parchemin ; 121 feuillets ; 0^m,262 × 0^m,198 ; XI^e siècle ; les feuillets 1 et 59 sont à deux colonnes ; grandes initiales de diverses couleurs. F. 1^v, on lit : *Liber sancti Petri Gemblacensis*, f. 121^v : *Liber hic pertinet monasterio Gemblacensi* ; et sur le premier feuillet de garde : *Bibliothecae gemblacensis*. Reliure du XVII^e siècle ; veau raciné ; au dos, le titre doré : *Augusti . in symbolum* (9).

1105. (9349-54). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1). Table des matières.

(1) Les mots entre crochets ont été ajoutés au XVI^e siècle. Voir, pour cette pièce, A. VOGEL, *Ratherius von Verona*, Iena, 1854, t. II, p. 41-45, 203-204.

(2) Cf. *ibid.*, t. II, p. 200, n. 19. Ce sermon a été publié par d'ACHERY, *Spicilegium*, t. I, p. 391-92.

(3) Cf. VOGEL, *op. cit.*, t. II, p. 204-5, n. 26. Ce sermon est publié *ibid.*, p. 221-31, d'après ce manuscrit.

(4) Cf. VOGEL, *op. cit.*, t. II, p. 201, n. 20.

(5) Cf. *ibid.*, p. 214, n. 47.

(6) *Ibid.*, p. 214, n. 46.

(7) *Ibid.*, p. 213, n. 45.

(8) *Ibid.*, p. 201, n. 21.

(9) Voir une description de ce manuscrit dans VOGEL, *op. cit.*, t. II, p. 41-45.

2. (F. 1^v). Ex libro *Retractationum* secundo capitulo XLI. = *PL.*, t. XXXII, col. 635-36.
3. (F. 2-117^v). AURELI AUGUSTINI episcopi de Trinitate libri numero quindecim. = *PL.*, t. XLII, col. 819 sqq.
4. (F. 118-119). [Epistola AGNELLI ad Armenium]. = *PL.*, t. LXVIII, col. 381 sqq.
5. (F. 119^v-127). Liber AURELI AUGUSTINI contra Felicianum. = *PL.*, t. XLII, col. 1157.
6. (F. 127-134^v). Liber AURELI AUGUSTINI episcopi contra quinque hereses. = *Ibid.*, col. 9.
7. (F. 134^v-153). EIUSDEM [de Genesi] contra Manicheos. = *PL.*, t. XXXIV, col. 173 sqq.
8. (F. 153-158). EIUSDEM de fide catholica vel simbolo. = *PL.*, t. XL, col. 181.
9. (F. 158-164^v). De unitate Trinitatis. = *PL.*, t. XLII, col. 1207.
10. (F. 164^v-203^v). AURELI AUGUSTINI episcopi contra Maximinum episcopum. = *Ibid.*, col. 741.
11. (F. 204-207). Collatio beati AUGUSTINI cum Pascentio Arriano. = *PL.*, t. XXXIII, col. 1155.
12. (F. 207-207^v, 208^v, 208). [Epistola WAZELINI ad Lescelinum canonicum de ordine monachorum et canonicorum] (1).
13. (F. 208). [Epistola WAZELINI ad Wibaldum Corbeiensem et Stabulensem abbatem].

Parchemin ; 208 feuillets ; 0^m,33 × 0^m,24 ; XI^e siècle ; quelques belles lettrines. F. 1, on lit : *Sancti Laurentii extra muros leodienses*, *M-M*, 3-7. L'estampille rouge, *R. F.*, de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 2 et f. 208^v. Reliure moderne, veau raciné ; au dos, le titre doré : *Augustini varia opuscula*, reproduit à l'intérieur du volume sur une étiquette en maroquin rouge ; plus bas, les armes de Belgique et l'inscription : *Bibl. royale*.

1106. (10792-95). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1). Index.
2. (F. 1^v-3). Ex libro *Retractationum* sancti AUGUSTINI episcopi super sermones Domini in monte. = *PL.*, t. XXXII, col. 614-17.
3. (F. 3^v-59). Liber sancti AUGUSTINI de sermone quem Dominus noster Ihesus Christus discipulis suis in monte est locutus. = *PL.*, t. XXXIV, col. 1229 sqq.
4. (F. 59-68^v). EIUSDEM de agone christiano. = *PL.*, t. XL, col. 289 sqq.
5. (F. 68^v-77). Liber eiusdem de patientia. = *Ibid.*, col. 611 sqq.

(1) Ce traité a été publié par MARTENE, *Thesaurus Anecd.*, t. I, p. 255-90, qui l'attribuait à Rupert de Deutz. Voir, à ce sujet, DOM URSMER BERLIÈRE, *Mélanges d'histoire bénédictine*, t. I, 1897, p. 80-81.

6. (F. 77^v-121). Tractatus BEDE presbiteri in canticis canticorum. = *PL.*, t. XCI, col. 1065 sqq.

Parchemin; 121 feuillets; 0^m,25 × 0^m,18; XII^e siècle; quelques belles lettres. F. 1, la cote *MM. 3-13* de la bibliothèque de Saint-Laurent à Liège et la note : *Pertinet ad sanctum Laurentium extra muros leodienses*. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris, aux faisceaux, se trouve f. 1 et f. 121. Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré reproduit sur une étiquette en maroquin rouge : *Augustinus de sermone Domini, XII saec.*; en dessous, les armes de Belgique et l'inscription *Bibl. royale*.

1107. (5041-46). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1). Sentences diverses extraites de S. AUGUSTIN.
2. (F. 1^v-11). Liber beati AUGUSTINI de disciplina christiana. = *PL.*, t. XL, col. 669.
3. (F. 11-13). Sermo sancti AUGUSTINI. = *Ibid.*, col. 693.
4. (F. 13-21). Sermo sancti AUGUSTINI de symbolo. = *Ibid.*, col. 627.
5. (F. 21-24^v). De oratione dominica. = *Ibid.*, col. 285, cap. cxv-cxvi.
6. (F. 25-32). Sermo AUGUSTINI de oratione dominica. *Inc.* Pater noster ... Tenemus in symbolo. *Des.* Omnia petamus ut ad illa perveniamus et hic regamur ne ab illa separemur. Amen.
7. (F. 32-35). Sermo BERNARDI abbatis [de festivitibus Iudaeorum]. *Inc.* Prima festivitas apud iudeos continua dicebatur. *Des.* Vox exultationis et salutis in tabernaculis iustorum.
8. (F. 35-39^v). EIUSDEM de prelatiis. *Inc.* Deus superbis resistit. *Des.* et captivantem se in legem peccati.
9. (F. 39^v-44^v). Autres extraits de S. BERNARD.
10. (F. 44^v-52^v). Sermo GREGORII Nazianzeni de Ieremia (1).
11. (F. 52^v-61^v). GREGORII Nazianzeni [de nativitate Domini].
12. (F. 61^v-66). EIUSDEM de Pentecosten.
13. (F. 66-74). [GREGORII Nazianzeni] sermo de ascensione Domini.
14. (F. 75-82^v). [GREGORII Nazianzeni] sermo de Pentecosten.
15. (F. 82^v-101^v). Sermo GREGORII Nazanzeni episcopi [apologeticus].
16. (F. 101^v-110). Epistola MARTINI episcopi ad Myrronem regem. = *PL.*, t. LXXII, col. 21.
17. (F. 110-112). Sermo sancti AUGUSTINI. = *PL.*, t. XXXIX, col. 1713.

(1) Ce discours de S. Grégoire de Nazianze et les cinq suivants, traduits par Rufin, ont été publiés dans l'ouvrage suivant : *Liber B. Gregorii Nazianzeni translatus a quodam Rufino impressus Argentinae per Ioannem Knoblouch, anno MDVII*. Cf. *PG.*, t. XXI, col. 39.

18. (F. 112-113). EIUDEM [contra concupiscentiam]. *Inc.* Concupiscentia cum conceperit, parit peccatum. *Des.* ambas fac, ne sine una alia remaneat.

19. (F. 113-118). Sermo eiusdem. *Inc.* Spiritu ambulate ... Apostoli hec verba sunt, qui describit nobis luctam quam habemus in hoc corpore. *Des.* exurge quantotius et mortuos suscitavit Christus.

20. (F. 118-125). Sermo S. AUGUSTINI de sancto Petro et Iohanne. = *PL.*, t. XXXIX, col. 1969.

21. (F. 125-130). Sermo S. AUGUSTINI de sancta Perpetua et Felicitate. = *PL.*, t. XXXVIII, col. 1284-85 (1).

22. (F. 131). Table des matières.

Parchemin; 131 feuillets; 0^m,168 × 0^m,10; XIII^e siècle; signatures i-xv. Au sujet de la provenance de ce volume, il y a les notes suivantes, f. 2: *Iste liber est fratrum monasterii sancti Beati prope Confluentiam ordinis Carthusiensis* (2), et f. 1: *Societatis Iesu Antverpiensis D. P. F. 130^v*, on lit ce distique: *Anno M.DC.XXII.*

*Arma et equos Belgis audax Mansfeldius infert,
Corduba vicit equos, sed fuga capta viris* (3).

Demi-reliure moderne; dos en maroquin rouge.

1108. (5138-41). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (Au verso du premier feuillet de garde). Table des matières.
2. (F. 1-14). Liber AUGUSTINI de spiritu et anima. = *PL.*, t. XL, col. 779.
3. (F. 14-14^v). Courts extraits de S. AUGUSTIN et de S. CYPRIEN.
4. (F. 15-25^v). Expositio canonis. *Inc.* Quatuor sunt de substantia sacramenti altaris. *Des.* requiem quam et in principio eis optamus dicentes: Requiem eternam etc.
5. (F. 25^v-26). Vers sur les trois messes de Noël.
Inc. In natale sacro sacre sollempnia misse
Quid signent vel cur tres celebrentur habe.
Des. Martirum calicem gustant in carne fideles.
6. (F. 27-55). Testamentum XII patriarcharum filiorum Iacob (4).
7. (F. 55^v-57^v). [AUGUSTINUS. De fide].
8. (F. 57^v-98^v). [*Credo* quem assignavit G. persona de Brecka consanguineo suo fratri Arnolde de Molendino ordinis fratrum mino-

(1) Le texte de notre manuscrit paraphrase la rédaction originale.

(2) Voir, au sujet de ce monastère, LE COUTEUX, *Annales Carthusienses*, 1889, t. V, p. 307.

(3) Ce distique fait allusion à la bataille de Fleurus, 29 août 1622, où Ernest de Mansfeldt fut battu par Cordova, général de l'armée espagnole. Voir C^{te} DE VILLERMONT, *Ernest de Mansfeldt*, t. II, 1866, p. 100-3.

(4) Sur les éditions de cet apocryphe, voir E. KAUTZSCH, *Die Apokryphen und Pseudepigraphen des Alten Testaments*, t. II, Tübingen, 1900, p. 458 sqq.

rum] (1). *Inc.* Credo in unum Deum. *Des. mutil.* Indulgentia autem que fit ex potestate clavium scilicet m ...

Parchemin; 98 feuillets; 0^m, 22 × 0^m, 14; XIII^e siècle; les ff. 1-26 sont à deux colonnes. Demi-reliure moderne; au dos, en maroquin rouge, les titres dorés des divers traités et le chiffre couronné de Léopold I^{er}.

- 1109.** (5246-52). — S. AUGUSTINUS. Opera.
1. (Feuillet de garde). Fragment de missel.
 2. (F. 1^v). Table des matières.
 3. (F. 2-14). Liber aromatum beati AUGUSTINI (2) qui aureus dicitur vel speculum cordis. *Inc.* Confessio duplex est. *Des.* Amemus ergo eum qui huius amici praesentia amantium facit animos delicatos.
 4. (F. 14-15^v). Actus quorundam sanctorum patrum. *Inc.* Erat quidam monachus in hereino commanens. *Des.* Dominica tamen die, ad eundem semper revertebatur locum sacramentorum gratia.
 5. (F. 16-19^v). Beati AUGUSTINI meditationes.
 6. (F. 20-26^v). De septem criminalibus peccatis.
 7. (F. 27). De filiabus ire.
 8. (F. 28-97^v). Compilatio fratris GUIDONIS ordinis Clarevallensis super quartum librum sententiarum (3).
 9. (F. 97^v). THOMAS AQUINAS. [De pollutione nocturna].
 10. (F. 98-103). Expositio super cantica psalterii.
 11. (F. 103). Commentaire sur le texte: *Omnes sunt administratorii spiritus.*
 12. (F. 103-104). Commentaire sur le Livre II des Rois, cap. xi, v. 26-27.
 13. (F. 105-105^v) Hymne à la Vierge. *Alma, serena, pia, praeclara, beata Maria.*
 14. (F. 105^v). [De beata Virgine].

Parchemin; 105 feuillets; 0^m, 243 × 0^m, 16; XIII^e siècle; deux colonnes. F. 2, il y a la note: *Pertinet ad Carthusiam prope Dyest in Zeelhem*, et f. 27: *Ad Carthusiam in Zeelhem prope Dyest*; f. 2: *Coll. Societatis Iesu Lovaniensis M. B. X, 50* (4).

1110. (4820-25). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1-1^v). Fragment d'un traité sur la patience.
2. (F. 2). Table alphabétique des matières.

(1) C'est le titre que porte ce traité dans la table des matières placée en tête du volume.

(2) Ce traité n'est pas de S. Augustin.

(3) Voir, au sujet de ce traité, DE VISCH, *Bibliotheca scriptorum sacri ordinis Cisterciensis*, Duaci, 1649, p. 120.

(4) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. I, p. 326 (dernière ligne) et p. 327 (première ligne).

3. (F. 2^v-37^v). Liber exhortationis beati AUGUSTINI episcopi ad quemdam comitem karissimum sibi. = *PL.*, t. XL, col. 1047.

4. (F. 37^v-43). Liber sancti AUGUSTINI de quatuor virtutibus caritatis. = *PL.*, t. XXXIX, col. 1952.

5. (F. 43-49^v). [AUGUSTINUS]. De cantico novo. = *PL.*, t. XL, col. 677.

6. (F. 49^v-94^v). [AUGUSTINUS]. De fide catholica. = *PL.*, t. XXXIX, col. 2180-81 et t. XL, col. 627.

7. (F. 94^v-95). [ANSELMUS]. Oratio ad Deum Patrem et Filium et Spiritum sanctum et ad omnes sanctos. = *PL.*, t. CLVIII, col. 931.

8. (F. 95-95^v). Hymni domni ANSELMUS in commemoratione Marie. = *Ibid.*, col. 1035.

9. (F. 95^v-99). Diverses prières, entre autres : *Oratio dicenda in nocte ad vigiliis, oratio dicenda in matutinis horis, ad primam, tertiam, sextam, nonam, vespas, completorium, ad Dominum Ihesum Christum.*

10. (F. 99-100^v). [De miseriis hominum]. *Inc.* Licet cunctorum poetarum carmina. *Des.* nunquam periculum sine periculo vitatur.

11. (F. 100^v). Extrait de CASSIODORE.

12. (F. 101-101^v). Fragment d'un traité sur la vie après la mort.

Parchemin; 101 feuillets; 0^m,228 × 0^m,155; XIII^e siècle; les feuillets 94^v-101^v sont à deux colonnes; ancienne pagination à l'encre rouge 1-xc; signatures 1 à xi. F. 1^v, f. 100^v et f. 101, on lit : *Liber sancte Marie de Villari in brabantia*. Reliure ancienne restaurée, veau brun.

1111. (8386-96). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1^v). Table des matières.

2. (F. 2). Note sur les traités contenus dans le volume.

Les feuillets 2^v-6 sont blancs.

3. (F. 7-23). Sermo domni Odonis monachi Cantuarie in honore sancte crucis. *Inc.* Ita vos hodie, fratres, erga crucem Christi. *Des.* Cum ipso semper gaudeamus in patria. Ipsi cum Patre ... Amen.

4. (F. 23-38). Item sermo domni Odonis monachi Cantuarie de muliere Chananea. *Inc.* Egressus Ihesus secessit in partes Tyri et Sydonis. *Des.* Qua libertate ipse nos liberare dignetur. Amen.

5. (F. 38-42). Penitentia David. *Inc.* Miserere mei Deus. Merito psalmus iste penitentibus iniungitur. *Des.* in humilitate imitatus fuerit David.

6. (F. 42-51^v). Versus HILDEBERTI Cenomannensis episcopi ... in vitam sancte Marie Egyptiace. = *BHL.*, n. 5419.

7. (F. 51^v-61). Liber sancti AUGUSTINI episcopi contra hereses quinque. = *PL.*, t. XLII, col. 9 sqq.

8. (F. 61-66^v). Sermo ad sacerdotes de sacramento altaris. *Inc.*

Panem angelorum manducavit homo. *Des.* ministrando auxilium gratie sue.

9. (F. 66^v-81). Sermo magistri ACHARDI abbatis sancti Victoris Parisius. *Inc.* Ductus est Ihesus in desertum a spiritu. *Des.* Ibi satiatur plenarie apparente glorie illius plenitudine, qui est benedictus ... (1).

10. (F. 81-91). In sollempnitate omnium sanctorum sermo. *Inc.* Magnorum et spiritualium virorum est. *Des.* et superexaltari condecet et ab omnibus et pro omnibus, qui est laudabilis ... Amen.

11. (F. 91-105). In dedicatione ecclesie sermo. *Inc.* Sapientia edificavit sibi domum. *Des.* sed a tota celesti domo tua sine fine lauderis pro toto me.

12. (F. 105-109). [Epistola S. BERNARDI de baptismo]. = *PL.*, t. CLXXXII, col. 1031 sqq.

13. (F. 109-131). AUGUSTINUS ad Renatum de quantitate anime. = *PL.*, t. XXXII, col. 1035.

14. (F. 131^v-143). AUGUSTINUS ad eundem Renatum de origine anime. = *PL.*, t. XLIV, col. 475.

15. (F. 144-175). Sermones BERNARDI abbatis Clarevallis (2).

16. (F. 176-212^v). Liber ANSELMI Cantuariensis archiepiscopi *Cur Deus homo*. = *PL.*, t. CLVIII, col. 360.

17. (F. 212^v-218). Liber EIUSDEM de quatuordecim beatitudinibus (3).

18. (F. 218-223^v). Epistole eiusdem sex. = *PL.*, t. LVIII-IX, lib. II, 22; lib. I, 29; lib. III, 12, 13, 157.

19. (F. 223^v). Epytaphium domni Anselmi.

20. (F. 223^v-226^v). [De sacrificio Isaac]. *Inc.* Obtulit pater filium sacrificium vespertinum. *Des.* et plenum gaudium, quod Deus est, feliciter pertingere mereamur. Amen.

Parchemin; 226 feuillets; 0^m,26 × 0^m,172; XIII^e siècle; les feuillets 42-51 sont à deux colonnes; initiales en diverses couleurs; signatures I-VI, I-III, I-V. F. 2, il y a cette note: *Liber hic membranaceus ex Angliæ calamitate vastatus ab Iconoclastis ecclesiis sub Henrico VIII rege in Belgium venum allatus e Bibliotheca Abrahami Ortelii redemptus est in auctione publica ab And. Schotto Antverpiano, Soc. Iesu. F. 7, on lit: Collegij Societatis Iesu Antverpiæ, 1598. D. P.* Autrefois ce volume portait l'ex-libris ✱ Ms. 200 de la bibliothèque des anciens hollandistes (4). Reliure parchemin.

1112. (10599-600). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1). Fragment presque illisible.

(1) Cf. *Hist. litt. de la France*, t. XIII, p. 455.

(2) Série de courts extraits des sermons de S. Bernard.

(3) Une note de la table des matières, f. 1^v, assure que ce traité, qui ne semble pas être de S. Anselme, a été imprimé dans l'ouvrage de TH. GALLETUS, *Religiosus*, Lyon, 1615, 8°. Il n'a pas été possible de vérifier l'exactitude de ce renseignement.

(4) Cf. *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. II, p. 208.

2. (F. 2^v). Index.

Les feuillets 3-4^v sont blancs.

3. (F. 5-80^v). Enchiridion beati AUGUSTINI episcopi ad Laurentium de fide, spe et caritate. = *PL.*, t. XL, col. 231.

4. (F. 80^v-104^v). AURELI AUGUSTINI doctoris liber ad Paulinum episcopum de cura pro mortuis gerenda. = *Ibid.*, col. 591.

Parchemin; 104 feuillets; 0^m,147 × 0^m,09; XIII^e siècle, sauf les feuillets 5-11 et 97-104, qui sont du XV^e (1438), d'après la note suivante, f. 104^v : *Finitus per fratrem Iohannem de Yride (1) anno Domini. 1438. in die beate Lucie virginis et martiris. Unum Ave Maria pro scriptore propter Deum dicite. Cf. f. 1^v, où on lit : Et transmisus per domnum abbatem in Lovanio quadam vice frater Iohannes de Yride reperit ibidem disruptos et disligatos quos emit et hoc modo reparavit anno Domini 1438. Orate pro eo unum Ave Maria vel duo.* Ce volume a appartenu à la bibliothèque de Saint-Laurent à Liège, car on voit, f. 3, la cote : *MM, 3-16* de cette bibliothèque, et f. 1^v, il y a la note : *Liber sancti Laurentij prope Leodium.* Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré, qui se trouve aussi à l'intérieur sur une étiquette en maroquin rouge : *Augustini Enchiridion*; au bas, l'inscription *Bibl. royale.*

1113. (II. 963). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1). Index.

2. (F. 1^v-95^v). *Retractatio AURELI AUGUSTINI ... tractatus de doctrina christiana.* = *PL.*, t. XXXII, col. 631-32; t. XXXIV, col. 9 sqq.

3. (F. 95^v-105). *Scriptum cuiusdam [PROSPERI] contra reprehensiones beati Augustini.* = *PL.*, t. LI, col. 155 sqq.

4. (F. 105-106). *HIERONIMUS ad Marcellinum et Anaphichie (sic) de anima.* = *PL.*, t. XXII, col. 1085-87.

5. (F. 106-107). *HIERONIMUS ad Alipium et Augustinum episcopos.* = *Ibid.*, col. 1181-82.

6. (F. 107-109). *Expositio fidei sancti IHERONIMI presbiteri ad Augustinum episcopum.* = *PL.*, t. XXX, col. 176.

7. (F. 109-118). *Epistola IHERONIMI presbiteri ad Pammachium de optimo genere interpretandi.* = *PL.*, t. XXII, col. 568-79.

8. (F. 118-126). *Epistola EPIPHANII Cipri episcopi ad Iohannem Constantinopolitanum a IHERONIMO translata.* = *Ibid.*, col. 517-27.

En tête du volume, un feuillet de garde, à moitié lacéré, contient des fragments de l'évangile de S. Luc, chap. ix.

Entre les feuillets 73 et 74, sur un bout de papier, reçu donné par J. C. Dussegnies, veuve de Jean Masselut, seigneur d'Aulnoit, en 1594.

Parchemin; 126 feuillets; 0^m,245 × 0^m,163; XIII^e siècle. F. 1 et f. 126, il y a la note : *Liber sancte Marie de Camberone*, et ff. 5, 9, 13, 17, 21, 27, 33, 37, 42, 46, 50, 56, 61, 66, 71, 77, 81, 85, 91, 97, 104, 109, 114, 119, 123, on lit : *De Camberone.* F. 1, il y a

(1) Cf., au sujet de Jean de Lairdieu, plus haut, p. 91.

l'ex-libris *Sir T. P. Middle Hill, 359*; et au verso de la couverture une étiquette de l'ancienne reliure avec le titre : *Augus. de doctrina christiana continens libros quatuor*. Ce volume a été acquis en 1888 pour fr. 4.70. Reliure moderne, veau brun estampé, avec l'inscription en relief : *Regia Bibl. Belgica*.

1114. (II. 968). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1). Index et plusieurs notes, entre autres celle-ci sur la mort de Charles le Téméraire : *Occidit heus princeps cum nobilibus ubi Nansi, anno 1477° secundum stilum romanum*.

2. (F. 1^v-24^v). Quaestiones OROSII et responsiones AUGUSTINI. = *PL.*, t. XL, col. 733 sqq.

3. (F. 25-39^v). Regula sancti BASILII (1).

4. (F. 40-67^v). Liber PASCASII diaconi urbis Rome de Spiritu sancto. = *PL.*, t. LXII, col. 9 sqq.

5. (F. 67^v-87). AURELII AUGUSTINI episcopi liber contra quinque hostium genera. = *PL.*, t. XLII, col. 1101 sqq.

Deux feuillets de garde, d'une écriture du X^e siècle, renferment des extraits bibliques, le premier un fragment de Daniel, ch. III, le second de l'évangile de S. Jean, ch. XII.

Parchemin : 87 feuillets ; 0^m,194 × 0^m,117 ; XIII^e siècle. F. 1, il y a la note : *Liber sancte Marie de Camberone* (2), et ff. 8, 15, 19, 25, 32, 39, 54, 64, 75, 81, on lit au bas de la page : *De Camberone*. Plus tard, ce volume a fait partie, sous le n. 4016, de la collection Phillipps ; il a été acquis par la Bibliothèque royale en 1888, pour 40 francs. Reliure ancienne restaurée ; veau brun estampé, avec le titre sous corne, entouré d'un cadre en cuivre.

1115. (II. 1072). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1^v). Index.

2. (F. 1^v). [Versus de libris S. Augustini].

Inc. Hic Augustinus pietatis in agmine primus.

Des. Isti sunt libri Cunonis tempore scripti,

Quos quicumque legis eius miserendo memor sis.

3. (F. 1^v-2). AUGUSTINUS in libro retractationum. = *PL.*, t. XXXII, col. 633-34.

4. (F. 2-69). AURELII AUGUSTINI disputationes XXXIII quos idem libros nuncupavit, sed non incongrue contra Faustum Manicheum de vita patriarcharum. = *PL.*, t. XLII, col. 207 sqq.

5. (F. 69-70^v). Expositio S. AUGUSTINI super dominica oratione. = *PL.*, t. XXXVIII, col. 393.

6. (F. 70^v-71^v). Execranda Arrii disputatio. = *PL.*, t. XLII, col. 677.

(1) Cf. HOLSTEN, *Codex regularum*, t. I, p. 67 sqq.

(2) Cf. SANDERUS, *Bibl. belgic. ms.*, part. I, pp. 359, 362.

7. (F. 71^v-76^v). AUGUSTINUS contra dogmata Arrii. = *Ibid.*, col. 683.
8. (F. 76^v-91^v). AUGUSTINUS adversus Maximinum Arrianorum episcopum. = *Ibid.*, col. 743.
9. (F. 91^v-92^v). Altercatio Germinii Arrianorum episcopi et Heraclii ... de fide (1).
10. (F. 92^v-97). Liber sancti AUGUSTINI de pastoribus. = *PL.*, t. XXXIX, col. 2706.
11. (F. 97-101^v). De ovibus. = *PL.*, t. XXXVIII, col. 295.
12. (F. 101^v-107^v). Retractatio sancti AUGUSTINI de duobus libris ad Simplicianum de diversis quaestionibus. — Expositio quarundam quaestionum ex epistola ad Romanos. = *PL.*, t. XXXII, col. 629-30; t. XL, col. 101-28.
13. (F. 107^v-111^v). Quaestiones de libro Regum. = *Ibid.*, col. 127-48.
14. (F. 111^v-116). Liber sancti AUGUSTINI episcopi epistole ad Romanos inchoata expositio. = *PL.*, t. XXXV, col. 2087.
15. (F. 116). Commonitorium S. AUGUSTINI quomodo sit agendum cum Manicheis. = *PL.*, t. XLII, col. 1153.
16. (F. 116^v-118). Sermo sancti AUGUSTINI episcopi de corpore perpetue virginis Marie. *Inc.* De sanctissimo corpore perpetue Virginis Marie eiusque sacre anime assumptione. *Des.* Sin autem, ut debui, ignosce tu et tui.

Parchemin; 118 feuillets; 0^m,355 × 0^m,24; XIII^e siècle; deux colonnes; très jolies letrines en toutes couleurs; titres et initiales rouges et bleues; signatures a-o. F. 1, on lit la note : *Istum librum delit ecclesie Atnensi magister Benedictus decanus sancti Iohannis in Leodio. Anima eius requiescat in pace. Amen* (2); plus bas, se trouve la cote : 1652 Ph[illipps]. Ce volume a été acquis par la Bibliothèque royale en 1888. Demi-reliure, toile anglaise; au dos, le titre doré : *S. Augustin. Contra hereses Arii et Manichei.*

1116. (II. 2297). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1-44). De musica iuxta sanctum Ysidorum episcopum. = *PL.*, t. XXXII, col. 1081.
2. (F. 44^v-72^v). Chategorie Aristotilis ab Aurelio Augustino de greco in latinum mutatae. — Avec gloses. = *Ibid.*, col. 1419.
3. (F. 73-73^v). Ex libro Retractationum AURELII AUGUSTINI Yponensis episcopi in libro de questionibus veteris testamenti. = *Ibid.*, col. 651-53.
4. (F. 73^v-76). Capitula.
5. (F. 76-178^v). Liber beati Augustini Yponensis episcopi de questionibus veteris testamenti. = *PL.*, t. XXXV, col. 2213 sqq.

(1) Ce traité a été publié par CASPARI, *Kirchenhistorische Anecdota*, Christiania, 1883, t. I, p. 130-47. Cf. le manuscrit n. 9884-89 de la Bibliothèque royale.

(2) SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 242, decuria septima.

6. (F. 179-192). Liber sancti AUGUSTINI episcopi contra Donatistas. = *PL.*, t. XLIII, col. 651.
7. (F. 192-198^v). Liber EIUSDEM de vita christiana = *PL.*, t. XL, col. 1031.
8. (F. 198^v-205^v). Liber EIUSDEM de continentia. = *Ibid.*, col. 349.
9. (F. 205^v-211^v). Sermo EIUSDEM contra Iudeos de simbolo. = *PL.*, t. XLII, col. 1117.
10. (F. 211^v-227). Liber sancti AUGUSTINI episcopi contra Adimantium Manichei heretici discipulum. = *Ibid.*, col. 129.
11. (F. 227-247). Liber locutionum. = *PL.*, t. XXXIV, col. 485.
12. (F. 247-250). Liber EIUSDEM de fide rerum invisibilium. = *PL.*, t. XL, col. 171.
13. (F. 250-250^v). Sermo sancti AUGUSTINI episcopi de penitentia. = *PL.*, XXXIX, col. 1713-15, n. 393.
14. (F. 250^v). Sermo sancti AUGUSTINI de corpore Christi. *Inc.* Veritas ait : caro mea vere est cibus. *Des.* In hoc verbo creatur illud corpus.
15. (F. 250^v-254^v). Secundum beatum Augustinum XII sunt abusiones saeculi. = *PL.*, t. XL, col. 1079.
16. (F. 254^v-259). Liber beati AUGUSTINI qui dicitur liber de conflictu vitiorum et virtutum. = *Ibid.*, col. 1091.
17. (F. 259-263^v). Liber EIUSDEM de penitentia et de tribus actionibus penitentiae et de illis que ordinatae sunt ad penitentiam. = *PL.*, t. XXXIX, col. 1535, n. 351.
18. (F. 263^v-268). Liber beati AUGUSTINI episcopi de penitentia et de hiis que comitantur patientiam. = *PL.*, t. XL, col. 611.

Parchemin ; 268 feuillets ; 0^m,36 × 0^m,255 ; XIII^e siècle (1277), car f. 178, on lit la note : *Frater Iohannes dictus Toussens monachus de Camberone et sacerdos scripsit hunc librum anno Domini M^oCC^o septuagesimo septimo*. Deux colonnes, sauf les feuillets 44^v-77^v ; initiales rouges et bleues, titre courant. F. 268, on lit : *Liber sancte Marie de Camberone*, et la cote *De Camberone*, se trouve au bas d'un grand nombre de feuillets. Au verso de la couverture, il y a l'ex-libris : *From the Library of the Earl of Ashburnham. Appendix n^o LXXV, may 1897*. Ce volume fut acquis en 1899 à une vente chez Sotheby à Londres pour 900 francs (1). Très belle reliure en maroquin bleu, dentelles et filets ; tranche dorée.

1117. (49-62). — S. AUGUSTIN. Opera.

1. (F. 1-1^v). S. AUGUSTINI. Retractatio in libro contra Academicos. = *PL.*, t. XXXII, col. 585-87.
2. (F. 1^v-8^v). Contra Academicos. = *Ibid.*, col. 905-31. *Des. mutil.* (lib. II, cap. II) sed hoc sub [tilius]...

(1) Voir *Catalogue of the portion of the collection of Manuscripts known as the "Appendix", made by the late Earl of Ashburnham*. London, 1899, p. 15-16, n. 29.

3. (F. 9-13). [De beata vita]. *Inc. mutil. ... immanissimus mons ante ipsam portam* (cap. 2). = *Ibid.*, col. 960-76.

4. (F. 13-13^v). S. Augustini retractatio in librum de ordine. = *Ibid.*, col. 588-89.

5. (F. 13^v-26). Liber de ordine. = *Ibid.*, col. 977-1020.

6. (F. 26). S. Augustini retractatio in librum soliloquiorum. = *Ibid.*, col. 589-90.

7. (F. 26-36^v). Liber soliloquiorum. = *Ibid.*, col. 869-904.

8. (F. 36^v). Retractatio in librum de immortalitate anime. = *Ibid.*, col. 590-91.

9. (F. 36^v-40^v). Liber de immortalitate anime. = *Ibid.*, col. 1021-1034.

10. (F. 40^v-41^v). Retractatio in librum de moribus ecclesie. = *Ibid.*, col. 591-94.

11. (F. 41^v-61^v). Liber de moribus ecclesie catholice et Manicheorum. = *Ibid.*, col. 1309-1378.

12. (F. 61^v-62). Retractatio in librum de quantitate anime. = *Ibid.*, col. 594.

13. (F. 62-75). Liber de quantitate anime. = *Ibid.*, col. 1035-1080.

14. (F. 75-76^v). Retractatio in librum de libero arbitrio. = *Ibid.*, col. 595-99.

15. (F. 76^v-100^v). Liber de libero arbitrio. = *Ibid.*, col. 1221-1310.

16. (F. 100^v-101). Retractatio in librum de Genesi. = *Ibid.*, col. 599-600.

17. (F. 101-114). De Genesi contra Manicheos. = *PL.*, t. XXXIV, col. 173-220.

18. (F. 114^v-115). Retractatio in librum de musica. = *PL.*, t. XXXII, col. 600-602.

19. (F. 115-146^v). De musica. = *Ibid.*, col. 1081-1194.

20. (F. 147-147^v). Reproduction du folio 146, c. xxxi-xxxiiii *de musica*.

21. (F. 147^v-151^v). Liber inchoatus de secunda disciplina seu de dyaletica habitus ad Adeodatum filium suum. = *Ibid.*, col. 1409-1420.

22. (F. 151^v-159^v). Translatio cathégoriarum Aristotilis ab Augustino ad filium suum. = *Ibid.*, col. 1419-40.

Le feuillet 160 est blanc.

23. (F. 161-169). Liber de magistro. = *Ibid.*, col. 1193-1220.

24. (F. 169-169^v). Retractatio in librum de vera religione. = *Ibid.*, col. 602-606.

25. (F. 169^v-185). Liber de vera religione. = *PL.*, t. XXXIV col. 121-172.

Parchemin; 185 feuillets; 0^m,385 × 0^m,27; XIV^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et bleues; titre courant en rouge. Demi-reliure moderne, dos en peau de chamois.

1118. (2499-510). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 2-2^v). Tabula super librum de itineribus eternitatis.

Le feuillet 3 est blanc.

2. (F. 4-75). [S. BONAVENTURA]. Liber de itineribus eternitatis (1).

3. (F. 75^v-97^v). Tractatus beati BERNARDI Clarevallensis abbatis, qui dicitur colloquium Symonis et Ihesu. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 435 sqq.

4. (F. 97^v-99^v). Retractatio beati BERNARDI in libro sequenti [de gradibus humilitatis]. = *PL.*, t. CLXXXII, col. 939-944. *Des. mutil.* in proximis, in sui na[tura] (cap. III, n. 6).

5. (F. 100-108^v). Liber beati BERNARDI ad milites templi de laude nove milicie. = *Ibid.*, col. 921-40.

Le feuillet 109 est blanc.

6. (F. 110-112^v). AUGUSTINUS. A seipso ad seipsum. = *PL.*, t. XLII, col. 807.

Le feuillet 113 est blanc.

7. (F. 114-117). De 4^{or} virtutibus caritatis sermo sancti AUGUSTINI episcopi. = *PL.*, t. XLVII, col. 1127.

8. (F. 117-121^v). AUGUSTINUS. De essentia divinitatis Dei et de invisibilitate atque immensitate eius. = *PL.*, t. XLII, col. 1199.

9. (F. 121^v-131). AUGUSTINUS. De deitate et incarnatione Christi. = *Ibid.*, col. 1175.

10. (F. 131-141). De contemplatione Domini nostri Ihesu Christi vel de verbo Dei. AUGUSTINUS. = *PL.*, t. XL, col. 951 sqq.

11. (F. 141-141^v). AUGUSTINUS. De spiritu et anima. = *Ibid.*, col. 779.

12. (F. 142-147). Expositio super *Pater noster*. *Inc.* Septem sunt vicia principalia.

Les feuillets 147^v-148^v sont blancs.

13. (F. 149-168). Tractatus S. AUGUSTINI de Trinitate. = *PL.*, t. XLII, col. 819 sqq.

14. (F. 168^v-171). Tractatus beati BASILII de laude vite solitarie. = *PL.*, t. CXLV, col. 246-51 (2).

15. (F. 171^v-186). AUGUSTINUS. De quaestionibus super Genesim. = *PL.*, t. XL, col. 733 sqq.

16. (F. 186^v-192^v). Liber AURELI AUGUSTINI de quinque generibus. = *PL.*, t. XLII, col. 1101 sqq.

17. (F. 193). Capitula libri de dieta salutis.

(1) Cf. WADDING, *Scriptores ordinis Minorum*, pp. 68, 70.

(2) Cf. supra, p. 11, n. 916 (3446-84), n° 42.

18. (F. 193^v-218^v). Quaedam excerpta de libro qui dicitur *De dieta salutis* et quedam alia eisdem inserta (1).

19. (F. 218^v-219). Table alphabétique.

20. (F. 219^v). Table des matières.

Parchemin; 219 feuillets; 0^m,22 × 0^m,14; XIV^e siècle. On lit, f. 1^v : *Liber cenobii sancti Pauli in Zonia canonicorum regularium ordinis sancti Augustini cameracensis dyocesis prope Bruzellam in Brabantia quod communiter vocatur Roodenclooster*. Demi-reliure moderne, dos en maroquin brun avec les titres dorés de quelques-uns des traités; plus bas, le chiffre couronné de Léopold I^{er}.

1119. (10591-92). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1-51^v). Liber beati AUGUSTINI de vera religione. = *PL.*, t. XXXIV, col. 121.

2. (F. 52-61). Liber beati AUGUSTINI episcopi de divinacionibus demonum. = *PL.*, t. XL, col. 581.

Parchemin; 61 feuillets, plus quatre de garde en papier; 0^m,198 × 0^m,137; XIV^e siècle; initiales rouges et bleues. F. 61, il y a cette note écrite au XVI^e siècle : *Liber beati Augustini quem scripsit N. Johannes Boes de Loscastro*. La cote *MM*, 3-17 de la bibliothèque de Saint-Laurent à Liège se trouve f. 1. Reliure moderne veau raciné; au dos, le titre doré : *Augustinus de vera religione*, reproduit à l'intérieur sur une étiquette en maroquin rouge; en dessous, les armes de Belgique et l'inscription *Bibl. royale*.

1120. (20760-82). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1-1^v). Tituli omnium librorum qui continentur in isto volumine.

Le feuillet 2 est blanc.

2. (F. 3-14^v). BERNARDUS ad Eugenium papam de consideratione. = *PL.*, t. CLXXXII, col. 727 sqq.

3. (F. 15-19^v). [S. BERNARDUS]. De dispensatione et praecepto. = *PL.*, t. CLXXXII, col. 859 sqq.

4. (F. 19^v-21). [HUGO DE SANCTO VICTORE]. De studio legendi. = *PL.*, t. CLXXVI, col. 741 sqq.

5. (F. 21-22). [HUGO DE SANCTO VICTORE]. De discretione artium. = *Ibid.*, col. 751 sqq.

6. (F. 22-23). [HUGO DE SANCTO VICTORE]. De ordine et modo. = *Ibid.*, col. 771 sqq.

7. (F. 23-24). [HUGO DE SANCTO VICTORE]. De studio divinarum scripturarum. = *Ibid.*, col. 777 sqq.

(1) Voir au sujet de ce traité, qui est souvent, dans les manuscrits, attribué à Guillaume de Lancea, FABRICIUS-MANSI, *Bibl. lat. inf. et med. aet.*, t. III, p. 151. La *Dieta salutis* a été publiée sous le nom de S. Bonaventure, dans les œuvres de cet auteur, édition de Mayence, t. VI, p. 272-325.

8. (F. 24-29^v). AURELI AUGUSTINI liber sextus de musica. = *PL.*, t. XXXII, col. 1161 sqq.
9. (F. 29^v-37). AUGUSTINUS. De libero arbitrio. = *Ibid.*, col. 1221.
10. (F. 37-38^v). AUGUSTINUS. De praescientia Dei. = *PL.*, t. XXXIII, col. 832-48.
11. (F. 38^v-40). CASSIODORUS. De anima. = *PL.*, t. LXX, col. 1279.
12. (F. 40-40^v). [ANSELMUS]. De sacramento ecclesie. = *PL.*, t. CLVIII, col. 551-54.
13. (F. 40^v-41). [ANSELMUS]. Epistola de azimo. = *Ibid.*, col. 541.
14. (F. 41-42). Meditatio ANSELMI de humana redemptione. = *Ibid.*, col. 762-69.
15. (F. 42-55). Liber beati ANSELMI Cantuariensis archiepiscopi de similitudinibus. — Meditatio. = *PL.*, t. CLIX, col. 605; t. CLVIII, col. 722.
16. (F. 55^v-56^v). HUGO. De virtute orationis. = *PL.*, t. CLXXVI, col. 977.
17. (F. 56^v-59^v). HUGO. De arra sponse. = *Ibid.*, col. 951.
Le feuillet 60 est blanc.
18. (F. 61-64). ANSELMUS. De incarnatione Verbi. = *PL.*, t. CLVIII, col. 259.
19. (64-68^v). [ANSELMUS]. De concordia prescientie et predestinationis cum libero arbitrio. = *Ibid.*, col. 507.
20. (F. 68^v-76^v). Monologion ANSELMI. = *Ibid.*, col. 141.
21. (F. 76^v-79). Proslogion ANSELMI. = *Ibid.*, col. 223.
22. (F. 79-79^v). Disputatio edita per insipientem. = *Ibid.*, col. 242.
23. (F. 79^v-80^v). Liber contra respondentem per insipientem. = *Ibid.*, col. 247.
24. (F. 80^v-83). Epistole ANSELMI. = *PL.*, t. CLVIII, col. 541-48, 551-54, 1125-29, 1063-66, 1093-1101; t. CLIX, col. 270-71, 269-70.
25. (F. 83-87^v). ANSELMUS. De casu dyaboli. = *Ibid.*, col. 325.
26. (F. 87^v-89^v). Liber de veritate ANSELMI. = *Ibid.*, col. 467.
27. (F. 89^v-93). [ANSELMUS]. De conceptu virginali. = *Ibid.*, col. 431.
28. (F. 93-96^v). [AUGUSTINUS. De perfectione iusticie]. = *PL.*, t. XLIV, col. 291.
29. (F. 96^v-102^v). [AUGUSTINUS. De natura et gratia]. = *Ibid.*, col. 247.
30. (F. 102^v-107). AUGUSTINUS. De gratia et libero arbitrio. = *Ibid.*, col. 881.
31. (F. 107-111^v). AUGUSTINUS. De correctione et gratia. = *Ibid.*, col. 915.
32. (F. 111^v-116). AUGUSTINUS. De predestinatione sanctorum. = *Ibid.*, col. 959.
33. (F. 116-121^v). AUGUSTINUS. De dono perseverantie. = *PL.*, t. XLV, col. 991.

34. (F. 121^v-125^v). AUGUSTINUS. De agone christiano. = *PL.*, t. XL, col. 289.
35. (F. 125^v-129). AUGUSTINUS. De natura boni. = *PL.*, t. XLII, col. 551.
36. (F. 129-131^v). AUGUSTINUS. De penitentia. = *PL.*, t. XXXIX, col. 1545 sqq.
37. (F. 131^v-133). AUGUSTINUS. De disciplina christiana. = *PL.*, t. XL, col. 667.
38. (F. 133-157^v). [ISIDORUS. De summo bono]. = *PL.*, t. LXXXIII, col. 1153 sqq.
39. (F. 158-165^v). [AUGUSTINUS. De anima et spiritu]. = *PL.*, t. XL, col. 779.
40. (F. 165^v-166^v). Liber beati AUGUSTINI de fide ad Petrum. = *Ibid.*, col. 753.
41. (F. 166^v-168). [AUGUSTINUS. De quaestionibus novi et veteris testamenti]. = *Ibid.*, col. 733 sqq.
42. (F. 168-168^v). [MARTINUS BRACARENSIS]. De quatuor virtutibus. = *PL.*, t. LXXII, col. 21. *Des. mutil.* nec obtusum in se habet aliquid nec versutum ... (cap. vi).
43. (F. 168^v-173^v). BERNARDUS. De gradibus humilitatis. = *PL.*, t. CLXXXII, col. 941.
44. (F. 173^v-175). [AUGUSTINUS]. Liber de disciplina christiana. = *PL.*, t. XL.
45. (F. 175-178^v). BERNARDUS. De contemptu mundi. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 1314.
46. (F. 178^v-183). Libellus domni BERNARDI abbatis Clarevallis de libero arbitrio. = *PL.*, t. CLXXXII, col. 1001.
47. (F. 183-183^v). Secundus philosophus (1).
48. (F. 183^v-191^v). ANSELMUS. [Cur Deus homo]. = *PL.*, t. CLVIII, col. 359.
49. (F. 191^v-199). Enchiridion beati AUGUSTINI episcopi. = *PL.*, t. XL, col. 231.
50. (F. 199-206). [SENECAE epistolae] (2).
51. (F. 206-208). [SENECA. De beneficiis]. — Extraits.
52. (F. 208-208^v). Liber EIUSDEM de clementia ad Neronem (3).
53. (F. 208^v-241^v). [AUGUSTINUS. Confessiones]. = *PL.*, t. XXXII, col. 660 sqq.
54. (F. 241^v-247^v). Meditationes BERNARDI. — Courts extraits des œuvres de S. Bernard et de S. Anselme.

(1) Voir plus haut, p. 9.

(2) Lettres à S. Paul et à Lucilius; cf. supra p. 29.

(3) Quelques extraits du livre I.

55. (F. 247^v-248^v). Liber de ortu scientiarum.
 56. (F. 248^v-249). Liber de dietis per ARISTOTILEM.
 57. (F. 249-250^v). [Liber] sextus ethicorum.
 58. (F. 250^v-254^v). Liber de speculis.
 59. (F. 254^v-255^v). Liber de intellectu et intellecto.
 60. (F. 255^v-261). BERNARDUS super *Missus est.* = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 55 sqq.
 61. (F. 261-294^v). [BOECIUS]. De consolatione phylosophie. = *PL.*, t. LXIII, col. 579 sqq.
 62. (F. 294^v-299). [CHALCIDIUS in PLATONIS Timaeum] (1).
 63. (F. 299-313^v). Expositiones super Boecium.
 64. (F. 314). [Origo monasterii Sancti Trudonis]. — Très court extrait du XVII^e siècle.

Parchemin; 314 feuillets; 0^m,247 × 0^m,185; XIV^e siècle; deux colonnes; très jolies initiales, titre courant en rouge et en bleu. F. 1, il y a l'inscription : *Collegii Paris. Societatis Iesu*, et dans la marge : *Paraphé au desir de l'arrest du 5 juillet 1763.* F. 2, on lit : *Domina Francisca de Marboux dedit Andree Marchant.* Au verso de la couverture se trouve l'ex-libris armorié : *E Bibliotheca D. Abbatis Fauvel*, et sur le premier feuillet de garde : *Acheté à M. Belin pour la somme de 200 francs, 14 février 1852.* Reliure soie orange, dos en peau de chamois (2).

1121. (II. 967). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1-2^v). Fragments d'un commentaire sur les évangiles. *Inc. mutil.* ... debet facillime cogitare. *Des. mutil.* sed potius intelligendum quia est si non hec ...
 2. (F. 3-67^v). AURELI AUGUSTINI episcopi de sermone Domini in monte. = *PL.*, t. XXXIII, col. 1229 sqq.
 3. (F. 68-103^v). Ex libro retractationum in libro AURELI AUGUSTINI in Genesi contra Manicheos. — Liber in Genesi. = *PL.*, t. XXXII, col. 599; t. XXXIV, col. 173 sqq.
 4. (F. 104^v). [PETRUS RIGA. Prologus in Auroram] (3).

Parchemin; 104 feuillets; 0^m,259 × 0^m,17; XIII^e siècle; quelques belles initiales. F. 3 et au bas d'un grand nombre d'autres feuillets, on lit la note : *De Camberone* ; f. 100 : *B. Marie Virginis de Camberone* et f. 104 : *Liber sancte Marie de Camberone* (4). Ce volume a appartenu plus tard à la bibliothèque de sir Thomas Phillipps et y a porté les nn. 1116 et 4765; il a été acquis par la Bibliothèque royale en 1888 pour 25 francs. Reliure moderne anglaise, veau; au dos, le titre doré : *Augustinus de sermone Domini in monte.*

(1) Voir FABRICIUS, *Spicilegium Patrum tertii saeculi*, Hamburgi, 1718. .

(2) Voir une description de ce volume par P. THOMAS, *Catalogue des manuscrits de classiques latins de la Bibliothèque royale de Bruxelles*, p. 97-98.

(3) Cf. t. I, pp. 83 sqq.

(4) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. I, p. 349.

1122. (119-24). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1). Table des matières.
2. (F. 1^v). *Retractatio beati episcopi AUGUSTI (sic) in libro contra Faustum hereticum.* = *PL.*, t. XXXII, col. 632.
3. (F. 2-90^v). [*Contra Faustum Manicheum*]. = *PL.*, t. XLII, col. 207.
4. (F. 90^v-103^v). *Libri beati AUGUSTINI ad Simplicianum.* = *PL.*, t. XL, col. 101.
5. (F. 103^v-105). *Retractatio beati AUGUSTINI episcopi in libro de libero arbitrio.* = *PL.*, t. XXXII, col. 575-96.
6. (F. 105-131). *AURELI AUGUSTINI de libero arbitrio.* = *Ibid.*, col. 1221 sqq.
7. (F. 132-188). *Beati AUGUSTINI de consensu quatuor evangelistarum.* = *PL.*, t. XXXIV, col. 1041 sqq.
8. (F. 188-210). *AURELI AUGUSTINI doctoris de praedestinatione vel de merito fidei ad Prosperum et Hyllarium.* = *PL.*, t. XLV, col. 959 sqq.
9. (F. 210-217). *Liber beati AUGUSTINI episcopi de bono coniugali.* = *PL.*, t. XL, col. 373.

Parchemin; 217 feuillets; 0^m,355 × 0^m,245; XV^e siècle (1466), car on lit, f. 131 : *Istud volumen hucusque scriptum est per fratrem Anthonium de bergis supra Zoman professum in Korsendonck, anno Domini M. quadringentesimo sexagesimo sexto, octava die mensis maii post prandium. Oretis pro me, fratres karissimi* (1). F. 2 et f. 217^v, l'estampille rouge *R. F.* de la Bibliothèque nationale de Paris. Demi-reliure, basane rouge, avec les titres dorés des différents ouvrages contenus dans le volume; plus bas, le monogramme couronné de Léopold I^{er}.

1123. (324-28). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1-1^v). *Ex libro Retractationum beati AUGUSTINI episcopi secundo, capitulo quadragesimo primo* (2). = *PL.*, t. XXXII, col. 635. — *Epistola beati AUGUSTINI ad Aurelium episcopum in libros de Trinitate.* = *PL.*, t. XLII, col. 819.
2. (F. 2-144). *Beati AUGUSTINI de sanctissima Trinitate* [libri XV]. = *Ibid.*, col. 821.
3. (F. 144^v-145). Table du précédent traité.
4. (F. 146-152^v). *Liber beati AUGUSTINI de decem cordis.* = *PL.*, t. XXXIX, col. 75. *Des. mutil.* Non datis operam quid ...
5. (F. 153-153^v). *Capitula in Enchiridion beati Augustini episcopi.*
6. (F. 153^v-178^v). *Liber Enchiridion sancti AUGUSTINI episcopi.* = *PL.*, t. XL, col. 231.

(1) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 47.

(2) De l'édition de MIGNÉ, cap. XV.

7. (F. 178^v-182). Liber beati AUGUSTINI de quatuor virtutibus caritatis. = *PL.*, t. XLVII, col. 1127.

8. (F. 182-197). Liber beati AUGUSTINI de sanctissima virginitate. = *PL.*, t. XL, col. 395.

Parchemin; 197 feuillets; 0^m,335 × 0^m,22; XV^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et bleues. F. 144, il y a en rubrique la note, sous une invocation au nom de Jésus: *Signum fratris Philippi*. L'estampille rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris, se trouve f. 1 et f. 197^v. Demi-reliure moderne, dos en maroquin rouge, avec le titre doré: *Bⁱ Augustini de sanctissima Trinitate, de decem cordis, Enchiridion, etc. XV^e saec.*, plus bas, le monogramme couronné du roi Léopold I^{er}.

1124. (312-20). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1-34^v). De libero arbitrio. = *PL.*, t. XXXIII, col. 1221 sqq. *Inc. mutil.* ... est excellere, iniustam esse nullo modo posse (col. 1233, cap. XI, n. 21).

Il manque un feuillet entre f. 3 et f. 4.

2. (F. 34^v-48^v). Retractatio sancti AUGUSTINI in librum suum de sancta virginitate. = *PL.*, t. XXXII, col. 640. — Liber de sancta virginitate. = *PL.*, t. XL, col. 359 sqq.

3. (F. 48^v-56^v). Liber EIUSDĒM de professione sancte viduita[tis]. = *Ibid.*, col. 429 sqq.

4. (F. 57-57^v). Retractatio sancti AUGUSTINI episcopi in libros suos de moribus ecclesie catholice et de moribus Manicheorum. = *PL.*, t. XXXII, col. .

5. (F. 57^v-72). De moribus ecclesie catholice. = *Ibid.*, col. 1310.

6. (F. 72-87). De moribus Manicheorum. = *Ibid.*, col. 1345.

Les feuillets 87^v-88^v sont blancs.

7. (F. 89-115^v). Retractatio S. AUGUSTINI episcopi in libros contra adversarium legis et prophetarum. = *PL.*, t. XXXIII, col. 654. — Contra adversarium legis et prophetarum. = *PL.*, t. XLII, col. 603 sqq.

8. (F. 116-135). Retractatio sancti AUGUSTINI episcopi in librum suum contra Adimantum Manichei discipulum. = *PL.*, t. XXXII, col. 618. — Liber sancti AUGUSTINI contra Adimantum Manichei discipulum. = *PL.*, t. XLII, col. 129 sqq.

9. (F. 135^v-136^v). Retractatio sancti AUGUSTINI episcopi in librum suum super epistolam beati Pauli apostoli ad Romanos. = *PL.*, t. XXXII, col. 620.

10. (F. 136^v-147). Liber sancti AUGUSTINI episcopi super epistolam ad Romanos. = *PL.*, t. XXXIV, col. 2063.

11. (F. 147-147^v). Retractatio sancti AUGUSTINI episcopi in librum suum super epistolam beati Pauli apostoli ad Galatas. = *PL.*, t. XXXII, col. 622.

12. (F. 147^v-165^v). Liber super epistolam ad Galatas. = *PL.*, t. XXXIV, col. 2105.

13. (F. 165^v-170^v). Liber de fide et simbolo. = *PL.*, t. XL, col. 181 sqq.

Le feuillet de garde de la fin contient des fragments d'un traité théologique de *visibilitate Dei*.

Parchemin; 171 feuillets, plus un de garde; 0^m,325 × 0^m,215; XIV^e siècle; deux colonnes. Au début de chaque traité il y a quelques jolies lettrines, le volume a des titres courants, l'ancienne pagination lxxiiij-cxxlij, signatures *l-k*. F. 171^v, il y a la note : *Liber monasterii rubeae vallis in Zonia iuxta bruxellam scriptus per manus fratris Adriani Mes sacerdotis professi in eadem domo* (1). *Oretis ergo pro eo ferventer ex caritate. Pro libraria*. L'estampille rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 171^v. Demi-reliure moderne, dos en maroquin rouge avec le titre doré : *B^u Augustini opera varia. XV saec.* Plus bas, le monogramme couronné du roi Léopold 1^{er}.

1125. (625-36). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1^v). Table.

2. (F. 2-12). Liber de spiritu et anima. = *PL.*, t. XL, col. 779.

3. (F. 12^v-45). AURELIJ AUGUSTINI episcopi de libero arbitrio. = *PL.*, t. XXXII, col. 1221.

4. (F. 46-49). Prohemium beati Augustini* in disputatione quorundam articulorum ... [Disputatio ipsa]. = *PL.*, t. XLV, col. 1813-50.

* *cod.*
Prosperi.

Entre les ff. 48 et 49 est inséré un feuillet de papier contenant les notes marginales du traité suivant, avec l'avis que voici : *Hec, ut cernis, amice lector, in pagella ista conguessimus, ut libri huius margines non nimium commacularemus. Refugimus enim id exemplum posteris relinquere quia bellos simul et emendatos habere libros affectamus* (2).

5. (F. 49-88). Prohemium operis sequentis ... B. AUGUSTINI de doctrina christiana. = *PL.*, t. XXXIV, col. 14.

Entre les ff. 79 et 80, sur un bout de papier, variantes de l'*Alardi exemplar*.

6. (F. 88^v-96). Retractatio in librum sequentem. = *PL.*, t. XXXII, col. 634; AURELIJ AUGUSTINI de natura boni. = *PL.*, t. XLII, col. 551.

Entre les ff. 88 et 89, sur un feuillet de papier, corrections du traité précédent.

7. (F. 96-131). Questiones novi et veteris testamenti. = *PL.*, t. XXXV, col. 2213.

(1) Au sujet d'Adrien Mes, voir BOLLANDIANI, *Anecdota ex codicibus Iohannis Gielemans*, 1895, pp. 190, 250.

(2) Cette note est de Martin Lipsius, chanoine de Saint-Martin à Louvain; cf. f. 112 et plus loin, p. 162. Au sujet de Martin Lipsius, cf. FOPPENS, *Bibl. belgica*, p. 857; J. ACQUOY, *Het Klooster te Windesheim*, t. II, pp. 204, 208; t. III, p. 145.

8. (F. 131-141^v). Liber beati AUGUSTINI episcopi contra mendacium. = *PL.*, t. XL, col. 517 sqq.

9. (F. 141^v). Retractatio in librum praecedentem. = *PL.*, t. XXXII, col. 654.

10. (F. 141^v-152). Retractatio in libro sequenti. = *Ibid.*, col. 630. — Liber beati AUGUSTINI episcopi de mendacio. = *PL.*, t. XL, col. 487.

11. (F. 152^v-158^v). Liber beati AUGUSTINI episcopi de unico baptismo contra Petilianum = *PL.*, t. XLIII, col. 595 sqq.

12. (F. 159-191). Liber beati AUGUSTINI episcopi de sermone Domini in monte. = *PL.*, t. XXXIV, col. 1229.

13. (F. 191-196^v). Liber sive tractatus de conflictu viciorum atque virtutum. = *PL.*, t. XL, col. 1091.

Entre les ff. 196 et 197, sur un demi-feuillet en papier, variantes du traité suivant.

14. (F. 196^v-202^v). AUGUSTINI episcopi de agone christiano liber. = *PL.*, t. XL, col. 289.

15. (F. 202^v-206^v). Liber beati AUGUSTINI de disciplina christiana. = *Ibid.*, col. 669.

Parchemin ; 206 feuillets ; 0^m,30 × 0^m,205 ; XV^e siècle ; deux colonnes ; initiales rouges et bleues. Ancienne pagination 1-ccv, signatures *A2-Est. 2. 3. 4.* Ce volume provient du prieuré de Val-Saint-Martin à Louvain, car f. 1^r, on lit : *In hoc volumine quod est sancti Martini Lovaniensis*, et f. 206 : *Liber sancti Martini in Lovanio, 1576, martii 25* (1). F. 2 et 206^v, il y a l'estampille rouge *R.F.* de la Bibliothèque nationale de Paris. Demi-reliure moderne, dos en maroquin fauve, avec le titre doré : *Bi Augustini opera varia. XV saec.* ; plus bas, le monogramme couronné de Léopold I^{er}.

1126. (657-66). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1^v). Table des matières.

2. (F. 2-85^v). Liber beati AUGUSTINI de consensu evangelistarum. = *PL.*, t. XXXIV, col. 1041 sqq.

3. (F. 86-93^v). AUGUSTINUS. De cura pro mortuis. = *PL.*, t. XL, col. 591 sqq.

4. (F. 93^v-96^v). Liber beati AUGUSTINI de quatuor virtutibus caritatis. = *PL.*, t. XLVII, col. 1127.

5. (F. 96^v-106^v). Liber beati AUGUSTINI episcopi de deitate et incarnatione Verbi. = *PL.*, t. XLII, col. 1175.

6. (F. 107-125). Liber beati AUGUSTINI de vera innocentia (2). = *PL.*, t. XLIV, col. 1859 sqq.

Le feuillet 119 est blanc.

(1) SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 210.

(2) Sous ce titre, il y a une série de sentences tirées des œuvres de S. Augustin par S. Prosper.

7. (F. 125-130). Liber EIUDEM de visitatione infirmorum. = *PL.*, t. XL, col. 1147.

8. (F. 131-203). Theologie compendium editum a fratre THOMA DE AQUINO ordinis predicatorum (1).

9. (F. 204-270). Liber de sacramento ecclesie editus a domno INNOCENTIO papa tercio. = *PL.*, t. CCXVII, col. 773 sqq.

Parchemin; 270 feuillets, plus quatre de garde au commencement et un à la fin; 0^m,30 × 0^m,197; XV^e siècle; deux colonnes, sauf les ff. 131-270 qui sont à lignes pleines; initiales rouges et bleues. F. 1^v et f. 270, il y a la note: *Pertinet monasterio beate Marie virginis in bethleem prope Locanium*. L'estampille rouge *R. F.* de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 2 et f. 270^v. Très jolie reliure ancienne, veau raciné et estampé, fers très élégants.

1127. (1054-66). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1). Table des matières.

2. (F. 2-65). Liber AURELI AUGUSTINI super Genesim ad litteram. = *PL.*, t. XXXLIV, col. 219 sqq.

3. (F. 65-69^v). Liber beati AUGUSTINI episcopi Yponensis de pastobus. = *PL.*, t. XXXIX, col. 2706.

4. (F. 69^v-73^v). Liber de ovibus. = *PL.*, t. XXXVIII, col. 295.

5. (F. 74-88). Liber retractationum AURELI AUGUSTINI Yponensis episcopi. = *PL.*, t. XXXII, col. 583 sqq.

6. (F. 88-88^v). Epistola QUODVULDEI diaconi ad sanctum Augustinum de heresibus. = *PL.*, t. XLII, col. 18.

7. (F. 88^v-94). Epistola sancti AUGUSTINI episcopi ad Quodvultdeum dyaconum. = *Ibid.*, col. 21 sqq.

8. (F. 94-103). Liber beati AUGUSTINI de spiritu et littera ad Marcellinum. = *PL.*, t. XLIV, col. 199 sqq.

9. (F. 103-120^v). Liber beati AUGUSTINI de baptismo parvulorum et peccatorum meritis et remissione. = *Ibid.*, col. 109 sqq.

10. (F. 120^v-124^v). Liber de unico baptismo. = *PL.*, t. XLIII, col. 595 sqq.

11. (F. 124^v-130^v). Liber AURELI AUGUSTINI de bono coniugali. = *PL.*, t. XL, col. 573.

12. (F. 130^v-133^v). Sermo EIUDEM de utilitate penitencie. = *PL.*, t. XXXIX, col. 1549.

13. (F. 134-146^v). AUGUSTINUS de questionibus evangeliorum super Mattheum et Lucam. = *PL.*, t. XXXIV, col. 1365.

14. (F. 146^v-200). AURELI AUGUSTINI liber de concordia evangelistarum. = *Ibid.*, col. 1041 sqq.

(1) Sur ces résumés de la *Somme* de S. Thomas d'Aquin, cf. QUÉTIF-ECHARD, *Scriptores ordinis praed.*, t. I, p. 293 sqq.

15. (F. 200^v-210). [De virginitate]. = *PL.*, t. XL, col. 395.

16. (F. 210-216^v). [Liber PROSPERI de sacris dictis beati Augustini]. = *PL.*, t. LI, col. 497 sqq.

Papier, filigrane de l'écu de France, et parchemin; 216 feuillets, plus deux de garde; 0^m,285 × 0^m,21; XV^e siècle (1484, cf. f. 1); deux colonnes; capitales ornées; titre courant en rouge; signatures *a-pc*. F. 1, il y a la note: *Hoc volumen ... pertinet monasterio fratrum ordinis sancte Crucis in Namurco ... 1484. Servanti benedictio*. L'estampille rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 2 et f. 216. Reliure ancienne restaurée, veau brun estampé, fers très élégants.

1128. (1067-74). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (Verso du second feuillet de garde). Table du volume.

2. (F. 1-25). Liber retractationum sancti AUGUSTINI episcopi. = *PL.*, t. XXXII, col. 583-656, avec l'addition signalée, *ibid.*, col. 656, note 1.

3. (F. 26-26^v). Retractatio AURELI AUGUSTINI in libro de Achademicis. = *Ibid.*, col. 585-87.

4. (F. 26^v-45). Liber de Achademicis. = *Ibid.*, col. 905 sqq.

5. (F. 45-51^v). Retractatio ... Liber ... de beata vita. = *Ibid.*, col. 588, 959 sqq.

6. (F. 51^{bis}-51^v). Variantes de l'ouvrage suivant, de la main de MARTINUS LIPSIUS (1).

7. (F. 51^v-67^v). Retractatio ... Liber de ordine rerum. = *Ibid.*, col. 588-89, 977 sqq.

8. (F. 67^v-81^v). Retractatio ... Liber soliloquiorum. = *Ibid.*, col. 589-90, 869 sqq.

9. (F. 81^v-86^v). Retractatio ... Liber de immortalitate anime. = *Ibid.*, col. 590-91, 1021 sqq.

10. (F. 86^v-103^v). Retractatio ... Liber de quantitate anime. = *Ibid.*, col. 594, 1035 sqq.

11. (F. 103^v-113^v). Retractatio ... Liber de magistro. = *Ibid.*, col. 602, 1193 sqq.

Parchemin, sauf les ff. 51^{bis}-51^v qui sont en papier; 114 feuillets, plus trois de garde et en plus les ff. 51^{bis}-51^v; 0^m,293 × 0^m,22; XV^e siècle; deux colonnes; quelques letrines; initiales rouges et bleues. Au verso du second feuillet de garde, on lit cette note: *Liber monasterii canonicorum regularium vallis sancti Martini in Iovanio, ex parte Henrici Vranx eiusdem monasterii canonici et presbiteri professi, et f. 114^v: Liber canonicorum regularium vallis sancti Martini in Iovanio*. L'estampille rouge *R. F.* de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 1 et f. 113. Demi-reliure moderne; au dos, le titre doré: *B^{ti} Augustini liber retractationum cum aliis eiusdem opusculis XV^e saec.*

(1) Voir la note 2, p. 157.

- 1129.** (1216-34). S. AUGUSTINUS. Opera.
1. (F. 1^v). Table des matières.
 2. (F. 2-21^v). Liber sextus *Institutionum* LACTANTII FIRMIANI. = *PL.*, t. VI, col. 633 sqq.
 3. (F. 22-47). Sermo pulcherrimus de passione Domini quem fecit frater MICHAEL DE MASSA, ad populum Parysius (1).
 4. (F. 47^v-58^v). Sermo in festo palmarum de paupertate editus a domno GERARDO GROOT in Davantria venerabili dyacono (2).
Les feuillets 59-60^v sont blancs.
 5. (F. 61-72^v). Omelia pauperis fratris predicatoris super verba *Stabat iuxta crucem*.
 6. (F. 72^v-79). [Sermo super verba *Loquente Ihesu ad turbas*].
 7. (F. 79-91^v). HONORIUS AUGUSTODINENSIS de cognitione vere vite. = *PL.*, t. XL, col. 1005 sqq.
Le feuillet 92 est blanc.
 8. (F. 93-102^v). Opusculum de temptationibus quod composuit dompnus EVERARDUS prior quondam Carthusiensis prope Diest (3).
 9. (F. 102^v-112^v). Tractatus magistri HENRICI DE HASSIA sacre theologie doctoris eximii ad quosdam canonicos regulares de regulari et religioso modo vivendi secundum regulam beati Augustini (4).
 10. (F. 112^v-114). Sermo super regulam Benedicti. *Inc.* Quicumque hanc regulam secuti fuerint, pax super illos. *Des.* hic per gratiam et tandem per gloriam. Quod nobis concedat Amen.
 11. (F. 114^v-115^v). Sermo de Trinitate. *Inc.* Benedicat nos Deus noster. *Des.* ab ea debemus optare, putare et impetrare.
 12. (F. 115^v-116^v). Sermo de scandalo. *Inc.* Venit hora ut omnis qui mortificat vos. *Des.* per omnia omnibus ad aedificationem, praestante Domino Amen.
 13. (F. 117-137^v). Prolocutio sancti AUGUSTINI Yponensis episcopi in librum de vera religione. = *PL.*, t. XXXIV, col. 121 sqq.
 14. (F. 138-150). Liber sancti AUGUSTINI episcopi de mendacio. = *PL.*, t. XL, col. 487 sqq.
 15. (F. 150-162^v). Liber sancti AUGUSTINI episcopi contra mendacium. = *Ibid.*, col. 517 sqq.
 16. (F. 162^v-174^v). S. AUGUSTINI de correptione et gracia. = *PL.*, t. XLIV, col. 915 sqq.

(1) Cf. FABRICIUS-MANSI, *Bibl. lat. med. et inf. aet.*, t. V, p. 76 sqq.

(2) Voir FOPPENS, *Bibl. belgica*, p. 354.

(3) Voir FOPPENS, *Bibl. belgica*, p. 272 ; PETREIUS, *Bibliotheca Cartusiana*, p. 89-90.

(4) Sur ce traité et son auteur, voir OSSINGER, *Bibliotheca Augustiniana*, p. 987-88.

17. (F. 174^v-183). ADAM DE SANCTO VICTORE (1). Soliloquium de instructione anime. = *PL.*, t. CXCVIII, col. 843 sqq.

18. (F. 183-194). RICARDUS DE SANCTO VICTORE. De incarceratione sancti Petri (2).

19. (F. 194-196). Sermo magistri RICHARDI DE SANCTO VICTORE de sancto Gregorio papa.

20. (F. 196-197). Sermo magistri PETRI BLESENSIS de vita, moribus, et morte sancti Thome Cantuariensis archiepiscopi et martiris. = *PL.*, t. CCVII, col. 92-96, ep. XXVII.

21. (F. 197-198^v). De sancto Thoma Cantuariensi. — Extrait de la Passion publiée par MARTENE, *Thes. nov. Anecd.*, t. III, p. 1736-46. Prologue omis ainsi que d'autres développements oratoires.

22. (F. 199-200^v). Liber beati AUGUSTINI episcopi de bono discipline. = *PL.*, t. XL, col. 1217.

23. (F. 200^v-202^v). Sermo S. AUGUSTINI de beato latrone. = *PL.*, t. XXXIX, col. 2043-47.

Parchemin; 202 feuillets; 0^m,29 × 0^m,21; XV^e siècle; deux colonnes, sauf les ff. 117-198^v, qui sont à lignes pleines; ancienne pagination 1-ccii. F. 202^v, il y a la note : *Liber monasterii rubee vallis in Zonia prope bruxellam*. L'estampille rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 2 et 202^v. Reliure ancienne, veau brun estampé (3).

1130. (1235-53). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1). Table des matières.

2. (F. 1^v-15). Liber beati AUGUSTINI ad Quodvultdeum dyaconum de diversis heresibus. = *PL.*, t. XLII, col. 21 sqq.

3. (F. 15-49). De moribus ecclesie et Manicheorum. = *PL.*, t. XXXII, col. 1345 sqq.

4. (F. 49^v-66). Retractatio AURELI AUGUSTINI contra epistolam fundamenti. = *PL.*, t. XLII, col. 173 sqq.

Entre les f. 49 et 50, 65 et 66 sont insérés des feuillets de papier, avec les variantes des traités 4 et 5, écrites de la main de Martin Lipsius.

5. (F. 66-80^v). Retractatio Liber beati AUGUSTINI contra Felicem Manicheum. = *Ibid.*, col. 519 sqq.

6. (F. 81-90^v). AURELI AUGUSTINI contra Felicianum hereticum disputacio. = *Ibid.*, col. 1157 sqq.

(1) On sait qu'en réalité, cet ouvrage est d'Adam Scot. Voir *Histoire littéraire de la France*, t. XV, p. 44.

(2) Extrait peut-être du traité inédit *De Actibus Apostolorum*, cf. *PL.*, t. CXCVI, col. xxix.

(3) Voir une description de ce manuscrit dans *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. I, p. 287 et *Revue d'histoire et de littérature religieuses*, t. IV, 1899, p. 164.

7. (F. 90^v-98^v). Disputatio beati AUGUSTINI episcopi contra Fortunatum Manicheorum presbiterum. = *Ibid.*, col. 111 sqq.

8. (F. 98^v-108^v). Liber beati AUGUSTINI episcopi contra quinque hereses. = *Ibid.*, col. 1111 sqq.

9. (F. 109-116). Liber beati AUGUSTINI de fide catholica et symbolo editus in concilio generali. = *PL.*, t. XL, col. 181 sqq.

10. (F. 116-120^v). AUGUSTINI episcopi de diffinitionibus ecclesiasticorum dogmatum liber. = *PL.*, t. XLII, col. 1213 sqq.

11. (F. 121-125^v). AURELI AUGUSTINI contra Pelagianos de praedestinatione sanctorum liber. = *PL.*, t. XLV, col. 959 sqq.

12. (F. 126-128). De igne purgatorio, tractatus beati Augustini. = *PL.*, t. XXXIX, col. 1946-49.

13. (F. 129-152^v). Epistola beati AUGUSTINI episcopi ad Simplicianum de questionibus enodandis sibi ab eo missis. = *PL.*, t. XL, col. 101 sqq.

Entre les f. 128 et 129, un feuillet de papier avec les variantes du traité précédent écrites par Martin Lipsius et la note : *Venerandus Pater Philippus recognovit librum sequentem ut liquet ex caractere.*

14. (F. 152^v-163). Liber beati AUGUSTINI de vera et falsa penitencia. = *Ibid.*, col. 1113 sqq.

15. (F. 163^v-170^v). Liber alius beati AUGUSTINI de penitencia. = *PL.*, t. XXXIX, col. 1535 sqq.

16. (F. 170^v-176^v). Tractatus beati CYPRIANI * de elemosina. = *PL.*, t. IV, col. * *ita corr.*;
cod.
Augustini.

17. (F. 176^v-181). Tractatus beati AUGUSTINI de oratione dominica. = *PL.*, t. XXXVIII, col. 377.

18. (F. 181^v-199). Liber beati AUGUSTINI de vera innocentia. = *PL.*, t. XLIV, col. 1859 (1).

19. (F. 199^v-205^v). Liber beati AUGUSTINI de patiencia. = *PL.*, t. XL, col. 611 sqq.

Parchemin; 205 feuillets, plus quatre de garde; 0^m,295 × 0^m,205; XV^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et bleues; ancienne pagination en rouge 1-ccvii; signatures a₁-z₂. Au second feuillet de garde, en tête, on lit : *Est liber sancti Martini Lovaniensis*. L'estampille rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 1 et f. 205^v. Reliure du XVIII^e siècle, veau brun estampé et raciné; au dos, le titre doré : *Bⁱ Augustini tractatus de diversis haeresibus et varia eiusdem, XV saec.*; plus bas, le chiffre couronné de Léopold I^{er}.

1131. (1351-72). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1). Table des matières.

2. (F. 1^v). Liste des manuscrits flamands du monastère de Rouge-

(1) Cf. supra, p. 158, n. 1126 (657-66).

Cloître (1). *Inc.* Dit syn die dietsche boeke die ons toe behoeren. Item in den eersten een evangeli boec. *Des.* ende beghint: Dit es tkersten ghe[live].

3. (F. 2-2^v). Tituli sermonum quos beatus Augustinus fecit et predicavit fratribus suis heremitis.

4. (F. 3-38). Sermones beati AUGUSTINI episcopi ad fratres suos heremitas apud Yponem. = *PL.*, t. XL, col. 1235 sqq.

5. (F. 38). Ex libro S. AUGUSTINI de vita clericorum.

6. (F. 38). Quid importetur nomine praepositi.

7. (F. 38-38^v). Exhortatio S. AUGUSTINI ad fratres.

8. (F. 38^v-39). De instructione monachorum ex quodam sermone AUGUSTINI.

9. (F. 39-51). De vita et gestis gloriosissimi doctoris et patris sancti Augustini episcopi. = *BHL.*, n. 795 (2).

10. (F. 51^v). De translatione beati Augustini prima. = *PL.*, t. CCIII, col. 1230-1231.

11. (F. 51^v-52^v). De translatione eius secunda. = *Ibid.*, col. 1231-34 (3).

12. (F. 52^v). Sermon. *Inc.* In lacu miserie et in luto fecis. *Des.* amplexus tuus ad nos est dignatio.

13. (F. 53-69^v). Informatorium sive soliloquium HUGONIS DE SANCTO VICTORE. *Inc.* Venite, ascendamus ad montem Domini. *Des.* et sepe fiunt primi novissimi et novissimi primi (4).

14. (F. 71-76, 69^v-70, 29-31^v). De sancto Eligio vita ad longum, quam sanctus AUDOENUS ... edidit. = *BHL.*, n. 2474.

15. (F. 76^v-82^v). Liber beati AUGUSTINI de X cordis. = *PL.*, t. XXXVIII, col. 75 sqq.

16. (F. 83-84^v). Liber beati AUGUSTINI de X plagis. = *PL.*, t. XXXIX, col. 1783.

Le feuillet 85 est blanc.

17. (F. 86-115^v). Retractatio Tractatio sancti AUGUSTINI in libro de sermone Domini in monte. = *PL.*, t. XXXIII, col. 1229 sqq.

(1) Sur les diverses éditions de cette liste par Ch. Stallaert (1857), J. A. Alberdingk Thym (1857), Ch. Ruelens (1864), voir TH. GOTTLIEB, *Ueber Mittelalterliche Bibliotheken*, Leipzig, 1890, p. 261, n. 722. Il faut y ajouter celle faite en 1847 par le Dr Ch. Van Swygenhoven, dans *Bulletin de l'Académie d'archéologie d'Anvers*, t. IV, p. 218-20.

(2) La note finale a été publiée *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. I, p. 912.

(3) Cf. *Cat. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. I, p. 291, où est publiée la note de la fin.

(4) Ce traité ne semble pas être d'Hugues de Saint-Victor, il n'est pas cité dans la liste de ses œuvres, *PL.*, t. CLXXV, col. cxli-cliii.

18. (F. 115^v-130). Liber soliloquiorum beati AUGUSTINI episcopi. = *PL.*, t. LX, col. 863 sqq.

19. (F. 130-133). Liber sancti AUGUSTINI episcopi de ecclesiasticis dogmatibus. = *PL.*, t. XLII, col. 1213 sqq.

20. (F. 133^v-137). Regula sancti AUGUSTINI episcopi. = *PL.*, t. XXXII, col. 1377 sqq.

21. (F. 137^v-139^v). Sermo beati ANCELMII Cantuariensis episcopi de quatuor gradibus spiritualis vite. = *PL.*, t. XL, col. 997 sqq.

22. (F. 140-157). Courtes légendes de quelques saints, S^{te} Elisabeth de Hongrie, S^{te} Barbe, S. Pontien, Polycarpe, Ansbert, S^{te} Apolline, Augustin de Cantorbéry, Bède, Maxime, Monulphe et Gondulphe, Frédéric, Bertin, Fausta, Thècle, Cléophas, Marc, Marcel et Apulée, Gall, Sévère, Willibrord, Liévin, Columban, Euchèr, Damase, Materne, les deux Ewald, Foi, Espérance et Charité, Boniface, Juste, Kylian.

23. (F. 157-173^v). Exhortatio AURELII AUGUSTINI ad quendam comitem carissimum sibi. = *PL.*, t. XCIX, col. 197.

Les feuillets 174-175^v sont blancs.

24. (F. 176-182^v). S. ANSELMII proslogium. = *PL.*, t. CLVIII, col. 223-40.

25. (F. 182^v-202). ANCELMII cantuariensis archiepiscopi liber *Cur Deus homo*. = *PL.*, t. CLVIII, col. 359 sqq.

26. (F. 202-211^v). Liber ANCELMII cantuariensis episcopi de conceptu virginali. = *Ibid.*, col. 431 sqq.

27. (F. 211^v-227^v). Liber monologii ANCELMII cantuariensis. = *Ibid.*, col. 141 sqq.

28. (F. 228-243). [Sermones de tempore] (1).

29. (F. 243^v). Hymne notée *Paranimphus salutatur virginem*. = *RH.*, n. 14567.

Parchemin; 243 feuillets, plus trois de garde; 0^m,28 × 0^m,20; XV^e siècle; deux colonnes; ancienne pagination 1-ccxvii, signatures *a1-f11*. Sur le premier feuillet de garde, il y a la note: *Liber monasterii sancti Pauli in Zonia sive rubevallis iuxta Bruxellam situati*. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris, *R. F.*, se trouve f. 3 et f. 243^v. Reliure ancienne restaurée, veau brun estampé (2).

1132. (2247-52). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1). Table des matières (3).

2. (F. 2-25). Epistola lugubris et mesta simul et consolatoria de

(1) Série de sermons anonymes depuis le premier dimanche du Carême jusqu'au vingt-deuxième après la Pentecôte.

(2) Voir une description de ce manuscrit dans *Cat. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. I, p. 290-91.

(3) Bon nombre des pièces signalées dans cette table ne se trouvent pas dans le volume.

infelice expugnatione ac misera irruptione et invasione insule Euboye dictæ Negropontis a perfido crucis Christi hoste Turcorum impiissimo principe et tiranno nuper inflictæ ad reverendissimum patrem ac sapientissimum dominum dominum Bessarionem sacrosancte romane ecclesie cardinalem Sabinii et patriarcham Constantinopolitanum, edita a Roderico Sancieri episcopo Palentino Hispano pro sanctitate domini nostri Pauli secundi pontificis maximi in castro suo sancti Angeli de urbe castellano (1).

3. (F. 26-50^v). Liber beati AUGUSTINI de vita christiana. = *PL.*, t. XL, col. 1031.

4. (F. 51-94). AUGUSTINI AURELII episcopi liber de singularitate clericorum. = *PL.*, t. IV, col. 835 sqq.

5. (F. 95-113). [NICHOLAUS DE CLEMENGIS]. Epistola de prosperitate adversitatis (2).

6. (F. 113-130^v). Epistola de fructu heremi (3).

7. (F. 130^v-150). Epistola de filio prodigo (4).

Papier, filigrane de la lettre *P*; 150 feuillets; 0^m,21 × 0^m,145; XV^e siècle. L'estampille rouge de la Bibliothèque impériale de Paris se trouve f. 2 et f. 150^v. Demi-reliure moderne; dos en maroquin rouge avec les titres des différents traités; plusbas, le monogramme couronné de Léopold I^{er}.

1133. (4592-95). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1-30^v). AUGUSTINUS. De verbo Dei.

Sous ce titre erroné, il y a d'abord (f. 1-8^v) la méditation XV^e de S. ANSELME, *PL.*, t. CLVIII, col. 779 sqq., puis un traité qui commence : *Amo te, Deus meus et magis magisque amare te cupio* et finit : *Celestium potius contemplatione quam terrestrium occupatione.*

2. (F. 30^v-33). AUGUSTINUS, in libro de spiritu et anime (*sic*). — Extrait *PL.*, t. XL, cap. XIV, col. 790-91; cap. XVI, XVII, col. 792-93.

3. (F. 35-39). De amicicia, de caritate. — Extraits de divers auteurs.

4. (F. 40-134). [THOMAS A KEMPIS]. Soliloquium anime (5).

5. (F. 135-166). [THOMAS A KEMPIS]. De imitatione Christi. Liber I.

6. (F. 166-169). De sobrietate et continencia. *Inc.* Sic est ordo sobrius et Deo amabilis. *Des.* et in seculum non tenebrescet, ipsi honor et gloria ... Amen.

(1) Sur l'édition de cette lettre, voir BRUNET, *Manuel du libraire*, 5^e éd., t. IV, p. 1347.

(2) Voir NICOLAI CLAMENGII *Catalauniensis theologi disertissimi libri quinque*, Paris, 1521, f. xxx^v-xliv^v.

(3) *Ibid.*, f. xviii-xxx.

(4) *Ibid.*, f. iii^v-xvii^v.

(5) Publié dans SOMMALIUS, *Thomae a Kempis opera omnia*, éd. 4^a, Duaci, 1625, p. 443-511.

Parchemin; 169 feuillets; 0^m,14 × 0^m,105; XV^e siècle. F. 1, on lit *Bethleem* et f. 169^v : *Pertinet in Bethleem prope Lovanium liber iste*. Demi-reliure moderne.

1134. (5122-26). S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1-2). Tabula omnium capitulorum libri sequentis.
2. (F. 2^v-139^v). Liber ... de disciplina et perfectione monastice conversationis editus a venerabili ac devoto religioso domino LAURENTIO IUSTINIANO, patriarcha Venetiarum (1).
3. (F. 140-143). Ammonitio notabilium dictorum iuxta alphabeticum ordinem in opusculum sequens.
4. (F. 143^v-187). Consolatorium theologicum preclarissimi viri magistri IOHANNIS DE TAMBACO sacrarum litterarum doctoris (2).
5. (F. 187-211). Divi AURELI AUGUSTINI Hipponensis episcopi liber sive exhortatio de salutaribus documentis ad quendam comitem. = *PL.*, t. XCIX, col. 197.
6. (F. 211-226). Divi AURELI AUGUSTINI Hipponensis episcopi liber sive tractatus de rectitudine catholice conversationis. = *PL.*, t. XI, col. 1169 sqq.

7. (F. 226^v-227). Divi AURELI AUGUSTINI Hipponensis episcopi tractatus de creatione primi hominis. = *Ibid.*, col. 1213 sqq.

8. (F. 227^v). Divi AURELI AUGUSTINI Hipponensis episcopi tractatus de pugna anime. = *PL.*, t. XXXVIII, col. 713.

Papier; 228 feuillets; 0^m,207 × 0^m,138; XV^e siècle. F. 1, on lit : *Liber domus capelle iuxta angiam*, note qui désigne la Chartreuse de Hérinnes. Reliure ancienne veau brun estampé.

1135. (11752-64). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1^v). Index.
2. (F. 2-6^v). Liber beati AUGUSTINI episcopi de paciencia. = *PL.*, t. XL, col. 616.
3. (F. 7-9). AUGUSTINUS. De decem plagis. = *PL.*, t. XXXIX, col. 1783.
4. (F. 9-16^v). Liber eiusdem beati AUGUSTINI de decem cordis. = *PL.*, t. XXXVIII, col. 75 sqq.
5. (F. 17-20^v). AUGUSTINUS de disciplina christiana. = *PL.*, t. XL, col. 667 sqq.

Les feuillets 21-25 sont blancs.

6. (F. 25-28^v). Speculum peccatorum. = *Ibid.*, col. 983.

7. (F. 28^v-31^v). [S. BERNARDUS. Sermones in conversione sancti Pauli]. = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 359 sqq.

(1) Sur les éditions de ce traité, voir FABRICIUS-MANSI, *Bibl. lat. med. et infim. aet.*, t. IV, p. 209.

(2) Cf. QUÉTIF-ECHARD, *Scriptores ordinis praedicatorum*, t. I, p. 668.

8. (F. 31^v-60^v). Beati BERNARDI abbatis sermones super psalmo *Qui habitat.* = *Ibid.*, col. 185 sqq.

9. (F. 61-62^v). Epistola beati BERNARDI Clarevallis abbatis ad Falconem Lingonensem. = *PL.*, t. CLXXXII, col. 325-26.

10. (F. 63-65). Bulle papales tres.

a) Forma bulle indulgentialis anni iubilei ... CLEMENTIS in bulla NICHOLAI quarti pro anno M^occcc^ol^o inserta.

b) Tenor bulle indulgentialis GREGORII XI.

c) Innovatio et confirmatio a papa NICHOLAO quarto.

Les feuillets 65^v-66^v sont blancs.

11. (F. 67-74^v). Epistola magistri HEYMERICI DE CAMPO (1) missa summo Pontifici anno Domini 1425.

12. (F. 75-79). Scriptum cuiusdam contra clausuram canonicorum regularium, cum marginali glosa M. HEYMERICI DE CAMPO.

13. (F. 79^v). [De clausura]. — C'est le commencement du traité suivant.

Les feuillets 80 et 81 sont blancs.

14. (F. 82-96). Scriptum magistri HEYMERICI DE CAMPO super clausuram regularium.

Les feuillets 96^v-97^v sont blancs.

15. (F. 98-102^v). Scriptum EGIDI BOCHEROUL (2) prioris in Bethleem contra suppriorem de Viridivalle clausuram canonicorum regularium impugnantem.

Les feuillets 103 et 104 sont blancs.

16. (F. 105-108). Responsio doctorum sacre theologie universitatis Parisiensis moderativa aut correctiva potius super questione per magistrum Egidium Carlerii (3) decanum Cameracensem scripta super clausuram canonicorum regularium.

17. (F. 108^v-109^v). Scriptum super praemisso dubio decani ecclesie Cameracensis.

18. (F. 110-114^v). Questiones per fratrem EGIDIUM BOCHEROUL in consilio Basiliensi mote.

19. (F. 115-116^v). Formula casus Parisius propositi quoad principale super institutionem generalis capituli Viridisvallis.

Le feuillet 117 est blanc.

20. (F. 118-118^v). De libro *Moralium* beati Gregorii pape amisso et per miraculum invento. = *BHL.*, n. 3647.

(1) Sur cet écrivain, voir FOPPENS, *Bibliotheca belgica*, p. 433, qui toutefois ne mentionne pas les traités qui se trouvent ici.

(2) Au sujet de cet auteur, cf. J. ACQUOY, *Het Klooster te Windesheim*, t. I pp. 119, 207; t. III, p. 57.

(3) Cf. Dom URSMER BERLIÈRE, *Mélanges d'histoire bénédictine*, t. II, p. 123.

21. (F. 118^v-170). [Excerpta ex libris *Moralium* beati GREGORII pape]. = *PL.*, t. LXXV, col. 515 sqq.

Les feuillets 137-139, 170^v-173^v sont blancs.

22. (F. 174-200). [Collecta super Genesim].

Les feuillets 200^v-201^v sont blancs.

23. (F. 202-239^v). *Gesta sanctorum Barlaam et Iosaphat.* = *BHL.*, n. 979.

24. (F. 230^v-241^v). Divers extraits de *humilitate, virginitate, superbia, fornicatione, prudentia, simplicitate.*

Papier, divers filigranes : la tête de bœuf surmontée de la croix, l'ancre, le lévrier ; 241 feuillets ; 0^m,295 × 0^m,215 ; XV^e siècle (1448), car f. 6^v, on lit : *Scriptus per manus fratris Walteri Rumelans, anno Domini M.cccc.xlviii, finitus ipso die Barbare virginis et martiris* ; f. 9 : *Per manus fratris Walteri Ru[melans] anno xlviii^o* ; f. 16^v : *Anno Domini M.cccc.xlviii^o per manus fratris Walteri Rumelans huius monasterii professi*, et f. 20^v : *Anno Domini M^occcc. xlviii per manus fratris . . .* : les feuillets 2 à 62 sont à deux colonnes. F. 1^v, on lit : *Pertinet monasterio de Bethleem prope Lovanium*, et f. 2 : *Bethleem* ; on trouve f. 96, la signature : *Heymericus de Campo*. Reliure ancienne restaurée, veau brun estampé.

1136. (11765-68). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1^v). Index.

2. (F. 2-40^v). *Devotus tractatulus beati AUGUSTINI de sancta Trinitate.* = *PL.*, t. XLII, col. 839 sqq.

3. (F. 41-98^v). *Liber Soliloquiorum beati AUGUSTINI.* = *PL.*, t. XL, col. 863 sqq.

4. (F. 99-130^v). *Stimulus conscientie.* = *PL.*, t. XXXII, col. 675 sqq. (1).

Les feuillets 131-132 sont blancs.

5. (F. 132^v). *Orationes diversae, ad sanctam Trinitatem, ante celebrationem.*

Le feuillet 133 est blanc.

6. (F. 134-154^v). *Orationes excepte ex Retoricha divina G. Parysiensis.*

Papier ; 154 feuillets ; 0^m,15 × 0^m,075 ; XV^e siècle. F. 1, on lit : *Fratres Iudocus et Iohannes in Argenton*, et en dessous : *Pertinet monasterio vallis ducis* ; de même f. 1^v : *Iste liber pertinet monasterio vallis ducis*, et f. 2, au bas : *Vallis ducis*. Reliure parchemin.

1137. (11860-65). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1-10^v). *Liber divi AUGUSTINI episcopi Hipponensis qui dicitur Scala paradisi.* = *PL.*, t. XL, col. 997 sqq.

2. (F. 10^v-11). *In elevatione corporis [Christi] oratio, de passione Domini.*

(1) Sous ce titre on trouve ici les *Confessiones* de S. Augustin.

3. (F. 11-14). Devotissima oratio gloriosi IHERONIMI de passione Domini.

4. (F. 15-48). Exhortationum quoddam novitiorum DYONISII Carthusiensis (1).

5. (F. 49-74). Suspiria AURELII AUGUSTINI episcopi Yponensis.

6. (F. 74^v-76). Commendatio animarum secundum ritum secularium sacerdotum.

Les feuillets 76^v-78 sont blancs.

7. (F. 79-79^v). Oratio sancti THOME DE AQUINO.

8. (F. 80-83). Psalterium a beato AUGUSTINO causa pie sue matris Monice ... abbreviatum.

9. (F. 83^v-87). Litanies des saints et diverses prières de S. BERNARD, *Illumina*, l'hymne *Ave rosa* (*RH.*, n. 2084), etc.

10. (F. 88-98^v). Quedam orationes seu meditationes LIVINI BOUWINS prioris quondam predicatorum in Gandavo (2).

11. (F. 99-100). Sancti EDMUNDI Cantuariensis archiepiscopi oratio *O intemerata*; longue rubrique sur l'histoire de cette prière. = *BHL*, n. 2409.

Parchemin; 100 feuillets; 0^m,158 × 0^m,11; XV^e siècle. A l'intérieur du second plat de la couverture, il y a le nom propre: *Je Anneke De Costere*. Reliure parchemin.

1138. (12042-49). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1-1^v). Retractatio beati AUGUSTINI episcopi in librum soliloquiorum. = *PL.*, t. XXXII, col. 589-90.

2. (F. 1^v-28^v). Liber soliloquiorum beati AURELII AUGUSTINI Yponensis episcopi. = *Ibid.*, col. 869 sqq.

3. (F. 29-29^v). Ex libro retractationum in librum de immortalitate anime AURELII AUGUSTINI episcopi. = *Ibid.*, col. 590-91.

4. (F. 29^v-39). Liber beati AURELII AUGUSTINI de immortalitate anime. = *Ibid.*, col. 104 sqq.

5. (F. 39-39^v). Ex libro retractationum in librum de quantitate anime. = *Ibid.*, col. 594.

6. (F. 39^v-74^v). Liber sancti AURELII AUGUSTINI ... de quantitate anime. = *Ibid.*, col. 1035 sqq.

7. (F. 75-94). Retractatio et liber AURELII AUGUSTINI de magistro. = *Ibid.*, col. 602, 1193 sqq.

8. (F. 95-139). Liber qui secundum quosdam intulatur AUGUSTINI, secundum quosdam et verisimilius HUGONIS DE SANCTO VICTORE de anima et spiritu. = *PL.*, t. XL, col. 779.

(1) Au sujet de ce traité et de ses diverses éditions, voir *Doctoris ecstatici D. Dionysii Cartusiani opera omnia*, t. I, Monstrolii, 1896, p. LXVI, n. 141.

(2) Il s'agit sans doute de *Livinus Bondius*. Voir QUÉTIF-ECHARD, *Scriptores ordinis praedicatorum*, t. II, p. 34.

9. (F. 140). SIMON DE CASSIA in libro primo de *Gestis Salvatoris* capite primo (1).

10. (F. 141-193^v). Tractatus reverendissimi domni PETRI DE ALYACO episcopi et cardinalis de anima et eius potentiis (2).

Les feuillets 194 et 195 sont blancs.

11. (F. 196-223^v). Centilogium sive liber de conceptibus sive conceptionibus anime venerabilis magistri IOANNIS GERSON cancellarii Parisiensis (3).

12. (F. 224-285^v). Translatus venerabilis magistri IOHANNIS DE RUPELLA ordinis minorum de anima et multiplici distinctione potentiarum eius (4).

Papier ; 285 feuillets ; 0^m,207 × 0^m,134 ; XV^e siècle ; initiales rouges et bleues. F. 1, on lit : *Ex libris Gerardi Kreynickæ*. Demi-reliure moderne, titre doré au dos : *B^{is} Augustini retractatio in librum Soliloquiorum et alia opuscula. XV saec.* ; plus bas, le chiffre couronné de Léopold I^{er}.

1139. (1404²-52). — SS. AUGUSTINUS, HIERONYMUS. Opera.

1. (Verso du deuxième feuillet de garde). Acte de 1369 en faveur d'un certain Jean.

2. (Verso du cinquième feuillet de garde). Index.

3. (F. 1-52^v). AURELI AUGUSTINI ... de doctrina christiana. = *PL.*, t. XXXIV, col. 9.

4. (F. 53-53^v). Laudes et preconia sancti AURELI AUGUSTINI Ypponensis episcopi. — Extraits de divers Pères.

5. (F. 53^v-55). Epistola beati IHERONIMI presbiteri de duodecim scriptoribus ad Damasum. = *PL.*, t. XXIII, col. 723.

Les feuillets 56-58^v sont blancs.

6. (F. 59-76). Beati IHERONIMI presbiteri de viris illustribus. = *PL.*, t. XXIII, col. 601.

7. (F. 76^v-87). Liber GENNADII de viris illustribus. = *PL.*, t. LVIII, col. 1053.

8. (F. 87-91^v). Liber beati YSIDORI Ispalensis episcopi de viris illustribus. = *PL.*, t. LXIII, col. 1081.

9. (F. 91^v-109). Liber domni SIGEBERTI Gemblacensis de viris illustribus. = *PL.*, t. CLX, col. 547.

10. (F. 109^v-115^v). Kathologum virorum illustrium ... post Sigebertum (5).

(1) Cf. plus haut, p. 21.

(2) Cf. L. SALEMBIER, *Petrus de Alliaco*, p. XXI.

(3) ELLIES DU PIN, *Gersonii opera*, t. IV, p. 793.

(4) Voir *Hist. littéraire de la France*, t. XIX, p. 171-173.

(5) Cf. supra p. 102, n. 1037 (18716-19).

11. (F. 116-117). [De scriptis Bedae].
 12. (F. 118-119). [De regibus Israel et Iuda].
 Les feuillets 119^v-120^v sont blancs.
 13. (F. 121-138). Dyalogus de predestinatione, libero arbitrio et gratia.
 Les feuillets 138^v-139^v sont blancs.
 14. (F. 140-172^v). Devotus tractatus de officio misse.

Papier, au filigrane de l'ancre ; 172 feuillets, plus sept de garde ; 0^m,21 × 0^m,138 ; XV^e siècle. Sur le premier feuillet de garde, on lit : *In Bethleem prope Lovanium* ; sur le troisième feuillet de garde : *Restituatur bibliotheca in Bethleem extra Lovanium* ; f. 1, au haut du feuillet : *Bethleem*, et en bas : *Pertinet monasterio canonicorum regularium in Bethleem, prope Lovanium*, et f. 172^v : *Liber monasterii de bethleem prope Lovanium quem contulit eidem monasterio dominus Heynricus de puteo presbiter Lovaniensis cuius usum sibi retinuit ad vitam*. Reliure ancienne, ais de bois recouverts de veau estampé ; six fers différents très élégants.

1140. (15093-109). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1). Index.
 Les feuillets 1^v-2 sont blancs.
 2. (F. 2^v). Table des matières et note de C. VAN HULTHEM sur ce volume.
 3. (F. 3-17). Liber sancti AUGUSTINI de magistro. = *PL.*, t. XXXII, col. 1193.
 4. (F. 17-27). Liber Aurelii AUGUSTINI Yponensis episcopi. Unde malum. = *Ibid.*, col. 1221 sqq.
 5. (F. 27-62^v). Liber EIUSDEM de libero voluntatis arbitrio. = *PL.*, t. XXXIII.
 6. (F. 63-72). Aurelii AUGUSTINI de beata vita. = *PL.*, t. XXXII, col. 959.
 7. (F. 72-82). AUGUSTINUS. De videndo Deo ad Paulinam. = *PL.*, t. XXXIII, col. 596.
 8. (F. 83-113). AUGUSTINI liber contra Academicos. = *PL.*, t. XXXII, col. 905.
 9. (F. 113^v-114). Sermo beati AUGUSTINI de annunciatione. = *PL.*, t. XXXIX, col. 2107.
 10. (F. 114^v-116^v). Sermo beati AUGUSTINI episcopi de assumptione beate Marie virginis. = *PL.*, t. XL, col. 1141.
 11. (F. 117-117^v). Sermo ANSELMII archiepiscopi Canthuariensis de conceptione beate Virginis. *Inc.* Omnium sanctorum, dilectissimi, laus et exaltatio. *Des.* Denique Deus noster est factus per Mariam frater noster.
 12. (F. 117^v-118^v). Sermo beati IOHANNIS de David ubi Goliam immanem hostem devicit. = *PG.*, t. LIII, col. 425-27.

13. (F. 119-121^v). Sermo AUGUSTINI de versu psalmi lxxii : *Tenuisti manum dexteram meam.* = *PL.*, t. XXXVIII, col. 155.

14. (F. 121^v-123^v). Sermo EIUSDEM de specificacione mortalium et venialium peccatorum. = *PL.*, t. XXXIX, col. 1946.

15. (F. 123^v-124). Registrum in libris omeliarum sancti Augustini.

16. (F. 124-185). Omelie beati AUGUSTINI episcopi numero quinquaginta. = *PL.*, t. XXXVIII et XXXIX, nn. 16, 53, 113, 387, 271, 287, 270, 167, 40, 253, 39, 333, 105, 252, 11, 388, 353, 77, 99, 383, 339, 300, 351, 18, 42, 32, 54, 142, 315, 44, 368, 385, 311, 211, 393. 58, 135, 290, 101, 56, 310, 86, 392.

17. (F. 185-203^v). Liber EIUSDEM de vera religione. = *PL.*, t. XXXIV, col. 121.

18. (F. 203^v-216^v). Liber beatissimi patris AUGUSTINI Yponensis episcopi dictus de fide ad Petrum. = *PL.*, t. XL, col. 735.

19. (F. 216^v-233^v). Liber beati AUGUSTINI Yponensis episcopi de gratia novi testamenti. = *PL.*, t. XXXIII, col. 538.

20. (F. 233^v-241^v). Liber EIUSDEM de agone christiano. = *PL.*, t. XL, col. 289.

21. (F. 241^v-243^v). Libellus EIUSDEM de beato latrone. = *PL.*, t. XXXIX, col. 2043-47.

22. (F. 243^v-268). Liber Enchiridion dictus quem composuit beatus AUGUSTINUS. = *PL.*, t. XL, col. 231.

Papier, filigrane de la tête de bœuf surmontée de la croix ; 268 feuillets ; 0^m,284 × 0^m,198 ; XV^e siècle ; les feuillets 169-268 sont à deux colonnes ; signatures *A1-K6*. F. 268, il y a la note : *Ex dono domni Leonis Lemaire quondam curati sancti Petri tornacensis*, et f. 3 : *Pertinet ad monasterium de Elseghem* (1). Plus tard, ce volume a appartenu à Van Hulthem, l'ex-libris de sa bibliothèque se trouve au revers de la couverture (2). Reliure ais de bois, recouverts de peau de truie ; restes de fermoirs en cuivre.

1141. (II. 2335). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1^v). Index.

2. (F. 2-17). *Speculum peccatoris* (3). = *PL.*, t. XL, col. 967.

3. (F. 17^v-21). BONAVENTURA. [De dilectione Dei] (4).

4. (F. 21-22^v). [De beatitudine *Beati pacifici*].

(1) Sur ce prieuré des chanoines réguliers de Saint-Augustin, cf. J. ACQUOX, *Het Klooster te Windesheim*, t. III, p. 78-80.

(2) *Bibliotheca Hulthemiana*, t. VI, p. 9, n. 35.

(3) Sur ce traité attribué parfois à S. Bernard, voir B. HAURÉAU, *Notices et extraits de quelques manuscrits latins de la Bibliothèque nationale*, Paris, 1901, t. II, p. 346-47.

(4) *Sancti Bonaventurae opera omnia*, t. VI, Moguntiae, 1609, p. 213-215, *Stimuli amoris*, cap. vi.

5. (F. 23-94). Liber soliloquiorum beati AUGUSTINI. = *Ibid.*, col. 863 sqq.

6. (F. 94-114^v). *Centum* meditationes dominice passionis de quibus fit mentio in *Horologio sapientie* quas fecit in theutonico propter laycos quidam devotus frater A. ordinis praedicatorum apud Constanciam, sed postmodum frater GUILLERMUS canonicus regularis sancti Augustini domus Viridis Vallis in Brabantia transtulit de teutonico in latinum (1).

7. (F. 114^v-115). Commendacio dompni GUILLERMI canonici regularis Viridis Vallis in Brabantia.

8. (F. 115-115^v). Admonitio beati BERNARDI ad discipulum.

9. (F. 115^v-124). Cursus horarum eterne sapientie (2).

Parchemin; 125 feuillets; 0^m,11 × 0^m,88; XV^e siècle. F. 124^v, on lit la note : *Iste liber est de monasterio sancte crucis prope Aulfemontem, quem frater Iohannes Fiqueti scripsit. Deo gratias. Amen, et f. 1 : Sir T. P. Middle Hill 4172*. Ce volume a été acquis par la Bibliothèque royale en 1899, à une vente chez Sotheby à Londres pour 32 fr. 50 (3). Demi-reliure; au dos, le titre doré : *Meditat. domini. Passion. manuscr.*

1142. (II. 2766). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1-76). Liber soliloquiorum beati AUGUSTINI episcopi. = *PL.*, t. XXXII, col. 869.

2. (F. 76-77^v). Tabula repertoria capitulorum praecedencium.

3. (F. 78-93). Speculum peccatoris. = *PL.*, t. XL, col. 967.

Parchemin; 93 feuillets, plus cinq de garde; 0^m,141 × 0^m, 105; XV^e siècle; quelques jolies letrines, le premier feuillet est élégamment encadré. F. 1, il y a la note : *Monasterii sancti Petri in Blan[dino] iuxta Gan[davum]* et f. 93^v : *Hunc librum scribi fecit Reverendus pater in Christo domnus Philippus Conraldi primus huius nominis abbas monasterii sancti Petri iuxta Gandavum* (4). Ce volume fut acquis en 1901 à la vente Ashburnham à Londres pour fr. 143,75 (5). Reliure veau raciné; au dos, le titre doré : *Soliloq. Santi August.*; tranche rouge.

1143. (4925-27). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 2-22). Divi AUGUSTINI de orando Deo. = *PL.*, t. XXXIII, col. 493.

(1) Sur les éditions de ce traité souvent imprimé, voir CAMPBELL, *Annales de la typographie néerlandaise*, La Haye, 1874, p. 277-78, n. 1000; GRAESSE, *Trésor des livres rares et précieux*, t. V, p. 50.

(2) Publié avec le traité signalé note 1.

(3) Cf. *Bibliotheca Phillipica*, London, 1899, p. 25, n. 229.

(4) Philippe Conrald, ou Conrault, fut abbé de Saint-Pierre, à Gand de 1445 à 1475, voir *Gallia christiana*, t. V, col. 204-5.

(5) Cf. *The Ashburnham Library. Catalogue of the portion of the famous collection of manuscripts the property of the Rt. Hon. the Earl of Ashburnham known as The Barrois collection*. London, 1901, p. 16, n. 38.

2. (F. 22^v-23). Praenotatio in epistolam sequentem et argumentum.
3. (F. 23-62^v). PELAGII ad Demetriadem. = *Ibid.*, col. 1099.
4. (F. 63-67^v). Regula beati AUGUSTINI quam dedit sanctimonialibus. = *Ibid.*, col. 960, n. 5.
5. (F. 67^v-71^v). Sancti AUGUSTINI ad clerum et universam plebem ecclesie Hipponensis de his que circa Bonifacium presbiterum gesta fuerint. = *Ibid.*, col. 267.
6. (F. 72-76). Divi IOANNIS CHRYSOSTOMI collatio que confert regis potentiam, opes, celsitudinem cum monacho ... ARNOLDO ORYDRIO interprete (1).
7. (F. 77-133^v). Epistole HILDEBERTI Cenomanensis, postea Turo-nensis metropolitani. — Ce sont les lettres nn. 1-18, β, γ, 19-48, 63-65, 49-56, 67-70, 59-62, δ, 71 des listes dressées par A. DIEUDONNÉ, *Hildebert de Lavardin*, Paris, 1898, pp. 118-120, 123.

Le dernier feuillet de garde contient un fragment de missel, en parchemin.

Papier; 133 feuillets, plus dix-sept feuillets blancs à la fin du volume; 0^m,15 × 0^m,095; XVI^e siècle. F. 1^v, on lit : *Custodiat me qui custodit Ysrael. F. Nicolaus Behautius. Fluit sicut ros eloquium Domini*, et sur l'avant-dernier feuillet de garde : *Factus est mihi Dominus in salutem. F. Nicolaus Behautius. Haurite sicut aquas in gaudio de fontibus Salvatoris*. Jolie reliure, veau brun estampé, portant la signature PIERCHON. CARON (2); titre doré : *Hildeber. Cenoman. epist. ms.* (3).

1144. (5518). — S. AUGUSTINUS. Regula.

1. (F. 1-31^v). Regula beati AUGUSTINI Ypponensis episcopi. = *PL.*, t. II, col. 1377 sqq.
2. (F. 31^v). Ad fraternitatem dandam.

Parchemin; 31 feuillets; 0^m,272 × 0^m,192; XIV^e siècle; deux colonnes; quelques letrines. F. 1, on lit : *Dominus ... in Duysburg. Me dedit Iohannes ... ecclesie beate Katerine in Duysborch curatus*, et f. 31^v : *Coudenberch est meus possessor*. Reliure, veau fauve; au dos, le titre doré : *Reg. beati Augustini*.

1145. (9641). — S. AUGUSTINUS. De civitate Dei.

Inc. mutil. ... Quidquid dicere suscepti huius operis ratio postulat. = *PL.*, t. XLI, col. 14.

(1) Voir FOPPENS, *Bibliotheca belgica*, p. 101; *Biographie nationale*, p. 464; VAN DER AA, *Biographisch woordenboek der Nederlanden*, p. 381.

(2) Au sujet de ce relieur, voir E. THOINAN, *Les Relieurs français*, Paris, 1893, p. 224; PH. RENOARD, *Imprimeurs parisiens*, Paris, 1898, p. 224. Cf. PAUL BERGMANS, *Reliure de Pierre Caron dans Inventaire archéologique de Gand*, fasc. XXIII, décembre 1901; ID., *Un relieur gantois inconnu dans Petite Revue illustrée de l'art et de l'archéologie en Flandre*, 1902, p. 4-5.

(3) Cf. A. DIEUDONNÉ, *Hildebert de Lavardin*, Paris, 1898, p. 128.

Parchemin; 284 feuillets; 0^m,29 × 0^m,177; X^e siècle. Reliure moderne veau raciné; au dos, le titre doré reproduit à l'intérieur sur une étiquette en maroquin rouge: *Ugustinus (sic) de civitate Dei*; en dessous, les armes de Belgique et l'inscription *Bibl. royale*.

1146. (II. 1005). — S. AUGUSTINUS. De civitate Dei, en trois volumes.

PREMIER VOLUME.

1. (F. 1^v). *Retractatio sancti Augustini episcopi in libro de civitate Dei.* = *PL.*, t. XXXII, col. 647-48.

2. (F. 2^v-125^v). AURELI AUGUSTINI Ipponensis episcopi de civitate Dei liber I-XIII. = *PL.*, t. XLI, col. 13-404.

DEUXIÈME VOLUME.

AUGUSTINI episcopi de civitate Dei liber XIV-XVI, cap. 22. = *PL.*, t. XLI, col. 403-500.

TROISIÈME VOLUME.

[AUGUSTINI episcopi de civitate Dei] liber XVI, cap. 23-XXII. = *PL.*, t. XLI, col. 500-804.

Parchemin: 125. 38 et 116 feuillets; 0^m,37 × 0^m,26; XII^e siècle; deux colonnes; superbes letrines; titre courant; signatures I-XVI, I-III. Au tome I, f. 1 et 125^v, on lit la note: *Liber ecclesie sancti Martini Tornacensis*; au tome III, f. 116^v: *Liber sancti Martini Tornacensis, servanti benedictio, auferenti maledictio* (1). L'ex-libris Sir T. P., *Middle Hill*, 2030 se trouve tome I, f. 1, et tome III, f. 116^v. Ces volumes ont été acquis par la Bibliothèque royale en 1888, pour 60 francs. Reliure moderne toile anglaise, au dos le titre doré: *S. Augustin. de civitate Dei. vol. I ... vol. 2, pars 1 pars 2.*

1147. (II. 1108). — S. AUGUSTINUS. De civitate Dei.

1. (F. 1-1^v). *Capitula.*

2. (F. 1^v-2). *Retractatio sancti Augustini in libro de civitate Dei.* = *PL.*, t. XXXII, col. 647-48.

3. (F. 2). *Versus.*

Inc. Urbs nova Iherusalem confligit cum Babylone.

Des. Assit lectori tua gratia, spiritus alme.

4. (F. 2-186). AURELI AUGUSTINI Ypponensis episcopi de civitate Dei liber I-XIII. = *PL.*, t. XLI, col. 13-404.

Parchemin; 186 feuillets; 0^m,33 × 0^m,235; XIV^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et bleues; titre courant en rouge; signatures I-XVIII. Ce volume provient de l'abbaye d'Alne, mais tous les indices extérieurs de cette provenance ont disparu. F. 1, il y a la cote 4686 Ph. de la bibliothèque Phillips, à Cheltenham. Ce volume a été acquis en 1888. Demi-reliure toile anglaise; au dos, le titre doré: *S. Augustinus de civitate Dei libri I ad XIII.*

(1) Cf. A. D'HERBOMEZ, *Les Manuscrits de l'abbaye de Saint-Martin de Tournai aujourd'hui conservés à la bibliothèque royale de Bruxelles*, p. 11-12.

1148. (291). — S. AUGUSTINUS. De civitate Dei.

1. (F. 1). *Retractatio sancti AUGUSTINI episcopi in libro de civitate Dei.* = *PL.*, t. XXXII, col. 647-48.

2. (F. 1-308). *De civitate Dei.* = *PL.*, t. XLI, col. 13-804.

Parchemin; 308 feuillets; 0^m,355 × 0^m,25; XV^e siècle (1457), car f. 308^v, il y a la note : *Scriptum ac finitum est volumen istud per manus fratris nostri Livini de Mechlinia anno Domini M^o.cccc^o.lvi^o mensis augusti die V hora circiter quarta post meridiem* (1). Deux colonnes, initiales rouges et bleues; titre courant; signatures. Ce volume provient de Corsendonck, dont il porte la cote W. 3 au verso du premier feuillet de garde; ff. 2 et 308^v, il y a l'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris. Reliure ancienne, ais de bois recouverts de veau estampé; traces de fermoirs et de coins en cuivre.

1149. (684). — S. AUGUSTINUS. De civitate Dei.

1. (F. 1-1^v). *Capitula libri AUGUSTINI episcopi de civitate Dei.* — *Retractatio beati AUGUSTINI in libro de civitate Dei.* = *PL.*, t. XXXII, col. 647-48.

2. (F. 2-181^v). *Liber de civitate Dei.* = *PL.*, t. XLI, col. 13-804.

3. (F. 181^v). *Nota de sententia quam beatus Augustinus de Timeo Platonis sumit et in tercio decimo huius operis libro ponit* (2).

Papier, au filigrane de la lettre *P*; 181 feuillets, plus neuf de garde en tête et un à la fin du volume; 0^m,29 × 0^m,205; XVI^e siècle; deux colonnes; jolies initiales rouges et bleues rehaussées d'or et à rinceaux; titre courant en rouge. F. 1, on lit : *Collegii Societatis Iesu Lovanii*. Reliure ancienne, veau brun estampé.

1150. (148). — S. AUGUSTINUS. De civitate Dei, lib. XI-XXII.

1. (F. 3-8^v). *Capitula libri undecimi ... vigesima secundi AUGUSTINI episcopi de civitate Dei.*

2. (F. 9-164). *AURELI AUGUSTINI beatissimi Ypponensis episcopi de civitate Dei* (lib. XI-XXII). = *PL.*, t. XLI, col. 315-804.

3. (F. 1 et 166). Feuillet de garde contenant un fragment de commentaire sur les Actes des apôtres.

Parchemin; 166 feuillets, plus deux de garde en papier; 0^m,38 × 0^m,275; XV^e siècle; deux colonnes; le f. 9 est encadré d'une peinture ébauchée; initiales rouges et bleues; titre courant en rouge. F. 2, il y a la note : *Liber S. Martini Lovaniensis ex parte confratris nostri P. Henrici Francx ex primoribus huius oppidi noni professi anno 1454, qui obiit primus iubilearius anno 1504*; et f. 165^v : *Est liber hic sancti Martini Lovaniensis ex parte fratris Henrici Francx* (3). F. 3 et f. 164^v, l'estampille rouge *R. F.* de la Bibliothèque nationale de Paris. Belle reliure ancienne, veau estampé, fers au monogramme du Christ et au lis.

(1) Cf. SANDERUS, *Bibl. belgic. ms.*, part. II, p. 47.

(2) Cf. *PL.*, t. XLI, col. 591.

(3) Cf. SANDERUS, *Bibl. belgic. manuscr.*, part. II, p. 210.

1151. (846-57). — S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 1^v). Table des matières.
2. (F. 2-31^v). Libri duo *Retractationum* AURELII AUGUSTINI episcopi. = *PL.*, t. XXXII, col. 583-656.
3. (F. 32-32^v). Libri beati Augustini in tabula non contenti. Laudes et praeconium sancti Aurelii Augustini.
4. (F. 32^v-33). Tabula capitulorum *Retractationum*.
5. (F. 34-53). Octodecim omelie EIUDEM super apocalipsim. = *PL.*, t. XXXIV, col. 1417 sqq.
6. (F. 53-63). Liber de magistro. = *PL.*, t. XXXII, col. 1193 sqq.
7. (F. 63^v-78). Liber *Soliloquiorum*. = *Ibid.*, col. 869 sqq.
8. (F. 78^v-84). Liber de immortalitate anime. = *Ibid.*, col. 1021 sqq.
9. (F. 84-103). Liber de quantitate anime. = *Ibid.*, col. 1035 sqq.
10. (F. 103-124^v). Liber de Academicis. = *Ibid.*, col. 905 sqq.
11. (F. 124^v-143^v). De ordine rerum. = *Ibid.*, col. 977 sqq.
12. (F. 144-151^v). Liber de beata vita. = *Ibid.*, col. 959 sqq.
13. (F. 152-163^v). Liber de utilitate credendi. = *PL.*, t. XLII, col. 65 sqq.
14. (F. 164-169^v). Vita sancte Monice vidue. = *BHL.*, n. 6000.
15. (F. 170-282). Liber sermonum beati AUGUSTINI. = *PL.*, t. XXXIX, col. 2429 sqq.
16. (F. 282^v-284). Tituli sermonum secundum cursum temporis.

Parchemin; 284 feuillets, plus quatre de garde; 0^m,348 × 0^m,245; XV^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et bleues; titre courant; ancienne pagination i-ccxcii. Le volume provient de Rouge-Cloître, car on lit, f. 1^v: *Bibliothecae Rubeae Vallis* (1). La reliure du volume réalise un des plus beaux types de cet atelier (2).

1152. (12013). — S. AUGUSTINUS. Excerpta. — Extraits du *Liber de civitate Dei*.

Papier; 56 feuillets, plus six feuillets blancs à la fin du volume; 0^m,20 × 0^m,14; XVI^e siècle. Demi-reliure moderne; au dos, en maroquin rouge, le titre doré: *Beati August. Extracta*.

1153. (9294, 9295). — S. AUGUSTIN. La Cité de Dieu, traduction française de RAOUL DE PRESLES, en deux volumes (3).

Le premier volume contient les livres I à X, mais le début a été enlevé; le tome II renferme la suite.

Parchemin; 410 et 383 feuillets, plus sept de garde dans chacun des deux volumes; 0^m,362 × 0^m,27; XIV^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et bleues

(1) Cf. *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Brux.*, t. I, p. 284.

(2) Cf. [J. WEALE], *Bookbindings*, p. 178, n. 340-342.

(3) Sur les éditions de la version de la *Cité de Dieu* par Raoul de Presles, voir J. GRAESSE, *Trésor des livres rares et précieux*, t. I, p. 255.

rehaussées d'or, titre courant en rouge. Dans le second volume, f. 2, une miniature représente d'une façon symbolique la cité de Dieu et la cité des hommes. Ces volumes proviennent de Saint-Laurent à Liège, la cote de sa bibliothèque *K-K, 3-5* se voit au cinquième feuillet de garde du tome premier. F. 1 et f. 410 du premier volume, f. 1 et f. 383 du second, il y a l'estampille rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris. Reliure veau raciné; au dos, le titre doré : *Cité de Dieu par Saint-Augustin 1 et 2*, reproduit sur une étiquette en maroquin rouge à l'intérieur des volumes. Les armes de Belgique sont au dos et sur les plats de chacun des volumes, tranche dorée.

1154. (9005, 9006). — **RAOUL DE PRESLES.** La Cité de Dieu de S. Augustin, en deux volumes.

PREMIER VOLUME (9005).

1. (F. 1-2). Table des matières.
2. (F. 2-365^v). Livres I à X de la Cité de Dieu.

DEUXIÈME VOLUME (9006).

1. (F. 1-1^v). Table des matières.
2. (F. 2-319^v). Livres XI à XXII de la Cité de Dieu.

Parchemin; 365 et 319 feuillets, plus cinq de garde dans chaque volume; 0^m,482 × 0^m,345; XV^e siècle; deux colonnes; superbes lettrines rehaussées d'or; titre courant; signatures dans le premier volume : *A. ... A. IIII ... VIII*. Ces manuscrits sont ornés de fort belles miniatures. Celles du premier volume représentent : f. 3, S. Augustin écrivant et le roi de France. Charles V; f. 4^v, l'adoration des idoles; f. 5, la prédication de S. Augustin; f. 6, S. Augustin et Raoul de Presles, le siège de Rome par Alaric; f. 6^v, Ulysse et Minerve; f. 7^v, le poète Virgile; f. 8^v, prise de Troie; f. 9, prise d'un temple; f. 9^v et 10, autres scènes de pillage; f. 10^v, le bon et le méchant; f. 32^v, une miniature qui est ainsi décrite dans le manuscrit : *Par les champions sont demonstrez les jeux des theatres et par les clers sont figurez les poetes qui chantaient tragedies et comedies dont ce liere fait mention*; f. 78^v, prise de Troie; f. 147^v, S. Augustin priant pour l'empire romain; f. 189^v, S. Augustin et l'empereur romain; f. 235, S. Augustin et ses disciples; f. 256^v, représentation mythologique; f. 287^v, représentation de la philosophie; f. 320^v, S. Augustin et les démons; f. 337^v, représentation du vrai sacrifice. — Au t. II, il y a, f. 2, les deux cités, celle de Dieu et Babylone, la cité terrestre, fondée par Nemrod; f. 20^v, la création d'Adam et d'Ève; f. 35^v, Adam et Ève chassés du Paradis terrestre; f. 48^v, l'arbre de vie sapé par la mort; f. 70, meurtre d'Abel; f. 101, l'ivresse de Noé; f. 135^v, couronnement de David; f. 161^v, Remus et Romulus; f. 205^v, S. Augustin écrivant la Cité de Dieu; f. 233^v, le jugement dernier; f. 262^v, les tourments des damnés; f. 289^v, le couronnement de la S^{te} Vierge, avec les figures de S. Pierre, S. Paul, S. Jean, S^{te} Marie-Madeleine, S^{te} Catherine, S^{te} Barbe. Ces volumes proviennent de l'ancienne bibliothèque de Bourgogne (1). Sur le premier feuillet de garde du premier volume, on lit la note : *C'est le premier volume de Saint Augustin de la Cité de Dieu (achevez du gouverneur de Lille)*, et sur le dernier feuillet de garde du même volume : *Visité et fait l'extrait le 1^{er} octobre 1746 par ordre du Roy*. Reliure veau raciné; au dos, le titre doré : *Citée de Dieu 1, 2*, reproduit sur une étiquette en maroquin rouge à l'intérieur des volumes; tranche dorée, fermoirs en argent.

(1) Cf. BARROIS, *Bibliothèque prototypographique*, p. 126, nn. 728 et 729; p. 216, nn. 1513, 1514; p. 235, n. 1645.

1155. (9015, 9016). — S. AUGUSTIN. De civitate Dei.

Texte latin et traduction française, par RAOUL DE PRESLES, en deux volumes.

Parchemin; 449 et 519 feuillets, plus huit de garde dans le premier et trois dans le second; 0^m,423 × 0^m,288; XV^e siècle (1405), car dans le premier volume, n. 9015, f. 449^v, on lit la note : *Hoc opus ex duobus conflatum et scriptum est per manum fratris Nicolai Cotin ordinis predicatorum ad expensas Reverendissimi in Christo patris ac domini domini Iohannis divina miseracione Tornacensis episcopi (1) anno Domini millesimo quadringentesimo quinto in translatione Martini finitum. Yhs.* Deux colonnes; magnifiques lettrines rehaussées d'or; titre courant. Le premier feuillet de chaque volume est splendidement enluminé et orné de miniatures; la première représente la prédication de S. Augustin et le roi Charles V de France; la seconde, la présentation de la traduction de la Cité de Dieu par Raoul de Presles au roi. Les armoiries de Jean Chevrot se trouvent dans la première lettrine de chacun des deux premiers feuillets. Ces volumes proviennent de la Bibliothèque de Bourgogne (2). Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré : *D. Augustini de Civitate Dei, 1 et 2*, reproduit sur une étiquette en maroquin rouge qui se trouve au premier feuillet de garde de chacun des volumes; plus bas, les armes de Belgique et l'inscription *Bibl. royale*; tranche dorée; fermoirs en argent.

1156. (9013, 9014). — RAOUL DE PRESLES. La Cité de Dieu de S. Augustin, en français; deux volumes.

Le premier contient les dix premiers livres, et le second les livres XI-XXII.

Parchemin; 396 et 298 feuillets; 0^m,398 × 0^m,275; XV^e siècle (1462), car on lit, f. 298^v au tome II : *Consummatum fuit hoc opus anno Domini millesimo quadringentesimo sexagesimo secundo in profesto conversionis sancti Pauli.* Deux colonnes; jolies lettrines rehaussées d'or. Les miniatures du tome premier représentent, f. 2 et f. 7, la présentation du volume par Raoul de Presles à Charles V; f. 24 et f. 27^v, le culte des idoles; f. 76^v, la consultation des oracles; f. 153^v, f. 248 et 307, l'enseignement des philosophes; f. 200, scène d'incantation; f. 344^v, S. Augustin en adoration devant la Sainte Trinité; f. 364^v, les anges et les démons. Dans le tome second, f. 2^v, un lecteur; f. 3, la cité de Dieu et la cité des hommes; f. 20, les anges rebelles précipités en enfer; f. 93^v, tentation et châtement d'Adam et d'Ève; f. 45^v, Dieu interpellant Adam après son péché; f. 65, Caïn et Abel; f. 95, les fils de Noé; f. 128, les prophètes; f. 153^v, un lecteur dans son cabinet; f. 199, les philosophes; f. 224, la résurrection des morts; f. 250, le jugement dernier; f. 273^v, l'enfer. Ce volume a appartenu à Charles de Croy; on voit ses armes, tome I, f. 2, et tome II, f. 3; f. 396 du premier volume, il y a la note : *Cest le premier volume de Saint Augustin traittant de la cité de Dieu dont il en ya deux et a en cestuy X histoires, lequel est à monseigneur Charles de Croy comte de Chimay, Charles, et f. 298^v du second : Cest le dernier volume de Saint Augustin traittant de la cité de Dieu dont il en ya deux, et a en cestuy XIII histoires, lequel est à monseigneur Charles de Croy, comte de Chimay, Charles.* Ces deux volumes ont ensuite passé dans la bibliothèque des ducs de Bourgogne; ils portent, le premier, sur le premier feuillet

(1) Sur Jean Chevrot, évêque de Tournai, voir *Gallia christiana*, t. III, col. 232-33.

(2) BARROIS, *op cit.*, p. 216, nn. 1511, 1512; p. 230, n. 1626; p. 235, n. 1643.

de garde, l'indication : *Du premier pepitre le VI^e*, et le second volume : *Du II^e pepitre le X^e*. Au XVIII^e siècle, ces volumes ont été transportés à Paris, car tous deux portent sur les feuillets de garde la signature du bibliothécaire du roi : *L. Lancellotus*. Reliure moderne, veau raciné ; au dos, le titre doré : *Cité de Dieu 1 et 2*, reproduite à l'intérieur sur une étiquette de maroquin rouge ; tranche dorée aux armes de Croy ; fermoirs en argent.

1157. (II. 2569). — EUGIPPIUS. Opera.

1. (F. 1-7). Praefatio et capitula.

2. (F. 7-202^v). EUGIPPIUS. De excerptioibus sancti Augustini. = *PL.*, t. LXII, col. 559. *Des. mutil.* CCCXLV. Utrum singillatim a creatore Deo ... formentur ex epist..., *ibid.*, col. 1702.

Les deux plats intérieurs de la couverture sont recouverts de feuillets du IX^e siècle, contenant des fragments de la Bible.

Parchemin ; 202 feuillets ; 0^m,34 × 0^m,235 ; X^e siècle ; deux colonnes. Au verso de la couverture et f. 1, il y a les notes suivantes : *Liber ecclesie sancti Remacli Stabulensis et Liber sancti Remacli in Stabulaus* (1). Plus tard, ce volume a été le n. 12352 de la collection Phillipps à Cheltenham ; il a été acquis par la Bibliothèque royale en 1900. Très jolie reliure du XVI^e siècle ; ais de bois recouverts de veau estampé à la fleur de lis et au monogramme ST de l'abbaye de Stavelot (2). Fermoirs en cuivre.

1158. (5459). — EUGIPPIUS. Thesaurus ex S. Augustini operibus.

1. (F. 1-1^v). EUGIPPII prologus.

2. (F. 2-7). Capitula.

3. (F. 7^v-193^v). [EUGIPPII thesaurus ex S. Augustini operibus]. = *PL.*, t. LXII, col. 559-1088.

4. (F. 193^v). [Nota PETRI notarii sanctae ecclesiae Neapolitanae de codice Eugippiano] (3).

Parchemin ; 193 feuillets ; 0^m,345 × 0^m,26 ; XI^e siècle ; deux colonnes ; initiales et rubriques en vermillon. F. 193^v, on lit : *Hic codex ad cenobium Gemblacense attinet*. Reliure du XVII^e siècle ; veau raciné ; au dos, le titre doré : *Egippus* ; tranche rouge.

1159. (11080-81). — S. AUGUSTIN. Extraits.

1. (F. 1-2). AUGUSTINUS. Duo philosophorum genera traduntur.

2. (F. 2). Note extraite de S. AMBROISE sur Platon.

3. (F. 2-4). S. AUGUSTIN. Extraits relatifs aux philosophes.

(1) Cf. *Catalogue d'une belle collection de livres et de manuscrits précieux sur velin*, Gand, 1867, p. 24, n. 269.

(2) Cf. [J. WEALE], *Bookbindings*, London, 1894, p. 177, n. 357.

(3) Cette souscription, qui se trouve encore dans d'autres manuscrits d'Eugippius, a été publiée diverses fois et récemment encore par P. KNOELL, *Eugippii excerpta ex operibus S. Augustini*, Vindobonae, 1885, p. xxv-xxvii.

4. (F. 4-7). [CHALCIDIUS in Timaeum Platonis] (1).

Parchemin; 7 feuillets, plus neuf de garde; 0^m,29 × 0^m,175; XII^e siècle. F. 1, il y a la note : *Collegii Societatis Iesu Lovanii, VI*. Reliure moderne, veau raciné; au dos le titre doré : *Augustini quaedam*, reproduit sur une étiquette en maroquin rouge; en dessous, les armes de Belgique et l'inscription *B.R.*

1160. (11733-39). — S. AUGUSTIN. Extraits.

1. (F. 1-1^v, 257-257^v). Fragments d'un traité *de formulis scribendi*.
2. (F. 2-25). Index alphabétique des matières.
3. (F. 25^v-26). Tituli librorum ex quibus extracta sunt que in hoc libello continentur.
4. (F. 27-31). Compilata ex omeliis beati AUGUSTINI episcopi super canonica Iohannis.
5. (F. 31-33). AUGUSTINUS. De vero cultu.
6. (F. 33-45^v). BERNARDUS in libro de consideratione, ad milites templi, in apollogetico, in epistolis.
7. (F. 46-47). WILHELMUS SANCTI THEODRICI de dignitate amoris.
8. (F. 47-65). BERNARDUS super cantica.
9. (F. 65-68). De vita beati Bernardi abbatis.
10. (F. 68). In tractatu RICHARDI DE SANCTO VICTORE super *Afferte*.
11. (F. 68-76). Sermones beati BERNARDI *de diversis*. — Extraits.
12. (F. 76-77). Sanctus BONAVENTURA in opusculo quod dicitur *Stimulus amoris*.
13. (F. 77-93). Copulata ex prima et secunda parte beati AUGUSTINI super evangelium Iohannis.
14. (F. 93-112^v). AUGUSTINUS de mendacio, de correptione et gratia, ad Ianuarium, de gratia novi testamenti, contra Geminianum, ad Simplicianum, de agone christiano, de academicis, de beata vita, de ordine rerum, de libro soliloquiorum, de moribus ecclesie catholice et Manicheorum, de quantitate anime, de libero arbitrio, de vera religione, de utilitate credendi. — Extraits.
15. (F. 112^v-122). AUGUSTINUS. De sermone Domini in monte, contra Adimantium, ad Galathas, in confessionum libris.
16. (F. 122-133). Capitula ex sermonibus AUGUSTINI.
17. (F. 133-150). AUGUSTINUS contra Faustum, de natura boni, de civitate Dei, de bono perseverantie, de perfectione iusticie hominis, de questionibus ex evangelii, de vera innocentia, de ecclesiasticis dogmatibus. — Extraits.
18. (F. 150-152). HUGO DE SANCTO VICTORE in didascalicon.
19. (F. 152-161). AUGUSTINUS. — Extraits de divers traités.
20. (F. 161-166). Copulata ex epistolis beati AUGUSTINI.

(1) Voir plus haut, p. 154.

21. (F. 166-211^v). Copulata ex AUGUSTINO, super tres quinquagenas psalterii.

22. (F. 211^v-225^v). Divers extraits d'opuscules de S. JÉRÔME.

23. (F. 225^v-258). Copulata ex GREGORIO, super Ezechielem, ex registro, ex libro dialogorum.

24. (F. 248-250). GREGORIUS NAZIANZENUS in libro apologetico.

25. (F. 250-251). HIERONYMUS contra diversas hereses.

26. (F. 251-253^v). YSIDORUS in libro de summo bono.

Les feuillets 254-256^v sont blancs.

Papier; 257 feuillets; 0^m,138 × 0^m,105; XV^e siècle. F. 1, on lit : *Ad usum fratris Iohannis Stephani Wauriensis 1566*; de même, f. 257^v : *Fr. Iohannes Stephanus Wauriensis 1566*, et f. 256^v : *Daniel de Bergis*. Reliure ancienne, veau estampé.

1161. (11775). — S. AUGUSTINUS. Excerpta.

1. (F. 1-14). Table alphabétique des matières.

Les feuillets 14^v-15^v sont blancs.

2. (F. 16-156). Extraits des œuvres de S. Augustin.

Au bout du volume, fragment en parchemin d'un acte du XV^e siècle, qui commence : *Iohannes Salmon praepositus*.

Papier; 163 feuillets; 0^m,145 × 0^m,10; XVI^e siècle (1522), car f. 156, on lit : *Hec ex tertia parte operum divi Augustini compilavi anno e partu virgineo 1522^o mensis septembris die vicesima octava*. Demi-reliure, dos en maroquin rouge, titre doré : *Beati Augustini excerpta, XVI saec.*; en dessous, le chiffre couronné de Léopold I^{er}.

1162. (20950-51). S. AUGUSTINUS. Opera.

1. Ce volume renferme d'abord, f. 1-40^v, la collation d'un certain nombre d'œuvres de S. Augustin avec divers manuscrits, surtout avec le *codex sancti Martini Tornacensis*. Puis :

2. (F. 41-46^v). De variis distinctionibus philosophicis.

3. (F. 47). Argumentantis officia.

4. (F. 47^v). Defendentis officia.

Papier; 47 feuillets; 0^m,315 × 0^m,193; XVIII^e siècle; deux colonnes. Demi-reliure, dos en maroquin brun, avec le titre : *Beati Augustini variae lectiones*.

1163. (9121-23, 9124). Catholicon beati Augustini, en deux volumes.

TOME PREMIER (n. 9121-23).

1. (F. 1-24^v). Vita beatissimi Augustini. = *BHL.*, n. 798.

2. (F. 25-66^v). Tabula super *Catholicon*.

3. (F. 67-188^v). *Catholicon* beatissimi Aurelii Augustini episcopi. *Distinctio prima*, lib. 1-20.

4. (F. 189-190). Insertion in *syntagmate de sepultura*.

TOME DEUXIÈME (n. 9124),

1. (F. 1-180). *Catholicon*. Distinctio secunda, lib. 1-8.
2. (F. 181-184). Tabula syntagmatum super *Catholicon*.
3. (F. 185-188). Tabula in vita beati Augustini Ypponensis episcopi.
4. (F. 188-188^v). Nomina eorum doctorum qui scripserunt in laudem beatissimi Augustini episcopi.

Parchemin, sauf les ff. 143-180 du tome II, qui sont en papier; 190 et 188 feuillets; 0^m,51 × 0^m,343; XV^e siècle (1481-1484), car on lit les dates suivantes : t. I, f. 1 : *Compilata anno Domini 1484 in domo vallis regalis ordinis carthusiensis. 12 septembris* ; f. 8^v : *Compilata anno 1484 et finita in domo regalis ordinis carthusiensis, finita hec presulis vita, septima octobris, ipso die Marci pape et confessoris* ; f. 9 : *Compilata anno Domini 1484 in domo vallis regalis ordinis carthusiensis iuxta Gandavum ... inceptus est liber II, 7. octobris* ; f. 24^v : *Compilati anno ab incarnatione Domini 1484 et finiti octava novembris in domo vallis regalis ordinis carthusiensis iuxta Gandavum, per fratrem quendam eiusdem ordinis* ; f. 25 : *Compilata anno Domini 1483, 20 die aprilis in domo vallis regalis ordinis carthusiensis iuxta Gandavum* ; f. 26 : *anno 1483, ipso die Georgii martiris* ; f. 28^v : *anno 1483, penultima aprilis* ; f. 29 : *anno 1483, ultima aprilis* ; f. 67^v : *Inceptum anno 1481* ; f. 68 : *anno ab incarnatione millesimo quadringentesimo octogesimo primo in domo vallis regalis iuxta Gandavum* ; f. 80 : *anno 1482 ipso die innocentum* ; f. 83 : *anno 1483 quarta ianuarii* ; f. 96^v : *anno 1483, septima februarii* ; f. 101 : *anno 1483 penultima februarii* ; f. 107^v : *anno 1483, in profesto beatissimi Gregorii pape* ; f. 115^v : *anno 1483 quinta aprilis* ; f. 119^v : *anno 1483, 18 aprilis* ; f. 127 : *anno 82 (sic) 18 die mensis may* ; f. 132^v : *anno 82 ultima mayas* ; f. 144^v : *anno 1482 in profesto sanctorum martirum Iohannis et Pauli* ; f. 147 : *anno 1482, 7^a iunii* ; f. 149^v : *anno 1482 ultima iulii* ; f. 178^v : *anno 1482 ipso die Cecilie virginis et martyris* ; f. 187^v : *anno 1482 tercio ydus decembris* ; f. 188^v : *anno ab incarnatione Domini 1482 ydibus decembris ipso videlicet Lucie virginis et martyris in domo vallis regalis ordinis carthusiensis per quendam fratrem monachum professum et sacerdotem eiusdem domus*. Au tome II, f. 1 : *Fuit edita anno Domini 1482 in domo vallis regalis ordinis carthusiensis iuxta Gandavum* ; f. 3^v : *Compilata et finita anno Domini 1482 quarta novembris in domo vallis regalis ordinis carthusiensis per fratrem quendam professum et sacerdotem eiusdem domus* ; f. 67 : *anno 1484, 9 ianuarii* ; f. 107^v : *Finita est anno 1484 2^a may* ; f. 166 : *anno 1485, altera Marci evangeliste* ; f. 180 : *anno 1485, septima iunii* ; f. 181 et 181^v : *anno Domini 1484, altera Nychasii* ; f. 184 : *anno 1484, 12. kl. ianuaris, id est in hyemali solsticio*, et f. 188^v : *anno Domini hec compilari 1484 et finivi opitulante Domino 18 die novembris id est altera Hugonis Lincolnienis episcopi patris, in domo vallis regalis ordinis carthusiensis iuxta Gandavum*. Ces deux volumes sont écrits sur deux colonnes et très richement enluminés ; les encadrements de plusieurs feuillets sont à bandes de vert bronzé ornées de fleurs, centaurees, pâquerettes, véroniques, marguerites, lis, roses, et d'insectes. Dans le texte, un grand nombre de lettrines rustiques sont peintes sur champ bronzé, carminé, azur ou vert pomme. Des armoiries sont peintes sur un certain nombre de feuillets, avec des devises. F. 9, il y a suspendu à la marge au moyen d'un clou un écu portant de sinople à trois fusées d'or ; f. 25 et 26, il y a le blason des van der Moere, d'argent coupé de sable, brisé d'un bâton posé en barre, chargé en chef à dextre d'un écu d'or au chevron de gueules, chargé d'une écaille d'argent ; f. 25, l'écu est suspendu à deux pinceaux posés en sautoir ; au même folio, on lit les devises ♠ *Veni tempus*

et *Cogita mori*, et on voit un autre écusson tenu par un ange, il porte au 1 et au 4 d'azur à deux épées d'argent posées en sautoir à la garde et la poignée, de gueules pommelées d'or, accompagnées de trois étoiles à six rais d'or; et au 2 et au 3 d'argent, au chevron de gueules accompagné de trois mouchetures d'hermine. F. 112^v et 179, un ange tient un écu d'azur portant en chef à dextre une étoile à six rais, à senestre un huchet de sable embouché, enguiché et virolé d'or, en pointe un marteau d'or, avec la devise *Par. Basselar*. F. 127, 164^v et 171, on voit un écu d'azur portant deux têtes de femme de carnation et en pointe un coq au naturel. F. 132^v, un ange tient un écu parti d'azur, en chef deux têtes de carnation et en pointe un coq au naturel, parti d'argent au chevron d'or chargé de trois yeux au naturel, accompagné de trois mouchetures d'hermine. F. 144^v, il y a un écu d'azur à la colombe blanche au naturel, accompagnée de trois étoiles à six rais. F. 147, un écu formé des armoiries qui se trouvent f. 127 et 144^v; f. 149^v, un écu suspendu à la lettrine porte d'or à la tête de femme de carnation. Tome II, f. 4, il y a les armoiries des Borluut de Gand, d'azur aux trois cerfs d'or, un bâton de gueules en barre, brochant sur le tout; f. 53, un ange tient un écu de sable à trois arcs d'or tendus d'argent. Les miniatures de ces deux volumes attribuées à l'enlumineur Jean van der Moere, de Gand (1), représentent, au tome I, f. 1, présentation du *Catholicon* à S. Augustin; f. 9, S. Nicolas et les trois enfants; f. 25, un chartreux taillant sa plume (2); plus bas, dans la marge inférieure, S. Josse en pèlerin ayant devant lui un personnage en houppe noire à genoux, et dans la marge latérale une scène satirique, une truie enseignant à lire à deux cochonnets; f. 67, un chartreux écrivant dans sa cellule; f. 68, Moïse, Aaron et Hor en prières pendant le combat des Israélites avec les Amalécites; f. 120, S. Jean l'évangéliste et devant lui en prière un personnage en houppe grise, entre les deux une banderole avec le distique :

*Da dictos omnes hoc nomine, sancte Iohannes,
Excelsi fabrique cupere regna poli;*

f. 127, S. Laurent et, agenouillé devant lui, un personnage en robe rouge, le poignard au côté; f. 132^v, S^{te} Marguerite; f. 144^v, la nativité du Christ; f. 149^v, Charlemagne tenant le globe et l'épée; f. 162, un évêque ayant dans la main gauche la maquette d'une église et dans l'autre la crosse; f. 179, S. Liévin accompagné d'un clerc et d'un chartreux. Au tome II, f. 1, S. Augustin et l'auteur du *Catholicon* avec l'inscription : *Fratribus Catholicon sit presens obsecro gratum, et sis in patria merces, o doctor beate* (3); f. 4, S. Jean-Baptiste qu'invoque un personnage tonsuré revêtu d'une soutane violette; f. 53, S. Liévin accompagné d'un ange et invoqué par un homme au costume rouge. A noter encore, t. II, f. 181 : *Nicolaus Crayverwe de Beyerneliet scripsit hoc volumen, orate pro eo*. Comme on l'a vu, ces volumes ont été exécutés à la Chartreuse de Roygem, à Gand; plus tard, ils ont appartenu à l'abbaye d'Afflighem, car sur le premier feuillet de garde du tome I, on lit : *Bibliothecae affligemensis*. L'estampille rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris, se trouve tome I, f. 1 et f. 190^v; tome II, f. 1^v et 2. Reliure moderne, veau raciné, dos en maroquin rouge, avec le titre doré : *Opera S. Augustini, tome I, tome II*, et cinq fois répété le chiffre couronné de Léopold I^{er} (4).

(1) Voir J. DESTREÉ, *Jean van der Moere, enlumineur*, dans BULLETIN DES COMMISSIONS ROYALES D'ART ET D'ARCHÉOLOGIE, t. XXV, 1886, p. 277 sqq.

(2) Cette miniature est reproduite en phototypie, *ibid.*, p. 288.

(3) Cette miniature a été reproduite en phototypie, *ibid.*, p. 293.

(4) Voir sur ce manuscrit *Acta SS.*, Aug. t. VI, p. 215, n. 15; *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruzelli.*, t. II, p. 281-82; J. DESTREÉ, *op. cit.*, p. 277-96.

1164. (11444-45). — S. AUGUSTINUS. Flores collecti a FRANCISCO DE MARONIS.

1. (F. 1-65^v). Flores extracti de libris Augustini *de civitate Dei* et in veritates redacti a sacre theologie venerabili magistro FRANCISCO DE MARONIS (1).

2. (F. 66-73^v). Table alphabétique du traité précédent.

3. (F. 74-85). Epistola directa venerabili patri domno abbati de Parco dominorum ordinis premonstratensis prope Lovanium pro reformatione sui monasterii.

Papier, quelques feuillets en parchemin ; 85 feuillets ; 0^m,23 × 0^m,142 ; XV^e siècle ; ancienne pagination 37-110. Ce volume provient de l'abbaye de Parc, car au verso de la couverture, il y a la cote connue de cette bibliothèque *I. theca V*, et sur les deux plats, les armoiries de l'abbaye ont été grattées. Reliure veau ; au dos, le titre doré : *F. Mar. Ferit.*, tranche rouge.

1165. (9046). — FRANÇOIS MAYRONIS. Fleurs du livre de la Cité de Dieu, en latin et en français.

TITRE latin : Flores beati Augustini de civitate Dei per veritates collecti a magistro FRANCISCO DE MARONIS de ordine fratrum minorum.

TITRE français : Les fleurs du livre de la Cité de Dieu qui se recueillent par veritez par Maistre FRANÇOIS DE MARONIS de l'ordre des Cordeliers.

Parchemin ; 229 feuillets ; 0^m,39 × 0^m,28 ; XV^e siècle ; deux colonnes, superbes lettrines rehaussées d'or ; très jolies initiales rouges et bleues. Le premier feuillet est splendidement enluminé, d'un encadrement fleuri aux armes de Bourgogne, avec la devise de Philippe le Bon *Aultre Naray*. Ce volume provient du reste de l'ancienne bibliothèque des ducs de Bourgogne (2). Une belle miniature paginale représente S. Augustin et François Mayronis. Reliure moderne, veau raciné ; au dos, le titre doré : *Flores S. Augustini*, qui se trouve aussi à l'intérieur sur une étiquette en maroquin rouge ; plus bas, les armes de Belgique et l'inscription *Bibl. royale*, tranche dorée.

1166. (9297-302). — S. AUGUSTIN. Méditations, en français.

1. (F. 2-4). Table des rubriques de ce présent livre.

2. (F. 5-49). Livre des méditations saint AUGUSTIN (3).

3. (F. 49^v-72). Ung moult prouffitabile enseignement pour le salut des ames compose par saint BERNARD et est appelle le miroir des pecheurs et pecheresses (4).

(1) Sur les éditions de l'œuvre de François Mayronis, tant en latin qu'en français, voir HAIN, *Repertorium bibliographicum*, t. III, n. 10529.

(2) Cf. BARROIS, *Bibliothèque protypographique*, p. 237, n. 1657.

(3) Traduction des *Soliloques* de S. Augustin.

(4) Traduction du *Speculum peccatoris*.

4. (F. 73-96^v). Ung moult loel et devot traittie nomme le disciple de Sapience.

5. (F. 97-102^v). Une tres douloureuse complainte que lomme pecher et en voye de dampnation fait en l'article de la mort.

6. (F. 103-110^v). La création de lame.

7. (F. 110^v-116). Ung advertissement ou examen de conscience par manière de confession generale.

Parchemin; 116 feuillets, plus sept de garde; 0^m,38 × 0^m,265; XV^e siècle; très belles letrines rehaussées d'or; f. 5, fort jolie miniature représentant S. Augustin; f. 73, une autre représentant un lecteur dans son cabinet de travail. Les armoiries du bâtard de Bourgogne, Antoine, se trouvent f. 5; sa signature et sa devise se lisent f. 116 : *Nul . ne . si . frotte . ob . de Bourgogne*. Reliure veau raciné; au dos, le titre doré *Méditations de S. Augustin*; plus bas, les armes de Belgique et l'inscription *Bibl. royale*.

1167. (2283-84). — S. AUGUSTIN. Discours, en flamand.

1. (F. 1^v-2). Tafele der sermonen des helighen Augustini totten broederen inder woestinen.

2. (F. 3-60). [Sermonen des helighen AUGUSTINI] (1).

3. (F. 60^v). Table d'une autre série de sermons (2).

4. (F. 61^v-142). [CORNRARD TAULAIRE]. Sermons, en flamand.

Papier, filigranes de la tête de bœuf et de l'écu de France; de-ci de-là quelques feuillets de parchemin; 0^m,215 × 0^m,135; XV^e siècle; deux colonnes. F. 142, on lit : *Dit boec hoert toe den cloester tonser liever vrouwen in Galileen binnen Ghent in Vlaenderen. Iste liber pertinet monasterio beate Marie Virginis in Galilea in civitate quae vocatur Gandavum in Flandria* (3). L'estampille rouge *R.F.* de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 1^v et f. 152. Demi-reliure moderne.

1168. (15110). — S. AUGUSTIN. Enchiridion, en flamand.

1. (F. 1-2). Vers flamands.

a) *Inc.* Als aerde in aerde sal woorden gheset.

Des. Welcke ons gunne die heyliche dryuuldicheyt.

b) *Inc.* Dylt Godt van dat hy u gheeft.

Des. Dat is deser werelt loop.

c) *Inc.* Maria, door uw kints bloet.

Des. En maeckt my alder sonden bloot.

(1) Cf. *PL.*, t. XL, col. 1239 sqq.

(2) On lit en note : *In Elsegthem habentur isti sermones magis correcti secundum linguam flamingam magis quia fortassis ydonei pro exemplari ad excopiandum*. Elsegthem était un prieuré des chanoines réguliers de Saint-Augustin, cf. J. ACQUOY, *Het Klooster te Windesheim*, t. III, p. 78-80.

(3) Sur ce couvent de chanoinesses régulières de Saint-Augustin, voir J. ACQUOY, *op. cit.*, t. III, p. 218-19.

2. (F. 3-45^v). Sinte AUGUSTINUS ons heilichs vaders hantboecxken.
3. (F. 45^v-46). Énigmes, en vers flamands.

Inc. Wie es die rycste die leeft?

Dat es wie gelt noch goet en heeft.

4. (F. 46^v). Extrait de S. GRÉGOIRE, en flamand. *Inc.* Sinte Gregorius seet : Die stercht der heilighen es dit vlees te versmaden.

5. (F. 47-47^v). Trois prières, en vers flamands.

a) *Inc.* Godt almachtich die daar eeuwich leeft.

Des. Door Christum voor swerelts leven ons bewesen.

b) *Inc.* O Iesu seer soet wij vallen u te voet.

Des. Troost ende ghenade niet en comen ghederven.

c) *Inc.* O Maria doet ons recommandatie

Syt ons bystant in alle tribulatie.

6. (F. 48^v-49). Prière des trois premiers commandements de Dieu, en flamand.

Papier; 49 feuillets, plus 32 feuillets à la fin du volume; 0^m,138 × 0^m,092; XVI^e siècle. Ce volume provient de la bibliothèque de C. van Hulthem; l'ex-libris se trouve au verso de la couverture (1). Reliure du XVII^e siècle, ais de bois recouverts de veau brun estampé, au chiffre IHS.

1169. (2810-13). — S. AUGUSTINUS. Opera, en flamand.

1. (F. 1^v). Fragment de vers flamands.

Inc. Van wedermaent den ierste dach.

Les feuillets 2-4 sont blancs.

2. (F. 4^v). Table des matières. Note du XVIII^e siècle.

3. (F. 5-98). Epijstele des heylichs EUSEBI tot Damasum van der doet des glorioosen confessoors ende leeraer sinte Iheronimus (2).

4. (F. 98-165^v). Die epistel die sinte CYRILLUS bisscop van Iherusalem screef tot sinte Augustine van den miraculen des aldersalichsten sinte Iheronimi des heylighen doctoirs (3).

5. (F. 166-185). Sinte AUGUSTYNS vermanen tot synder moeder van der pryse der caritate.

Papier, au filigrane de l'écu de France; 185 feuillets; 0^m,208 × 0^m,14; XVI^e siècle (1512), car on lit, f. 163^v : *Biet voor den ghenen die dit scref, want hi een arme broeder bleeft. Ghescreven int jaer ons heeren M xv. xii op den xv^{sten} dach van Augustus bi mij Broeder Merten Vincke.* F. 1, il y a la note : *Dit boeck hoert toe den leecken brueders van Bethleem den cloester der Regulieren tot Lovene, et f. 5: Bethleem.* L'estampille rouge de la Bibliothèque impériale de Paris se trouve f. 5 et f. 186^v. Demi-reliure moderne.

(1) *Bibliotheca Hulthemiana*, t. VI, p. 10, n. 36.

(2) Cf. *BHL.*, n. 3866.

(3) Cf. *ibid.*, n. 3868.

1170. (9398-99). — CASSIANUS. Opera.

1. (F. 1^v-15^v). Vita S. Anthonii abbatis. = *BHL.*, n. 609.
2. (F. 15^v-18). [Vita Patrum]. Ex historia lausiaca, cap. XLVIII, XLIX, LV-LVIII, LXXI, XCII, LXXXVI, XIX, XX, LXXIII. — Cf. *PL.*, t. LXXIII.
3. (F. 18-20). Liber ATHANASII episcopi de exhortatione monachorum. = *PL.*, t. XVIII, col. 71 sqq.
4. (F. 20-22). Vita S. Pauli edita a S. HIERONIMO venerabili presbytero. = *BHL.*, n. 6596.
5. (F. 22-28^v). Vita S. Hilarionis monachi et heremitaë. = *BHL.*, n. 3879.
6. (F. 28^v-30). De [Malcho] captivo monacho. = *BHL.*, n. 5190.
7. (F. 30-46^v). [RUFINUS]. Vita sanctorum patrum heremitarum. = *PL.*, t. XXI, col. 389-462.
8. (F. 46^v-54^v). [RUFINUS. Verba seniorum]. = *PL.*, t. LXXIII, col. 741-64, n. 1-40.
9. (F. 54^v-65). [Excerpta ex SEVERO et CASSIANO]. = *Ibid.*, col. 813-48.
10. (F. 65-67^v). [Verba seniorum]. Extraits. = *Ibid.*, col. 856 sqq.
11. (F. 67^v-76^v). [Historia lausiaca]. Cap. 29, 4, 5, 6, 8, 9, 13, 14, 19, 20, 22, 86, 25, 26, 30, 103, 141. = *Ibid.*, col. 1094 sqq.
12. (F. 76^v-79). Commonitiones sanctorum patrum qui in studio spiritualis vitæ senuerunt que ad instructionem iunioribus dixerunt fratribus.
13. (F. 79-80). De sancto Frontonio. = *BHL.*, n. 3190.
14. (F. 80-91). Vita S. Mauri abbatis. = *BHL.*, n. 5772.
15. (F. 91-108^v). IOHANNIS CASSIANI liber de institutione monachorum. = *PL.*, t. XLIX, col. 52-102 (1).
16. (F. 108^v-138^v). IOHANNIS CASSIANI de octo vitiis capitalibus. = *Ibid.*, col. 201-476 (2).

Parchemin; 138 feuillets; 0^m,354 × 0^m,252; XI^e siècle; deux colonnes. F. 1, il y a la cote LL, 3-5, de la bibliothèque de Saint-Laurent, à Liège. Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré : *Adhortationes sanctorum patrum*, reproduit sur une étiquette à l'intérieur du volume; plus bas, les armes de Belgique et l'inscription : *Bibl. royale* (3).

1171. (20790). — CASSIANUS. Collationes.

1. (F. 1). Diverses antiennes notées, avec neumes.
2. (F. 1^v-22^v). Collationes abbatis Cheremonis. = *PL.*, t. XLIX, col. 847 sqq.
3. (F. 22^v-35). Collationes abbatis Nesterotis. = *Ibid.*, col. 953 sqq.

(1) Il n'y a, sous ce titre, que les quatre premiers livres *De coenobiorum institutis*.

(2) Livres V-XII du même traité.

(3) Sur ce manuscrit, voir *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. II, p. 336-37.

4. (F. 35-53). [Collationes abbatis Ioseph]. = *Ibid.*, col. 1011 sqq.
5. (F. 53^v-66). Collationes abbatis Iohannis. = *Ibid.*, col. 1125 sqq.
6. (F. 66-94^v). [Collationes abbatis Theonae]. = *Ibid.*, col. 1169 sqq.
7. (F. 94^v-102^v). [Collationes abbatis Abraham]. = *Ibid.*, col. 1279 sqq.

Parchemin; 102 feuillets; 0^m,31 × 0^m,223; XI^e siècle; sauf les feuillets 71-102 qui ont été écrits au XVI^e; deux colonnes; belles lettrines. F. 1, on lit : *Codex S. Iacobi apostoli apud Moguntiam*. — *Liber abbatiae S. Iacobi*, de même ff. 1^r, 2, 6; f. 21 : *Codex sancti Iacobi apostoli extra muros Moguntinos*; ff. 32^v, 53, 60 : *Codex sancti Iacobi apud Moguntiam*; f. 53^v : *Codex monasterii sancti Iacobi extra muros Moguntine civitatis siti*. Ce volume fut acquis par la Bibliothèque royale, le 17 mai 1852, pour fr. 50,60, à la vente Héberlé. Demi-reliure moderne; dos en maroquin vert, avec le titre doré : *Cassiani collationes Patrum*.

1172. (II. 1010). — CASSIANUS. Collationes.

1. (F. 1). Index.
2. (F. 1^v-91^v). Sancti IOHANNIS CASSIANI de decem collationibus. = *PL.*, t. XLIX, col. 477 sqq. — Dans ce volume, il n'y a que dix collations.
3. (F. 91^v-92). In cathedra sancti Petri sermo sancti AUGUSTINI (1) Hiponensis episcopi. = *PL.*, t. LVII, col. 349.

Sur les deux plats intérieurs de la couverture sont collés des fragments du IX^e siècle contenant des extraits bibliques.

Parchemin; 92 feuillets; 0^m,274 × 0^m,204; XI^e siècle; quelques jolies lettrines; titre courant en rouge. F. 1^r et f. 92, il y a la note : *Liber sancti Martini Tornacensis. Servanti benedictio* (2). L'ex-libris *Sir T. P. Middle Hill* se trouve f. 2. Ce volume a été acquis en 1888, pour fr. 40. Reliure ancienne, veau brun estampé sur ais de bois avec la marque du relieur *P. de Tielt*, et le titre sous corne : *Decem collationes Cassiani*.

1173. (20019). — IOHANNES CASSIANUS. Collationes.

1. (F. 1-155). CASSIANI collationes, nn. 1-5, 7, 8, 6, 9, 17. = *PL.*, t. XLIX, col. 477-1088.
2. (F. 155-160^v). [Sentences diverses]. *Inc.* Cum videris inimicum tuum in potestate tua. *Des.* Gestus corporis signum est mentis.

Au verso de la couverture, il y a une table détaillée des Collations.

Parchemin; 160 feuillets; 0^m,298 × 0^m,20; XIII^e siècle; très belles capitales en toutes couleurs; initiales rouges et vertes; signatures 1-xx. Sur le second plat intérieur de la couverture, on lit : *Liber sancte Marie de Fillari*. Reliure veau; au dos, le titre : *Cassianus sup. Collat.*

(1) C'est le sermon de S. Maxime, éd. de Rome, 1784, p. 165.

(2) Voir A. d'HERBOMFZ, *Les Manuscrits de l'abbaye de Saint-Martin de Tournai conservés à la bibliothèque royale de Bruxelles*, p. 14.

1174. (II. 1070). — IOHANNES CASSIANUS. De institutione monachorum.

1. (F. 1^v-56). Beati IOHANNIS heremite, qui et CASSIANUS dicitur, de institutione monachorum. = *PL.*, t. XLIX, col. 53 sqq.

2. (F. 56-134). Beati IOHANNIS heremite decem collationes sanctorum. = *Ibid.*, col. 477 sqq.

3. (F. 134-138^v). De medela anime.

4. (F. 139-140^v). Fragment de bréviaire, X^e siècle.

Papier; 140 feuillets; 0^m,34 × 0^m,24; XIII^e siècle; deux colonnes; quelques belles lettrines; capitales rouges, vertes et bleues. F. 1^r, il y a la note : *Liber sancte Marie de Alna* (1). Plus tard, ce manuscrit a fait partie de la bibliothèque de sir Thomas Phillipps avec la cote 4650; il a été acquis par la Bibliothèque royale en 1888. Demi-reliure, toile anglaise; au dos, le titre doré : *Iohannes heremita sive Cassianus de institutione monachorum*.

1175. (21871). — IOHANNES CASSIANUS. Collationes.

XXIII collationes CASSIANI. = *PL.*, t. XLIX, col. 477 sqq.

Papier, au filigrane de la croix; 162 feuillets; 0^m,28 × 0^m,21; XV^e siècle (1440), car f. 162, on lit : *Finitus et completus est liber iste anno Domini. M^o.cccc^o.xl^o*; deux colonnes. F. 1^r, on lit : *Liber monasterii canonicorum regularium in Galilca iuxta Aldenardum in Flandria in parochia de elseghem* (2). Ce volume fut acquis en 1863, à la vente des livres de van Alstein à Gand, pour fr. 6,65. Reliure, ais de bois recouverts de peau de truie; restes de fermoirs en cuivre.

1176. (19820-21). — CASSIANUS. Opera.

1. (F. 1-46^v). [IOHANNIS CASSIANI de coenobiorum institutis]. = *PL.*, t. XLIX, col. 53 sqq.

2. (F. 47-157). [IOHANNIS CASSIANI collationes]. = *Ibid.*, col. 477 sqq.

3. (F. 158-360^v). Fragment de missel, X^e siècle.

Papier, au filigrane de la lettre *P*, de-ci de-là quelques feuillets en parchemin; 0^m,30 × 0^m,21; XV^e siècle (1459), car f. 159, il y a la note : *Scriptus per manus fratris Iohannis de Lantschots tercii ordinis beati Francisci de paenitentia nuncupati presbiteri anno Domini millesimo quadringentesimo quinquagesimo nono mensis octobris die vicesima, pro tunc Ruremonde commorantis*. Deux colonnes. F. 158^v, on lit : *Liber fratrum tercii ordinis sancti Francisci in Zepperen* (3). Reliure ancienne, veau brun estampé.

1177. (1211). — CASSIANUS. Collationes.

1. (F. 2-3). Prologus et capitula.

2. (F. 3-108). Collationes I-X. = *PL.*, t. XLIX, col. 53 sqq.

Parchemin; 108 feuillets; 0^m,29 × 0^m,195; XV^e siècle : deux colonnes; quelques capitales fleuronées; initiales rouges et bleues; signatures A₁-O₂. F. 1, il y a la

(1) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 253, decuria octava.

(2) Cf. supra, p. 187.

(3) Localité du Limbourg belge.

note : *Est liber hic sancti Martini Iovaniensis* (1) *ex parte fratris Henrici Franc. eiusdem monasterii canonici et presbiteri professi*. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 2 et f. 108^r. Reliure ancienne veau estampé; sur le plat extérieur, étiquette sous corne dans un cadre en cuivre : *Collationum sanctorum patrum prima pars. G. XVII*.

1178. (1838-39). — CASSIANUS. Collationes.

1. (F. 1^v). Table des matières.
2. (F. 2-200). XXIII collationes CASSIANI. = *PL.*, t. XLIX, col. 477 sqq.
3. (F. 201-218). Liber quintus institutionum IOHANNIS CASSIANI de natura et remediis octo principalium viciorum. = *PL.*, t. XLIX, col. 201 sqq.

Parchemin; 218 feuillets; 0^m,26 × 0^m,18; XV^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et bleues; ancienne pagination 1-217, à l'encre rouge; signatures *a₁-n₈*. F. 1^v, on lit cette note : *Pertinet monasterio sancte Marie in bethleem prope Ioranium*, et f. 2 : *Bethleem*. L'estampille rouge *R.F.* de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 2 et f. 218. Demi-reliure moderne; dos en maroquin brun, titre doré : *Cassiani collationes patrum saec. XV*; plus bas, le chiffre couronné de Léopold I^{er}.

1179. (9964-66). — SEDULIUS. IUVENCUS. Carmina.

1. (F. 1-39). [C. SEDULII carmen paschale]. = *PL.*, t. XIX, col. 533-754.
2. (F. 39-41^v). [EIVSDEM elegia]. = *Ibid.*, col. 753-62 (2).
3. (F. 41^v-42). [EIVSDEM hymnus]. = *Ibid.*, col. 763-70.
4. (F. 42^v). Versus anacrostici de Sedulio LIBERTI scolastici. = *Ibid.*, col. 782-86.

L'acrostiche est SEDVLIVS ANTISTES. Au second acrostiche manquent six vers (3).

5. (F. 43-104). Liber IUVENCI presbiteri. = *Ibid.*, col. 61-346. Les préfaces manquent.

(1) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 218.

(2) F. 39, on lit cette note écrite au XVII^e siècle : *Hoc opus non a Sedulio auctore editum est, sed a Turcio Rufo Asteri[o] Quinto V. C. ex-consule ordinario atque patricio quod inter chartas Sedulij invenit. Ita Aldus*. Au sujet de cette note, voir *PL.*, t. XIX, col. 486 sqq.

(3) En marge, on a écrit au XV^e siècle les deux notes suivantes, qui désignent un autre manuscrit de Sedulius : *Nota quod isti versus habentur in Sedulio in quo sunt ymages depicte, in quarto folio. — Isti versus habentur in Sedulio in quo sunt ymages depicte, in xliij^o folio*. Il est fort probable que ce manuscrit enluminé de Sedulius est celui qui est actuellement conservé au Musée Plantin-Moretus à Anvers, sous la cote n. 126, et qui a été naguère décrit par M. C. Caesar, *Rheinisches Museum*, t. LVI, 1901, p. 247-71.

Le troisième feuillet de garde contient un fragment écrit en onciales. *Inc.* ... psallendo pro se a devotione. *Des.* propter ciborum impatientiam...

Parchemin; 104 feuillets, plus cinq de garde; 0^m,205 × 0^m,135; XI^e siècle. Ce volume provient de l'abbaye de Saint-Jacques à Liège, car f. 103^v, on lit : *Liber ecclesie Sancti Iacobi in Leodio*. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris, aux faisceaux, se trouve f. 1 et f. 104^v. Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré reproduit à l'intérieur sur une étiquette en maroquin rouge : *Sedulii et Iuvençii carmina; XII saec.*, avec les armes de Belgique et l'inscription : *Bibl. royale*.

1180. (2766-70). — SEDULIUS. Opera.

1. (F. 1). Table des matières.

2. (F. 2-34^v). Opus paschale SEDULII. = *PL.*, t. XIX, col. 533-754.

3. (F. 34^v-35^v). Hymnus SEDULII. = *Ibid.*, col. 753-62.

4. (F. 36-36^v). Versus BELLAESARII scolastici. = *Ibid.*, col. 782-84.

5. (F. 36^v-37^v). [Hymni SEDULII]. = *PL.*, t. XIX, col. 763-70.

6. (F. 38-92^v). Tractatus sancti THOME DE AQUINO de perfectione spiritualis vite (1).

Les feuillets 93-97 sont blancs.

7. (F. 98-105). Liber beati ANCELMII de libero arbitrio. = *PL.*, t. CLVIII, col. 489-506.

Les feuillets 105^v-109^v sont blancs.

8. (F. 110-126). Pomerium spirituale fratris HENRICI EX POMERIO (2).

Les feuillets 126^v-129^v sont blancs.

9. (F. 130-181). Quidam sermones de diversis.

a) In festo omnium sanctorum. *Inc.* Tempus spargendi lapides et tempus colligendi.

b) De nativitate Domini. *Inc.* Exiit edictum a Cesare Augusto.

c) De eodem. *Inc.* Ascendit Ioseph de Galilea.

d) Item de eodem. *Inc.* Ecce evangelizo vobis gaudium magnum.

e) De circumcissione Domini. *Inc.* Circumcidetur ex vobis omne masculinum.

f) Item de eodem. *Inc.* Postquam consummati sunt dies octo.

g) In die circumcissionis. *Inc.* Induite novum hominem.

h) [De eodem]. *Inc.* Apparuit benignitas et humanitas Salvatoris nostri.

(1) Cf. sur ce traité QUÉTIF-ECHARD, *Scriptores ordinis praed.*, t. I, p. 335, n. 18.

(2) Sur cet auteur, un des plus célèbres de la Congrégation de Windesheim, et son traité, voir J. ACQUOY, *Het Klooster te Windesheim*, t. II, pp. 214-15, 236-37; ALVIN, *Documents iconographiques et typographiques de la bibliothèque royale de Belgique*, Bruxelles, 1864, 1^{re} série, p. 4-12.

- i) De eodem. *Inc.* Apparuit ... Quadruplicem statum Salvatoris possumus distinguere.
- k) Item de eodem. *Inc.* Ecce gentem quam nesciebas, invocatis.
- l) De eodem. *Inc.* Ambulabunt gentes in lumine tuo.
- m) De eodem. *Inc.* Cum natus esset Ihesus in Bethleem iude.
- n) De conversione sancti Pauli apostoli. *Inc.* Paulus adhuc spirans minarum.
- o) Item sermo. *Inc.* Vade, quia vas electionis est mihi iste.
- p) De nativitate Domini. *Inc.* Parvulus natus est nobis.
- q) In festo sancti Thome martiris. *Inc.* Pro iustitia agonizare.
- r) In purificatione beate Marie Virginis. *Inc.* Postquam impleti sunt dies purgationis eius.
- s) Item de eodem. *Inc.* Postquam impleti sunt ... Hodie recolitur ecclesia aliqua retroactis temporibus facta.
- t) De eodem. *Inc.* Accepit Symeon puerum.
- u) De eodem. *Inc.* Ecce homo erat in Iherusalem nomine Symeon.
- v) In annuntiatione beate Marie Virginis. *Inc.* Missus est angelus Gabriel a Deo.
- w) De eodem. *Inc.* Ingressus angelus ad eam, dixit : Ave gratia plena.
- x) Item de eodem. *Inc.* Ave Maria gratia plena.
- y) In die Cene. *Inc.* Convenientibus vobis in unum.
- z) De eodem. *Inc.* Sciens Ihesus quia venit hora eius.
- α) De eodem. *Inc.* Pro Christo legatione fungimur.
- β) In die Pasche. *Inc.* Hec est dies quam fecit Dominus.
- γ) De ascensione Domini. *Inc.* Videntibus illis elevatus est.
- δ) De eodem. *Inc.* Eduxit eos foras in Bethaniam.
- ε) De sancto Spiritu. *Inc.* Cor mundum crea in me, Deus.
- ζ) In die sancte Trinitatis. *Inc.* Tres sunt qui testimonium dant.
- η) In vigilia assumptionis beate Marie. *Inc.* Tota pulchra es, amica mea.
- θ) In festo assumptionis beate Marie. *Inc.* Que est ista que ascendit.

Papier, au filigrane de la tête de bœuf, et parchemin; 181 feuillets, plus cinq de garde; 0^m.22 × 0^m.15; XV^e siècle. F. 1, il y a la note : *Iste liber pertinet monasterio sancte Marie in Bethleem prope Lovanium* et f. 181^v : *Pertinet in bethleem prope Lovanium liber iste*. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 1 et f. 181^v. Reliure ancienne restaurée, veau brun estampé.

1181. (593-94). — S. LEO PAPA. Sermones et epistolae.

1. (F. 2-2^v). Intitulaciones in libro sermonum beati Leonis pape.

2. (F. 2^v-106^v). Sermones beati LEONIS pape doctoris eximii. — Ce sont les sermons *PL.*, t. LIV, nn. 1, 3, 4, 6-10, 12-19, 21-30, 31-62, 64,

66, 63, 67-96. — F. 31, il y a un sermon de S. MAXIME, de Epyphania Domini. = *PL.*, t. LVII, col. 545.

3. (F. 107-107^v). In natali septem fratrum Machabeorum sermo. = *PL.*, t. LIV, col. 517.

Les feuillets 108-110^v sont blancs.

4. (F. 111-112^v). Ex codice manuscripto Heilesemensi. Castigationes D. MARTINI LYPsII canonici regularis D. Martini Lovaniensis.

5. (F. 113-186). [S. LEONIS epistolae]. = *PL.*, t. LIV, les lettres nn. 20, 24, 23, 22, 28, 25, 35, 29, 30, 9, 33, 59, 44, 45, 60, 61, 69, 70, 84, 71, 94, 82, 90, 83, 80, 155, 85, 93, 106, 104, 105, 115, 130, 134, 113, 111, 112, 79, 118, 123, 125, 124, 120, 127, 163, 135, 114, 129, 97, 99, 102, 121, puis une lettre à l'impératrice Eudoxie qui n'est pas dans MIGNÉ, nn. 162, 165, 14, 2, puis une lettre *ad metropolitam Venetie*, nn. 168, 4, 159, 18, 19, 16, 7, 166, 12, append. 2, 10, 41, 108, 167, 15.

6. (F. 186). Epistola AURELII carthaginensis episcopi ad omnes episcopos per Bizanzenam. = *PL.*, t. XLV, col. 1731-37.

7. (F. 186-187). Excerpta ex gestis contra Pelagium hereticum. = *Ibid.*, col. 1709-10.

8. (F. 187-187^v). Decretum S. HILARII pape. = *PL.*, t. LVIII, col. 12.

9. (F. 187^v-188^v). Epistola eiusdem HILARII ad Ascanium. = *Ibid.*, col. 17.

10. (F. 188^v-189). Eiusdem ad Ascanium Terraconensem. = *Ibid.*, col. 19.

11. (F. 190-190^v). Epistola LEONIS synodo calcedonensi. — Reproduction de la lettre n. 27 du f. 132^v.

Parchemin et papier au filigrane de la licorne et de la lettre P; 190 feuillets, plus trois de garde à la fin; 0^m,295 × 0^m,215; XV^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et bleues. F. 1, on lit la note : *Liber monasterii canonicorum Regularium vallis sancti Martini in lovanio* (1). *Custodiatur asserveturque diligentissime istud D. Leonis pape volumen MS. quia in his regionibus non puto prestantius aut castigatius inveniri, quare puto istud ex antiquissimo manuscripto codice esse transcriptum*; f. 2 : *Custodiatur tamquam thesaurus incomparabilis*; f. 98 : *Est liber hic sancti Martini Lovaniensis, et au verso du dernier feuillet de garde : Est liber hic sancti Martini Lovaniensis, dignus solertissime asservetur*. L'estampille rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris, se trouve f. 3 et 190^v. Reliure ancienne, ais de bois recouverts de veau brun estampé; sur le plat le titre : *Sermones et epistole dici Leonis pape . G. XIII*; restes de fermoirs en cuivre.

1182. (8301). — S. CYRILLUS ALEXANDRINUS. Homiliae paschales, en grec.

1. (F. 2-14^v). Τοῦ ἐν ἀγίοις πατρὸς ἡμῶν Κυρίλλου ἀρχιεπισκόπου Ἀλεξανδρείας ἑορταστικὴ πρώτη. = *PG.*, t. LXXVII, col. 401-26.

(1) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 220.

2. (F. 14^v-25). 'Εορταστική δευτέρα. = *Ibid.*, col. 427-51.
3. (F. 25-34). 'Εορταστική τετάρτη. = *Ibid.*, col. 451-72.
4. (F. 34^v-46^v). 'Εορταστική πέμπτη. = *Ibid.*, col. 472-500.
5. (F. 47-63^v). 'Εορταστική έκτη. = *Ibid.*, col. 500-36.
6. (F. 63^v-72^v). 'Εορταστική έβδόμη. = *Ibid.*, col. 536-54.
7. (F. 72^v-84). 'Εορταστική όγδόη. = *Ibid.*, col. 554-78.
8. (F. 84-97^v). 'Εορταστική έννάτη. = *Ibid.*, col. 578-606.
9. (F. 97^v-112^v). 'Εορταστική δεκάτη. = *Ibid.*, col. 606-34.
10. (F. 112^v-128). 'Εορταστική ένδεκάτη. = *Ibid.*, col. 634-66.
11. (F. 128-140). 'Εορταστική δωδεκάτη. = *Ibid.*, col. 666-94.
12. (F. 140-148). 'Εορταστική τρισκαυδεκάτη. = *Ibid.*, col. 694-709.
13. (F. 148-157^v). 'Εορταστική τεσσαρεσκαυδεκάτη. = *Ibid.*, col. 709-28.
14. (F. 157^v-167). 'Εορταστική πεντεκαυδεκάτη. = *Ibid.*, col. 728-48.
15. (F. 167-177^v). 'Εορταστική ις'. = *Ibid.*, col. 748-68.
16. (F. 177^v-188). 'Εορταστική έπτακαυδεκάτη. = *Ibid.*, col. 768-89.
17. (F. 188^v-198). 'Εορταστική όκτωκαυδεκάτη. = *Ibid.*, col. 800-20.
18. (F. 198-206). 'Εορταστική έννεακαυδεκάτη. = *Ibid.*, col. 820-38.
19. (F. 206^v-212^v). 'Εορταστική είκοστή. = *Ibid.*, col. 838-49.
20. (F. 212^v-216^v). 'Εορταστική κα'. = *Ibid.*, col. 849-58.
21. (F. 216^v-224^v). 'Εορταστική κβ'. = *Ibid.*, col. 858-74.
22. (F. 224^v-231). 'Εορταστική κγ'. = *Ibid.*, col. 874-86.
23. (F. 231-239). 'Εορταστική κδ'. = *Ibid.*, col. 886-902.
24. (F. 239-245). 'Εορταστική κέ'. = *Ibid.*, col. 902-12.
25. (F. 245-254^v). 'Εορταστική κς'. = *Ibid.*, col. 913-28.
26. (F. 254^v-261^v). 'Εορταστική κζ'. = *Ibid.*, col. 928-41.
27. (F. 261^v-269). 'Εορταστική κη'. = *Ibid.*, col. 941-58.
28. (F. 269-274^v). 'Εορταστική κθ'. = *Ibid.*, col. 958-68.
29. (F. 275-280^v). 'Εορταστική λ'. = *Ibid.*, col. 969-81.

Papier; 280 feuillets, dont les derniers sont lacérés; 0^m,280 × 0^m,195; XVI^e siècle. F. 1^v, on lit la note : *Emi hunc M. S. Cyrilli Toleti ex bibliotheca Alvari Gometii, cui in professione graecarum litterarum successi a secretario Castilonio tredecim coronatis aureis — 141. R. ANDREAS. SCHOTTUS, 1582; f. 2; De P. Schotto usui P. Andr. Schotti; au haut du même feuillet : Societatis Iesu Antverpiae D. P.* L'ex-libris ✠ MS. de la bibliothèque des anciens hollandistes se trouve sur une étiquette collée sur le premier feuillet. Reliure parchemin (1).

1183. (11259). — S. CYRILLUS ALEXANDRINUS. In evangelium Iohannis, en grec.

1. (F. 1 et 115). Fragments de méditations sur la passion du Christ, en flamand. *Inc. mutil.* ... ten node ons heeren sweette dit bloedich

(1) Sur ce manuscrit, voir H. OMONT, *Catalogue des manuscrits grecs de la bibliothèque royale de Bruxelles*, p. 14, n. 29.

sweet. *Des. mutil.* dat die stricke die aen die handen waren persten dat ...

2. (F. 4-114^v). Τοῦ ἁγίου Κυρίλλου ἐπισκόπου Ἀλεξανδρείας εἰς τὸ εὐαγγέλιον τοῦ Ἰωάννου. = *PG.*, t. LXXIV, col. 9 sqq.

Papier, sauf les feuillets 1 et 115 qui sont en parchemin; 115 feuillets; 0^m,210 × 0^m,165; XVII^e siècle. Ce volume provient de l'ancienne bibliothèque des bollandistes; il porte l'ex-libris * *MS.* 148. Demi-reliure moderne, parchemin (1).

1184. (4327). — S. CYRILLUS. *Quadripartitus apologeticus*, en latin.

1. (F. 1-1^v). Fragment de grammaire latine.
2. (F. 2-3). [Prologus in quadripartitum CYRILLI] (2).
3. (F. 3-5). *Distinctiones capitulorum*.
4. (F. 5-94^v). [CYRILLI quadripartitus].

Le feuillet 95 est blanc.

5. (F. 96-96^v). Fragment d'un traité de droit canon.

Papier, sauf les ff. 1 et 96 qui sont en parchemin; 96 feuillets; 0^m,215 × 0^m,15; XV^e siècle; titre courant en rouge. Ce volume provient des anciens bollandistes; l'ex-libris de leur bibliothèque * *MS.* 5 se trouve sur le premier plat intérieur. Reliure ancienne, ais de bois recouverts de peau de chamois; clous en cuivre; traces de fermoir.

1185. (II. 190). — S. CYRILLUS. *Parabolae*, en latin.

1. (F. 1-89). *Quadripartitus apologeticus beati CYRILLI episcopi*.
2. (F. 90-93). *Tabula totius libri*.

Papier, au filigrane de la lettre *P*; 93 feuillets; 0^m,212 × 0^m,14; XVI^e siècle. Le volume provient de l'abbaye de Parc, dont les armoiries ont été grattées sur les deux plats. Plus tard, ce manuscrit a appartenu à Mgr de Ram (3); la Bibliothèque royale l'a acquis en 1875. Reliure veau; au dos, le titre doré: *Cyrill. apolog.*

1186. (4077). — S. CYRILLUS ALEXANDRINUS. *Homiliae festivae*, interprète ANDREA SCHOTTO (4).

1. (F. 3). *Nota de paschalibus sermonibus*.
2. (F. 4). *Approbatio R. P. FRANCISCI FLERONTINI praepositi provincialis Societatis Iesu in Belgio, 15 februarii M. DC. X.*

Les feuillets 4^v-6^v sont blancs.

(1) Sur ce manuscrit, voir H. OMONT, *Catalogue des manuscrits grecs de la bibliothèque royale de Bruxelles*, p. 14, n. 28.

(2) Sur les éditions du *Quadripartitus apologeticus*, attribué à S. Cyrille, apôtre des Slaves, voir BRUNET, *Manuel du libraire*, 5^e éd., t. II, p. 463-64.

(3) Cf. Supplément au catalogue des livres de Serrure, n. 4357.

(4) Ce travail, préparé pour l'impression, est resté inédit. Voir SOMMERVOGEL, *Bibliothèque de la Compagnie de Jésus*, t. VII, p. 894-95. Le R. P. Sommervogel cite, *ibid.*, p. 891, ce manuscrit de la Bibliothèque royale de Belgique.

3. (F. 7-304). Ἑορταστικά. Homiliae XXX beati CYRILLI Alexandrini episcopi.

Papier; 304 feuillets; 0^m,215 × 0^m,165; XVII^e siècle (1610), car f. 304, on lit : *Finis. Tornaci an. M. CD. X. die XIX Augusti*. Ce volume provient de la bibliothèque des anciens bollandistes, dont il porte la cote ✱MS. 138 au revers de la couverture. Reliure parchemin.

1187. (1927-44). — S. PROSPER, et autres. Traités divers.

1. (F. 1^v). Table des matières.

2. (F. 2-60^v). PROSPER. Liber de contemplativa vita et activa. = *PL.*, t. LXXXIII, col. 415-520.

3. (F. 61-81^v). Exhortationes beati CESARII Arelatensis episcopi ad monachos. — Suite de sermons de divers auteurs, *PL.*, t. LXVII, col. 1154, 1056; t. LVIII, col. 869; t. LXVII, col. 1062, 1089, 1069, 1067. F. 71^v, il y a un sermon *De humilitate*, qui commence : Sanctus ac venerabilis pater vester (1); f. 76^v : *Mirror, fratres dilectissimi, patrem vestrum tanta se humilitate deicere* (2); f. 78^v : Sanctus ac venerabilis pater vester, dum se, ut cum venia sui dixerim (3).

4. (F. 81^v-104^v). Sermones EIUDEM generales. — Suite de sermons, surtout de S. AUGUSTIN, *PL.*, t. XXXIX, col. 2280, 2285; t. LXVII, col. 1072; t. L, col. 836; t. XXXIX, col. 2245; t. XL, col. 1306; t. XXXIX, col. 1932 et 2253. F. 91, sermon, *inc. Fidelium exhortatores animarum* (4); f. 97, *inc. Audivimus ... cum evangelium legeretur, dixisse Dominum ... Bonus homo de bono thesauro*; f. 102, *inc. Admonet nos ... sermo divinus ... Vovete et reddite Domino* (5).

5. (F. 105-121^v). Soliloquium seu dyalogus venerabilis viri magistri ADE DE SANCTO VICTORE prope Parisius de instructione anime religiose. = *PL.*, t. CXCVIII, col. 843 sqq. (6).

6. (F. 121^v-128^v). Dyalogus reverendi doctoris magistri HENRICI DE HASSIA de celebratione misse (7).

7. (F. 128^v-135^v). Tractatus BONEVENTURE de corpore Christi et praeparatione ad devotam susceptionem eiusdem ritamque celebrationem mysterii misse (8).

(1) Publié récemment par C. F. ARNOLD, *Caesarius von Arelate*, Leipzig, 1894, p. 468-90.

(2) Pour la bibliographie de ce sermon, cf. *ibid.*, p. 443.

(3) *Ibid.*, p. 448.

(4) *Ibid.*, p. 439.

(5) *Ibid.*, p. 437.

(6) Cf. plus haut, p. 162, la note 1.

(7) Cf. FABRICIUS-MANSI, *Bibl. lat. inf. et med. aet.*, t. III, p. 218.

(8) S. *Bonaventurae opera*, Romae, 1596, t. VII, p. 70 sqq.

8. (F. 135^v-144). Expositio venerabilis BEDE presbiteri super *Mulierem fortem quis inveniet*. = *PL.*, t. XCI, col. 1039 sqq.

9. (F. 144-147^v). Meditatio domni ANCELMII archiepiscopi de redemptione humana. = *PL.*, t. CLVIII, col. 762 sqq.

10. (F. 147^v-149^v). Tractatus ANCELMII de IIII virtutibus quae fuerunt in beata Maria. = *PL.*, t. CLIX, col. 579 sqq.

11. (F. 150-151). Epistola ANCELMII in quendam novicium. = *PL.*, t. CLVIII, col. 1095 sqq.

12. (F. 151-152^v). Epistola domni ANCELMII episcopi de ritibus ecclesie. = *Ibid.*, col. 551.

13. (F. 152^v-154). Exhortatio ducum et ululatus exercituum. *Inc.* Temptantia quippe vitia quae invisibiliter contra nos. *Des.* quasi ululatus exercitus odorando cognoscit.

14. (F. 154-157). Sermo beati IOHANNIS CRISOSTOMI de penitencia. *Inc.* Provida mente et profundo cogitatu.

15. (F. 157-159^v). Questio cur natalicia sanctorum in leticia, parascheve autem in tristitia celebremus. *Inc.* Quaestionem a tua dilectione mihi propositam. *Des.* verbosior forsitan extili.

16. (F. 159^v-164^v). Gnothosolitos magistri HUGONIS DE SANCTO VICTORE (1).

17. (F. 164^v-179^v). Liber magistri HUGONIS de statu virtutum variabili (2).

18. (F. 179^v-183^v). Tractatus magistri HUGONIS DE SANCTO VICTORE de tribus voluntatibus in Christo. = *PL.*, t. CLXXVI, col. 839 sqq.

19. (F. 183^v-184^v). Sententia magistri HUGONIS de quibusdam dubiis (3).

20. (F. 184^v-203). Epistola magistri HUBERTI ad omnes religiosos praesertim sui ordinis scilicet praedicatorum in caritate conscripta (4).

Parchemin ; 203 feuillets, le feuillet 37 a été mal relié, il doit suivre immédiatement le feuillet 33 ; 0^m,25 × 0^m,17 ; XV^e siècle (1460), car on lit, f. 203 : *Scripta per manus fratris Livini de Machlinia necnon finita anno Domini M^oc^occ^olx^o mensis decembris die duodecima*. Initiales rouges et bleues ; ancienne pagination I-CCL. Ce volume provient de Corsendonck, car f. 1, il y a la cote X. 4 de sa bibliothèque, et f. 1^v, on lit : *Iste liber pertinet monasterio canonicorum regularium in Korsen-*

(1) Ce traité est en fait d'Arnold de Gheilhoven, chanoine régulier de Saint-Augustin à Groenendael. Cf. J. ACQUOY, *Het Klooster te Windesheim*, t. II, pp. 204, 205, 246 ; t. III, p. 14. Sur les éditions de cet ouvrage, voir, entre autres, CAMPBELL, *Annales de la typographie néerlandaise au XV^e siècle*, p. 228, n. 830.

(2) Cet écrit n'a pas encore été publié. Cf. *PL.*, t. CLXXV, col. cxxxvi, n. xxii.

(3) Sur ce traité, qui semble encore inédit, cf. *PL.*, t. CLXXV, col. cxxxv, n. xiii.

(4) Sur les éditions de ce traité publié souvent sous le titre d'*Epistola de tribus votis religionis substantialibus*, voir *Histoire littéraire de la France*, t. XIX, p. 345.

donck (1). L'estampille rouge *R. F.* de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 2 et f. 203. Demi-reliure moderne; dos en maroquin rouge, avec les titres dorés des différents traités, et le monogramme couronné de Léopold I^{er}. Sur le plat, l'étiquette sous corne et encadrée de cuivre de l'ancienne reliure : *Prosper de vita contemplativa cum aliis in Korssendonck* (2).

1188. (1878-88). — ISAAC ANTIOCHENUS. Opera.

1. (F. 1^v). Table des matières.

2. (F. 2-85^v). Liber florum ex autenticis dictis sanctorum de laudibus beate Marie Virginis. *Inc.* Quoniam de gestis beatissime virginis Dei genitricis Marie. *Des. mutil.* ad extinguendas veterum piaculorum tenebras. Hec est inquam...

3. (F. 86-97^v). Liber abbatis YSAAC de Syria quomodo anima possit quiescere (3).

4. (F. 97^v-101). Revelatio beate virginis de passione filii sui quam revelavit beato ANSELMO. = *PL.*, t. CLIX, col. 271.

5. (F. 101). AUGUSTINUS. — Court extrait.

6. (F. 101-101^v). [ARNULFUS DE BOERIUS]. Speculum monachorum. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 1175-78.

7. (F. 101^v). S. GREGORIUS. De nuper conversis. — Court extrait.

8. (F. 102-110^v). Liber fratris THOME DE AQUINO ordinis praedicatorum de rege et regno ad regem Cypri (4).

9. (F. 111-156). Lectiones sanctorum pro refectorio estivales ex matutinali fratrum minorum Leodiensium aestivali et aliis. — Ce propre commence aux SS. Tiburce et Valérien pour se terminer à S. Chrysogone. Voici la liste des saints dont il y a des leçons dans ce propre : Georgius martyr in Perside, in civitate Diospoli; Marcus; Cletus; Marcellinus; Vitalis martyr, pater SS. Gervasii et Protasii; Philippus et Iacobus; sanctae crucis inventio; Alexander, Eventius et Theodulus; Ioannes ante portam latinam; Gordianus et Epimachus; Nereus et Achilleus; Pancratius; Pudenciana; Urbanus papa; Petronilla; Marcellinus et Petrus; Erasmus; Primus et Felicianus; Barnabas; Nazarius et Celsus; Vitus; Marcus et Marcellianus; Gervasius et Protasius; Paulinus; Natalis S. Ioannis Baptistae; Leo papa; Petrus et Paulus; translatio S. Martini; Praxedes; Christina; Christophorus; Pantaleon; Nazarius; Felix papa; Abdon et Sennen; Stephanus papa; inventio corporis Stephani protomartyris; Dominicus; transfiguratio Domini; Xistus papa; Donatus ep. et mart.; Cyriacus;

(1) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 67.

(2) Cf. au sujet de ce manuscrit, *Revue d'histoire et de littérature religieuses*, t. IV, 1899, p. 164.

(3) Publié dans *Maxima bibl. vet. Patrum*, Lugduni, 1677, t. XI, col. 1019 sqq.

(4) Cf. QUÉTIF-ECHARD, *Scriptores ordinis praedicatorum*, t. I, p. 336-37, n. 20.

Romanus; Tibureius; Hippolytus; Concordia; Eusebius; Timotheus; Bartholomaeus; Hermes; Sabina; Felix et Adauctus; Adrianus; Dorotheus et Gorgonia; Protus et Hyacinthus; Cornelius; exaltatio sanctae crucis; Lucia; Euphemia; Matthaëus; martyres Thebaei; Cyprianus et Iustina; apparitio S. Michaelis; Hieronymus; Remigius; Marcus papa; Dionysius cum sociis; Calixtus; Lucas; Hilarion; Simon; Quatuor Coronati; Theodorus; Martinus papa; Mennas; Clemens; Chrysogonus; Linus; Vitalis et Agricola; Agapitus; Bonifacius; Eleutherius; Ioannes papa; Felix papa; Pius papa; Anacletus papa; Symphorosa; Victor papa; Innocens papa; Zephyrinus papa; Evaristus papa; Pontianus papa (1).

10. (F. 160^v-162^v). Sermon. *Inc.* Audite nunc de fide vestra. *Des. mutil.* De primo audi quid. ...

11. (F. 163-168^v). [RAYMUNDUS LULLUS]. *Ars brevis* (2).

12. (F. 169-212^v). [BARTHOLOMEUS BRIXIENSIS. De casibus iuris] (3).

13. (F. 213-217). Extraits de l'évangile selon S. JEAN, ch. XIII-XVII.

14. (F. 217^v-220^v). *Legenda de sancto Alexio*. = *BHL.*, n. 286.

15. (F. 220^v). [Epistola ANSELMI Laudunensis ad H. abbatem Sancti Laurentii]. = *PL.*, t. CLXII, col. 1587.

Parchemin; 220 feuillets; 0^m,255 × 0^m,17; XIV^e siècle; deux colonnes, sauf f. 163-168^v et f. 220^v. F. 1^v, il y a cette note : *Iste liber pertinet monasterio de Korsendonck*. L'estampille rouge *R. F.* de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 2 et f. 212^v. Demi-reliure moderne; dos en maroquin brun avec les titres dorés des différents traités; plus bas, le chiffre couronné de Léopold I^{er} (4).

1189. (10801-06). ISAAC ANTIOCHENUS. *Opera*.

1. (F. 1). Notices biographiques, en latin, sur Isaac d'Antioche, Engelbert d'Admont et Héraclide.

2. (F. 2). *Index*.

3. (F. 3-62^v). *Liber ISAAC Antiochene ecclesie presbyteri de contemplatione anime* (5).

4. (F. 63-65^v). ENGELBERTI abbatis Admontensis ordinis sancti Benedicti *speculum virtutum moralium* (6). *Des. mutil.* Nequaquam desperare debent iuvenes in aggre dien ...

(1) La liste de ces leçons a été déjà publiée dans *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. I, p. 308.

(2) Sur les éditions de ce traité, voir N. ANTONIO, *Bibliotheca hispana vetus*, t. II, p. 126.

(3) Voir HAIN, *Repertorium bibliogr.*, t. I, p. 320, n. 2472.

(4) Ce manuscrit est décrit *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Brux.*, t. I, p. 308.

(5) Voir *Maxima bibl. vet. Patrum*, t. XI, p. 1019-43.

(6) Sur cet auteur et ce traité, voir M. ZIEGELBAUER, *Hist. rei litter. ord. S. Benedicti*, t. III, p. 178, n. 25.

5. (F. 66). Note, en latin, sur Héraclide.

6. (F. 67-155^v). HERACLIDIS eremite quondam Palestine episcopi liber qui dicitur *Paradysus*. = *BHL.*, n. 6532.

7. (F. 156-167). Vita sancti Materni episcopi. = *BHL.*, nn. 2655 et 2656.

8. (F. 167-194^v). Vita sancti Trudonis confessoris. = *BHL.*, n. 8323.

9. (F. 195-195^v). Sentencia CASSIANI abbatis de practica et theorica. = *PL.*, t. XLIX, col. 962-65, cap. viii.

Papier; 195 feuillets; 0^m,255 × 0^m,185; XVI^e siècle, car f. 62^v, on lit: *Anno Domini 1533 in profesto translationis sancti Patris nostri Benedicti 1533*, f. 155^v: *Anno Domini 1534 septimo kalendas novembris*, et f. 194^v: *Anno Domini 1531 quinta die mensis may*. Les feuillets 156-195 sont à deux colonnes. Au premier feuillet de garde, il y a la cote *KK*, 5-9, et la note: *Liber monasterii divi Laurentij prope Leodium compactus anno 1535*, et f. 2: *Liber monasterij sancti Laurentij martyris, ordinis sancti Benedicti confessoris prope Leodium*. Reliure veau brun estampé; au dos, le titre doré: *Isaac Antioch. de cont. anim.*

1190. (II. 2636). — MAXIMUS TAURINENSIS. Sermones.

1. (F. 1^v). Notice sur S. Maxime.

2. (F. 2-129^v). Sermones. = *PL.*, t. LVII, homiliae nn. 1, 10-15, 64, 23, 25-29, 34, sermo n. 56, homiliae nn. 36, 37, 42, 44, 43, 46-50, 84, 51-55, 57, sermo n. 29, homiliae nn. 58, 59, 56, 90, 60, 61, 65-72, 74, 75, 76, 79, 80, 85, 82, 78.

Papier; 129 feuillets, plus cinq de garde; 0^m,153 × 0^m,10; XVII^e siècle (1620), car f. 129^v, on lit la note: *Scribebat frater Iohannes Del Vaulx, 1620*. Ce volume provient de l'abbaye de Cambron, car f. 1, il y a la note: *Biblioth. Camber.* et le sceau de l'abbaye. Plus tard, ce manuscrit a été le n. 16727 de la collection Phillipps; il a été acquis par la Bibliothèque royale en 1900. Reliure parchemin.

1191. (10020-21). SIDONIUS APOLLINARIS. Epistolae.

1. (F. 1^v-2). [De Sidonio].

2. (F. 3-92). GAII SOLLII APOLLINARIS SIDONII epistolarum [libri ix]. = *PL.*, t. LVIII, col. 443-640. — Au livre VII, l'ordre de quelques lettres est interverti.

3. (F. 92-92^v). [AUSONI] versus de duodecim imperatoribus Romanorum. = *PL.*, t. XIX, col. 865-66.

Parchemin; 92 feuillets, plus trois de garde; 0^m,265 × 0^m, 185; XIII^e siècle; initiales rouges et bleues. Au sujet de la provenance de ce volume, on lit f. 1: *Abrah. Ortelij. Redemi in auctione publica VII octobr. M.D.XCVIII. Iohannes Livineius*; et plus bas: *Emit colleg. Societ. Iesu Antverpiae 1599. D.P.* F. 3, il y a la note: *Collegij Societatis Iesu Antverpiae 1599. L'ex-libris* ✱ *MS. 122* des anciens bollandistes se trouve au revers de la couverture. Reliure parchemin, fermoirs en cuir.

1192. (11373). — AENEAS GAZAEUS. Dialogues, en grec.

1. (F. 1). Notes diverses au sujet d'Aeneas Gazaëus.

Les feuillets 1^v-2 sont blancs.

2. (F. 2^v). Εἰς τὸν εὐσεβέστατον καὶ ἱεροπρεπέστατον ἄνδρα κύριον Ἀδριανὸν Ἀμερότιον (1) σοφώτατὸν τε καθηγητὴν καὶ βουλευχέστατον Ἰάκωβος Διασσωρίνος Ἕλληγ Ῥόδιος (2).

3. (F. 3-130). Αἰνέου σοφιστοῦ διάλογος. = *PG.*, t. LXXXV, col. 871 sqq.

Papier; 130 feuillets; 0^m,195 × 0^m,134; XVI^e siècle. Le timbre rouge de la Bibliothèque nationale de Paris *R. F.* se trouve f. 2^v et f. 130. Reliure ancienne estampée, fers dorés (3).

1193. (2102-03). — S. IOHANNES CHRYSOSTOMUS. Epistolae, en grec.

1. (P. 1-160). Lettres de S. Jean Chrysostome. = *PG.*, t. LII, nn. 1-3, 5-16, 4, 17, 234, 35, 42, 131, 174, 143, 135, 233.

2. (P. 160-209). Ἐπιστολὴ Ἰωάννου ἐπισκόπου πρὸς Ὀλυμπιάδα περὶ τῶν σκανδαλισθέντων ἐν τῇ ἔξορίᾳ αὐτοῦ. = *PG.*, t. LI, col. 479 sqq.

3. (P. 211-215). Lettre de FRONTON DU DUC à André Schott (13 octobre 1611), avec une table des lettres de S. Jean Chrysostome (4).

4. (P. 217-224). Fragmentum orationis quod nemo laeditur nisi a seipso. *Inc. mutil.* οὗθ' ἵνα οἰκοδομίαν. = *PG.*, t. LI, col. 473 sqq.

Papier; 224 pages; 0^m,21 × 0^m,165; XVI^e siècle. Sur le feuillet de garde en tête, on lit : *Misit apographum hoc e cod. Augustano Marcus Felserus M DXC VIII, XIII kal. octobris*, et au-dessous : *Pro domino Ioanne Livineio*, et p. 1 : *Collegii Societatis Iesu Antverpiae D. P.* Reliure parchemin (5).

1194. (7683-86). — S. IOHANNES CHRYSOSTOMUS. Epistolae, en grec.

1. (F. 1-67^v, 71-124^v). Lettres de S. JEAN CHRYSOSTOME. = *PG.*, t. LII, nn. 1-3, 5-16, 4, 17, 87, 107, 217, 178 (deux fois), 242, 96-101, 103-105, 40, 108-112, 41, 175-177, 229, 102, 179, 18-34, 129, 36-41, 43-45, 130, 46-78, 134, 132, 136-139, 133, 140, 128, 141, 142, 144-149, 181-184, 150-170, 76, 171-173, 80-84, 236, 85-93, 186-197, 113, 114, 198, 94, 95, 127, 143, 135, 233, 234, 121, 35, 42, 131, 118, 174, 180, 207, 199. — Pour le détail, voir la table suivante.

2. (F. 68-70^v). Index epistolarum D. Ioannis Chrysostomi ordine alphabeti et initiis epistolarum.

(1) Sur Adrien Amerot, grammairien soissonnais, mort en 1560, voir *Nouvelle biographie générale*, t. II, 1862, p. 360.

(2) Épigramme en grec, publiée par H. OMONT, *Catal. des manuscrits grecs de la Bibliothèque royale de Bruxelles*, p. 15.

(3) Cf. *ibid.*, p. 14-15, n. 31.

(4) Cf., au sujet de Fronton du Duc, SOMMERVOGEL, *Bibl. de la Compagnie de Jésus*, t. III, col. 233-47.

(5) Ce volume est décrit par H. OMONT, *Catalogue des manuscrits grecs de la Bibliothèque royale de Bruxelles*, p. 14, n. 26.

3. (F. 125-126). Notes diverses au sujet des lettres contenues dans ce volume.

Les feuillets 127 et 128 sont blancs.

4. (F. 129-177). Τοῦ ἐν ἁγίοις πατρὸς ἡμῶν Γρηγορίου τοῦ θεολόγου ἐπιστόλαι διάφοροι. = *PG.*, t. XXXVII, nn. 52, 114, 103, 170, 214, 110, 211, 185, 151, 219, 220, 127, 167, 99, 216-218, 221, 215, 213, 214, 121, 123, 139, 77, 159, 157, 124, 160, 161, 115, 152, 162, 122, 168, 169, 209, 197, 107, 108, 116-118, 111, 95, 239, 14, 23, 21, 37, 39, 22, 189, 100; puis trois lettres : Γιγαντίω — Ἐπέσταλκά σοι καὶ πρώην — Μεχρί τινος ἀπονόη — Μακρὸν ἀπεσιώπησας; puis nn. 201, 198, 200, 142, 105, 106, 104, 126, 146, 144, 210, 66, 212, 230, 3, 206, 204, 205, 177, 179, 176, 175, 174, 187, 232, 32, 92, 34-36, 31, 30, 87, 151, 228, 229, 188, 165, 166, 192, 78, 235, 134, 133, 70, 69, 10, 15, 67, 28, 171, 13, 63, 62, 27, 9, 155, 150, 156, 17, 18, 145, 136, 137, 38, 24, 181, 223, 222, 56, 233, 207, 208, 82, 83, 85, 86, 125, 140, 143, 234, 237, 55, 12, 97, 128, 129, 149, 68, 231, 227, 225, 164, 96, 203, 98, 95, 89, 226, 75, 242, 240, 238, 163, 74, 184, 143, 15.

Papier; 177 feuillets; 0^m,329 × 0^m,225; XVIII^e siècle. F. 72, on lit la note : *Ioannis Sambuci Pannonij opera collecta et curavit revideri donavit procura[ri] D. Arnaldo Arts supscriptori valorem 7 coronarum pro diligentia sua.* Il y a, en effet, de nombreuses notes marginales. Le premier feuillet est aux trois quarts déchiré. Demi-reliure moderne, dos en maroquin brun; au dos, le titre doré : *B^{rum} Ioannis Chrysostomi et Gregorii Nazianzeni epistolae graecae* (1).

1195. (11728). — S. IOHANNES CHRYSOSTOMUS. Epistolae, en grec.

Lettres éditées *PG.*, t. LII, nn. 200-202, 119, 120, 203, 204, 115, 205, 116, 206, 208-212, 112, 213-218, 123, 219, 220, 124, 120, 221, 223-226, 126, 227, 228, 230-232, 222.

Papier; 16 feuillets; 0^m,328 × 0^m,218; XVII^e siècle; ancienne pagination 105 à 136. Demi-reliure moderne; au dos, le titre doré : *B^a Ioannis Chrysostomi epistolae graecae* (2).

1196. (3639). — S. IOHANNES CHRYSOSTOMUS. Homiliae ad populum Antiochenum, en grec.

1. (F. 1-12^v). Ὁμιλία β', ἐν τῇ παλαιᾷ ἐκκλησίᾳ. = *PG.*, t. XLIX, col. 33-48.

2. (F. 13-25^v). Εἰς τὴν ἀποδημίαν ἣν ἐποιήσατο ... Φλαβιανός. = *Ibid.*, col. 47-60.

(1) Sur ce manuscrit, voir H. OMONT, *Catalogue des manuscrits grecs de la bibliothèque royale de Bruxelles*, p. 13, n. 24.

(2) Voir une description de ce manuscrit dans H. OMONT, *Catalogue des manuscrits grecs de la bibliothèque royale de Bruxelles*, p. 13, n. 25.

3. (F. 26-35^v). 'Ομιλία δ'. παράκλησις πρὸς τὸν λαόν. = *Ibid.*, col. 59-68.

4. (F. 36-48^v). 'Ομιλία ε'. Ἐπι παράκλησις πρὸς τὸν λαόν. = *Ibid.*, col. 67-82.

5. (F. 49-59). 'Ομιλία ς'. Παράκλησις πρὸς τοὺς αὐτοὺς. = *Ibid.*, col. 81-92.

6. (F. 59^v-65). 'Ομιλία ζ'. Ὅτι τὸ τῆς λύπης πάθος εἰς ἀμαρτίας ἀναίρεσιν χρήσιμον μόνον. = *Ibid.*, 91-98.

7. (F. 65^v-70^v). 'Ομιλία η'. Προτροπὴ εἰς ἀρετὴν. = *Ibid.*, col. 97-102.

8. (F. 70^v-78^v). 'Ομιλία θ'. Ἐπαινος τοῦ κατορθωκότου. = *Ibid.*, col. 103-11.

9. (F. 78^v-86^v). 'Ομιλία ι'. Ἐπαινος τῶν μετὰ τὴν ἔστιασιν ἀπηντηκότων εἰς τὴν ἀκρόασιν. = *Ibid.*, col. 112-20.

10. (F. 87-94^v). 'Ομιλία ια'. Εὐχαριστία πρὸς Θεὸν περὶ τῆς ἀπαλλαγῆς. = *Ibid.*, col. 119-28.

11. (F. 94^v-103^v). 'Ομιλία ιβ'. Ἐπι εὐχαριστία πρὸς τὸν Θεόν. = *Ibid.*, col. 127-35.

12. (F. 103^v-110^v). 'Ομιλία ιγ'. Ἐπι εὐχαριστία πρὸς Θεόν. = *Ibid.*, col. 134-44.

13. (F. 110^v-120^v). 'Ομιλία ιδ'. [Εἰς τοὺς φοβερὰς πλάττοντας φήμας]. = *Ibid.*, col. 143-54.

14. (F. 121-129). 'Ομιλία ιε'. Εἰς τὴν συμφορὰν τῆς πόλεως Ἀντιοχείας. = *Ibid.*, col. 153-62.

15. (F. 129^v-139). 'Ομιλία ις'. Εἰς τὸ ἀποστολικὸν ῥητόν· Παῦλος δέσμιος Ἰησοῦ Χριστοῦ. = *Ibid.*, col. 161-72.

16. (F. 139-147). 'Ομιλία ιζ'. Εἰς τοὺς ἄρχοντας τοὺς παρὰ τοῦ βασιλέως Θεοδοσίου ἀποσταλέντας. = *Ibid.*, col. 171-80.

17. (F. 147-153). 'Ομιλία ιη'. Εἰς τὴν προειρημένην ὑπόθεσιν τῆς στάσεως. = *Ibid.*, col. 179-88.

18. (F. 153-160). 'Ομιλία ιθ'. Τῇ κυριακῇ τῆς ἐπισωζομένης. = *Ibid.*, col. 187-97.

19. (F. 160-168). 'Ομιλία κ'. Εἰς τὴν διαλλαγὴν τοῦ βασιλέως. = *Ibid.*, col. 211-22.

20. (F. 168-175). 'Ομιλία κα'. Κατήχησις πρὸς τοὺς μέλλοντας φωτίζεσθαι. = *Ibid.*, col. 223.

Les deux feuillets de garde en parchemin contiennent des fragments de droit canon du XIV^e siècle : *De peccatis iusticie*.

Papier; 175 feuillets; 0^m,297 × 0^m,22; XVI^e siècle. Au verso du premier feuillet de garde, on lit : *Ad Martinienses in civitate Lovaniensi* (1). Reliure du XVII^e siècle; veau brun estampé; très jolis fers. Sur le premier plat, l'étiquette : *Homiliae* [sancti

(1) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 218.

Iohannis Chrysostomi ad populum] Antiochenum grece conscriptae per Costerium (1). A. XXVIII (2).

1197. (11353). — S. IOHANNES CHRYSOSTOMUS. Homelie ad Antiochenos, en grec.

1. (P. 1-580). [Homiliae XXI ad Antiochenos]. = *PG.*, t. XLIX, col. 15 sqq.

Le texte a été collationné par Lievens avec divers autres manuscrits, car p. 1, on lit : *Contuli cum antiquissimo codice in membrana descripto qui apud D. Vamesium Lovanij servatur, in quo erant conciones XXI et cum altero chartuceo valde vitioso in quo erat prima concio et quaedam ex aliquot sequentibus excerpta. V2 significat utrumque codicem Vamesianum, V. alterum in membrana, C. chartaceum, Cm. marginem chartacei*, et p. 580 : *Hactenus cod. Vamesianus in membrana qui ut plerisque locis nostrum auxit, ita pluribus ex hoc et auctus et emendatus est. Plane autem pro characterum vetustate expectationem nostram valde est frustratus. Ioh. Livineius prid. nativit. Mariae M. D. LXXVI (3).*

2. (P. 581-620). Τοῦ ἐν ἀγίοις πατρὸς ἡμῶν Ἰωάννου τοῦ Χρυσοστόμου περὶ μνησικακίας ἤτοι ὀργῆς καὶ περὶ τοῦ πάσης σπουδῆ φεῦγειν τοὺς ὄρκους. = *PG.*, t. XLIX, col. 199.

3. (P. 621-659). Τοῦ ἐν ἀγίοις πατρὸς Ἰωάννου ἀρχιεπισκόπου Κωνσταντινουπόλεως τοῦ Χρυσοστόμου εἰς τὴν παραβολὴν τοῦ τὰ μυρία τάλαντα ὀφείλοντος καὶ τὰ ἑκατὸν δηνάρια ἀπαιτοῦντος. = *PG.*, t. LI, col. 17 sqq.

4. (P. 660-683). Τοῦ ἐν ἀγίοις πατρὸς ἡμῶν Ἰωάννου ἀρχιεπισκόπου Κωνσταντινουπόλεως τοῦ Χρυσοστόμου ... λόγος ... ἐν ᾧ καὶ διδασκαλία τίνος χάριν καλεῖται μεγάλη ἑβδομάς (4).

Papier; 683 pages, plus sept feuillets de garde; 0^m,218 × 0^m,150; XVI^e siècle. Sur le troisième feuillet de garde, on lit : *Legatum Iohannis Douerini, Patricij Bruxellensis ac canonici Leodiensis*. L'estampille rouge, *R. F.*, de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve p. 1 et p. 683. Reliure parchemin (5).

(1) Il s'agit sans doute de *Ioannes Costerius*, qui fut prieur de Saint-Martin à Louvain de 1554 à 1559. Voir J. ACQUOY, *Het Klooster te Windesheim*, t. II, pp. 208 et 330; t. III, p. 153.

(2) Ce volume a été décrit par H. OMONT, *Catalogue des manuscrits grecs de la Bibliothèque royale de Bruxelles*, p. 13, n. 23.

(3) Sur Jean Lievens, voir la notice de L. ROERSCH, *Biographie nationale*, t. XII, col. 124-28.

(4) MONTFAUCON, *Chrysostomi opera*, t. V, col. 525.

(5) Voir une description de ce volume dans H. OMONT, *Catalogue des manuscrits grecs de la Bibliothèque royale de Bruxelles*, p. 13, n. 21.

1198. (11261). — S. IOHANNES CHRYSOSTOMUS. *Homelie ad Antiochenos*, en grec.

Ce volume contient les XXI homélies dites *de statuis*. = *PG.*, t. XLIX, col. 15 sqq.

Papier; 93 feuillets, plus 52 feuillets blancs à la fin du volume; 0^m,285 × 0^m,122; XVI^e siècle (1572), car f. 2, on lit : *Ex D. Iohannis Douuerinj canonici Leodiensis apographo 1572 descripsit Iohannes Livineius, nunc est collegii Societatis Iesu Antverpiae*. F. 3, il y a la note : *Societatis Iesu Antverp. D. P.* Au revers de la couverture, l'ex-libris de la bibliothèque des anciens bollandistes * *MS. 14*. L'estampille rouge, *R. F.*, de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 3 et f. 93^v. Reliure parchemin (1).

1199. (608-09). — S. IOHANNES CHRYSOSTOMUS. *Opus perfectum super Matthaeum. Prima pars*.

1. (F. 2-2^v). *Tabula evangeliorum et omeliarum eorundem in evangelio secundum Matheum citra XIII capitulum eiusdem per annum in hoc volumine contentorum*.

2. (F. 3-4). *Prefacio ANIANI ad Oroncium episcopum*. = *PG.*, t. LVIII, col. 975-78.

3. (F. 4-173). *Prima pars operis perfecti Iohannis Crisostomi super Matheum*. = *PG.*, t. LVII, col. 13-475.

4. (F. 173^v). *Epistola GEORGHII TRAPEZONTHII ad Franciscum [Barbarum Venetum]* (2).

Parchemin; 174 feuillets; 0^m,315 × 0^m,215; XV^e siècle; deux colonnes; ancienne pagination r-clxxi; signatures *a-i*. F. 1 et 174^v, il y a les notes suivantes de provenance : *Est liber hic sancti Martini locaniensis. — Pertinet ad librariam canonicorum Regularium vallis sancti Martini in opido locaniensi in de grijnstrate* (3). L'estampille rouge, *R. F.*, de la Bibliothèque nationale de Paris se voit ff. 2^v, 3 et 173^v. Reliure ancienne, veau brun estampé, avec le titre, destiné à être placé sous corne : *Prima pars operis perfecti Iohannis Crisostomi. A. XXIII*; traces de fermoirs.

1200. (506-7). — S. IOHANNES CHRYSOSTOMUS. *Opus perfectum super Matthaeum Secunda pars*.

1. (F. 1-1^v). *Tabula evangeliorum per annum que in hoc volumine continentur*.

2. (F. 2-144). [*Secunda pars operis perfecti beati Iohannis Crisostomi super Matheum*]. *Liber xlvi-lxxxviii*. = *PG.*, t. LVII, col. 475 sqq.

(1) Voir une description de ce volume dans H. OMONT, *Catalogue des mss. grecs de la Bibliothèque royale de Bruxelles*, p. 13, n. 22.

(2) Au sujet de cette lettre, probablement inédite, voir FABRICIUS-HARLESS, *Bibliotheca graeca*, Hamburgi, 1809, t. XII, p. 81, note *yy*.

(3) SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 218.

3. (F. 145-151). [Morale lxxxviii-xc] ex translatione BURGUNDI-
NIS (1).

Parchemin; 151 feuillets; 0^m,31 × 0^m,225; XV^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et bleues; titres courants; signatures. L'estampille rouge, *R. F.*, de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 2 et f. 151^v. Demi-reliure moderne; sur le premier plat, le titre, sous corne, de l'ancienne reliure: *Secunda pars operis perfecti beati Iohannis Chrisostomi super Matheum*.

1201. (453-54). — S. IOHANNES CHRYSOSTOMUS. Expositio operis imperfecti super Mattheum (2).

1. (F. 3^v-4^v). Tabula super exposicione operis imperfecti beati Iohannis Crisostomi Constantinopolitani episcopi in evangelio secundum Matheum.

2. (F. 5-190). Expositio operis imperfecti. = *PG.*, t. LVIII, col. 975 sqq.

Les ff. 1 et 193 contiennent des fragments d'antiphonaire.

Parchemin; 193 feuillets; 0^m,34 × 0^m,235; XV^e siècle; deux colonnes. F. 5, très jolies capitales et encadrement; titre courant en rouge; ancienne pagination i-clxxxvi. F. 2, il y a cette note: *Liber monasterii canonicorum regularium vallis sancti Martini in locanio*, et f. 192^v: *Est liber hic sancti Martini locaniensis* (3). L'estampille rouge, *R. F.*, de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve ff. 3^v, 4, 190^v. Demi-reliure moderne.

1202. (387). — S. IOHANNES CHRYSOSTOMUS. Expositio super evangelium Matthei.

1. (F. 1^v). Tabula evangeliorum que habentur in hoc sequenti libro beati Iohannis Crisostomi super Matheum de opere imperfecto.

2. (F. 2). Prologus beati IOHANNIS CHRYSOSTOMI super Matheum de opere imperfecto. = *PL.*, t. LVII, col. 975-78.

3. (F. 2-118). Expositiones... super evangelium Mathei. Cap. 1-28. = *Ibid.*, col. 977 sqq.

A remarquer la rubrique du f. 70^v: *Hic deficiunt capitula ab octavo capitulo usque ad decimum nonum capitulum et in fine a vicesimo quarto capitulo usque ad vicesimum octavum id est ultimum capitulum*.

Parchemin; 118 feuillets; 0^m,335 × 0^m,225; XV^e siècle (1453), car f. 118, il y a cette note: *Explicit secunda pars expositionis beati Iohannis Crisostomi super Matheum operis imperfecti 1453*. Deux colonnes, initiales rouges et bleues; f. 2, capitales et encadrements; titre courant. Ce volume provient de Corsendonck, car

(1) Sur ce fragment de la version de S. Jean Chrysostome, par Burgundio, cf. FABRICIUS-HARLESS, *Bibl. graeca*, 1802, t. VIII, p. 448, 555.

(2) Bien que ce traité ne soit pas de S. Jean Chrysostome, à l'exemple de tous les éditeurs, nous ne le séparons pas de l'énumération des œuvres du grand docteur.

(3) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 218.

f. 118, on lit : *Iste liber pertinet monasterio de Korssendonck prope turnout*, et sur une étiquette collée sur le plat intérieur : *Iste liber pertinet beate Marie semper virginis in Korssendonck prope turnhout, X.I.* L'estampille rouge, *R. F.*, de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 2 et f. 118^v. Reliure ancienne, veau raciné et estampé de petits fers *Ihesus, Maria*.

1203. (II. 989). — S. IOHANNES CHRYSOSTOMUS. Homelieae, en latin (1).

1. (F. 1-2^v). Omelia domni ANSELMI Cantuariensis archiepiscopi. = *PL.*, t. CLVIII, col. 641-49.

2. (F. 2^v-14^v). [Homelieae S. BERNARDI super *Missus est*]. = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 55-88.

3. (F. 14^v-15). [Epistolae].

4. (F. 15^v-153). Omelieae sancti IOHANNIS episcopi Constantino-politani.

a) (F. 15^v-24). De superscriptione psalmi [quingagesimi]. = *PG.*, t. LV, col. 565.

b) (F. 24^v-33^v). EIUSDEM in ipsum quingagesimum psalmum.

c) (F. 33^v-35). De psalmo CXXII. = *Ibid.*, col. 351.

d) (F. 35-36^v). De psalmo CL. = *Ibid.*, col. 495.

e) (F. 36^v-37^v). Omelia in Iob.

f) (F. 37^v-40). De ascensione Helie.

g) (F. 40-40^v). In natalem Christi.

h) (F. 44^v-45). Omelia de tribus pueris.

i) (F. 45-46). Omoelia de sancta Susanna.

k) (F. 46-52). Omoelia de proditione Iudae. = *PG.*, t. XLIX, col. 373.

l) (F. 52-60^v). De cruce et latrone. = *Ibid.*, col. 399.

m) (F. 60^v-63^v). De cruce dominica. = *PG.*, t. L, col. 815.

n) (F. 64-69^v). De ascensione Salvatoris. = *Ibid.*, col. 411.

o) (F. 69^v-75). De penthecosten. = *PG.*, t. LI, col. 803.

p) (F. 75-77^v). De nativitate Domini.

q) (F. 77^v-83^v). Iterum de nativitate Domini.

r) (F. 84-85). De Lazaro resuscitato.

s) (F. 85-92^v). De Cananea. = *PG.*, t. LI, col. 449.

t) (F. 92^v-94). In evangelio secundum Mattheum.

u) (F. 94-98). De principibus Marci.

v) (F. 98-102^v). In Luca evangelista.

w) (F. 102^v-105^v). In Iohanne evangelista.

x) (F. 105^v-106^v). De recipiendo Severiano episcopo. = *Ibid.*, col. 423.

y) (F. 107-112). SEVERIANI sermo de pace cum susceptus esset ab episcopo Iohanne. = *Ibid.*, col. 425.

(1) Voir la note 1 de p. 211.

- z) (F. 112-114^v). Omelia de eruditione discipline.
 α) (F. 114^v-118). Omelia ad Eutropium. = *Ibid.*, col. 391.
 β) (F. 118-120^v). Eiusdem cum de expulsione eius ageretur. = *Ibid.*, col. 427.
 γ) (F. 120^v-126^v). Eiusdem ad Theodorum monachum. = *PG.*, t. XLVII, col. 277.
 δ) (F. 126^v-129). De militia spiritali.
 ε) (F. 129-131^v). De militia christiana.
 ζ) (F. 131^v-135^v). De patre et duobus filiis.
 η) (F. 135^v-136). Eiusdem ad neophitos.
 θ) (F. 137). De reversione eius ex Asia. *Inc. mutil.* Vestra autem dilectio cotidie augmentabatur (1). = *Ibid.*, col. 429.
 ι) (F. 137-138^v). Post exilii prioris reditum. = *Ibid.*, col. 431.
 κ) (F. 138^v-140). Eiusdem omelia de fide in Christo.
 λ) (F. 140-152). Quod non leditur homo nisi a semetipso. = *Ibid.*, col. 459.
 5. (F. 153-173). Eiusdem sancti IOHANNIS de cordis compunctione liber. = *Ibid.*, col. 393.
 6. (F. 173^v-194). Eiusdem de reparatione lapsi.
 7. (F. 194^v-195^v). Epistola sancti HIERONIMI ad Vigilantium de Origene. = *PL.*, t. XXII, col. 602-6.
 8. (F. 195^v-200). Item epistola adversus Vigilantium hereticum. = *PL.*, t. XXIII, col. 337 sqq.
 9. (F. 200-200^v). Explanatio sancti HIERONIMI de anticristo in Danihel prophetam. = *PL.*, t. XXV, col. 569 sqq.
 10. (F. 200^v-202). Explanatio sancti HIERONIMI in Danihel. = *Ibid.*, col. 577 sqq. (cap. XII).
 11. (F. 202-202^v). Epistola sancti HIERONIMI presbiteri ad Eustochium virginem. = *PL.*, t. XXII, col. 416, n. 30.
 12. (F. 202^v-204). Omelia de filio prodigo et de illo qui semper cum patre fuit.
 13. (F. 204-206). Omelia sancti GREGORII pape ad Secundum. = *PL.*, t. LXXVI, col. 1075 sqq.
 14. (F. 206-206^v). Oratio sancti AUGUSTINI. *Inc.* Homo quidam, ait Dominus. *Des. mutil.* et altera die quasi tempore...

Parchemin; 206 feuillets; 0^m,338 × 0^m,195; X^e siècle, sauf les feuillets 1-25 qui sont du XIII^e; signatures *e-p.* F. 1 et 206^v; il y a la note : *Liber sancti Gilleni in Cella* (2). Ce volume a été acquis en 1888 de la bibliothèque de sir Thomas Phillips, dans laquelle il portait les nn. 379³ et 1387. Reliure moderne, cuir et toile.

(1) Il manque les homélies XXXV et XXXVI, à cause des feuillets arrachés.
 (2) Cf. A. PONCELET, S. J., *Annales de l'abbaye de Saint-Ghislain*, p. 367.

1204. (1258-59). — S. IOHANNES CHRYSOSTOMUS. Homiliae (1).

1. (F. 1-1^v). Tabula omeliarum xl Iohannis Crisostomi.
2. (F. 2-5). Omelia prima ... in recommendacionem beati Pauli apostoli (2).
3. (F. 5-24). Omelia secunda, tertia, quarta, quinta, sexta, septima.
4. (F. 24-39^v). Omelia ... de superscriptione psalmi quinquagesimi prima et secunda. = *PG.*, t. LV, col. 565-88.
5. (F. 39^v-43). Omelia in natali Machabeorum martirum. = *PG.*, t. L, col. 617 sqq.
6. (F. 43-44). Omelia de tribus pueris (3).
7. (F. 44-45). Omelia de psalmo CXXII^o. = *PG.*, t. LV, col. 351 sqq.
8. (F. 45-46^v). Omelia de psalmo centesimo quinquagesimo. = *Ibid.*, col. 495.
9. (F. 46^v-47). Omelia in Iob.
10. (F. 47-49). Omelia de ascensione Helye.
11. (F. 49-49^v). Omelia de sancta Susanna.
12. (F. 49^v-54^v). Omelia de prodicione Iude. = *PG.*, t. XLIX, col. 373 sqq.
13. (F. 54^v-59). Omelia de cruce et latrone. = *Ibid.*, col. 399.
14. (F. 59-61). Alia omelia de cruce et latrone.
15. (F. 61-63^v). Omelia de cruce dominica. = *PG.*, t. L, col. 815 sqq.
16. (F. 63^v-68). Omelia de ascensione Domini. = *Ibid.*, col. 411.
17. (F. 68-71^v). Omelia de penthecoste quinta decima. = *PG.*, t. LI, col. 803.
18. (F. 71^v-73^v). Omelia de nativitate Domini nostri Ihesu Christi.
19. (F. 73^v-78). Omelia de nativitate Domini et Iohannis Baptiste ... de solsticiis et equinociis.
20. (F. 78-79). De Lazaro resuscitato.
21. (F. 79-85). De Chananea. = *Ibid.*, col. 449.
22. (F. 85-86^v). Omelia in evangelium secundum Mattheum.
23. (F. 86^v-89^v). Omelia de principiis Marci evangeliste.
24. (F. 89^v-93^v). De divite et Lazaro.
25. (F. 93^v-96). Omelia in Iohannen Baptistam.
26. (F. 96-96^v). Omelia de recipiendo Severiano episcopo. = *PG.*, t. LI, col. 423.

(1) Sur les versions latines des homélies de S. Jean Chrysostome au moyen âge, voir l'article de LOOSHORN, dans *Zeitschr. f. kath. Theologie*, t. IV, 1880, p. 788-93.

(2) Cette homélie et les six suivantes, dont la traduction est l'œuvre d'ANIANUS, sont publiées *PG.*, t. L, col. 470-514.

(3) Cette homélie, ainsi que celles nn. 9, 10, 11, 14, 18, 19, 20, 23, 24, 25, 28, 29, 32-36, 40, 41, est inédite dans les versions latines du moyen âge.

27. (F. 96^v-97^v). Sermo SEVERIANI episcopi cum susceptus esset a Iohanne episcopo. = *Ibid.*, col. 425 (1).
28. (F. 97^v-101). Omelia de ieiuniis et geneseos.
29. (F. 101-102^v). Omelia de eruditione discipline.
30. (F. 102^v-106). Omelia ad Eutropium. = *Ibid.*, col. 391.
31. (F. 106-107^v). Omelia IOANNIS CRISOSTOMI cum de expulsiōe eius ageretur. = *Ibid.*, col. 427.
32. (F. 107^v-112^v). Omelia ad Theodorum monachum.
33. (F. 112^v-114^v). Omelia de militia spiritali.
34. (F. 114^v-116^v). Omelia de militia christiana.
35. (F. 116^v-119^v). Omelia de patre et duobus filiis.
36. (F. 119^v-122^v). Omelia ad neophitos.
37. (F. 122^v-125). Omelia de turture. = *PG.*, t. LV, col. 599.
38. (F. 125-127). Omelia cum de Asia reversus est Constantinopolim Iohannes. = *PG.*, t. LI, col. 429.
39. (F. 127-128). Omelia post exilii prioris reditum. = *Ibid.*, col. 439.
40. (F. 128-129^v). Omelia de fide in Christo.
41. (F. 129^v-140). Omelia de eo quod nemo leditur nisi a seipso. = *Ibid.*, col. 459 sqq.
- Les feuillets 140-142^v sont blancs.
42. (F. 143-144). Omelia de eo quod ... patientia pauperum non peribit in finem.
43. (F. 144-145^v). Omelia de eo ... Cantate Domino canticum novum.
44. (F. 145^v-147). Omelia de eo ... Fiat pax in virtute tua.
45. (F. 147-148). Omelia de ... non in eternum irascaris.
46. (F. 148). Omelia de ... Quis est homo qui vult vitam.
47. (F. 149^v-150^v). De eo quod scriptum est: Non intres in iudicium.
48. (F. 150^v-151^v). De eo ... Narrabo omnia mirabilia tua, Domine.
49. (F. 151^v-152^v). De eo ... Dirige me in veritate tua.
50. (F. 152^v-153^v). De eo ... Redime me, Domine.
51. (F. 153^v-154^v). De eo ... Domino votum vovit Iepte.
52. (F. 155-155^v). De eo ... Potestatis et pacis eius non erit finis.
53. (F. 155-156^v). De eo ... Gaude Syon, ecce rex tuus venit.
54. (F. 156^v-157^v). De eo ... Descendit sicut pluvia in vallem.
55. (F. 157^v-158^v). De eo ... Bonitatem fecisti cum servo tuo.
56. (F. 158^v-160). De eo ... Ecce vir oriens.
57. (F. 160-160^v). De eo ... Domine Deus meus, in eternum confitebor tibi.
58. (F. 160^v-161^v). De eo ... Domine, si peccavit in me frater meus.
59. (F. 161^v-162). De eo ... Dominus illuminatio mea.

(1) Ce discours est le sermon n. 149 de S. Pierre Chrysologue. Cf. *Zeitschr. f. kath. Theologie*, t. III, 1879, p. 263.

60. (F. 162-164^v). Expositio tocius psalmi nonagesimi.
61. (F. 164^v-165). De eo ... Exaudi me, Domine.
62. (F. 165-166). De lapsu primi hominis.
63. (F. 166-168^v). De Adam et Eva.
64. (F. 168^v-171). De eo ... Quis exurget mihi adversus malignantes.
65. (F. 171-172). De sancto David ubi dicit : Quis sum ego, Domine mi.
66. (F. 172-174). De eo ... In proximo es, Domine.
67. (F. 174-175). Expositio symboli.
68. (F. 175-177). Expositio orationis dominice.
69. (F. 177-178^v). Alia expositio symboli.
70. (F. 178^v-181). Expositio totius psalmi XXII.
71. (F. 181-182^v). De lectione evangelii ... Nolite esse sicut ypocrite.

Parchemin; 182 feuillets, plus six de garde; 0^m,292 × 0^m,20; XV^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et bleues; ancienne pagination en rouge I-CLXXXIII, signatures *a-d*. Au second feuillet de garde, on lit : *Liber domus canonicorum regularium vallis sancti Martini in Lovanio*; f. 821 et au verso du cinquième feuillet de garde à la fin : *Est liber hic sancti Martini lovaniensis* (1). Demi-reliure moderne, au dos, le titre doré : *B^u Chrysostomi homiliae variae, XV saec.*; plus bas, le chiffre couronné de Léopold I^{er}.

1205. (1314-20). S. IOHANNES CHRYSOSTOMUS. Homiliae.

1. (F. 1^v-2). Table des matières.
2. (F. 3-42^v). [Omélie variée]. — Ce sont les numéros 42-71 analysés dans le volume précédent 1258-59.
3. (F. 43-43^v). Epistola ANIANI ad Evangelium presbiterum de laudibus sancti Pauli. = *P. G.*, t. L, col. 470.
4. (F. 43^v-64^v). Liber sancti IOHANNIS CRISOSTOMI de laudibus beati Pauli apostoli. = *Ibid.*, col. 470-514.
5. (F. 64^v-76^v). Tractatus EIUDEM quod nemo potest ledi nisi a semetipso ledatur. = *PG.*, t. LI, col. 459.
6. (F. 76^v-100^v). Les homélies nn. 4, 6-10 du volume précédent, n. 1258-59.
7. (F. 100^v-137^v). Homélies nn. 22, 23, 25, 29, 30-40 du volume précédent, n. 1258-59.
8. (F. 137^v-161^v). Omelia EIUDEM de reparatione lapsi.
9. (F. 161^v-184). Omelia EIUDEM de cordis compunctione. = *PG.*, t. XLVII, col. 393.
10. (F. 184-185^v). Quaedam ammonitio EIUDEM.

Parchemin; 185 feuillets; 0^m,28 × 0^m,185; XV^e siècle; deux colonnes. Ancienne pagination I-CLXXXIII. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris,

(1) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 218.

R. F., se trouve f. 3 et f. 185^v. Demi-reliure moderne, dos en maroquin brun, avec le titre doré : *Bⁱ Chrysostomi homeliae variae*; plus bas, le chiffre couronné de Léopold I^{er}.

1206. (10787-90). — S. IOHANNES CHRYSOSTOMUS. Homeliae.

1. (F. 1^v). Index.
2. (F. 2-18^v). Liber beati IOHANNIS CHRYSOSTOMI quem in exilio constitutus confidenter scripsit : *Quod nemo potest ledi ab aliis nisi prius a seipso ledatur*. = *PG.*, t. LI, col. 459.
3. (F. 19-22). [EIVSDEM] de penitentia.
4. (F. 22-54^v). Libellus IOHANNIS CHRYSOSTOMI de reparatione lapsi.
5. (F. 54^v-55^v). Epistola ANIANI ad Evangelum presbiterum. = *PG.*, t. L, col. 470.
6. (F. 55^v-85). Liber sancti IOHANNIS CHRYSOSTOMI de laudibus Pauli. = *Ibid.*, col. 470-514.
7. (F. 85). Antienne et oraison de S. Paul.

Parchemin; 85 feuillets; 0^m,228 × 0^m,165; XV^e siècle (1465), car f. 1^v, on lit : *Anno Xiiii.lrv^o*. F. 1^v, il y a la note : *Liber sancti Laurentii prope et extra muros leodienses*, avec la cote : *MM, 2-11*. Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré : *Ioan. Chrysostomi opera quaedam*, reproduit à l'intérieur sur une étiquette en maroquin rouge; en dessous, les armes de Belgique et l'inscription *Bibl. royale*.

1207. (II. 952). — S. IOHANNES CHRYSOSTOMUS. De laudibus S. Pauli.

1. (Feuillet de garde). Fragment de missel, du X^e siècle.
2. (F. 1-2^v). Epistola ANIANI ad Evangelum presbiterum. = *PG.*, t. L, col. 470.
3. (F. 3-54). Liber sancti IOHANNIS CHRYSOSTOMI de laudibus beati Pauli apostoli. = *Ibid.*, col. 470-514.
4. (F. 54-57^v). De papa Gregorio VI^o qui ante dictus est Gratianus (1).
5. (F. 58-59). De muliere maleficiis imbuta (2).
6. (F. 59-60). De iuvene qui anulum sponsalium digito statue eree composuit (3).
7. (F. 60-62^v). De visione Karoli imperatoris (4).
8. (F. 62^v-63^v). De vaticinio regis Eduwardi (5).

(1) Sous ce titre, il y a les ch. 22-25 du livre XXVI du *Speculum historiale* de Vincent de Beauvais.

(2) *Ibid.*, cap. 26.

(3) *Ibid.*, cap. 29.

(4) Cf. supra, p. 5, et surtout les récentes études de R. POUPARDIN, *Le Royaume de Provence sous les Carolingiens*, Paris, 1901, p. 324-32, et de W. LEVISON, *Kleine Beiträge zu Quellen der fränkischen Geschichte*, NEUES ARCHIV, t. XXVII, 1901, pp. 399-408, 494-502.

(5) *Speculum historiale*, cap. 20.

9. (F. 63^v-65). De quodam imperatore Henrico nomine (1).
 10. (F. 65-95). Magistri HUGONIS de medicina anime. = *PL.*, t. CLXXVI, col. 1183 sqq.
 11. (F. 95-96). [De Maurilio monacho Fiscanensi]. — De Berengario.
 12. (F. 96 et 142^v-143). Versus HILDEBERTI episcopi. [Epitaphium Berengarii]. = *PL.*, t. CLXXI, col. 1396.
 13. (F. 96^v-109). [HUGO DE FOLIETO]. Libellus ad socium volentem nubere. = *PL.*, t. CLXXVI, col. 1201.
 14. (F. 109^v-137). De cedro et passeribus qui in ramis cedri nidificant. = *PL.*, t. CLXXVII, col. 26-55.
 15. (F. 137-139^v). [CHRYSOSTOMUS]. De eo quod scriptum est in psalmo XXXIII : *Quis est homo qui vult vitam.*
 16. (F. 139^v-142^v). [CHRYSOSTOMUS]. De symbolo. *Inc.* Super fabricam totius ecclesie nihil aliud in fundamento ponunt.
 17. (F. 143-143^v). [Contra Berengarium].
 18. (F. 143^v-144). De confessione in ultimis positorum.
 19. (F. 144^v). Index.

Parchemin ; 144 feuillets, plus un de garde ; 0^m,22 × 0^m,152 ; XIII^e siècle ; très jolies initiales ; signatures *a-r.* F. 1 et 144, il y a la note : *Liber sancte Marie de Camberone* (2), et f. 144^r, l'ex-libris *Sir T. P. Middle Hill 347*. Reliure moderne, chagrin brun estampé ; sous corne, l'ancienne étiquette entourée de cuivre : *Epistola beati Aniani ad Eangelum presbiterum*, et, en relief, l'inscription : *Regia Bibl. Belgica.*

1208. (II. 1015). — S. IOHANNES CHRYSOSTOMUS. Commentum in epistolam ad Hebreos.

1. (F. 2^v). *Pater noster*, en grec et en latin.
 2. (F. 3-108). Commentum sancti IOHANNIS episcopi Constantinopolitani in epistolam ad Hebreos ex notis editum post eius obitum a Constantino presbitero antioceno et translatum de greco in latinum a MUCIANO scolastico. = *PG.*, t. LXIII, col. 237 sqq. *Des. mutil.* Siquidem in causa fidei, fuge illum et evita ... — La lacune est annoncée par le scribe lui-même dans les vers suivants :

Huius lectorem certum volo corporis esse
 Propositi tantum finem sermonis abesse.

Parchemin ; 108 feuillets ; 0^m,324 × 0^m,242 ; XII^e siècle ; deux colonnes ; très belles lettrines, celle du f. 3^r tient toute la page et est relevée de curieux dessins ; signatures I-XIV. F. 2^r, il y a deux fois la note : *Liber sancti Martini Tornacensis* (3),

(1) *Ibid.*, cap. 18 et 19.

(2) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. man.*, part. I, p. 352.

(3) Voir d'HERBOMEZ, *Les Manuscrits de l'abbaye de Saint-Martin de Tournai aujourd'hui conservés à la Bibliothèque royale de Bruxelles*, p. 16.

ainsi que f. 108^v. L'ex-libris *Sir T. P. Middle Hill* se trouve f. 1. Ce volume a été acquis par la Bibliothèque royale en 1888 pour fr. 100. Reliure moderne, veau estampé, avec l'inscription : *Regia Bibl. Belgica*.

1209. (II. 1146). — S. IOHANNES CHRYSOSTOMUS. De dignitate sacerdotii.

1. (F. 1). Index.

2. (F. 1^v-42^v). Liber dialogorum sancti IOHANNIS CRISOSTOMI Constantinopolitani et sancti BASILII Cesariensis episcopi college beati Gregorii Nazianzeni de dignitate sacerdotii. = *PG.*, t. XLVII, col. 623 sqq. *Des. mutil.* ut illis quidem qui hoc...

2. (F. 43-45). AUGUSTINUS de bona morte. = *PL.*, t. XIV, col. 539 sqq.

3. (F. 45-51^v). Vita Symeonis sancti heremite. = *BHL.*, n. 7763.

4. (F. 51^v). Versus.

Inc. Transit in heredem prius ille prior Ludovicus.

Des. Hinc magis elegi pauper inesse gregi.

5. (F. 52-60). Divers extraits des Pères, formant une sorte de bestiaire.

6. (F. 61-81^v). Vita sancti Servatii Tungrensis episcopi et confessoris. = *BHL.*, n. 7617.

7. (F. 81^v-88). Vita et passio sancti Mengoldi martiris. = *BHL.*, n. 5879.

8. (F. 88^v-95^v). Psalterium.

9. (F. 95^v-96). [IACOBUS VITRIACUS. *Historia orientalis*] (1).

10. (F. 96-99). [IACOBUS VITRIACUS]. — Extraits.

11. (F. 99-100). Miraculum de quadam yconia Domine nostre que a mamillis et deorsum carne induta liquorem ex se emittit quo peruncti infirmi sanantur (2).

12. (F. 100). Miraculum de quadam ymagine lapidea domine nostre stupendum et mirabile.

13. (F. 100-101^v). Epistola ab imperatore Constantinopolitano Balduini Hainoensis comitis filio omnibus amicis suis fideliter missa (3).

On lit aussi, f. 101^v, cette note : *Anno Domini 1580 sexta die aprilis circa sextam a prandio fuit terre motus magnus.*

Parchemin ; 101 feuillets ; 0^m,282 × 0^m,197 ; XIII^e siècle ; deux colonnes ; quelques lettrines ; initiales rouges et vertes. F. 60^v, on lit : *Liber sancte Marie de Alna*, et

(1) C'est le début du livre III *Historiae orientalis* de Jacques de Vitry, cf. MARTENE et DURAND, *Thesaurus novus*, t. III, p. 269.

(2) Cf. codex n° II. 1064 ; miracle de Notre-Dame à Sardenay.

(3) Publiée par MARTENE et DURAND, *Thes. Anecd.*, t. I, p. 821. Voir plus haut, p. 53, n. 981 (21887).

f. 101^v : *Hic liber Alnae conventus virginis alnae*. F. 1, il y a la cote 4728 *Ph[ilippus]*. Ce volume a été acquis par la Bibliothèque royale en 1888. Cartonnage (1).

1210. (2994-3002). — S. IOHANNES CHRYSOSTOMUS. Opera.

1. (F. 1-7^v). De diversis differentiis hominum.

2. (F. 8-9). Prologus LEONARDI ARETINI in librum Basili de institutione iuvenum (2).

3. (F. 9-21^v). BASILII CAESARIENSIS liber de studiis liberalibus ad suos nepotulos.

4. (F. 21^v-42^v). Praefatio GUARINI * Veronensis in librum Plutarchi philosophi institutoris Trayani imperatoris de liberorum puerorum educatione (3).

* cod.
Bernardini.

Le feuillet 43 est blanc.

5. (F. 44-49). Recommendatio celle et heremi a FRAN[CISCO] PE[TRARCHA] (4).

6. (F. 49-61). Consolatoria EIUSDEM ad quendam monachum Cyster-ciensem olim socium suum in seculo (5).

7. (F. 61^v-119^v). De ocio religiosorum EIUSDEM ad Carthusienses (6).

8. (F. 120-125^v). [De similitudinibus religiosorum].

Le feuillet 126 est blanc.

9. (F. 127-155). Omelia beati IOHANNIS CRISOSTOMI ... quod nemo potest ledi nisi a seipso. = *PG.*, t. LI, col. 459 sqq.

10. (F. 155-193). Liber ... sancti IOHANNIS CRISOSTOMI de compunctione. = *PG.*, t. XLVII, col. 393.

11. (F. 193^v-198^v). Sermo beati IOHANNIS CRISOSTOMI de penitentia.

12. (F. 199-207). [De similitudinibus penitentiae].

Les deux feuillets de garde, en parchemin, contiennent des fragments d'un rouleau des morts, daté de 1426, avec la mention de plusieurs couvents de Bruges.

Papier, filigrane de la tête de bœuf surmontée de la croix; 207 feuillets, plus cinq de garde; 0^m,145 × 0^m,105; XV^e siècle (1443, cf. f. 42^v). F. 207^v, il y a la note :

*In libro vite scribi Cornelius orat
Qui sibi proficere libros scribendo laborat.*

(1) Ce volume est décrit dans *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Brux.*, t. II, pp. 506-7.

(2) Sur l'édition de ce traité de Laurent Bruni, voir FABRICIUS-MANSI, *Bibl. lat. med. et inf. act.*, t. II, p. 293.

(3) Cf. FABRICIUS-HARLESS, *Bibliotheca graeca*, t. V, 1796, p. 204.

(4) On ne retrouve pas ce morceau dans les éditions des œuvres de Pétrarque. C'est peut-être une pièce, assez courte du reste, inspirée par son traité *De Vita solitaria*.

(5) Voir *Francisci Petrarcae opera omnia*, Basileae, 1554, p. 952 sqq.

(6) Cf. *ibid.*, p. 331-64.

Sur le second feuillet de garde, on lit : *Liber ecclesie sancti Remacli in Stabulaus, et Liber monasterii sancti Remacli Stabulensis*. Reliure ancienne restaurée; veau brun estampé; traces de fermoirs.

1211. (285-87). — S. IOANNES CHRYSOSTOMUS. Opera.

1. (F. 1^v). Table.

2. (F. 1^v). Versus.

Inc. Sermo poetalis usus est grammaticalis.

Des. Ut tribuat munus tibi perpetuum Deus unus.

3. (F. 1^v). Explication des tables des évangiles.

4. (F. 2-2^v). Table des évangiles pour le propre du temps et des saints.

5. (F. 3-136^v). Secunda pars operis perfecti beati IOHANNIS CRISOSTOMI super Matheum. Liber xlvī. = *PG.*, t. LVIII, col. 475.

6. (F. 136^v-137). Quedam epistola GEORGII TRAPEZUNTHI translatoris operis beati Iohannis Crisostomi suprascripti (1).

7. (F. 138). Prefatio LILII TIFERNATIS oratoris eximii in sermones beati Iohannis Crisostomi super Iob et in sermones eiusdem de penitentia ab ipso ex greco in latinum traductas ad felicis memorie domnum Nicholaum papam quintum devote directas (2).

8. (F. 138-193^v). Sermones beati IOHANNIS CRISOSTOMI de patientia et de penitentia.

9. (F. 193^v-223). Dyalogi eiusdem beati IOHANNIS CRISOSTOMI Constantinopolitani episcopi college beati Gregorii Nazianzeni de dignitate sacerdotii. = *PG.*, t. XLVIII, col. 623 sqq.

Parchemin; 223 feuillets, plus trois de garde; 0^m,355 × 0^m,25; XV^e siècle (1470), car on lit, f. 223 :

*Bis septingentis et septuaginta sub annis
Christi, sub martis terna, liber explicit iste;
De quo laudetur qui trinus et unus habetur,
Per quem finitur bene quod fieret. Reperitur
item aliter
S**V** b terna Mart**I**s f**I**n**I**Vr h**I**C e**CC**e L**I**b**e**LL**V**s.*

Deux colonnes; très jolies lettrines; titre courant; signatures. L'estampille rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris, se voit f. 1^v et f. 223^v. Demi-reliure moderne; dos en basane rouge.

1212. (886-87). — S. IOHANNES CHRYSOSTOMUS. Opera.

1. (F. 3-44^v). Liber dyalogorum sancti IOHANNIS CRISOSTOMI Constantinopolitani episcopi et sancti Basilii ... de dignitate sacerdotii. = *PG.*, t. XLVIII, col. 623 sqq.

(1) Cf. FABRICIUS-HARLESS, *Bibl. graeca*, t. VIII, p. 552-53.

(2) Cf. FABRICIUS-HARLESS, *Bibl. graeca*, t. VIII, p. 551.

Les feuillets 45 et 46 sont blancs.

2. (F. 47-70). Prefatio LILII TIFERNATIS oratoris eximii in sermones et omelias beati Ioannis Crisostomi super Iob ab ipso ex greco in latinum traductas ad felicis memorie domnum Nicolaum papam quintum devote directas. — Sermones beati IOHANNIS CRISOSTOMI in Iob.

3. (F. 70-123). Sermones EIUSDEM de penitencia.

Parchemin; 123 feuillets, plus deux de garde en tête et quatre à la fin du volume; 0^m,292 × 0^m,20; XV^e siècle; deux colonnes; quelques letrines; initiales rouges et bleues; ancienne pagination 1-cxxiiii; signatures *ai-kj*. F. 1, on lit: *Liber monasterii canonicorum regularium sancti Martini in Iovanio*; et f. 65, ainsi qu'au verso du dernier feuillet de garde: *Est liber hic sancti Martini Lovaniensis* (1). La cote A.XXVII de cette bibliothèque a été collée sur le premier plat intérieur. L'estampille rouge, R. F., de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 3 et f. 123^v. Ancienne reliure, veau raciné et estampé; sur une étiquette placée sous corne et encadrée de cuivre, on lit: *Crisostomus. De laude sacerdotii. Item de patiencia beati Iob.*

1213. (2049-50). — S. IOHANNES CHRYSOSTOMUS. Opera.

1. (F. 1^v). Table des matières.

2. (F. 2-90^v). [ÆLREDUS]. Tres libri de fructu et excellentia caritatis. = *PL*, t. CXCIV, col. 501 sqq.

Les feuillets 91-92^v sont blancs.

3. (F. 93-174). Liber dyalogorum sancti IOHANNIS CRISOSTOMI Constantinopolitani et sancti Basili Cesariensis episcopi college beati Gregorii Nazianzeni de dignitate sacerdotii. = *PG.*, t. XLVIII, col. 623 sqq.

Papier et parchemin; 174 feuillets; 0^m,22 × 0^m,145; XV^e siècle. F. 1, il y a la note: *Iste liber pertinet monasterio de Bethleem canonicorum regularium prope Lovanium*; f. 2: *Bethleem*; f. 173^v: *Pertinet in Bethleem prope Lovanium liber iste*. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris, R. F., se trouve f. 2 et f. 174. Reliure ancienne restaurée; veau brun estampé.

1214. (21968). — S. IOHANNES CHRYSOSTOMUS. Opera.

Liber secundus super *Miserere mei Deus*. = *PG.*, t. LV, col. 565.

Papier, filigrane de l'étoile à huit rais couronnée; 12 feuillets; 0^m,214 × 0^m,145; XVI^e siècle. Ce manuscrit a été acquis en mai 1863, à la vente des livres de van Alstein, à Gand. Broché.

1215. (10468). — S. JEAN CHRYSOSTOME. Homélie traduite en français par HUBERT LESCOT.

(1) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 218.

1. (Premier et dernier feuillet de garde). Fragments de l'histoire de Barlaam et Ioasaph, en vieux-français.

Inc. A esgarde en son corage
Car li caldieu qui ierent sage
Sont devenu mu et taisant.

Des. Bien set Nacor sen est ales
Fali liot de convenance
Sorceus recueure la vengeance...

2. (F. 1-3^v). Table des matières.

3. (F. 4-4^v). Lettre de JEAN D'ARTOIS (1) à Sébastien Antoine, abbé d'Alne, 20 juin 1577 (2).

Le feuillet 5 est blanc.

4. (F. 6-211^v). Première série de vingt-et-une homélies de S. Jean Chrysostome " traduit du Latin en François par frère HUBERT LESCOT, Prieur des Chanoines de Saint-Augustin au Bois Seigneur Isaac (3). „

Les homélies traduites sont : les nn. 1-19, 21 *de statuis*, *PG.*, t. XLIX, col. 15 sqq. et *ad illuminandos catechesis* 2, *ibid.*, col. 231 sqq.

5. (F. 211^v). Approbation de JEAN FROMONT, doyen de Leuze, en latin, donnée pour l'impression des homélies ci-dessus (4).

Le feuillet 212 est blanc.

6. (F. 213-444). Deuxième série de vingt-et-une homélies de S. Jean Chrysostome, traduites par HUBERT LESCOT.

Ce sont les homélies : *PG.*, t. XLVII, col. 953, 963-1015; t. L, col. 305; t. LIII, col. 23; t. L, col. 335, col. 299, col. 323; t. LXIV, col. 11; t. L, col. 313, col. 291, col. 277; t. LXXXVIII, col. 1937; le sermon non publié par MIGNÉ : Ἀναγκαῖον, ἀγαπητοὶ ἀδελφοί, μαθεῖν; cf. *PG.*, t. LXIV, col. 1330; puis t. LXII, col. 234; t. LXIII, col. 557; t. XLVII, col. 381; t. XLVIII, col. 815; t. LI, col. 131; t. LIII, col. 619; t. LVI, col. 112.

7. (F. 444). Approbation de JEAN MOLANUS, en latin, pour l'impression de la version de Lescot (5).

Papier, sauf les deux feuillets de garde, qui sont en parchemin; 444 feuillets; 0^m,284 × 0^m,21; XVI^e siècle, car f. 211^v, on lit la date de 1574. Le timbre rouge de

(1) Sur Jean d'Artois, dix-huitième prieur de Bois-Seigneur-Isaac (1580-1585), voir WIAERT, *Historia famosissimi monasterii dicti a Sylva Domini Isaac*, Bruxellis, 1688, p. 145-7.

(2) Cette lettre a été publiée par nous dans les *Annales de l'Académie royale d'archéologie d'Anvers*, 1902.

(3) Cf. J. VAN DEN GHEYN, *Hubert Lescot, prieur de Bois-Seigneur-Isaac. Notice bibliographique*, BULLETIN DE L'ACADÉMIE ROYALE D'ARCHÉOLOGIE D'ANVERS, 1902.

(4) Cette approbation a été publiée, *ibid.*

(5) Cf. *ibid.*

la Bibliothèque nationale de Paris, aux faisceaux, se trouve f. 3^v et f. 444^v. Reliure exécutée très probablement à Bois-Seigneur-Isaac, veau brun estampé avec jolis fers représentant le briquet de la Toison d'or, la double aigle avec la couronne impériale et la devise de Charles-Quint : *Plus oultre*, un ostensor (1) avec le monogramme de la Vierge *SM* et l'inscription *Bois Sr Isaac*.

1216. (12050-52). — S. JEAN CHRYSOSTOME. Homélies, en flamand.

1. (F. 1^v). Die tafel van desen boeck.

Les feuillets 2-3 sont blancs.

2. (F. 3^v-4^v). Die tafel van desen boek.

3. (F. 6-82). Sommighe omelien ende sermoenen sinte IOHANNIS CRISOSTOMI.

A savoir la version flamande des homélies des dimanches et des fêtes.

4. (F. 83-154^v). [Omelien ORIGENIS].

5. (F. 154^v-158). Een epistole IOHANNIS des bisscops die hij screef totten bisscop Ariacum doen si beide verdreven waren uten den lande.

6. (F. 158-160^v). Een sermoen des bisscops sint JAN Guldemont van der kersten luden ridderscap.

7. (F. 161-213^v). Omelien LEONIS der heyligen paus.

8. (F. 214-238^v). Sinte MAXIMUS sermoenen.

Parchemin; 238 feuillets, plus six de garde; 0^m,23 × 0^m,135; XV^e siècle; très jolies initiales rouges et bleues. F. 5^v, une miniature représentant l'Agneau de Dieu. F. 1^v, il y a la note: *Desen boec hoert toe den beslotene cloester van onser liever vrouwendale in Valkenbroek dat men heet tot Facons der ordinen Sinte Augustijns* (2), et f. 6, au bas de la page: *Facons*. Reliure, veau raciné, à filets d'or; au dos, le titre doré: *Omelien en Sermoenen S. J. Crisostomi*; tranche rouge.

1217. (3895-96). — PROCOPIUS GAZAEUS. Opera, interprete BALTHAZARE CORDERIO (3).

En regard, sur deux colonnes, le texte grec et le texte latin, avec les titres suivants :

1. (F. 1-247). Προκοπίου Γαζαίου χριστιανού σοφιστοῦ τῶν εἰς τὰς παροιμίας Σαλόμωντος ἐξηγητικῶν ἐκλογῶν ἐπιτομή, *Procopii Gazaei christiani sophistae in Proverbia Salomonis expositionum selectarum compendium*. = *PG.*, t. LXXXVII, col. 1221 sqq.

(1) Allusion au miracle eucharistique du Bois-Seigneur-Isaac, qui eut lieu en 1405. Cf. HAGIOGRAPHI BOLLANDIANI, *Anecdota ex codicibus hagiographicis Iohannis Gielemans*, p. 379-89.

(2) Au sujet de ce couvent de chanoinesses régulières de Saint-Augustin, à Anvers, voir J. ACQUOY, *Het Klooster te Windesheim*, t. III, pp. 219-23.

(3) Sur Balthazar Cordier, voir SOMMERVOGEL, *Bibl. de la Compagnie de Jésus*, t. I, col. 1438-42, qui pourtant ne cite pas cette version de Procope de Gaza.

2. (F. 208-411). Προκοπίου χριστιανού σοφιστοῦ εἰς τὰ ἄσματα τῶν ἀσμάτων ἐξηγητικῶν ἐκλογῶν ἐπιτομή ἀπὸ φωνῆς Γρηγόριου Νύσσης, Κυρίλλου Ἀλεξανδρέως, Ὁριγένους τε καὶ Φίλωνος τοῦ Καρπαθοῦ, Ἀπολιναρίου, Εὐσεβίου Καισαρείας καὶ ἐτέρων διαφόρων, *Procopii christiani sophistae in cantica canticorum selectarum expositionum epitome ex ore Gregorii Nysseni, Cyrilli Alexandrini, Origenis, Philonis Carpathii, Apolinarii, Eusebii Caesariensis et aliorum diversorum*. = *Ibid.*, col. 1545.

Papier; 411 feuillets; 0^m,26 × 0^m,20; XVIII^e siècle; deux colonnes. Reliure vélin (1).

1218. (9845-48). — ENNODIUS. Opera.

1. (F. 1^v). Note d'ANDRÉ SCHOTT sur ce manuscrit.

2. (F. 1^v). Table des matières.

3. (F. 2-4^v). Dictio ENNODII in natali Laurenti Mediolanensis episcopi. = *MG.*, t. VII, p. 1-4 (2).

4. (F. 4^v-6). Dictio ENNODI quando de Roma rediit. = *Ibid.*, p. 4-6.

5. (F. 6-7). Dictio cuius supra in dedicatione auditorii quando ad forum translatio facta est. = *Ibid.*, p. 6-8.

6. (F. 7-10). [ENNODII epistolae]. = *Ibid.*, p. 8-11.

7. (F. 10-11). Praeceptum quando iusti sunt omnes episcopi cellulanos habere. = *Ibid.*, p. 12-13.

8. (F. 11-14^v). [Epistolae]. = *Ibid.*, p. 13-18.

9. (F. 14^v-15^v). Benedictio cerei. = *Ibid.*, p. 18-20.

10. (F. 15^v-28). [Epistolae]. = *Ibid.*, p. 20-40.

11. (F. 28-31). Dictio quae habita est in natale sancti ac beatissimi papae Epifanii in annum tricensimum sacerdotii. = *Ibid.*, p. 40-45.

12. (F. 31-33). [Epistolae]. = *Ibid.*, p. 45-48.

13. (F. 33-47^v). Libellus adversus eos qui contra synodum scribere praesumpserint. = *Ibid.*, p. 48-67.

14. (F. 47^v-59). [Epistolae]. = *Ibid.*, p. 67-84.

15. (F. 59-78^v). Vita beatissimi viri Epifani episcopi Ticinensis ecclesie. = *BHL.*, n. 2570.

16. (F. 78^v-79). Benedictio cerei. = *MG.*, t. VII, p. 109-110.

17. (F. 79^v-80^v). [Epistolae ENNODII]. = *Ibid.*, p. 110-112.

18. (F. 80^v-82). Praefatio quando arator auditorium ingressus est. = *Ibid.*, p. 112-115.

19. (F. 83-92^v). [Epistolae]. = *Ibid.*, p. 115-131.

(1) Voir une description de ce manuscrit par H. OMONT, *Catalogue des manuscrits grecs de la bibliothèque royale de Bruxelles*, p. 14, n. 30.

(2) Nous identifierons les différentes parties de ce volume au moyen de l'édition de F. Vogel, *MGH, Auct. antiq.*, t. VII, p. 1-326.

20. (F. 92^v-93^v). Petitorium quando absolutus est Gerontius puer. — Dictio quando Eusebii filius traditus est ad studia. = *Ibid.*, p. 131-33.
21. (F. 93^v-120). [Epistolae et epigrammata]. = *Ibid.*, p. 133-185.
22. (F. 120-124). De vita beati Antoni. = *Ibid.*, p. 185-190.
23. (F. 124-132). [Epistolae et epigrammata]. = *Ibid.*, p. 190-203.
24. (F. 132-141). Panegyricus dictus clementissimo regi Theoderico. = *Ibid.*, p. 203-14.
25. (F. 141-169^v). [Epistolae et epigrammata]. = *Ibid.*, p. 214-260.
26. (F. 170-173). In patrem quemdam ... oratio ad iudices = *Ibid.*, p. 260-65.
27. (F. 173-192). [Epistolae et epigrammata]. = *Ibid.*, 265-300.
28. (F. 192-194). Opusculum quintum. = *Ibid.*, p. 300-304.
29. (F. 194-207). [Epistolae et epigrammata]. = *Ibid.*, p. 304-26.
30. (F. 207^v). In nativitate undecim millium virginum. — Antiennes et hymnes notées, avec neumes.

Parchemin; 207 feuillets (1); 0^m,293 × 0^m,192; IX^e siècle, diverses mains. F. 1, on lit : *Ex libris Richardi du Pan* (2), 97, 40, *secundae classis*, puis : *Collegij Societatis Iesu Audomari*. F. 1^v, il y a la signature : *Andreas Schottus Antverpiensis de Societate Iesu 1607*, puis f. 1^v et f. 2, la cote ✱ *MS. 104* de la bibliothèque des anciens bollandistes. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris, aux faisceaux, se trouve f. 2 et f. 207^v. Reliure moderne; veau raciné; au dos, le titre doré : *Ennodii opera, IX saec.*, reproduit à l'intérieur sur une étiquette en maroquin rouge; en dessous, les armes de Belgique et l'inscription *Bibl. royale* (3).

1219. (II. 1012). — BOETIUS. De consolatione philosophiae. = *PL.*, t. LXIII, col. 579 sqq.

Avec glose. *Inc.* Mos auctorum est operi suos prologos praescribere.

Parchemin; 190 feuillets; 0^m,33 × 0^m,225; XIV^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et bleues. F. 1^v, une miniature représente Boèce. F. 1, il y a la note : *Liber ecclesie beati Martini Tornacensis* (4); puis le volume a appartenu à Sir Thomas Phillipps, n. 2113 de cette collection. Il a été racheté par la Bibliothèque royale en 1888 pour fr. 125. Reliure ancienne; ais de bois recouverts de veau brun estampé, très jolis fers; sous corne, le titre : *Boecius glosatus*.

(1) Il manque un feuillet entre les feuillets 150 et 151 et entre les feuillets 154 et 155.

(2) Richard du Pan, chanoine de Saint-Omer, mort en 1614. Cf. *Manuscripts de la bibliothèque de Saint-Omer*, dans *Catal. gén. des mss. des biblioth. publiq. des départements*, t. III, p. 325.

(3) Au sujet de ce volume, un des plus importants du dépôt, voir surtout G. HARTEL, *Magni Felicis Ennodii opera omnia* dans *Corpus script. eccl.*, Vienne, t. VI, 1882, p. I-III; F. VOGEL, *MGH.*, *Auct. antiq.*, t. VII, 1885, p. xxxii-xxxv, et surtout *Cat. cod. hagiogr. bibl. reg. Brux.*, t. II, p. 384-86, où les Bollandistes ont heureusement résolu le problème de la signature de Richard du Pan et refait très complètement l'histoire de ce volume.

(4) Cf. A. D'HERBOMEZ, *Les Manuscrits de Saint-Martin de Tournai conservés à la Bibliothèque royale de Bruxelles*, p. 14.

1220. (II. 2539). — FULGENTIUS. Opera.

1. (F. 1^v). Index.
2. (F. 2-26). Sancti FULGENTII episcopi ad Monimum de praedestinatione. = *PL.*, t. LXV, col. 151-206.
3. (F. 26-35^v). Responsiones sancti FULGENTII episcopi ad obiectiones Trasamundi regis Arriani contra fidem catholicam. = *Ibid.*, col. 205-24.
4. (F. 35^v-44^v). Liber EIUSDEM de misterio mediatoris. = *Ibid.*, col. 223-44.
5. (F. 44^v-54). Beati FULGENTII de immensitate divinitatis Filii Dei. = *Ibid.*, col. 245-68.
6. (F. 54-67^v). Sancti FULGENTII episcopi de sacramento dominice passionis. = *Ibid.*, col. 267-304.
7. (F. 67^v-70^v). Epistola EIUSDEM ad quendam familiarem sibi. = *Ibid.*, col. 303-11.
8. (F. 70^v-76). Epistola EIUSDEM ad Gallam. = *Ibid.*, col. 311-23.
9. (F. 76-82^v). Liber EIUSDEM ad Probam de virginitate. = *Ibid.*, col. 324-39.
10. (F. 82^v-84^v). EIUSDEM ad eandem. = *Ibid.*, col. 339-44.
11. (F. 84^v-86). Epistola sancti FULGENTII ad Eugipium presbiterum. = *Ibid.*, col. 344-48.
12. (F. 86-87^v). Epistola EIUSDEM ad Theodorum senatorem. = *Ibid.*, col. 348-52.
13. (F. 87^v-91). Epistola sancti FULGENTII episcopi ad Venantiam. = *Ibid.*, col. 352-60.
14. (F. 91-102). Libri XXIII per singulos singulis litteris secundum ordinem diminutis.

Parchemin ; 102 feuillets ; 0^m,338 × 0^m,23 ; XIII^e siècle : deux colonnes ; superbes lettrines en toutes couleurs ; signatures *a-n*. F. 1^v et f. 2, il y a la note : *Liber sancti Lamberti Letiensis*. Ce volume fut plus tard le n. 6244 de la bibliothèque Phillipps, il a été acquis par la Bibliothèque royale en 1900. Reliure moderne, veau raciné ; au dos, le titre doré : *Sancti Fulgentii opera*.

1221. (9850-52). — S. CAESARIUS ARELATENSIS. Homiliae.

1. (F. 1-4, 177-177^v). Fragments d'un psautier (f. 1 et 177), titre d'un sacramentaire saxon et irlandais (f. 2), exercices de plume (f. 3, 4).
2. (F. 5-107). Liber sermonum vel adhortationis patrum ad profectum monachorum (1). = *PL.*, t. LXXIII, col. 851-961.
3. (F. 107-139^v). Omiliae sancti CAESARII episcopi.
 - a) (F. 107-110^v). Qualiter verbum Dei vel desiderare debeat vel requiri. = *PL.*, t. XXXIX, col. 2317.

(1) Voir ROSWEYDE, *Vitae patrum*, Antverpiae, 1165, p. 562-625, col. 1, § 39.

b) (F. 110-114^v). Secunda = *PL.*, t. L, col. 841 et t. LXVII, col. 1056.

c) (F. 114^v-117). *EIUSDEM* III. = *PL.*, t. LVIII, col. 869; t. LXVII, col. 1059.

d) (F. 117-122). Quarta = *PL.*, t. L, col. 844; t. LXVII, col. 1062.

e) (F. 122-123^v). Omilia quinta. = *PL.*, t. L, col. 848; cf. t. LXVII, col. 1089.

f) (F. 123^v-125^v). Sexta. = *PL.*, t. L, col. 855; t. LXVII, col. 1067.

g) (F. 125^v-130^v). VII (1).

h) (F. 130^v-134). Octava. = *PL.*, t. LVIII, col. 872; t. LXVII, col. 1069.

i) (F. 134-137^v). Nona (2).

k) (F. 137^v-139^v). Decima (3).

4. (F. 139^v). [GELASII] decretale de recipiendis et non recipiendis libris.

Il ne subsiste de ce texte que la rubrique et la première ligne.

5. (F. 140-143^v). Exhortatio sancti CAESARII ad tenendam vel custodiendam caritatem. = *PL.*, t. LXVII, col. 1151.

6. (F. 144-176^v). [Expositio in quatuor evangelia] (4).

Parchemin; 178 feuillets (car le feuillet 33 est marqué deux fois); 0^m,270 × 0^m,195; VII^e siècle. Cette date ressort de l'inscription suivante :

HIC LIBER VITA[S] PA
TRV̄ [S]EV VEL HVMIAS SĀ
CAESARII EPĪ QVOD VENERA
BILIS VIR NOMEDIVS ABBA
SCRIBERE RŌḠ ET IPSV̄ BASIL̄
SĀ MEDARDI CONTVLIT DEVOTVS IN HONORE
SI QVIS ILLV̄ EXINDE AVFERRE TEMPTA
VERIT IVDICIŪ CVM DEO ET SĀO MEDARDO
SIBI HABERE [NOVERIT] (5).

(1) Publiée dans *Maxima Bibliotheca veterum patrum*, Lyon, 1677, t. VIII, p. 837, et plus récemment par ARNOLD, *Caesarius von Arelate*, Leipzig, 1894, p. 468-90.

(2) *Maxima Bibl. vet. patr.*, t. VIII, p. 844.

(3) *Ibid.*, p. 855.

(4) Ce commentaire a été édité par M. de la Bigne dans *Maxima Bibl. vet. patr.*, t. V. Quelques extraits ont été publiés par M. L. DELISLE, *Notices et extraits des manuscrits de la Bibliothèque nationale*, t. XXXI, 1884, p. 41-42. Cf. OTTO, *Corpus apolog.*, t. VIII, p. 278-324; TH. ZAHN, *Forschungen zur Geschichte des neut. Kanons*, t. II, 1883, p. 31-85; HARNACK, *Texte und Untersuchungen*, t. I, p. 97-175.

(5) Comme l'a indubitablement démontré M. L. DELISLE, *Notices et extraits des manuscrits de la Bibliothèque nationale*, t. XXI, p. 35, il s'agit ici de l'abbaye de Saint-Médard à Soissons et de Numidius, qui en était abbé à la fin du VII^e siècle.

Ce volume est écrit tout entier en lettres onciales (1), sauf les feuillets 140-143, qui le sont en caractères lombardiques (2). Le verso du feuillet 4 est occupé par un frontispice très remarquable. Sous une grande arcade dont le cintre est orné de deux paons à l'extérieur et d'une rosace à l'intérieur, se trouve l'inscription reproduite plus haut. " Les contours des lettres ont été légèrement tracés à l'encre noire; l'intérieur en a été enluminé en rouge, en rose et en vert, couleurs que le peintre a pareillement employées pour les ornements de l'arcade, pour les paons et la rosace, comme aussi pour l'enluminure des grandes lettres (3). Signatures *Q. II, Q. III, V-VII, Q. VIII, Q. VIII, Q. XI-Q. XIII, I, II, Q. III-QVIII*. Il manque un feuillet après les ff. 29, 33^{bis}, 35, 64, deux feuillets après les ff. 74, 75. F. 4, on lit : *Liber sancti Vedasti*. Plus tard, ce volume a fait partie de l'ancienne bibliothèque des bollandistes, comme on le voit, f. 1, par la cote : *O. MS. 10*. Le timbre rouge de la Bibliothèque nationale de Paris se voit f. 5 et f. 176^v. Reliure moderne; veau raciné; au dos, le titre doré qui se trouve aussi à l'intérieur sur une étiquette de maroquin rouge; en dessous, les armes de Belgique et l'inscription *Bibl. royale* (4).

1222. (2861-62). — S. CAESARIUS ARELATENSIS. Sermones.

1. (F. 1-118). *Horologium eterne sapientie* (5).

2. (F. 118-121^v). *Cursus de eterna sapientia*.

3. (F. 122-142^v). *Sermones sancti CESARII episcopi ad monachos*. — *PL.*, t. XXXIX, col. 2317; t. LXVII, col. 1056; t. LVIII, col. 869; t. LXVII, col. 1062, 1089, 1017, puis le sermon *Sanctus ac venerabilis pater ... prope indiscreta suggestione* (6); *PL.*, t. LXVII, col. 1069; puis le sermon *Mirror, fratres, dominum patrem vestrum* (7), *PL.*, t. LXVII, col. 1154.

Parchemin; 142 feuillets; 0^m,17 × 0^m,124; XV^e siècle. F. 1, on lit : *Pro domno Arnolde Overhof ex regularibus conventus rubee vallis; Ad usum fratris Arnoldi Overhoff in rubea valle professi*. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris, *R.F.*, se trouve f. 1 et f. 142^v. Reliure ancienne restaurée, très jolis fers, veau brun estampé.

(1) Voir *ibid.*, trois planches de reproduction, en héliogravure, des feuillets 4^v, 107^v et 144.

(2) Le feuillet 141 a été reproduit *ibid.*

(3) *Id.*, *ibid.*, p. 34.

(4) Ce manuscrit a été souvent décrit et étudié. Cf. ROSWEYDE, *Vitae patrum, Antverpiaë*, 1615, prolegomenon XXIX, p. LXX; PITRA, *Étude sur les Actes des saints*, p. 59-60; L. DELISLE, *Notice sur un manuscrit mérovingien de Saint-Médard de Soissons*, *REVUE ARCHÉOLOGIQUE*, mai 1881; *Id.*, *Notice sur un manuscrit mérovingien de la Bibliothèque royale de Belgique, n° 9850-9852*, dans *NOTICES ET EXTRAITS DES MANUSCRITS DE LA BIBLIOTHÈQUE NATIONALE*, t. XXXI, 1881, 1^{re} partie; S. LÖWENFELD, *Zu den Homilien des heiligen Caesarius*, *ZEITSCHR. F. KIRCHENGESCHICHTE*, t. VI, 1883, p. 60-62; AD. HARNACK, *Der angebliche Evangelien-Commentar des Theophilus von Antiochien*, p. 159-162, *TEXTE UND UNTERSUCHUNGEN*, t. I; C. F. ARNOLD, *Caesarius von Arelate und die gallische Kirche seiner Zeit*, Leipzig, 1894, p. 1151-52.

(5) Sur cette pièce et la suivante, voir plus haut, p. 174, notes 1 et 2.

(6) Cf. C. F. ARNOLD, *Caesarius von Arelate*, p. 468.

(7) *Ibid.*, p. 443.

1223. (15003-48). — S. CAESARIUS ARELATENSIS. SERMONES.

1. (F. 1-3^v). Tabula omnium contentorum in presenti volumine.

2. (F. 4-9^v). Speculum biblie demonstrativum genealogie domini nostri Iesu Christi. *Inc.* Sciens ego historie sacre prolixitatem (1).
Les feuillets 10-12 sont blancs.

3. (F. 13-42). Viginti sermones seu exhortationes beati CESARII Arelatensis episcopi ad monachos. = *PL.*, t. LXVII, col. 1154, 1056; t. LVIII, col. 869; t. LXVII, col. 1062, 1089, puis le sermon *Sanctus ac venerabilis pater ... prope indiscreta suggestione* (2); *PL.*, t. LXVII, col. 1069; puis les sermons *Mirror, fratres, dominum patrem nostrum; Sanctus ac venerabilis ... dum se ut cum venia sui* (3); *PL.*, t. LXVII, col. 1067; t. XXXIX, col. 2280, 2285; t. LXVII, col. 1072; puis *Fidelium exhortatores animarum* (4); *PL.*, t. XXXIX, col. 2245, 1931; puis *Audivimus ... bonus homo de bono thesauro*; *PL.*, t. XXXIX, col. 2253; t. LVIII, col. 8883; puis *Admonet vos ... per prophetam : vovete et reddite* (5).

4. (F. 43^v). Rubriques du calendrier pour l'année 1445.

5. (F. 43^v-48^v). Ciclus magnus magistri IOHANNIS DE GARLANDIA solaris (6).

Le feuillet 49 est blanc.

6. (F. 50-52). Casus quidam insolitus qui accidit anno Domini M^occcc^oxlvi^o descriptus a quodam magistro REYNERO rectore scolarium in Bruxella (7).

7. (F. 52-54^v). REYNERUS prescriptus. Historia ... que accidit in Dordraco in Hollandia.

8. (F. 54^v-59^v). Pulcherrima et plurimum devota historia de nativitate Brixii confessoris atque pontificis qualiter venit ad sanctum Martinum episcopum Turonensem. *Inc.* Erat vir quidam in territorio Atrebatensium.

9. (F. 60-64^v). Epistola domini Francisci PETRARCHI laureati poete ad domnum Iohannem Florentinum poetam de historia Griseldis (8).

(1) Cf. t. I de ce catalogue, nn. 166, 167, 168, 169, 174.

(2) Cf. C. F. ARNOLD, *Caesarius von Arclate*, p. 468.

(3) *Ibid.*, p. 443.

(4) *Ibid.*, p. 439.

(5) *Ibid.*, p. 437.

(6) Cf. ULYSSE ROBERT, *De Gerlandi vita et operibus*, dans ANALECTA IURIS PONTIF., t. XII, 1873, p. 609 sqq.

(7) Ce morceau a été souvent publié, deux fois par le b^{on} de REIFFENBERG, *Mémoires de l'Académie de Bruxelles*, t. XIV et *Annuaire de la Bibliothèque royale de Belgique*, t. III, p. 73-84, ensuite par L. TROSS, *Magistri Reneri de Bruxella tragoedia*, Hammone, 1848, p. 7-11.

(8) Sous ce titre est donné le traité de Pétrarque, *De obedientia ac fide uxoria*, édité dans *Francisci Petrarcae opera omnia*, Basileae, 1554, p. 670-7.

10. (F. 65-67). Tractatus venerabilis patris domni BASILII de laude vite solitarie. = *PL.*, t. CXLV, col. 246-51.

11. (F. 67^v-68^v). Sermo bonus abbatibus MOYSI. — Epistolae beati MACHARII abbatis. = *PL.*, t. CIII, col. 451.

12. (F. 69-73^v). Compendium fratris DAVID Carthusiensis. Si vis in spiritu proficere. *Des.* iustum est non diligi indignum et nullam reverentiam exhiberi.

13. (F. 73^v-79). Sermo primus devoti ac religiosi fratris domni MARTINI BERNARDI DE TILETO ordinis Carthusiensis professi apud Gandavum super sollemnitate beatissimi patriarche nostri Brunonis. *Inc.* Euge, dilecti mi, assimilare capree. *Des.* et moribus ymaginem referamus.

14. (F. 79-85). Sermo EIUDEM et unde supra (1). *Inc.* Ecce iste venit saliens. *Des.* Ascensus montium quibus itur in celestem Ierusalem obtinere valebimus, ad quam nos perducatur ... Amen.

15. (F. 85-93^v). Septem ab eodem MARTINO [sermones] editi ad honorem eiusdem sancti (2). *Inc.* Qui humiliatus fuerit erit in gloria. *Des.* id est amabit eum in regni palatio.

16. (F. 93^v-106). Epistola cuiusdam devoti Carthusiensis in Flandria prope Geraldimontem professi que suadet deserere seculum et religionem intrare (3).

17. (F. 106-111). Religiosi patris domni PETRI DORLANDI Carthusiensis domus sancti Iohannis Baptiste in Zeelem prope Diest [de corruptela religionis sancte].

18. (F. 111-115^v). Tractatus religiosi patris domni PETRI DORLANDI Carthusiensis in Zeelem prope Dyest de multiplici conflictu beatissimi patris Anthonii contra dyabolum (4).

19. (F. 115^v-117). Translatio sancti Anthonii de Constantinopoli ad Viennam. = *BHL.*, n. 613.

20. (F. 117-125). Inventio corporis eiusdem et translatio de partibus orientis in Constantinopolim. = *BHL.*, n. 612.

21. (F. 125-129). Alia quedam narratio mirabilis de vita sancti Anthonii.

22. (F. 129-134^v). [Sermo de sancto Antonio]. *Inc.* Hodie, fratres carissimi, sacrosanctam memoriam usurpamus.

Les feuillets 135-136^v sont blancs.

(1) A la fin de ce sermon, f. 85, il y a la note : *Isti prescripti sermones leguntur ad honorem beatissimi Patris Brunonis in refectorio.*

(2) F. 85, in capitulo monachorum.

(3) L'adresse de la lettre appelle ce chartreux B. G. Hermannus.

(4) Sur Pierre Dorland et ses travaux, voir *Biographie nationale*, t. VI, col. 131-33.

23. (F. 137-138). In libro de viris illustribus de domno Guerrico quondam monacho Clarevallis. = *PL.*, t. CLXXXV, col. 1058-60.

24. (F. 138-233^v). Sermones domni GUARRICI abbatis Igniaci. = *Ibid.*, col. 11-75, 89-514.

25. (F. 234-235). Sermo PETRI DAMIANI de vigilia beati Benedicti abbatis. = *PL.*, t. CXLIV, col. 545-48.

26. (F. 235-248). Sermo devotus beati BERNARDINI confessoris, de excellentia, virtute et efficacia nominis Iesu (1).

27. (F. 248-249). [PETRUS DAMIANUS]. Exemplum Phinees. = *PL.*, t. CXLV, col. 381.

28. (F. 249-250^v). Epistola PETRI DAMIANI. = *Ibid.*, col. 1091-92.

29. (F. 250^v-251^v). Epistola PETRI DAMIANI Nicolao pape directa super incontinentia clericorum. = *Ibid.*, col. 379 sqq.

30. (F. 251^v-254^v). Epistola PETRI DAMIANI. = *Ibid.*, col. 819 sqq.

31. (F. 254^v-256^v). Epistola PETRI DAMIANI in qua verberum disciplina defenditur. = *PL.*, t. CXLIV, col. 415-17.

32. (F. 257). Epistola PETRI DAMIANI ad imperatricem. = *Ibid.*, col. 446.

33. (F. 257-257^v). Epistola PETRI DAMIANI de anima cum egreditur a corpore. = *PL.*, t. CXLV, col. 737-38, cap. vi.

34. (F. 258-271^v). Epistola venerabilis patris fratris HUMBERTI quinti magistri ordinis praedicatorum ... de tribus essentialibus votis religionis (2).

35. (F. 272-282). Tractatus venerabilis viri magistri THEODRICHI DE MONASTERIO ... de vicio proprietatis, ad sorores sanctimoniales conventus sancti Egidii Monasteriensis ordinis sancti Benedicti (3).

36. (F. 282^v-291). Sermo PETRI DAMIANI de sancto Matheo evangelista ... de sancto Marco ... de sancto Luca ... de sancto Iohanne. = *PL.*, t. CXLIV, col. 783-88; col. 580-83; col. 800-7; col. 857-69 (ce dernier sermon est résumé).

37. (F. 292-307). Vita sancti Brendani. = *BHL.*, n. 1436.

38. (F. 307-347^v). Libellus de tribus regibus. = *BHL.*, n. 5137.

39. (F. 347^v-355^v). Sermo historicus in laudem vite ac penarum sanctissimi et serenissimi martyris Laurentii ... editus a disertissimo domino PETRO DORLANDO ordinis Carthusiensis.

40. (F. 355^v-360). Sermo secundus de eodem martire typicus ab eodem DORLANDO conscriptus (4).

(1) Publié dans I. DE LA HAYE, *Sancti Bernardini Senensis opera omnia*, Lugduni, 1650, t. II, p. 323-34.

(2) Cf. ci-dessus, p. 199, n. 20 et note 4.

(3) Sur Thierry de Munster, cf. WADDING, *Script. ord. minor.*, 2^e édit., p. 219; FOPPENS, *Bibl. belg.*, p. 117-18.

(4) Sur ces deux sermons de Pierre Dorland, voir PETREIUS, *Bibl. Carthusiana*, p. 255, n. 29.

41. (F. 360-361). Tractatulus de Enoch et Helya.
42. (F. 361^v-363^v). *Salve reginā* ordinatus per sanctum BONAVENTURAM doctorem seraphicum.
43. (F. 364). Doctrina salutifera a fratre THEODRICO VAN MUNSTER relicta. — En flamand.
44. (F. 364^v). Figura corporis Christi.
45. (F. 365-365^v). Contra celebrantes divina amore luci temporalis.
- Inc.* Qui celebras divina luci seductus amore.
Des. Perpetuo tenebras trudaris in inferiores.
46. (F. 366-366^v). Recommendatio sacerdotum. = *RH.*, n. 21923.
- Inc.* Viri venerabiles sacerdotes Dei.
Des. Induat vos Dominus stolam eternalem. Amen.
47. (F. 366-367^v). Confessio devota pro sacerdotibus secularibus.
48. (F. 367^v-368). Een gheestelicke medecine uten wonden Iesu Christi te putten.
49. (F. 368-371^v). Proverbia, en flamand et en latin.
50. (F. 371^v-372). [SOLINUS. Septem mirabilia mundi manufacta].
51. (F. 372-374^v). Notes diverses en latin et en flamand, entre autres diverses notes historiques et météorologiques intéressant la ville de Bruxelles de 1357 à 1401.
52. (F. 375-377). [Versus] de duodecim salvatoris Christi apostolis per duodecim lapides pretiosos figuratis.
53. (F. 377-378^v). Hymnes diverses, *de martiribus, de quovis martire, de duodecim doctoribus, de virginibus.*
54. (F. 378^v-381^v). De commemoratione septem principalium festorum edidit Pater CAROLUS WILHELMI canonicus regularis in Syon prope Delfum.
55. (F. 381^v-382^v). Dyalogus sepulture Christi contra septem vicia.
56. (F. 382^v-383). Notes diverses.
57. (F. 383). De sancto Gherardo. De venerabili Beda.
58. (F. 383^v). Recettes diverses, entre autres *contra pulices, contra pediculos.*
59. (F. 384-385). SILVESTER DE PRIERIO ordinis Praedicatorum in *Aurea Rosa* de beatissima Maria Magdalena (1).
60. (F. 385-387^v). Aliud exemplum de cadem.
61. (F. 387). [Oratio rythmica ad eandem].
62. (F. 388-390). Tractatus divi CIPRIANI de revelatione capitis beati Iohannis Baptiste. = *BHL.*, n. 4293.
63. (F. 390-402^v). Epistola prohemialis venerabilis patris domni

(1) Cf. QUÉTIF-ECHARD, *Scriptores ordinis praedicatorum*, t. II, p. 55.

PETRI DORLANDI Carthusiensis ad prestantissimum virum domnum Iohannem Delfum primum priorem domus beate Marie Magdalene sub cruce in Lovanio ordinis Carthusiensis in actus mirificos beatissimi Iohannis apostoli et ewangeliste (1).

64. (F. 402^v-421^v). De quatuor heresiarchis ordinis prædicatorum de observantia nuncupatorum apud Suitenses in civitate Bernensi combustis anno Christi M.D.IX (2).

65. (F. 422-423). PETRUS DAMIANUS in laudem sancte crucis. = *PL.*, t. CXLIV, col. 775-77.

66. (F. 423-432). [Vita S. Hieronymi in eremo]. = *BHL.*, n. 3870, mais dans ce volume, cette Vie est précédée d'une pièce de vers.

Inc. Qui fui sacre fidei coruscam

Des. Annuat : supplex pie vota fundam

Tempus in omne.

67. (F. 433-433^v). Vita Iheronymi abbreviata. = *BHL.*, n. 3874.

68. (F. 434-434^v). Translatio corporis gloriosissimi Iheronymi cardinalis presbyteri. = *BHL.*, n. 3878.

69. (F. 435-439). Discensus divi Hieronymi compendio decerptus ex scriptis Eusebii per GERARDUM MORINGUM sacre theologie licentiatum anno 1528 in octobri (3).

Les feuillets 439^v-440^v sont blancs.

70. (F. 441-462). [Chronicon Carthusiae Lovaniensis 1486-1525].

71. (F. 463-463^v). Novum miraculum conscriptum a religioso patre Petro DORLANDO ordinis Carthusiensis professo in Zellem prope Diest.

72. (F. 464-465). Notes diverses. *De sibyllis.*

73. (F. 465-466^v). Vers flamands; sur divers sujets.

74. (F. 466^v-467^v). Vinum cor hominis letificat. — Vers latins.

75. (F. 467^v-468). Proverbes, en latin.

76. (F. 468-470^v). Recettes médicales, en flamand.

77. (F. 471-474^v). Sermo ALCUNI abbatis magistri Caroli magni de undecim oneribus in Isaia descriptis. *Inc.* Tempus est, fratres charissimi, ut misericordiam et iudicium cantemus Domino.

78. (F. 474^v-476^v). Sermo magistri SIMONIS Tornacensis super antiphona *O sapientia* (4).

79. (F. 476^v-477). De venerabili sacramento domini SERLONIS sermo.

(1) Cf. *Biographie nationale*, t. VI, col. 133.

(2) Voir, au sujet de cette pièce et de ses éditions, VON HALLER, *Bibliothek der Schweizer-Geschichte*, t. III, p. 24.

(3) Au sujet de Moringus, voir *Biographie nationale*, t. XV, 1899, col. 272-73, mais cette pièce n'est pas signalée.

(4) Sur Simon de Tournai, voir FOPPENS, *Bibl. belgica*, p. 1102.

80. (F. 477^v-478^v). De decem plagis Egypti SERLONIS abbatis.

81. (F. 478^v-483^v). Divers sermons. = *PL.*, t. LVII, col. 459-62, 375-78, 367-70, puis de S. Michael et de S. Luca.

82. (F. 483^v-485^v). [IOHANNES CHRYSOSTOMUS. De David. De Absalon].

83. (F. 485^v-493). [ODONIS abbatis] sermones de sancto Nycholao, de sancto Andrea, in conversione S. Pauli, in festo beate Marie Magdalene, in cathedra S. Petri, dominica 3^a adventus, in octavis Epiphanie, ad prelatos.

84. (F. 493^v-505). Decem pulcerrime omelie EUSEBII EMISENI episcopi ad religiosos (1).

85. (F. 505-518). Sermons divers.

86. (F. 518-523). Sermo PETRI DAMIANI in exaltatione sancte crucis. = *PL.*, t. CXLIV, col. 761 sqq.

Papier, divers filigranes, la lettre *P*, l'écu de France, le gantelet surmonté d'une fleur, etc.; 523 feuillets; 0^m,29 × 0^m,205; XVI^e siècle (1532), car f. 508, on lit la date : *Anno M^oC^oXXXII^o sexta iulii*. Les feuillets 471-523 sont à deux colonnes; il y a un grand nombre de jolies lettrines; les arbres généalogiques aux feuillets 4-9^v sont coloriés; f. 403, il y a une miniature représentant le supplice de quatre hérétiques. F. 1, il y a la note : *Carthusianorum Lovanii*, puis : *Acheté dans une vente publique à Bruxelles le 1^{er} mai 1812. C. V. H.* L'ex-libris de C. van Hulthem se voit sur le plat intérieur de la couverture (2). Reliure du XVII^e siècle restaurée; veau estampé sur ais de bois; au dos, le titre doré *Manu Scripta* (3).

1224. (II. 931). — PELAGIUS. Verba seniorum.

1. (F. 1^v-96^v). Adhortationes sanctorum patrum perfectionesque monachorum quas de greco in latinum transtulit PELAGIUS dyaconus ecclesie romane. = *BHL.*, n. 6527.

2. (F. 96^v-98). Epistola sancti MACHARI monachi ad filios. = *PL.*, t. CIII, col. 451.

3. (F. 98-100). De patientia Mariac virginis. = *BHL.*, n. 5528.

4. (F. 100-101). Sermo sancti AUGUSTINI episcopi de misericordia. *Inc.* Misericordia, fratres carissimi, peccatorum est remedium.

5. (F. 101-102). Sermo sancti IOHANNIS episcopi Constantinopolitani. *Inc.* Rogat David ut multum ab iniquitate sua lavetur.

6. (F. 102-103). Admonitio sancti AUGUSTINI episcopi ut semper de peccatis nostris ... cogitemus. = *PL.*, t. XXXIX, col. 1963, sermo 110.

7. (F. 103-121^v). Interrogationes et responsiones sanctorum patrum ... quas de greco transtulit MARTINUS episcopus in monasterio Dumienne. = *BHL.*, n. 6535.

(1) Voir *Maxima Bibl. vet. patr.*, t. VI, col. 656-66.

(2) Cf. *Bibliotheca Hulthemiana*, t. VI, manuscrits, 1837, p. 2, n. 3.

(3) Sur ce manuscrit, voir L. Tross, *Magistri Reneri de Bruxella tragodia*, p. 1v.

8. (F. 121^v-131^v). Revelaciones sive miracula que in maiori monasterio contigerunt (1).

9. (F. 131-132). Miraculum de sancto Martino. = *PL.*, t. LXXIX, col. 1036-38.

10. (F. 132^v). Aliud miraculum (2).

Parchemin ; 133 feuillets ; 0^m,105 × 0^m,21 ; XIII^e siècle ; deux colonnes ; quelques letrines rouges et vertes ; signatures I-VI. F. 133, il y a la note : *Liber sancte Marie de Villari* ; f. 1, on voit l'ex-libris de Thomas Phillipps : *Sir T. P. Middle Hill, 323*. Ce manuscrit a été acquis en 1888, pour fr. 40. Reliure moderne, peau de truie estampée, avec l'inscription : *Regia Bibl. Belgica* (3).

1225. (1809). — PELAGIUS. Verba seniorum.

Libri decem et novem de verbis seniorum et sanctorum patrum quos de greco in latinum transtulit PELAGIUS dyaconus ecclesie romane. Extremam vero partem IOHANNES subdyaconus transtulit. = *BHL.*, n. 6527.

Parchemin ; 87 feuillets ; 0^m,27 × 0^m,19 ; XIV^e siècle ; deux colonnes ; initiales rouges et bleues. F. 1, il y a la note : *Est liber iste bibliothecae S. Martini in Lovanio*, et f. 86^v : *Est hic liber bibliothecae S. Martini in Lovanio*. Demi-reliure moderne ; dos en basane fauve, avec le titre doré : *Pelagii diaconi et Ioannis subdiaconi dicta seniorum patrum, XIV^e siècle*.

1226. (8733-35). — PELAGIUS. Verba seniorum.

1. (F. 1). [Vita S. Nicasii]. Fragment.

2. (F. 1^v-2). Table des matières.

3. (F. 2^v). [Compendium vitae S. Albani] (4). — Extrait de la Vie de S. Martin, pape.

4. (F. 3-117). Libri decem et novem de verbis seniorum et sanctorum patrum quos de greco in latinum transtulit PELAGIUS dyaconus ecclesie romane. = *BHL.*, n. 6527.

5. (F. 117^v-120). Ex libris dyalogorum SEVERI et GALLI de vita sancti Martini. = *BHL.*, n. 5614.

6. (F. 120^v-121). Courts extraits des Vies de S. Polycarpe, S. Prix, S. Félix, prêtre, S. Alexandre, évêque.

Papier ; 121 feuillets ; 0^m,215 × 0^m,135 ; XV^e siècle (1423), car on lit, f. 117 : *Scriptum per f. H. de Iul. partim ; finitum anno Domini 1423 XVI die mensis aprilis in profesto palmarum*. Ancienne pagination I-CXXIII, qui passe du f. LXXIX au f. xc. F. 2^v, il y a la note : *Liber monasterii b. Marie in Galilea ordinis canonicorum regularium in Flandria iuxta Aldenardum*. Sur le plat de la reliure, on

(1) Publié dans MABILLON, *Act. SS. O. S. B.*, saec. VII, part. II, p. 391 sqq.

(2) Ce récit a été publié *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. I, p. 242-44.

(3) Ce manuscrit a été décrit *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. II, p. 528.

(4) Cf. *BHL.*, n. 201.

distingue encore le nom d'*Elzeghem* (1). Reliure ancienne, ais de bois recouverts de peau de truie estampée.

1227. (9373). — PELAGIUS. Verba seniorum.

1. (F. 1). Capitula in libro de exhortationibus patrum.
2. (F. 1-82). Adhortationes sanctorum patrum quas PELAGIUS dyaconus ecclesie romane de greco transtulit in latinum. = *PL.*, t. LXXII, col. 851-1022.
3. (F. 82-82v). Prologus et distinctiones praecedentis libri. = *Ibid.*, col. 851.

Parchemin: 82 feuillets; 0^m,37 × 0^m,255; XV^e siècle (1451), car f. 82, on lit la note : *Expliciuunt adhortationes sanctorum patrum translate de greco in latinum a Pelagio ecclesie romane dyacono et Iohanne subdyacono, per me vero fratrem Gerardum de Gingham monachum ad laudem Dei et utilitatem legentium nutu et licentia patris domini domini Henrici Delheherais (2) abbatis .xxvi huius monasterii sancti Laurentii ordinis sancti Benedicti iuxta Leodium, hoc, ut cernitur in volumine, uno die, anno tamen revoluto, exscripto ac finito ab incarnatione Domini milesimo. CCC^o. xli^o. penultimo die Augusti. Unde gracias Deo dicant omnes et singuli unum Ave Maria legendo in recompensationem laboris et remissionem peccaminum, anno administrationis predicti abbatis septimo.* Deux colonnes; initiales rouges et bleues; titre courant en rouge. Reliure veau raciné; au dos, le titre erroné reproduit à l'intérieur sur une étiquette en maroquin rouge : *Aegidius de Roma. Oculus moralis* etc.; en dessous, les armes de Belgique et la note : *Bibl. royale.*

1228. (II. 2571). — CASSIODORUS. In psalmos.

1. F. 1-160v). Expositio CASIODORI viri eximii a quinquagesimo psalmo usque centesimum. = *PL.*, t. LXX, col. 357.
2. (F. 160v-161). ADVENTIUS Mettensis episcopus (3) Arnulfo Leuchorum episcopo.
3. (F. 161). Exemplar libertatis (4).
4. (F. 161-161v). De VII miraculis mundi.
5. (F. 161v). Note sur la fondation du château de Val Richard. "*Anno dominice incarnationis millesimo quingentesimo et vicesimo quarto qui fuit bisextilis in crastino beate Margarete iactata fuerunt prima fundamenta novi castelli supra montem in via vallis Richardi iussu illustris viri domni Wylhelmi de Manderscheit venerandi abbatis Stabulensis et Prumiensis (5), Clemente papa septimo sedem apostolicam tenente, regnante Carolo quinto imperatore, Erardo de la Marcha leodiensi presule. — Ego frater Nicolaus Gerpiniensis scripsi hec. „*

(1) Voir plus haut, p. 187 et 191.

(2) Cf. *Gallia christiana*, t. III, col. 994.

(3) Cf. *PL.*, t. CXI, col. 1141.

(4) Formule de la charte d'affranchissement pour un serf entrant dans le clergé.

(5) *Gallia christ.*, t. III, col. 950.

6. (F. 162-162^v, et les deux feuillets de garde). Fragment d'antiphonaire noté; neumes.

Parchemin; 162 feuillets; 0^m,328 × 0^m,25; X^e siècle. F. 1, il y a la note : *Liber monasterii Stabulensis* (1), et la cote *Phillipps MS. 12350*, et f. 161^v : *Iste liber pertinet monasterio sancti Remacli in Stabulaus*. Ce volume a été acquis par la Bibliothèque royale en 1900. Reliure ancienne, ais de bois recouverts de veau brun estampé; fermoirs en cuivre; au dos, le titre doré : *Cassiodor. in psal. MS.*

1229. (5460-61). — CASSIODORUS. Expositio psalmodum.

1. (F. 1). Lettre d'Alexis, empereur de Constantinople à Robert, Comte de Flandre (2).

2. (F. 1^v-159). CASSIODORI senatoris expositio psalmodum L^{ta}. = *PL.*, t. LXX, col. 25 sqq.

Parchemin; 159 feuillets; 0^m,32 × 0^m,25; X^e siècle; deux colonnes; très belles lettrines. F. 1^v et 159, on lit : *Liber sancti Petri in Gemblus*. Reliure du XVII^e siècle, veau raciné; au dos, le titre doré : *Cassiodor. sup. 110 psa. et caetera* (3).

1230. (15070). — CASSIODORUS. Expositio super psalmos. = *PL.*, t. LXX, col. 25 sqq.

Parchemin; 173 feuillets; 0^m,278 × 0^m,18; XI^e siècle. Ce volume a appartenu à Ch. van Hulthem qui l'avait acquis en 1799 à la vente des livres de l'abbé Mercier de Saint-Léger, bibliothécaire de Sainte-Geneviève, à Paris (4). Demi-reliure; titre doré au dos: *Cassiodori expositio super psalmos X saec.*; en dessous, le chiffre couronné de Léopold I^{er}.

1231. (19693). — CASSIODORUS. Historia tripartita.

1. (F. 1-175). CASSIODORI senatoris ecclesiastica hystoria. = *PL.*, t. LXIX, col. 421 sqq.

2. (F. 175-175^v). Quomodo Constantinus sit a lepra mundatus.

3. (F. 175^v-177^v). De consignatione septiformis Spiritus sancti adhibita Constantino per Silvestrum papam.

4. (F. 177^v-179). [Elenchus provinciarum ecclesiasticarum].

5. (F. 179-181^v). Cathalogus pontificum romanorum.

Parchemin; 181 feuillets, plus cinq de garde; 0^m,34 × 0^m,235; XII^e siècle; deux colonnes; jolies capitales; initiales rouges et vertes; signatures XI-XXIII. F. 1, on lit :

(1) Cf. TH. GOTTLIEB, *Ueber Mittelalterlichen Bibliotheken*, p. 286, n. 69; *Catalogue d'une belle collection de livres*, Gand, 1847, p. 25, n. 271.

(2) Sur les diverses éditions de cette lettre, voir *Archives de l'Orient latin*, t. I, p. 72.

(3) Au sujet de ce manuscrit, voir *Compte rendu des séances de la Commission royale d'histoire*, 2^e série, t. XI, p. 440.

(4) Cf. *Bibliotheca Hulthemiana*, t. VI, p. 5, n. 16.

Bibliothecae Aureaevallis; f. 181^v; *Liber beate Marie Aureaevallis, qui eum abstulerit anathema sit*; sur le premier feuillet de garde : *Don de Dom Arsene Religieux à M^r le Baron d'Howard 1835*. Au verso de la couverture, le b^{on} de Reiffenberg a inscrit la note suivante : *Manuscrit de Cassiodore provenant de l'abbaye d'Orval acheté 150 francs à M. le baron d'Huart, en vertu d'une autorisation ministérielle du 15 juin 1849, S. Div. n^o 4862*. Reliure veau raciné sur ais de bois; au dos, le titre doré : *Historia ecclesiast. Cassiodo. M. S. S.*

1232. (II. 1061). — CASSIODORUS. *Historia tripartita*.

1. (F. 1^v-151). CASSIODORI senatoris XII libri ecclesiastice sive tripartite historie. = *PL.*, t. LXIX, col. 421 sqq.

2. (F. 151-184^v). *Egregia contra Arrianum, Sabellium et Fotinum altercatio quam Vigilius nomine Athanasii quasi coram ipsis hereticis disputando edidit*. = *PL.*, t. LXII, col. 179 sqq.

Parchemin; 184 feuillets; 0^m,317 × 0^m,225; XIII^e siècle; lettrines très élégantes, initiales rouges et vertes. Ce volume provient de l'abbaye d'Alne; plus tard, il a été le n. 4641 de la collection de Sir Thomas Phillipps; la Bibliothèque royale l'a acquis en 1888. Demi-reliure, toile anglaise, au dos le titre doré : *Cassiodori historia tripartita per Epiphanium scilicet Sozomenes, Socrates et Theodoretus*.

1233. (655-56). — CASSIODORUS, AUGUSTINUS. *Historia tripartita, Liber confessionum*.

1. (F. 1-131). *Historia tripartita CASSIODORI senatoris*. = *PL.*, t. LXIX, col. 421 sqq.

2. (F. 132-211). *Liber confessionum beati AUGUSTINI episcopi*. = *PL.*, t. XXXII, col. 660 sqq.

Parchemin et papier au filigrane de l'ancre; 211 feuillets; 0^m,295 × 0^m,205; XV^e siècle (1447), car f. 211, on lit : *Explicit liber confessionum beati Augustini episcopi, finitus anno Domini M^occcc^oxxvij^o die 2^a mensis maii in profesto inventionis sancte Crucis hora quasi secunda post prandium per quendam cruciferum cuius nomen scribatur in libro vite. Qui utitur eo oret pro anima eiusdem vilis scriptoris propter Ihesum crucifixum et eius piissimam matrem. Deo gracias*. Deux colonnes, titre courant; signatures a1-l6. Sur une étiquette placée en tête du volume, on lit : *Istud volumen pertinet ecclesie fratrum ordinis sancte crucis in Namurco*. Reliure ancienne, veau brun estampé.

1234. (19118). — CASSIODORUS. *Historia tripartita*. = *PL.*, t. LXIX, col. 421 sqq.

Parchemin; 210 feuillets; 0^m,295 × 0^m,21; XV^e siècle; quelques belles capitales en toutes couleurs rehaussées d'or; initiales rouges et bleues; titre courant en rouge; le premier feuillet est enguirlandé. Ce volume a été acheté, en juillet 1843, à M. Van Meenen, président de la Cour de cassation, pour fr. 400. Reliure très curieuse du XV^e siècle; ais de bois recouverts de veau estampé, très jolis fers; restes de fermoirs en cuivre.

1235. (11196-97). — S. GREGORIUS MAGNUS. Registrum.

1. (F. 1-10). [BENONIS aliorum]mque cardinalium schismaticorum contra Gregorium VII et Urbanum II [scripta] (1).

2. (F. 10). [De obitu Gregorii VII] (2).

3. (F. 10-10^v). Ex decretis Nicolai pape. = *PL.*, t. CXIX, divers extraits.

4. (F. 10^v-84). Epistole ex registro domni GREGORII. = *PL.*, t. LXXVII. Nous donnons l'ordre des quarante premières lettres (f. 10^v-15^v) : lib. VIII, 1, 3 ; lib. IX, 11 ; lib. VIII, 4, 6-9, 5, 10-12, 28, 13-16, 18, 20-29, 30, 31-35 ; lib. X, 49 ; lib. IX, 4, 57, 58, 12, 59, 14, 13.

Les deux feuillets de garde contiennent des fragments, du IX^e siècle, du rituel du baptême.

A la couverture sont accolés des fragments d'un traité de droit canon, en parchemin, du XIV^e siècle.

Parchemin ; 84 feuillets ; 0^m,268 × 0^m,185 ; XII^e siècle ; deux colonnes. F. 1, il y a la note : *Iste est liber hospitalis sancti Nicolai prope Cusam*. Au revers de la couverture et du premier feuillet de garde, ainsi que f. 1, il y a l'ex-libris de la bibliothèque des anciens bollandistes * *MS. 119*. La reliure, couverture souple se rabattant, est ornée d'un curieux estampage avec fer représentant S. Augustin (3).

1236. (5408-11). — S. GREGORIUS MAGNUS. Epistolae.

1. (F. 1^v). Sermo beati GREGORII pape ad populum. = *PL.*, t. LXXXVI, col. 1311-14.

2. (F. 1^v-2). Symbolum fidei a beato Gregorio papa dictatum. = *PL.*, t. LXXVII, col. 1327.

3. (F. 2-175). [Registrum epistolarum Gregorii]. = *Ibid.*, col. 443-1289, depuis lib. I, ep. 2 jusqu'à lib. XIII, ep. 39 (4).

4. (F. 175-181). Vita sive transitus sancti Gregorii pape qui est quarto idus marcii. = *BHL.*, n. 3640.

5. (F. 180-183). [Office de S. Grégoire], écrit sous portée à quatre lignes, mais les notes manquent.

Les feuillets 183^v-184 sont blancs.

6. (F. 184^v-185^v). Fragment de chronique concernant l'abbaye de Gembloux] (5).

(1) Publié par K. FRANCKE, *MG.*, *Libelli de lite*, t. II, 1893, p. 369-422. — Sur les nombreuses éditions de la compilation de Beno, voir POTTHAST, *Bibl. hist. med. aevi*, 2^a ed., t. I, p. 146.

(2) *Ibid.*, p. 422.

(3) Ce manuscrit a été souvent décrit, par exemple, *Archiv.*, t. VII, p. 872-75; JAFFÉ, *MG.*, *Libelli de lite*, t. II, p. 366-67.

(4) Cf. EWALD, *Studien zur Ausgeb. des Registers Gregors I*, dans *NEUES ARCHIV*, t. III, p. 461.

(5) Publié par A. WAUTERS, *Compte rendu des séances de la Commission royale d'histoire*, 4^e série, t. II, p. 259-73.

Parchemin; 185 feuillets; 0^m,315 × 0^m,23; XIII^e siècle; deux colonnes; quelques letrines; signatures 1-xxi. F. 1, on lit : *Liber monasterii Gemblacensis*. Reliure du XVII^e siècle; veau raciné; au dos, le titre doré : *Epistolae B. Gregorii Papae*; tranche rouge (1),

1237. (2517). — S. GREGORIUS PAPA. Registrum epistolarum.

1. (F. 1^v-10^v). Capitula libri registri epistolarum.
2. (F. 11-138). [Registrum epistolarum]. = *PL.*, t. LXXVII. Voici l'ordre des vingt premières lettres : lib. VIII, 1-3; lib. IX, 11; lib. VIII, 6-12, 28, 13-16, 18, 20-22.

Parchemin; 138 feuillets; 0^m,205 × 0^m,135; XIII^e siècle. F. 1, on lit la note : *Liber monasterii regularium vallis sancti Martini in Lovanio*. L'estampille rouge, *R. F.*, de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f.2 et f.138. Demi-reliure moderne, dos en maroquin rouge; titre doré : *Bⁱ Gregorii papae. Registrum epistolarum, VI^e (sic) siècle*; plus bas, le monogramme couronné du roi Léopold I^{er}.

1238. (292). — S. GREGORIUS MAGNUS. Epistolae.

1. (F. 1-2^v). Fragment d'antiphonaire, office de S. Lambert.
2. (F. 3-7^v). Tabula registri beati GREGORII pape.
3. (F. 7^v). De pallio. — Extrait.
4. (F. 8-8^v). De laude, vita et gloria beatissimi ac gloriosissimi Gregorii pape urbis Rome.
5. (F. 9). De letaniis quas instituit contra pestilentias et plagas mortis. = *PL.*, t. LXXVI, col. 1311-14.
6. (F. 9^v). Symbolum fidei dictatum a beato papa GREGORIO. = *PL.*, t. LXXVII, col. 1327-29.
7. (F. 9^v-115^v). Registrum beati GREGORII pape urbis Rome. — Nous donnons l'ordre des vingt premières lettres. *PL.*, t. LXXVII, lib. I, nn. 2-6, 28, 7, 21, 23, 22, 26, 27, 32, 34, 49, 25, 43; lib. IX, 121; lib. V, 49; lib. IX, n. 122.
8. (F. 115^v). Note sur les travaux liturgiques de S. Grégoire.

Parchemin; 115 feuillets, plus trois de garde; 0^m,375 × 0^m,245; XV^e siècle (1462), car on lit, f. 115^v : *Explicit Registrum beatissimi Gregorii pape urbis Rome, scriptum ac finitum in Korsendonck anno Domini M^o quadringentesimo sexagesimo secundo, XIX^o die maij post prandium circa horam secundam, per fratrem Walterum de Vliet de Rethy conventualem dicti monasterii* (2). *Unde laudetur Deus benedictus in secula. Amen.* et plus loin : *Oretis pro scriptore, o dilectissimi patres et fratres*. Deux colonnes; initiales rouges et bleues; signatures. La cote *W. 4* de Corsendonck se trouve au verso de la couverture et f. 1^v, et l'estampille rouge,

(1) Sur ce manuscrit, voir *Bulletin de l'Académie royale de Belgique*, 1^{re} série, t. IX, p. 440; *Compte rendu des séances de la Commission royale d'histoire*, tom. cit., p. 249-50; *Neues Archiv*, t. III, p. 461; *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. I, p. 515-16.

(2) Cf. J. VAN DEN GHEYN, *L'Obituaire du prieuré de Corsendonck*, p. 36, au 31 août.

R. F., de la Bibliothèque nationale de Paris, f. 9 et 115^v. Demi-reliure moderne; dos en peau de chamois; sur le plat, l'ancienne étiquette : *Registrum beati Gregorii pape in Korssendonck* (1).

1239. (1555-56). — S. GREGORIUS MAGNUS PAPA. Epistolae.

1. (F. 2-2^v). [Sermo de mortalitate]. = *PL.*, t. LXXVI, col. 1311-14.
2. (F. 2^v). Symbolum fidei dictatum a beato GREGORIO papa. = *PL.*, t. LXXVII, col. 1327-29.

3. (F. 2-171). Beati pape GREGORII registrum. = *PL.*, t. LXXVII. — L'ordre des vingt premières lettres est le même que celui du volume précédent.

4. (F. 171^v-173^v). Ratio prima beati AUGUSTINI episcopi quare caro concupiscit adversus spiritum et spiritus adversus carnem ... Ratio secunda. = *PL.*, t. XXXVIII, col. 814-823, sermo CLI et CLII.

Papier, aux filigranes de l'écu de France et de la lettre *P*; 173 feuillets; 0^m,287 × 0^m,203; deux colonnes; XV^e siècle (1485), car f. 171, on lit : *Explicit registrum beatissimi Gregorii pape anno Domini 1485, in vigilia epyphanie infra secundam et terciam horas post meridiem. Deo gratias. Nomina scriptorum eterne in vite scribuntur libro.* Ancienne pagination en rouge 1-lvi; signatures *a-s*, F. 1, il y a cette note : *Hoc volumen pertinet monasterio fratrum ordinis sancte crucis in Namurco. Servanti benedictio.* L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 2 et f. 173^v. Demi-reliure moderne; dos en maroquin brun avec le titre doré : *Bi Gregorii registrum anno 1485*; en dessous, le chiffre couronné de Léopold I^{er}.

1240. (II. 2567). — S. GREGORIUS MAGNUS. Moralia in Iob.

1. (F. 1). Diplôme de Charlemagne en faveur de l'église d'Aix-la-Chapelle. *Inc.* Ego Karolus qui, Deo favente, curam regni gero et Romanorum imperator existo, consilio principum regni nostri, episcoporum.

2. (F. 1^v-99^v). [GREGORIUS MAGNUS. Libri V sententiarum]. = *PL.*, t. LXXX, col. 731.

3. (F. 101-234). Sancti celeberrimique ecclesie doctoris GREGORII in Iob pars secunda quinque libros continens. = *PL.*, t. LXXV, col. 729 sqq.

Parchemin; 234 feuillets; 0^m,34 × 0^m,25; IX^e siècle, sauf les feuillets 1, 101, 227-234 qui sont de différentes époques (XI^e à XV^e siècle). F. 1, il y a la note : *Liber monasterii Stabulensis* (2); plus tard, ce volume a eu, dans la collection Philipps, la cote 12351. Ce volume a été acquis par la Bibliothèque royale en 1900. Reliure ancienne, fort endommagée, veau estampé à la fleur de lis, sur ais de bois; restes de fermoirs en cuivre; au dos, le titre doré : *Capituli in lib. S. Greg. MS.*

(1) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 54.

(2) Cf. TH. GOTTLIEB, *Ueber Mittelalterlichen Bibliotheken*, p. 285; *Catalogue d'une belle collection de livres*, Gand, mars 1847, p. 24, n. 267.

1241. (3379-80). — S. GREGORIUS PAPA. *Moralia in Iob.*

1. (F. 1 et 126^v). HIERONYMUS contra Iovinianum. = *PL.*, t. XXIII, col. 211 sqq.
2. (F. 1^v-2^v). HIERONYMUS ad Marcellam de muneribus, ad Emomenses virgines, ad Asellam. = *PL.*, t. XXII, col. 480, 344, 480-84.
3. (F. 3-97^v). Pars secunda *Moralium* GREGORII in expositione beati Iob. = *PL.*, t. LXXV, col. 729 sqq.
4. (F. 98-108). Liber IHERONIMI ad Eustochium de virginitate servanda. = *PL.*, t. XXII, col. 394-425.
5. (F. 108^v-112^v). Epistola sancti IHERONIMI ad Furiam de viduitate servanda. = *Ibid.*, col. 550-60.
6. (F. 112^v-126). HIERONYMI epistolae. = *Ibid.*, nn. 79, 107, 130, 24, 25.
7. (F. 126). Hymne. *Inc.* Lux solaris, stella maris.
8. (F. 126^v). De libro HIERONIMI contra Iovinianum. — Court extrait.

Parchemin; 112 feuillets; 0^m,32 × 0^m,22; XII^e siècle; deux colonnes; très belles lettrines en toutes couleurs. F. 2, on lit : *Forestum*, et f. 126^v : *Iste liber est dominarum de Forest.* Reliure ancienne restaurée, peau de truie estampée.

1242. (20034). — S. GREGORIUS MAGNUS. *Moralia in Iob.*

1. (F. 1-183^v). Libri moralium beati GREGORII pape urbis Rome in libro sancti Iob. Lib. XI-XIX. = *PL.*, t. LXXV, col. 953 - t. LXXVI, col. 136.
2. (F. 184-185^v). Office noté de S. Grégoire le Grand.

Parchemin; 185 feuillets; 0^m,34 × 0^m,24; XII^e siècle; deux colonnes; titre courant en rouge; signatures I-XXIII; jolies initiales en diverses couleurs. F. 183^v, on lit : *Liber sancte Marie de Villari.* Reliure du XVIII^e siècle, veau; au dos, le titre doré : *B. Grego. in Iob.*

1243. (II. 939). — S. GREGORIUS MAGNUS. *Moralia in Iob.*

1. (F. 1^v-161). [B. GREGORII papae moralium in Iob libri I-X]. = *PL.*, t. LXXV, col. 509-952.
2. (F. 161-161^v). Visio TAIONIS Cesaraugustani episcopi de meritis S. Augustini et de libris moralium beati papae Gregorii. = *BHL.*, n. 3647.

Parchemin; 161 feuillets; 0^m,397 × 0^m,265; XII^e siècle; superbes lettrines; très jolies initiales en toutes couleurs. F. 1 et sur le second plat intérieur, on lit : *Liber sancte Marie de Camberone* (1). L'inscription de *Camberone* est souvent répétée au bas des pages. Sur le premier plat intérieur, il y a l'ex-libris : *Sir T. P. Middle Hill, 333.* Ce manuscrit a été acheté par la Bibliothèque royale en 1888, pour fr. 100. Reliure ancienne, ais de bois recouverts de peau de truie.

(1) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. I, p. 355.

1244. (5541-42). — S. GREGORIUS MAGNUS. *Moralia in Iob.*

1. (F. 1-121). *Moralia GREGORII in expositione beati Iob per contemplationem sumpta. Pars III, libr. VI.* — Les livres XI-XXII. = *PL.*, t. LXXVI, col. 9-250.

2. (F. 121). [Epistola presbyteri Iohannis] (1).

Parchemin; 121 feuillets; 0^m,34 × 0^m,245; XII^e siècle; deux colonnes; au début, initiale ornée. F. 1 et f. 120^v, on lit : *Liber sancti Petri in Gemblus*. Reliure du XVII^e siècle, veau raciné; au dos, le titre doré : *Moralia B. Greg. in ex. B. Iob.*

1245. (5562). — S. GREGORIUS MAGNUS. *Moralia in Iob.*

Moralia beati Gregorii pape in expositione beati Iob pars quinta. — Liber XXIII ad finem. = *PL.*, t. LXXVI, col. 250-782.

Parchemin; 147 feuillets; 0^m,348 × 0^m,262; XII^e siècle; deux colonnes; au début, belle initiale ornée; titre courant. F. 1 et f. 14^v, il y a la note : *Liber sancti Petri in Gemblus*. Reliure du XVII^e siècle, veau raciné; au dos, le titre doré : *Moralia B. Gr. in exp. B. Iob. P. 5*; tranche rouge.

1246. (9849). — S. GREGORIUS MAGNUS. *Moralium in Iob libri I-V.*

1. (Feuillet de garde, en tête du volume). Lettre de Nicolas étudiant à Bois-le-Duc, à Thierry, moine de Saint-Laurent, à Liège.

1. (F. 1-81). [S. GREGORIUS. *Moralia in Iob*]. = *PL.*, t. LXXV, col. 510-730.

Parchemin; 81 feuillets; 0^m,292 × 0^m,19; deux colonnes. Ce volume provient de Saint-Laurent à Liège, car f. 1, il y a de cette bibliothèque les deux anciennes cotes *LL 5-13* et *MM 2-4*. L'estampille rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 1 et f. 81^v. Reliure moderne, veau raciné, aux armes de Belgique et à l'inscription : *Bibl. royale*; au dos, le titre doré reproduit à l'intérieur sur une étiquette de maroquin rouge : *S. Gregorii moralium in Iob lib. I-V.*

1247. (9726). — S. GREGORIUS MAGNUS. *Moralia in Iob.*

Secunda pars moralium sancti GREGORII beatissimi pape super Iob. Que secunda pars in inicio tenet sextum volumen predictorum librorum. = *PL.*, t. LXXV, col. 730-954.

Parchemin; 119 feuillets; 0^m,31 × 0^m,23; X^e siècle, sauf les feuillets 1 et 119 ajoutés au XV^e siècle; deux colonnes. Le volume provient de Saint-Laurent à Liège; f. 1, il y a la cote *LL, 5-12* de cette bibliothèque. Reliure moderne, veau raciné, aux armes de Belgique, et avec l'inscription *Bibl. royale*. Au dos, le titre doré reproduit à l'intérieur du volume sur une étiquette en maroquin rouge : *Gregorii Moralium in Iob libr. VI-X. XII saec.*

1248. (10819). — S. GREGORIUS MAGNUS. *Moralia in Iob.*

Libri XII-XVI. = *PL.*, t. LXXV, col. 985-1162.

(1) Cf. FRED. ZARNCKE, *Commentatio de epistola quae sub nomine presbyteri Iohannis fertur*, Lipsiae, 1873.

Parchemin; 91 feuillets; 0^m,267 × 0^m,19; XII^e siècle; deux colonnes, quelques lettrines; signatures I-VIII. F. 1, il y a la cote *MM*, 2-7 et la note : *Liber sancti Laurentii extra muros Leodienses*, l'estampille rouge, *R.F.*, de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 1^v et f. 91^v. Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré reproduit à l'intérieur du volume sur une étiquette en maroquin rouge : *Gregorii moralium in Iob. Libr. XII-XVI, XII saec.*; en dessous, les armes de Belgique et l'inscription *Bibl. royale*.

1249. (10820). — S. GREGORIUS MAGNUS. *Moralia in Iob.*

Libri XVII-XXII. = *PL.*, t. LXXXVI, col. 9-250. *Inc. mutil.* ... dare Deus nequaquam proprie dicitur. *Des. mutil.* quando faciat ac si frumentum....

Parchemin; 127 feuillets; 0^m,266 × 0^m,19; XII^e siècle; deux colonnes; quelques lettrines. Le volume provient de Saint-Laurent à Liège; f. 1, il y a la cote *MM*, 2-8. Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré reproduit à l'intérieur sur une étiquette en maroquin rouge : *Greg. moralium in Iob, libr. XVII-XXII, XII saec.*; plus bas, les armes de Belgique et l'inscription : *Bibl. royale*.

1250. (21849). — S. GREGORIUS MAGNUS. *Moralia in Iob.*

Pars prima moralium beati GREGORII in Iob. Lib. I-V. = *PL.*, t. LXXV, col. 509-660.

Parchemin; 126 feuillets; 0^m,275 × 0^m,193; XIII^e siècle; deux colonnes; quelques lettrines fort élégantes; signatures I-XV. F. 126, on lit : *Liber sancte Marie de Parco. Si quis abstulerit anathema sit*; au verso de la couverture, la cote *I. theca IX* et l'ex-libris : *Ex bibliotheca P. P. C. Lammens*. Ce volume a été acquis en 1863 à la vente des livres de Van Alstein à Gand pour fr. 154. Reliure veau; au dos, le titre doré : *Gregor. moralium. Pars I*; tranche rouge.

1251. (21850). — S. GREGORIUS MAGNUS. *Moralia in Iob.*

1. (F. 1). *Contenta.*
2. (F. 1^v-132^v). *Beati GREGORII pape urbis Rome pars tertia moralium in Iob. Lib. XI-XVI.* = *PL.*, t. LXXV, col. 953-1162.
3. (F. 133-133^v). *Ex decretis pape EUGENII (1).*
4. (F. 133^v). *Ex concilio Remensi sub Eugenio papa (2).*
5. (F. 134). [*INNOCENTII papae epistolae*]. = *PL.*, t. CLXXIX, nn. 305, 342^{bis}, 336.

Parchemin; 134 feuillets; 0^m,278 × 0^m,195; XIII^e siècle; deux colonnes; quelques jolies lettrines; signatures A-Q. F. 133^v, il y a la note : *Liber sancte Marie de parco. Si quis abstulerit, anathema sit*, et au verso de la couverture la cote *I. theca IX*; les armoiries de l'abbaye de Parc sont grattées sur les deux plats. Ce volume a été acquis par la Bibliothèque royale en 1863. Reliure veau; au dos, le titre doré : *Gregor. Moralium. pars III*; tranche rouge.

(1) Voir MANSI, *Sacrorum conciliorum nova collectio*, t. XXI, Venetiis, 1776, col. 713-18.

(2) *Ibid.*, col. 712-13.

1252. (21851). — S. GREGORIUS MAGNUS. *Moralia in Iob.*

Pars quarta moralium beati GREGORII papae, expositio in Iob. Lib. XVII-XXII. = *PL.*, t. LXXVI, col. 9-250.

Parchemin; 119 feuillets; 0^m,277 × 0^m,194; XIII^e siècle; deux colonnes. Quelques letrines, signatures 1 à XIII; f. 1, on lit : *Bibliothecae Parcensis*, et la cote *I. theca IX* de cette bibliothèque se trouve au verso de la couverture; les armoiries sont grattées sur les deux plats. Reliure veau; au dos, le titre doré : *Grego. Moral. pars IV*; tranche rouge.

1253. (21852). — S. GREGORIUS MAGNUS. *Moralia in Iob.*

Beati GREGORII in Iob pars quinta. Lib. XXIII-XXIX. = *PL.*, t. LXXVI, col. 249-522.

Parchemin; 132 feuillets; 0^m,277 × 0^m,194; XIII^e siècle; deux colonnes; quelques jolies letrines en toutes couleurs rehaussées d'or; signatures 1-xvi. F. 132^v, il y a la note : *Liber sancte Marie in Parcho, si quis eum ab ecclesia alienaverit anathema sit.* Au verso de la couverture, la cote *I. theca IX*, et sur les plats les armoiries ont été grattées. Reliure veau; au dos, le titre doré : *Gregor. Moralium. pars V*; tranche rouge.

1254. (21853). — S. GREGORIUS MAGNUS. *Moralia in Iob.*

Pars sexta moralium Iob beati GREGORII pape. Lib. XXX usque ad finem. = *PL.*, t. LXXVI, col. 521-782.

Parchemin; 109 feuillets; 0^m,277 × 0^m,194; XIII^e siècle; deux colonnes; les letrines ont été découpées; signatures A-N. F. 109^v, il y a la note : *Liber sancte Marie de Parco, si quis eum abstulerit anathema sit. Amen, fiat, fiat.* Au verso de la couverture, il y a la cote *I. theca IX*; les armoiries de l'abbaye ont été grattées sur les plats. Reliure veau; au dos, le titre doré : *Gregor. Moral. pars VI.*

1255. (390). S. GREGORIUS MAGNUS. *Moralium libri I-X, cap. xxxi.*

Inc. Incipit prologus sancti Gregorii pape in libro Iob ad Leandrum episcopum. Reverendissimo et sanctissimo fratri Leandro coepiscopo Gregorius servus servorum Dei. Dudum te frater beatissime. Des. mutil. et tanto tunc durius distriktionem exerit, quanto = *PL.*, t. LXXV, col. 509-952.

Les f. 1 et 22, feuillets de garde à la fin du volume, renferment des fragments d'un commentaire sur les *Décrétales*.

Parchemin; 243 feuillets, plus un de garde; 0^m,335 × 0^m,22; XIII^e siècle; deux colonnes; quelques initiales bleues et rouges. F. 2, une miniature représente S. Grégoire; au haut du même feuillet, il y a la note : *De Molinis prope Boviniam* (1). Reliure ancienne restaurée, veau brun estampé.

(1) C'est l'abbaye cistercienne de Moulin. Voir JANAUSCHEK, *Origines Cisterciensis*, p. 274.

1256. (II. 1080). — S. GREGORIUS MAGNUS. *Moralia in Iob.*

1. (F. 1-3). *Capitula.*
2. (F. 3^v-155^v). GREGORIUS papa. *Moralia in Iob. Lib. I-VIII.* = *PL.*, t. LXXV, col. 509-859.
3. (F. 156-156^v). [Visio Taionis]. = *BHL.*, n. 3647.

Parchemin; 156 feuillets; 0^m,345 × 0^m,237; XIII^e siècle; deux colonnes; les feuillets 1-3 sont à trois colonnes; très jolies lettrines; capitales rouges, bleues et vertes. F. 156, on lit : *Liber sancte Marie de Aina*, et f. 1, la cote 4661 *Ph.* La Bibliothèque royale a acquis ce volume en 1888. Demi-reliure, toile anglaise; au dos, le titre doré : *S. Gregorius in Iob.*

1257. (II. 1094). — S. GREGORIUS MAGNUS. *Moralia in Iob. Lib. VIII-XVIII.*

Inc. mutil. [duplici]tatis instigarent. (Lib. VIII, cap. 49). = *PL.*, t. LXXV, col. 854 - t. LXXVI, col. 94.

Parchemin; 168 feuillets; 0^m,34 × 0^m,235; XIII^e siècle; deux colonnes; superbes lettrines; initiales rouges, bleues et vertes. F. 168, il y a la note : *Liber sancte Marie de Aina*; et f. 1, la cote 4675 *Ph.* Ce volume a été acquis par la Bibliothèque royale en 1888. Demi-reliure, toile anglaise; au dos, le titre doré : *Gregorius P. in Iob.*

1258. (239). — GREGORIUS MAGNUS. *Moralium in Iob libri I-X, cap. 31.*

Inc. mutil. (à cause de l'initiale enlevée) et sanctissimo fratri Leandro coepiscopo, Gregorius servus servorum Dei. *Des. mutil.* quia uniuscuiusque iusti anima velut abiecta contempnitur cum degens.... = *PL.*, t. LXXV, col. 510-951 (n. 364).

Parchemin; 132 feuillets; 0^m,45 × 0^m,285; XIII^e siècle; deux colonnes; titre courant en rouge; signatures A, B, C, D...; quelques jolies lettrines, par exemple f. 87 et f. 123; les autres ont été coupées; plusieurs feuillets sont lacérés. F. 1, on lit : *Monasterii Heylesemensis* (1). Reliure moderne, peau de truie estampée; sur le plat, l'inscription : *Regia Bibl. Belgica.*

1259. (229-30). — GREGORIUS MAGNUS. *Moralium libri XXIII ad finem.*

1. (F. 1-154). *Beati GREGORII in Iob, pars quinta et sexta.* = *PL.*, t. LXXVI, col. 249-782.

2. (F. 155-162^v). *Libellus de semine scripturarum. Inc. Quaesio te, o lector, huius opusculi. Des. mutil.* quod in apocalypsi legimus signum magnum apparuit in celo. Mulier amicta sole et l. s. p. eius et in ca. eius co. stell. XII.

(1) Il y avait à Heylisseem une abbaye de Prémontrés.

Parchemin; 162 feuillets; 0^m,43 × 0^m,295; XIII^e siècle; deux écritures différentes; deux colonnes; quelques belles lettrines; titre courant cxxxii-cxli à l'encre rouge. F. 1, il y a la note de provenance : *Monasterii Heylesemensis*. Reliure ancienne restaurée, veau brun estampé.

1260. (8258-60). — S. GREGORIUS MAGNUS. *Moralia in Iob.*

1. (F. 1-87). *Tertia pars moralium beati GREGORII pape in libro Iob.* = *PL.*, t. LXXV, col. 954 sqq.

Les feuillets 87^v et 88 sont blancs.

2. (F. 88^v-179^v). *Pars quinta moralium, expositio GREGORII in Iob.* = *PL.*, t. LXXVI, col. 249 sqq.

3. (F. 179^v-184). *Sermo BERNARDI abbatis de muliere amicta sole.* = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 429-38.

4. (F. 184^v-187). *Sermo [S. BERNARDI] de adventu Domini.* = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 35-40.

5. (F. 187-188). [*Sermo S. BERNARDI de adventu Domini*]. = *Ibid.*, col. 40-43.

6. (F. 188-204). *Liber de conflictu viciorum atque virtutum AUDEBERTI et AMBROSII presbiteri.* = *PL.*, t. XL, col. 1091.

7. (F. 204-209^v). *Incipit liber YSIDORI soliloquiorum in quo loquuntur ratio et homo.* = *PL.*, t. LXXXIII, col. 827 sqq.

Parchemin; 209 feuillets; 0^m,275 × 0^m,185; XIII^e siècle; deux colonnes; très belles lettrines; signatures 1-x. F. 87, on lit la note : *Liber sancte Marie Tungerlensis ecclesie. Si quis cum abstulerit anathema sit.* Demi-reliure moderne; dos en maroquin rouge avec les titres des différents traités.

1261. (7875). — S. GREGORIUS MAGNUS. *Moralium libri sive expositio in librum Iob.*

Pars sexta moralium Iob. Liber XXX^{us} beati GREGORII pape. = *PL.*, t. LXXVI, col. 522-782.

Sur les plats, fragments d'un traité de droit canonique.

Parchemin; 98 feuillets; 0^m,315 × 0^m,23; XIII^e siècle; deux colonnes; belles lettrines. F. 1, on lit : *Liber sancte Marie in Tungerlo. Quicumque abstulerit anathema sit, 1500*, et en dessous : *Bibliothecae Tongerloensis*. Reliure du XVII^e siècle; veau brun estampé; au dos, le titre doré : *B^e Gregorii moralium in Iob, XIII^o sacc.*

1262. (2512). — S. GREGORIUS MAGNUS. *Excerpta ex libris Moralium super Iob.*

1. (F. 1^v-2). Table des matières.

2. (F. 2^v-144). Extraits des *Moralium super Iob*, divisés en six livres d'après les rubriques suivantes : *Primus quidem de virtutibus continet. XXI. capitula. Secundus liber de octo principalibus vitiis continet. XXIII. capitula. Tercius de virtutibus electorum et temptatio-*

nibus continet. XXII. capitula. Quartus de flagellis Dei et temptatibus dyaboli continet. XIII. capitula. Quintus de peccatoribus et misericordia Dei continet. XIX. capitula. Sextus vero et ultimus de iudicio et de penis reprobatorum continet. XXIII. capitula.

3. (F. 144^v-150). Excerpta *Moralium* beati GREGORII super Iob. = *PL.*, t. LXXV, passim.

4. (F. 150-156). De expositione littere super illud *Egressus est Satan etc.* = *Ibid.*, col. 565 sqq.

Parchemin; 156 feuillets; 0^m,215 × 0^m,145; XIV^e siècle. F. 2^v, une miniature représente S. Grégoire prêchant; écriture fort soignée; jolies initiales rouges et bleues; signatures I-XIII. F. 1^v, il y a la note : *Bibliothecae Nizellensis* (1). L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris, *R.F.*, se trouve f. 2 et f. 156^v. Reliure ancienne très élégante, veau brun estampé, jolis fers.

1263. (3264). — S. GREGORIUS MAGNUS. *Moralia in Iob.* = *PL.*, t. LXXV, col. 510-1162.

Papier, au filigrane de la tête de bœuf surmontée de la croix; de-ci de-là un feuillet en parchemin; 413 feuillets; 0^m,297 × 0^m,21; XV^e siècle, car f. 28, on lit : *1452, Cecilie festo*; f. 57 : *1452, 2 decembris*; f. 101^v : *1452 decembris*; f. 135^v : *1452, octava epiphanie*; f. 156^v : *1452, 53 ianuarii*; f. 180 : *1452 ultima die ianuarii*; f. 217^v : *1452, 14 febr.*; f. 256^v : *1452, 26 febr.*; f. 279 : *1452, septima die martii*; f. 300 : *1452, 13 martii*; f. 321 : *1452, 15 die martii*; f. 336^v : *1452, die Gertrudis*; f. 363 : *1452, 23 marcii*; f. 389 : *1452, 27 marcii, 3^a feria ante Parascheve*, et f. 412^v : *Scriptit magister Wilhelmus Scelken ad usum venerabilis magistri sui et domni magistri Iohannis Revens baccarii formati sacre theologie quos finivit anno Domini 1453, 18 die may, videlicet sexta feria ante penthecosten. W † S. Hette finiit Scelken, cor hoc meror alget.* F. 1, on lit : *Franciscus Schuermannus est dominus et possessor meus. Collegium Societatis Iesu Lovaniense.* Reliure ancienne restaurée, ais de bois recouverts de veau estampé; traces de fermoirs; dos en maroquin brun avec le titre doré : *Gregorii magni moralia in Iob anno 1473 (sic).*

1264. (144). — S. GREGORIUS. *Moralia super Iob.*

1. (F. 1). ISIDORUS in libro *de viris illustribus* ad commendacionem beati Gregorii pape. = *PL.*, t. LXXV, col. 490-91.

2. (F. 1). Item prologus de tabula super *Moralia* beati GREGORII pape.

3. (F. 1^v-2). Visio Thaionis Cesaraugustanensis episcopi de meritis sancti Augustini episcopi et de revelacione et invencionem librorum *Moralium* beati Gregorii super Iob. = *PL.*, t. LXXV, col. 507-510.

4. (F. 2-204^v). Prologus *Moralium* beati GREGORII pape sanctissimi atque doctissimi viri ad beatum Leandrum Ispalensem episcopum in librum pacientissimi viri Iob. ... Liber primus *moralium*. ... Explicit liber undecimus. = *PL.*, t. LXXV, col. 510-986.

(1) Sur cette abbaye cistercienne, cf. JANAUŠEK, *Origines Cistercienses*, p. 276.

Parchemin; 204 feuillets; 0^m,35 × 0^m,25; XV^e siècle; deux colonnes; quelques jolies lettrines; initiales rouges et bleues; titre courant en rouge; signatures *a-14*. L'estampille rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 1 et f. 204^v. Reliure ancienne restaurée, veau brun estampé, traces de fermoirs.

1265. (279). — S. GREGORIUS MAGNUS. *Moralium libri, sive expositio in librum B. Iob, lib. I-VIII.*

Inc. Reverendissimo et sanctissimo fratri Leandro coepiscopo Gregorius servus servorum Dei. Dudum te, frater beatissime, in Constantinopolitana. *Des.* Dum studiose se in presentibus construunt repente ad eterna rapiuntur. Explicit liber octavus moralium. = *PL.*, t. LXXV, col. 518-859.

Les feuillets de garde, au commencement et à la fin, contiennent des fragments de bréviaire et d'antiphonaire.

Parchemin; 174 feuillets, plus trois de garde; 0^m,35 × 0^m,245; XV^e siècle; deux colonnes; ancienne pagination en chiffres romains; signatures *a1-f3*; titre courant; quelques lettrines. Ce volume provient du Val-Saint-Martin à Louvain (1), car au recto du second feuillet de garde, on lit: *Pertinet monasterio canonicorum Regularium Vallis sancti Martini in Lovanio ex parte fratris Henrici Franx eiusdem monasterii canonici et presbyteri professi. Hoc volumen constitit quatuordecim renensibus*, et f. 173: *Comparatum hoc volumen XIII renensibus per F. Henricum Franx.* Reliure ancienne, veau estampé; sur le premier plat, une étiquette sous corne encadrée de cuivre, avec le titre: *Liber primus moralium beati Gregorii pape cum septem sequentibus. Ad sanctum Martinum in Lovanio.*

1266. (284). — S. GREGORIUS MAGNUS. *Moralium libri sive expositio in librum B. Iob, lib. IX-XVI.*

Inc. Incipit liber nonus moralium beati Gregorii pape super librum Iob. Perverse mentes. *Des.* Quia magna obscuritate implicata sunt, opitulante Deo, lacius disserantur. Explicit liber decimus sextus moralium beati Gregorii pape super Iob. = *PL.*, t. LXXV, col. 859-1162.

Sur les feuillets de garde, fragments de bréviaire.

Parchemin; 141 feuillets, plus cinq de garde; 0^m,35 × 0^m,25; XV^e siècle; deux colonnes; titre courant; signatures. Au sujet de la provenance de ce volume, on lit sur le deuxième feuillet de garde: *Est liber hic sancti Martini Lovaniensis. Ex parte fratris Henrici Franx eiusdem monasterii Vallis Sancti Martini in Lovanio Canonici et presbyteri professi quem emit XIII renensibus*, et f. 143^v: *Comparatus per f. Henricum Franx XIII renensibus, liber monasterii Regularium sancti Martini in Lovanio* (2). F. 1 et 141, l'estampille rouge, *R.F.*, de la Bibliothèque nationale de Paris. Reliure ancienne, veau estampé; sur le plat, une étiquette sous corne et encadrée de cuivre porte: *Liber nonus moralium beati Gregorii pape cum septem sequentibus libris. A. XXI.*

(1) Cf. SANDERUS, *Bibl. belgica ms.*, part. II, p. 215.

(2) SANDERUS, *Bibl. belgica ms.*, part. II, p. 215

1267. (276-77). — S. GREGORIUS MAGNUS. Liber XIX-XXXV Morali-um super Iob.

Inc. Liber XIX. Morali-um beati Gregorii super Iob. Quid mirum si aeterna Dei sapientia conspici non valet? *Des.* Si cum per me verba accipit, pro me lacrymas reddat. Explicit liber XXXV^{us} morali-um beati Gregorii pape urbis Rome in libro beati Iob. = *PL.*, t. LXXVI, col. 95-782.

Parchemin; 194 feuillets; 0^m,335 × 0^m,195; XV^e siècle; deux colonnes; titre courant en rouge. L'estampille rouge, *R. F.*, de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 1 et f. 194^v. Demi-reliure moderne; dos en veau raciné.

1268. (1130-31). — S. GREGORIUS MAGNUS. Morali-um super Iob libri XVII-XXXV.

Papier, au filigrane de la tête de bœuf surmontée de la croix, quelques feuillets en parchemin; 188 feuillets, plus cinq de garde; 0^m,29 × 0^m,21; deux colonnes; titre courant. Au verso du deuxième feuillet de garde, miniature représentant le pape S. Grégoire. Reliure ancienne restaurée, veau raciné et estampé.

1269. (1653). — S. GREGORIUS MAGNUS. Moralia super Iob, libri XI-XVIII.

1. (F. 1-144^v). Liber undecimus et pars tercia morali-um beati Gregorii pape super Iob prophetam. *Des.* Explicit liber decimus octavus et secundus quarte partis morali-um beati Gregorii pape super Iob. = *PL.*, t. LXXV, col. 954 et t. LXXVI, col. 9-96.

2. (F. 144^v). Fragment de table.

Parchemin; 144 feuillets; 0^m,28 × 0^m,185; XV^e siècle; deux colonnes; titre courant en rouge; quelques capitales fort élégantes. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 1 et f. 144. Demi-reliure moderne.

1270. (3514). — S. GREGORIUS MAGNUS. Morali-um libri in Iob XIX-XXXV.

1. (F. 1-13). Table alphabétique des matières.

2. (F. 13-359^v). Morali-um libri XIX-XXXV. = *PL.*, t. LXXVI, col. 95-782.

Papier, filigrane de l'ancre; 359 feuillets, plus neuf de garde au commencement du volume et sept à la fin; 0^m,295 × 0^m,207; XV^e siècle; deux colonnes; titre courant; signatures. F. 1, on lit: *Collegii Societatis Iesu Lovanii, A. 5*. Reliure ancienne, ais de bois recouverts de veau brun estampé.

1271. (3629). — S. GREGORIUS MAGNUS. Moralia in Iob, lib. I-XXXV.

Des. mutil. non recedat quatinus tanto fixior animus in sus = *PL.*, t. LXXV, col. 510 - t. LXXVI, col. 779 (D).

Papier, filigrane de la licorne; 338 feuillets; 0^m,295 × 0^m,21; XV^e siècle; deux colonnes; grandes initiales en couleurs. Demi-reliure moderne; dos en maroquin

rouge, avec le titre doré : *B: Gregorii papae libri moralium in Iob, XV saec.* ; plus bas, le chiffre couronné de Léopold I^{er}.

1272. (10586). — S. GREGORIUS MAGNUS. *Moralium libri sive expositio in librum B. Iob libri XXIII-XXIX.* = *PL.*, t. LXXVI, col. 250-522.

Parchemin ; 117 feuillets ; 0^m,243 × 0^m,17 ; XVI^e siècle (1517), car on lit, f. 117^v : *Anno Domini 1517 quem scripsit N. Martinus Numenius pictor.* Deux colonnes ; capitales rouges et bleues ; titre courant en rouge. Le volume provient de Saint-Laurent, à Liège, car f. 1, il y a les cotes *ML*, 5-9 et *MM*. 2-9. F. 1 et f. 117^v, il y a l'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris. Reliure moderne, veau raciné ; au dos, le titre doré : *Gregorii moralium in Iob lib. XXIII-XXIX, XVI saec.* ; en dessous, les armes de Belgique et l'inscription : *Bibl. royale.*

1273. (10587). — S. GREGORIUS MAGNUS. *Sexta pars moralium in Iob.*

VI^a pars moralium beati GREGORII in Iob, liber XXX^{us}-XXXV^{um}. = *PL.*, t. LXXVI, col. 521-782.

Parchemin ; 93 feuillets ; 0^m,24 × 0^m,163 ; XVI^e siècle (1518), car f. 93^v, on lit : *Finitum anno Domini 1518, in profesto beati Gregorii hora sexta precise : scriptus per manus N. Martini Numenii.* Initiales rouges et bleues ; titre courant en rouge. F. 1, il y a la cote *MM*, 2-10 de la bibliothèque de Saint-Laurent, à Liège ; f. 1 et f. 93^v, le timbre rouge, *R. F.*, de la Bibliothèque nationale de Paris. Reliure moderne, veau raciné ; au dos, le titre doré : *Gregorii moralium in Iob, lib. XXX-XXXV, XVI saec.* ; en dessous, les armes de Belgique et l'inscription : *Bibl. royale.*

1274. (4877-86). S. GREGORIUS MAGNUS. *Moralia in Iob.*

1. (F. 1-14). *Beati GREGORII pape in moralibus.* — Quelques extraits.

2. (F. 14-15). Fragment de sermon. *Inc.* Quisquis eius spiritu plenus est. *Des.* Obserent eum tenebre. Diem profecto tenebre.

3. (F. 15-15^v). Hymne. *Inc.* Cristum mente letabunda collaudemus atque munda. *Des.* Cuius miro perlustremur in aeternum lumine. Amen.

4. (F. 16-48^v). De sacramentis. *Inc.* Cum multa sint sacramenta nove legis. *Des.* Ut medicina sacramentorum dignetur curare vulnera peccatorum nostrorum. Amen.

5. (F. 48^v). Prière. *Inc.* Collecta. Deus qui es via sanctorum. *Des.* Nominis sui, altissime Ihesu Christe, qui vivis et regnas.

6. (F. 49-72). Hymnes. = *RH.*, nn. 18127, 11903, 5136, 20876, 10515, 15824, 10360, 3043, 1604, 5285, 948, 18371, 10417, 10012, 10551, 17622, 2432, 17479, 100, 3795, 1487, 3413, 6928, 1974, 10471, 12646, 11064.

La série de ces hymnes est interrompue, f. 54^v-56, par diverses prières à dire par le prêtre. F. 59^v, 68-68^v, 71^v-72, il y a trois hymnes

non signalées par le *Repertorium hymnologicum*. Elles commencent respectivement : *Ave Maria, ave Dei speculum; Ave, stella maris, stella stella singularis; Alto consilio divina ratio*, et une prière : *Deus qui me a nativitate seculi conversum.*

7. (F. 72-73). Poème en l'honneur de S. Bernard.

Inc. Claravallis gratuletur.
Et in Patris delectetur
Bernardi presentia.

Des. Et nunc in mundi turbine
Et post in sua gloria. Amen.

8. (F. 73-77^v). Sermon sur S. Bernard. *Inc.* Beatus Bernardus quasi vas auri solidum ornatum. *Des.* Apprehendit utique nunc eam in eternum et ultra. Amen.

9. (F. 77^v-78^v). Poème en l'honneur de S. Bernard.

Inc. Paradysum voluptatis,
Ad exemplum sanctitatis.

Des. Nunquam sane destitutum
Largitate deica.

10. (F. 78^v-81^v). Miracles à Clairvaux. *a) Inc.* Quidam cenobita clarevallensis in infirmaria. *Des.* in procuratione sui officii.

b) Inc. In claris vallibus monachus quidam erat urbanus satis et facetus. *Des.* abbatis ad ipsum cogendum accedit.

11. (F. 82-83). Oratio ad sanctam Mariam et Iohannem evangelistam. *O intemerata et in eternum benedicta.* = *PL.*, t. CLVIII, col. 959-60.

12. (F. 83-84). Miracle de la Vierge et de S. Jean Baptiste. *Inc.* Fuerunt duo fratres germani et nobiles quorum alter. *Des.* In oratione prefata se commendans in pace quievit. Amen.

13. (F. 84^v-88). Miracles de la Vierge.

a) Inc. prol. Ad laudem et gloriam nominis eius ... Erat igitur in Arvernorum provincia castrum quoddam quod Saliens dicebatur.

b) Secundum simile est huic. Erat in eadem provincia castrum cui nomen Donere.

d) In Dacia situm noscitur esse cenobium quod Sora dicitur.

14. (F. 89-113). [ISIDORUS. *De differentiis*]. *Inc.* Primus gradus est eorum qui non crescunt, vita motuque carentes qualis est in lapidibus. *Des.* Nulla malitia leditur. = *PL.*, t. LXXXIII, col. 73-93.

15. (F. 113-119). Ciceronis synonyma. *Inc.* Inanis, vanus, verbosus. *Des.* Lugubre, periculosum, pestiferum.

16. (F. 119^v-120). Oraison. *Inc.* Alpha et O, magne Deus, hely, hely. *Des.* Cum Moyse et Helya piam etatem alleluja. Amen. = *RH.*, n. 925.

17. (F. 120^v-126). [HERBERTUS]. Miraculum de novitio hispaniensi. = *BHL.*, n. 1231 a.

18. (F. 126-127^v). Visio domini Petri abbatis Igniacensis postea abbatis Clarevallis. = *BHL.*, n. 6728.

19. (F. 128-134^v). De vita et regno Theoderici (1).

20. (F. 134^v-136). De nativitate eiusdem regis (2).

21. (F. 136-137). Poème.

Inc. Virtutem primam esse puto compescere linguam.

Des. Pauper honore dato tumet, intabescit adempto.

22. (F. 137-137^v). De iusto iudicio prefati regis Theoderici licet arriani (3).

23. (F. 137^v-139^v). De vita Theoderici regis (4).

24. (F. 139^v-140). [De morte Theoderici]. *Inc.* Inter Ethnam et Lipparem fit olla Vulcani. *Des.* Super terram virum iniustum male cum interitu.

25. (F. 140-141). De alio rege Theoderico cuius vitam Dominus redemit precio sanguinis sui. = *BHL.*, n. 8051.

26. (F. 141^v-145). In annuntiatione beate Marie. *Inc.* Beati misericordes, beati qui sui miserentur. *Des.* coronemur per creatorem omnium et dominatorem nostrum viventem et regnantem in gloria sempiterna per omnia secula seculorum. Amen. Amen. Amen.

Parchemin; 145 feuillets; 0^m,168 × 0^m,11; XIII^e siècle. F. 145, il y a la note : *Liber S. Marie de Villari in Brabantia*. Demi-reliure moderne, dos en maroquin brun, avec le titre doré : *Beati Gregorii Moralia super Iobum cum aliis opusculis XIII, saec.*; plus bas, le chiffre couronné de Léopold I^{er} (5).

1275. (II. 2553). — S. GREGORIUS MAGNUS. *Moralia in Job.*

F. 1-2^v, 4, 7-8^v. Fragments des livres XXXI, XXX, XVIII et XIX.

Parchemin; 14 feuillets; 0^m,398 × 0^m,262; XII^e siècle; deux colonnes; quelques belles lettrines. Ce volume provient, dit-on, de Cambron; plus tard, il a fait partie de la collection de sir Thomas Phillipps avec le n^o 24450, il a été acquis par la Bibliothèque royale en 1900. Demi-reliure; au dos, le titre doré : *S. Gregorii moralia*.

1276. (4890-94). — S. GREGORIUS MAGNUS. *Opera.*

1. (F. 1-8^v, 17-65^v). *Expositio beati GREGORII super canticum canticorum.* = *PL.*, t. LXXIX, col. 474.

(1) Cf. *Archiv.*, t. VII, p. 494 et KRUSCH, *Script. rer. Meroving.*, t. II, p. 201-2.

(2) KRUSCH, *Script. rer. Meroving.*, t. II, p. 210-11.

(3) Cf. *Archiv.*, t. VII, p. 494.

(4) Cf. *Archiv.*, t. VII, p. 494.

(5) Voir au sujet de ce manuscrit *Catal. cod. hagiogr. Bibl. reg. Bruxell.*, t. I, p. 465; *MG. Scr. rer. Merov.*, t. II, p. 201; *Analecta Bollandiana*, t. XX, p. 72.

2. (F. 10^v-16^v, 89-92^v). Libellus sancti AMBROSII Mediolanensis episcopi de conflictu viciorum atque virtutum. = *PL.*, t. XVI, col. 1057.

3. (F. 65^v-75^v). Flores cantici canticorum quos PATERIUS excerpsit ex libris beati Gregorii pape. = *PL.*, t. LXXIX, col. 905-16.

4. (F. 75-82). Tractatus primus ORIGENIS in epithalamicis. = *PG.*, t. XIII, col. 83 sqq.

5. (F. 82-88^v, 9-10^v). Tractatus secundus ab eo loco quo scriptum est *Nardus mea dedit odorem suum* usque ad eum locum in quo ait quod *Vox tua suavis et forma tua speciosa*. = *Ibid.*, col. 140-167.

6. (F. 93-93^v). Oratio ad beatam Mariam. *Inc.* Salve, mater Salvatoris, vas electum, vas honoris. *Des.* et nos tue claritatis configura glorie. Amen. = *RH.*, n. 18051.

Parchemin; 93 feuillets; 0^m,188 × 0^m,11; XIII^e siècle; signatures 1-x. F. 92^v et f. 93^v, on lit : *Liber sancte Marie de Villari*. Demi-reliure moderne, dos en maroquin rouge.

1277. (3003). — S. GREGORIUS MAGNUS. Opera.

1. (F. 1-107). Commentariolum beati GREGORII super cantica canticorum. Avec des annotations nombreuses. = *PL.*, t. LXXIX, col. 474.

2. (F. 107-107^v). *Ex quadam epistola ad quamdam sanctimoniam quae incipit* : Cognata mihi in Christo dilecta.

Parchemin; 107 feuillets; 0^m,147 × 0^m,11; XV^e siècle; initiales rouges et bleues; titre courant en rouge; signatures a-n. F. 1, on lit : *Bethleem*, et f. 107^v : *Pertinet in Bethleem prope Locanium liber iste*. Demi-reliure moderne.

1278. (10588-90). — S. GREGORIUS MAGNUS. Opera.

1. (F. 1^v). Index.

2. (F. 3-3^v). Beatus YSIDORUS in laude beati Gregorii. = *PL.*, t. LXXV, col. 490-91.

3. (F. 3^v). FR. IOHANNES DE LOOZ. [Libri quos anno 1476 S. Gregorii habet monasterium Sancti Laurentii extra muros].

4. (F. 4-76^v). Expositio beati GREGORII pape in epytalamio sponsi et sponse (1).

5. (F. 77-77^v). Prefatio venerabilis BEDE presbyteri de diversis libris beati Gregorii pape que excerpsit super cantica canticorum (2).

Parchemin; 77 feuillets; 0^m,20 × 0^m,133; XV^e siècle; initiales rouges et bleues. F. 1^v, on lit : *Iste liber pertinet sancto Laurentio extra muros Leodienses*, et f. 2 :

(1) Publié dans GOUSSAINVILLE, *Gregorii magni opera*, t. III, p. 461-512, et CASIMIR OUDIN, *Comm. de scriptoribus eccl.*, t. II, p. 768-842, sous le nom de Robert de Tombelaine, abbé de Saint-Vigor de Bayeux.

(2) Cette note attribuée à Bède est apocryphe et de date récente.

Liber monasterii S. Laurentii MM, 2-13 (1). L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris, *R. F.*, se trouve f. 3 et f. 77^v. Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré : *Gregorius in Cant. Cantic.*, reproduit à l'intérieur sur une étiquette : *Gregorius in Cant. Cantic.*; en dessous, les armes de Belgique et l'inscription *Bibl. royale*.

1279. (9383). — S. GREGORIUS MAGNUS. In Ezechielem.

1. (F. 1-132^v). [*Liber sancti GREGORII MAGNI super Ihezechielem prophetam*]. = *PL.*, t. LXXVI, col. 781.

2. (F. 133-133^v). Fragment d'un traité de grammaire. *Inc. mutil.* Ex hibernis partibus puls. Plautus in Mercatore. *Des. mutil.* Teste Herodeano qui hec novit.

Parchemin; 133 feuillets; 0^m,30 × 0^m,23; XII^e siècle; deux colonnes; signatures A-Q. Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré qui se trouve aussi à l'intérieur sur un fragment de maroquin rouge : *Gregorius in Ezechielem, XV saec.*; plus bas, les armes de Belgique et l'inscription : *Bibl. royale*.

1280. (II. 1054). — S. GREGORIUS MAGNUS. In Ezechielem.

1. (F. 1-1^v). Fragment d'antiphonaire noté.

2. (F. 2^v-208). *Expositio GREGORII pape in libro Ihezechiel prophete*. = *PL.*, t. LXXVI, col. 781 sqq.

Parchemin; 208 feuillets; 0^m,282 × 0^m,175; XIII^e siècle; très jolies lettrines en toutes couleurs; signatures a-c, VI-XXVI. F. 2^v et f. 3, il y a la note : *Liber sancte Marie de Alna, servanti benedictio fiat*, et f. 208 : *Liber sancte Marie de Alna. Si quis eum abstulerit vel folium absciderit, anathema sit*. F. 2, il y a la cote : 4631 Ph. de la collection Phillipps. Ce volume a été acquis par la Bibliothèque royale en 1888. Demi-reliure. toile anglaise; au dos, le titre doré : *S. Gregorius in Ezechiel*.

1281. (4343-44). — S. GREGORIUS MAGNUS. Dialogi.

1. (F. 1^v-106^v). *GREGORII dialogi*. = *PL.*, t. LXXVII, Col. 150 sqq.

2. (F. 1 de garde et f. 107). Fragment de l'*Ilias latina*, à savoir les vers 1048-57 et 1066-70 de l'édition Plessis (2).

Parchemin; 107 feuillets; 0^m,238 × 0^m,155; XI^e siècle; quelques lettrines. F. 1, on lit : *Pertinet monasterio canonicarum regularissarum montis sancti Nycholai in Aerschot*. L'estampille rouge, *R. F.*, de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 1^v et f. 106^v. Reliure ancienne, ais de bois recouverts de peau de truie.

1282. (1779). — GREGORIUS MAGNUS. Dialogi.

1. (F. 2-2^v). *Contenta hoc opere S. Gregorii dialogi*.

2. (F. 3-4^v). Fragment d'obituaire indéterminé.

(1) Il faut comparer l'écriture de ce volume avec le n. 10591-92. D'ailleurs, dans la table des matières, f. 1^v, se trouvent indiqués les deux traités de S. Augustin qui sont aujourd'hui dans le n. 10591-92. Voir plus haut, p. 151, n. 1119.

(2) Cf. THOMAS, *Catalogue des manuscrits de classiques latins de la Bibliothèque royale de Bruxelles*, p. 13, n. 29.

3. (F. 5-80^v). Dialogi beati GREGORII pape urbis Rome. Lib. I, II, III et IV jusqu'au c. 2. = *PL.*, t. LXXVII, col. 150-320.

Parchemin, sauf les deux premiers feuillets en papier; 80 feuillets; 0^m,26 × 0^m,175; XII^e siècle; quelques lettrines; signatures I-VIII. Ce volume provient de la bibliothèque des anciens bollandistes, il porte la cote ✱ *MS 110* de leur bibliothèque. Reliure parchemin.

1283. (4341-42). — S. GREGORIUS MAGNUS. Opera.

1. (F. 1-76^v). Liber dialogorum GREGORII. = *PL.*, t. LXXVII, col. 150 sqq.

2. (F. 77-112). Liber regule pastoralis GREGORII pape. = *Ibid.*, col. 14-127.

Parchemin; 112 feuillets; 0^m,262 × 0^m,155; XII^e siècle; quelques lettrines. F. 1, il y a la note: *Collegii Societatis Iesu Locanii M.B. Y-3*. Demi-reliure moderne; dos en cuir brun.

1284. (II. 980). — S. GREGORIUS MAGNUS. Liber dialogorum. = *PL.*, t. LXXVII, col. 150-430.

Parchemin; 112 feuillets; 0^m,28 × 0^m,18; XII^e siècle; initiales rouges, vertes et bleues. Ce manuscrit provient de Saint-Ghislain (1); au verso de la couverture, il y a l'ex-libris *Sir T. P. Middle Hill n. 371*. Reliure moderne, veau estampé, avec l'inscription en relief sur le premier plat: *Regia Bibl. Belgica*.

1285. (828). — S. GREGORIUS MAGNUS. Dialogorum libri IV.

1. (F. 1-119^v). Dialogus beati GREGORII pape urbis Rome. = *PL.*, t. LXXVII, col. 150-430.

2. (F. 120). Capitula istius libri.

A l'intérieur du premier plat, formule du serment, comme membre du Conseil privé, prêté par M. BOSSCHE de Haarlem, en 1524.

Parchemin; 120 feuillets; 0^m,30 × 0^m,203; XIII^e siècle. On lit, f. 120^v: *Liber Cornelij Duijn Aemstredamensis Hagae Comitum Hollandie anno Domini M.D.C.VII*; puis f. 1: *Societatis Iesu Ant[er]piensis] D. P.* Au revers de la couverture, l'ex-libris des anciens bollandistes ✱ *MS. 198*. Reliure ancienne, veau brun estampé; traces de fermoirs.

1286. (4764-66). — S. GREGORIUS MAGNUS, S. IOHANNES CHRYSOSTOMUS. Opera.

1. (F. 1-1^v, 136-136^v). Fragments de missel.

2. (F. 2). Table des matières et oraison de S. Benoît.

3. (F. 2^v-89^v). Dialogi beati GREGORII pape urbis Rome. = *PL.*, t. LXXVII, col. 147.

4. (F. 89^v-106). IOHANNIS [CHRYSOSTOMI] episcopi de compunctione cordis. = *PG.*, t. XLVII, col. 933 sqq.

(1) Cf. A. PONCELET, S. J., *Annales de l'abbaye de Saint-Ghislain*, p. 385, note 2.

5. (F. 106^v-111). Omelia IOHANNIS CRISOSTOMI de prodicione Iude. = *PG.*, t. XLIX, col. 373.

6. (F. 111-116^v). [IOHANNIS CHRYSOSTOMI]. De cruce et latrone. = *Ibid.*, col. 399.

7. (F. 116^v-117). Omelia EIUSDEM de cruce et latrone (1).

8. (F. 117-119^v). [IOHANNIS CHRYSOSTOMI] de cruce dominica. = *PG.*, t. L, col. 815.

9. (F. 119^v-124). [IOHANNIS CHRYSOSTOMI] de ascensione Salvatoris. = *PG.*, t. XLIX, col. 411.

10. (F. 124-127^v). De pentecoste. = *PG.*, t. L, col. 803.

11. (F. 127^v-129^v). Omelia de nativitate Domini (2).

12. (F. 129^v-134). Iterum de nativitate Domini et Iohannis Baptiste et conceptione, de solsticiis et equinoctiis (3).

13. (F. 134-135). Omelia EIUSDEM de Lazaro (4).

14. (F. 135). Ex decretis beati GREGORII pape.

15. (F. 135-135^v). Ex concilio Bonifacii quod liceat monacho sacerdotale officium amministrare.

Parchemin; 136 feuillets; 0^m,295 × 0^m,198; XIII^e siècle; quelques jolies lettrines; initiales rouges et bleues; signatures I-XVI, titre courant. F. 136^v, on lit, à diverses reprises, la note : *Liber sancte Marie de Villari, servanti benedictio*. Demi-reliure moderne; dos en maroquin rouge, avec les titres dorés des divers traités et le chiffre couronné de Léopold I^{er}.

1287. (9916-17). — S. GREGORIUS MAGNUS. Dialogi.

1. (F. 1). Forma et habitus sancti Gregorii pape. = *PL.*, t. LXXV, col. 230-31.

2. (F. 1). De Iohanne preposito monasterii sui exemplum quomodo obiit. = *Ibid.*, col. 231-33, n. 86-87.

3. (F. 2). Capitula de libro dialogorum beati Gregorii pape urbis Rome.

4. (F. 3-152). Liber dialogorum sancti GREGORII pape urbis Rome. = *PL.*, t. LXXVII, col 150 sqq.

5. (F. 152^v). Epithapium sancti Gregorii (5).

Parchemin; 152 feuillets; 0^m,278 × 0^m,197; XII^e siècle; quelques belles lettrines; signatures I-XVIII. Tout le volume est orné de fort curieuses miniatures; elles représentent, f. 2^v: l'extase de S. Grégoire aperçue par le diacre Pierre à travers le rideau percé de son stylet; f. 8: le prévôt Libertinus frappé d'un escabeau par

(1) Inédite dans les versions du moyen âge. Cf. *Zeitschr. für katholische Theologie*, t. IV, 1880, p. 791.

(2) Inédite. Cf. *ibid.*, p. 791.

(3) Inédite. Cf. *ibid.*, p. 791.

(4) Inédite. Cf. *ibid.*, p. 791.

(5) Publié *Act. SS.*, Martii t. II, p. 348.

son abbé; f. 14^v : Marcellin, évêque d'Ancône, éteignant un incendie; f. 15^v : l'abbé Nonnosus multipliant miraculeusement l'huile; f. 19, 20, 21 : divers miracles de S. Boniface, évêque de Ferento; f. 23^v : Fortunat, évêque de Tudertum, guérissant une possédée; f. 27 : le même ressuscitant un mort; f. 29, 31, 32^v, 36, 36^v, 40^v, 42, 45, 45^v, 46, 48, 49^v, 50, 50^v, 51^v, 52, 52^v, 54^v, 58^v : diverses scènes de la vie de S. Benoît; f. 60^v : S. Paulin de Nole promettant à une veuve de prendre en Afrique la place de son fils captif; f. 61 : S. Paulin de Nole faisant voile vers l'Afrique; f. 63^v, 64^v : divers miracles de S. Paulin; f. 65^v : S. Datien, évêque de Milan, chassant le démon; f. 66^v : S. Sabin, évêque de Canusium, dévoilant la perfidie de l'archidiaque qui veut l'empoisonner; f. 67 : Cassien, évêque de Narni, délivrant un possédé; f. 67^v : l'assemblée des démons; f. 69^v : mort de Constant, évêque d'Aquin; f. 70, 71 : Venant, évêque de Luna, arrêtant les débordements des fleuves; f. 71^v : Cerbonius, évêque de Populonium, livré à un ours; f. 73^v : l'évêque Fulgence d'Utriculum arrêtant les soldats de Totila; f. 74 : martyr d'Herculanus, évêque de Pérouse; f. 75 et 77 : miracles d'Isaac de Spolète; f. 78^v : S. Florentin faisant paître les brebis par un ours; f. 80 : le même purgeant la région de serpents qui l'infestaient; f. 81^v : le solitaire Martin; f. 84 : le sous-diaque Quadragesimus ressuscitant un mort; f. 86 : le moine Benoît jeté au four par les soldats de Totila; f. 86^v : l'église de Saint-Zénon à Vérone; f. 87^v : le démon déchaussant le prêtre Étienne; f. 89 : un prêtre sortant du tombeau pour arrêter un voleur; f. 63^v : les Lombards adorant la tête de chèvre et immolant des prisonniers à cette idole; f. 85 : l'église de Spolète et les Ariens; f. 96^v : martyr de S. Herménégilde; f. 98 : martyr à la langue coupée; f. 101^v : le prêtre Amantius tuant un serpent par le signe de la croix; f. 102^v : Maximien, évêque de Syracuse, apaisant une tempête; f. 103^v : Sanctolus multipliant miraculeusement l'huile; f. 110 : les justes amenés par l'ange dans le sein de Dieu; f. 152 : S. Grégoire et le Christ, avec l'inscription :

*Parva quidem tibi do, sed tu qui gratia totus
Accipe gratuita munere vota magis.
Tu lux ecclesie, tu doctrine fideique
Splendor, amor, forma, columpna, caput,
Celi prece, decus orbis, cedrus paradisi
Et paradysiacus fons salientis aque;
Idem Verbi lingua Dei dilectus amicus
Sponsi cum matre virgine virgo. Amen.*

Ce volume provient de la bibliothèque de Saint-Laurent à Liège, comme en témoignent la cote *LL, 5-11*, inscrite f. 1^v, et la note, f. 2 : *Sancti Laurentii in leodio*. Le timbre rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve marqué f. 1 et f. 152^v. Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré : *Gregorii P. dialogi XII saec.*, reproduite à l'intérieur sur une étiquette en maroquin rouge; plus bas, les armes de Belgique et l'inscription *Bibl. royale* (1).

1288. (638-42). — S. GREGORIUS MAGNUS. Opera.

1. (F. 1-69^v). Dialogorum beati GREGORII pape libri IV. = *PL.*, t. LXXVII, col. 150-430.

2. (F. 70-192). [GREGORII magni homiliae super Ezechielem]. = *PL.*, t. LXXVI, col. 786-1071.

(1) Voir une description de ce volume *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. II, p. 390, note 1.

3. (F. 193-195^v). [S. HIERONYMUS. Vita Pauli eremite]. = *BHL.*, n. 6596.
 4. (F. 195^v-204^v). [S. HIERONYMUS. Vita Hilarionis]. = *BHL.*, n. 3879.
 5. (F. 204^v-207). [S. HIERONYMUS. Vita Malchi captivi]. = *BHL.*, n. 5190.
 6. (F. 207^v-251^v). [GREGORIUS MAGNUS. Pastoralis liber]. = *PL.*, t. LXXVII, col. 14-127.

Parchemin; 251 feuillets; 0^m,315 × 0^m,215; XIV^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et bleues; grandes capitales ornées. A l'intérieur du premier plat, sur une étiquette imprimée, on lit : *L. l. vii. n. 19. Ad Biblioth. FF. Min. conv. Coloniae*; puis sur une autre écrite à la main : *N^o 28, Belgique 27. D. S. Man.* Demi-reliure moderne; dos en maroquin rouge; au dos, les titres dorés des différents traités, avec le monogramme du roi Léopold I^{er}.

1289. (21864). — S. GREGORIUS MAGNUS. Dialogi.

Inc. mutil. ... Quam cum veni[entem] desuper vir sanctus vidisset. = *PL.*, t. LXXVII, col. 156.

Parchemin; 55 feuillets; 0^m,222 × 0^m,171; XIV^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et bleues. F. 1^v, il y a la note : *Bibliotheca Parcensis*, et au verso de la couverture la cote *I. theca IX*, ainsi que l'ex-libris : *Ex bibliotheca P. P. C. Lammens*. Reliure veau; les armoiries de l'abbaye de Parc ont été grattées sur les deux plats; au dos, le titre doré : *Grego. mag. dialo.*; tranche rouge.

1290. (3493-504). — GREGORIUS MAGNUS. Dialogi. — Vitae Patrum.

1. (F. 1-50^v). Dialogi sancti GREGORII. = *PL.*, t. LXXVII, col. 150 sqq.
 2. (F. 51-52^v). Table du traité suivant.
 3. (F. 53-174). Liber de illustribus viris ordinis Cisterciensis. = *PL.*, t. CLXXXV, col. 995-1198.
 4. (F. 175-189). Vita sancti Anthonii monachi et heremite primum scripta ab ATHANASIO episcopo Alexandrino in greco, translata autem in latinum sermonem ab EVAGRIO presbitero utilis et necessaria ad instituendam vitam. = *BHL.*, n. 609.
 5. (F. 189-191). IHERONIMI presbiteri vita sancti Pauli primi heremite. = *BHL.*, n. 6596.
 6. (F. 191-197). IHERONIMUS. Vita sancti Hylarionis. = *BHL.*, n. 3879.
 7. (F. 197-213). Vita sancti Pachomii abbatis. = *BHL.*, n. 6410.
 8. (F. 213-214^v). Narratio beati IHERONIMI de Malcho captivo monacho. = *BHL.*, n. 5190.

(1) Voir la description de ce volume dans *Catalogus cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. I, p. 268.

9. (F. 214^v-216). Vita sancti Frontonii abbatis. = *BHL.*, n. 3189.
10. (F. 216-222). Vita beatissimi Abrahe heremite. = *BHL.*, n. 12.
11. (F. 222-225). Vita Eufrosine virginis. = *BHL.*, n. 2722.
12. (F. 225-226). Ex dictis IOHANNIS CASSIANI de abbate Pinufo. = *PL.*, t. LXXIII, col. 833-36, cap. xxx et xxxi.
13. (F. 226-228). Ex dictis IOHANNIS CASSIANI abbatis. *Inc.* Cum de Syrie partibus Egipti provinciam petissemus. = *Ibid.*, col. 836-44, cap. xxxii-xlviii.
14. (F. 228-233^v). Vita sancta (*sic*) Maria (*sic*) Egiptiace de greco in latinum translato (*sic*). = *BHL.*, n. 5417.
15. (F. 233^v-236^v). Vita Pelagie monache. = *BHL.*, n. 6605.
16. (F. 236^v-244^v). Vita sancte Paule nobilissime femine. = *BHL.*, n. 6548.
17. (F. 244^v-246). Visio Druchelmi. = *PL.*, t. XCV, col. 247-52.
18. (F. 246-246^v). Visio alterius cuiusdam. = *Ibid.*, col. 252-54.
19. (F. 246^v-247). De quodam fabro. = *Ibid.*, col. 254-55.
20. (F. 247). De duabus sororibus. *Inc.* Duas quasdam sorores cuiusdam monasterii antiquus hostis agressus est.
21. (F. 247-247^v). De praelio duorum regum. *Inc.* Aliud et etiam memorabile ... contigit enim aliquando inter duos reges ... grande praelium fieri.
22. (F. 247^v-249). De duobus ducibus. Rem vobis refero, fratres ... Duo duces ..., confligebant ... dux Sardinie Eusebius, dux Sicilie vocabatur Eustorgius.
23. (F. 249-249^v). De sancto Sereno abbate. = *PL.*, t. LXXIII, col. 844-46, cap. l et li.
24. (F. 249^v-250). De abbate Iohanne. = *Ibid.*, col. 831-32, cap. xxvi et xxvii.
25. (F. 250). De abbate Mucio. = *Ibid.*, col. 832-33, cap. xxviii.
26. (F. 250-251). De virgine que sanctum patrem habuit et detestabilem matrem. *Inc.* Narravit quidam senex dicens quod erat quaedam virgo provecta aetate valde.
27. (F. 251-259). Vita seu Passio beati Epictici presbiteri et Astionis monachi. = *BHL.*, n. 2568.
28. (F. 259-262). Visio Wettini monachi (1).
29. (F. 262-262^v). Vita Thaisis quondam meretricis. = *BHL.*, n. 8012.
30. (F. 262^v-264). Excerpta ex epistola beati AUGUSTINI de laude beati Hieronimi ad Cyrillum. = *BHL.*, n. 3867.
31. (F. 264). Table des *Vitae Patrum*.

(1) *MGH.*, Poetae lat. aevi Carolini, t. II, p. 267-275. Pour la bibliographie de cette pièce, voir POTTHAST, *Bibliotheca hist. med. aevi*, 2^e ed., p. 1099.

32. (F. 264^v-267). [Vita Iohannis Chrysostomi]. = *BHL.*, n. 4379.

Les feuillets 267^v-269 sont blancs.

33. (F. 269-270^v). Capitula in libro dialogorum beati Gregorii pape.

Papier, filigranes de l'ancre et de la lettre *P*; 270 feuillets; 0^m,295 × 0^m,205; XV^e siècle (1461), car on lit, f. 174 : *Explicit liber de illustribus viris ordinis Cisterciensis et finitus anno Domini millesimo quadringentesimo sexagesimo primo in profesto sancti Thome apostoli*. Deux colonnes; jolies initiales ornées en rouge et en bleu. F. 1, on lit : *Collegii Societatis Iesu Bruxellis 1644, M. B.* Reliure ancienne, veau brun estampé; très jolis fers.

1291. (3436-40). — S. GREGORIUS MAGNUS. Opera.

1. (F. 1-52). Liber pastoralis cure beati GREGORII pape. *Inc. mutil.* ... O cure me pondera fugere delitescendo voluisse. = *PL.*, t. LXXVII, col. 13-128.

2. (F. 52-53). Capitula libri pastoralis.

3. (F. 54-123). Quatuor libri dyalogorum beati GREGORII. = *PL.*, t. LXXVII, col. 150-430.

Les feuillets 123^v-126^v sont blancs.

4. (F. 127-281). [Tractatus super psalmos]. *Inc.* Dedit David confessionem sancto et excelso et de omni corde suo. *Des.* Misericordissimus quoque salvator Deus sublimis et benedictus Amen. Amen. Amen.

Les feuillets 281^v-282^v sont blancs.

5. (F. 283-333^v). Tractatus de lepra morali. *Inc.* Olim in levitico veteris testamenti Deum legimus mandavisse. *Des.* Et hec de lepra morali dixisse sufficiant. Sit nomen Domini benedictum.

6. (E. 334-372). [IOHANNES NYDER. Manuale confessorum] (1).

Papier, divers filigranes, la lettre *P* et la tête de bœuf surmontée de la croix; 372 feuillets; 0^m,29 × 0^m,205; XV^e siècle (1454-1468), car on lit f. 123 : *Expliciunt quatuor libri dyalogorum beati Gregorii pape per me Reynnerum van der Elst anno Domini M^oCCCC^oLIIII^o mensis iunii die decima ad laudem et gloriam omnipotentis Dei ac eius genitrici (sic) nec non beati Gregorii pape scripti*; puis f. 281 : *Anno Domini Xiiii^o.Lxviii^o mensis decembris die. 28*; f. 333 : *Explicit tractatus de lepra morali finitus per manus Roberti de Monte investiti de Zichenis anno Domini millesimo quadringentesimo quinto mensis septembris die decima nona*, et f. 372^v : *Explicit manuale confessorum finitum per Robertum de Monte presbiterum anno Domini Mccccl. quinto mensis iulii in profesto Magdalene*. Deux colonnes, signatures *ar-yj*. F. 1, il y a la note : *Bibliotheca fratrum minorum reg. obs. conventus SS. Trinitatis. Lovanij*; et au verso de la couverture, l'ex-libris : *Bibliothecae FF. Min. collect. Lovan. ad SS. Trinit. renov. et auctae 1791*. Reliure ancienne, ais de bois recouverts de peau de truie estampée; restes de fermoirs en cuivre.

(1) Voir BRUNET, *Manuel du libraire*, 5^e éd., t. IV, col. 73.

1292. (3716-30). — GREGORIUS MAGNUS. Opera.

1. (F. 1-1^v). Table des matières.
2. (F. 2-56). Liber dialogorum beati GREGORII pape = *PL.*, t. LXXVII, col. 150-430.
3. (F. 56^v-98^v). Liber regule pastoralis cure sancti GREGORII pape. = *Ibid.*, col. 13-128.

Les feuillets 99-100 sont blancs.

4. (F. 101-148). Breuiloquium S. BONAVENTURAE (1).
5. (F. 148-155^v). Centiloquium sancti BONAVENTURE (2).
6. (F. 156-159). Epistola ... BONAVENTURE ... que est regula et institutio omnium pie et spiritualiter in Christo vivere volentium (3).

Les feuillets 159-160^v sont blancs.

7. (F. 161-187^v). Liber de paradiso anime. = *PL.*, t. XIV, col. 275.
8. (F. 187-191^v). Tractatus duodecim abusuum saeculi beati CYPRIANI doctoris = *PL.*, t. IV, col. 869.

9. (F. 191^v-194). Primum manuale extractum ex Philobiblon domni RICHARDI Alingduli cognominati de Bury (4).

10. (F. 194-199). Tractatus magistri RICHARDI de septem generibus temptationum et remediis earum. = *PL.*, t. CXCVI, col. XXIX.

11. (F. 200-233^v). IOHANNIS GERSONIS lectiones VI de differentia peccati mortalis et venialis ad M. Petrum de Alliaco cardinalem Cameracensem (5).

12. (F. 233^v-234). [Casus conscientiae de oblocutione absentis].

13. (F. 234-247^v). Epistolae AENEAEE SILVII (6).

14. (F. 247^v-253^v). Tractatus sancti THOME DE AQUINO ordinis fratrum praedicatorum de corpore Christi (7).

15. (F. 254-255). Sermo de inordinatis temerariisque iudiciis evitandis. *Inc.* Quid vides festucam in oculo fratris sui.

16. (F. 255-256^v). Sermo de perfectione spiritualis amoris et de amore extatico ac eius effectibus atque indiciis. *Inc.* Qui diligunt te, Domine, sicut sol in ortu suo.

Papier, au filigrane de la lettre *P*; 256 feuillets; 0^m,287 × 0^m,212; XV^e siècle (1479-1490), car f. 56, il y a la note : *Explicit liber dialogorum beati Gregorii pape scriptus et completus in principio ieiunii anno Domini Mcccclxxix, Deo gratias, et f. 98^v : Explicit liber pastoralis cure sancti Gregorii completus et finitus expensis*

(1) *S. Bonaventurae opera*, Romae, 1596, t. VI, p. 5 sqq.

(2) *Ibid.*, t. VI, p. 58 sqq.

(3) *Ibid.*, t. VII, p. 15-18.

(4) Cf. l'édition du *Philobiblon* par H. Cocheris, Paris, 1856.

(5) ELLIES DU PIN, *Iohannis Gersonii opera omnia*, t. II, p. 486-504.

(6) Ce sont les lettres nn. 108 et 166 (*de curialium miseris*) des *Epistole et varii tractatus Pii secundi Pontificis Maximi*, Lugduni, 1497.

(7) *S. Thomae opuscula*, Paris., 1634, p. 633.

domni Baldewini filii Anthonii de nova ecclesia Duvelandie Traiectensis dyocesis XVIII^o marcii anno Domini Mccc nonagesimo dominica secunda in quadragesima.
Deux colonnes, initiales rouges et bleues. Demi-reliure moderne, dos en maroquin rouge.

1293. (2382-86). — S. GREGORIUS PAPA. Dialogi.

1. (F. 2-17^v). De passione domini nostri Ihesu Christi. *Inc.* Occurrit nunc ut de passione domini Ihesu tractemus. *Des.* Tandem Iohannes rogat eam ut desistat et quantum potuit consolatus est eam.

2. (F. 17^v-20). Divers extraits de S. BERNARD.

Les feuillets 20^v-23^v sont blancs.

3. (F. 24-126^v). Stimulus amoris in pium Ihesum Christum quem compilavit Frater HENRICUS DE BALMA (1).

Les feuillets 127-128 sont blancs.

4. (F. 128^v-224^v). Dialogus beati GREGORII pape. = *PL.*, t. LXXVII, col. 150-430.

5. (F. 225-227^v). Les quinze regrets de Notre Dame.

Inc. Bonne gent owes, je vous prie,
Les reges de la Vierge Marie.

6. (F. 228-238). Tractatulus de preparatione ad missam seraphici IOHANNIS BONAVENTURE (2).

Papier, filigrane de la lettre *P*; 238 feuillets; 0^m,215 × 0^m,14; XV^e siècle; deux colonnes jusqu'au f. 126^v. L'estampille rouge, *R. F.*, de la Bibliothèque nationale de Paris se voit f. 2 et f. 238. F. 1, on lit : *Iste liber est fratrum sancte Crucis in Tornaco, 1484.* Reliure ancienne, veau brun estampé.

1294. (2529-32). — S. GREGORIUS MAGNUS. Dialogi.

1. (F. 1-32^v). Vita beati Silvestri pape. = *BHL.*, n. 7725.

2. (F. 33-124^v). Dyalogi beati GREGORII pape. = *PL.*, t. LXXVII, col. 150 sqq.

Les feuillets 125-128^v sont blancs.

3. (F. 129-233^v). BONAVENTURA. Vita beati Francisci confessoris. = *BHL.*, n. 3107.

Parchemin; 233 feuillets, plus six de garde; 0^m,21 × 0^m,14; XV^e siècle. Au troisième feuillet de garde, on lit la note : *Hic est liber domus Capelle beate Marie iuxta Angiam*, et au verso du même feuillet : *Liber domus Capelle B. Marie iuxta Angiam.* L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 1 et f. 234^v. Reliure ancienne restaurée, veau brun estampé (3).

(1) Voir sur ce traité C. OUDIN, *Commentarius de scriptoribus ecclesiasticis*, t. III, col. 2241; cf. t. I de ce catalogue, p. 515, n. 7.

(2) *S. Bonaventurae opera omnia*, Romae, 1596, t. I, p. 70-77.

(3) Voir une description de ce volume dans *Cat. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. I, p. 342-43.

1295. (5216). — S. GREGORIUS MAGNUS. Regulae pastoralis liber.

Inc. mutil. hinc ipse Dei hominumque mediator. PL., t. LXXVII, col. 16, cap. 111.

F. 82^v, il y a cette note, relative au scribe : *Explicit liber regule pastoralis. Individue Trinitati ego Augustus, indignus presbiter, cum fui in terra peregrinationis iussi scripsere..... nationis meae, pro anima redemptionis meae.* Suit une prière.

Parchemin ; 82 feuillets ; 0^m,225 × 0^m,165 ; X^e siècle. Reliure, veau raciné ; titre doré au dos : *Regula Grego.* ; tranche rouge.

1296. (19600). — S. GREGORIUS MAGNUS. Pastorale.

1. (F. 1-3^v). Pastorale GREGORII. Capitula.

2. (F. 3^v-127^v). Beati GREGORII pape de qualitate pastorum liber mellifluus ad Iohannem Ravennatis urbis pontificem feliciter editus. = *PL., t. LXXVII, col. 15-128.*

3. (F. 128-128^v). Fragments de missel pour le temps de l'Avent.

4. (F. 129^v-129). [De Lazaro]. Fragment.

Parchemin ; 129 feuillets ; 0^m,26 × 0^m,183 ; XI^e siècle, sauf les feuillets 121-128 qui sont du XIV^e, et le feuillet 129 du X^e. F. 1, on lit la note : *Liber monasterii Stabulensis* ; et f. 127 : *Pertinet monasterio Stabulensi* (1). Reliure moderne, chagrin brun.

1297. (4815-18). — S. GREGORIUS MAGNUS. Liber pastoralis.

1. (F. 1-104). Liber pastoralis GREGORII pape. = *PL., t. LXXVII, col. 15-128.*

2. (F. 104-118). Actus sancte Marie Egiptiace et penitentia et transitus eius ad Christum. = *BHL., n. 5415.*

3. (F. 118^v-122^v). Vita sancti Pauli primi heremite. = *BHL., n. 6596.*

4. (F. 123-126). [Vita S. Malchi captivi monachi]. = *BHL., n. 5190.*

5. (F. 127-128). Vita sancte Eufrosine virginis. = *BHL., n. 2723.*

Parchemin ; 128 feuillets ; 0^m,223 × 0^m,13 ; XII^e siècle. F. 128, on lit la note suivante inscrite trois fois : *Liber sancte Marie de Villari.* Demi-reliure moderne. au chiffre couronné de Léopold I^{er}, dos en maroquin rouge, titres dorés (2).

1298. (9936). — S. GREGORIUS MAGNUS. Liber regule pastoralis.

1. (F. 1-2). Capitula huius opusculi.

2. (F. 2^v-87^v). Liber regule pastoralis GREGORII pape urbis Rome. = *PL., t. LXXVII, col. 15-128.*

(1) Cf. TH. GOTTLIEB, *Ueber Mittelalterliche Bibliotheken*, p. 285 ; *Catalogue d'une belle collection de livres*, Gand, 1847, p. 8, n. 21.

(2) Voir une description de ce manuscrit dans *Catalogus cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. I, p. 465.

Parchemin; 87 feuillets; 0^m,265 × 0^m,175; XII^e siècle. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris *R. F.*, se trouve f. 1. Reliure moderne; veau raciné et au dos le titre doré, reproduit sur une étiquette en maroquin rouge: *Gregorii liber pastoralis XII saec.*

1299. (2274-75). — S. GREGORIUS MAGNUS. Opera.

1. (F. 1-80). *Regulae pastoralis liber beati GREGORII pape.* = *PL.*, t. LXXVII, col. 15-128.

2. (F. 80-81). *Capitula pastoralis.*

Les feuillets 81^v-82^v sont blancs.

3. (F. 83-156). *Commentariolum beati GREGORII super cantica canticorum.* = *PL.*, t. LXXIX, col. 267 sqq.

Les deux feuillets de garde contiennent des fragments d'antiphonaire.

Parchemin; 106 feuillets, plus sept de garde; 0^m,225 × 0^m,145; XIV^e siècle les 81 premiers feuillets, les autres sont du XV^e; deux colonnes; deux jolies capitales en tête de chacun des traités; initiales rouges et bleues; ancienne pagination i cvi. Au verso du troisième feuillet de garde, on lit: *Liber monasterii regularium vallis sancti Martini in Lovanio*, et au verso de l'avant-dernier feuillet de garde: *Est liber hic sancti Martini Lovaniensis.* L'estampille rouge, *R. F.*, de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 1 et f. 106^v. Reliure ancienne restaurée, veau brun estampé.

1300. (2823-24). — S. GREGORIUS PAPA. *Excerpta ex Pastoralis.*

1. (F. 1-1^v). Notes diverses, entre autres le *Credo* avec les noms des apôtres qui ont composé chaque article.

Le feuillet 2 est blanc.

2. (F. 3-85^v). *DECANUS AMBIANENSIS. Exceptio super canticum canticorum.*

Les feuillets 86 et 87 sont blancs.

3. (F. 88-109). *Excerpta ex Pastoralis GREGORII.*

Parchemin; 109 feuillets; 0^m,22 × 0^m,14; XIII^e siècle; signatures i-ix. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 3 et f. 109. Reliure ancienne, peau de truie sur ais de bois; titre sous corne et cadre de cuivre: *Expo. super canticum. Item excerpta quaedam ex pastoralis Gregorii.*

1301. (870-72). — S. GREGORIUS. Opera. S. HIERONYMUS. *Epistolae.*

Les deux premiers feuillets sont blancs.

1. (F. 3-54^v). *Omilie beati GREGORII pape numero quadraginta in evangelia.* = *PL.*, t. LXXVI, col. 1169 sqq.

2. (F. 54^v-81^v). [S. GREGORII] *cura pastoralis.* = *PL.*, t. LXXVII, col. 15-128.

(1) GOUSSAINVILLE, *Gregorii magni opera*, t. III, 461-512, attribue ce traité à S. Grégoire; CASIMIR OUDIN, *Comm. de scriptoribus ecl.*, t. II, p. 768-842, l'a réédité sous le nom de Robert de Tombelaine, abbé de Saint-Vigor de Bayeux.

3. (F. 83-124). [Epistolae S. Hieronymi]. A savoir *PL.*, t. XXII, nn. 15, 16, 18, 21, 101, 102, 103, 111, 56, 131, 105, 67, 104, 112, 126, 132, 134, 141, 142, 143; t. XXX, col. 176, puis t. XXII, nn. 14, 52, 55, 57, 51, 83, 84; t. XXX, col. 288, puis t. XXII, nn. 69, 146, 73, 17, 124, puis *Diffinicio fidei symbolique Niceni concilii*, et ensuite nn. 144, 129.

4. (F. 124-127). Epistola S. Hieronymi ad Helvidium de virginitate sancte Marie. = *PL.*, t. XXIII, col. 183 sqq.

5. (F. 127-144^v). Liber S. Hieronymi adversus Iovinianum hereticum. = *PL.*, t. XXIII, col. 211 sqq.

6. (F. 144^v-145^v). [Epistolae S. Hieronymi]. = *PL.*, t. XXII, les lettres nn. 61, 109.

7. (F. 145^v-147). Epistola sancti Hieronymi adversus Vigilantium. = *PL.*, t. XXII, col. 906-09.

8. (F. 147-151). [Epistolae S. Hieronymi]. = *PL.*, t. XXII, lettres nn. 70, 74, 72, 4, 5, 76, 68, 147, 6, 8.

9. (F. 151-151^v). Capitula epistolarum sancti Ieronimi.

10. (F. 152^v). Note sur les quatre docteurs de l'Église latine et sur les voies de l'enfer. *Inc.* Tria ducunt ad infernum.

Parchemin; 152 feuillets, plus deux de garde; 0^m,305 × 0^m,225; XIV^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et bleues. F. 3, on lit : *Collegii Societatis Iesu Lovanii*, et f. 2, il y a la cote Y 3. Reliure ancienne, veau brun estampé.

1302. (9553). — S. GRÉGOIRE. Dialogues, en français.

1. (F. 1-3^v). Table des chapitres.

2. (F. 4-103). Dialogue saint GRINGOIRE pape.

Parchemin; 103 feuillets; 0^m,315 × 0^m,225; XIV^e siècle; les feuillets 1-3 sont sur deux colonnes; superbes lettrines en toutes couleurs rehaussées d'or; plusieurs feuillets sont élégamment encadrés. F. 4, une jolie miniature représente le pape S. Grégoire et son diacre Pierre. F. 103^v, on lit la note : *Ce livre est a Jehan fils de Roy de France, duc de Berry et dauvergne, conte de Poitou et dauvergne.* Signé : *Jehan.* Et en dessous : *Le dit monseigneur de Berry la donne a monseigneur de Bourgogne* (1). Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré : *Dialogues de S. Grégoire*; plus bas, le chiffre couronné de Léopold I^{er} répété cinq fois et l'inscription : *Bibl. royale* (2).

1303. (1805-08). — S. GRÉGOIRE LE GRAND. Dialogues, en flamand.

1. (F. 1-1^v). Een voerredene op sinte Gregorius dialogus.

2. (F. 2-63). [GRÉGOIRE LE GRAND. Dialogues en flamand].

3. (F. 64-65^v). In de wyhinghen van der kerken, BEDA sermoen.

(1) Cf. BARROIS, *Bibliothèque protypographique*, nn. 569, 751, 1619; *Bulletin de l'Académie royale de Belgique*, t. XI, 1844, p. 424.

(2) Ce volume a été décrit par M. L. DELISLE, *Mélanges de paléographie et de bibliographie*, Paris, 1880, p. 230-31.

Inc. Bruders die vieren te rechte den kerken feesten. *Des.* en sine gherechteheit gheduert in de werelt der werelt.

4. (F. 65^v-66^v). Hoe sente Kateline te Christum bekeert wart. *Inc.* Men leest dat in enen eylande der zee. *Des.* hi se alsoe te sinre bekinnesse gheroepen hadde.

5. (F. 66^v-67). Van sente Loye bisscop. *Inc.* De heyleghe sente Loy was gheboren. *Des.* weder ghewissen waren in den grave.

Parchemin ; 68 feuillets ; 0^m,265 × 0^m,185 ; XIV^e siècle (1388-1395), car f. 42^r, on lit : *Hier es de derde boec van dyalogus ute in dit boec gescreven intiaer ons heren. M.CCC.XCV. op sinte bertelmeus avonde te vespertide*, et f. 63 : *Int iaer ons heren duserent driehondert achtentachtich op den derden dach na alre heilighen dach was dit dyalogus uten latine in dietsche volmaect. Bidt voer denghenen die den arbeit dede.* Deux colonnes ; titre courant. F. 68, il y a cette note de provenance : *Dit boec hoort den broeders van den roeden cloestere toe te sente Pauwels in Zonien, ghevet hem weder.* L'estampille rouge, R.F., de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 2 et f. 67^v. Reliure ancienne restaurée, veau brun estampé.

1304. (2137-38). — S. GRÉGOIRE LE GRAND. Dialogues, en flamand.

1. (F. 2-149). De vier boeken van GREGORIUS dialogen.

Les feuillets 149^v-151^v sont blancs.

3. (F. 152-331). Sinte BEERNAERTS sermonen van den wynter.

Papier, divers filigranes de l'écu de France, de la tête de bœuf ; de-ci de-là quelques feuillets de parchemin ; 331 feuillets ; 0^m,205 × 0^m,14 ; XV^e siècle. F. 1, il y a la note : *Van Gruennendaele*, et f. 331 : *Desen boeck hoort toe den leecken broeders in den Reester die letter Y.* L'estampille rouge, R.F., de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 2 et f. 331. Reliure ancienne fort curieuse, veau brun ; fers estampés et la marque *Gruennendaele* (1).

1305. (15071). — S. GREGORIUS MAGNUS. Homélie, en flamand.

1. (F. 4^v). Note de C. VAN HULTHEM sur ce volume.

2. (F. 5-6^v). Die tafel van sint Gregorius ommelien.

3. (F. 7-7^v). Voersprake op S. Gregorius ommelie in dietsche.

Le feuillet 8 est blanc.

4. (F. 9-244). Sinte GREGORIUS omelien.

Sur les deux plats intérieurs de la couverture, fragments d'un traité de logie et d'un autre de chirurgie.

Papier, au filigrane de la main à l'index surmonté de la croix ; 244 feuillets, plus cinq feuillets blancs à la fin du volume ; 0^m,258 × 0^m,175 ; XVI^e siècle (1510), car f. cc.xlxx de l'ancienne pagination, on lit : *Desen boeck wert ghescreven int jaer ons heeren. XV^e.X. van Sr Iohannen Colyns doen sy out was tvi iaer. Ende sy schinchten den convente in goeden minnen van Jericho opde VIII^{sten} dach in Julio alst viel haers in const Jubileo int jaer XV^e.XI, biddende haerer armer zielen ghetrouw te sine op dat sy mach met Christo leven ten fine Amen. Desen boeck hout*

(1) Voir [J. WEALE], *Bookbindings*, p. 178, n. 339.

inne XXXI quarternen, ende daer es toeghegaen V boecken paupiers ende V blaren. Initiales rouges et bleues; certaines capitales sont ornées et quelques pages sont élégamment encadrées; ancienne pagination à l'encre rouge i-ccxlix. F. 9^v, une miniature représente le Christ. Plus tard, ce volume a appartenu à van Hulthem, l'ex-libris se trouve au verso de la couverture (1). Reliure ancienne, veau brun estampé, sur ais de bois; restes de fermoirs en cuivre.

1306. (II. 1096). — ALULFUS. Gregorialis (2).

Pars secunda. = *PL.*, t. LXXIX, col. 819 sqq.

Parchemin; 112 feuillets; 0^m,333 × 0^m,247; XIII^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et vertes; quelques jolies letrines; signatures i-xix. Ce manuscrit appartenait autrefois à l'abbaye d'Alne (3); puis il a fait partie de la collection Phillipps sous le n° 4677; il a été acquis par la Bibliothèque royale en 1888. Demi-reliure; au dos, le titre doré: *Gregorius in psalmos.*

1307. (II. 1101). — ALULFUS. Liber gregorialis. Pars tercia.

Liber exceptionum ex opusculis beati Gregorii pape super novum testamentum. De quatuor evangelistis et de Domino Salvatore et de omnibus electis per quatuor animalia designatis in Iezechielis Omelia II et III^e et III^e. = *PL.*, t. LXXIX, col. 1137 sqq.

Parchemin; 196 feuillets; 0^m,37 × 0^m,262; XIII^e siècle; deux colonnes; quelques letrines; initiales rouges et vertes; signatures i-xxix. F. 196^v, on lit la note: *Liber sancte Marie de Alna. Si quis eum abstulerit anathema sit.* F. 1, il y a la cote 4682 Ph[illips]. Ce volume a été acquis par la Bibliothèque en 1888. Demi-reliure; toile anglaise, titre doré: *Exceptiones ex S. Gregorio papa.*

1308. (II. 1117). — ALULFUS. Liber Gregorialis, quarta pars.

1. (F. 1^v-141). Liber Gregorialis sententiarum quarta pars, sive ultimum volumen in diversis tractatibus sedecim continens libros (4).

2. (F. 141^v-142). [De priore avaro]. *Inc.* Erat quoddam coenobium cui dum praeesset quidam abbas omnimoda morum honestate praeclarus. *Des.* Nisi liberaliter et benigne publicetur.

3. (F. 142-145^v). Epistola fratris H[ENRICI] de Psalteria domno H. abbati de Sartis de purgatorio. = *PL.*, t. CLXXX, col. 975-76, 987 sqq.

4. (F. 145^v-146^v). [Miracula B. M. Virginis].

a) Fuit in ecclesia beate Dei genitricis que est Dolo monasterio monachus Iosbertus nomine.

(1) *Bibliotheca Hulthemiana*, t. VI, p. 5, n. 17.

(2) Sur les quatre volumes du *Gregorialis* d'Alulfe, cf. *PL.*, t. XXIX, col. 679.

(3) SANDERUS, *Bibl. belg. mss.*, part. II, p. 244.

(4) Cf. *PL.*, t. XXIX, col. 679.

b) Fuere duo fratres germani atque nobiles alter in episcopi promotus dignitatem, alter vero militie vacans.

5. (F. 146^v). [Epistola BERENGARIAE ad Blancam sororem suam] (1).

Parchemin; 146 feuillets; 0^m,347 × 0^m,26; XIII^e siècle; deux colonnes; quelques curieuses letrines; initiales rouges et bleues; signatures I-XVIII, titre courant en rouge. F. 141, on lit : *Liber sancte Marie de Alna*, et f. 1 se trouve la cote 4698 Ph[illipps]. Ce volume a été acquis par la Bibliothèque royale en 1888. Demi-reliure moderne, toile anglaise; au dos, le titre doré : *Gregorialis sive excerpta ex S. Gregorii opusculis*.

1309. (II. 1400). — ALULFUS. Gregorialis. Pars quarta.

1. (F. 1-1^v). Note d'un catalogue imprimé; description en anglais de ce manuscrit.

2. (F. 2). Note latine sur ce manuscrit par Sir TH. PHILLIPPS.

Les feuillets 3-6 sont blancs.

3. (F. 7). Note en français, signée F. A**[LLARD], au sujet de ce volume.

4. (F. 8^v). Notes diverses en latin et praefatio sequentis libelli.

5. (F. 9). Index.

6. (F. 9^v-96). Gregorialis, de sententiis.

Un grand nombre de feuillets ont été arrachés entre les feuillets 17 et 18; il manque la fin du livre I, les livres II et III en entier et le livre IV, sauf une minime partie de la fin.

7. (F. 96-101). Additions au traité précédent.

Parchemin; 101 feuillets; 0^m,328 × 0^m,235; XIII^e siècle; deux colonnes; très jolies letrines; titre courant. F. 9, on lit : *Liber ecclesie sancti Martini Tornacensis*, et f. 101 : *Liber sancti Martini Tornacensis servanti benedictio. Amen* (2). Plus tard, ce volume a fait partie sous le n. 23030, de la collection Phillipps, à Cheltenham. Il a été acquis par la Bibliothèque royale en 1891. Reliure parchemin.

1310. (II. 930). — ALULFUS. Liber Gregorialis. Pars quarta.

[Libri Gregorialis pars quarta, lib. 1, cap. 19-IX cap. 19]. *Inc. mutil. certitudine inter desideria confirmat. Des. mutil. Et rursum fortia....*

Parchemin; 80 feuillets; 0^m,356 × 0^m,25; XIII^e siècle; deux colonnes; jolies initiales rouges et vertes; titre courant en rouge. Ce volume provient de l'abbaye de Villers, mais il ne reste aucune preuve explicite de cette origine. F. 1, se trouve l'ex-libris *Sir T. P. Middle Hill 322*. Ce volume fut acquis en 1888 pour fr. 25. Reliure moderne, chagrin brun estampé.

(1) Cf. plus haut, p. 53, note 5.

(2) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. I, p. 98, n. 48, et L. DELISLE, *Le Cabinet des manuscrits de la Bibliothèque nationale de Paris*, t. II, p. 489-90.

1311. (II. 948). — ALULFUS. Gregorialis liber. Pars quarta.

1. (F. 1^v-141^v). Pars quarta Gregorialis.

2. (F. 142-142^v). Fragment de missel pour le troisième dimanche de l'Avent.

3. (F. 143-143^v). Autre fragment de missel.

Parchemin; 142 feuillets; 0^m,315 × 0^m,23; XIII^e siècle, sauf le feuillet 143 qui est du XI^e; deux colonnes; très belles letrines; signatures I-XVII. F. 1; on lit: *Liber bibliothecae Camberonensis*; f. 2: *Liber sancte Marie de Camberone*, et au bas d'un grand nombre de feuillets: *de Camberone* (1). F. 1, il y a l'ex-libris: *Sir T. P., Middle Hill, 342*. Ce volume a été acquis par la Bibliothèque royale en 1888, pour fr. 60. Reliure moderne, toile, coins en cuir.

1312. (20026-27). — PATERIUS. Gregorialis.

1. (F. 1^v-106^v). Liber testimoniorum veteris Testamenti quem PATERIUS de opusculis S. Gregorii pape Rome cum summo studio excerpere curavit. = *PL.*, t. LXXIX, col. 683 sqq.

2. (F. 107). Epistola IGNATHI ad Iohannem evangelistam (2).

3. (F. 107^v). [Chronologia vitae B. V. Mariae].

4. (F. 107^v). Epistole Marie ad Ignatium et Ignatii ad Mariam (3).

Parchemin; 107 feuillets; 0^m,225 × 0^m,14; XIII^e siècle. F. 1, il y a la note: *Liber sancte Marie*, et f. 107^v: *Liber beate Virginis Marie de Villari in Brabantia ordinis Cisterciensis*. Reliure veau.

1313. (II. 1412). — PATERIUS. Excerptum Gregorii.

1. (F. 1-131^v). Liber parabolarum Salomonis que PATERIUS de opusculis sancti Gregorii excerpere curavit. = *PL.*, t. LXXIX, col. 895-940.

Après les livres de Salomon suivant les *Excerpta* des prophètes, de l'Apocalypse, des Actes des apôtres, des épîtres et des quatre évangiles. = *Ibid.*, col. 939 sqq.

2. (F. 132^v-251^v). Liber testimoniorum veteris testamenti que PATERIUS de opusculis S. Gregorii pape urbis Rome cum summo studio excerpere curavit. = *Ibid.*, col. 683 sqq.

Papier; 251 feuillets; 0^m,315 × 0^m,20; XIII^e siècle; deux colonnes; très jolies letrines; initiales rouges et vertes; titre courant; signatures I-XVIII, I-XV. F. 131^v, il y a la note: *Liber sancte Marie in Tongerlo*. *Si quis eum abstulerit anathema sit. Amen*. Sur le premier feuillet de garde, il y a l'ex-libris *Sir T. P. Middle Hill*, de la collection Phillipps, où ce manuscrit portait le n. 3759; il a été acquis par la Bibliothèque royale en 1891. Reliure du XVII^e siècle, veau brun estampé; fermoirs en cuivre; tranche verte.

(1) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. I, p. 315.

(2) F. X. FUNK, *Patres apostolici*, 1901, t. II, p. 217.

(3) *Ibid.*, p. 217.

1314. (II. 1402). — PATERIUS. Gregorialis.

1. (F. 2-41). Exceptiones ex opusculis beati Gregorii pape de verbis subiectorum capitulorum parabolis. = *PL.*, t. LXXIX, col. 895 sqq.

2. (F. 41-109). Exceptiones de verbis psalmodum. = *Ibid.*, col. 819 sqq.

3. (F. 109-139). Exceptiones in quibusdam verbis Ysaie prophete. = *Ibid.*, col. 939 sqq.

4. (F. 139-187). [Exceptiones de aliis prophetis]. = *Ibid.*, col. 968 sqq.

Parchemin; 187 feuillets; 0^m,345 × 0^m,25; XIII^e siècle; deux colonnes; superbes letrines; initiales rouges et vertes; titre courant en rouge; signatures 1-xxv. Ce volume provient, paraît-il, de l'abbaye de Cambron; plus tard, il fit partie de la collection Philipps dont il porte f. 1, l'ex-libris: *Sir T. P. Middle Hill 333*. Il fut acquis par la Bibliothèque royale en 1891. Cartonnage.

1315. (601-02). — RAGINERIUS et PATERIUS. Tabula in *Moralia super Iob* S. Gregorii.

1. (F. 1). Table des matières.

2. (F. 1^v). Prologus tabule in prescripta *Moralium* beati Gregorii pape super Iob.

3. (F. 2-61^v). [RAGINERIUS]. Tabula, secundum ordinem alphabeti digesta, librorum ac capitulorum, quotacionum* atque sententiarum in eisdem positarum indicativa.

* *cod.*
quotacionem

4. (F. 62-73^v). Proprietates et condiciones rerum quarundam in *Moralibus* beati Gregorii super Iob ac aliis sacre scripture locis repertarum.

4. (F. 74-102^v). Liber testimoniorum veteris et novi testamenti quem venerabilis PATERIUS de opusculis sancti Gregorii pape cum summo studio collegit. = *PL.*, t. LXXIX, col. 683 sqq.

Sur le premier plat intérieur, il y a un court extrait de JEAN DIACRE *in legenda beati Gregorii li. 2^o ca^o. 11*.

Parchemin; 102 feuillets; 0^m,295 × 0^m,21; XV^e siècle; deux colonnes; signature *a-h*. Sur le premier plat intérieur, il y a cette note: *Liber domus sancte Barbare in Colonia ordinis Carthusiensis*. L'estampille rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris, se trouve f. 1 et f. 102^v. Reliure ancienne; ais de bois recouverts de peau de truie; restes de fermoirs en cuivre.

1316. (1651-52). — EUSEBIUS. Homiliae.

1. (F. 1^v). Notes d'ANDRÉ SCHOTT sur ce manuscrit.

2. (F. 2-33^v). [EUSEBII EMESENI homiliae]. *Inc. mutil. in fine hom. 4* (1).

(1) *D. Eusebii Emisseni ep. homiliae*, dans *Maxima bibliotheca veterum patrum*, Lugduni, t. VI, 1677, p. 636-43, homélies V, VI, XI, VII, IX, X; puis, p. 644-656.

3. (F. 33^v-37^v). Omelia de sancto episcopo Maximo et abbate. = *BHL.*, n. 5852.

4. (F. 37^v-50^v). Homeliae ad monachos. = *PL.*, t. L, col. 833-59.

5. (F. 50^v-83^v). [EUSEBII EMESENI homeliae]. — Ce sont les homélies publiées dans *Maxima bibliotheca vet. patr.*, t. VI, p. 656-66, 675-78, 666, 678-79, 667-75, 679-82, puis p. 682, l'homélie *Quid praecipientibus* jusqu'à la page 686. A la fin du *Sermo exhortatorius*, il y a une addition qui ne se trouve pas dans le texte imprimé.

Parchemin; 83 feuillets; 0^m,265 × 0^m,205; IX^e siècle; les rubriques sont en capitales rustiques. F. 1, il y a l'ex-libris des anciens hollandistes ✱ *MS. 201*, et f. 2, la note : *Musei SS. Societatis Iesu Antverp. 1599*. Demi-reliure moderne (1).

1317. (II. 951). — EUSEBIUS. Homeliae.

1. (F. 1). Index et notes diverses.

2. (F. 1^v-24^v). Omelia X^{cem} EUSEBII Cesariensis episcopi ad monachos (2).

3. (F. 25-90). Magistri HUGONIS SANCTI VICTORIS liber de archa Noe. = *PL.*, t. CLXXVI, col. 618 sqq.

4. (F. 90-138^v). Liber magistri RICHARDI de duodecim patriarchis = *PL.*, t. CXCVI, col. 1 sqq.

5. (F. 139). Oratio sancti AUGUSTINI.

Parchemin; 139 feuillets; 0^m,267 × 0^m,175; XIII^e siècle; initiales en diverses couleurs; signatures I-XVIII. F. 138^v, il y a la note : *Liber sancte Marie de Camberone. Quem qui abstulerit anathema sit*, et f. 1 : *Liber sancte Marie de Camberone* (3). L'inscription *De Camberone* est reproduite au bas d'un grand nombre de feuillets. Plus tard, ce volume a formé le n. 346 de la bibliothèque de sir Thomas Phillipps à Cheltenham, d'où il a été acquis en 1888 par la Bibliothèque royale de Belgique pour 60 francs. Reliure ancienne, peau de truie; titre sous corne et entouré de cuivre : *Eusebii ad monachos homelia*.

1318. (II. 1147). — EUSEBIUS. Homiliae.

1. (F. 1-37^v). Omelia sancti EUSEBII Cesariensis episcopi (4).

La série de ces homélies se présente d'une façon fragmentaire, à cause de l'enlèvement de plusieurs feuillets. Il y a aussi plusieurs interversions.

2. (F. 38-53^v). [Collectio canonum].

3. (F. 54-80^v). [Commentarius in librum Iosue].

(1) Voir une description de ce manuscrit *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Brux.*, t. I, p. 292-93.

(2) Publié *Max. bibl. vet. patr.*, tom. cit.

(3) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. I, pp. 354, 358, 364.

(4) Ces homélies sont publiées dans *Max. bibl. vet. patrum*, t. VI, p. 636-56.

Parchemin ; 80 feuillets ; 0^m,177 × 0^m,12 ; XIII^e siècle ; signatures I, II, III, IV, V, F. 1, on lit : *Liber sancte Marie de Alna*, et 4729 Ph[illipps]. Demi-reliure, toile anglaise ; au dos, le titre doré : *Eusebii Caesariensis omeliae*.

1319. (9320-24). — IOHANNES CLIMACUS. Scala.

1. (F. 1^v). Ex revelationibus sancte MECHTILDIS (court extrait) et table des matières.

2. (F. 2-2^v). Epistola IOHANNIS ducis Raythu ad Iohannem montis Synay abbatem.

3. (F. 2^v-50^v). Scala IOHANNIS CLIMACI (1).

4. (F. 50^v-51^v). Vita sub compendio sancti Iohannis Clymaci ... edita a DANIELE humili monacho Raythu. = *BHL.*, n. 4380.

5. (F. 52-55^v). Super vita et regimine reverendi patris et dompni Henrici Ade abbatis huius monasterii XXV^{ti} (2).

6. (F. 56-69^v). IOHANNIS RUSBROCK de virtutibus liber (3).

7. (F. 70-86^v). IOHANNIS RUYSBROEC epistola de sacrosancto sacramento altaris ... translata in latinum (4).

8. (F. 86^v). De septem clausuris.

Parchemin et papier ; 86 feuillets ; 0^m,335 × 0^m,225 ; XV^e siècle (1432), car f. 51^v. on lit la note : *Qui quidem liber scriptus est iussu domni Iohannis de Yride monachi monasterii sancti Laurentii extra muros leodienses per manus Iacobi Utenham. Anno Domini M^oCCCC^oXXXII^o in profesto S. Iohannis Baptiste media aestate. Deo gratias*, et f. 69^v : *Finitus est liber iste ad laudem et gloriam Dei anno Domini 1432^o octava die februarii*. Deux colonnes ; initiales rouges et bleues. Le gril et la cote K-K, 3-9 de Saint-Laurent à Liège se trouvent f. 1^v, et l'on a, f. 70 et f. 86^v, l'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris. Reliure moderne, veau raciné ; au dos, le titre doré reproduit sur une étiquette à l'intérieur du volume : *Ioan. Climaci scala etc.*, en-dessous, les armes de Belgique et l'inscription *Bibl. royale*.

1320. (8261-70). — IOHANNES CLIMACUS, BASILIUS, etc. Traités divers.

1. (F. 1). Table des matières.

2. (F. 2-66). IOHANNES CLIMACUS. De triginta gradibus perfectionis (5).

3. (F. 66-67). Laus et commendatio Iohannis Clymaci.

(1) Voir, pour les éditions de ce traité, GRAESSE, *Tresor des livres rares et précieux*, t. II, p. 202.

(2) Publié par DOM URSMER BERLIÈRE, dans *Analectes pour servir à l'histoire ecclésiastique de la Belgique*, 2^e série, t. IV, 1887, p. 419-38.

(3) Cf. L. SURIUS, *Venerabilis patris D. Ioannis Rusbrochii opera omnia*, Coloniae Agrippinae, 1692, p. 164-88.

(4) C'est le traité plus connu sous le nom de *Speculum aeternae salutis*. Voir SURIUS, *op. cit.*, p. 10-35.

(5) C'est le traité souvent publié sous le titre de *Scala*.

4. (F. 67-68^v). Vita sub compendio sancti Iohannis abbatis sancti montis ... edita a DANIELE humili monacho Raythu. = *BHL.*, n. 4380.
5. (F. 68^v-73). Sermo IOHANNIS CLYMACHI ad pastorem. = *PG.*, t. LXXXVIII, col. 1165 sqq.
6. (F. 74-95). Ammoniciones sancti EFFREM dyaconi (1).
7. (F. 96-123). Regula beati BASILII (2).
8. (F. 124-128). De sancto Basilio Cesariensi episcopo et confesore. = *BHL.*, n. 1022.
9. (F. 129-162). Exameron BASILII episcopi. = *PG.*, t. XXX, col. 870.
10. (F. 162^v-168). Ammonitiones beati Basilii episcopi (3).
11. (F. 168^v-180). Decem omelie beati EUSEBII Emisseni episcopi ad monachos (4).

Parchemin ; 180 feuillets ; 0^m,29 × 0^m,205 ; XV^e siècle ; deux colonnes ; initiales rouges et bleues. F. 180^v, on lit : *Pertinet ad librariam domus fratrum sancti Iheronimi in Traiecto*. Plus tard, ce manuscrit a appartenu aux hollandistes, il porte encore l'ex-libris * *MS. 107* de leur bibliothèque. Reliure ancienne, veau brun estampé.

1321. (11328). — IOHANNES MOSCHUS. Pratum spirituale, en grec.

1. (P. 1-296). Παράδεισος. *Des. mutil.* τὰς ἑβδομάδας νηστεύωω ὥστε νομίζειν τινὰς (5).

Suil la note : *Sequentia desiderantur in codice a Daniele Heschelio, Davidis ex fratre nepote, descripto perinde ut habuit anno 1613.*

2. (P. 297-308). *Initia*, en grec, des 422 chapitres du Παράδεισος.

Papier ; 308 pages ; 0^m,326 × 0^m,210 ; XVII^e siècle. Ce volume provient des anciens hollandistes, la cote * *MS. 93* de leur bibliothèque se trouve au verso de la couverture. Le timbre rouge de la Bibliothèque nationale de Paris, *R. F.*, se voit p. 1 et p. 308. Demi-reliure moderne, dos et coins en peau de truie (6).

1322. (9311-19). — S. ISIDORUS HISPALENSIS. Opera.

1. (Feuillet de garde). Lettre de ROSWEYDE.

2. (F. 1-2^v). Notes tironiennes (7).

(1) Ce sont les sermons indiqués dans *Sancti Ephraem Syri opera omnia*, t. I, Romae, 1732, p. LXXXI, nn. 1-8.

(2) HOLSTEN, *Codex regularum*, p. 67-108.

(3) *Ibid.*, p. 455-64.

(4) Cf. supra, p. 269-70.

(5) Voir, au sujet de ce manuscrit, H. OMONT, *Catalogue des manuscrits grecs de la Bibliothèque royale de Bruxelles*, p. 15, n. 33.

(6) Voir, pour les éditions, HAGIOGRAPHI BOLLANDIANI, *Bibliotheca hagiographica graeca*, p. 102-103.

(7) Voir G. SCHMITZ, *Commentarii notarum tironianarum*, Lipsiae, 1893, p. 9 et tab. 131, 132 ; Dr WILHELM SCHMITZ, *Studien zur lateinischen Tachygraphie*, Forsetzung, 9 pages in-4^o et une planche, en tête du *Programm des Kaiser Wilhelm-Gymnasiums zu Köln. XIII Schuljahr*. Köln, 1881.

3. (F. 3). Hymne à la Vierge. = *RH.*, n. 11108.
 4. (F. 3^v). Table des matières, suivie d'une inscription runique et de sa transcription.
 5. (F. 4-36^v). Beati ESIDORI de officiis (1). = *PL.*, t. LXXXIII, col. 737.
 6. (F. 37-45). Liber proemiorum de libris novi ac veteris testamenti. = *Ibid.*, col. 155 sqq.
 7. (F. 45-57). Vita vel obitus sanctorum qui in Domino preceserunt. = *Ibid.*, col. 130-156.
 8. (F. 57-66^v). ISIDORI Hispalensis allegoriae in sacram scripturam (2). = *Ibid.*, col. 97-130.
 9. (F. 67-90). Liber ESIDORI de natura rerum. = *Ibid.*, col. 963.
 10. (F. 90-106). Differentiae ISIDORI episcopi iunioris Spaniensis. = *Ibid.*, col. 69-98.
 11. (F. 106-107^v). Beati ESIDORI episcopi de solestitio. = *Ibid.*, col. 977.
 12. (F. 107^v-116^v). De proprietate sermonum vel rerum. = *Ibid.*, col. 1319.
 13. (F. 117-123^v). Doctrina et fides ecclesiastica, definitio ecclesiasticorum dogmatum. = *Ibid.*, col. 1227.
 14. (F. 124-128). Glosae spirituales iuxta EUCHERIUM episcopum.
 15. (F. 128^v-130). Sinonima CICERONIS (3).
- Au haut du f. 125, ces vers :

*Angelorum regi Deo iubilemus pariter,
Michaellem venerantes primatem solenniter* (4),

avec neumes-accentés allemands.

Parchemin ; 130 feuillets, plus un feuillet de garde initial ; 0^m,335 × 0^m,215 ; IX^e siècle ; écritures capitale, onciale, minuscule, de différentes mains ; rubriques et titres parfois en vermillon ; figures ff. 70^v, 72, 73^v, 74, 74^v, 78^v, 80^v, 85^v, 89^v. Au haut du feuillet de garde verso, la marque de provenance *W. 180* de l'ancienne bibliothèque des bollandistes, et au bas, cette note du XVIII^e siècle : *Bibliothecae PP. Societatis Iesu domus professae Antverpiensis Ludovicus Nomius Medicinae doctor observantiae testandae ergo L. M. D. D.* Reliure moderne, veau raciné ; au dos, le titre doré reproduit à l'intérieur sur une étiquette en maroquin rouge : *Isidori opera etc. V saec.* ; plus bas, les armes de Belgique et l'inscription *Bibl. royale*.

(1) F. 36^v, en marge, cette note du XVII^e siècle : *Desunt duo capita quae habentur in Parisiensi editione anni 1601.* — Ce sont les chapitres XXVII et XXVIII du livre II, p. 614.

(2) F. 57, en marge, cette note du XVII^e siècle : *Hic liber vocatur in editione Parisiensi anni 1601 Allegoriae sacrae scripturae.* Voir cette édition, p. 515-525.

(3) Voir, sur ce traité, *PL.*, t. LXXXI, col. 359-60, nn. 13-20.

(4) Strophe de l'hymne *Angelorum ordo sacer.* = *RH.*, n. 1059.

1323. (5193). — S. ISIDORUS HISPALENSIS. De quinque libris Moysis.

TITRE. Incipit codex a beato Hisidoro Spaliense episcopo de V libris Moysi vel ceteris libris veteris fundamenti explanatus atque de diversis auctoribus in unum collectus luculentiusque expositus. = *PL.*, t. LXXXIII, col. 207 sqq.

1. (F. 1^v-2). Prologus.
 2. (F. 2). Capitula libri Genesis.
 3. (F. 2-64^v). Liber Genesis. *Des. mutil.* (in libro Numerorum).
- XV. Quinta decima mansio est in rethma que transfertur sonitus sive ... = *PL.*, t. LXXXIII, col. 207-345.

Parchemin; 64 feuillets; 0^m,30 × 0^m,21; X^e siècle; quelques lettrines en toutes couleurs; signatures a-h. F. 1^v, on lit cette note : *Liber Sancte Marie de Sarnaio* (1), *quicumque has litteras deleverit vel hunc librum celaverit vel furatus fuerit anathema sit, Amen* et f. 1 : *Societatis Iesu Lovanii ex dono eximii M. N. Aug. Hunnaci theologi lovaniensis*. Demi-reliure moderne; dos en maroquin rouge, avec le titre doré : *Bⁱ Isidori super quinque libros Moysis, XI saec.*, et le chiffre couronné de Léopold I^{er}.

1324. (8654-72). — S. ISIDORUS HISPALENSIS. Opera.

1. (F. 1-1^v, 208-208^v). Fragments d'un commentaire biblique.
2. (F. 2-108^v). [Collectiones super evangelia] de dictis Agustini, Gregorii, Iheronimi vel ceterorum, id est Euse[bii], Gregorii Nazan[zeni]. *Inc.* In primis mihi necessitatis causa querendum est, preceptor optime, quid sit evangelium. *Des.* qui parce seminat parce et metet.
3. (F. 108^v-118). [Symbola fidei] (2).
 - a) Fides sancti ATHANASI episcopi Alexandrini.
 - b) Exemplum fidei Niceni concilii CCCXVIII episcoporum.
 - c) Fides sancti AMBROSII episcopi.
 - d) Fides sancti GREGORII papa.
 - e) Fides beati GREGORII episcopi Neecessariae.
 - f) Expositio fidei catholice sancti IHERONIMI presbiteri.
 - g) Doctrina ecclesiastica secundum Nicenum concilium.
4. (F. 118-120). De libro BEDAE presbiteri quomodo Amnanus presbiter et abbas scripsit de locis sanctis. = *PL.*, t. XCV, col. 256-58.
5. (F. 120-126^v). [KAROLI MAGNI capitularium] (3).
6. (F. 126^v-128). [KAROLI MAGNI edictum] (4).

(1) C'est l'abbaye des Vaux-de-Cernay. Ce volume ne figure pas dans l'*Inventaire des biens et des livres* publié par M. H. MARTIN, *Bulletin de la Société de l'histoire de Paris et de l'Île de France*, 1886, p. 39-42.

(2) Voir sur ces diverses formules de foi, KATTENBUSCH, *Das apostolische Symbol*, Leipzig, 1897.

(3) Voir *MG.*, *Legum sectio II*, t. I, p. 53-62.

(4) *Ibid.*, p. 62-64.

7. (F. 128). Canon sancti SILVESTRI papae urbis Romae et cclxxxiii episcoporum.

8. (F. 128-131). Epistola sancti HIERONYMI. = *PL.*, t. XXX, col. 288-92.

9. (F. 131). [De canone scripturarum].

10. (F. 131-132). Sententie de expositione sancti ISIDORI super Levitico. = *PL.*, t. LXXXIII, col. 330-33.

11. (F. 132-133). De libro sancti ISIDORI officiorum de clericis. = *Ibid.*, col. 777-79.

12. (F. 133-133^v). Canones varii de clericis (1).

13. (F. 133^v-137^v). Liber generationis Ihesu Christi filii David.

14. (F. 137^v-146). Liber VII INSIDORI de Deo et X nominibus quibus apud Ebreos Deus vocatur. = *PL.*, t. LXXXII, col. 259-74.

15. (F. 146^v-147^v). Prologus [HIERONYMI]. = *PL.*, XXIII, t. col. 935.

16. (F. 148-158^v, 159^v-160^v). [BEDA]. Explanatio sex dierum. = *PL.*, t. XLIII, col. 207-34.

17. (F. 158^v-159^v). De etatibus mundi sex.

18. (F. 160^v-188). [De Genesi] ex dictis Hieromini, Gregorii, Augustini, Isidori.

19. (F. 188-202^v). [ISIDORUS]. Ortus et vita vel obitus sanctorum patrum. = *PL.*, t. LXXXIII, col. 129 sqq.

20. (F. 202^v-203). Dicta AGUSTINI ad praedicandum populum.

21. (F. 203-203^v). [Exorcismus salis].

22. (F. 204). Nomina librorum veteris et novi testamenti.

23. (F. 204^v-207). [De computo].

24. (F. 207^v). Capituli ad tertiam, sextam et nonam.

Parchemin; 208 feuillets; 0^m,265 × 0^m,17; X^e siècle. F. 2, il y a la note : *De libraria sancti Bertini* (2); plus tard, ce manuscrit a appartenu aux anciens hollandistes, car f. 2, on trouve la cote de leur bibliothèque ✱ *MS. 117*. Demi-reliure, dos en maroquin rouge, titres dorés des principaux traités; en dessous, le chiffre couronné de Léopold I^{er}.

1325. (9843-44). — S. ISIDORUS. Etymologiae.

1. (F. 1-2^v). Fragment de calendrier contenant les mois de septembre, de juillet et d'août. On remarque : *Nonis septembris depositio sancti Bertini abbatis*; *Vid. sept. sancti Audomari episcopi et confessoris*; *XVII kal. aug. translatio sancti Bertini abbatis*.

2. (F. 3-253^v). [ISIDORUS]. Etymologiarum libri XX. = *PL.*, t. LXXXII, col. 73 sqq. *Des. mutil.* col. 712 : Gazetum vero regio unde defe[r]tur.

Parchemin; 253 feuillets; 0^m,285 × 0^m,20; X^e siècle: très curieuses lettrines; rubriques en capitales rustiques; tableaux en couleurs. F. 2, il y a la note : *Ex*

(1) Cf. *PL.*, t. LXXXIV, col. 25-26.

(2) Cf. G. BECKER, *Catalogi bibliothecarum antiqui*, Bonnae, 1885, p. 182, n. 52. Peut-être *Bede liber super evangelium*.

Bibliotheca D. D. Ioannis Ptolmaei. L'estampille rouge, *R. F.*, de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 3 et f. 253. Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré : *Isidori Origines, XI saec.*, reproduit à l'intérieur sur une étiquette en maroquin rouge; plus bas, les armes de Belgique et l'inscription : *Bibl. royale*.

1326. (8714-19). — S. ISIDORUS. Soliloquia.

1. (F. 1-27^v). Soliloquia ISIDORI episcopi Hispalensis urbis. = *PL.*, t. LXXXIII, col. 827 sqq.

2. (F. 28-46^v). AMPHLOCHII episcopi Iconii in vita et miraculis sancti patris nostri Basilii archiepiscopi Cappadociae. = *BHL.*, n. 1022.

3. (F. 46^v). De Antichristo.

4. (F. 47-65). [ADALGERUS]. De laude caritatis. = *PL.*, t. CXXIV, col. 915 sqq.

5. (F. 65-66). Lectio scripturarum. *Inc.* Si divine est cognitio beatitudinis.

6. (F. 66-67). Epistola beati MACHARII ad monachos. = *PL.*, t. CIII, col. 451.

7. (F. 67-72). [De virtute psalmodum]. *Inc.* Orant, gemunt, gratulantur.

8. (F. 72-72^v). Laus psalmodum. *Inc.* In psalmis itaque invenies.

9. (F. 72^v-73). De camera Christi, sermo sancti AUGUSTINI episcopi.

10. (F. 73-84). De conflictu vitiorum atque virtutum beati AMBROSII. = *PL.*, t. XL, col. 1091.

11. (F. 84-85). Excerpta de conlatione patrum.

12. (F. 85-86). Sermo AUGUSTINI de defunctis. = *Ibid.*, col. 1341-42.

13. (F. 86-87^v). Admonitio ad monachos. = *PL.*, t. LXVII, col. 1083.

14. (F. 87^v-88). Sermo de caritate beati GREGORII. — Extrait.

15. (F. 89-92^v). [Miracula SS. Gregorii et Sebastiani Suessionibus in monasterio Sancti Medardi]. = *BHL.*, n. 7547.

Parchemin; 92 feuillets; 0^m,237 × 0^m,156; XI^e siècle, sauf les quatre derniers feuillets qui sont du XII^e; quelques lettrines. F. 1 et f. 88, on lit la note : *Liber sancte Rictrudis Marchianensis* (1), notation qui se retrouve en abrégé : *L. S. R. T. D.* au bas d'un grand nombre de pages. L'ex-libris des anciens bollandistes * *MS. 56* se trouve f. 1 et f. 1^v. Demi-reliure, dos en maroquin rouge; au dos, les titres dorés des divers traités et le chiffre couronné de Léopold I^{er} (2).

1327. (9799-809). — S. ISIDORUS. Expositio super Genesim.

1. (F. 1-2^v). 1444. In die sancti Martini Moguntie (3).

2. (F. 3). Notes diverses, exercices de plume.

(1) Ce volume ne se trouve pas dans le catalogue publié par SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, t. I, p. 58 sqq.

(2) Sur ce manuscrit, voir *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Brux.*, t. II, p. 237.

(3) Sur le culte de S. Martin à Mayence, voir l'article du D^r BAUDER, dans *Der Katholik*, 1901, pp. 223-40, 289-304, 425-43.

Les feuillets 3^v-4 sont blancs.

3. (F. 3^v). Contenta.

4. (F. 4-124^v). *Expositio sancti ISIDORI episcopi super Genesim, [aliosque libros Pentateuchi, Iudicum, Regum, Hesdre et Machabeorum]. = PL., t. LXXXIII, col. 207 sqq.*

5. (F. 125-127). [De annulo et baculo. Dialogus inter papam et regem] (1).

6. (F. 128-128^v). Poème.

Inc. Cesar maiores transcendens atque minores

Nutibus alternis dictat scribendo quaternis.

Des. Ipsis de reliquis voto defingere cunctis.

7. (F. 128^v-132^v). [MARTIALIS epigrammata]. — Extraits, savoir : *Epigr.* I, 108-VIII, 35.

8. (F. 133-137^v). [Ecbasis cuiusdam captivi per tropologiam] (2).

9. (F. 137^v-140^v). Enigmata ALDHELMII episcopi. = *PL.*, t. LXXXIX, col. 161 sqq.

10. (F. 141-145). Cuiusdam Astensis poete Novus Avianus (3).

11. (F. 145-145^v). Vers.

Inc. Nulla salus aut pax veniat tibi gens tenebrosa,

Non maneat tecum benedictio gens odiosa.

12. (F. 145^v). [WIDO. De Hastingae praelio] (4).

Le feuillet 146 est blanc.

13. (F. 147-204). Liber LUCH CECILII FIRMIANI LACTANCHII contra gentes. = *PL.*, t. VI, col. 111 sqq.

Parchemin; 204 feuillets; 0^m,295 × 0^m,20; XI^e siècle, sauf les deux premiers feuillets écrits au XV^e; les feuillets 125-204 sont à deux colonnes. Il y a les notes suivantes au sujet de la provenance du volume : F. 3 : *Liber hospitalis sancti Nicolai in opposito Ursicastelli in ripa Moselle siti*; f. 4 et f. 125 : *Iste est liber hospitalis sancti Nicolai prope Cusam*. Le manuscrit a, plus tard, appartenu aux hollandistes, car il porte, f. 3^v et f. 4, la marque ✕ *MS. 105* de leur bibliothèque. L'estampille rouge, *R.F.*, de la Bibliothèque nationale de Paris se voit f. 4 et f. 204^v. Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré qui se trouve reproduit à l'intérieur sur une étiquette de maroquin rouge; en dessous, les armes de Belgique et l'inscription : *Bibl. royale* (5).

(1) Cf. *Notices et extraits des manuscrits de la Bibliothèque nationale de Paris*, t. XXXI, p. 137.

(2) Publié par E. VOGT, *Ecbasis captivi, das älteste Thierepos der Mittelalters*, Strassbourg, 1875.

(3) Publié par E. GROSSE, *Programma des königlichen Friedrichs-Collegiums zu Königsberg*, 1868.

(4) Publié par FRANCISQUE MICHEL, *Chroniques anglo-normandes*, t. III, p. 1-4. Dans ce volume, il n'y a que les 65 premiers vers.

(5) Au sujet de ce volume, voir, outre les ouvrages cités plus haut, J. GRIMM und A. SCHMELLER, *Lateinische Gedichte des X. und XI Jh.*, Göttingen, 1838, p. 286, où ce

1328. (II. 2548). — S. ISIDORUS. Opera.

1. (F. 1-32^v). [Tabula in librum etymologiarum].

A la suite de cette table, on lit cette note écrite au XVI^e siècle : *Hanc tabulam composuit nobis domnus Rolandus decanus tungrensis qui obiit anno Domini M^o CCCC^o III^o circa festum omnium sanctorum.*

Le feuillet 33 est blanc.

2. (F. 34-230^v). YSIDORUS. Ethimologiarum. = *PL.*, t. LXXXII, col. 73 sqq.

Parchemin; 230 feuillets; 0^m,299 × 0^m,20; XI^e siècle, sauf les trente-deux premiers feuillets, qui sont du XIV; deux colonnes. F. 34, on lit : *Liber sancti Iacobi in leodio*; les cotes *E. 14* et *B. 33* se trouvent au f. 1, ainsi que la marque *Philippus Ms. 8219*. Ce volume a été acquis en 1900. Reliure du XVII^e siècle, veau; au dos, le titre doré : *Etymologiae Isidori MS.*

1329. (4687). — S. ISIDORUS HISPALENSIS. Opera.

1. (F. 1^v). Table des matières.

2. (F. 2-184). Libri ethimologiarum YSIDORI episcopi numero XX^{ti}. = t. LXXXII, col. 73 sqq.

Parchemin; 184 feuillets; 0^m,355 × 0^m,25; XII^e siècle; deux colonnes; très belles letrines en toutes couleurs; initiales rouges et bleues, signatures I-XXIII. F. 184^v, il y a la note : [*Liber sancte Marie de Villari in B*] *rabantia*. Reliure ancienne, veau raciné.

1330. (5447-58). — S. ISIDORUS HISPALENSIS. Opera.

1. (F. 1). Note sur la célébration de Pâques, table des matières du volume, des traités de S. Isidore.

2. (F. 2-133^v). YSIDORI Hispalensis episcopi ethimologiarum libri XX. = *PL.*, t. LXXXII, col. 73 sqq.

3. (F. 133^v-137^v). [ISIDORUS]. Liber proemiorum de libris novi ac veteris Testamenti. = *PL.*, t. LXXXIII, col. 155.

4. (F. 137^v-143). [ISIDORUS]. Vita vel obitus sanctorum qui in Domino praecesserunt. = *Ibid.*, col. 129-156.

5. (F. 143-148). [ISIDORUS]. De significationibus nominum. = *Ibid.*, col. 97-130.

6. (F. 148-159). [ISIDORUS]. De natura rerum. = *Ibid.*, col. 963.

7. (F. 159-166). Differentie YSIDORI episcopi iunioris Insipanensis. = *Ibid.*, col. 69-98.

8. (F. 166-166^v). De solstitio, de equinoctio, de anno, de prima die etc. = *Ibid.*, col. 977, 971.

volume est cité d'après l'ancienne cote n. 7925; EDELESTAND DU MÉRIL, *Poésies inédites du moyen âge*, Paris, 1854, p. 271 sqq.; P. THOMAS, *Catal. des manuscrits de classiques latins de la Bibl. roy. de Belgique*, p. 43.

9. (F. 166^v-170^v). [ISIDORUS]. De proprietate sermonum vel rerum. = *Ibid.*, col. 1319.

10. (F. 170^v-173). [ISIDORUS]. Doctrina et fides ecclesiastica, diffinitio ecclesiasticorum dogmatum. = *Ibid.*, col. 1227.

11. (F. 173-174^v). Glose spirituales iuxta Eucharium episcopum (1).

12. (F. 174^v-178^v). Synonima Ciceronis (2).

13. (F. 179-179^v). Epistola sancti AUGUSTINI ad Seleucianam. = *PL.*, t. XXXIII, col. 1086.

Parchemin; 179 feuillets; 0^m,343 × 0^m,25; XII^e siècle; deux colonnes; très belles lettrines en toutes couleurs. F. 179^v, il y a la note : *Liber sancti Petri in Gemblus*. Reliure du XVII^e siècle; veau raciné; au dos, le titre doré : *Isidoru . Ethimolog.*, tranche rouge.

1331. (9384-89). — S. ISIDORUS HISPALENSIS. Opera.

1. (Feuillet de garde, verso). Table des matières.

2. (F. 1-35^v). Tabula in libro ethimologiarum.

3. (F. 36-170). Libri ethimologiarum YSIDORI HISPALENSIS. = *PL.*, t. LXXXII, col. 73 sqq.

4. (F. 171-184). Sinonima sancti YSIDORI. = *PL.*, t. LXXXIII, col. 827 sqq.

5. (F. 184^v-186). Sermo YSIDORI episcopi. = *PL.*, t. LXXXVII, col. 457.

6. (F. 186-231^v). De summo bono sancti YSIDORI episcopi. = *PL.*, t. LXXXIII, col. 537 sqq.

7. (F. 231^v-232^v). Tituli capitulorum libri de summo bono.

Parchemin; 232 feuillets; 0^m,31 × 0^m,225; XII^e siècle, les feuillets 38 à 170; XV^e siècle, les feuillets 1-37, 171 à 232; les feuillets 186-232^v ont été écrits en 1441, comme l'atteste la note suivante, f. 231 : *Liber scriptus necnon finitus in civitate leodiensi per manus Segeri Everardi de Waelwyck, anno Domini M^oCCCC^o quadragesimo primo mensis aprilis die octava*. Les feuillets 1-37^v, 171-232^v sont écrits sur deux colonnes. Sur le troisième feuillet de garde il y a la cote *KK, 4-6* de la bibliothèque de Saint-Laurent à Liège, et au verso du même feuillet, on lit : *Iste liber pertinet monasterio sancti Laurentii prope et extra muros Leodienses, legatus eidem per venerabilem virum magistrum Petrum de Bruxella canonicum sancti Pauli leodiensis. Qui obiit anno Domini M^o.CCCC^o.xlvii^o tercio kalendas februarii. Requiescat in pace. Amen*. F. 1, on lit : *Iste liber pertinet monasterio Sancti Laurentii prope et extra muros Leodienses*. Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré : *Isidori opera*, reproduit à l'intérieur sur une étiquette de maroquin rouge; en dessous, les armes de Belgique et la cote *Bibl. royale*.

1332. (9915). — S. ISIDORUS. Etymologiae.

1. (F. 1). Rubrice libri infrascripti.

(1) Voir plus haut, p. 273, n. 14.

(2) Cf. supra, p. 273, n. 15.

2. (F. 1^v-199). [ISIDORUS. Etymologiarum libri XX]. = *PL.*, t. LXXXIII, col. 73 sqq.

Parchemin; 199 feuillets; 0^m,282 × 0^m,18; XII^e siècle; deux colonnes; superbes lettrines en toutes couleurs; initiales en rouge, bleu et vert; signatures i-xxi. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale, *R.F.*, se trouve f. 1^v et f. 198. Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré reproduit sur une étiquette en maroquin rouge; plus bas, les armes de Belgique et l'inscription *Bibl. royale*.

1333. (9918-19). — ISIDORUS. De virtutibus.

1. (F. 1^v-57). Liber YSIDORI de virtutibus. = *PL.*, t. LXXXIII, col. 537 sqq.

2. (F. 57-57^v). [Epistola FREDERICI Coloniensis episcopi clero Leodiensi] (1).

Parchemin; 57 feuillets, plus quatre de garde en papier; 0^m,294 × 0^m,172; XII^e siècle. F. 1, il y a la note: *Liber sancti Laurentii in Leodio* et la cote *LL*, 2-2. Reliure veau raciné, à filets d'or; au dos, le titre doré reproduit à l'intérieur sur une étiquette en maroquin rouge: *Isidorus de virtutibus XII saec.*, avec les armes de Belgique et l'inscription *Bibl. royale*.

1334. (10098-105). — S. ISIDORUS. Opera.

1. (F. 1-9). Excerpta de libro IULII SOLINI de mirabilibus mundi. *Des. mutil.* ad quos quoniam non est pervenire propter (c. xxxiii, § 15).

2. (F. 9-15). Excerpta de libris FABII CLAUDII FULGENTII viri clarissimi.

3. (F. 15-18). Ex epistolis IERONIMI.

4. (F. 19-28^v). Courts extraits de CICÉRON, *De Senectute*, *De Amicitia*, *de Officiis*, et des discours *pro domo sua*, *in P. Vatinius testem*, *de provinciis consularibus*, *de aruspicum responsis*, *pro Cornelio Balbo*, *pro Celio*.

5. (F. 29-31^v). Extraits divers.

6. (F. 32-32^v). Ex libro ENNODII contra eos qui adversus synodum scribere praesumpserunt (2).

7. (F. 32^v-37). Divers extraits de Pères.

8. (F. 37^v). Lettres de CICÉRON: *Pridie antequam mitteretur in exilium*. — *EIUSDEM* cum senatui gratias egit. — *EIUSDEM* cum populo gratias egit.

9. (F. 38-41). [CLAUDIANI excerpta].

10. (F. 41-42^v). De odis ORATH.

(1) Cette lettre a été publiée diverses fois, MARTENE ET DURAND, *Amplissima collectio*, t. I, p. 674; HARTZHEIM, *Concilia Germaniae*, t. III, p. 291; *PL.*, t. CLXVI, col. 1349; *Analectes pour servir à l'histoire ecclésiastique de la Belgique*, t. VI, p. 51; *Neues Archiv*, t. VII, p. 192.

(2) Voir plus haut, p. 222, n. 1218 (9945-48), 13^e.

11. (F. 43-88^v). Liber sancti ISIDORI super quinque libros Moysi. *Des. mutil.* protinus edum coxit cuius carnes secundum praeceptum angeli. ... = *PL.*, t. LXXXIII, col. 207-381.

Parchemin; 88 feuillets; 0^m,225 × 0^m,152; XIII^e siècle; deux colonnes. F. 1, il y a les notes suivantes : *Liber Carthusiensium prope Leodium*, et *Coll. Societatis Iesu Lov[ani]*. *M. B. YA.* Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré reproduit à l'intérieur sur une étiquette en maroquin rouge : *Excerpta ex Iul. Solino, Cl. Fulgentio etc. XII-XIII saec.*; en dessous, les armes de Belgique et l'inscription : *Bibl. royale* (1).

1335. (21860). — ISIDORUS. Liber soliloquiorum.

1. (F. 1^v). Index.

2. (F. 2-3^v). [Epistola GREGORII magni ad Eulogium Alexandrinum]. = *PL.*, t. LXXVII, col. 1095-99.

3. (F. 3^v-4). THEOPHILUS contra Origenem. = *PL.*, t. XXII, col. 758.

4. (F. 5-6^v). [BERNARDUS] abbas Clarevallensis ... de humilitate et superbia. — Courts extraits.

Le feuillet 7 est blanc.

5. (F. 8-9). Magister HUGO. De VI ydriis. = *PL.*, t. CLXXV, col. 751-53.

6. (F. 9-9^v). IDEM. De confessione. = *PL.*, CLXXVI, col. 549.

7. (F. 9^v-18). Liber soliloquiorum beati YSIDORI Spalensis episcopi. = *PL.*, t. LXXXIII, col. 827 sqq.

8. (F. 18-58). Flores epistolarum IHERONIMI et AUGUSTINI excerpta a magistro STEPHANO.

Parchemin; 58 feuillets; 0^m,222 × 0^m,155; XIII^e siècle; deux colonnes. F. 4, on lit : *Liber sancte Marie de parco, si quis abstulerit anathema sit, fiat*, et f. 58^v : *Liber S. Marie de parco, si quis abstulerit anathema sit*. A l'intérieur de la couverture, il y a la cote : *I. theca III*, et l'ex-libris : *Ex bibliotheca P. P. C. Lammens*, n. 19. Ce volume a été acquis par la Bibliothèque royale en 1863, à la vente des livres de Van Alstein pour fr. 13,20. Reliure veau; au dos, le titre doré : *Tract. Mora. diver. vol. III*; sur les deux plats les armoiries de l'abbaye de Parc ont été grattées.

1336. (II. 959). — S. ISIDORUS HISPALENSIS. Opera.

1. (F. 1-40). Libellus de moribus (2). = *PL.*, t. LXXXIII, col. 537 sqq.

2. (F. 40-52^v). [Excerpta ex ISIDORI libris etymologiarum]. = *PL.*, t. LXXXII, col. 73 sqq.

3. (F. 52^v-61). Expositio canonis. *Inc.* In virtute sancte crucis et sacramento altaris. *Des.* In duobus primis est convenientia, in tercio differentia.

(1) Voir, au sujet de ce manuscrit, P. THOMAS, *Catal. des manuscrits de classiques latins de la Bibliothèque royale de Bruxelles*, p. 63.

(2) Cet opuscule est formé de 54 chapitres tirés des livres I et II des *Sententiarum libri III* d'Isidore de Séville.

4. (F. 61-75^v). Soliloquium domni DROGONIS prius abbatis sancti Iohannis Laudunensis, dein Hostiensis episcopi de sacramento dominice passionis. = *PL.*, t. CLXVI, col. 1513 sqq.

5. (F. 75^v-85^v). [ROBERTI FRETELLI] liber de situ terre iherosolimittane. = *PL.*, t. CLV, col. 1039 sqq.

6. (F. 86-105). Responsio cuiusdam ad quendam monachum Cisterciensis ordinis qui quesierat ab eo quid significationis habeant ... signa ... Sauli prophetata. *Inc.* Dilectissimo et digne diligendo fratri H. frater indignus suo prenomine ... quaestionem illam de Saule quam a me minimo sciscitatus es.

7. (F. 105^v-110^v). [Commentarius in gesin].

8. (F. 111-148). [Explanatio super quinque libros Moysi]. *Inc.* Sequens explanatio ... idecirco capitulatio dicitur, quia capitulatum id est breviter atque compendiose universa perstringit.

9. (F. 148^v). Sententia septem sapientium. = *PL.*, t. V, col. 879.

10. (F. 148-148^v). Quare sic hore cantentur et *Pater noster*, en vers.

Parchemin; 148 feuillets; 0^m,243 × 0^m,16; XIII^e siècle; quelques lettrines; initiales rouges et vertes. F. 1 et 148^r, il y a la note: *Liber sancte Marie de Camberone* (1). F. 148^v, on lit aussi: *Godfredus Carlier est possessor huius libri*. L'ex-libris: *Sir. T. P. Middle Hill. 354* se trouve f. 148. Ce volume a été acquis par la Bibliothèque royale en 1888 pour 45 francs. Reliure moderne, veau brun estampé, fermoirs en cuivre ciselé avec l'inscription en relief: *Reg. Bibl. Belgica*. On a gardé l'ancienne étiquette sous corne et entourée d'un cadre en cuivre: *Ysidorus de moribus*.

1337. (II. 1069). — ISIDORUS. Liber differentiarum.

1. (F. 1-11^v). Liber differentiarum sancti YSIDORI episcopi. = *PL.*, t. LXXXIII, col. 9 sqq.

2. (F. 11^v-58^v). Liber scintillarum AUGUSTINI de diversis doctrinis.

Sous ce titre, il y a un grand nombre de courts extraits des Pères sur diverses matières ascétiques.

3. (F. 59-64). Passio sanctorum apostolorum beati Petri et Pauli. = *BHL.*, n. 6657.

4. (F. 64-65). Dedicatio sancti Michaelis archangeli. = *BHL.*, n. 5948.

5. (F. 65-67^v). Passio sancti Andree apostoli. = *BHL.*, n. 428. *Inc.* Quod oculis nostris videmus.

6. (F. 67^v-72). Actio seu praedicatio sancti Iohannis apostoli. = *BHL.*, n. 4320.

7. (F. 72-74). Passio sancti Iacobi apostoli fratris sancti Ioannis evangeliste. = *BHL.*, n. 4057.

1) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. I, p. 359.

8. (F. 74^v-75). Passio S. Iacobi apostoli. = *BHL.*, n. 4094.
9. (F. 75-78). Passio S. Bartholomei apostoli. = *BHL.*, n. 1002.
10. (F. 78-82). Passio S. Mathei apostoli et evangelistae. = *BHL.*, n. 5690.
11. (F. 82-86). Passio apostolorum Symonis et Iudae. = *BHL.*, n. 7749.
12. (F. 86-87). Assumptio S. Philippi apostoli. = *BHL.*, n. 6814.
13. (F. 87^v-94). Passio S. Thomae apostoli. = *BHL.*, n. 8136.
14. (F. 94-97). Passio sancte Margarete virginis. = *BHL.*, n. 5303.
15. (F. 97^v). Oratio ad sanctam Margaretam.

Parchemin; 97 feuillets; 0^m, 19 × 0^m, 128; XIII^e siècle. Les feuillets 59-97 sont palimpsestes, l'ancien traité qui s'y trouvait est écrit en caractères anglo-saxons. Ce volume provient de l'abbaye d'Alne, mais il ne reste aucun indice extérieur de cette provenance; plus tard, il fut le n. 4649 de la collection Phillipps, il a été acquis par la Bibliothèque royale en 1888. Reliure anglaise, cuir brun gaufré; au dos, le titre doré : *Isidori liber differenciarum* (1).

1338. (II. 1007). — ISIDORUS HISPALENSIS. Etymologiae.

1. (F. 1). Fragment d'un testament passé à Tournai au XVII^e siècle. Il y est question des membres de la famille Pottier.
2. (F. 2-225^v). [ISIDORI EPISCOPI LIBRI ETYMOLOGIARUM]. = *PL.*, t. LXXXII, col. 73 sqq.
3. (F. 226^v). Quelques vers et autres notes, entre autres ce distique :

Qui bona vina bibit paradysum tucius ibit
Et quia credo mori potabo de meliori.

Parchemin; 226 feuillets; 0^m, 313 × 0^m, 217; XIV^e siècle; deux colonnes; quelques jolies lettrines; initiales rouges et bleues. Au deuxième plat intérieur de la couverture, il y a la note : *Liber sancti Martini Tornacensis, servanti benedictio, auferenti maledictio* (2). L'estampille *Sir T. P. Middle Hill* se trouve f. 2; ce volume portait dans la bibliothèque Phillipps le n. 2054, il a été acquis par la Bibliothèque royale en 1888 pour fr. 40. Reliure ancienne restaurée; ais de bois recouverts de peau de truie estampée.

1339. (2864-71). — ISIDORUS. Opera.

1. (F. 1^v). Table des matières.
2. (F. 2-78). Vita beatissime Angele de Fulgineo. = *BHL.*, n. 456.
Les feuillets 78^v-80^v sont blancs.
3. (F. 81-95). Vita fratris Rogerii. = *BHL.*, n. 7289.

(1) Ce manuscrit est décrit dans *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Brux.*, t. II, p. 504-5.

(2) Cf. A. D'HERBOMEZ, *Les Manuscrits de Saint-Martin de Tournai actuellement conservés à la Bibliothèque royale de Bruxelles*, p. 12-13.

4. (F. 95^v-110). Vita Elisabeth sanctimonialis in Erkenrode, ordinis Cisterciensis, Leodiensis dyocesis. = *BHL.*, n. 2484.

Les feuillets 111-112^v sont blancs.

5. (F. 113-117^v). [HUGO DE SANCTO VICTORE]. Soliloquium dilectionis. De arra anime. = *PL.*, t. CLXXVI, col. 951.

6. (F. 117^v-128^v). Liber secundus soliloquiorum sancti ISIDORI. = *PL.*, t. LXXXIII, col. 845 sqq.

7. (F. 128^v-138). Excerpta de libro IOHANNIS CASSIANI continente XXIII^{or} collationes Patrum. = *PL.*, t. XLIX, passim.

8. (F. 138-147). Excerpta ex omeliis beati GREGORI pape super Ezechielem. = *PL.*, t. LXXVI, passim.

9. (F. 148^v-158). Excerpta ex libris confessionum sancti AUGUSTINI episcopi.

10. (F. 158-163^v). Table alphabétique.

Parchemin; 163 feuillets, plus deux de garde à la fin; 0^m.18 × 0^m.12; XV^e siècle (1409), car on lit, f. 78: *Explicit anno Domini M^oC^oC^oC^o. IX^o circa festum omnium sanctorum per manus fratris Arnoldi dicti Cortte* (1). F. 1^v, il y a la note: *Liber monasterii sancti Pauli in Zonia sive Rubevallis, reddatur ei*, et f. 178: *Liber monasterii rubece vallis in Zonia prope Bruxellam*. L'estampille rouge, *R. F.*, de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 2 et f. 162^v. Demi-reliure moderne, dos en maroquin rouge avec les titres des divers traités (2).

1340. (7997-8002). — ISIDORUS. Etymologiae, et autres traités de divers auteurs.

1. (F. 7-7^v). Table des chapitres de l'ouvrage suivant.

Le feuillet 8 est blanc.

2. (F. 9-109^v). S. ISIDORI HISPALENSIS ethymologiarum libri XX. = *PL.*, t. LXXXII, col. 73 sqq.

Les feuillets 110-112^v sont blancs.

3. (F. 113-142^v). Cronica fratris MARTINI penitentiarii (3).

4. (F. 143). [De Nicolao III, Martino IV et Honorio IV].

Les feuillets 143^v-146^v sont blancs.

5. (F. 147-230). Summa collationum IOHANNIS GALLENIS (4).

6. (F. 231-249^v). IACOBUS DE CESULLIS. De ludo sacchorum (5).

Les feuillets 250-253^v sont blancs.

(1) Cf. le n. 2741-47 et HAGIOGRAPHI BOLLANDIANI, *Anecdota ex codicibus Iohannis Gielemans*, pp. 178-9, 189, 218.

(2) Voir une description de ce manuscrit dans *Catal. codd. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. I, p. 346-47.

(3) Sur les diverses éditions de la chronique de Martinus Polonus, voir POTTHAST, *Bibliotheca historica medii aevi*, 2^e ed., t. I, p. 771-72.

(4) Cf. BRUNET, *Manuel du libraire*, 5^e éd., t. V, p. 592.

(5) Voir, sur ce traité de Jacques de Cessoles, BRUNET, *Manuel du libraire*, 5^e éd., t. III, p. 480 sqq.

7. (F. 254). Epistola ARISTOTELIS ad Alexandrum (1).

8. (F. 254-259^v). Epistola beati AMBROSII missa ad imperatorem (2).
Inc. Scripsisti nunc mihi Alcobacie.

Papier, au filigrane de la tête de bœuf; 259 feuillets; 0^m,295 × 0^m,205; XV^e siècle (1456), car on lit, f. 109^v : *Hic liber scriptus est per fratrem Nycholaum de Halen canonicum regularem ordinis premonstratensis monasterii Tongerlensis professum finivitque eum Dole in Burgundia nonas decembris anno lvi^{to}*; deux colonnes. F. 1 et 2, on lit : *Pro domno Arnolde Dyest abbate Tongerlensi* (3). Demi-reliure moderne; au dos, les titrés dorés des divers traités et le chiffre couronné de Léopold I^{er}.

1341. (II. 2433). — S. ISIDORUS. Opera.

1. (F. 1-104). Liber sententiarum beati YSIDORI episcopi. = *PL.*, t. LXXXIII, col. 537 sqq.

2. (F. 104^v-131^v). Liber de humana miseria a Lothario, diacono cardinali sanctorum Sergii et Bachi, qui postea Innocentius papa tercius appellatus est. = *PL.*, t. CCXVII, col. 701 sqq.

3. (F. 132-330). Summa seu compendium theologicæ veritatis, cuius auctor ab aliquibus sanctus Thomas de Aquino, ab aliis autem Ulricus de Argentina estimatur (4).

Papier, filigrane de la tête de bœuf surmontée d'une croix; 330 feuillets; 0^m,315 × 0^m,21; XV^e siècle (1470), car on lit : *Per fratrem P. M. d. l. p. i. u. p. in die Antonii abbatis anno Domini M^o cccc^o lxx^o*, et t. 131^v : *Per manus fratris P. M. d. i. p. B. p. in die Kunegundis virginis anno Domini M^o cccc^o lxx^o*. Deux colonnes. Ce volume a été acheté fr. 418 à une vente chez Fiévez, le 22 mars 1900 (n. 1029 du catalogue). Reliure ancienne; peau de truie estampée, coins et fermoirs en cuivre ciselé, avec la devise : *O mater Dei miserere mei*.

1342. (8720). — S. ISIDORUS. De summo bono.

1. (F. 1^v et 93). Prière pour la bonne mort, en flamand.

Les feuillets 2-5 sont blancs.

2. (F. 6). Capitula sive rubrice sancti Ysidori episcopi.

3. (F. 6^v-93). Liber sententiarum beati YSIDORI Hispalensis episcopi qui intitulatur de summo bono. = *PL.*, t. LXXXIII, col. 537 sqq.

Papier, au filigrane de la tête de bœuf; 93 feuillets; 0^m,21 × 0^m,145; XV^e siècle (1483), car on lit, f. 93 : *Finitus et scriptus per manus fratris Adriani de Moye professi huius domus a prima fundatione quintus in ordine, anno actatis sue lxxvj^o, professionis vero sue liiij^o. Scriptus et finitus ut supra anno Domini M^o cccc^o. lxx^o iii circa festum epyphanii Domini anno quo supra*. Reliure ancienne, veau estampé; fermoirs en cuivre.

(1) Sur la correspondance d'Aristote et d'Alexandre, cf. FABRICIUS-HARLES, *Bibliotheca graeca*, 1793, t. III, p. 277.

(2) Cette lettre n'est pas de S. Ambroise de Milan.

(3) Arnold Streeters fut de 1530 à 1560 le XXXIII^e abbé de Tongerlo.

(4) Sur ce traité encore inédit d'Ulric de Strasbourg, voir QUÉTIF-ECHARD, *Scriptores ordinis praedicatorum*, t. I, p. 536.

1343. (668). — S. ISIDORUS HISPALENSIS. Liber etymologiarum.

1. (F. 1-3). Epistolae ISIDORI ad Braulionem et BRAULIONIS ad Isidorum. = *PL.*, t. LXXXII, col. 73-74.

2. (F. 3-202^v). Liber ethimologiarum beati Isidori episcopi. = *PL.*, t. LXXXII, col. 74 sqq.

Parchemin; 202 feuillets; 0^m,295 × 0^m,215; XV^e siècle; deux colonnes. Ce volume a appartenu au prieuré de Corsendonck, car sur le plat de la couverture, une étiquette sous corne porte l'inscription: *Ysidorus ethimologiarum. In Korsendonck.* Demi-reliure moderne; dos en maroquin rouge, avec le titre doré: *Bi Isidori liber Ethimologiarum, saec. XV*; plus bas, le chiffre couronné de Léopold I^{er}.

1344. (3553-57). — S. ISIDORUS. Opera.

1. (F. 1^v-2). Table des matières de la partie du volume qui va du f. 184^v au f. 282.

2. (F. 2^v). Table des traités contenus dans le volume.

3. (F. 3-82). [BERTHORIIUS]. Repertorium morale (1).

4. (F. 83-91^v). Table du précédent traité.

Le feuillet 92 est blanc.

5. (F. 93-99^v). Que et quare mulieres sunt fugiende. *Inc.* Igitur quod ad tue petitionis instantiam vigili mente conscripsimus. *Des.* ad expectandum nobilissimum diem quem nobis concedat puer ille Ihesus Christus qui venit in nomine Domini. Amen.

6. (F. 99^v-100). [De nativitate Antichristi].

Les feuillets 100^v-102^v sont blancs.

7. (F. 103-112). Tractatus de modo ascendendi ad vitam. *Inc.* Ecce describo eam tibi tripliciter.

8. (F. 113-122^v). Moralitates Iob edite a PETRO BLESENSI. = *PL.*, t. CCVII, col. 795.

9. (F. 123-172). S. YSIDORI liber de quatuor virtutibus. = *PL.*, t. LXXXIII, col. 537 sqq.

Les feuillets 172^v-173^v sont blancs.

10. (F. 174-175^v). Meditacio devota a sacerdote celebraturo.

11. (F. 175^v-177). Orationes de sacro altaris sacramento iuxta litteras contentas in hoc (*sic*) dictione Ihesus.

12. (F. 178-183^v). Liber beati AUGUSTINI de vita christiana. = *PL.*, t. XL, col. 1031.

13. (F. 184-184^v). Speculum BERNARDI. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 1175.

14. (F. 184^v-193^v). Extraits des Pères.

15. (F. 194-209). Epistola de obitu beati Ieronimi per EZEBIUM (*sic*) eiusdem discipulum. = *BHL.*, n. 3866.

(1) Sur les éditions, voir BRUNET, *Manuel du libraire*, 5^e éd., t. I, p. 818.

Les feuillets 209^v-213^v sont blancs.

16. (F. 214-267). Liber de sacramento Eucharistiae.

17. (F. 267^v-269). [De Sibillis] sicut depicte sunt Rome in camera reverendissimi domini cardinalis de Ursinis cum addicionibus de cisdem retro chorum ecclesie Coloniensis.

18. (F. 270-282). [De cognitione Dei]. *Inc.* Beati qui habitant in domo tua Domine. *Des. mutil.* Creaturarum visibilium et invisibilium, caelestium, terrestrium non esse tamen nisi...

Papier, aux filigranes de l'ancre et de la tête de bœuf surmontée d'une croix ; 282 feuillets ; 0^m,29 × 0^m,20 ; XV^e siècle ; deux colonnes, sauf les f. 93-99. Demi-reliure moderne, dos en maroquin brun ; titres dorés sur le dos ; plus bas, le monogramme couronné de Léopold I^{er}.

1345. (4485). — IULIANUS TOLETANUS. Opera, et autres traités.

1. (F. 2-7). [Epistola IULIANI Toletani]. = *PL.*, t. XCVI, col. 453.

2. (F. 7^v-8^v). Capitula libri de origine mortis humane.

3. (F. 8^v-97^v). Liber prognosticos de origine mortis humane. = *Ibid.*, col. 461 sqq.

4. (F. 98-142^v). Liber florum collectus et continuatus de diversis libris summi et incomparabilis doctoris AUGUSTINI.

5. (F. 143-153^v). Extraits du livre des *Confessions* de S. AUGUSTIN. *Des. mutil.* ad te esse conversum. Itaque concitus... (Lib. VIII).

Parchemin ; 153 feuillets ; 0^m,16 × 0^m,10 ; XIV^e siècle ; titre courant en rouge. Au sujet de la provenance, il y a les notes suivantes ; f. 2 : *Pro conventu fratrum minorum opidi Lovaniensis* ; f. 1 : *Bibliothecae lovanij fratrum min. Recoll. conventus SS. trinitatis*, et sur le plat intérieur l'ex-libris imprimé : *Bibliothecae FF. Min. Recollect. Lovan. ad SS. Trinit. renov. et auctae 1791*. Reliure ancienne, ais de bois recouverts de veau brun estampé, fermoir en cuivre.

1346. (19609). — PAUL OROSE. Fragments des *Historiae adversus paganos*.

Parchemin ; 2 feuillets ; 0^m,22 × 0^m,10 ; VII^e siècle ; deux colonnes ; onciales. Ces fragments se trouvaient autrefois dans le volume coté 19623-26 (1) qui provient de l'abbaye de Stavelot et qui a été acquis à une vente à Gand, le 25 janvier 1847, pour fr. 95 (2). Demi-reliure moderne, dos en maroquin rouge (3).

(1) Voir plus haut, p. 102, n. 1038.

(2) N. 41 du *Catalogue d'une belle collection de livres et de manuscrits précieux sur vélin*, Gand, 1847, p. 11.

(3) A ce même manuscrit appartiennent les feuillets qui se trouvent au British Museum et qui sont décrits par Polain, *Bulletin de l'Académie royale des Sciences, des Lettres et des Beaux-Arts de Belgique*, t. XVI, 2^e partie, 1849, p. 552 sqq. avec un fac-simile, et dans *Catal. of anc. mss. in Brit. Mus. Latin.*, pl. VI ; cf. PERTZ, *Archiv.*, t. VII, 1839, p. 34 ; C. ZANGEMEISTER, *Paulus Orosius*, p. XI. M. Ém. Châtelain vient de retrouver dans le ms. latin 10399 de la Bibliothèque nationale de Paris un autre feuillet du même manuscrit, voir *Journal des Savants*, mai 1902.

- 1347.** (9170-73). — OROSIUS, FRELCULFUS. *Historiae*.
 1. (F. 1-1^v). Fragment de bréviaire, avec neumes.
 2. (F. 2). Note sur Orose.
 3. (F. 2^v-55^v). *Hystoriarum PAULI HOROSII presbiteri adversus paganos libri numero septem.* = *PL.*, t. XXXI, col. 663 sqq.
 4. (F. 55^v-56^v). *FULGENTIUS episcopus de abstrusis et inusitatis nominibus.*
 5. (F. 57-111). *FRELCULFUS. Libri hystoriarum.* = *PL.*, t. CVI, col. 917 sqq.

Parchemin; 111 feuillets; 0^m,358 × 0^m,238; XII^e siècle; deux colonnes; quelques lettrines. Ce volume provient de Saint-Laurent à Liège, la cote de sa bibliothèque *L-L, 3-3* se trouve f. 1 et f. 2, la note : *Sancti Laurentii extra muros Leodienses*. Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré : *Orosii hist., Fulgentius, Fregulphus*, reproduit à l'intérieur sur une étiquette en maroquin rouge; plus bas, les armes de Belgique, et l'inscription *Bibl. royale*.

- 1348.** (9531-32). — OROSIUS, FRELCULFUS. *Chronicon*.
 1. (F. 1^v-77^v). *Hystoriarum PAULI HOROSII presbiteri adversus paganos libri numero septem* (1). = *PL.*, t. XXXI, col. 663 sqq.
 2. (F. 77^v-147^v). *Liber FRELCULFI historiographi.* = *PL.*, t. CVI, col. 917 sqq.

Parchemin; 147 feuillets; 0^m,335 × 0^m,235; XII^e siècle; deux colonnes; signatures i-xi; très curieuses lettrines en toutes couleurs, entrelacées de figures d'animaux. F. 1, il y a les notes suivantes : *Abrahami Ortelij. Redemi in auctione publica M.D.XCVII, VII octobr. Iohannes Livineius. — Collegii Societatis Iesu Antverpiae 1599, D.P.* Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré qui se trouve aussi à l'intérieur sur une étiquette de maroquin rouge : *P. Orosii libri. VII. Freculfi chronicon*; en dessous, les armes de Belgique et l'inscription *Bibl. royale*.

- 1349.** (5424-25). — OROSIUS, FRELCULFUS. *Historiae*.
 1. (F. 1-53^v). *Historiarum PAULI HOROSII prespiteri adversus paganos libri numero septem.* = *PL.*, t. XXXI, col. 804. *Inc. mutil. cum eo tunc perisse viderentur.*
 2. (F. 54-124^v). *FRELCULFI historia.* = *PL.*, t. CVI, col. 917.

Parchemin; 124 feuillets; 0^m,324 × 0^m,25; XII^e siècle; deux colonnes; très jolies lettrines en toutes couleurs; signatures i-xvii. F. 124^v, on lit : *Cenobium Gemblacense me habet*. Reliure veau raciné; au dos, le titre doré : *Freculf. historic.*

- 1350.** (9070-77). — OROSIUS. *Chronica*.
 1. (F. 1^v-2^v). Notes diverses sur Orose, Flavius Josèphe et d'autres chroniqueurs.
 2. (F. 3-102). *Chronica OROSII.* = *PL.*, t. XXXI, col. 613 sqq.

(1) Entre les ff. 75^v et 76, il y a une grande lacune, soit les pp. 561-576 de l'édition d'Havercamp.

3. (F. 103-152^v). HIERONYMUS. Liber chronicorum. = *PL.*, t. XXVII, col. 675 sqq.
4. (F. 152^v-157^v). PROSPERI chronographia. = *Ibid.*, col. 703.
5. (F. 158-258^v). Chronographia SIGEBERTI monachi Gemblacensis (1).
6. (F. 259-353^v). VALERII MAXIMI factorum et dictorum memorabilium liber.
7. (F. 353^v). II liber IULII CESARIS de bello gallico a seipso confectus (2). — Fragment.
8. (F. 354-359). Vita sancti Gaugerici episcopi et confessoris. = *BHL.*, nn. 3286 et 3287.
9. (F. 359-360). Infra octavas lectiones. [Miracula post mortem edita]. = *BHL.*, n. 3289.
10. (F. 360-362). Elevatio S. Gaugerici episcopi et confessoris. = *BHL.*, n. 3291.
11. (F. 362-364^v). Haec sunt quaedam miracula B. Gaugerici. = *BHL.*, n. 3290.
12. (F. 364^v). [Series episcoporum Cameracensium] (3).

Parchemin; 364 feuillets; 0^m,335 × 0^m,227; XIV^e siècle, car, dans la série des évêques de Cambrai se trouve Pierre de Mirepois (1309-1324); quelques letrines, initiales rouges et bleues, ancienne pagination 5-222. F. 3, on lit: *Collegii Societatis Iesu Brugis*, et f. 1: *Hic ms. codex, altero eiusdem argumenti a Pamelio similiter dato recentior, multa habet adiecta a monacho, ut apparet Blandiniensi vel Affligemensi, ab anno Christi 1093 aut circiter, quae in editione Miraei desiderantur.* Et plus bas: *La célèbre chronique de Sigebert de Gembloux est contenue dans ce volume. Elle se trouve à la page lvi 2^e série. B. C. Dumortier, 1833.* Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré: *Paulus Orosius, Eusebii et aliorum Chronica*; en dessous, les armes de Belgique et la cote *Bibl. royale* (4).

1351. (8860-67). — FORTUNATUS, SEDULIUS, etc. Hymni.

1. (F. 1). Fragment du poème de Judith et d'Holopherne (5).
2. (F. 1^v-6^v). [Versus de Iacob et Ioseph]. = *RH.*, n. 20403.
3. (F. 6^v-7^v). De diebus tredecim. = *Ibid.*, n. 15430.
4. F. 7^v-8^v). De annuntiatione sanctae Marie. = *Ibid.*, n. 1071 (inédit).
5. (F. 9-10). De fecunditate sanctae Mariae. = *Ibid.*, n. 41.

(1) Publiée *MG.*, Scr. t. VI, p. 300 sqq.

(2) En marge, on a ajouté, au XVI^e siècle, la note suivante: *Reliquum huius paginis (sic) reperiuntur in altero libro ubi historie urbis Rome et Alexandri contente sunt, signatus est 159.*

(3) Publiée *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. II, p. 267.

(4) Voir ce manuscrit décrit dans *MG.*, Scr. t. VI, p. 288-89; *Cat. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. II, p. 266-67; P. THOMAS, *Catalogue des manuscrits de classiques latins de la Bibliothèque royale de Bruxelles*, p. 29.

(5) Publié par DÜMMLER, *Zeitschr. f. deutsches Alterthum und deutsche Litteratur*, t. XXIII, 1879, p. 268.

6. (F. 10-11). De nativitate Christi. = *Ibid.*, n. 937 (inédit).
7. (F. 11-12^v). De habitu et conversatione monachorum.
8. (F. 12^v-14). De accusatione hominis erga Deum. = *RH.*, n. 1468 (inédit).
9. (F. 14^v-15, 22). Item unde supra. = *Ibid.*, n. 1462 (inédit).
10. (F. 16-17). De die iudicii. = *Ibid.*, n. 1240 (1).
11. (F. 17-18). De accusatione facinoris. = *Ibid.*, n. 1461 (inédit).
12. (F. 18-19^v). De sancta Hierusalem caelesti. = *Ibid.*, n. 844.
13. (F. 19^v-20^v). [RABANUS MAURUS]. De caritate et avaritia. = *RH.*, n. 866.
14. (F. 20^v-21^v, 16). De laude et preces sanctae Mariae. = *Ibid.*, n. 1626 (inédit).
15. (F. 22-23^v). De commendatione unius cuiusque animae. = *Ibid.*, n. 718 (inédit).
16. (F. 23^v-24^v). [SĒDULIUS]. De nativitate Domini. = *Ibid.*, n. 26.
17. (F. 24^v-26^v). De Enoch et Haeliae. = *Ibid.*, n. 1241 (inédit).
18. (F. 26^v-27^v). De castitate iuvenum. = *Ibid.*, n. 1446.
19. (F. 27^v-28^v). De passione ac resurrectione Domini. = *Ibid.*, n. 1527.
20. (F. 28^v-29^v). De Christo Domino. = *Ibid.*, n. 764 (inédit). *Des. mutil.* parcat iudicio. Salvator...
21. (F. 30-31). De sancto Iohanne. = *Ibid.*, n. 994 (inédit).
22. (F. 31-32). De adventu Domini. = *Ibid.*, n. 16783.
23. (F. 32-33). De castitate corporis. = *Ibid.*, n. 16392 (2).
24. (F. 33-33^v). [EUGENIUS]. De aebrietate cavenda (3).
25. (F. 33^v). Item contra crapulam.
26. (F. 33^v-34^v). [EUGENIUS]. Precepta salutis (4).
27. (F. 34^v-35^v). Magister adortans discipulos (5).
28. (F. 35^v-36). [EUGENIUS ad Christum]. = *RH.*, n. 17442.
29. (F. 36-37). [RABANUS]. De resurrectione Domini. = *Ibid.*, n. 19931.
30. (F. 37-37^v). [FORTUNATUS]. De passione Domini. = *Ibid.*, n. 14481.
31. (F. 38-39). De laude Domini. = *Ibid.*, n. 1179 (inédit).
32. (F. 39-40). De obitu Karoli (6).

(1) Aux éditions citées par M. le chanoine Chevalier, ajoutez A. VAN HASSELT, *Annuaire de la Bibliothèque royale de Belgique*, t. XII, 1851, p. 232-38.

(2) SIRMONDUS, *Opera varia*, t. II, p. 611.

(3) Aux éditions citées par M. Chevalier, ajoutez HAGEN, *Carmina mediæ ævi*, p. 96-97.

(4) Voir HAGEN, *Carmina mediæ ævi*, p. 97-98.

(5) MAI, *Auctor. classic.*, t. V, pp. 424, 425.

(6) *Recueil des hist. de France*, t. V, p. 407.

33. (F. 40-41). De caritate. = *RH.*, n. 3805.
34. (F. 41-42). [RABANUS MAURUS]. De nativitate Domini. = *Ibid.*, n. 7452.
35. (F. 42-45). De novo ac veteri Testamento a sancto SEDULIO dictatum. = *Ibid.*, n. 2596.
36. (F. 45-46). [EUGENIUS]. De annuntiatione ruinae (1).
37. (F. 46-47). De laude diei conceptionis Mariae. = *RH.*, n. 2548.
38. (F. 47-48). [PAULINUS]. De resurrectione Domini. — *Ibid.*, n. 18087.
39. (F. 48^v-52). [PAULINUS]. De nativitate Domini nostri Iesu Christi. = *Ibid.*, n. 7298.
40. (F. 52-52^v). De resurrectione Christi. = *Ibid.*, n. 20593.
41. (F. 52^v-53). [PRUDENTIUS]. Hymnum Eulogii diaconi. = *Ibid.*, n. 13384.
42. (F. 53-56). [PRUDENTIUS]. Hymnum in honore sanctorum VIII martyrum Cesaraugustarum. = *Ibid.*, n. 2486.
43. (F. 56-56^v). [PRUDENTIUS]. Hymnus (*sic*) in honore beatissimorum martyrum Fructuosi episcopi ecclesiae Terraconensis et Eulogii diaconi. = *Ibid.*, n. 13384.
44. (F. 56^v-60^v). Versus BEDE presbiteri de die iudicii. = *Ibid.*, n. 9021.
45. (F. 61-63^v). Versus FURTUNATI ad Hilpericum regem et Fredegundem reginam (2).
46. (F. 63^v-64). Dysticon in phylomelle (3).
47. (F. 64-65). Metrum apocope evangeliorum cum clypsis a IUVENCO presbitero dicatum.
48. (F. 65). De sancto Quintino martyre. = *RH.*, n. 11538.
49. (F. 65^v-66). Ymnus de die palmarum. = *Ibid.*, n. 11028.
50. (F. 66-67^v). De morte Lazari et eius resurrectione. = *Ibid.*, n. 6598.
51. (F. 67^v-69^v). De fide et caritate seu cavenda cupiditate. = *Ibid.*, n. 3238.
52. (F. 69^v-70). De sancto Stephano martyre. = *Ibid.*, n. 3219.
53. (F. 70^v-71). De sancto Martino episcopo. = *Ibid.*, n. 3257.
54. (F. 71-71^v). Item de sancto Martino episcopo. = *Ibid.*, n. 21151.
55. (F. 71^v-73^v). [BEDA]. De gloria apostolorum. = *Ibid.*, n. 1228.
56. (F. 73^v-75). De sancto Petro apostolo. = *Ibid.*, n. 2393.

(1) SIRMONDUS, *Opera varia*, t. II, p. 619.

(2) *MG.*, Auct. ant. t. IV, p. 209.

(3) RIESE, *Anthologia latina*, n. 658.

57. (F. 75-76). De divite et Lazaro. = *Ibid.*, n. 7982 (1).

58. (F. 76-76^v). De initium (*sic*) quadragesme. = *Ibid.*, n. 8933.

Dans les marges, il y a f. 15^v une note en vieux-allemand (2), f. 15^v et f. 22 l'hymne = *RH.*, n. 6607 (inédit), f. 22^v-26, des vers qui commencent *Avarus maximam cupiditatem amat huius saeculi*, f. 74^v-76^v = *RH.*, n. 11452. La plupart de ces hymnes sont notées.

Parchemin; 76 feuillets, plus deux de garde; 0^m,15 × 0^m,118; X^e siècle. On a conjecturé que ce volume provient de l'abbaye de Saint-Gall (3); plus tard, il a appartenu aux bollandistes, on trouve l'ex-libris de leur bibliothèque ff. 2 : ✱ *MS.* 22. Demi-reliure moderne, dos en maroquin rouge (4).

1352. (5354-61). — FORTUNATUS. Opera.

1. (F. 1-7, 8-67). Liber FORTUNATI presbiteri. = *PL.*, t. LXXXVIII, col. 59-362.

2. (F. 7^v). Lettre d'ALCUIN à Elegius (5).

3. (F. 67-83^v). FORTUNATUS. De vita S. Martini. = *Ibid.*, col. 363-426.

4. (F. 83^v-84). Opus FORTUNATI in laudem Mariae virginis (6).

5. (F. 84-85). AURILI PRUDENTIS, hymnus in honore passionis Eulalie beate martiris. = *BHL.*, n. 2899.

6. (F. 85-90). Epistola Alexandri regis magni Macedonis ad magistrum suum Aristotelem (7).

Parchemin; 90 feuillets; 0^m,272 × 0^m,20; X^e siècle; deux colonnes. Au sujet des anciens possesseurs, on cite f. 90^v : *Conventus Sigebert.*; sur le premier plat intérieur, il y a l'ex-libris des bollandistes ✱ *MS.* 94, et f. 1, la note : *Collegii Societatis Iesu Antverpiae DP.* Reliure ancienne fort délabrée, ais de bois recouverts de peau de chamois.

1353. (II. 2295). — BEDA. Historia ecclesiastica gentis Anglorum.

1. (F. 1-168). Historia ecclesiastica. *Inc. mutil.* ... qui de toto orbe ad Dominum venirent (8).

(1) Aux éditions signalées par M. le chanoine Chevalier, ajouter DÜMMLER, *Zeitschr. f. deutsches Alterthum und Litteratur*, t. XXIII, p. 271.

(2) Publiée par MÜLLENHOFF ET SCHERER, *Denkmäler*, p. 12.

(3) Cf. MÜLLENHOFF ET SCHERER, *op. cit.*, p. 286.

(4) Voir, au sujet de ce manuscrit, *Annuaire de la Bibliothèque royale de Belgique*, t. XII, p. 223; *Zeitschrift f. deutsches Alterthum*, t. XXIII, 1879, p. 268; *Neues Archiv*, t. IV, 1879, p. 155-58; *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Brux.*, t. II, p. 255-56.

(5) Cette lettre a été publiée diverses fois, d'abord par NOLTE dans *L'Avenir catholique*, 17 juin 1869, p. 233, dans la *Bibliothèque de l'École des Chartes*, t. XXXI, 1870, p. 257, et par WATTENBACH et DÜMMLER, *Monumenta Alcuiniana*, BIEL. RER. GERM., t. VI, p. 329-31.

(6) Publié *MG.*, Auct. antiq. t. IV, p. 371.

(7) Voir plus haut, p. 135.

(8) P. 18, cap. vii, de l'édition de Bède par C. Plummer, Oxford, 1896, t. I.

2. (F. 168^v). Deux extraits d'ISIDORE et d'un décret du pape GRÉGOIRE, presque illisibles.

Sur les marges des feuillets 29^v et 30, il y a des répons, avec neumes, en l'honneur de S. Grégoire.

Parchemin; 168 feuillets; 0^m,267 × 0^m,215; IX^e siècle. Ce volume appartenait jadis à l'abbaye de Stavelot, car f. 2, on lit la note : *Liber monasterii Stabulensis*. En 1847, il fut vendu à Gand (1), et de là il passa dans la bibliothèque de lord Ashburnham; l'ex-libris se trouve encore au plat intérieur de la reliure. En 1899, il fut racheté à Londres à une vente chez Sotheby, pour 5750 francs (2). Reliure chagrin; au dos, le titre doré : *Bedae, de historia ecclesiastica gentis anglorum libri V. Codex membranaceus. saec. VIII.*

1354. (9327-28). — BEDA. Super quinque libros Moysis.

1. (F. 1-12). Commentum BEDE presbiteri in Genesi. = *PL.*, t. XCI, col. 13 sqq.

2. (F. 12-14). Sermo PETRI DAMIANI de excellentia beati Iohannis evangeliste. = *PL.*, t. XCLIV, col. 857-66.

3. (F. 14-16). [Quaestiones de sacra scriptura]. *Inc.* Cur Maria spiritus gratia plena.

4. (F. 17-132). Explanatio BEDE super quinque libros Moysis. = *PL.*, t. XCI, p. 189-394.

Les trois feuillets de garde contiennent des fragments d'un traité de droit canon.

Parchemin; 134 feuillets; 0^m,333 × 0^m,215; X^e siècle, sauf les feuillets 1-17^v, qui sont du XII^e; deux colonnes. Ce volume provient de Saint-Laurent de Liège, car sur le premier feuillet de garde se trouve la cote : *MM, 4-2* de cette bibliothèque, et f. 17, il y a la note : *Iste liber est de sancto Laurencio leodiensi*, et f. 132^v : *Liber sancti Laurentii in Leodio*. Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré, qui se trouve aussi à l'intérieur sur une étiquette en maroquin rouge : *Beda in Pentateuchum X saec.*; plus bas, les armes de Belgique et l'inscription *Bibl. royale*.

1355. (2194-95). — BEDA. Opera.

1. (F. 1). Fragment. *Inc.* ... timere quod vitari non potest. *Des.* zelari autem hominibus viciosum est.

2. (F. 1^v). Règles générales du comput.

3. (F. 2-7^v). Calendrier. — A remarquer surtout le 2 juillet : *Svithuni episcopi*, avec octave; le 15 juillet : *Translatio sancti Svithuni episcopi*, et le 30 octobre : *Ordinatio sancti Svithuni episcopi et confessoris*.

(1) Cf. *Catalogue d'une belle collection de livres et de manuscrits précieux sur vélin*, p. 6, n. 13.

(2) Voir *Catalogue of a portion of the collection of manuscripts known as the "Appendix," made by the late Earl of Ashburnham*. London, 1899, p. 30-31, lot 52.

4. (F. 8). Règles du comput.
5. (F. 8^v). Capitula in regulas factas de compoto.
6. (F. 9-48^v). [BEDA ?]. Regule facte de compoto. *Inc.* Si invenire volueris per quam feriam quelibet littera currat.
7. (F. 49-56). YGINUS. [De imaginibus caeli] (1).

Parchemin 56 feuillets; 0^m,22 × 0^m,155; XI^e siècle; le calendrier est à encre rouge, bleue et verte. Ce volume provient des anciens bollandistes, car f. 11, il y a la cote ✕ *MS. 18* de leur bibliothèque. Demi-reliure moderne, au dos, les titres dorés des deux traités.

1356. (5543-45). — BEDA. Opera:

1. (F. 1). Contenta.
2. (F. 2-134^v). Expositio BEDE presbiteri in evangelio Marci evangeliste. = *PL.*, t. XCII, col. 131.
3. (F. 134^v-178). BAEDE presbiteri in actibus apostolorum. = *Ibid.*, col. 937.
4. (F. 178-229^v). In apocalipsi Iohannis EIUDEM. = *PL.*, t. XCIII, col. 129.

Parchemin; 229 feuillets; 0^m,258 × 0^m,185; XI^e siècle; très jolies lettrines. Ce volume provient de Gembloux, mais toute indication explicite de cette provenance a disparu. Reliure du XVII^e siècle; veau raciné; titre doré: *Beda in Marc. et in Act. apost.*

1357. (5546). — BEDA. In libro Hieremiae prophete.

1. (F. 1-97^v). BEDE presbiteri (2) explanationes in libro Hieremie prophete. *Inc.* Est tempus adnotatum prophetiae Hieremie quando coeperit prophetare. *Des.* in qua universitate numerum et ipsi Iudei comprehenduntur.
2. (F. 97^v). Vers.

Inc. Vidi que data sit nobis afflictio mentis.

Des. Si per facturam penset factoris honorem.

Parchemin; 97 feuillets; 0^m,265 × 0^m,19; XII^e siècle; très jolies lettrines. F. 97^v, on lit: *Gemblacensis*. Reliure du XVII^e siècle, veau raciné; au dos, le titre doré: *Beda in Hier. prophete*.

1358. (5547-50). — BEDA. In parabolis Salomonis et autres traités de divers auteurs.

1. (F. 1-46^v). Expositio BEDE presbiteri in parabolis Salomonis. = *PL.*, t. XCI, col. 937 sqq.
2. (F. 47-75). Explanatio HIERONIMI in Ecclesiasten. = *PL.*, t. XXIII, col. 1011 sqq.

(1) Voir l'édition de L. W. Hasper, Leipzig, 1861, p. 11-32.

(2) Ce traité n'est pas de Bède.

3. (F. 76-93). Expositio ORIGENIS in libro Salomonis qui dicitur canticum canticorum. = *PG.*, t. XIII, col. 35-38.

4. (F. 93). Vers.

Inc. Omnia perlustrans et circumeundo regirans
Spiritus in proprios pergendo revertitur orbes.

Des. Cyclus ut a sese girando revolvitur in se.

Le feuillet 93^v est blanc.

5. (F. 94-117). HAYMONIS expositio in cantica canticorum. = *PL.*, t. CXVII, col. 296 sqq.

Parchemin; 117 feuillets; 0^m,31 × 0^m,23; XII^e siècle; deux colonnes; belles initiales ornées; titre courant en rouge. F. 117, il y a la note : *Pertinet monasterio Gemblacensi*. Reliure du XVII^e siècle, veau raciné, avec le titre doré : *Exp. Beda in Para. ibidem*.

1359. (9932-34). — BEDA. Opera.

1. (F. 1). Table des matières.

2. (F. 1^v-12). Liber de naturis rerum. = *PL.*, t. XC, col. 187-277.

3. (F. 12-18^v). De temporibus. = *Ibid.*, col. 277-92.

4. (F. 18^v-26). Extraits de l'*Ephemeris*. = *Ibid.*, col. 759 sqq.

5. (F. 26^v-90^v). De temporum ratione. = *PL.*, t. XC, col. 293-578.

Parchemin; 90 feuillets; 0^m,275 × 0^m,185; XI^e siècle; quelques letrines; f. 1, il y a une figure représentant les absides des planètes. F. 1, on lit : *Restitatur ecclesie sancti Laurentii*, il y a aussi la cote *M-M, 4-13* et le gril; f. 90^v, il y a la note : *Liber sancti Laurentii in leodio. Si quis eum abstulerit, vel furatus fuerit, anathema sit, fiat, fiat*. Le nom propre *Iohannes de Dyon[anto]* se trouve f. 1, et le timbre rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris, f. 1 et f. 90^v. Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré, reproduit à l'intérieur sur une étiquette en maroquin rouge : *Beda de natura rerum*; en dessous, les armes de Belgique et l'inscription *Bibl. royale*.

1360. (9706-25). — BEDA. Chronicon.

1. (F. 1-30). Cronica venerabilis BEDE presbiteri. = *PL.*, t. XC, col. 520-73.

2. (F. 30-60). Diversorum patrum sententie de primatu romane ecclesie.

Recueil de 298 décrets de papes et de conciles.

3. (F. 60^v-62^v). Regule ecclesiastice sanctorum apostolorum probate per CLEMENTEM ecclesie romane pontificem (1).

4. (F. 62^v-66^v). [Concilium Nicaenum] (2).

5. (F. 66^v-68). Sinodus Anchiritanus. = *PL.*, t. LXXXIV, col. 103-8.

6. (F. 68-69). Sinodus Neocesariensis. = *Ibid.*, col. 109-12.

(1) LABBE-COSSART, *Sacrosancta concilia*, t. I, p. 47-53.

(2) *Ibid.*, t. II, pp. 27, 45-50.

7. (F. 69-71). Gangrense concilium post Niceam sinodum editum. = *Ibid.*, col. 111-16.
8. (F. 71-74^v). Concilium Sardinense. = *Ibid.*, col. 115-22.
9. (F. 74^v-78). Concilium Antiochenum. = *Ibid.*, col. 121-30.
10. (F. 78-81). Sinodus Laudicensis. = *Ibid.*, col. 129-36.
11. (F. 81-82). Sinodus que facta est adversus heresim Macedonianam. = *Ibid.*, col. 135-38.
12. (F. 82-86). Sinodus Ephesina. = *Ibid.*, col. 151-60.
13. (F. 86^v-94^v). Sinodus Calcidonensis. = *Ibid.*, col. 161-80.
14. (F. 94^v-96^v). Concilium Cartaginis Affrice. = *Ibid.*, col. 179-84.
15. (F. 96^v-98). Gesta concilii Cartaginensis secundi. = *Ibid.*, col. 183-88.
16. (F. 98-101^v). Concilium Carthaginense III. = *Ibid.*, col. 189-200.
17. (F. 101^v-105^v). Concilium Cartaginense Affrice III. = *Ibid.*, col. 199-208.
18. (F. 106-107). Concilium Cartaginense Africe V. = *Ibid.*, col. 209-212.
19. (F. 107-112). Concilium Cartaginis Affrice sextum. = *Ibid.*, col. 211-26.
- * *cod. sextum* 20. (F. 112-112^v). Concilium Cartaginis Affrice septimum * = *Ibid.*, col. 227-30
21. (F. 113-116^v). Interrogatio beati AUGUSTINI catuariorum ecclesie et responsiones beati GREGORII ad consulta eiusdem antistitis. = *PL.*, t. LXXVII, col. 1184-1200.
22. (F. 116^v-119). Epistola layci clerici missa Sergio abbati de azimis contra Graecos. *Inc.* Domno abbati Sergio laycus quidam omnium latinorum ultimus clericus. Quamquam ignotus facie.
23. (F. 119-119^v). PAULUS in *Gestis Langobardorum* ex VII universalibus conciliis.
24. (F. 119^v-120^v). De primitiva ecclesia et sinodo Nicena.
25. (F. 120^v-121^v). Excerpta quedam ex synodalibus gestis sancti Silvestri pape. = *PL.*, t. VIII, col. 826-30.
26. (F. 121^v-124^v). Exemplar constituti domini Constantini imperatoris. = *Ibid.*, col. 567-78.
27. (F. 124^v-125). PAULUS in *Gestis Langobardorum* (Lib. III, cap. 26). = *PL.*, t. XCV, col. 527-28.
28. (F. 125-125^v). Epistola ATHANASII Alexandrinorum episcopi Marco pape directa. = *PL.*, t. VIII, col. 851-54.
29. (F. 125^v-126^v). Epistola MARCI pape. = *Ibid.*, col. 853-58.
30. (F. 126^v-127^v). Epistola orientalium episcoporum Iulio pontifici. = *Ibid.*, col. 977-80.
31. (F. 127^v-132). Epistola sanctissimi IULII romani archiepiscopi. = *Ibid.*, col. 982-94.

32. (F. 132-133). Epistola sinodica ATHANASII Alexandrini archiepiscopi Liberio pape. = *Ibid.*, col. 1403-5.

33. (F. 133-135^v). Epistola ATHANASII Felici pape directa. = *PL.*, t. XIII, col. 11-17.

34. (F. 135^v-147^v). Epistola domni LEONIS pape noni. = *PL.*, t. CXLIII, col. 711-69).

35. (F. 147^v-149). Epistola LEONIS Achritani episcopi directa archiepiscopo Tranensi. = *Ibid.*, col. 929-32.

36. (F. 149-166^v). Responsio domni [LEONIS] noni (1) pape adversus stultorum calumpniam. = *Ibid.*, col. 934-74.

37. (F. 166^v-172). Responsio [HUMBERTI] contra epistolam Nicete monachi monasterii quod dicitur Studium. = *Ibid.*, col. 983-1000.

38. (F. 172^v-173^v). Extraits des épîtres de S. Paul *de lege*.

39. (F. 173^v-176). Rationes de sancti Spiritus processione a Patre et Filio scripte per manus HUMBERTI Dei gracia cardinalis episcopi sancte romane ecclesie et PETRI Amalfitanorum archiepiscopi et FRIDERICI diaconi et cancellarii contra Michaheleni Constantinopolitanum patriarcham errantem de Spiritu sancto, temporibus pape Leonis et Constantini monochami regie urbis imperatoris, anni domini millesimi lii. *Inc.* Debitum igitur promissionis tue maiestatis imperio solvere cupienti.

40. (F. 176-176^v). [Epistola cardinalis HUMBERTI, PETRI Amalfitani episcopi et FRIDERICI diaconi omnibus ecclesie catholice filiis]. = *Ibid.*, col. 1002-4.

41. (F. 177-178^v). Fragments de bréviaire et d'antiphonaire.

42. (F. 179). [Nota Fratris ADRIANI DE VETERI BUSCO monachi sancti Laurentii de venerabili Beda].

Parchemin; 179 feuillets; 0^m,317 × 0^m,207; XII^e siècle; quelques belles lettrines; initiales en vermillon et en vert. F. 1, on lit: *Et est conventus sancti Laurentii extra Leodium*, et: *Iste liber est conventus sancti Laurentii iuxta Leodium*; f. 178, il y a la cote *M-M, 4-6*. L'estampille rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris, se trouve f. 1 et f. 176^v. Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré, reproduit à l'intérieur sur une étiquette en maroquin rouge: *Beda Chronica. Canonum collectio. XII sac.*, en dessous, les armes de Belgique et l'inscription *Bibl. royale*.

1361. (9837-40). — BEDA. Opera.

1. (F. 1-1^v). Versus BEDE de regularibus solis et lune. Capitula in libro de temporibus.

2. (F. 1^v-8). Liber venerabilis BEDE presbiteri de natura rerum. = *PL.*, t. XC, col. 187-278.

(1) En réalité, cette pièce a pour auteur Humbert.

3. (F. 8-13^v). Liber de temporibus. = *Ibid.*, col. 277-92.
4. (F. 13^v-16^v). Epistola EIVSDEM de equinoctio. = *Ibid.*, col. 599-605.
5. (F. 16^v-24). Divers extraits du traité de Bède de *argumentis lunae* et de l'*Ephemeris*. = *Ibid.*, col. 702 sqq., surtout col. 708, 735.
6. (F. 25-109^v). Liber BEDE presbiteri de temporibus. = *PL.*, t. XC, col. 293-578.
7. (F. 109^v). Énigmes.

Inc. Ori quinque placent, si quatuor aethere pendent.

Des. Si finem teneas duresco, fio metallum.

8. (F. 109^v-110). Diverses généalogies de Carlovingiens.
9. (F. 110^v). Notes sur l'entrée du duc de Bourgogne à Mons en 1458 et la tenue du chapitre de la Toison d'or.

Parchemin; 110 feuillets; 0^m,267 × 0^m,19; XII^e siècle; deux colonnes; jolies lettrines. F. 1, il y a la cote *MS. 106 de l'ancienne bibliothèque des bollandistes. Demi-reliure moderne; dos en maroquin brun avec le titre doré: *Beda de natura rerum, de temporibus et chronologia, XIII saec.*; plus bas, le chiffre couronné de Léopold I^{er}.

1362. (II. 1008). — BEDA. Opera.

1. (F. 1). Index.
 2. (F. 1^v). Capitula libri subsequentis.
 3. (F. 2-43^v). Venerabilis BEDA ... super *Actus apostolorum*. = *PL.*, t. XCII, col. 937.
 4. (F. 44-70). Liber retractationis BEDE presbiteri in *Actus apostolorum*. = *Ibid.*, col. 995.
 5. (F. 71-79). Libellus venerabilis BEDE presbiteri de locis sanctis. = *PL.*, t. XCIV, col. 1179-90.
- Les feuillets 79^v-80 sont blancs.
6. (F. 80^v-115^v). ISIDORUS. De mundo. = *PL.*, t. LXXXII, col. 170.
 7. (F. 116-118). HIERONIMUS in libro de hebraicis questionibus. = *PL.*, t. XXIII, col. 937.
 8. (F. 118-119^v). Brevis narratio de sancto Martino et discipulis eius (1).

Les feuillets 120 et 121 sont blancs.

9. (F. 122-126). Descriptio quarundam urbium et regionum atque locorum que in scriptura sacra commemorantur.
10. (F. 126^v-131). Nomina locorum ex beati IERONIMI presbiteri et FL. IOSEPHI collecta opusculis.
11. (F. 131^v-136^v). De libro locorum HIERONIMI. = *Ibid.*, col. 859.

(1) Résumé de la Vie de S. Martin, cf. *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. II, p. 476.

Parchemin; 137 feuillets, plus deux de garde à la fin; 0^m,265 × 0^m,172; XIII^e siècle; superbes lettrines en toutes couleurs; signatures I-XXII. F. 1 et 136^v, il y a la note: *Liber sancti Martini Tornacensis, servanti benedictio, amen, amen, tollenti maledictio fiat, fiat* (1). L'ex-libris *Sir T. P. Middle Hill 2068* se trouve f. 1. Ce volume a été acquis par la Bibliothèque royale en 1888 pour fr. 25. Reliure moderne, veau estampé, avec l'inscription: *Regia Bibl. Belgica* (2).

1363. (II. 1062). — BEDA. De expositione tabernaculi.

1. (F. 1^v-115). BEDE presbiteri expositio tabernaculi. = *PL.*, t. XCI.

2. (F. 115-116^v). [De lapidibus templi].

Parchemin; 116 feuillets; 0^m,29 × 0^m,193; XIII^e siècle; deux colonnes; très jolies lettrines; initiales rouges et bleues; signatures I-XV. F. 2, il y a la note: *Liber sancte Marie de Aina*. Plus tard, ce volume a fait partie de la collection Phillipps avec le n. 4642, et a été acquis par la Bibliothèque royale en 1888. Demi-reliure, toile anglaise; au dos, le titre doré: *Beda de tabernaculo*.

1364. (II. 2554). — BEDA. Expositio evangelii secundum Marcum.

1. (F. 1-1^v). Prologus. = *PL.*, t. XCII, col. 131-34.

2. (F. 1^v-2^v). Capitula.

3. (F. 2^v-96). Expositio in evangelio Marci BEDE famuli Christi et presbiteri. = *Ibid.*, col. 133 sqq.

Sur le premier feuillet de garde, extrait en anglais d'un catalogue de vente, avec description de ce manuscrit.

Parchemin; 96 feuillets, plus onze de garde en papier; 0^m,313 × 0^m,22; XIII^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et bleues; signatures I-XI. De-ci de-là en marge, il y a les initiales A, AV, Gr, qui désignent probablement Augustin et Grégoire (3). Ce manuscrit provient de la bibliothèque de l'abbé F. Allard, dont la signature se trouve sur le septième feuillet de garde. F. 1, il y a la note: *Phillipps MS. 23033*. La Bibliothèque royale a acquis ce volume en 1900. Reliure moderne, parchemin.

1365. (II. 2555). — BEDA. Opera.

Retractationis BEDE presbiteri in actus apostolorum libellus. = *PL.*, t. XCII, col. 995 sqq.

(1) Cf. A. D'HERBOMEZ, *Les Manuscrits de Saint-Martin de Tournai actuellement conservés à la Bibliothèque royale de Bruxelles*, p. 13.

(2) Voir une description de ce volume dans *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. II, p. 476.

(3) Dans le prologue de son travail sur l'évangile de S. Marc, Bède demande que ces notes marginales soient retranscrites par les scribes: *Lectoremque supplex obsecro, ut si haec nostra opuscula transcriptione digna duxerit, adnotationem quoque nominum eorum quae supra in margine apposita sunt diligens scriptura conservet*. Malgré cette recommandation, les manuscrits qui, comme celui de la Bibliothèque royale, ont ces notes marginales, sont fort rares.

Parchemin; 21 feuillets, plus onze de garde; 0^m,32 × 0^m,224; XIII^e siècle; deux colonnes. F. 1, il y a la note: *Phillipps MS 23062*. Ce volume a été acquis en 1900. Reliure parchemin.

1366. (11386). — S. IOHANNES DAMASCENUS. Opera, en grec.

1. (F. 1-6^v). Introduction, définition de la philosophie (1).
2. (F. 6^v-47^v). [IOHANNIS DAMASCENI dialectica]. = *PG.*, t. XCIV, col. 540-46, 584-89, 538-40, 568-72, 573-77, 580-84, 549-57, 579-669.
3. (F. 47^v-162^v). [S. IOHANNIS DAMASCENI libri de fide orthodoxa]. = *Ibid.*, col. 792 sqq. Lib. I, cap. 2, 4, 1, 3, 5-7, 9-14; lib. II, lib. III, lib. IV, 1-8, puis un chapitre intercalé qui n'est pas dans l'édition de MIGNÉ, 9-14, 16-17. *Des. mutil.*, col. 1176, ἐπ' ἐσχάτων τῶν ἡμερῶν.

Les feuillets 163-166 sont blancs.

4. (F. 167-171^v). Divers extraits des œuvres de S. JEAN DAMASCÈNE.

Bombycin; 171 feuillets, plus dix de garde; 0^m,165 × 0^m,112; XIII^e siècle. Au bas du dernier feuillet de garde de la fin, on lit cette note écrite au XV^e siècle: Αὐτὴ ἡ βίβλος κάμου Θεοδοσίου μοναχοῦ τοῦ Ῥαδηνοῦ τοῦ κέ Ἀγριανοῦ, ἔσχον δὲ αὐτὴν ἐκ χαριστικῆς τοῦ τιμιωτάτου ἐν μοναχοῖς ἱεροδιακόνου κυροῦ Ἀντωνίου, καὶ οἱ ἀναγνησκοντες αὐτὴν εὐχεστε αὐτὸν κάμοι τῷ ἀμαρτωλῷ. Au verso du troisième feuillet de garde, en tête, en écriture du XV^e siècle: *Sententiae Damasceni theologi diligentissimi* [deux lignes grattées] *MCCCCXXIJ*, et au bas du f. 1: *Ex bibliotheca ff. Praedicatorum Paris. in vico sancti Honorati*. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 1 et f. 177^v. Demi-reliure, dos en maroquin rouge; au dos, le titre doré: *Ioannis Damasceni sententiae. XV^e siècle* (2).

1367. (4774-79). — S. IOHANNES DAMASCENUS. Opera.

1. (F. 1-118^v). Liber gestorum Barlaam et Iosaphat servorum Dei editus greco sermone a IOHANNE DAMASCENO, viro sancto et erudito. = *BHL.*, n. 979.
2. (F. 117-120^v). De guerra inter regem Babilonis et regem Iherosolimorum, sermo sancti BERNARDI abbatis. = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 761.
3. (F. 120^v-122). Visio Pauli apostoli. = *BHL.*, n. 6581.
4. (F. 122-133^v). [RABANUS MAURUS]. Micrologus, de ecclesiasticis observationibus (3).
5. (F. 134-138). Epistola magistri PETRI DE ROIA quam ipse novicius apud claram vallem edidit. = *PL.*, t. CLXXXII, col. 706.

(1) Dans ce chapitre, on retrouve les idées du ch. III de la *Dialectique* de S. Jean Damascène. Cf. *PG.*, t. XCIV, col. 533-36.

(2) Sur ce manuscrit, cf. H. OMONT, *Catalogue des manuscrits grecs de la Bibliothèque royale de Belgique*, p. 15, n. 32.

(3) Cf. t. I de ce catalogue, p. 197, n. 34 et note 5. Le *Micrologus* a été publié en 1656 par PAMELIUS, Anvers, Plantin.

6. (F. 138-138^v). [Epistola]. *Inc.* Quam grata nobis fuerit vestra presentia.

7. (F. 139-141^v). De prosapia regum francorum (1).

Parchemin ; 141 feuillets ; 0^m,278 × 0^m,19 ; XIII^e siècle ; deux colonnes ; quelques letrines ; signatures i-xv. Sur un demi-feuillet ajouté en tête du volume et f. 141^v, on lit : *Liber sancte Marie de Villari in brabantia*. La partie supérieure des feuillets a été endommagée par le feu. Demi-reliure moderne ; dos en maroquin brun, avec le titre doré : *Ioannis Damasceni liber gestorum Barlaam et Iosaphat etc., XIII saec. ; XV saec.* (2).

1368. (893-98). — S. IOHANNES DAMASCENUS. De fide.

1. (F. 1-67^v). IOHANNIS presbiteri DAMASCENI qui Mansio liber ... in quo est tradicio certa orthodoxe fidei ... a BURGUNDIONE cive Pysano de greco in latinum domno tercio Eugenio pape translatus (3).

Le feuillet 68 est blanc.

2. (F. 69-75). Liber de articulis fidei ALANI. = *PL.*, t. CCX, col. 595.

Les feuillets 75^v-80^v sont blancs.

3. (F. 81-94). Memoriale rerum difficilium. *Inc.* Summa in hoc capitulo nostre intencionis est rerum difficilium breviter colligere.

4. (F. 95-149^v). [HAYMERICUS DE CAMPO]. De formis intentionalibus in lumine rationalis nature, gratie et glorie. — On lit à la fin du traité : *Explicit prefatus de formis intentionalibus tractatus a me magistro Heymerico de Campo (4) circa initium mei adventus ad regimen seu lecturam doctoralem sacre pagine in universitate studii Lovaniensis inchoatus et propter irrecuperabilem meorum originalium codicum manu propria incorrecte scriptorum habitum per XVII fere annos a suo complemento finali ante revisionem eiusdem in codicibus aliis manu aliena transcripti seriosam anxie suspensus, et nunc favente scientiarum Domino sub correctione omnium non fictorum aut malivolorum veritatis orthodoxe zelatorum, scrutatorum, doctorumque catholicorum in christiana philosophie gentilium et theologie fidelium consonantia peritorum me sanius sapientium taliter qualiter finitus anno scilicet Domini M^oCCCCLii^o in profesto Mathei apostoli hora post meridiem fere nona.*

5. (F. 150-160). [HEIMERICUS DE CAMPO]. Tractatus de naturali veritatis catholice circa principia philosophie christiane universalialia analis.

Les feuillets 160^v-163^v sont blancs.

(1) Cf. *MG.*, Scr. t. II, p. 304 sqq. ; t. XIII, p. 242.

(2) Voir une description de ce manuscrit dans *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg., Bruxell.*, t. I, p. 464.

(3) Voir FABRICIUS-MANSI, *Bibl. lat. med. et inf. act.*, t. I, p. 305.

(4) Sur Heimeric de Campo et ses œuvres, voir FOPPENS, *Bibl. belgica*, p. 433.

6. (F. 164-172^v). [BERTAMUS DE ALEN]. Tractatus de via contemplationis et cognitionis Dei secundum libros divini Dionysii factus. *Inc.* Reverendo patri sacre theologie magistro fratri Gerardo ministro Coloniensi.

Papier, divers filigranes, l'ancre, la tête de bœuf surmontée de la croix, la lettre *P*, la main, les clefs, etc.; 172 feuillets, plus deux feuillets de garde en tête et dix à la fin du volume; 0^m,29 × 0^m,21; XV^e siècle (1443, 1452), car f. 67^v, on lit: *Explicit Iohannes Damascenus scriptus per manus Iudoci Carpentarii, Lovanii, mensis septembris die vicesima quinta 1443*, et f. 149^v, il y a la date de 1452. Deux colonnes à partir du f. 95-149^v et du f. 134-172^v; initiales rouges et bleues; quelques letrines; ancienne pagination i-clxvii. La provenance est indiquée au premier plat intérieur de la couverture: *Monasterii sancti Martini Lovanii*, sur le premier feuillet de garde: *Liber monasterii canonicorum regularium vallis sancti Martini in lovanio* (1), de même f. 63^v et au verso du dernier feuillet de garde, L'estampille rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 1, f. 149^v et f. 172^v. Reliure ancienne, ais de bois recouverts de veau estampé, avec le titre sous corne, encadré de cuivre et la cote *D. XXI*; au dos, le titre doré: *Damasc. de fide, Alan. de art. fidei, etc.*, restes de fermoirs.

1369. (5436-37). — RABANUS MAURUS. Commentarii in Numeros et Deuteronomium.

1. (F. 1-85). RABANI MAURI commentariorum in volumen Numerorum libri IV. = *PL.*, t. CVIII, col. 587.

2. (F. 85-152^v). Expositio MAURI RABANI in libro Deuteronomii. = *Ibid.*, col. 839. *Des. mutil.* Dei virtutem et Dei sapi[entiam].

Parchemin; 152 feuillets; 0^m,327 × 0^m,225; XII^e siècle; signatures i-xviii. On lit, f. 1: *Liber collegii Societatis Iesu Brugis ex dono R^{mi} D. Iacobi Pamelij*. Reliure ancienne restaurée; veau brun estampé.

1370. (II. 976). — SMARAGDUS. Diadema monachorum.

1. (F. 1). Prières et notes diverses.

2. (F. 1-114). Liber SMARAGDI abbatis de diversis virtutibus. = *PL.*, t. CII, col. 593 sqq.

3. (F. 114). Pape qui confirmarunt ordinem carturiensem (*sic*).

4. (F. 114-126). De vita et actibus sanctorum confessorum Eucharitii, Valerii atque Materni Trevirorum archiepiscoporum. = *BHL.*, nn. 2655 et 2656.

5. (F. 126-126^v). Nomina Trevirorum episcoporum (2).

Parchemin; 129 feuillets; 0^m,309 × 0^m,229; X^e siècle, entre 975 et 993, comme le prouve la liste des évêques de Trèves (3); très curieuses letrines en diverses

(1) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 216-218.

(2) Publié dans *MG.*, Ser. t. XIII, p. 298.

(3) En effet la série se termine à Egbert (975-993).

couleurs. F. 126, il y a la note : *Liber sancti Gy[lleni]* (1). L'estampille *Sir T. P. Middle Hill 367* se trouve au verso de la couverture. Ce manuscrit a été acquis en 1888 pour 300 francs. Reliure moderne, veau estampé, avec l'inscription *Regia Bibl. Belgica* (2).

1371. (2641-47). — SMARAGDUS. *Diadema monachorum*.

1. (F. 1^v). Table des matières.

2. (F. 2-3^v). *Capitula* de l'ouvrage suivant.

3. (F. 4-90). *Dyadema monachorum SMARAGDI benedictini*. = *PL.*, t. CII, col. 593 sqq.

4. (F. 91-100^v). *Sermo de multiplici devotione sive de diversis generibus devotorum. Inc. Accepit eum Symeon ... patres ac fratres ... hodierna sacra solemnitas ... non modice nos instruit.*

5. (F. 100^v-103). Explication du symbole de S. Athanase.

6. (F. 104-129). *Dyalogus moralis de tribus tabernaculis. Inc. Est scriptum per prophetam : Paciencia pauperum non peribit in finem.*

7. (F. 129^v-134^v). *Tractatus beati BASILII de laude solitarie vite*. = *PL.*, t. CXLV, col. 246-51.

8. (F. 135-135^v). Vers.

a) Sur la passion du Christ.

Inc. O mea factura de limo condita terre.

Des. Cui dedit interitum gratia non meritum.

b) Philomena [S. BONAVENTURA] (3).

9. (F. 136-137). *Liber amoris. Inc. Vulnerasti cor meum, soror, mea sponsa.*

10. (F. 137-137^v). Extraits, entre autres de S. BERNARD.

11. (F. 138-139^v). *Canticum sponse languentis prae amore. Inc. Amor est vita omnium, unum est necessarium.*

Parchemin et papier, les feuillets 116-133; 140 feuillets; 0^m,21 × 0^m,14; XV^e siècle. F. 1 et f. 2, on lit : *Liber monasterii beati Pauli in Zonia*, et f. 140^v : *Liber monasterii Rubee vallis*. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris, aux faisceaux, se trouve f. 4 et f. 139^v. Reliure ancienne, veau brun estampé.

1372. (9581-95). — ALCUINUS. *Opera*.

1. (F. 1-8). *Praefatio CASSIODORI senatoris (de orthographia)...* *Textus huius*. = *PL.*, t. LXX, col. 1239.

2. (F. 9-13^v). *Ars sancti AUGUSTINI... breviata* (4).

(1) C'est le manuscrit autrefois coté DDD ; cf. A. PONCELET, S. J., *Annales de l'abbaye de Saint-Ghislain*, p. 383.

(2) Voir une description de ce manuscrit dans *Catal. cod. hagiogr. bibl. Belg.*, t. II, p. 464.

(3) *S. Bonaventurae opera omnia*, Romae, 1596, t. VI, p. 445-47.

(4) Cf. MAI, *Nova patrum bibliotheca*, t. I, 2, p. 167-181, note 1.

3. (F. 13^v-21). Regula AUGUSTINI episcopi de nominibus. = *PL.*, t. XXXII, col. 1385-1408.

4. (F. 21). Versus duo in mensa.

5. (F. 21^v-44). De metrica ratione ac pedum regulis ALMTHELMI Anglorum archiepiscopi. = *PL.*, t. LXXXIX, col. 161 sqq.

A la suite on a ajouté les vers :

Ora pro me sepiissime
Deum caeli, carissime,
Ut mea innumera
Christus remittat crimina.

6. (F. 44^v-46). Ymnus sancti AMBROSII de pluvia postulanda. = *PL.*, t. XVII, col. 1175. — Item EIUSDEM pro nimia pluvia. = *Ibid.*, col. 1174. — [PROSPERI AQUITANI *Poema coniugis ad uxorem*]. = *PL.*, t. LI, col. 611-16 (1).

7. (F. 46-47^v). Ex libro sancti AUGUSTINI de vera religione. = *PL.*, t. XXXIV, col. 163.

8. (F. 47^v-48). Ex EIUSDEM libro de utilitate credendi. Quod III sunt erroris genera quibus homines errant cum aliquid legunt.

9. (F. 48-48^v). De duabus personis in religione laudabilibus. — Cui debeamus quod intelligimus, quod credimus, quod opinamur.

10. (F. 48^v-50^v). Ex libro AUGUSTINI de vera religione propositiones dialecticae de bono et malo. — De decem categoriis AUGUSTINI. — Ex libro de civitate Dei X, de laude Virgilii. — De quatuor affectionibus quas a Cicerone perturbationes, ab aliis passiones appellatas Virgilius hominum esse dixit propter carnem. Ex libro XIII de civitate Dei. — Distinctio inter invidiam et emulationem. Ex libro expositionum epistole ad Galathas AUGUSTINI episcopi. — Ex libro de moribus Manicheorum. De rebus commodis et incommodis. — De generibus locutionum ex libro de Genesi. — Cui infans caticuminus efficitur et quid sit caticuminus. — De credulitate divina.

11. (F. 51-53). [FREDEGISUS]. Interrogatio domni Caroli serenissimi imperatoris de substantia tenebrarum et nichili. = *PL.*, t. CV, col. 751-56.

12. (F. 53-54^v). De ordine missae et orationibus, quae in ea continentur in libro officiorum YSYDORI, caput xv. = *PL.*, t. LXXXIII, col. 752-53. — Item cap. viii officiorum ISYDORI de responsoriis. = *Ibid.*, col. 744.

13. (F. 54^v-55^v). ALBINUS magister. [De baptismi caeremoniis]. = *PL.*, t. CI, col. 611-14.

14. (F. 55^v-56^v). Capitula de quibus convocati conpotiste interro-

(1) Note ajoutée au XVI^e siècle : *Putatur Paulini ex Prosperi epigrammatis.*

gati fuerint. Responsiones quoque eorum quales et ordine quo reddite fuerint hic pariter ostenduntur.

15. (F. 56^v-65^v). MARCI TULLI CICERONIS Cato maior de senectute.

16. (F. 65^v-66^v). [Schemata in ALCUINI dialogum de rhetorica et de virtutibus]. = *PL.*, t. CI, col. 945-50.

17. (F. 66^v-78). Disputatio de rhetorica et de virtutibus sipiensimi (*sic*) regis Karuli et Albini magistri. = *Ibid.*, col. 919-46.

18. (F. 79). Vers. = *Ibid.*, col. 950.

19. (F. 79-87). [ALCUINUS. De dialectica]. = *Ibid.*, col. 951-76.

20. (F. 88-167^v). [SENECAE patris suasoriae et controversiae].

21. (F. 167^v). Oraisons en l'honneur de S^{te} Geneviève.

22. (F. 168-170). Copie moderne, sur papier, de l'*Interrogatio domni Caroli, ex manuscripto Cusano vetustissimo*, cf. supra, f. 51-53.

Parchemin, sauf ff. 168-170, qui sont en papier; 0^m,315 × 0^m,234; X^e siècle; pour le parchemin, écritures capitale, onciale et minuscule de diverses mains; quelques signatures. Reliure moderne veau raciné; au dos, le titre doré, reproduit à l'intérieur du volume sur une étiquette en maroquin rouge: *Cassiodori, Augustini, Aldhelmi, etc. Varia opuscula, X saec.*; plus bas, les armes de Belgique et l'inscription *Bibl. royale* (1).

1373. (9669-81). — ALCUINUS. Opera.

1. (F. 1). Table des matières.

2. (F. 1). Hymne *Pange lingua*. = *RII.*, n. 14467.

3. (F. 1^v-20). Liber ALCHVINI de fide sancte Trinitatis ad Karolum. = *PL.*, t. CI, col. 11-56.

4. (F. 20-20^v). Confessio vere fidei. = *Ibid.*, col. 56-58.

5. (F. 20^v-22^v). Epistola ALCHVINI levite ad Fredegisum. = *Ibid.*, col. 57-64.

6. (F. 22^v-25^v). Epistola ALBINI ad Eulalam de natura anime. = *PL.*, t. CI, col. 639-48.

7. (F. 25^v-26). Liber pronosticon de futuro seculo editus a IULIANO Toletano episcopo. = *PL.*, t. XCVI, col. 453-57.

8. (F. 26^v-27). Oratio. = *Ibid.*, col. 460-62.

9. (F. 27-50). Liber de origine mortis humane. = *Ibid.*, col. 461-524.

10. (F. 50-58^v). Liber sancti AUGUSTINI ad Paulinum de videndo Deo. = *PL.*, t. XXXIII, col. 596.

11. (F. 58^v-59). Oratio sancti EFFREM (2).

12. (F. 59-61). Liber primus domni EFFREM de iudicio Dei et de resurrectione (3).

(1) Voir une description de ce manuscrit dans THOMAS, *Catalogue des manuscrits de classiques latins de la Bibliothèque royale de Bruxelles*, p. 32.

(2) *Sancti Ephraem Syri opera omnia*, t. I, Romae, 1732, p. 69-70.

(3) *Ibid.*, p. xcviij, *Gloria omnipotenti Deo*.

13. (F. 61^v-62). *Secundus liber de beatitudine anime* (1).
14. (F. 62-64^v). *Eiusdem de penitentia tertius* (2).
15. (F. 64^v-66). *Liber quartus domni EFFREM diaconi in luctaminibus* (3).
16. (F. 66-68). *V. de die iudicii* (4).
17. (F. 68-72). *Monita domni EFFREM ad monachos* (5).
18. (F. 72). *Monita domni EFFREM* (6).
19. (F. 72-77). *Exhortatio Eiusdem* (7).
20. (F. 77). *Oratio Eiusdem; de sex cogitationibus sanctorum; de mansionibus vite*.
21. (F. 77^v-97^v). *Utiles sententie deflorate de libris sanctorum AUGUSTINI, AMBROSII, IHERONIMI, LEONIS et aliorum multorum*.
22. (F. 98-101^v). *Epistola cuiusdam EMMONIS ad quendam ... Wilelmum ... de qualitate future ac perpetue vite* (8).
23. (F. 101^v-115^v). [*Eiusdem de laude caritatis et aliarum virtutum*].
24. (F. 115^v-125^v). [*Eiusdem de igne purgatorio*] (9).
25. (F. 125^v-126^v). *AUGUSTINI expositio dominicae orationis. Inc. Annua vobis dominica oratio... debetur*.
26. (F. 126^v-128). *Omelia sancti AUGUSTINI de igne purgatorio. = PL., t. XXXIX, col. 1946-49*.
27. (F. 128-129^v). *Epistola PETRI DAMIANI de die iudicii. = PL., t. CXLIV, col. 476-82*.
28. (F. 129^v-130^v). *Rescriptio sancti ULRICI episcopi ... pape Nicholao. = PL., t. CXLIII, col. 1361-66*.

Parchemin; 130 feuillets; 0^m,307 × 0^m,21; XII^e siècle; deux colonnes. F. 1, il y a la cote *LL, 2-6*, et la note : *Liber sancti Laurentii in leodio, si quis eum abstulerit vel furatus fuerit anatema sit, fiat, fiat, fiat, fiat. Amen, amen*. Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré, reproduit à l'intérieur sur une étiquette de maroquin rouge : *Alcuinus de Trinitate, etc. XII saec.*; plus bas, les armes de Belgique et l'inscription : *Bibl. royale*.

1374. (10611-14). — *ALCUINUS. Opera.*

1. (F. 1). *Index*.

(1) *Ibid.*, p. 292-98.

(2) *Ibid.*, p. 148-53.

(3) *Ibid.*, p. xcviij, *In luctaminibus*.

(4) *Ibid.*, p. lxxxj, *Venite dilectissimi*.

(5) *Ibid.*, p. lxxxj, *Dolor me compellit*.

(6) *Ibid.*, p. 53.

(7) *Ibid.*, p. 53 sqq.

(8) La préface seule de ce traité a été publiée par MARTENE et DURAND, *Thesaurus novus anecd.*, t. I, col. 667-68. Cf., pour le reste de l'ouvrage, *Hist. litt. de la France*, t. XVIII, p. 183-84.

(9) Les nn. 23 et 24 semblent former les livres II et III du traité d'Emmon.

Les feuillets 1^v-2^v sont blancs.

2. (F. 3-57). Sententie canonice de discretione misericordie et iudicii.

3. (F. 57-83). Domni ALCUINI super Ecclesiasten et cantica cantiorum. = *PL.*, t. CI, col. 663.

4. (F. 83-85^v). De Salomone ... contrapositionum.

5. (F. 86-231^v). IACOBI SPRENGER Malleus maleficarum (1).

Papier; 231 feuillets; 0^m,287 × 0^m,20; XVI^e siècle, car f. 1^v, on lit : *Hunc librum scripsit frater Nicolaus de Polleur tempore novitatus sui, anno Domini 1530, hor-tatu Lambertii de Heex instructoris novitiorum. Requiescat in pace. Amen.* Le nom de Polleur se retrouve f. 57 et la date de 1530 au f. 85^v. La seconde partie du manuscrit est d'une autre main, car on lit, f. 231^v : *Scriptus per Dumpnum Iohannem Aurifabri.* F. 1, il y a la note : *Liber monasterii sancti Laurentii prope Leodium,* et la cote *LL. 2-3.* Le timbre rouge de la Bibliothèque nationale de Paris, aux faisceaux, se trouve f. 3 et f. 231^v. Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré reproduit à l'intérieur sur une étiquette en maroquin rouge : *Alcuinus super Ecclesiasten etc. I. Springer, Malleus maleficarum*; en dessous, les armes de Belgique et l'inscription : *Bibl. royale.*

1375. (II. 2564). — PASCHASIUS RADBERTUS. In Ieremiam.

1. (F. 1-149). In lamentationes Iheremie expositio PASCHASII RABBERTI monachorum omnium peripsima liber. = *PL.*, t. CXX, col. 1059 sqq.

2. (F. 149^v). Hymne notée à la Vierge. = *RH.*, n. 1183.

Les deux feuillets de garde contiennent des fragments de pièces de procédure, en cause d'un certain " Messire Iehan " prêtre. (XVI^e siècle).

Parchemin; 149 feuillets; 0^m,325 × 0^m,233; XII^e siècle, sauf le f. 149, qui est du XIV^e; deux colonnes; très jolies lettrines. F. 1, on lit : *Liber sancte Marie de Balerna* (2), et f. 1 : *Phillipps MS., 22056.* Ce manuscrit a été acquis par la Bibliothèque royale en 1900. Reliure moderne, veau estampé; en relief, l'inscription : *Regia Bibl. Belgica.*

1376. (II. 974). — PASCHASIUS RADBERTUS. In lamentationibus Hieremie. = *PL.*, t. CXX, col. 1059 sqq.

Parchemin; 108 feuillets; 0^m,296 × 0^m,22; XII^e siècle; deux colonnes; très jolies lettrines. Ce volume provient de l'abbaye de Saint-Ghislain, bien que toutes les traces explicites de cette provenance aient disparu (3). Au revers de la couverture, il y a l'ex-libris *Sir T. P. Middle Hill, 365.* Ce volume a été acquis en 1888 pour

(1) Sur les nombreuses éditions de cet ouvrage, souvent imprimé, voir, par exemple, HAIN, *Repertorium bibliographicum*, t. III, nn. 9238-46.

(2) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 134, le volume intitulé : *Hieremias glossatus. Folio.*

(3) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. I, p. 247 et A. PONCELET, S. J., *Annales de l'abbaye de Saint-Ghislain*, p. 403.

fr. 180. Reliure moderne, veau estampé, avec l'inscription : *Regia Bibl. Belgica* ; tranche rouge.

1377. (4794-95). — PASCHASIUS RADBERTUS. Commentarius in Ieremiam.

1. (F. 1-65^v). PASCASIUS RADBERTUS. Commentarius in Ieremiam. = *PL.*, t. CXX, col. 1059 sqq.
2. (F. 66-82). Gloses sur l'épître de S. Jacques.
3. (F. 82-89). Gloses sur l'épître de S. Pierre. *Des. mutil.* au ch. III, v. 5.

Parchemin; 89 feuillets; 0^m,24 × 0^m,15; XIII^e siècle; trois colonnes; quelques jolies capitales en rouge et en bleu; signatures I-VII, I-III. Reliure veau brun.

1378. (9884-89). — LIUTPRANDUS. Chronicon.

1. (F. 1-8). Table de la chronique de Liutprand.
Les feuillets 8^v-10^v sont blancs.
2. (F. 11-98). [LIUTPRANDI CHRONICON]. = *PL.*, t. LXXXVI, col. 965 sqq.
3. (F. 99-103). [Altercatio Heracliani cum Germinio] (1).
4. (F. 104-105^v). [Epistola FREDERICI imperatoris ad filium suum Henricum] (2).
5. (F. 107-155). [S. IULIANI archiepiscopi Toletani prognosticorum libri tres]. = *PL.*, t. XCVI, col. 453.
6. (F. 156-157^v). [Epistola IDALII Barcinonensis episcopi ad Iulianum Toletanum]. = *Ibid.*, col. 815.
Les feuillets 158 et 159 sont blancs.
7. (F. 160-161). Catonis vita falso Aemilio Probo adscripta in codice Batavico (ex quo nos nonnulla in Probum annotavimus) (3).
8. (F. 161). Fragmentum epistolae Corneliae Gracchorum matris ex eodem libro CORNELII NEPOTIS, ex codice Batavico.
9. (F. 161-161^v). Eadem alio loco.
10. (F. 162). Notes de Quintilien, Cicéron et Plutarque sur la lettre de Cornélie.

Les deux feuillets de garde, en parchemin, contiennent, sur deux colonnes, des fragments d'un traité de droit canon du XIV^e siècle.

(1) Le commencement de ce morceau a été publié par le B^{on} DE REIFFENBERG, *Bulletin de l'Académie royale des sciences et belles-lettres de Bruxelles*, t. X, 1^{re} partie, 1843, p. 376; depuis la pièce a été éditée en entier par C. P. CASPARI, *Kirchenhistorische Anekdota*, Christiania, 1883, t. I, p. 130-47. Voir un autre exemplaire de cette pièce dans le manuscrit n. II. 1072, cf. supra p. 147, n. 9 et note 1.

(2) Publiée par le B^{on} DE REIFFENBERG, *ibid.*, p. 377-80.

(3) Cette collation du texte de la vie de Caton de Cornelius Nepos est de la main d'André Schott et a été publiée par le B^{on} DE REIFFENBERG, *ibid.*, p. 380-81.

Papier ; 162 feuillets, plus huit de garde ; 0^m,28 × 0^m,185 ; XVII^e siècle. Sur un des feuillets de garde, on lit le nom propre *Ant. Cautus* (1) et l'on trouve l'ex-libris *O MS. 9* de l'ancienne bibliothèque des bollandistes. L'estampille rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris est marquée f. 1 et f. 162^v. Reliure moderne, veau raciné ; au dos, le titre doré : *Liutprandi historiae, etc.*, reproduit sur une étiquette en maroquin rouge à l'intérieur du volume ; plus bas, les armes de Belgique et l'inscription : *Bibl. royale* (2).

1379. (9875-80). — ALBINUS. Opera.

1. (F. 1). Versus de die annunciationis Domini. = *RH.*, n. 17928.

2. (F. 1^v-64). Beati PROSPERI liber de contemplativa et activa vita. = *PL.*, t. LXXXIII, col. 1443 sqq.

3. (F. 64-81^v). Libellus sancti Isidori Hispalensis episcopi qui vocatur synonyma. = *Ibid.*, col. 827 sqq.

4. (F. 82-156^v). Liber ALBINI de sanctis virtutibus (3).

Parchemin ; 156 feuillets ; 0^m,275 × 0^m,183 ; XII^e siècle. F. 1, il y a les notes suivantes de provenance : *Liber sancti Laurentii in Leodio, qui eum violenter tenuerit anathema sit*, puis plus bas : *Sancti Laurentii leodiensis* et la cote *KK*, 5-6. L'estampille rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 1 et f. 156^v. Reliure moderne, veau raciné ; au dos, le titre doré, reproduit aussi à l'intérieur du volume sur une étiquette en maroquin rouge : *Prosper de vita contemplativa, Isidori synonyma etc.* ; plus bas, les armes de Belgique et l'inscription : *Bibl. royale*.

1380. (18391). — ALBINUS. Opera.

1. (F. 1-17). Epistola domni ALBINI heremite ad Heribertum Coloniensem episcopum (4).

2. (F. 17^v-23^v). [ISIDORUS]. Incitamentum ad bene vivendum. = *PL.*, t. LXXXIII, col. 827 sqq.

3. (F. 23^v-29^v). [De timore iudicii]. *Inc.* Si volumus Deum in tranquillitate timere.

4. (F. 29-32). Quomodo se habere debet homo in ecclesia. *Inc.* Rogo vos, fratres karissimi, quociens ad ecclesiam convenitis.

5. (F. 32-32^v). De ammonitione fraterna. = *PL.*, t. XL, col. 1169 sqq.

6. (F. 32^v-45). [CASSIANUS]. De octo principalibus viciis. = *PL.*, t. XLIX, col. 201 sqq.

(1) Sur Antoine Cautus ou Cautius (Anthony van Cuyck), voir FOPPENS, *Bibl. belg.*, p. 71 ; VAN DER AA, *Biographisch Woordenboek der Nederlanden*, t. III, p. 939.

(2) Voir une description de ce manuscrit par le B^m de Reiffenberg, dans *Bulletins de l'Académie royale des sciences et belles-lettres de Bruxelles*, t. X, 1^{re} partie, 1843, p. 375-81.

(3) De ce traité d'Albin, il n'y a d'édité que l'*Epistola ad Heribertum Coloniensem archiepiscopum*, par MARTENE et DURAND, *Amplissima collectio*, t. I, p. 360, puis *PL.*, t. CXXXVIII, col. 185-86.

(4) Cf. le volume précédent. Dans ce manuscrit, il n'y a que la première partie du traité d'Albin.

Papier, au filigrane de l'ancre; 45 feuillets; 0^m,21 × 0^m,145; XV^e siècle (1401), car f. 45, on lit : *Anno Domini M^o CCCC^o I^{mo} in iunio die XIX^o post meridiem hora quasi octava*, et f. 45^v, il y a cette note écrite au XVII^e siècle : *Indocus Strauven est possessor huius libri*. Ce volume a été acquis par la Bibliothèque royale en 1840, à la vente des livres de Lammens à Gand, pour fr. 5,50. Cartonnage.

1381. (2772-89). — DROGO. Soliloquium.

Les feuillets 1-4 sont blancs.

1. (F. 4^v). Table des matières.
2. (F. 5-7). De Trinitate beata. *Inc.* Beata illa est sempiterna trinitas, Pater et Filius et Spiritus sanctus, unus Deus.
3. (F. 7-13). [Super quibusdam psalmis].
4. (F. 13-32). Extraits des Pères.
5. (F. 33-40). Trois lettres de FULBERT DE CHARTRES. = *PL.*, t. CXXI, col. 255-60, 223-24, 260-64.
6. (F. 40^v-42). Extraits des Pères.
7. (F. 42-49^v). Qualiter penituerunt Adam et Eva. *Inc.* Cum expulsi fuissent Adam et Eva de paradyso (1).
8. (F. 49^v-52). *De modio, de Iohanne baptista, de penitentia Salomonis*, et autres courts extraits.
9. (F. 52-58^v). Versus de crimine prothoplasti, de contrarietate vitiorum et virtutum, de beatissima Maria matre Domini, [de corpore humano], [de iudiciis], [de gaudiis vite praesentis], de avaris divitibus misere cenantibus, quid significant tres mortui a Domino resuscitati, de transmutatione locorum in missa, de tribus partibus dominici corporis, de facundis placitatoribus, de duobus levite et sacerdotis filiis, [de casu].
10. (F. 59-69^v). [Legenda de ligno crucis] (2).
11. (F. 70-71^v). Epistola IHERONIMI presbiteri ad Paulam *. = *PL.*, t. XXII, col. 441 sqq.
12. (F. 71^v-76^v). Ordo veteris et novi Testamenti, synodorum, patrum, de decretis, libri vitandi, de philosophis gentium.
13. (F. 77-82^v). Liber differentie inter animam et spiritum quem Consta ben Luce cuidam amico suo scriptori cuiusdam regis edidit et Iohannes ispolensis ex arabico in latinum Ramundo Toletano archiepiscopo transtulit (3).
14. (F. 82^v-95^v). Extraits des Pères.

* *cod.*
Marcellam.

(1) Sur ce texte de la *Pénitence Adam*, voir MUSSAFIA, *Sulla [legenda del legno della croce]*, dans SITZUNGSB. DER K. AKADEMIE DER WISSENSCH., Wien, Phil.-hist. Classe, t. LXIII, 1869, p. 168.

(2) Ce texte fait suite à celui de la légende de la *Pénitence Adam*.

(3) Il s'agit peu-être du Jean de Séville dont parle N. ANTONIO, *Bibl. hisp. vetus*, t. II, p. 370.

15. (F. 95^v-119). *Moralizationes auctorum veteris et novi Testamenti.*

16. (F. 119-140). *Soliloquium domni DROGONIS sancti Iohannis abbatis et episcopi.* = *PL.*, t. CLXVI, col. 1513 sqq.

17. (F. 140-146). *De quatuor principalibus virtutibus. S. MARTINUS papa.* = *PL.*, t. LXXII, col. 21 sqq.

18. (F. 146-147^v). *Epistola ANSELMI ad Lanzonem monachum de Cluniaco.* = *PL.*, t. CLVIII, col. 1095.

19. (F. 147^v-149^v). *Sententia magistri HUGONIS, et autres extraits des Pères.*

Parchemin; 149 feuillets; 0^m,212 × 0^m,137; XIII^e siècle; initiales en toutes couleurs. Sur une étiquette insérée entre les f. 5 et 6, on lit : *Liber monasterii rubee vallis*, de même f. 149^v : *Liber monasterii sancti Pauli in Zonia sive rubee vallis*. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris, *R. F.*, se trouve f. 5 et f. 149^v. Demi-reliure moderne, dos en maroquin brun, avec le titre doré : *Flores ex dictis B^{ti} Augustini, B^{ti} Gregorii, B^{ti} Ambrosii et aliorum etc. XII saec.*; plus bas, le chiffre couronné de Léopold I^{er}.

1382. (2004-10). — S. ANSELMUS. Opera.

1. (F. 1). Table des matières.

2. (F. 2-20). *Liber ANSELMI Cantuariensis archiepiscopi de processione Spiritus sancti.* = *PL.*, t. CLVIII, col. 285.

3. (F. 20-36). *Liber ANSELMI Cantuariensis archiepiscopi de conceptu virginali.* = *Ibid.*, col. 431.

4. (F. 36-75). *Monologium ANSELMI archiepiscopi.* = *Ibid.*, col. 141.

5. (F. 75-85^v). *Proslogion ANSELMI.* = *Ibid.*, col. 223.

6. (F. 85^v-86^v). *Sumptum ex eodem libello.* = *Ibid.*, col. 227-29, cap. II-IV.

7. (F. 86^v-89). *Quid ad hec respondeat quidam pro insipiente.* = *Ibid.*, col. 242.

8. (F. 89^v-94^v). *Quid ad hec respondeat editor ipsius libelli.* = *Ibid.*, col. 247.

9. (F. 94^v-116). *Quatorze prières de S. ANSELME.* = *Ibid.*, nn. 20, 50, 51, 52, 62, 64, 67, 68, 69, 72, 74, 75, 23, 24.

10. (F. 116-118). *Meditatio peccatoris ad concitandum timorem.* = *Ibid.*, col. 722.

11. (F. 118-119^v). *Deploratio virginitatis amisse per fornicationem.* = *Ibid.*, col. 725.

12. (F. 120-122^v). *Oratio ad sanctum Nicholaum sive sanctum Martinum.* = *Ibid.*, col. 999.

13. (F. 122^v-132^v). *Lettres de S. ANSELME.* = *Ibid.*, nn. 56, 2, 29, 4, 5, 33, 37, 8, 11, 1, 3, lib. IV, 129, 117. *Des. mutil.* quid autem de me futurum sit...

Parchemin; 132 feuillets, plus deux de garde; 0^m,267 × 0^m,175; XIII^e siècle; initiales rouges et bleues; quelques jolies lettrines. F. 1, il y a la note : *Pertinet autem iste liber magistro Henrico de Zoemerem* (1) *quem emit a Pascasio librario* (2) *in ponte sancti Michaelis Parisius commorante anno Domini 1455^o novembris*, et au verso du premier feuillet de garde : *Iste liber pertinet magistro Henrico de Zoemerem teste signo suo manuali hic appposito H. de Zoemerem, quem dono dedit monasterio divi Martini in Lovanio*. Sur le dernier feuillet de garde, on lit le nom propre : *Nomus Bernodus faber*. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris, R. F., se trouve f. 2 et f. 132^v. Demi-reliure moderne, dos en maroquin rouge avec le titre doré : *Anselmi Cantuariensis opera varia. XII saec.* Plus bas, le double monogramme couronné de Léopold I^{er}.

1383. (20020-25). — S. ANSELMUS. Meditationes.

1. (F. 1-1^v). Fragment noté de l'*Exultet*.
2. (F. 2-2^v). Fragment d'un sermon sur les béatitudes. *Inc.* Videmus autem pauperes aliquos. *Des.* laverunt stolas suas in eius passione.
3. (F. 3-44^v). [Excerpta] de libris scilicet beati GREGORII, ORIGENIS et BERNARDI abbatibus super *Cantica canticorum*.
4. (F. 45-45^v). Sermo magistri RICHARDI in pascha floridum. = *PL.*, t. CXCVI, col. 1059.
5. (F. 45^v-51^v). Courts extraits des Pères, surtout de S. BERNARD.
6. (F. 52^v-56). [Flores S. BERNARDI].
7. (F. 57). Oratio ad clementissimam Dei matrem. = *RH.*, n. 11138.
8. (F. 57^v-85). Orationes seu meditationes sancti ANSELMI. = *PL.*, t. CLVIII, meditatio n. XI, oratio n. 22, medit. nn. II et III, orationes nn. 50, 51, 68, 64, 65.
9. (F. 85-88^v). De sancto Heleno ... Theone, Apollonio, de duobus monachis fratribus, de sancto Iohanne. = *BHL.*, n. 3796.
10. (F. 89-98^v). De conversatione optima sanctorum patrum. = *PL.*, t. LXXIII, col. 1004 sqq.
11. (F. 98^v). DIDYMU. De Spiritu sancto. — Fragment.

Parchemin; 98 feuillets; 0^m,206 × 0^m,14; XIII^e siècle, sauf les feuillets 57^v-51^v qui sont du XV^e; initiales rouges et vertes; le feuillet 17 est à deux colonnes. F. 56^v, on lit la note écrite à l'encre rouge : *Liber sancte Marie de Villari*. Reliure ancienne restaurée, veau brun (3).

1384. (II. 954). — S. ANSELMUS. Opera.

Au verso de la couverture, il y a une table des matières.

(1) Au sujet d'Henri de Zoemerem, voir FOPPENS, *Bibl. belg.*, p. 467-68.

(2) S'agirait-il de Pasquier Bonhomme, qui appartenait à une famille de libraires établis à Paris depuis 1394? Voir A. CLAUDIN, *Histoire de l'imprimerie en France au XV^e et au XVI^e siècle*, Paris, 1900, t. I, p. 171-72.

(3) Voir une description de ce volume dans *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. II, p. 428.

1. (F. 1-17^v). Libellus ANSELMI Cantuariensis archiepiscopi cur Deus homo. = *PL.*, t. CLVIII, col. 359 sqq. (1).
2. (F. 18-26^v). [De diligendo Deo]. — Extraits.
3. (F. 26^v-30). [De Eucharistia]. — Divers extraits des Pères.
4. (F. 30-37). Extraits.
5. (F. 37-39^v). De penitentia. — Extraits.
6. (F. 39^v-53^v). Divers extraits d'HUGUES DE SAINT-VICTOR.
7. (F. 53^v-54). Missa cotidiana presbiteri.
8. (F. 54-94). De ortu amicitie. AILREDUS. = *PL.*, t. CXCIV, col. 659 sqq.
9. (F. 94-94^v). De penitentia Salomonis.
10. (F. 95-155^v). [Liber pronosticorum IULIANI episcopi]. = *PL.*, t. XCVI, col. 453.
11. (F. 155^v-157^v). [De ecclesia].
12. (F. 158-165). Physiologus. = *PL.*, t. CLXXVII, col. 48 sqq.
13. (F. 165^v-180^v). [De computo].

Il y a un calendrier, où on relève les notes suivantes, le 5 février : *Obitus Benzeldadi*; le 4 mai : *Obitus Ode Atrebatensis*; le 6 juin : *Goufredus monachus*; le 5 août : *Obiit donna Beatrix pie memorie abbatis*; le 21 novembre : *Obiit Willelmus levita*. Parmi les saints, on distingue, le 16 juillet : *Translatio S. Bertini abbatis*; le 20 juillet : *Vulmari*; le 22 juillet : *Wandregisili abbatis*; le 5 septembre : *Bertini abbatis*; le 9 septembre : *Audomari episcopi*; le 17 : *Lantberti episcopi et martiris*; le 25 : *Firmini episcopi et martiris*; le 13 décembre : *Auberti episcopi*; le 14 : *Folquini episcopi et confessoris*.

14. (F. 181-190^v). Orationes de sancta Maria.

Sous ce titre, il y a huit pièces de vers. Les cinq premières ont tous les vers terminés par les mêmes lettres, dont l'ensemble forme le nom MARIA.

| | | |
|----------|---|----|
| OR. I. | Stella maris, lumen orbis, fidei praeconium | |
| OR. II. | Regina virginum, felix puerper | A |
| OR. III. | Stella stellis omnibus fulgore celebrior | R |
| OR. IV. | Alma virgo regina seculi | I |
| OR. V. | Maria melliflua, stella maris fulgid | A. |

La sixième oraison se termine en E :

Maris stella, mater Christi salvatoris hostiE.

Le septième en M :

Urbs fuit in Galilea Nazareth urbs urbiuM.

La dernière a quatre vers en E, cinq en M, six en T, quatre en S, quatre en O et huit en M.

(1) Il n'y a que des extraits de ce traité.

15. (F. 190^v-191). De sancta Maria Magdalena.
Inc. Omnis homo qui premeris enormitate sceleris.
Des. Nos divina clementia perducatur ad celestia.
16. (F. 191-192). Passio sancti Mauricii. = *BHL.*, n. 5752.
17. (F. 192-193). Vita sancte Thaysis. = *BHL.*, n. 8019.
18. (F. 193). [HILDEBERTUS. Versus de Papyrio Praetexto]. = *PL.*, t. CLXXI, col. 1431-32.
Inc. Concilium fecere viri, seditque senatus.
Des. Dotavitque suum nomine, veste, genus.
19. (F. 193). [HILDEBERTUS.] De quodam promiscuo. = *Ibid.*, col. 1446.
20. (F. 193^v-196^v). [Quaestiones de Deo]. *Inc.* Sepius rogatus a condiscipulis quasdam quaestiunculas enodare importunitati illorum non fuit facultas negando obutare. *Des. mutil.* servo suo iniungeret et monstraret inter...
- Parchemin; 196 feuillets; 0^m,222 × 0^m,155; XIII^e siècle; les feuillets 181-196 sont à deux colonnes; initiales rouges et bleues, quelques-unes ornées de dessins. F. 1 et f. 117^v, on lit la note : *Liber sancte Marie de Camberone*, et au bas d'un grand nombre de pages, se trouve l'inscription : *De Camberone*. L'ex-libris de *Sir T. P. Middle Hill*. 349 a été imprimé sur le deuxième plat intérieur de la couverture. Ce volume a été acquis par la Bibliothèque royale, en 1888, pour 75 francs. Très belle reliure moderne, veau estampé avec petits fers et l'inscription : *Regia Bibl. Belgica*; fermoirs en cuivre ciselé (1).
- 1385.** (II. 994). — S. ANSELMUS. Opera.
1. (F. 1-2^v). [ANSELMUS orationes]. *Inc. mutil.* ... visione angelorum essem tritus. = *PL.*, t. CLVIII, col. 904, nn. 21 et 41.
2. (F. 3). Epistola domni ANSELMUS ad Gondulfum de orationibus sancte Marie. = *Ibid.*, col. 1086, n. xx.
3. (F. 3-39^v). [ANSELMUS orationes]. = *Ibid.*, col. 948 sqq., nn. 50-52, 63-65, 67-69, 72, 71, 75, 74, 23, 24.
4. (F. 39^v-71^v). [ANSELMUS meditationes]. = *Ibid.*, col. 722 sqq., nn. 2, 3; oratio 29, col. 921; meditatio n. 5, oratio n. 3, col. 865; meditatio n. 4, oratio n. 4, col. 868; oratio n. 6, col. 872; meditatio n. 6, oratio n. 25, col. 910; n. 26, col. 913; n. 27, col. 917; n. 15, col. 888.
5. (F. 71^v-72^v). Ymni domni ANSELMUS in commemoratione domine nostre sancte Marie. = *Ibid.*, col. 1035-37.
6. (F. 72^v-74^v). Oratio ad Deum et ad omnes sanctos. = *Ibid.*, col. 931-36.

(1) Ce volume a été décrit dans *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Bru.xell.*, t. II, p. 456-57.

7. (F. 74^v-75^v). Oratio ad sanctam Mariam et ad omnes sanctos. = *Ibid.*, col. 965-68.

Parchemin; 75 feuillets; 0^m,22 × 0^m,132; XIII^e siècle; initiales rouges et bleues; signatures 1-x. Ce volume provient de Saint-Ghislain, il reste encore à l'intérieur de la couverture un fragment de maroquin rouge avec la cote *QQQQ* de cette bibliothèque (1). Le volume a ensuite appartenu, n. 4764, à sir Thomas Phillipps et a été acquis par la Bibliothèque royale en 1888, pour 75 francs. Reliure moderne, chagrin brun estampé, avec l'inscription : *Regia Bibl. Belgica*.

1386. (2854-57). — S. ANSELMUS. Opera.

1. (F. 1). Table des matières.
2. (F. 2-40^v). Tractatus beati THOME de divinis moribus (2).
3. (F. 40^v-81). Tractatus sancti BASILII episcopi de milicia cristiana. = *PG.*, t. XXXI, col. 619 sqq.
4. (F. 81^v-97). Tractatus beati ANSELMI de pace et concordia. = *PL.*, t. CLVIII, col. 1015.
5. (F. 98-128). Tractatus de contemptu mundi. *Inc.* Nolite diligere mundum, neque ea que in mundo sunt.

Parchemin; 128 feuillets, plus trois de garde; 0^m,172 × 0^m,118; XIV^e siècle; initiales rouges et bleues. F. 1, on lit : *Liber monasterii vallis sancti Martini in Lovanio, in die grijmstrate*; f. 40^v : *Est liber hic sancti Martini Lovaniensis*, et au verso de l'avant-dernier feuillet de garde : *Iste liber pertinet ad librariam domus sancti Martini in Lovanio in die grimstrate; est liber hic sancti Martini lovaniensis*. F. 2 et 128, l'estampille rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris. Reliure ancienne restaurée, veau brun estampé.

1387. (12014-41). — S. ANSELMUS. Opera.

1. (F. 1). Table des matières.
2. (F. 2-39). Confessiones beati AUGUSTINI. = *PL.*, t. XXXIII, col. 660 sqq.
3. (F. 40-44^v). Liber beati AUGUSTINI de verbo Dei. = *PL.*, t. XL, col. 951 sqq.
4. (F. 44^v-57^v). Enchiridion AUGUSTINI. = *Ibid.*, col. 231.
5. (F. 58-111^v). Iherarchia Dyonisii cum comento HUGONIS DE SANCTO VICTORE. = *PL.*, t. CLXXV, col. 923.
6. (F. 112-113). [Epistola DIONYSII] Iohanni evangelistae. = *PL.*, t. CXXII, col. 1193.
7. (F. 113-116). [Prologus in DIONYSII hierarchiam]. = *Ibid.*, col. 1025-31.
8. (F. 116-117^v). Omelia ORIGENIS. *Inc.* Audivimus, fratres, Mariam ad monumentum foris stantem.

(1) Cf. A. PONCELET, S. J., *Annales de l'abbaye de Saint-Ghislain*, p. 401.

(2) Cf. QUÉTIF-ECHARD, *Scriptores ordinis praedicatorum*, t. I, p. 341.

9. (F. 118-145^v). IOHANNIS presbiteri DAMASCENI traditio orthodoxa fidei a Burgundione iudice cive Pisano de greco in latinum (1).

10. (F. 145^v-159). Liber AUGUSTINI de anima et de spiritu. = *PL.*, t. XL, col. 779 sqq.

11. (F. 159-159^v). [De vitiis et virtutibus]. *Inc.* Exultatio est in adversis. *Des.* quod est appetitus iusticie, amor mensure.

12. (F. 159^v-163^v). [IOHANNES DE RUPELLA. De operationibus anime]. *Inc.* Sicut dicit Damascenus, impossibile est facultatem esse expertem aliqua naturali operatione. *Des.* Facultas rationis et voluntatis qua bonum et cetera (2).

13. (F. 163^v-164^v). Epistola sancti DYONISI ad Tymotheum super morte apostolorum Petri et Pauli. = *BHL.*, n. 6671.

14. (F. 165-165^v). De silentio. *Inc.* Silentium ab Ysaia ... commendatur. *Des.* moderatis verbis temperare sermonem.

15. (F. 165^v). Ammirabile et venerabile miraculum quod quondam in hoc cenobio fertur contigisse. *Inc.* Monasterium istud quod edificatum est in honore sanctorum apostolorum Iacobi et Andree quidam adolescens consobrinus praepositi maioris ecclesie leodiensis causa devotionis et religionis intravit.

16. (F. 166-187^v). Tractatus de anima et potentiis et viribus et operationibus anime expositus a magistro IOHANNE DE RUPELLA ordinis fratrum minorum (3).

17. (F. 188-202). Liber ANSELMI de similitudinibus. = *PL.*, t. CLIX, col. 605 sqq.

18. (F. 202-204^v). Sermo ANSELMI de passione Domini. = *PL.*, t. CLVIII, col. 748 sqq.

Le feuillet 205 est blanc.

19. (F. 206-218^v). Liber beati ANSELMI Canthuariensis episcopi ... cur Deus homo. = *PL.*, t. CLVIII, col. 359 sqq.

20. (F. 218^v-220). Meditatio EIUDEM deprecativa ex recordatione dominice passionis. = *Ibid.*, col. 762 sqq.

21. (F. 220-222^v). Liber sancti ANSELMI Canthuariensis archiepiscopi de libero arbitrio. = *PL.*, t. CLVIII, col. 489.

22. (F. 222^v-226). Tractatus beati ANSELMI Canthuariensis archiepiscopi de beatitudine celestis patrie. = *PL.*, t. CLIX, col. 587.

23. (F. 226-231). Liber sancti ANSELMI de incarnatione Verbi. = *PL.*, t. CLVIII, col. 259.

24. (F. 231-236^v). Liber sancti ANSELMI Cantuariensis de conceptu virginali et peccato originali. = *Ibid.*, col. 431.

(1) Voir plus haut, p. 103, n. 1368 (893-98).

(2) Cf. *Histoire littéraire de la France*, t. XIX, p. 173.

(3) Cf. *ibid.*, p. 172-173.

25. (F. 236^v-240). Liber sancti ANSELMI Canthuariensis archiepiscopi qui dicitur *Prosligion*. = *Ibid.*, col. 223.

26. (F. 240-241^v). Obiectiones ... adversus predicta. = *Ibid.*, col. 242.

27. (F. 241^v-243). Quid ad istas obiectiones respondeat auctor ipsius libelli. = *Ibid.*, col. 245.

28. (F. 243-254^v). Monologion beati ANSELMI. = *Ibid.*, col. 141.

29. (F. 254^v). Epistola HILDEBERTI Cenomanensis episcopi ad Anselmum archiepiscopum. = *PL.*, t. CLXXI, col. 216-17, ep. ix.

30. (F. 254^v-261). Liber sancti ANSELMI Canthuariensis archiepiscopi de processione Spiritus sancti contra Graecos. = *PL.*, t. CLVIII, col. 285.

31. (F. 261). Epistola HILDEBERTI Cenomanensis episcopi pro eodem libro gratias agentis. = *PL.*, t. CLXXI, col. 220-21, ep. XIII.

32. (F. 261-264^v). Liber sancti ANSELMI Canthuariensis archiepiscopi de veritate. = *PL.*, t. CLVIII, col. 467.

33. (F. 264^v-271). Liber domni ANSELMI de casu diaboli. = *Ibid.*, col. 325.

34. (F. 271-272). Liber eiusdem ANSELMI de pane sacrificii contra Grecos. = *Ibid.*, col. 541.

35. (F. 272-278^v). Liber EIUDEM de concordia prescientie et predestinatione et gratia Dei cum libero arbitrio. = *Ibid.*, col. 507.

36. (F. 279-285). [S. ANSELMI orationes]. = *Ibid.*, col. 969 sqq., nn. 62, 75, 64, 65, 67-69, 74, 72, 71.

37. (F. 285^v). Oratio beati AUGUSTINI ad beatam Virginem.

38. (F. 286-289^v). [S. ANSELMI orationes et meditationes]. = *PL.*, t. CLVIII, col. 902 sqq., nn. 20, 50-52, meditationes II et III, *ibid.*, col. 722-29, orationes nn. 23 et 24, *ibid.*, col. 906-10.

39. (F. 289^v). Epistola beati Ignatii ad beatam Mariam Virginem. — Epistola beate Marie ad beatum Ignatium (1).

40. (F. 289^v-290). Epistola ABGARI regis ad Ihesum. — Exemplar rescripti ab Ihesu (2).

41. (F. 290). Extrait. *Inc.* Quando tamen peccaverit quoniam in Adam peccavit. *Des.* virum mirabiliter propagavit etc.

42. (F. 290). Epistola ANSELMI [ad Waleranni querelas responsio]. = *PL.*, t. CLVIII, col. 551-54.

43. (F. 290^v). Praefatio ANSELMI Canthuariensis archiepiscopi. = *Ibid.*, col. 644. *Des. mutil.* Due iste sorores sicut patres sancti plenissime...

(1) Cf. supra, pp. 4, 10, 88, 99.

(2) Voir, pour les éditions de cette pièce, A. HARNACK, *Geschichte der altchristlichen Litteratur*, t. I, p. 533 sqq.

44. (F. 291). Ex questionibus de *Quodlibet* sancti THOME DE AQUINO. — Courts extraits.

Parchemin; 291 feuillets; 0^m,298 × 0^m,23; XIV^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et bleues. F. 1, on lit : *Liber ecclesie sancti Iacobi leodiensis*; f. 1^v : *Liber monasterii sancti Iacobi leodiensis*, et en dessous : *Hic est Augustinus de confessionibus cum aliis libris multis, et est unus de tribus voluminibus legatis monasterio sancti Iacobi leodiensis ex parte magistri Berneri de Nivelles (1) ecclesie Sancti Martini leodiensis quondam curatoris ut reponantur in archivo librorum cum aliis ad perpetuam refectonem spiritualem fratrum qui in eisdem legere voluerint*. F. 290, il y a deux fois la note suivante : *Liber ecclesie sancti Iacobi leodiensis*. F. 1, l'ex-libris de Le Candele. Reliure ancienne restaurée, veau raciné.

1388. (2475-81). — S. ANSELMUS. Opera.

1. (F. 1-2). Table des matières.

Les feuillets 2^v-3 sont blancs.

2. (F. 4-58^v). Liber ANCELMII (2) Cantuariensis archiepiscopi de similitudinibus. = *PL.*, t. CLIX, col. 605 sqq.

3. (F. 60-70^v). Libellus de viciis et virtutibus editus a fratre THOMA DE AQUINO tunc ordinis fratrum praedicatorum nunc vero sanctus canonizatus per summum pontificem bone memorie Iohannem XXII^{um}, millesimo C^oC^oC^o. XXV^o, indictione tercia (3).

Le feuillet 71 est blanc.

4. (F. 72-94^v). Quinque incitamenta ad diligendum Deum. *Inc. Cum ad amandum Deum multa et mira incitamenta in sacra scriptura habeamus*.

Le feuillet 95 est blanc.

5. (F. 96-125). Epistola de obitu beati Ieronimi per EUSEBIUM eiusdem discipulum. = *BHL.*, n. 3866 (4).

6. (F. 125-135^v). Manuale sancti AUGUSTINI. = *PL.*, t. XL, col. 951 sqq.

7. (F. 136-187^v). Cordiale de quatuor novissimis (5).

8. (F. 187^v-192). [Miracula S. Hieronymi]. = *BHL.*, n. 3868 (6).

(1) Sur Bernier de Nivelles, voir L. DELISLE, *Le Cabinet des manuscrits de la Bibliothèque nationale de Paris*, t. II, p. 145,

(2) F. 4^v, il y a la note : *Hoc opusculum S. Anselmo omnino abiudicat P. Theophilus Raynaudus in editione operum S. Anselmi*. Cf. MIGNÉ, *PL.*, t. CLVIII, col. 47-48.

(3) F. 59^v, on lit cette note : *Sequens libellus habetur impressus in opusculis opusculo 71, sed hic in fine duo sunt §§, qui non sunt in impressis*. Cf. QUÉTIF-ECHARD, *Script. ord. praed.*, t. I, p. 342.

(4) La pièce n'est pas complète, il manque les chap. I-IX et le commencement du XI^e. Cf. *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. I, p. 334.

(5) Sur les diverses éditions de ce traité voir HAIN, *Repertorium bibliographicum*, t. II, p. 197-98, nn. 5691-5712; CAMPBELL, *Annales de la typographie néerlandaise au XV^e siècle*, p. 365-68, n. 1296-1304.

(6) Il n'y a qu'une partie de la lettre du pseudo-Cyrille.

Parchemin; 192 feuillets; 0^m,20 × 0^m,14; XV^e siècle; quelques lettrines. F. 1, il y a la note : *Liber monasterii canonicorum regularium callis sancti Martini in Lovanio* (1); de même, f. 104^v et f. 192^r : *Est liber hic sancti Martini Lovaniensis*; puis f. 4 : *Societatis Iesu Lovanii*. Très jolie reliure ancienne, veau brun estampé de trois fers à l'agneau et à la fleur de lis.

1389. (2635-37). — S. ANSELMUS. Opera.

1. (F. 1-91^v). Liber beati ANCELMII episcopi Cantuariensis de similitudinibus. = *PL.*, t. CLIX, col. 605 sqq.

2. (F. 91^v-94^v). Meditationes EIUSDEM. = *PL.*, t. CLVIII, col. 722-25.

3. (F. 94^v-97). Epistola secunda EIUSDEM ad Valerianum Nuemburgensem episcopum. = *Ibid.*, col. 551-54.

Sur les feuillets de garde, fragments d'un traité de philosophie et d'un ordinaire d'ordre religieux, *in laudibus, de capitulo et confessione*.

Parchemin; 97 feuillets, plus treize de garde; 0^m,195 × 0^m,14; XV^e siècle. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale se trouve f. 1 et f. 97. Reliure ancienne, veau brun estampé.

1390. (8775-76). — S. ANSELMUS. Opera.

1. (F. 1-53^v). Liber beati ANCELMII *Cur Deus homo*. = *PL.*, t. CLVIII, col. 359 sqq.

Le feuillet 54 est blanc.

2. (F. 55-208^v). Centiverbium de causis et causatis secundum eximium doctorem artium ac medicine magistrum IOHANNEM DE CALDERIA (2).

Comme feuillets de garde, fragments de bréviaire.

Parchemin; 209 feuillets; 0^m,185 × 0^m,125; XV^e siècle (1493), car on lit, f. 208^v : *Scriptum atque finitum per me D. Desiderium Iohannis Novi Castri anno Domini 1493 ad instantiam egregii doctoris magistri Siquilini*. Sur le dernier feuillet de garde, il y a la note : *Pertinet f. Arnolde Dyest abbati et canonico Tongerloensi anno 1543*. La reliure, veau brun estampé sur ais de bois, est aux armes du prélat Arnold Dyest (3).

1391. (708-19). — S. ANSELMUS. Opera.

1. (F. 1). Contenta in hoc volumine.

2. (F. 2-48^v). Abbreuiatum libri de homine et salute ipsius cuiusdam magistri RAYMUNDI DE SABUNDA, doctoris theologie atque in medicina precipui, et dicitur a quibusdam liber creaturarum (4).

Le feuillet 49 est blanc.

(1) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 211.

(2) Ce traité a été publié à Venise en 1547. Cf. BRUNET, *Manuel du libraire*, 5^e éd., t. I, p. 1470.

(3) Cf. supra, p. 285, n. 1340 (7997-8002).

(4) Au sujet de cet auteur, cf. D. REULET, *Un inconnu célèbre. Recherches historiques et critiques sur Raymond de Sabonde*, Paris, 1875. Sur les éditions du traité, voir BRUNET, *Manuel du libraire*, 5^e éd., t. V, p. 9.

3. (F. 50-85). *Dyalogus christiani contra Saracenum. Inc. Sic Deus dilexit mundum ut filium suum unigenitum daret.*

4. (F. 86-109^v). *Epistola Pii pape ad Turcorum imperatorem* (1).

5. (F. 110-151). *Tractatus contra principales errores perfidi Machometi et Turcorum ... compilatus per reverendissimum domnum IOHANNEM DE TURRE CREMATA romane ecclesie cardinalem tituli sancte Marie trans Tiberim* (2).

Les feuillets 151^v-153^v sont blancs.

6. (F. 154-186^v). *Speculum considerationis compositus a R. P. D. P. DE ALYACO cardinali episcopo Cameracensi* (3).

7. (F. 186^v-190). *Questio solemniter disputata anno Domini xiiii^olxij^o in universitate Parisiensi per doctissimum et celeberrimum sacre theologie professorem magistrum HENRICUM DE ZOEMEREN Brabantinum* (4).

8. (F. 190). [*Disputatio HENRICI DE ZOEMEREN cum Petro de Rivo* (5) et epitaphium eiusdem ab Aleriensi episcopo (6) compositum].

9. (F. 190^v). *Verba Pii pape secundi quae habuit in pratis apud pontem Milvium in occursu capitis beati Andree.* = *BHL.*, n. 439. — Il n'y a qu'un fragment de la pièce.

10. (F. 191-203^v). *ANCELMI Cantuariensis episcopi liber cur Deus homo.* = *PL.*, t. CLVIII, col. 359 sqq.

11. (F. 203^v-234^v). *Breviloquium BONE FORTUNE super sententias magistri Petri* (7).

12. (F. 234^v-241). *Liber domni ANCELMI Cantuariensis archiepiscopi de conceptu virginali et de originali peccato.* = *Ibid.*, col. 431 sqq.

13. (F. 241-256). *Monologium ANCELMI Canthuariensis archiepiscopi.* = *Ibid.*, col. 141 sqq.

Les feuillets 257-260 sont blancs.

14. (F. 261). *Index.*

Papier, aux filigranes de la lettre *P* et de la licorne; 261 feuillets, plus quatre de garde; 0^m,295 × 0^m,212; XV^e siècle; ancienne pagination i-clxiii. F. 1, il y a la note : *Istud volumen relinquo ego Walterus Leonii clastro Rubee Vallis in Zonia.* L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris, *R. F.*, se trouve f. 2 et f. 256^v. Demi-reliure moderne; au dos, en maroquin brun, les titres dorés : *Raymundi de Sabunda Theologia naturalis. Dialogus christiani contra Saracenum etc. XV saec.*; plus bas, le chiffre couronné de Léopold I^{er}.

(1) Voir *Aeneae Sylvii opera*, Basileae, 1551, p. 872-904.

(2) Voir, sur cet auteur, QUÉTIF-ECHARD, *Scriptores ordinis praedicatorum*, t. I, p. 837-43. HAIN, *Repert. bibliogr.*, t. IV, nn. 15736, 15746, signale des éditions de ce traité.

(3) Cf. L. SALEMBIER, *Petrus de Alliaco*, p. xli.

(4) Cf., sur Henri de Zoemerén, supra, p. 312.

(5) FOPPENS, *Bibl. belg.*, p. 1004-5.

(6) Cet *Aleriensis episcopus* est Jean-André de Bossi.

(7) *S. Bonaventurae opera omnia*, Romae, 1596, t. VI, p. 5 sqq.

1392. (11740-48). — S. ANSELMUS. Proslogium.

1. (F. 1). Table des matières.
2. (F. 2-26). Proslogium * beati ANCELMII episcopi. = *PL.*, * *Ita corr. cod. prius Monologium.*
t. CLVIII, col. 225 sqq. Le prologue manque.
3. (F. 26^v-39^v). [SENECA. De remediis fortuitorum].
Le feuillet 40 est blanc.
4. (F. 41-86). [De vitiis et virtutibus]. *Inc.* Apostolica vox clamat per orbem. *Des.* Nam cantando transies ad celestem chorum nupta felicissime regi saeculorum. Amen.
5. (F. 86^v-88^v). Diverses sentences extraites d'auteurs classiques et de Pères.
6. (F. 89-98^v). Dyalogus HAIMERICI (1).
Les feuillets 99-100 sont blancs.
7. (F. 100^v). Septem species artis musicae.
8. (F. 101^v). Feuillet de comptes.
9. (F. 102-116). [De despectione mundi].
Inc. Cartula nostra tibi mandat, dilecte, salutes.
Des. Sic Dominus mores istos levat ad meliores.
10. (F. 117-117^v). Antiennes de S^{te} Agnès, S. Jérôme, S. Étienne, S. Jean.
11. (F. 118^v-121^v). Courts extraits des Pères.
12. (F. 122-128). [IOHANNES DE SCHOONOVIA]. Epistola de contemptu mundi(2).
13. (F. 128^v-134). Extraits de S. AUGUSTIN.
14. (F. 134). Notes relatives à Henri de Malle, chapelain de Saint-Pierre, à Louvain.
15. (F. 135-150^v). [De morte]. *Inc.* Memorare novissima tua.
16. (F. 151-152^v). Notes diverses.
17. (F. 153-166^v). Catho dans castigationem nato.
Inc. Si Deus est animus nobis, ut carmina dicunt.
Des. Versibus ecce bonis prudentia dogma Cathonis.
18. (F. 167^v). Sentences diverses.

Parchemin, les 88 premiers feuillets, le reste en papier; 167 feuillets; 0^m,14 × 0^m,104; XVI^e siècle. F. 1, on lit la note : *Pertinet Bethleem monasterio canonicorum regularium prope Lovanium liber iste. Que in pergameno vel franceno sunt scripsit frater noster Indocus van Scooneberghen, reliqua que in papiro sunt habemus a bone memorie domno Henrico De Mal, capellano sancti Petri Lovaniensis.* F. 2, il y a l'inscription : *Bethleem*, et f. 167^v : *Pertinet Henrico de Malle capellano sancti Petri*

(1) Cf. FABRICIUS-MANSI, *Bibl. lat. med. et inf. aet.*, t. III, p. 205.

(2) Sur ce traité et son auteur, voir J. ACQUOY, *Het Klooster te Windesheim*, t. II, p. 318.

Lovaniensis. Pertinet monasterio beate Marie in Bethleem prope Iovanium liber iste.
Reliure moderne très élégante, peau de truie estampée; sur le plat, en relief,
l'inscription : *Regia Bibl. Belgica.*

1393. (11052). — S. ANSELME. Traduction de trois oraisons, en français.

1. (F. 1-2^v). Préface du traducteur, cistercien, et dédicace à Philippe le Bon.

2. (F. 2^v-5). La première oraison de la Vierge Marie (1).

3. (F. 5-8). Seconde oraison (2).

4. (F. 8-17^v). Troisième oraison (3).

Parchemin; 17 feuillets; 0^m,178 × 0^m,13; XV^e siècle; jolies initiales. F. 1, petite miniature représentant le traducteur offrant son œuvre au duc de Bourgogne. Le volume provient de l'ancien fonds de la bibliothèque des ducs de Bourgogne (4). F. 1 et f. 17^v, il y a le cachet rouge, *R.F.*, de la Bibliothèque nationale de Paris. Reliure vélin rose.

1394. (10500-01). — S. ANSELME. Œuvres, en français.

1. (F. 1-1^v). [Frère Pierre CRAPILLET]. Prohème du transferant de latin en françois sur aucun erreurs de la foy catholique.

2. (F. 1^v-6). Prohème de S. Anselme et chappitres.

3. (F. 6-108). Version française du *Cur Deus homo* de S. ANSELME (5).

4. (F. 108-147^v). [HUGUES DE SAINT-VICTOR]. Traduction française du *De arrha animae* (6).

Papier, 147 feuillets plus sept de garde; 0^m,296 × 0^m,215; XV^e siècle; belles rubriques. Le premier feuillet de garde contient les armoiries de Philippe le Bon, duc de Bourgogne (7). F. 1 et 147^v, il y a l'estampille, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris. Reliure ancienne vélin; au dos, le titre doré : *Anselme. Erres de la foy.*

1395. (18239). — SIGEBERTUS GEMBLACENSIS. Chronica.

1. (F. 1-1^v). Notes du B^{on} DE REIFFENBERG sur ce volume.

2. (F. 2-55^v). [SIGEBERTI chronica] (8).

3. (F. 56-63^v). [ANSELMI Gemblacensis additamentum].

(1) Cf. *P.L.*, t. CLVIII, col. 948-50, n. I.

(2) *Ibid.*, col. 950-52, n. LI.

(3) *Ibid.*, col. 952-59, n. LII.

(4) Ce volume a en effet appartenu à la maison de Bourgogne; cf. BARROIS, *Bibliothèque protypographique*, Paris, 1830, p. 321, n. 2274.

(5) Cf. *P.L.*, t. CLVIII, col. 359.

(6) *Ibid.*, t. CLXXVI, col. 951.

(7) Cf. BARROIS, *Bibliothèque protypographique*, p. 139, n. 840.

(8) Pour les éditions de la Chronique de Siebert, voir POTTHAST, *Bibl. hist. med. aevi*, 2^a ed., p. 1016-17.

Parchemin; 63 feuillets; 0^m31 × 0^m235; XII^e siècle. Ce manuscrit est, pour la première partie, l'autographe même de Sigebert de Gembloux. Ce volume provient de l'abbaye de Saint-Pierre à Gembloux. F. 63^v, il y a la note : *Gemblours. J. J. Waroux*. Après la ruine de ce monastère, il tomba entre les mains de M. Baude, à Gembloux, et la Bibliothèque royale l'acheta à son fils, l'avocat Baude, en mai 1840, pour fr. 1900. Reliure veau raciné; au dos, le titre doré : *Chron. Sigib. Gemb.* (1).

1396. (14782). — SIGEBERTUS GEMBLACENSIS. Chronica.

1. (F. 1-4). Collation des manuscrits de Pithou.
2. (F. 5-98). Chronica domini SIGIBERTI Gemblacensis monachi.
3. (F. 98^v-99). Noms des papes depuis DAMASUS jusqu'à ALEXANDER.
4. (F. 99^v-100^v). Comptes, au crayon.

Parchemin; 100 feuillets; 0^m276 × 0^m195; XIII^e siècle, sauf les quatre premiers feuillets écrits au XVII^e siècle et les feuillets 5-16 recopiés au XVII^e siècle, car f. 17, il y a la note : *Hic codex principio mutilus octo foliis restitutus est aliis duodecim anno 1686 cura Francisci Desmares in curia Patroni* (2). Deux colonnes, signatures II-XI. Ce volume appartenait jadis à Pierre Pithou, dont on trouve la signature f. 98. Sur le premier plat intérieur, il y a l'ex-libris de la bibliothèque de Rosny. Reliure parchemin (3).

1397. (II. 1055^{bis}). — SIGEBERTUS GEMBLACENSIS. Chronica.

1. (F. 1). [Narrationes de variis rubricis liturgicis]. *Inc.* In civitate Autisiodoro fuit valde relligiosus presbiter. *Des.* atque in alias ecclesias eadem laudabilis consuetudo inde ivit. Amen.
2. (F. 1^v-61^v). Chronographia domni SIGIBERTI Gemblacensis monachi ab eo loco ubi Iheronimus terminavit.
3. (F. 61^v-64). [Chronicon post Siebertum].
4. (F. 64^v). IOSEPHUS. Extraits des livres VIII, X et XVIII des *Judaicae antiquitates*.

Parchemin; 64 feuillets; 0^m293 × 0^m195; XIII^e siècle. F. 64^v, on lit : *Liber sancte Marie de Alna* (4); de là le volume a passé dans la collection Phillipps, n. 4632, et a été acquis par la Bibliothèque royale en 1888. Reliure, cuir de Russie estampé; au dos, le titre doré : *Sigeberti Gemblacensis Chronicon*.

(1) Sur ce manuscrit voir B^{on} DE REIFFENBERG, *Bulletin de l'Académie des Sciences et belles-lettres de Bruxelles*, t. VII, 2^e partie, pp. 22-30, 102-110, et *Annuaire de la Bibliothèque royale de Bruxelles*, 1841, p. 107-17; *MG.*, Scr. t. VI, p. 284-87.

(2) Le premier cahier qui manque à ce volume, a été retrouvé dans le n. 7193 du fonds latin de la Bibliothèque nationale de Paris. Voir *MG.*, Scr. t. VI, p. 287.

(3) Voir sur ce manuscrit *MG.*, tom. cit., p. 287.

(4) Ce manuscrit est probablement celui que cite SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 260 et que les *Monumenta Germaniae*, Scr. t. VI, p. 297, signalent comme perdu.

1398. (21838). — ODO CAMERACENSIS. De canone missae.

1. (F. 1-11). Tractatus domni Odonis Cameracensis episcopi de canone altaris. = *PL.*, t. CLX, col. 1053 sqq.

2. (F. 11-12). Rubriques de la messe.

3. (F. 12^v). Extraits divers, entre autres les quatre vers :

Ferrandus, regina, tuus, mea cara Minerva,
Ibit Parisius, magna comitante caterva,
Sed patrie occidit bellandi captus amore,
Rex cadet in praelio tumulique carebit honore.

4. (F. 13-67). Interrogationes que de scriptis sanctis et canonibus sacris in foro penitentie ad utilitatem confitentium fieri possunt.

5. (F. 67-68). Questio si liceat aliquo tempore et quando exactio-
nem facere in Iudeos.

Parchemin; 68 feuillets; 0^m,17 × 0^m,11; XIII^e (les douze premiers feuillets) et XIV^e siècle. Ce volume a appartenu à l'abbaye de Parc, car sur le premier plat intérieur, il y a la cote de cette bibliothèque *I. theca III*, et sur les deux plats les armoiries de l'abbaye ont été grattées; f. 13. on lit la note : *Bibliotheca Parcensis, 1648*. Ce manuscrit a été acheté fr. 28,60 à la vente des livres de van Alstein, en 1863, à Gand. Reliure veau; au dos, le titre doré : *Tract. mora. diver.*, vol. IV, tranche rouge.

1399. (8084-8107). — ODO CAMERACENSIS. Opera.

1. (F. 1). Vers.

Curia dat curas, ergo si vivere curas
Et bene secure, non sit tibi curia cure.

Les feuillets 1^v-2 sont blancs.

2. (F. 2^v). Note sur les congrégations de l'ordre de S. Augustin.

3. (F. 3-3^v). Contenta.

4. (F. 4-4^v, 6-6^v). Extraict uut een hantboecxken oft Manuaelken inhoudende vele diversche oude geschiedenissen toebehoerende Mr Claes Berwouts schepenen clerck op stadhuys binnen Loeven onder aneranden nopens de stadt Loeven.

5. (F. 5). Extract uuyt sekeren manuaelken te Leliendale by heeren Pieteren Kyps mede prior aldaer gethoont.

6. (F. 7). Chanson imprimée sur la délivrance de Louvain en 1582, en flamand.

7. (F. 8-8^v). Oppidorum Brabantie miserie et afflictiones, en latin et en flamand.

8. (F. 9-10^v). Détails sur la cherté des vivres à Louvain en 1586, chronique de 1587.

Le feuillet 11 est blanc.

9. (F. 12-14^v). Fragmentum de supplicatione civitatis Lovanjiensis

desumptum ex archivis partim Lovaniensium et partim aliunde, que celebratur prima dominica septembris.

Le feuillet 15 est blanc.

10. (F. 16-19). Forma boni prioris. *Inc.* Ante omnia debet esse vir syncerus.

11. (F. 20-23). Ex vetustissimo codice manuscripto monasterii Marchennensis, absque ulla distinctione capitum... Cantica canticorum (1).

12. (F. 23^v-38). Ex eodem codice Apocalipsis.

13. (F. 39-58^v). PETRI BLESENSIS commentaria in librum Iob ad regem Anglie Henricum, ex manuscripto codice Marchennensi (2). = *PL.*, t. CCVII, col. 795 sqq.

14. (F. 59-78). De origine monasterii Marchianensis (3).

15. (F. 78^v-82^v). Quodlibetica quaestio M. Caroli la Loo habita Duaci in collegio Marchennensi, anno 1582, an Duacum sit Flandrice, Hannonie an vero Francice ditionis (4).

16. (F. 83-84). Ex vetusto codice manuscripto cenobii Marchianensis (5) narratio de corpore S. Iacobi quomodo ab Iherusalem translatum sit in Hispaniam. = *BHL.*, n. 4066.

17. (F. 85-101^v). Tractatus R. P. Domini IOHANNIS TRITHEMI abbatis Spanhemensis de proprietate monachorum (6).

18. (F. 102-109^v). Oratio eiusdem R. P. Domini IOHANNIS TRITHEMI abbatis Spanhemensis de cura pastoralis (7).

19. (F. 110-123^v). Van den last der Pastoires, mans of vrouwen, een sonderlinghe oratie ... by den E. Heere JAN TRITHEMIUS ... overghestelt uut den latijn in onse brabantse spraecke int jaer 1583.

20. (F. 124-126). Compendium vitae S. Odonis episcopi Cameraensis per D. AMANDUM Aquicinctensem monachum. = *BHL.*, n. 6287.

21. (F. 126^v-128). Odonis episcopi Cameracensis supra canones evangeliorum. = *PL.*, t. CLX, col. 1117 sqq.

22. (F. 128^v-134^v). Dialogus D. Odonis episcopi Cameracensis cum quodam Iudeo Leone nuncupato de adventu Christi. = *Ibid.*, col. 1103 sqq.

(1) Sur les anciens manuscrits de l'abbaye de Marchiennes, voir L. DELISLE, *Le Cabinet des manuscrits de la Bibliothèque nationale de Paris*, t. II, p. 511-13. Les manuscrits de Marchiennes dont ce texte du Cantique des Cantiques et le suivant de l'Apocalypse ont pu être transcrits, sont ceux signalés par DEHAISNES, *Catal. des manuscrits de la Bibl. de Douai*, nn. 1 et 3.

(2) C'est le manuscrit n. 454 de la Bibliothèque de Douai. Cf. DEHAISNES, *op. cit.*, p. 264.

(3) Cf. *MG.*, Scr. t. XVI, p. 609-17, *Annales Marchianenses*.

(4) Cf. DEHAISNES, *Catalogue des manuscrits de Douai*, p. 532.

(5) Cf. *ibid.*, n. 44, p. 26.

(6) Voir *Iohannis Trithemii Spanhemensis opera*, Moguntiae, 1605, p. 723.

(7) *Ibid.*, p. 863.

23. (F. 135-146^v). Tractatus D. Odonis Cameracensis episcopi de canone altaris. = *Ibid.*, col. 1053 sqq.

24. (F. 146^v). Note du copiste du volume sur l'édition du précédent traité par François Titelman en 1534.

25. (F. 147-150^v). Tractatus D. Odonis episcopi Cameracensis que sit blasphemia spiritus. = *PL.*, t. CLX, col. 1111 sqq.

26. (F. 150^v-153). Miracula beate Marie virginis.

a) Fuit in quadam civitate quidam archidiaconus vita religiosus (1).

b) Circa annum Domini millesimum centesimum octogesimum septimum cum Philippus iunior post Ludovicum patrem suum (2).

c) De quadam muliere igne sacro correpta.

27. (F. 153^v-168). AMPHILOCHII vita S. Basilii. = *BHL.*, n. 1022.

28. (F. 168^v-170). De paenitentia Theodosii imperatoris et admirabili constantia S. Ambrosii Mediolanensis episcopi.

29. (F. 170^v-180). Liber sancti Basilii ad filios spirituales (3).

30. (F. 180^v-181). Index operum S. EPHREM archidiaconi et presbyteri ecclesie Edissene descriptus ex editione Coloniensi divulgata per MELCHIOREM NOVESIANUM, anno 1547.

31. (F. 182-183). Oratio sancti EPHREM ... ex codice manuscripto Marchianensi (4).

32. (F. 183-201^v). Liber primus sancti EFFREM diaconi de iudicio Dei, et resurrectione, et regno celorum, et de munditie anime (5).

33. (F. 201^v-223). Monita eiusdem S. Patris EFFREM diaconi ecclesie Edissene (6).

34. (F. 223^v-252). EIUSDEM tractatus de laude virtutum. De laude caritatis. *Inc.* Tuae non immemor petitionis (7).

Papier ; 223 feuillets ; 0^m,295 × 0^m,19 ; XVI^e siècle (1583) ; en effet, on lit les notes suivantes : f. 19 : 1586, mense octobris ab Amstredamo ; f. 39 : 1583 ; f. 78 : anno 1583, maj 7 ; f. 110 : 1583 ; f. 134^v : explicit 1583 ; f. 146^v, 150^v : 1583 ; f. 180 : anno 1583 kalendis octobris et f. 252 : anno 1584 mensis aprilis 22. Paul[us] Sylvanus. Ce nom du copiste se retrouve f. 109^v : Paulus, manu propria. Ce volume a appartenu aux anciens bollandistes, car on trouve f. 1, l'ex-libris ✱ MS. 103 de leur bibliothèque. Demi-reliure, dos en maroquin rouge, avec le titre doré : *Miscellanea, XVI saec.*, et le chiffre couronné de Léopold I^{er}.

(1) PEZ, *Liber Pothonis de miraculis B. M. Virginis*, n. 33.

(2) *Recueil des historiens de France*, t. XVII, p. 24.

(3) Voir HOLSTEN, *Codex regularum*, t. I, p. 113.

(4) *Ephraem Syri opera omnia, Romae*, 1723, t. I, p. xcviij, sub verbis *Obsecro te, Salvator mundi Christe*.

(5) *Ibid.*, sub verbis *Gloria omnipotenti Deo*.

(6) *Ibid.*, p. lxxxj, sub verbis *Dolor me compellit dicere*.

(7) Sous ce faux titre, il y a le traité d'ADALGERUS, publié, *PL.*, t. CXXXIV, col. 915. Cf. supra, p. 276, n. 1326 (8714-19).

1400. (4087-100). — IVO CARNOTENSIS. ANSELMUS CANTUARIENSIS.
Opera.

1. (F. 1). Table des matières.
2. (F. 1^v-8^v). De sacramentis dedicationis. Ivo episcopus Carnotensis. = *PL.*, t. CLXII, col. 527-35.
3. (F. 8^v-12^v). De excellentia sacrorum ordinum et vita ordinandorum. = *Ibid.*, col. 513-19.
4. (F. 12^v-16^v). De episcopalibus indumentis. = *Ibid.*, col. 519-27.
5. (F. 17-29^v). De convenientia veteris et novi sacerdotii. = *Ibid.*, col. 535-62.
6. (F. 29^v-31^v). Sermo EIUDEM quare natus et passus fuit Christus = *Ibid.*, col. 562-66.
7. (F. 32-32^v). Sermo de utroque adventu. = *Ibid.*, col. 567-68.
8. (F. 33-41). Tractatus ANSELMI Cantuariensis de veritate. = *PL.*, t. CLVIII, col. 467.
9. (F. 41-48). Tractatus de libero arbitrio. = *Ibid.*, col. 489.
10. (F. 48-63^v). Tractatus de casu diaboli. = *Ibid.*, col. 325.
11. (F. 64-64^v). Lettre de S. Bernard. = *PL.*, t. CLXXXII, col. 427, n. CGXXXVIII.
12. (F. 64^v). [Ordo monasticus]. Vers.
Inc. Ordo monasticus ecclesiasticus esse solebat.
Des. Spiritualia querere pascua ne moriantur.
13. (F. 65-77^v). Liber ANSELMI Cantuariorum archiepiscopi de originali peccato. = *PL.*, t. CLVIII, col. 431.
14. (F. 77^v-80^v). Epistola [ANSELMI] de sacrificio azimi et fermentati. = *Ibid.*, col. 541.
15. (F. 80^v-81^v). Epistola eiusdem ad Waleramnum. = *Ibid.*, col. 551.
16. (F. 81^v-87). Liber ANSELMI Cantuariensis archiepiscopi de concordia prescientie et predestinationis et gratie Dei cum libero arbitrio. = *Ibid.*, col. 507-519.
17. (F. 87-97). De discordia praedestinationis et liberi arbitrii. = *Ibid.*, col. 519-42.
18. (F. 97-97^v). [De lapidibus]. *Inc.* Cives celestis patrie regi regum concinnite. = *RH.*, n. 3271.
19. (F. 98-124). Cur Deus homo. Liber archiepiscopi Cantuariensis. = *PL.*, t. CLVIII, col. 359.
20. (F. 124^v). [Miraculum B. V. Mariae]. *Inc.* In quodam erat cenobio quidam monachus secretarii officio functus (1).
21. (F. 125-125^v). HINCMARUS. [De visione Bernoldi]. = *PL.*, t. CXXXV, col. 1115-17.

(1) Publié dans PEZ, *Liber Pothonis de miraculis B. M. Virginis*, p. 308.

Parchemin; 125 feuillets, plus quatre de garde en papier; 0^m,245 × 0^m,155; XIII^e siècle. F. 1, on lit : *Societatis Iesu Lovanii, n. 267, Y1*. Demi-reliure moderne, dos en maroquin rouge, avec les titres dorés des différents traités; plus bas, le chiffre couronné du roi Léopold I^{er}.

1401. (8841-42). — IVO CARNOTENSIS. Epistolae.

1. (F. 1-53^v, 57-60). Epistolae IVONIS praesulis Carnotensis. = *PL.*, t. CLXII, lettres nn. 4, 5, 9, 10, 12, 19, 20, 28, 25, 17, 29, 31-33, 40, 39, 42, 43, 16, 27, 35, 2, 156, 161, 1, 46, 48, 65, 67, 81, 88, 94, 95, 103-105, 108-110, 117, 135, 84, 87, 93, 133, 55, 60, 61, 63, 66, 68, 69, 287, 70, 7, 192.

2. (F. 53^v-56^v). Commentaires sur divers passages bibliques.

3. (F. 56^v, 64-64^v). Étymologies.

4. (F. 60-63.) Beati GREGORII liber beati Iob. — Extraits.

5. (F. 63^v). Figura mundi.

Parchemin; 64 feuillets; 0^m,177 × 0^m,12; XIII^e siècle. Ce volume provient de l'ancienne bibliothèque des bollandistes, il en porte, f. 2, l'ex-libris ✱ *MS. 20*. Demi-reliure, dos en maroquin rouge, titres dorés des divers traités.

1402. (II. 1046). — IVO CARNOTENSIS. Epistolae.

1. (F. 1-9). Capitula primae ... secundae ... tertiae distinctionis.

2. (F. 9-120). [IVONIS CARNOTENSIS epistolae]. = *PL.*, t. CLXII, nn. 2, 12, 25, 43, 46, 48, 67, 81, 88, 89, 92, 94, 95, 103-5, 108, 109, 144, 110, 117, 135, 157, 176, 204, 219, 147, 175, 274, 190, 159, 150, 250, 24, 54, 55, 59, 60, 61, 66, 68, 35, 8, 84, 266, 133, 90, 111, 119, 124-26, 171, 170, 236, 225, 252, 188, 85, 102, 83, 185, 213, 162, 221, 74, 230, 210, 242, 36, 206, 218, 248, 287, 231 (1), 262, 191, 73, 197, 184, 69, 256, 29, 37, 40, 63, 123, 138, 222, 27, 7, 41, 26, 82, 52, 57, 186, 192. 10, 99, 232, 155, 245, 205, 77, 96, 101, 51, 80, 156, 161, 16.

En outre, f. 49^v, lettres d'HUGUES de Lyon à Yves de Chartres.

3. (F. 121-133). Tractatus RICHARDI de remissione peccatorum. = *PL.*, t. CXCVI, col. 549 sqq.

4. (F. 133^v-157). Tractatus magistri RICHARDI de statu interioris hominis post lapsum. = *Ibid.*, col. 1115 sqq.

Parchemin; 167 feuillets; 0^m,213 × 0^m,13; XIII^e siècle; initiales rouges et bleues. Ce manuscrit a appartenu à l'abbaye d'Alne (2), plus tard à Sir Thomas Phillipps, n. 4623; il a été racheté par la Bibliothèque royale en 1888. Élégante reliure anglaise, veau brun gaufré et estampé; titre doré au dos : *Ivonis Carnotensis epistolae*.

(1) Cette lettre est ici divisée en deux parties; cf. *PL.*, tom. cit., col. 233-35.

(2) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 248, classis quinta, decuria tertia.

1403. (8794-99). — ERNULFUS. De incestis coniugibus.

1. (Deuxième feuillet de garde, verso). Contenta hoc libro.

2. (F. 1). [GAUFRIDUS Eboracensis episcopus ad Gilebertum Roffensem episcopum]. *Inc.* Miramur ad fraternitatem vestram.

3. (F. 2-13). [ERNULFUS]. Thomellus de incestis coniugibus. = *PL.*, t. CLXIII, col. 1457-74.

3. (F. 13-16^v). [Decreta].

Le feuillet 17 est blanc.

5. (F. 17-27^v). Sententie de sancta Trinitate ex libris magni AUGUSTINI carptim sumpte, maxime ex eo qui inscribitur *de sancta Trinitate*.

6. (F. 27^v-32). Sententie de expositione super Iohannem.

7. (F. 32-33). De expositione super psalmes.

8. (F. 33^v-36^v). [GILBERTUS WESTMONASTERIENSIS]. Quid sit monachus. *Inc.* Dilecto ... fratri R. ... Quaesivit a me dilectio vestra quid sit monachatus.

9. (F. 36^v). GREGORIUS in moralibus. — Extrait.

10. (F. 37-43). Probatio G[ILBERTI] abbatis de illa penitente que unxit pedes Domini. *Inc.* Dilecto ... sancte Sagiensis ecclesie monacho et cantori R. frater G. abbas Westmonasterii. ... Ad ea que per litteras me interrogasti.

11. (F. 43^v-70^v). [GILBERTUS]. Disceptacio iudei cum christiano. = *PL.*, t. CLIX, col. 1005 sqq.

12. (F. 70^v-71). Traité de médecine. *Inc.* A leguminibus preter lenticulam cum cedro aut coriandro decoctam omnino abstineatis. *Des.* Fumum omnem et maxime cornibus capre ascendentem quasi periculum mortis timeatis.

Parchemin; 71 feuillets, plus trois de garde; 0^m,175 × 0^m,12; XIV^e siècle. La note suivante se lit f. 2 : *Liber ecclesie*, et f. 1 : *Societatis Iesu. Ante. D. P.*, et la cote *MS. 38 de la bibliothèque des anciens bollandistes se voit f. 1 et f. 2, et au verso du deuxième feuillet de garde, il y a la note : *Ex domo G. Camdeni*. Reliure moderne veau estampé; sur le plat, l'inscription : *Bibl. Regia Belgica*.

1404. (II. 2620). — HILDEBERTUS. Carmina.

1. (F. 3-12). [De missa]. = *PL.*, t. CLXXI, col. 1177-92.

2. (F. 12-12^v). De sacrificio. Versus EIUDEM episcopi. = *Ibid.*, col. 1193-96.

3. (F. 12^v-13). De tribus generibus hominum. = *Ibid.*, col. 1192-94.

4. (F. 13-13^v). De carnis superbia.

Inc. Die homo, die pulvis, quid prodest gloria carnis?

Des. Sic tibi perpetuam nancisci morte vitam.

5. (F. 14). [Index carminum Hildeberti].

Parchemin; 14 feuillets; 0^m,208 × 0^m,119; XIII^e siècle. F. 2, on lit : *Iste liber est fratris Iohannis prioris nostri* (XIII^e siècle); f. 13^v : *Liber beate Marie Longifrontis* (XIV^e siècle); f. 2 : *Ex libris sancti Dionysii* (XVIII^e siècle); f. 1 : *Sir T. B. Middle Hill. 4221*. La Bibliothèque royale a acquis ce volume en 1900. Reliure veau; au dos, le titre doré : *Hildeberti epi. Cenomannensis carmina*.

1405. (19020). — HILDEBERTUS Cenomanensis. Epistolae.

1. (F. 1-4). Diverses notes.

2. (F. 4^v-5^v). Extrait. *Inc.* Abscindenda sunt vulnera ferro. *Des.* ne simul donum perdas et gratiam.

3. (F. 5^v-28^v). Epistole HILDEBERTI Cenomannorum episcopi.

Les nn. 1-31 de la liste des lettres d'Hildebert, dressée dans l'ouvrage d'A. DIEUDONNÉ, *Hildebert de Lavardin*, Paris, 1898, p. 118-20.

4. (F. 28^v-29^v). Patri spirituali ac domino I[ohanni] ... summo pontifici humilis minister Anbianiensis ecclesie (1).

5. (F. 29^v-42^v). [Epistolae HILDEBERTI].

Les lettres nn. 32-41.

6. (F. 42^v-43). INNOCENTIUS papa ... archiepiscopis et episcopis ... locius Anglie. *Inc.* Verbum est veritatis.

7. (F. 43-60). [Epistolae HILDEBERTI].

Les lettres nn. 42-56, 67-70.

8. (F. 60-60^v). Summo pontifici I. rex Anglie. *Inc.* Ne in celum videar ponere os meum.

9. (F. 60^v-61). INNOCENTIUS regi Francie. *Inc.* Quanto privilegio dignitatis sacrosancta decoretur ecclesia.

10. (F. 61-61^v). Terre Anglie primas apostolice sedi. *Inc.* Benedictus qui venit in nomine Domini.

11. (F. 61^v-62). A. B. *Inc.* Scriptum est : Non osculatur semper filium pater.

12. (F. 62-67). [VALERIUS Rufino]. = *PL.*, t. XXX, col. 254-61.

13. (F. 67-68^v). [Epistola THOMAE Cantuariensis archiepiscopi]. = *PL.*, t. CXC, col. 531, n. 73.

14. (F. 68^v-70). Henrico ... regi Anglie THOMAS Cantuariensis archiepiscopus. = *Ibid.*, col. 649, n. 177.

15. (F. 70-72). THOMAS ... venerabili fratri R[oberto] Herefordensi episcopo. = *Ibid.*, col. 596, n. 123.

16. (F. 72-73^v). Domino regi [ALEXANDER papa]. = *PL.*, t. CC, col. 464-66.

17. (F. 73^v-74). Episcopis regni Anglorum domnus papa [ALEXANDER]. = *Ibid.*, col. 579-80.

(1) Lettre de Jean de Cherchemont, évêque d'Amiens, au pape Jean XXII, probablement inédite. Cf. A. DIEUDONNÉ, *Hildebert de Lavardin*, p. 129.

18. (F. 74-76). Summo pontifici W[ILLELMUS Papiensis]. = *Ibid.*, col. 1394-96.

19. (F. 76-77). Regi Anglorum papa ALEXANDER. = *Ibid.*, col. 486-87.

20. (F. 77). THOMAS ... Cantuariensis archiepiscopus ... G[ilberto] Londinensi episcopo. = *PL.*, t. CXC, col. 609, n. 233.

21. (F. 77-77^v). Decano ... et clero Londoniensi [THOMAS] Cantuariensis archiepiscopus, = *Ibid.*, col. 612, n. 137.

22. (F. 77^v-78^v). Verba archiepiscopi Cantuariensis Anglie. = *Ibid.*, col. 651, n. 179. *Des. mutil.* de cetero habeat familiaritatem, col. 652.

Parchemin; 78 feuillets; 0^m,13 × 0^m,09; XII^e siècle; les feuillets 54-58 sont à deux colonnes. Reliure moderne, avec l'inscription en relief sur le plat : *Regia Bibl. Belgica.*

1406. (9578-80). — RUPERTUS TUITIENSIS. De gloria filii hominis.

1. (F. 1-131^v). De gloria filii hominis. = *PL.*, t. CLXIX, col. 1307 sqq.

2. (F. 131^v). Prière. = *Ibid.*, col. 1633.

3. (F. 132). Epistola Meingohi ad Robertum Tuitiensem. = *PL.*, t. CLXX, col. 701.

4. (F. 132). [Notitia de Roberto Tuitiensi].

5. (F. 133-139^v). Questio de lesione virginitatis. = *PL.*, t. CLXX, col. 543 sqq.

6. (F. 139-140^v). Conversio Othgerii et Benedicti. = *BHL.*, n. 2831.

Parchemin; 140 feuillets; 0^m,31 × 0^m,288; XII^e siècle; deux colonnes, sauf les feuillets 133-140; quelques très belles lettrines; titre courant en rouge. F. 1, il y a la cote : *MM*, 2-1, et f. 144^v, la note : *Liber sancti Laurentii martiris in leodio, si quis eum abstulerit anatema fiat.* Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré : *Rupertus Tuitiensis de gloria filii hominis, XII saec.*, reproduit à l'intérieur du volume sur une étiquette en maroquin rouge; plus bas, les armes de Belgique et l'inscription *Bibl. royale* (1).

1407. (9607). — RUPERTUS TUITIENSIS. In Apocalypsim.

1. (F. 1^v-171). Domni ROBERTI abbatis super apocalypsim Iohannis. = *PL.*, t. CLXIX, col. 825 sqq.

2. (F. 171-177). Liber EIUSDDEM apologeticorum de voluntate Dei. = *PL.*, t. CLXX, col. 37 sqq.

Parchemin; 177 feuillets; 0^m,298 × 0^m,18; XII^e siècle; quelques jolies lettrines; signatures i-xx. F. 1, il y a la note : *Liber monasterii sancti Laurentii prope Leodium*, et la cote *LL*, 2-8. L'estampille rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 1 et f. 177. Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré : *Rupertus in apocal. etc., XII saec.*, reproduit à l'intérieur sur une étiquette en maroquin rouge; plus bas, les armes de Belgique et la cote : *Bibl. royale.*

(1) Au sujet de ce manuscrit, voir *Catal. cod. hag. bibl. reg. Bruxell.*, t. II, p. 338.

1408. (10608). — RUPERTUS TUITIENSIS. In canticis canticorum.

1. (F. 1-118). Libri in canticis canticorum. = *PL.*, t. CLXVIII, col. 837 sqq.

2. (F. 118-119). Fragment du sermon de S. BERNARD sur l'évangile *Missus est*.

Parchemin; 118 feuillets; 0^m,232 × 0^m,135; XIII^e siècle; très jolies letrines. F. 1, il y a la cote *LL*, 2-13 de la bibliothèque de Saint-Laurent, à Liège. Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré reproduit à l'intérieur sur une étiquette en maroquin rouge: *Robertus in cant. cantic. XII saec.*; en dessous, les armes de Belgique et l'inscription: *Bibl. royale*.

1409. (9737-38). — RUPERTUS TUITIENSIS. De victoria verbi Dei.

1. (F. 1). Titulus seu inscriptio sepulchri D. Roperti abbatis monasterii Tuitiensis.

En dessous la note: *Hanc schedulam sibi in praedicto monasterio Tuitiensi transcriptam, quum ad nos ex Colonia rediret, D. Gerardus de Zuppre secum detulit, voluitque ut in aliquo operum eiusdem patris, quorum apud nos non parva copia est transcriberetur, quatenus non praesens tantum etas, sed etiam postera, agnosceret quanta pietate quantaque doctrina hic noster claruerit Robertus.*

Ne presens evum ne postera nesciat etas,

Hic sua Rupertus membra disertus habet.

Anno Domini 1538.

2. (F. 2-138). Liber ROBERTI venerabilis abbatis Tuiciensis ac monachi huius loci de victoria verbi Dei. = *PL.*, t. CLXIX, col. 1217.

3. (F. 138). [Epistola Meingoz canonici sancti Martini ad Robertum]. = *PL.*, t. CLXXX, col. 701.

Les feuillets 138-139^v sont blancs.

4. (F. 140-146). Officium et missa S. Iudoci, avec neumes gothiques.

Parchemin; 146 feuillets; 0^m,283 × 0^m,184; XV^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et bleues. F. 1, il y a la cote: *Liber monasterii sancti Laurentii Leodiensis L-L*, 2-9. L'estampille rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 2 et f. 146^v. Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré, reproduit à l'intérieur du volume: *Rupertus de vict. verbi Domini*; en dessous, les armes de Belgique et l'inscription: *Bibl. royale*.

1410. (10862-65). — HONORIUS AUGUSTODUNENSIS. De imagine mundi.

1. (F. 1^v-6). Table des matières du traité de Solin.

2. (F. 6^v-97). Liber C. IULII SOLINI collectarum rerum memorabilium plurimarum (1).

(1) Cf. plus haut, p. 49, note 1.

3. (F. 97^v-166^v). HONORIUS AUGUSTODUNENSIS. De imagine mundi. = *PL.*, t. CLXXII, col. 119 sqq.

Parchemin; 166 feuillets; 0^m,225 × 0^m,152; XII^e siècle; les feuillets 1^v-6 sont à deux colonnes. F. 44^v et 45, un dessin représentant des cerfs. La cote *F 4*, qui est probablement celle de la bibliothèque des Jésuites à Louvain, se trouve f. 2. Cartonnage (1).

1411. (6112-13). — HONORIUS AUGUSTODUNENSIS. Speculum ecclesiae.

1. (F. 1). Hymne. = *RH.*, n. 17784.

2. (F. 1^v). Hymne notée. = *RH.*, n. 19115.

3. (F. 2-120^v). [HONORIUS Augustodunensis]. De speculo ecclesie. = *PL.*, t. CLXXII, col. 813-1082.

Parchemin; 120 feuillets; 0^m,247 × 0^m,165; XIII^e siècle; deux colonnes. F. 1, on lit les notes suivantes : *Liber Io. de Noerich (?) ad usum fratrum minorum...*, et plus bas : *Bibliothecae fratrum minorum Recoll. Lovanii conventus SS^{mae} Trinitatis*. Reliure ancienne restaurée; ais de bois recouverts de veau brun estampé; au dos, le titre : *Varij serm. M. S.*; restes de fermoirs en cuivre.

1412. (8435). — HONORIUS. Super cantica canticorum.

Les vers de la fin du traité sont différents de l'édition, *PL.*, t. CLXXII, col. 347-496.

Cantica digna Deo numquam placitura Lico
 Quorum doctrina fundit redolentia vina
 Ex vera vite que prebet pocula vite,
 Vos colui, legi vos, vosque legendo peragi.
 Sic labor exactus operis dulcedine captus
 Uti pace datur quia laus in fine probatur.

Parchemin; 116 feuillets; 0^m,215 × 0^m,155; XIII^e siècle; signatures I-XIII. F. 116^v, on lit : *Liber sancte Marie in Tongerlo. Si quis eum abstulerit, anathema sit. Amen.*, et f. 1 : *Biblio. Tongerlo*. Reliure veau raciné; au dos, le titre doré : *Honorius in Cantica*, avec les armoiries d'un abbé de Tongerlo et la devise : *Veritas vincit*.

1413. (14670). — HONORIUS AUGUSTODUNENSIS. Super cantica canticorum. = *PL.*, t. CLXXII, col. 347. A la fin du traité, on lit les vers :

Cantica digna Deo nunquam placitura Lyeo,

comme dans le volume précédent.

Parchemin; 118 feuillets; 0^m,215 × 0^m,16; XIII^e siècle; deux colonnes; jolies initiales en vert et en rouge. Au verso du premier feuillet de garde, il y a la cote *I. theca II* de la bibliothèque de l'abbaye de Parc. Reliure veau; au dos, le titre doré : *Honorii Augusto. in cant.*; sur les deux plats, les armoiries de l'abbaye de Parc ont été grattées.

(1) Voir une description de ce manuscrit par P. THOMAS, *Catalogue des manuscrits de classiques latins de la Bibliothèque royale de Bruxelles*, p. 75.

1414. (1916-17). — HONORIUS AUGUSTODINENSIS. S. AUGUSTINUS. Opera.

1. (F. 2-111). HONORIUS. Super cantica canticorum. = *PL.*, t. CLXXII, col. 347 sqq.

2. (F. 112-127^v). Meditationes sancti AUGUSTINI. = *PL.*, t. XL, col. 847 sqq.

Parchemin; 127 feuillets; 0^m,238 × 0^m,165; XV^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et bleues; titre courant en rouge; signatures *a1-03*. F. 1, il y a la note: *Liber monasterii canonicorum regularium vallis sancti Martini in lovanio* et f. 51: *Est liber hic sancti Martini lovaniensis*. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris, *R. F.*, se trouve f. 2 et f. 127^v. Reliure ancienne restaurée, veau brun estampé.

1415. (4399-402). — HUGO DE SANCTO VICTORE. Opera.

1. (F. 1^v). Table des matières.

2. (F. 2-61^v). Libellus HUGONIS canonici sancti Victoris de archa Noe. = *PL.*, t. CLXXVI, col. 617 sqq.

3. (F. 62). Epistola BERINGERI ad Lanfrancum (1).

4. (F. 62-90^v). [Colloquium Beringeri et Lanfranci]. = *PL.*, t. CL, col. 407 sqq. (2).

5. (F. 91-96^v). HUGO LINGONENSIS Berengario de sacramentis. = *PL.*, t. CXLII, col. 1325-34.

Le feuillet 97 est blanc.

5. (F. 98-119^v). Tractatus domni BERNARDI abbatis Clarevallis de diligendo Deo. = *PL.*, t. CLXXXII, col. 973 sqq.

Parchemin; 119 feuillets; 0^m,21 × 0^m,14; XII^e siècle; quelques lettrines en couleurs. Ce volume provient de l'abbaye de Bonne-Espérance, car f. 2, il y a la note: *In bona Spe, 9 stivers*; puis, f. 61^v et f. 62: *Liber sancte Marie de bona Spe*; ensuite f. 2: *Societatis Iesu Lovanii*. Reliure moderne, veau brun estampé.

1416. (11424-26). — HUGO DE SANCTO VICTORE. Opera.

1. (F. 1^v-80). [HUGO DE SANCTO VICTORE. De sacramentis]. = *PL.*, t. CLXXVI, col. 173-364.

Les feuillets 80^v-81 sont blancs.

2. (F. 81^v-102). Liber magistri HUGONIS de vanitate. = *PL.*, t. CLXXVI, col. 701 sqq.

3. (F. 102^v-104). SENECA. De remediis fortuitarum ad Paulum.

(1) Au haut du feuillet, on lit cette note: *Hec epistola non est impressa*. Le renseignement semble encore exact aujourd'hui.

(2) Dans ce manuscrit, à la fin du traité, il y a une partie qui manque dans toutes les éditions. *Inc.* Beatus Ieronimus in expositionis Iezechielis prophete tertiodécimo libro huius misterii altitudinem considerans.

Parchemin ; 104 feuillets ; 0^m,269 × 0^m,202 ; XII^e siècle ; deux colonnes ; belles capitales en rouge et en vert. F. 80, on lit la note : *Liber . sancte . Marie . in Parcho . Si . quis . abstulerit . anathema sit*, et au revers de la couverture : *I . theca IX*. Reliure veau, sur les plats les armes de l'abbaye de Parc ont été grattées ; au dos, le titre doré : *Hugonis S. Victor. opuscul. vol. II* ; tranche rouge.

1417. (II. 2535). — HUGO DE SANGTO VICTORE. De sacramentis.

1. Au premier feuillet de garde, extrait imprimé d'un catalogue anglais de vente, contenant une notice sur ce manuscrit.
2. Au troisième feuillet de garde, note manuscrite de l'abbé F. A**[LLARD] sur ce volume.
3. (F. 1-4). Titre et index.
4. (F. 4-174). Liber domni HUGONIS de sacramentis ad secundam eruditionem sacri eloquii. = *PL.*, t. CLXXVI, col. 183 sqq.
5. (F. 174^v). Notes diverses.

Parchemin ; 174 feuillets, plus dix de garde ; 0^m,37 × 0^m,26 ; XII^e siècle ; deux colonnes ; très belles lettrines ; initiales rouges et vertes ; signatures I-VIII, a-l. Ce volume semble provenir de Saint-Martin à Tournai, car f. 174^v, on lit cette note : *Nam Martinus Tornacensis me perlegit*. Au même feuillet, il y a le nom propre : *Gerard van den Abele*. Plus tard, ce volume a fait partie de la collection Phillipps, n. 23025 ; il a été acquis par la Bibliothèque royale en 1900. Reliure moderne, parchemin.

1418. (2352-54). — HUGO DE SANCTO VICTORE. Opera.

1. (F. 1^v). Table des matières.
2. (F. 2-7^v). Liber magistri HUGONIS de sacramentis. — Extrait. = *PL.*, t. CLXXVI, col. 32-42.
3. (F. 7^v-55). Liber magistri HUGONIS de archa Noe et archa sapientie. = *PL.*, t. CLXXVI, col. 617 sqq.
4. (F. 55-56^v). Omelia ANSELMI de evangelio *Intravit Dominus in quoddam castellum*. = *PL.*, t. CLVIII, col. 644-49.

Parchemin ; 56 feuillets ; 0^m,215 × 0^m,14 ; XIII^e siècle. F. 2, il y a la note : *Pertinet ad Carthusiam in Zeelhem prope Dyest*, et au haut du même folio : *Societatis Iesu Lovanii, Y. I*. Demi-reliure moderne, dos en maroquin rouge ; au dos, les titres dorés des traités.

1419. (3936-37). — HUGO DE SANCTO VICTORE. Liber de sacramentis.

1. (F. 1^v-133^v). [Hugo]. Liber de sacramentis ad secundam eruditionem sacri eloquii. = *PL.*, t. CLXXVI, col. 173-364.
2. (F. 133^v-146^v). [De sacramento altaris]. — Extraits.
3. (F. 147). Table alphabétique des matières.

Parchemin ; 147 feuillets ; 0^m,253 × 0^m,154 ; XIII^e siècle ; très élégantes capitales. Les ff. 35-42^v ont été entamés par le feu ; les passages manquants sont suppléés dans la marge inférieure. F. 1, on lit : *Liber monasterii sancti Pauli in Zonia sive*

rubee vallis cameracensis dyocesis in Brabantia, et f. 147 : Florencius de Zandwunc hic fuit anno Domini 1368 in die Iohannis Baptiste et vadit ad Sanctum Iacobum 9 die. Reliure ancienne, veau brun estampé.

1420. (10106-13). — HUGO DE SANCTO VICTORE. Opera.

1. (F. 1). Index.

2. (F. 1^v). Versus.

a) *Inc.* Omnia dat gratis divine fons pietatis.
Des. Numquam cum reprobis tribuatur portio nobis.

b) *Inc.* Si falsa carta sententia forte feratur.
Des. Ergo retractatur, si quaestio non moveatur.

c) *Inc.* Tempora iudicii legum sancita tenore
Sunt ne causa duos de crimine transeat annos,
Sed, si civilis, tribus extendatur in annis.

d) *Inc.* Cruda comesta recens oculos caligine...
Des. Sed istic manantem bene desiccando...

3. (F. 2-15). Liber bestiarum (1).

4. (F. 15^v-21^v). Appologeticum BERNARDI abbatis ad Willelmum abbatem. = *PL.*, t. CLXXXII, col. 898-918.

5. (F. 22-31). De institutione noviciorum secundum HUGONEM DE SANCTO VICTORE. = *PL.*, t. CLXXVI, col. 925 sqq.

6. (F. 31-36^v). ISIDORUS. De nominibus legis et evangelii.

7. (F. 36^v-39^v). Expositiones sermonum.

8. (F. 40-54). Tractatus magistri HUGONIS de duodecim abusionibus claustrii. = *PL.*, t. CLXXVII, col. 1051-86.

9. (F. 54-55). Diffinitio quatuor virtutum que sunt prudentia, iustitia, fortitudo et temperantia.

10. (F. 56-126^v). Allegorie veteris testamenti et novi per magistrum PETRUM COMESTOREM. = *PL.*, t. CLXXVI, col. 633 sqq.

11. (F. 126^v-127). Fragment. *Inc.* Nemo commissuram vestimento novo immittit. *Des.* quod largitur inmutabiliter et summe bonus Deus.

12. (F. 127^v). [Testamentum Iohannis de Esse militis, anno 1366].

Parchemin; 127 feuillets; 0^m,235 × 0^m,155; XIII^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et bleues. F. 126^v, on lit : *Hunc liber constat domni Burcest, et f. 1 : Liber Cornelij Duijn Aemstredamensis Hagae Comitiss Hollandiae anno Domini M.DCVij, et ensuite D. P. Societatis Iesu Antv.* F. 127^v, on lit ces noms propres, écrits au XIV^e siècle : *Thomas Hore, Guillelmus Hankedon, Thomas Raddan, Iohannes Thetant, Walterus Waythant, Rogerus Leye.* Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré reproduit à l'intérieur sur une étiquette en maroquin rouge : *Liber bestiarum etc. XII saec.*; en dessous, les armes de Belgique et l'inscription : *Bibl. royale.*

(1) Cf. *PL.*, t. CLXXVII, col. 55-82.

1421. (11427-30). — HUGO DE SANCTO VICTORE. Opera.

1. (F. 1). Index.
2. (F. 1^v-72^v). Magistri HUGONIS super Ecclesiasten. = *PL.*, t. CLXXV, col. 113 sqq.
3. (F. 73-98). Libellus magistri HUGONIS de tabernaculo. *Inc.* Auxiliante gratia Domini nostri Iesu Christi.
4. (F. 98-113^v). MARTINUS episcopus Miloni regi de quatuor virtutum speciebus. = *PL.*, t. LXXII, col. 21 sqq.
5. (F. 114-123). Sermo magistri HUGONIS DE SANCTO VICTORE ad novicios. = *PL.*, t. CLXXVI, col. 925 sqq.

Parchemin; 123 feuillets; 0^m,265 × 0^m,20; XIII^e siècle, sauf les feuillets 114-123, qui sont du XV^e; deux colonnes; très belles initiales. Le manuscrit provient de l'abbaye de Parc, car au verso de la couverture, il y a la cote: *I. theca IX*. Reliure veau, sur les plats, les armoiries sont grattées; au dos, le titre doré: *Hugonis S. Victor. opuscul. vol. III* (1); tranche rouge.

1422. (679-81). — HUGO DE SANCTO VICTORE. Opera.

1. (F. 1-9). [HUGO DE SANCTO VICTORE. Commentarius in Abdiam prophetam]. = *PL.*, t. CLXXV, col. 370-400.
2. (F. 9-9^v). Manus obedientiae. De vocatis ad caenam.
3. (F. 10-79). Sentencie magistri OTTONIS ex dictis magistri HUGONIS. = *PL.*, t. CLXXVI, col. 41-174.
4. (F. 79-82^v). [De consecratione ecclesie].
5. (F. 82^v-84^v). [S. ANSELMUS. De Martha et Maria]. = *PL.*, t. CLVIII, col. 644-49.
6. (F. 84^v-105^v). Divers sermons.

Il manque plusieurs feuillets entre les f. 105 et 106, comme en témoigne l'ancienne pagination qui passe à cet endroit du f. 96 à 137.

7. (F. 106-109^v). [HUGO DE SANCTO VICTORE. De beate Marie virginitate]. *Inc. mutil.* carnis maledixisset ut eam apud Dominum dampnabilem ostenderet. = *PL.*, t. CLXXVI, col. 869-75.
8. (F. 109^v-111^v). [De vitiis et virtutibus]. *Inc.* Rogasti me ut de virtutibus et viciis aliquid tibi doctrine pariter et exhortationis gratia dictarem.
9. (F. 111^v-112). Epistola G. ad Hugonem priorem Sancti Victoris. *Inc.* Nuper de Parisius veniens.
10. (F. 112^v-113). [Epistola AEMARITANIAE FLAVAE ad magistrum W.]. Petitioni vestre mox obtemperare volui.

Parchemin; 113 feuillets; 0^m,31 × 0^m,25; XIV^e siècle; deux colonnes; signatures I-XII; ancienne pagination 1 à 144. Sur une étiquette, au verso du premier plat, et f. 81, on lit: *Est liber hic sancti Martini Lovaniensis* avec le nom propre *I. Divitis*

(1) Cf. supra le n. 1416 (11424-26) et plus bas, le n. 1424 (11422-23).

et f. 113^v : *Liber monasterii canonicorum regularium vallis sancti Martini in Lovanio*, et en dessous : *Hunc librum concessit magister Io. Trent(?) fratri Medardo de Iasen (?) ut eo utatur quamdiu cessatio fuerit. Quod si ... memorie revocatur quod idem frater voluit ut ad monasterium VII fontium deveniat eodem modo cum aliis (?) libris eisdem ab eodem concessis ...* ; puis à l'intérieur du second plat : *Precium huius libri VII equites*. Reliure ancienne restaurée, peau de truie.

1423. (2415-18). — HUGO DE SANCTO VICTORE. Opera.

1. (F. 2-36^v). [HUGO DE SANCTO VICTORE]. Epistola de institutione noviciorum et iuvenum. = *PL.*, t. CLXXVI, col. 925 sqq.

2. (F. 36^v-39). Quedam bona notabilia diversorum doctorum.

3. (F. 40-47). Tractatus beati BASILII de laude solitarie vite. = *PL.*, col. CXLV, col. 246-51.

4. (F. 47^v). Versus.

Inc. O mea factura de limo condita terre.

Des. Cur non ad fletum te flectit passio regis.

5. (F. 48-70^v). Sermo HENRICI DE COESVELDIA de multiplici devotione sive de diversis generibus devotorum (1).

6. (F. 71-77). Epistola beati DYONISII ad Thimotheum de transitu beatorum apostolorum Petri et Pauli. = *BILL.*, n. 6671.

Les deux feuillets de garde contiennent des fragments d'antiphonaire.

Parchemin ; 77 feuillets ; 0^m,225 × 0^m,165 ; XIV^e siècle. F. 1, on lit : *Liber monasterii canonicorum regularium vallis sancti Martini in Lovanio*, et f. 39^v : *Est liber hic sancti Martini lovaniensis* (2), et f. 47^v : *Partinet (sic) monasterio regularium sancto Martino*. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris, aux faisceaux, se trouve f. 2 et f. 77. Reliure ancienne, ais de bois recouverts de veau raciné et estampé (3).

1424. (11422-23). — HUGO DE SANCTO VICTORE. Opera.

1. (F. 1-121^v). Summa magistri HUGONIS super librum sententiarum. = *PL.*, t. CLXXVI, col. 41 sqq.

2. (F. 122-175). [EIVSDEM super Pentateuchum, Iudices, Ruth, libros Regum, Tobiam, Iudith, evangelium Lucae]. = *PL.*, t. CLXXV, col. 29 sqq.

Parchemin ; 175 feuillets ; 0^m,335 × 0^m,235 ; XIV^e siècle ; deux colonnes ; initiales rouges et bleues. F. 175, on lit la note : *Liber sancte Marie in parcho, si quis eum abstulerit anathema sit. Amen*. Au revers de la couverture, il y a la cote : *I. theca X*. Reliure veau ; au dos, le titre doré : *Hugonis S. Victor. opusculi* ; sur les plats, les armoiries de l'abbaye de Parc ont été grattées ; tranche rouge (4).

(1) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 212.

(2) Voir une description de ce volume dans *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. I, p. 333-34.

(3) Sur Henri de Coesfeld, voir PETREIUS, *Bibliotheca Cartusiana*, p. 126-27.

(4) Voir plus haut pp. 334 et 337, nn. 1416, 1422.

1425. (2016-24). — HUGO DE SANCTO VICTORE. Opera.

1. (F. 1^v). Table des matières.
2. (F. 2-31^v). Quatuor libri magistri HUGONIS DE SANCTO VICTORE de vanitate mundi. = *PL.*, t. CLXXVI, col. 701 sqq.
3. (F. 31^v-36). Tractatus magistri HUGONIS DE SANCTO VICTORE de laude caritatis. = *Ibid.*, col. 969 sqq.
4. (F. 36-41^v). Liber magistri HUGONIS DE SANCTO VICTORE de virginitate beate Marie Virginis. = *Ibid.*, col. 857 sqq.
5. (F. 42-87). Magistri HUGONIS DE SANCTO VICTORE in dydascalicon. = *Ibid.*, col. 741 sqq.
6. (F. 87^v-98^v). Omelia BERNARDI abbatis. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 965.
7. (F. 99-120). Liber IOHANNIS CRISOSTOMI de compunctione cordis. = *PG.*, t. XLVII, col. 393.
8. (F. 120^v-126). Exhortatio IOHANNIS CRISOSTOMI episcopi ad Theodorum monachum (1).
9. (F. 126^v-128^v). Omelia EIUSDEM de militia spirituali.
10. (F. 128^v-131). Omelia EIUSDEM de milicia christiana.
11. (F. 131-135). Omelia EIUSDEM de duobus filiis et patre.
12. (F. 135-138). Omelia EIUSDEM de turture = *PG.*, t. LV, col. 599.
13. (F. 138-141). Epistola sanctissimi patris IOHANNIS CRISOSTOMI missa a Cucuso Cilicie ubi in exilio erat.
14. (F. 141-142). Epistola ANIANI ad Evangelium presbiterum de laudibus beati Pauli apostoli. = *PG.*, t. L, col. 470.
15. (F. 142-168^v). Liber sancti IOHANNIS CRISOSTOMI de laudibus sancti Pauli apostoli. = *Ibid.*, col. 472-514.

Les deux feuillets de garde contiennent des fragments de psautier.

Parchemin ; 168 feuillets, plus deux de garde ; 0^m,255 × 0^m,17 ; XV^e siècle (1463), car f. 87, on lit : *Explicit dydascalicon magistri Hugonis de sancto Victore anno Domini M^o CCC^o Lxiij^o mensis iulii die quarta*. F. 1^v, il y a la note : *Iste liber pertinet monasterio canonicorum regularium in Korsendonck prope turnout*, et f. 1 : *In Korsendonck regulares S. Augustini episcopi prope Turnaut*. Au verso du premier feuillet de garde, se trouve la cote *W. 5* de cette bibliothèque. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris, *R. F.*, se trouve f. 1 et f. 168^v. Reliure moderne, veau brun estampé ; au dos, le titre doré : *Hugonis de sancto Victore Dydascalicon et alia opuscula XV saec.*

1426. (1764-65). — HUGO DE SANCTO VICTORE. Opera.

1. (F. 1-33). Quaestiones M. HUGONIS SAXONIS DE SANCTO VICTORE super evangelium secundum Matheum. = *PL.*, t. CLXXV, col. 763 sqq.
2. (F. 34-61^v). Quaestiones magistri HUGONIS SAXONIS DE SANCTO VICTORE super evangelium secundum Iohannem. = *Ibid.*, col. 827.

(1) Sur cette homélie et les suivantes, voir plus haut, p. 212, n. 1204 (1258-59), nn. 32-35.

3. (F. 62-183). *Questiones magistri HUGONIS SAXONIS DE SANCTO VICTORE super epistolas beati Pauli apostoli.* = *Ibid.*, col. 431-634.

Parchemin; 183 feuillets; 0^m,285 × 0^m,20; XV^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et bleues. F. 1, il y a la note : *Pertinet librerie canonice Regularium vallis sancti Martini in Iovonio* (1). L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris, *R. F.*, se trouve f. 2 et f. 183. Reliure ancienne, veau brun estampé.

1427. (2011-15). — HUGO DE SANCTO VICTORE. Opera.

1. (F. 1). Table des matières.

2. (F. 2-152). *Liber secundus magistri HUGONIS DE SANCTO VICTORE de sacramentis christiane fidei.* = *PL.*, t. CLXXVI, col. 363-613.

3. (F. 152-161^v). *EIUSDEM super canticum beate Marie virginis.* = *PL.*, t. CLXXV, col. 413 sqq.

4. (F. 161^v-173). *EIUSDEM super cantica canticorum.* = *PL.*, t. CXCVI, col. 405.

5. (F. 173-174^v). *Tractatus EIUSDEM de cupiditate et caritate.* = *PL.*, t. CLXXVI, col. 15-18.

6. (F. 174^v-177). *EIUSDEM de meditatione.* = *Ibid.*, col. 993-98.

Parchemin; 177 feuillets; 0^m,25 × 0^m,17; XV^e siècle; initiales rouges et bleues. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris, *R. F.*, se trouve f. 2 et f. 177. Demi-reliure moderne; dos en maroquin fauve; au dos, le titre doré des traités, avec le chiffre couronné de Léopold I^{er}.

1428. (2395-410). — HUGO DE SANCTO VICTORE. Opera.

1. (F. 1^v). Table des matières.

2. (F. 2-81). *Speculum gloriose virginis Marie editum a IOHANNE DE SAXONIA* (2).

Les feuillets 81^v-82^v sont blancs.

3. (F. 83-100^v). *Tractatus sancti THOME DE AQUINO contra impugnatores et irrisores fidei christiane* (3).

4. (F. 101-102^v). *Sermo magistri HUGONIS SANCTI VICTORIS canonici de tribus silentiis.* = *PL.*, t. CLXXVII, col. 315 sqq.

5. (F. 102^v-103). *Recommendatio psalorum. Inc. Canticum psalorum animas decorat.*

6. (F. 103^v-108). *Sermo beati AUGUSTINI episcopi de contemptu mundi et amore Dei* = *PL.*, t. XL, col. 1213.

7. (F. 108-109^v). *Sermo beati AUGUSTINI. ... Nolumus vos ignorare de dormientibus.* = *PL.*, t. XXXIX, col. 936.

(1) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 217.

(2) C'est le traité signalé par M. F. CAMPBELL, *Annales de la typographie néerlandaise*, p. 449, n. 1576.

(3) Cf. QUÉTIF-ECHARD, *Scriptores ordinis praedicatorum*, t. I, p. 332, n. 3.

8. (F. 109^v-111). Sermo EIUDEM de celebratione offitii fidelium defunctorum et de resurrectione mortuorum. = *Ibid.*, col. 937.

9. (F. 111-112). Sermo EIUDEM de misericordia. — Extrait.

10. (F. 112-113^v). De forma absolutionis sacramentalis ex regulis GERSON.

11. (F. 114-130). Tractatus magistri HUGONIS DE SANCTO VICTORE de laude patrum. = *PL.*, t. CLXXVI, col. 721-39.

12. (F. 131-153^v). Tractatus editus a fratre NYCHOLAO DE LIRA de visione divine essencie ab animabus sanctis a corpore separatis (1).

13. (F. 154-155^v). Bulla BENEDICTI pape de eadem materia (2).

14. (F. 156-170). Quaestio quotlibetica determinata in Universitate lovaniensi super dispensatione praeceptorum et prohibitionum iuris naturalis et divini.

A la fin, on lit : *Explicit questio predicta per venerabilem virum et egregium doctorem magistrum IOHANNEM VARENACKER artium et sacre theologie professorem eximium in Universitate lovaniensi anno Domini millesimo quadringentesimo quinquagesimo sexto determinata* (3).

15. (F. 170^v-177). Sacramentale EIUDEM (4).

Les feuillets 177^v-179^v sont blancs.

16. (F. 180-191). Copia bulle domini EUGENII pape quarti de reductione Armenorum et Grecorum (5).

17. (F. 191-191^v). Copia bulle domini EUGENII pape de confirmatione et additione indulgentiarum in festo venerabilis sacramenti (6).

18. (F. 192-192^v). Decretum sacrosancte generalis synodi Basiliensis super communicatione sacramenti Eucharistie sub una specie (7).

19. (F. 192^v-193^v). Decretum sacrosancte generalis synodi Basiliensis super conceptione gloriose virginis Marie (8).

Le feuillet 194 est blanc.

20. (F. 195-214). Summa super missam fratris HUGONIS cardinalis de ordine Predicatorum (9).

(1) Sur ce traité encore inédit, voir FABRICIUS-MANSI, *Bibl. lat. med. et inf. aet.*, t. V, p. 117.

(2) Voir *Bullarium diplomatum et privilegiorum sanctorum romanorum pontificum*, Augustae Taurinorum, 1859, t. IV, p. 348 sqq.

(3) Cf. FOPPENS, *Bibl. belg.*, p. 742-43.

(4) Cf. *ibid.*, p. 743.

(5) *Bullarium*, August. Taurin., 1860, t. V, p. 44 sqq.

(6) *Ibid.*, p. 14

(7) LABBE-COSSART, *Sacrosancta concilia*, t. XII, Lutetiae Paris., 1672, p. 599-600.

(8) *Ibid.*, p. 622-23.

(9) Sur ce traité encore inédit, voir QUÉTIF-ECHARD, *Script. ord. Praed.*, t. I, p. 202.

Parchemin; 214 feuillets (le feuillet 191 est marqué deux fois); 0^m,217 × 0^m,145; XV^e siècle; signatures *a*-*h*_{III}, *A*-*C*_f. F. 1^v, on lit : *Pertinet monasterio b. Marie in Bethleem prope Lovanium*; f. 2 : *Bethleem*; f. 214 : *Pertinet Bethleem prope Lovanium*. L'estampille rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 2 et f. 214^v. Reliure ancienne restaurée; veau brun estampé sur ais de bois, traces de fermoirs et de clous; sur le premier plat, une étiquette autrefois sous corne : *Speculum gloriose virginis Marie*.

1429. (4288). — HUGO DE SANCTO VICTORE. *Quaestiones super epistolas Pauli*.

Questiones magistri HUGONIS DE SANCTO VICTORE super epistolas Pauli. = *PL.*, t. CLXXV, col. 431 sqq.

Parchemin; 142 feuillets; 0^m,21 × 0^m,145; XV^e siècle; quelques letrines; initiales rouges et bleues. F. 1, il y a la note : *Coenobii Augustini Lovanii*. Reliure ancienne restaurée; veau raciné.

1430. (11055-58). — HUGO DE SANCTO VICTORE. *Opera*.

1. (F. 1^v). Vers en l'honneur de S. Laurent.
2. (F. 2). Index.
3. (F. 3-38^v). HUGO. De tribus diebus. = *PL.*, t. CLXXVI, col. 811-38.
4. (F. 39-40). BERNARDUS in sermone de obprobriis iudeorum in die pasche. = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 277.
5. (F. 41-55^v). ANCHELMUS. De beata vita. = *PL.*, t. CLIX, col. 587 sqq.
6. (F. 56-60). EUSEBIUS. De redemptione hominis (1).
7. (F. 60^v-82). Tractatus RICHARDI de VII generibus temptacionum et remediis earum. = *PL.*, t. CXCVI, col. 387 sqq.
8. (F. 83-148). Lapidaire, en français (2).
9. (F. 148-150). Beneichon des pieres precieus. — Rubriques en français et texte de la bénédiction en latin.

Parchemin; 150 feuillets; 0^m,134 × 0^m,10; XV^e siècle (1467), car f. 36^v, on lit cette note : *Scriptus et finitus per fratrem Adrianum de veteribusco anno Domini M^o.ccc.lxxvij^o in profesto sancti Lamberti patroni Leodiensis, quando nocte sequenti irruptum fuit hoyense per leodienses et lossenses, et totum exspoliatum quasi nemine resistente. Leodienses perreuerant illic in profesto egidii, sed lossenses primo venerant ibi in crastino probi et iacincti. Et necdum fuerat facta obsidio, sed lossenses manentes ante arbonam, leodienses descenderunt usque mosam, fecerunt insultum ad locum leprosororum et optinuerunt, et clamore grandi omnes simul vociferantes hoyenses verterunt in stuporem in tantum quod omnia relinquentes que habere poterant omnes pene effugerent, solas animas salvare cupientes* (3). F. 1^v, il y a une repré-

(1) Sous ce titre peu exact divers extraits des Pères.

(2) Sur les éditions du *Lapidaire* de Jehan de Mandeville, cf. BRUNET, *Manuel du libraire*, 5^e éd., t. III, p. 1361.

(3) Cf. ADRIANUM DE VETERI BUSCO, *Rer. Leodiens.*, apud MARTENE et DURAND, *Amplissima Collectio*, t. IV, col. 1312-14.

sensation de S. Laurent, au trait. La cote *KK 6-19* et la note *Liber monasterii sancti Laurentii Leodij* se trouvent f. 1 et f. 2^v : *Pertinet monasterio sancti Laurentij prope Leodium*. Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré, reproduit à l'intérieur sur une étiquette en maroquin rouge : *Liber de tribus diebus, de beata vita* : plus bas, l'inscription : *Bibl. royale*.

1431. (11431-33). — HUGO DE SANCTO VICTORE. Opera.

1. (F. 1-54). Didascalicon magistri HUGONIS. = *PL.*, t. CLXXVI, col. 739 sqq.

2. (F. 55-65^v). HUGO. De arra anime. = *Ibid.*, col. 951-70. *Des. mutil.* primitias quondam por[rigit]. ...

3. (F. 66-95). [HUGO DE SANCTO VICTORE. Expositio in regulam beati Augustini]. = *Ibid.*, col. 881-924.

Parchemin, les 54 premiers feuillets, le reste en papier; 95 feuillets; 0^m,20 × 0^m,142; XV^e siècle. Ce volume provient de l'abbaye de Parc, car au verso de la couverture il y a la cote connue de cette bibliothèque : *I. theca IX*, et sur les deux plats il y a les armoiries grattées de l'abbaye. Reliure veau; au dos, le titre doré *Hugon. S. Victo. opusc. vol. IV* (1).

1432. (11881-83). — HUGO DE SANCTO VICTORE. Opera.

1. (F. I-II). Note de CH. RUELENS sur des fragments d'incunables que contenait autrefois l'ancienne reliure de ce volume savoir : 1^o une lettre d'indulgences de 1488, 2^o trois feuillets d'une *Prognosticatio*, en flamand (2).

2. (F. 1-50). HEYMERICUS DE CAMPO. [Quaestiones XXXIX] (3).

Le feuillet 37 est blanc, mais il n'y a aucune interruption dans le texte.

3. (F. 51-61). Regula beati AUGUSTINI episcopi.

4. (F. 62-129^v). [HUGO DE SANCTO VICTORE]. Commentum in regula sancti Augustini episcopi. = *PL.*, t. CLXXVI, col. 881 sqq. *Des. mutil.*, col. 920 : et in adversis tanto sit gloriosior quo ...

Papier; 129 feuillets, plus six de garde; 0^m,143 × 0^m,103; XV^e siècle. F. III, on lit : *Est liber hic sancti Martini Lovaniensis*. Reliure moderne, parchemin blanc.

1433. (II. 938). — GILBERTUS DE HOILANDIA. Super cantica anticorum.

1. (F. 1-1^v). Capitula.

2. (F. 1^v-131). Sermones domni GISLEBERTI super cantica anticorum. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 11 sqq.

(1) Cf. supra nn. 1416, 1422, 1424.

(2) Ces documents se trouvent aujourd'hui à la section des imprimés.

(3) Cf. FOPPENS, *Bibl. belgica*, p. 433.

Parchemin; 131 feuillets; 0^m,275 × 0^m,20; XIII^e siècle; deux colonnes; lettrines bleues et rouges. L'ordre des cahiers a été interverti dans la reliure, car les signatures se succèdent dans l'ordre suivant tout à fait fautif: I, XV, XIII, XII, XI, X, IX, VIII, VII, VI, V, IIII, III, II. F. 131^v, il y a la note: *Liber sancte Marie de Villari in brabantia*, et l'ex-libris de sir Thomas Phillipps: *T. P. Middle Hill, 322*. Ce volume a été acquis par la Bibliothèque royale en 1888. Reliure moderne, toile et peau de truie.

1434. (21848). — S. BERNARDUS. Opera.

1. (F. 1^v). Contenta.
2. (F. 2-14^v). Tractatus domni BERNARDI abbatis de Clara valle super evangelium *Missus est*. = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 55 sqq.
3. (F. 14^v-123). Sermones domni abbatis Clarae vallis super cantica canticorum. = *Ibid.*, col. 785 sqq.
4. (F. 123-128^v). Sermones domni B[ERNARDI] abbatis Clarevallis. = *Ibid.*, sermones nn. 112, 118, 119, 120, 121, 122, 125, 11, 28, 12.
5. (F. 129-137). [Miracula S. Bernardi in itinere germanico patrata]. = *BHL.*, nn. 1224, 1225, 1226.

Parchemin; 137 feuillets; 0^m,32 × 0^m,21; XII^e siècle; deux colonnes; quelques capitales; initiales rouges et vertes. F. 1, il y a la note: *Liber sancti Martini Tornacensis*; f. 1^v: *Liber sancti Martini Tornacensis, servanti benedictio ... tollenti maledictio fiat, fiat*, et f. 137: *Liber sancti Martini Tornacensis, servanti benedictio* (1). Ce volume fut acquis en 1863, à la vente van Alstein, à Gand, pour fr. 16,50. Demi-reliure moderne, dos en veau; avec les titres des traités, et le millésime *saec. XII* (2).

1435. (II. 1019). — S. BERNARDUS. Epistolae.

1. (F. 1). Fragment d'un commentaire sur les psaumes. *Inc. mutil. ... ias et deceptiones ponat, et hoc cum divitibus. Des. mutil. vel per quem omnia consummantur. Prophetam...*
2. (F. 1^v). Index.
3. (F. 2-107). Epistole domni BERNARDI abbatis Clarevallis. = *PL.*, t. CLXXXII, nn. 1-12, 17-24, 27, 29, 30, 32-36, 38-44, x, 16, 52, 53, 365, 55, 56, 58, 59, 61-69, 71-78, 80-121, 124, 126-137, 139-141, 254, 143, 145, 147, 148.
4. (F. 107^v-119^v). [S. BERNARDI] sermo exhortatorius ad milites templi de laude nove militie. = *Ibid.*, col. 921-40.
5. (F. 119^v). Epitaphium Bernardi abbatis. *Inc. Clare sunt valles.*
6. (F. 119^v-121^v). Pastoralis.

Inc. Pastoris nomen quicumque videtur habere.

(1) Cf. A. D'HERBOMEZ, *Les Manuscrits de l'abbaye de Saint-Martin de Tournai aujourd'hui conservés à la Bibliothèque royale de Bruxelles*, p. 22-23.

(2) Voir une description de ce manuscrit dans *Catal. cod. hagiogr. bib. reg. Bruxell.*, t. II, p. 432:

7. (F. 122-126). [HILDEBERTUS. De sacrificio missae]. = *PL.*, t. CLXXI, col. 1178 sqq.

8. (F. 126-127). Diverses pièces de vers.

Inc. Vivendi recte fatuus procrastinat horam.

Des. Collige quid carnis dulcedo quid nisi vermīs.

9. (F. 127-127^v). Versus HILDEBERTI. = *PL.*, t. CLXXI, col. 1418, n. LXXV.

10. (F. 127^v-128). Epistola Odoni et autres poèmes. = *Ibid.*, col. 1407, n. LX.

11. (F. 128-128^v). De excidio Rome et magnificentia Catonis.

12. (F. 128^v-129^v). De sacrilegis monachis.

13. (F. 129^v). Divers autres courts poèmes.

14. (F. 130). Quelques vers ajoutés au XVI^e siècle.

Inc. Dormit odorifera coluber plerumque sub umbra.

Des. Alcmena genitus sceptiferoque zone.

Parchemin; 130 feuillets; 0^m,312 × 0^m,21; XII^e siècle; deux colonnes; quelques belles letrines et initiales; signatures I-XIV. F. 1^v, il y a la note : *Liber ecclesie sancti Martini Tornacensis* (1), et f. 129^v : *Liber sancti Martini Tornacensis*. La même inscription se retrouve plusieurs fois f. 130^v, où on lit aussi : *Dampit Simon Butiau religieux de S. Gillain demeurant à S. Martin en Tournay lan M. quatre C. III^{xx} et X ... le jor du bon vendredi*, et : *Liber sancti Martini Tornacensis, auferenti maledictio*. L'ex-libris de Sir T. P. Middle Hill, 355-4, se trouve f. 1^v. Ce volume a été acquis par la Bibliothèque royale en 1888. Reliure moderne, cuir de Russie; au dos, le titre doré : *Bernardi abbatis epistolae*.

1436. (596-600). — S. BERNARDUS, HUGO DE SANCTO VICTORE, etc. *Tractatus varii*.

1. (F. 1). Praefatio exhortationum beati BERNARDI abbatis Clarevallensis ad Eugenium papam. = *PL.*, t. CLXXXII, col. 727.

2. (F. 1-42). Beati BERNARDI abbatis Clarevallensis ad Eugenium papam de consideratione [libri quinque]. = *Ibid.*, col. 727-808.

3. (F. 43-64^v). Liber beati BERNARDI abbatis de colloquio Symonis et Ihesu. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 435 sqq.

4. (F. 65-86^v). Tractatus domni BERNARDI abbatis de amore Dei. = *Ibid.*, col. 363 sqq.

5. (F. 87-116). HUGO DE SANCTO VICTORE. De XII abusioibus claustrī. = *PL.*, t. CLXXVI, col. 1056-86.

6. (F. 116^v). [De septem verbis Christi]. *Inc.* Ultima Christi verba que cruci affixus. *Des.* quia saporis intra se dulcedinem multitudo proposita contineret.

(1) Cf. A. d'HERBOMEZ, *Les Manuscrits de l'abbaye de Saint-Martin de Tournai aujourd'hui conservés à la Bibliothèque royale de Bruxelles*, p. 16.

7. (F. 117-130). [ARNOLDUS ABBAS. BONAE VALLIS]. Tractatus de. VII. verbis ultimis Christi quae crucifixus dixit (1).

Parchemin; 130 feuillets; 0^m,305 × 0^m,215; XIII^e siècle, sauf les ff. 1, 123-130 qui sont du XV^e; très jolies capitales en toutes couleurs. Ce volume provient de Corsendonck, car sur le premier plat intérieur, il y a la cote X. 3 de sa bibliothèque, et sur le premier plat à l'extérieur: *Bernardus de consideratione cum aliis in Korssendonc*; f. 1 et f. 130^v, il y a l'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris. Reliure ancienne restaurée, veau brun estampé, traces de fermoirs et de clous.

1437. (1840-48). — S. BERNARDUS. Opera (2).

1. (F. 1-54). Liber sancti BERNARDI abbatis Clarevallensis de consideratione ad Eugenium papam. = *PL.*, t. CLXXXII, col. 727-808.

2. (F. 54-58). Epistola G[ERHOHI] DE RICHENSBERGE episcopo Bambergensi. *Inc.* Cum adhuc tenebrae (3).

3. (F. 58-59^v). De obitu celebris memorie beati Bernardi Clarevallensis abbatis. = *BHL.*, n. 1210.

4. (F. 59^v-64). Sermo domni BERNARDI abbatis Clarevallensis (4).

5. (F. 65-65^v). De titulo in cruce Domini.

6. (F. 66-66^v). Lettres de S. BERNARD (5).

7. (F. 66^v-75). Liber BERNHARDI abbatis Clarevallensis [de moribus et officio episcoporum]. = *PL.*, t. CLXXXII, col. 809 sqq.

8. (F. 75^v-79^v). Lettres diverses.

a) INNOCENCIUS B. Wormaciensi episcopo (6).

b) Fratibus N. R. peccator.

c) Salzburgensis S. [episcopus] abbati H.

d) INNOCENTIUS H. praeposito ecclesie beati Petri de H.

e) GREGORIUS MAGNUS ad Virgilium episcopum Arelatensem. = *PL.*, t. LXXVII, col. 1172, n. LV.

f) N. C. Carthusiensis.

g) BERNARDUS C. regi Romanorum, B. episcopi Wormatiensis ad Bernardum (7).

(1) Publié dans l'appendice aux œuvres de S. Cyprien, dans l'édition des Bénédictins, p. xxxvii.

(2) Voir une description de ce manuscrit dans *Bulletins de l'Académie royale de Belgique*, 2^e série, t. XI, 1861, p. 252 sqq.; dans *Historisches Jahrbuch*, t. V, p. 600, et *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. I, p. 307.

(3) Cette lettre n'a pas encore été publiée, cf. *Historisches Jahrbuch*, t. VI, p. 249; WATTENBACH, *Deutschlands Geschichtsquellen*, 6^e éd., 1894, t. II, p. 310.

(4) Cf. *Bull. Acad. de Belgique*, tom. cit., p. 257, où le début de ce sermon, encore inédit, a été publié.

(5) Ces lettres ont été publiées par M. Kervyn de Lettenhove, *Bullet. Acad. roy. de Belgique*, tom. cit., p. 259-60.

(6) Innocent II. Cette lettre ne se trouve pas dans la collection de Migne.

(7) Cf. *Bull. Acad. roy. de Belgique*, tom. cit., p. 261-263.

h) A. avunculo suo carissimo H.

i) W. cognato suo.

k) Belvacensis ecclesie provisor C. ... priori.

l) A. Elewangis ecclesie abbas priori M.

m) [Ad S. Bernardum] (1).

n) I. abbas Cisterciensis abbati et conventui de Seonaugia.

Les feuillets de garde contiennent un fragment de lettre pontificale du pape Clément pour le monastère de Sainte-Geneviève, à Paris, et des notes de greffier.

Parchemin; 79 feuillets; 0^m,225 × 0^m,175; XIII^e siècle. F. 1, on lit la note : *M.B. S.2. Collegii Societatis Iesu Lovanii*. Reliure ancienne, peau de truie estampée.

1438. (4654). — S. BERNARDUS. De consideratione.

1. (F. 1-124). De consideratione BERNARDI abbatis ad Eugenium papam. *Inc. mutil.* ... et in infulis. = *PL.*, t. CLXXXII, col. 727 sqq.

2. (F. 126-127). Table des matières.

Parchemin; 127 feuillets; 0^m,11 × 0^m,08; XIII^e siècle. F. 124^v, il y a la note : *Liber S. Marie de Villari in Brabantia*. Demi-reliure moderne, dos en maroquin rouge; titre doré : *B^u Bernardi de consideratione sacc. XIII*.

1439. (4800-01). — S. BERNARDUS. Sermones in canticum canticorum.

1. (F. 1). Capitula sermonum sancti Bernardi qui in hoc volumine continentur.

2. (F. 1^v-124). Sermones sancti BERNARDI super cantica canticorum. Sermo XXVII-LI. = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 912-1029.

3. (F. 124-159). Sermones dive memorie IVONIS Karnothensis episcopi de precipuis sollempnitatibus. = *PL.*, t. CLXI, col. 567-595.

4. (F. 159-161). Sermo in die sancto Pasche sancti BERNARDI. = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 273.

5. (F. 161-164^v). [DAIMBERTI Pisani etc.]. Epistola de itineraio Iherosolimorum. = *PL.*, t. CLXIII, col. 448-51 (2).

6. (F. 165). Hymne *Superne matris gaudia*. = *RH.*, n. 19822.

Parchemin; 165 feuillets; 0^m,223 × 0^m,163; XIII^e siècle; quelques capitales très élégantes en toutes couleurs. Sur le premier plat à l'intérieur et f. 124, il y a la note : *Liber sancte Marie de Villari. Servanti benedictio*. Reliure veau raciné; titre doré au dos : *S. Bernar. in Cantica*.

(1) *Ibid.*, p. 263-64.

(2) Sur les manuscrits, les éditions et les diverses versions de cette lettre, voir RIAnt, *Inventaire critique des lettres historiques des croisades*, ARCHIVES DE L'ORIENT LATIN, t. I, 1881, p. 201-4.

1440. (9645-49). — S. BERNARDUS. Sermones.

1. (F. 1-119). Sermones domni BERNARDI pie memorie abbatis Clarevallis. = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 37-43, 343-53, 43-56, 87-109, 115-32, 135-37, 131-35, 137-62, 359-72, 161-74, 181-83, 173-81, 183-254, 375-98, 253-59, 263-74, 259-62, 273-92, 291-316, 316-34.

2. (F. 119-120^v). Passio sancti Mononis martiris. = *BHL.*, n. 6005.

3. (F. 120^v). Hymne notée. = *RH.*, n. 13961.

4. (F. 121-139^v). [Sermones GUERRICI abbatis]. = *PL.*, t. CLXXXV, col. 163-210.

5. (F. 139^v-141). In natali sancti Clementis pape et martiris sermo [S. BERNARDI]. = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 499-502.

6. (F. 141-142^v). Sermo domni BERNARDI abbatis de transitu beati Malachie. = *Ibid.*, col. 481-86.

7. (F. 142^v-143^v). Epistola [S. BERNARDI] fratribus Hybernie. = *PL.*, t. CLXXXII, col. 579-80.

8. (F. 143^v-147). [Sermones sancti BERNARDI] in dedicatione ecclesie. = *PL.*, CLXXXIII, col. 526-35.

9. (F. 147-148). Sermo GERRICI ed excitandam devotionem in psalmos. = *PL.*, t. CLXXXV, col. 210-14.

10. (F. 148-152). Sermo beati BERNARDI abbatis de assumptione beate Marie Virginis. = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 429-38, 415-17.

11. (F. 152). [Epistola ALEXANDRI pape O[dalrico] episcopo et sancte ecclesie Halberstadensi]. *Inc.* Venerunt ad nos viri religiosi Theodericus abbas Ilesine Burgensis et Thietmarus abbas de lapide sancti Michaelis.

12. (F. 152). De arborum internis. = Extrait de S. AMBROISE.

13. (F. 153-168). [Sermones S. BERNARDI]. = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 397-404, 417-30, 453-63, 501-14.

14. (F. 169^v-170). Index.

Parchemin, sauf les feuillets 169 et 270 qui sont en papier, ainsi que trois feuillets de garde; 170 feuillets; 0^m,306 × 0^m,20; XIII^e siècle; deux colonnes; ancienne pagination r-clj, lxi-lxxvii; signatures r-xv, à l'encre rouge. Très jolies capitales en toutes couleurs rehaussées d'or; quelques-unes sont ornées de figures qui représentent f. 41, l'apôtre S. Paul; f. 43, la S^{te} Vierge; f. 81, la mort de S. Benoit; f. 121, S. Jean-Baptiste; f. 130, l'assomption de la S^{te} Vierge; f. 138, le Christ et les saints; f. 141, S. Malachie (1). Ce volume provient de Saint-Laurent de Liège, mais tout indice extérieur de cette provenance a disparu. On la démontre par l'écriture de l'*Index*, écrit de la même main que le manuscrit n. 9291, qui est manifestement signalé comme provenant de cette bibliothèque. Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré reproduit à l'intérieur sur une étiquette en maro-

(1) Cette miniature a été reproduite dans *Proceedings of the royal Irish Academy*, 1846-47, n. 67, p. 501.

quin rouge : *S. Bernardi sermones etc. XII saec.* ; en dessous, les armes de Belgique et l'inscription : *Bibl. royale* (1).

1441. (9728-34). — S. BERNARDUS. Opera.

1. (F. 1). Table des matières.
2. (F. 1^v-4^v). Table des lettres de S. Bernard.
3. (F. 5-162). [*S. BERNARDI epistolae*]. — Les lettres publiées *PL.*, t. CLXXXII, nn. 2-6, 8-41, 43-69, 71-76, puis, f. 56-65^v, le traité *De Baptismo*, *PL.*, t. CLXXXIII, col. 1931-46 ; ensuite lettres nn. 78-85, 87-89, 92-121, 125, 126, puis f. 105^v-106, une lettre inédite " *Ad Ludovicum regem Francia. Inc. Regna terre et iura regnorum* „ ; ensuite les lettres nn. 127-149, 382, 395, 400, 150-184, 339, 185-187, 194-196, 192, 193, 197-204, 124, 414, 205-225, 227, 226, 228, 230, 232-236, 240.
4. (F. 163). Sentences diverses.
5. (F. 163^v-165^v). *Epistola domini BERNARDI abbatis Clarevallensis ad papam Eugenium* ; item *epistola EIUSDEM ad eumden.* = *PL.*, t. CLXXXII, nn. 238, 247.
6. (F. 165^v-197). *Libri domni BERNARDI abbatis Clarevallensis ad pappam Eugenium de consideratione.* = *Ibid.*, col. 727-808.
7. (F. 197^v). *Versus BEDE de regularibus solis et lune, capitula in libro de temporibus edito a BEDA venerabili presbitero.* = *PL.*, t. XC, col. 187.
8. (F. 198^v-201^v). *Descriptio sanctuarii Lateranensis ecclesie* (2).
9. (F. 202-216). *Meditationes sancti BERNARDI.* = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 465-508 (3).
10. (F. 216-226^v). *Liber apogeticus beati BERNARDI abbatis.* = *PL.*, t. CLXXXII, col. 898-918.
11. (F. 226^v-236). *Liber BERNARDI abbatis ad milites templi de laude nove milicie.* = *PL.*, t. CLXXXII, col. 921-40.

Parchemin ; 236 feuillets ; 0^m,275 × 0^m,182 ; XIII^e siècle ; les feuillets 163-236 sont à deux colonnes ; quelques jolies lettrines, initiales rouges et bleues. Ce volume provient de l'abbaye de Sainte-Rictrude à Marchiennes, car on lit f. 1 : *Liber sancte Rictrudis Marchianensis*, et en dessous

*Sancti Rictrudis est liber marchianensis
Per quem servatus fuerit maneat benedictus,
At per quem raptus anatema sit et maledictus.*

(1) Voir une description de ce manuscrit dans *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. II, p. 348-49.

(2) Extraits de IOHANNIS DIACONI *Liber de ecclesia Lateranensi*, publié par MABILLON, *Museum italicum*, t. II, p. 561-74.

(3) Dans ce manuscrit se trouve le complément tiré des œuvres de Paulin d'Aquilée signalé *ibid.*, col. 507, note 28.

F. 236 : *Liber sancte Rictrudis, qui eum furatus fuerit anathematizatus sit, et f. 236^v : Sancte Rictrudis liber hic est marchianensis. F. 236, on lit encore : Liber concessus ex parte religiosorum de Marchenis dompno Alexandro monacho de laude, et f. 1 :*

Sum Rogerus ego de sancto dictus Amando (1)

In cuius cerebro crescunt fantasmata crebro.

Plus tard, le volume a fait partie de la bibliothèque des anciens bollandistes, car il porte, f. 1, la cote ✕ *MS. 108*. L'estampille rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 5 et f. 236^v. Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré, reproduit aussi à l'intérieur : *S. Bernardi epistolae etc.*; en dessous, les armes de Belgique et l'inscription *Bibl. royale*.

1442. (10559-61). — S. BERNARDUS. Opera.

1. (F. 1^v). Index.
2. (F. 2). Fragments. *Inc.* Multi sunt fortes qui virtutum constantia expugnant vitia. *Des.* in consequentia martirium.
3. (F. 2^v). Fragment. *Inc.* Aratus fuit Christus in terra inarabili. *Des.* reffloruit in resurrectione.
4. (F. 3-5). [Sermo] in assumptione beate Marie. *Inc.* Quasi olim.
5. (F. 5^v-19^v). Liber domini BERNARDI abbatis Clarevallis de filio regis sedente in quadriga. = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 757-61, 765-72.
6. (F. 20-53^v). Extraits divers.
7. (F. 53^{bis}-62^v). De visione prophetica *Vidi Dominum*.
8. (F. 62^v-67^v). [S. BERNARDUS]. In commemoratione sancti Mychaelis. = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 447-52.
9. (F. 67^v-70). [S. BERNARDUS]. In dedicatione ecclesie. = *Ibid.*, col. 523-26.
10. (F. 70-73). [S. BERNARDUS]. Item de sacramento dedicationis. = *Ibid.*, col. 517-21.
11. (F. 73-75). [S. BERNARDUS]. Item in dedicatione ecclesie. = *Ibid.*, col. 521-23.
12. (F. 75-78^v). De octo beatitudinibus.
13. (F. 78^v-83). [S. BERNARDUS]. = *Ibid.*, col. 462-68.
14. (F. 83-85^v). [S. BERNARDUS]. = *Ibid.*, col. 468-71.
15. (F. 85^v-89). De sanctis apostolis Petro et Paulo. *Inc.* Isti sunt due olive et duo candelabra. *Des.* Persecutor decretus est pro virtute, dies pro merito, locus pro gloria ad quam nos perducere dignetur Christus Ihesus Dominus noster. Amen.
16. (F. 89-89^v). Vers sur les quatre éléments.
Inc. Vomere terre teror, magis acceptis dare queror.
Des. Mandat discretas continuare vices.
17. (F. 90-113). [Sententiae].

(1) Cf. *Catalogue général des manuscrits des bibliothèques publiques des départements*, t. VI, Douai, Paris 1878, p. 153.

A partir du f. 89^v, c'est le *Liber sententiarum* de S. BERNARD. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 1137, n. 5-col. 1156, n. 53.

18. (F. 113^v-115). [Sermo in dedicatione ecclesiae]. *Inc.* Quam terribilis est ... Fratres karissimi, leguntur quinque loca. *Des.* pateat aditus ad eternam iocunditatem. Quod nobis praestet Deus.

19. (F. 115^v-116). [Versus de salutatione angelica].

Inc. Angelus arcanum divini faminis auri.

20. (F. 116). [Sentences diverses].

Parchemin; 116 feuillets; 0^m,195 × 0^m,125; XIII^e siècle; signatures 1-v. F. 1^v, on lit : *Liber sancti Laurentii in Leodio*. *MM*, 2-14. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris, aux faisceaux, se trouve f. 1 et f. 115^v. Reliure moderne, veau raciné ; au dos, le titre doré reproduit à l'intérieur sur une étiquette en maroquin rouge : *S. Bernardi sermones; etc. XII saec.*, en dessous, les armes de Belgique et l'inscription *Bibl. royale*.

1443. (10595-98). — S. BERNARDUS. Opera.

1. (F. 2-24^v). Liber sancti BERNARDI abbatis ad milites templi de laude nove militie. = *PL.*, t. CLXXXII, col. 921 sqq.

2. (F. 24^v-25). Exemplum contra symoniam. = *BHL.*, n. 4777.

3. (F. 26-57^v). [S. BERNARDUS. De consideratione]. = *PL.*, t. CLXXXII, col. 727.

4. (F. 58-77). Epistole beati BERNARDI abbatis Clarevallensis. = *Ibid.*, les lettres nn. 238, 239, 240, 245, 246, 247, 248, 249, 251, 252, 256, 257, 258, 259, 261, 262, 268, 269, 270, 273, 275, 276, 277, 278, 280, 283, 284, 285, 286, 291, 295, 298, 305.

5. (F. 78-82^v). Epistola sancti Bernardi abbatis ad Robertum nepotem suum. = *Ibid.*, col. 67 sqq., ep. 1.

Parchemin; 82 feuillets; 0^m,172 × 0^m,112; XIII^e siècle, les feuillets 56-82 sont du XIV^e. F. 1, il y a la cote *MM*, 2-16 de la bibliothèque de Saint-Laurent à Liège, et f. 2, on lit ces vers :

*Sis memor Hermanni cum stas in murmure sancti
Servicii Christi, quem laudat concio celi.*

L'estampille rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris, se trouve f. 2 et f. 83^v. Demi-reliure, dos en maroquin rouge, avec les titres dorés des principaux traités.

1444. (19387). — S. BERNARDUS. Opera.

1. (F. 1-26). Liber beati BERNARDI abbatis de conscientia. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 507-52.

2. (F. 26-35). Liber sancti BERNARDI abbatis de salute anime (1).

3. (F. 35-55). Libellus sancti BERNARDI abbatis de institutione morum. = *Ibid.*, col. 561-84.

(1) Sous ce titre il y a le *Manuale* de S. Augustin. = *PL.*, t. XL, col. 951.

4. (F. 55-74^v). [S. BERNARDI sermones super *Missus est*]. = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 55-60, n. 9; col. 62, n. 2; col. 88.

Parchemin; 74 feuillets; 0^m,156 × 0^m,115; XIII^e siècle. Ce manuscrit a été acquis le 20 janvier 1845, à la vente des livres de M. Lavalleye, à Gand, pour fr. 17,50 (1). Reliure veau brun; au dos, le titre doré : *Bernard. abbas*.

1445. (20006-17). — S. BERNARDUS. Opera.

1. (F. 1). Table des matières.
2. (F. 1^v-16). Omelie III^{or} in evangelium *Missus est*. = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 55 sqq.
3. (F. 16-29^v). Liber BERNARDI abbatis de gratia et libero arbitrio. = *PL.*, t. CLXXXII, col. 1001 sqq.
4. (F. 29^v-38). Liber BERNARDI abbatis ad milites templi de laude nove militie. = *Ibid.*, col. 921.
5. (F. 38-51). Liber BERNARDI abbatis de praecepto et dispensatione. = *Ibid.*, col. 859.
6. (F. 51-62). Liber EIUSDEM de diligendo Deo. = *Ibid.*, col. 973.
7. (F. 62-70). Liber apologeticus BERNARDI abbatis de Claravalle. = *Ibid.*, col. 895.
8. (F. 70-83). De gradibus humilitatis. = *Ibid.*, col. 941.
9. (F. 83^v-92^v). Epistola domni BERNARDI abbatis Clarevallensis ad dominum Henricum Senonensium archiepiscopum. = *Ibid.*, col. 809.
10. (F. 93-94). Sermo sancti IOHANNIS (2) de penis animarum post mortem. = *PL.*, t. L, col. 833.
11. (F. 94-98). [EIUSDEM alii sermones]. = *Ibid.*, col. 835, puis un sermon, *inc.* Aliquando terre operaris, puis *PL.*, t. L, col. 857.
12. (F. 98-105^v). Venerabili... Sindulpho frater PETRUS Cluniacensis abbas. *Inc.* Suscepi litteras dilectionis tue, karissime frater.
13. (F. 106-109). Henricus filius imperatoris Henrici contra ius nature et fas legum in patrem insurgens. — Sous ce titre se trouve ici la lettre adressée en 1103 par l'empereur Henri IV à Philippe I^{er}, roi de France (3).
14. (F. 109-109^v). Lettre du pape PASCAL à l'empereur Henri. *Inc.* Regnum vestrum sancte romane ecclesie singulariter coherere.
15. (F. 110^v-111). Paraphrase en vers du *Salve regina*.

Inc. Salve, regina, miseris medicina.

Des. Alleluya tibi, virgo, cane, amen, ibi.

(1) N° 824 du catalogue.

(2) En fait, ce sermon est de S. Eucher.

(3) Cette lettre a été publiée par URSITSIUS, *Scr. rer. germ.*, t. I, p. 396; ECCARD, *Corp. hist. med. aevi.*, t. II, p. 222; *Recueil des historiens de France*, t. XIV, p. 807. Cf. POTTHAST, *Bibl. hist. med. aevi*, 2^e éd., t. I, p. 585.

Parchemin; 112 feuillets; 0^m,22 × 0^m,165; XIII^e siècle, sauf les f. 110^v et 111, qui sont du XV^e. F. 1 et f. 112^v, on lit la note : *Liber sancte Marie de Villari in Brabantia*. Reliure, ais de bois recouverts de veau brun estampé; au dos, le titre doré : *B. Bernar. in laude virginis*; restes de fermoirs en cuivre.

1446. (II. 945). — S. BERNARDUS. Super cantica canticorum.

Tractatus BERNARDI abbatis de Claravalle super cantica canticorum. = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 785-1194. *Des. mutil.* quae promeretur quod non ...

Parchemin; 164 feuillets; 0^m,334 × 0^m,23; XIII^e siècle; deux colonnes; très belles letrines et capitales rouges et bleues; signatures 1-xx. F. 1, on lit : *Liber sancte Marie de Camberone* (1), et ff. 5, 10, 15, 19, 26, 33, 41, 48, 56, 67, 74, 80, 85, 91, 97, 108, 117, 124, 133, 142, 150, 156, 162, il y a la note : *De Camberone*. F. 1. se trouve l'ex-libris *T. P. Middle Hill*, 339 de la bibliothèque de Sir Thomas Phillipps, d'où ce volume a été acquis en 1888 pour fr. 75. Reliure moderne, chagrin rouge.

1447. (II. 955). — S. BERNARDUS. Opera.

1. (F. 1-15^v). BERNARDI abbatis de praecepto et dispensatione. = *PL.*, t. CLXXXII, col. 859.

2. (F. 15^v-29^v). [S. BERNARDUS]. De gratia et libero arbitrio. = *Ibid.*, col. 1001.

3. (F. 29^v-38). Liber apologeticus BERNARDI abbatis. = *Ibid.*, col. 895 sqq.

4. (F. 38-39^v), Sermo domni BERNARDI ad clericos. = *Ibid.*, col. 833.

5. (F. 40-40^v). [Monosticha sancti COLUMBANI]. = *PL.*, t. LXXX, col. 287.

6. (F. 41-47). [Excerpta S. BERNARDI].

Les feuillets 47^v-48 sont blancs.

7. (F. 48^v-121). Excerpta ex libris domni BERNARDI abbatis.

8. (F. 121-136^v). [Flosculi ISIDORI Hispalensis]. *Inc.* Cum in rerum varietate nec audiendo disci nec memoria possint omnia contineri.

9. (F. 137-138^v). Denotatio accentuum secundum usum Cisterciensium.

10. (F. 138^v-139). Regula accentandi.

11. (F. 140-140^v). Fragment d'un commentaire sur l'Écclésiaste.

Parchemin; 139 feuillets, plus quatre de garde; 0^m,22 × 0^m,148; XIII^e siècle. La date, f. 139 : *Scriptum anno M^oCCC^ol^o*, se rapporte aux exercices de plume qui se trouvent sur cette page. Initiales rouges et bleues, signatures 1-xvii. F. 1, f. 139 et f. 139^v, il y a, à diverses reprises, la note : *Liber sancte Marie de Camberone*, et la mention : *De Camberone* est maintes fois reproduite au bas des pages. Au verso du second feuillet de garde, on lit : *Hanc secundam partem decreti dedit nonnus Iohannes de Lens fratri Bartholomeo de Insula anno Domini M.CCC.XXXI*. L'ex-libris *Sir T. P. Middle Hill 350* se trouve sur le premier feuillet de garde. Ce

(1) Cf. SANDERUS, *Bibl. belgica manuscr.*, part. 1, p. 351.

volume a été acquis par la Bibliothèque royale en 1888, pour fr. 60. Reliure ancienne restaurée, peau de truie.

1448. (II. 1052). — S. BERNARDUS. Opera.

1. (F. 1-86). [Liber Ailredi abbatis Rievallis qui dicitur *Speculum caritatis*] (1). = *PL.*, t. CXCIV, col. 501 sqq.

2. (F. 86-89^v). Sermo sancti BERNARDI abbatis de adventu Domini. = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 35-40.

3. (F. 89^v-90^v). Parabola. = *Ibid.*, col. 770-72.

4. (F. 91-98^v). Tractatus sancti BERNARDI abbatis de dulcedine amoris intimi. = *Ibid.*, col. 367-80 (2).

5. (F. 98^v-116). [GUILLELMI abbatis sancti Theoderici tractatus de natura et dignitate amoris]. = *Ibid.*, col. 379-408.

6. (F. 116-124). Divers extraits de S. BERNARD. = *Ibid.*, col. 751-58.

7. (F. 125-129). Parabola B. abbatis de Ethiopissa. *Inc.* Filius regis supercelestis Hierusalem egressus est ut contempleretur regna patris sui inferiora.

8. (F. 129^v-132^v). [Explanatio in *Pater noster*]. *Inc.* Septem sunt petitiones sicut VII dona spiritus sancti.

9. (F. 132^v-133^v). AUGUSTINUS. De doctrina christiana. *Inc.* Ante omnia opus est Dei timore converti ad cognoscendam eius voluntatem.

10. (F. 133^v-136^v). Parabole domni BERNARDI abbatis Clarevallis de filio regis. = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 737-62.

11. (F. 137-140^v). Fragments de la Bible du VIII^e siècle.

Parchemin ; 140 feuillets ; 0^m,269 × 0^m,185 ; XIII^e siècle. Ce volume provient de l'abbaye d'Alne, puis a formé le n. 4629 de la collection de Sir Thomas Phillipps. Il a été acquis par la Bibliothèque royale en 1888. Demi-reliure, toile anglaise ; titres dorés au dos.

1449 (II. 1058). — S. BERNARDUS. Opera.

1. (F. 1). Notes, en latin (3).

a) Sur le nombre des religieux d'Alne en 1546.

b) Sur une tempête à Malines, en août 1546.

c) Sur l'entrée à Alne, le 3 août 1546, de Georges d'Autriche, prince-évêque de Liège.

2. (F. 2-60). [Biblia abbreviata].

3. (F. 60-61^v). [Similitudo patris familias]. *Inc.* Ad insinuandam interioris hominis custodiam. *Des.* et a timore ad amorem celestis patrie sese transferre. *Explicit.*

(1) Ce titre est ajouté en marge.

(2) En fait ce traité, attribué ici à S. Bernard, est de Guillaume, abbé de Saint-Thierry.

(3) Ces notes sont publiées *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. II, p. 487.

4. (F. 62-63^v). Commentaire sur le texte : *Deus illuminator omnium gentium*.

5. (F. 63^v-67^v). Item sur le texte : *Confiteantur tibi, Domine, omnia opera tua*.

6. (F. 68-69^v). [De patientia]. *Inc.* Pacientiam debemus omnibus. *Des.* Has divitias debemus semper augere.

7. (F. 70-74). [Sermo de S. Martino]. *Inc.* Vivit in Christo gemma sacerdotum. *Des.* Nos itaque avis sancti Martini faciat volare ... perducatur Dominus Ihesus Christus dominus noster.

8. (F. 74-75). [Miraculum sancti Martini]. *Inc.* In episcopatu Leodiensi est villa in qua in honore beati Martini ecclesia est constructa.

9. (F. 75). [De quatuor Ioseph].

10. (F. 75^v-77^v). Extraits.

11. (F. 78-93^v). Tractatus domni Bernardi abbatis de dulcedine amoris intimi. = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 367 sqq.

12. (F. 94-101^v). [Sententiae].

13. (F. 102-109^v). [Commentarius in canticum canticorum].

14. (F. 110-111^v). Vita beati Salvii episcopi et confessoris. = *BHL.*, n. 7470.

15. (F. 112-123^v). Vita beatissimi Clementis primi Metensium civitatis pontificis. = *BHL.*, n. 1860.

16. (F. 124-132^v). [Vita Christi rythmica].

Inc. Quatuor intueor paradysi flumina Christi

Quadrigam video quatuor ire rotis.

Parchemin; 132 feuillets; 0^m,225 × 0^m,176; XIII^e et XIV^e siècle. Au sujet du scribe de la première partie du manuscrit, on lit, f. 60 : *Pax sit Henrico Dei amico qui hunc librum scripsit*. F. 1, on lit : *Liber beatæ Mariæ Virginis de Alna in patria et diocesi Leodiensi*. Plus tard, ce volume a fait partie, avec le n. 4638, de la collection de Sir Thomas Phillipps; la Bibliothèque royale l'a acquis en 1888. Demi-reliure, toile anglaise; au dos, les titres dorés des différents traités (1).

1450. (II. 1064). — S. BERNARDUS. Epistolæ.

1. (F. 1). [Miraculum de prima epistola S. Bernardi]. = *PL.*, t. CLXXXV, col. 255-56.

2. (F. 1^v-4). Capitula in epistolis sancti Bernardi.

3. (F. 4-141). [S. BERNARDI epistolæ]. = *PL.*, t. CLXXXII, nn. 1-147, 149-228, 231-307, 311, 310, 374 et 398.

4. (F. 141-143^v). Epistola domni WILHELMI Signiacensis ad fratres kartusienses. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 307 sqq.

5. (F. 143^v-145). Epistola ODONIS monachi Cantuariensis ad Adam fratrem suum novitium Igniacensem (2).

(1) Cf. *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruzcell.*, t. II, p. 486-87.

(2) Publiée par MABILLON, *Vetera analecta*, 1723, p. 477.

6. (F. 145-149). Sermo in nativitate sancti Iohannis Baptiste. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 991.
7. (F. 149-150^v). Sermo. *Inc.* Invitatus Dominus pia devotione ad hospitium cordis nostri pulsat ad ostium.
8. (F. 150^v-151^v). Sermo. *Inc.* Exiit edictum a Cesare Augusto.
9. (F. 151^v-152). Sermo. *Inc.* Cum natus esset Ihesus in Bethleem Iude.
10. (F. 152^v-154). Visio domni PETRI abbatis Igniacensis quam vidit de fratre Balduino milite novitio suo. = *BHL.*, n. 6728.
11. (F. 154-156^v). [HERBERTUS] Miraculum de novitio hyspaniensi. = *BHL.*, n. 1231a (1).
12. (F. 156^v-157^v). [De beato Malachia] (2).
13. (F. 157^v-158). [Miraculum]. Erant duo socii, unum par amicitie.
14. (F. 158). ALEXANDER [papa] universis abbatibus cisterciensis ordinis — ALEXANDER Ludovico... Francorum regi (3).
15. (F. 158). Epitaphium sancti Bernardi (4).
16. (F. 158-158^v). [Miraculum beatae Mariae Virginis]. Récit du miracle de Sardenay (5).

Parchemin; 158 feuillets; 0^m,345 × 0^m,246; XIII^e siècle; deux colonnes; superbes lettrines; initiales rouges et vertes; signatures I-XIX. F. 158 et f. 158^v, on lit la note : *Liber sancte Marie de Alna*. Plus tard, ce volume a appartenu à Sir Thomas Phillipps avec le n. 4644. Demi-reliure, toile anglaise; au dos, le titre doré : *S. Bernardi epistolae* (6).

1451. (II. 1167). — S. BERNARDUS. Opera.

1. (F. 1-1^v). [De inventione sancti Stephani]. = *BHL.*, n. 7851. Fragment.
2. (F. 2-2^v). De reliquiis que Rome sunt (7).
3. (F. 2^v). De inventione preciosi ligni crucis Christi.
4. (F. 2^v). De penitentia Salomonis.
5. (F. 2^v). De quadam pestilentia [in civitate Viennensi] (8).
6. (F. 2^v). De episcopis romanis presbiterorum vel episcoporum filiis.

(1) Ce texte se trouve aussi dans le manuscrit de la Bibliothèque royale, n. 4877-86; voir plus haut, p. 251.

(2) Cf. *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. II, p. 503.

(3) Ces deux lettres relatives à la canonisation de S. Bernard sont publiées par FONTANINI, *Codex canonizationum*, pp. 21, 20.

(4) Cf. *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. I, p. 286 et t. II, p. 503.

(5) Cf. *ibid.*, t. II, p. 503.

(6) Voir une description de ce manuscrit dans *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. II, p. 502-3.

(7) Fragment de Jean diacre. Cf. supra, p. 349, note 2.

(8) Récit de l'institution des Rogations par S. Mamert.

7. (F. 2^v). De diebus egyptiacis.
8. (F. 3). Index.
9. (F. 3^v-4^v). Index epistolarum.
10. (F. 5-106^v). [S. BERNARDI epistolae]. = *PL.*, t. CLXXXII, nn. 13-16, 45-51, 150-191, 194, 195, 196, 193, 197-228, 230-252, 122, 123, 256-66, 268-271, 267, 272-285, 288, 289, 400 (1), 25, 26.
11. (F. 106^v-107). Epistola INNOCENTII pape ad Radulfum abbatem Latiniacensem.
12. (F. 107-149). BERNARDI abbatis ad Eugenium papam de consideratione. = *PL.*, t. CLXXXII, col. 727 sqq.
13. (F. 150^v-175). Domni BERNARDI abbatis Clarevallis vita sancti Malachie archiepiscopi Hibernie. = *BHL.*, n. 5188.
14. (F. 175-176^v). Sermo de eodem. = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 486-90.
15. (F. 176-177). Sermo domni BERNARDI abbatis in depositione sancti Malachie episcopi. = *Ibid.*, col. 481-86.
16. (F. 179-180). Epistola BERNARDI abbatis ad Hibernienses de obitu sancti Malachie episcopi. = *PL.*, t. CLXXXII, col. 578-80, ep. n. 374.

Parchemin; 180 feuillets; 0^m,332 × 0^m,215; XIII^e siècle; les feuillets 1-149 sont à deux colonnes; très jolies initiales; f. 151^v, une curieuse lettrine avec une représentation de S. Malachie; ancienne pagination 1-CLXIII, signatures 1-XVII. F. 3, on lit: *Liber ecclesie sancti Martini de civitate Tornaco*, et f. 180^v: *Liber sancti Martini Tornacensis. Auferenti maledictio. Amen* (2). Sur le premier feuillet de garde Sir Thomas Phillipps a écrit cette note: *I suspect this is one of the MSS which I bought of De Matt at Bruxelles, which I left in the care of a scoundrel named Eemans, who during my absence sold them. T. Phillipps, 1840*. Dans la collection de Cheltenham, ce volume portait le n. 9307; il a été acquis par la Bibliothèque royale en 1888. Cuir de Russie estampé; au dos, le titre doré: *Bernardi opera. M.S. in memb. saec. XII* (3).

1452. (II. 1403). — S. BERNARDUS. In cantica.

1. (F. 1^v-140). Expositio domni BERNARDI abbatis Clarevallis super cantica canticorum. = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 785-1070, les soixante premiers sermons.
2. (F. 140^v). [De compositione facta inter imperatorem Fridericum I et regem Graeciae Isaacum Angelum anno 1190] (4).

(1) C'est probablement à ce manuscrit de Saint-Martin de Tournai que fait allusion Dom Martène dans sa note relative à la suscription de cette lettre. Voir *PL.*, t. CLXXXII, col. 613, note 1046.

(2) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. I, p. 97, n. 36.

(3) Ce manuscrit est décrit dans *Catal. cod. hagiogr. bibliothecae regiae Bruell.*, t. II, p. 517-18.

(4) Ce morceau a été publié naguère par M. KARL HAMPE, *Neues Archiv der Gesellschaft für ältere deutsche Geschichtskunde*, t. XXIII, 1898, p. 398-400.

Parchemin; 140 feuillets; 0^m,25 × 0^m,155; XIII^e siècle; initiales rouges et bleues; signatures I-XVII. F. 1, il y a la note: *Liber Sancti Gilleni*, f. 1^v: *Ex monasterio S. Gilleni*; f. 140^v: *Liber [Sancti Gilleni . qui eum] abstulerit anatema* (1). Sur le premier feuillet de garde, se trouve l'ex-libris de *Sir T. P. Middle Hill*, avec les cotes successives 1128 et 42.952. Reliure cuir de Russie gaufré; au dos, le titre doré: *Bernardus in Cantica*.

1453. (II. 2556). — S. BERNARDUS. Epistolae.

1. (F. 1^v-4). Capitula in epistolis sancti Bernardi primi Clarevallis abbatis.

2. (F. 4). Miraculum epistole prime. = *PL.*, t. CLXXXV, col. 255-56.

3. (F. 4^v-175^v). [S. BERNARDI epistolae]. = *PL.*, t. CLXXXII, nn. 1-83, 85-146, 148-228, 231-54, 84, 255-307, 15, 147, 310, 374, 398.

4. (F. 175^v-178). [S. BERNARDUS. Sermones de S. Victore]. = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 371-76.

5. (F. 178-181). Epistola domni WILHELMI Signiacensis ad fratres kartusienses. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 307 sqq.

6. (F. 181-183). Epistola domni ODOMIS monachi Cantuariensis ad Adam fratrem suum novitium Igniacensem (2).

7. (F. 183-188). Sermo in nativitate sancti Iohannis Baptiste. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 991-1002.

8. (F. 188-191). [Sermones de nativitate Domini] (3).

9. (F. 191^v). Epitaphium sancti Bernardi abbatis.

10. (F. 191^v-192). [Variae sententiae]. *Inc.* Audi, anima, que loquor, ausculta que dico. *Des.* peccatum per ignorantiam magis praevalet.

11. (F. 192^v-193). [Varii rythmi].

a) *Inc.* Prima mundi seducta sobole. = *RH.*, n. 15435.

b) *Inc.* Exultantes in partu Virginis. *Des.* Iesus cum nascendo referet. Gaudeamus.

c) *Inc.* Cara michi pignora filie opes patris inopis. *Des.* laudum munera vivi Deo, cui in secula laus et honor, virtus et modo gloria.

12. (F. 193). [Planctus Iacob].

Inc. Heu michi, cur hoc feci,

Ioseph fili, cur te misi.

Des. Veniat hora,

Que sine mora

Comprimat ora.

13. (F. 193^v). [Praecepta vitae]. *Inc.* Primo ab omni te tam minimo quam maximo in quantum potest abstinere peccato. *Des.* et Deus pacis erit tecum.

(1) Cf. A. PONCELET, S. I., *Annales de l'abbaye de Saint-Ghislain*, p. 395.

(2) Voir plus haut, p. 355, note 2.

(3) Ce sont les sermons signalés plus haut, p. 356, nn. 8 et 9.

14. (F. 193^v). [De miseria humana]. *Inc.* Ad cor tuum revertere, conditionis misere homo. *Des.* Beatus quem invenerit vigilantem cum venerit.

15. (F. 194^v-195). [De vitiis et virtutibus]. *Inc.* Luxuria est ex immundis desideriis. *Des.* vel consuetudinem factam freno rationis inhibere.

Parchemin; 195 feuillets; 0^m,33 × 0^m,245; XIII^e siècle; deux colonnes; superbes lettrines, en toutes couleurs. F. 194 et 195^v, un arbre généalogique colorié des vertus et des vices; signatures I-XXIII. F. 1, il y a la note: *Liber armarii Villariani*, et la cote: *Phillipps ms. 2264*. Ce volume fut acquis par la Bibliothèque royale en 1900. Reliure du XVII^e siècle; ais de bois recouverts de veau brun estampé; au dos, le titre doré: *Epistolae Bernardi MS*.

1454. (1787). — S. BERNARDUS. SERMONES.

1. (F. 1). Prière à tous les saints.

2. (F. 1^v-7). Calendrier.

3. (F. 8-61). Sermons pour Pâques, l'Ascension et la Pentecôte. = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 273-334. — Avec deux additions: a) (f. 21^v). *Inc.* Omnia quae de Salvatore legimus; b) (f. 44) de magnanimitate.

4. (F. 61-76^v). Fêtes de S. Jean Baptiste et des SS. Pierre et Paul. = *Ibid.*, col. 397-46.

5. (F. 76^v-87^v). Sermons pour les dimanches de la Pentecôte. = *Ibid.*, col. 333-41.

6. (F. 87^v-93^v). In sollempnitate sancte Marie Magdalene.

7. (F. 93^v-148). In assumptione sancte Marie virginis et les autres sermons du temps. = *Ibid.*, col. 415-81, mais les sermons III-IV, n. 2 incl. sont omis, col. 462-73.

8. (F. 148-195). In festivitate S. Martini, Clementis, S. Andree, in transitu S. Malachiae. = *Ibid.*, col. 489-504, 509-14, 481-86, et epistola de eodem. = *PL.*, t. CLXXXII, col. 578-80, ep. n. 374, in transitu patris Humberti et in dedicatione ecclesiae. = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 513-36.

Parchemin; 195 feuillets; 0^m,27 × 0^m,18; XIV^e siècle; deux colonnes; très jolies initiales; signatures I-XV. F. 8, il y a une miniature qui représente S. Bernard prêchant, et f. 29, une autre qui représente l'Ascension. F. 1, il y a cette note: *Bibliotheca Nizellensis*. Reliure moderne, veau brun.

1455. (2524-27). — S. BERNARDUS. OPERA.

1. (Feuillet de garde, verso). Table des matières.

2. (F. 1-41). BERNARDUS. De colloquio Symonis et Ihesu. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 435 sqq.

3. F. 42-89^v). Liber sancti BERNARDI Clarevallensis abbatis de consideratione anime ad Eugenium papam. = *PL.*, t. CLXXXII, col. 727 sqq.

4. (F. 90-110). IHOANNIS CRISOSTOMI de reparatione lapsi. = *PG.*, t. XLVII, col. 277 sqq.

Les feuillets 110^v-111 sont blancs.

5. (F. 111^v-112^v). Recettes médicales.

6. (F. 113-168). BERNARDUS. De conscientia. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 507 sqq.

7. (F. 168-185^v). Meditationes BERNARDI. = *Ibid.*, col. 485 sqq.

Les feuillets 186-187 sont blancs.

8. (F. 187^v). Extrait. *Inc.* Gregorius Nazianzenus de Ieremie dictis presentem imperatorem apud quem intercedit. *Des.* voluptas et delicia mee.

Les deux feuillets de garde contiennent des fragments de table d'un missel.

Parchemin; 187 feuillets; 0^m,225 × 0^m,15; XIV^e et XV^e siècle les f. 1-111; deux colonnes; quelques jolies capitales; initiales rouges et bleues. F. 89^v, on lit cette note à moitié effacée: *Die iouis post festum Pentecostes R. de Careiriis duxit librum ad finem suum.* Sur le second feuillet de garde, on lit: *Vallis sancti Martini canonicorum regularium.* L'estampille de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 1 et f. 185^v. Reliure ancienne restaurée, veau brun estampé avec les titres des divers traités sous corne et entourés d'un cadre en cuivre.

1456. (3829). — S. BERNARDUS. Sermones super cantica cantiorum.

Ce sont les sermons I-XLIII publiés *PL.*, t. CLXXXIII, col. 785-995.

Parchemin; 118 feuillets, plus quatre de garde; 0^m,28 × 0^m,19; XIV^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et bleues. F. 1, il y a la note: *Bethleem*, et f. 118^v: *Liber hic pertinet monasterio sancte Marie in Bethleem prope Lovanium et contulit eidem monasterio spectabilis et honorabilis civis oppidi Brugensis Petrus Adournes* (1). Demi-reliure moderne; dos en maroquin rouge.

1457. (21847). — S. BERNARDUS. Opera.

1. (F. 1^v). Index contentorum.

2. (F. 2-19^v). Liber de consideratione beati BERNARDI abbatis ad Eugenium papam. = *PL.*, t. CLXXXII, col. 727.

3. (F. 20-21). Epistola BERNARDI abbatis de honestate vite. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 1167.

4. (F. 21-26^v). Liber noviciorum et regula de disciplina. = *Ibid.*, col. 1189 sqq.

5. (F. 26^v-44). Liber soliloquiorum beati AUGUSTINI. = *PL.*, t. XL, col. 863 sqq.

(1) Sur le célèbre Pierre Adornes, fondateur de l'église du Saint-Sépulcre à Bruges, voir *Biographie nationale*, t. I, p. 73.

6. (F. 44-53^v). Epistola beati IOHANNIS CRISOSTOMI ad Amantium lapsus de reparatione eiusdem. = *PG.*, t. XLVII, col. 277 sqq.

7. (F. 53^v-68^v). EFFREM. De compunctione cordis (1).

8. (F. 68^v). [Oratio BEDAE sanaturi aegrum].

9. (F. 68^v-76^v). [SENECA. Apophthegmata]. *Inc.* Alienum est omne quod optando evenit. *Des. mutil.* alienarum vero non curiosus perscrutator nec ...

Parchemin; 76 feuillets; 0^m,252 × 0^m,171; XIV^e siècle; les feuillets 2-19 sont à deux colonnes. F. 1 et f. 68^v, il y a la note : *Liber Arnoldi de Gheel tsertogenbosch*. F. 1^r, on trouve la signature : *Plouchet*. Plus tard, le volume a appartenu à l'abbaye de Parc, car au revers de la couverture il y a la cote : *I. theca III*, et sur les deux plats les armoiries de l'abbaye ont été grattées. Il y a aussi sur le premier plat intérieur l'ex-libris : *Ex bibliotheca P. P. C. Lammens*. Le volume a été acquis par la Bibliothèque royale en 1863, à la vente des livres de van Alstein, à Gand, pour fr. 12,10. Reliure veau; au dos, le titre doré : *Tract. Moral. divers. vol. VI*.

1458. (418). — S. BERNARDUS. Epistolae.

1. (F. 1-4). Tabula epistolarum beati Bernardi primi Clarevallis abbatis.

2. (F. 4^v). Miraculum de prima epistola. = *PL.*, t. CLXXXV, col. 255-56.

3. (F. 5-167^v). Epistola beati BERNARDI. — C'est la série des lettres publiée *PL.*, t. CLXXXIII, n. 1 à 307, avec omission des lettres nn. 11, 147, 149 et 229; la lettre n. 84 de *PL.* porte dans le manuscrit le n. 252. Après le n. 307 de l'édition de Migne, suivent les lettres nn. 230, 147, 311, 336.

4. (F. 168-170). Epistola domni WILHELMI Signiacensis ad fratres Carthusienses. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 307 sqq.

5. (F. 170-173). Epistola B. BERNARDI que intitulatur ad Carthusienses et Guidoni priori. = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 108-115.

Parchemin; 173 feuillets; 0^m,33 × 0^m,23; XV^e siècle (1449), car f. 173, il y a cette note : *Per manus fratris Wilhelmi de Gestel anno M^o cccc^o xlii^o. orate pro eo*; deux colonnes; initiales rouges et bleues. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 1 et f. 173^v. Reliure veau brun estampé.

1459. (11776). — S. BERNARDUS. Sermones.

Sermones beati Bernardi estivales tum de tempore tum de sanctis. = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 273 sqq.

Papier, au filigrane de la tête de bœuf surmontée de la croix; 195 feuillets, plus six de garde; 0^m,21 × 0^m,135; XV^e siècle. Au verso du premier feuillet de garde, il y a la note : *Pertinet domno Florentio Arnoldi presbitero*, et plus bas, la signature de *J. F. Van de Velde 1786*. Reliure ancienne, ais de bois recouverts de veau brun estampé; restes de fermoirs en cuivre.

(1) *S. Ephrem opera omnia*, Romae, 1732, t. I, p. LXXXI, n. 1

1460. (1177). — S. BERNARDUS. Sermones.

Sermones beati BERNARDI abbatis Clarevallensis de tempore et de sanctis. = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 273 sqq.

Papier, au filigrane de la tête de bœuf surmontée de la croix; 164 feuillets, plus six de garde; 0^m,21 × 0^m,135; XV^e siècle (1451), car f. 164^v, on lit : *Scripti per manus Flo[rentii] Ar[noldi] presbiteri, finiti anno Domini M^o cccc^o li^o in crastino beatorum martirum Gereonis et Victoris et sociorum eorum.* Sur le troisième feuillet de garde, on lit : *Pertinet domno Florencio Arnoldi presbitero*, et en dessous : *J. F. Vandevelde, 1786.* Reliure veau brun estampé.

1461. (480-85). — S. BERNARDUS. Epistolae.

1. (F. 1-114). [S. BERNARDI epistolae]. — Ce sont les lettres 2-10, 12-83, 85-228, 230-254, 84, 255-307, ensuite f. 113, ad Haymericum cancellarium, ad tres episcopos curie romane, ad abbatem Clunia-censem, puis les lettres 310, 398. = *PL.*, t. CLXXXII.

2. (F. 114-115^v). [S. BERNARDI sermones de S. Victore]. = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 371-76.

3. (F. 115^v-117^v). Epistola domni WILHELMI IGNIACENSIS ad fratres Cartusienses. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 307 sqq.

4. (F. 117^v-118^v). Epistola domni OTHONIS monachi Cartuariensis ad Adam, fratrem suum novicium Igniacensem (1).

5. (F. 118^v-122). Sermo PETRI RAVENNE in nativitate sancti Iohannis Baptiste. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 991-1002.

6. (F. 122-122^v). [Moralis interpretatio evangelii *Exiit edictum a Cesare Augusto*].

7. (F. 123-123^v). In Epiphania Domini.

8. (F. 124-126^v). Capitula in epistolis sancti Bernardi.

9. (F. 127). Miraculum epistole prime sancti Bernardi. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 255-56.

10. (F. 127-128). Speculum beati BERNARDI. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 1175-78.

Parchemin; 128 feuillets; 0^m,325 × 0^m,22; XV^e siècle (1460); deux colonnes; initiales rouges et bleues; signatures *A_r-Q_r*. Entre les f. 23 et 24 est inséré un fragment de parchemin, avec la note suivante : *Anno Domini millesimo quadringesimo lx venerabilis domnus Iohannes Repelhorst alias dictus de Clevis canonicus et cantor ecclesie collegiate beati Petri Auderlectensis prope Bruzellam in Brabancia dedit donatione inter vivos monasterio rubeae vallis hunc librum et alios quam plures ad perpetuam sui memoriam et ut fratres fideliter orarent pro eo.* L'estampille rouge, *R. F.*, de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 1 et f. 127^v. Reliure ancienne, ais de bois recouverts de veau brun estampé. Restes de fermoirs.

1462. (807-10). — S. BERNARDUS. Opera.

La table des matières se trouve sur le second feuillet de garde.

(1) Cf. supra, pp. 355, n. 1450 (II. 1064) et 358, n. 1453 (II. 2556).

1. (F. 1-117). Sermones beati BERNARDI abbatis super cantica canticorum Salomonis. = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 785-1198.

2. (F. 118-144^v). Sermones sancti BERNARDI super *Missus est*. = *Ibid.*, col. 55 sqq.

Les feuillets 145-146^v sont blancs.

3. (F. 147-169^v). Expositio beati BERNARDI super passione Domini (1).

4. (F. 169^v-170^v). De Maria Magdalena. *Inc.* Maria Magdalena feruentius amans stabat ad monumentum foris plorans.

5. (F. 171-186^v). Sermo de passione Domini nostri Ihesu Christi. *Inc.* Circa hystoriam passionis tria generaliter considerare debemus.

6. (F. 187-193^v). Sermo pulcherrimus de passione Domini. *Inc.* Mihi absit gloriari nisi in cruce Domini nostri Ihesu Christi.

7. (F. 193^v-194). Sermo fratris MYCHAEL DE MASSA (2) de passione Domini.

Les deux feuillets de garde du commencement et de la fin du volume contiennent des fragments d'un traité de philosophie.

Papier, au filigrane de l'écu de France; 194 feuillets, plus trois de garde; 0^m,29 × 0^m,205; XV^e siècle (1465-1475), car f. 144^v, on lit: *Per me Gerardum Gelrie in Aerschot anno Domini MCCCCLV 3^o decembris*, et f. 117: *Expliciunt sermones beati Bernardi abbatis doctoris melliflui, finiti per me fratrem Gerardum Gelrie in monasterio sancti Martini apud (3) Lovanium in aquilonari parte eiusdem monasterii in tercia cella (4) dormitorii XVIII die aprilis, statim post quintam horam infra primum et secundum signum primarum anno Domini 1475. Oretis pro anima eius (5)*. Deux colonnes. Sur le second feuillet de garde, il y a cette note de provenance: *Pertinet ad monasterium canonicorum regularium vallis Sancti Martini in lovanio (6) ex parte fratris Gerardi Geldrie presbiteri professi ibidem*. L'estampille rouge. *R. F.*, de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 1 et f. 194. Reliure ancienne, veau brun raciné et estampé, très jolis fers (7), sur le premier plat une étiquette avec la cote *A XVIII*.

1463. (595). — S. BERNARDUS. Sermones super cantica canticorum.

1. (F. 1-1^v). Table. Capitula sermonum beati BERNARDI super cantica canticorum.

(1) Un correcteur a ajouté au-dessus de la ligne cette note: *Vel Bernardini de Senis*. En effet, ce traité se trouve dans I. DE LA HAYE, *S. Bernardini Senensis opera*, Lugduni, 1650, t. I, p. 263 sqq.

(2) Sur Michel de Massa, cf. OSSINGER, *Bibl. August.*, 1768, p. 567-68.

(3) Dans la marge, on a ajouté cette note: *Istud apud est intelligendum infra muros exteriores*.

(4) En marge: *Scilicet in littera Q*.

(5) Un lecteur a ajouté cette note: *Et requiescat iste bonus pater in sancta pace, qui erat exemplum omnium, in omnibus observantialis precipue in observantia silentii, in tantum quod eciam omnino necessaria plus signis et nutibus indicavit ac petivit quam verbis*.

(6) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 212.

(7) Cette reliure est décrite dans [J. WEALE], *Bookbindings*, p. 174, n. 344.

2. (F. 2-2^v). Prologus.

3. (F. 2^v-177). Sermones beati BERNARDI super cantica anticorum. = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 785-1198.

Parchemin; 177 feuillets; 0^m,31 × 0^m,21; XV^e siècle; deux colonnes, initiales rouges et bleues, chiffre courant des sermons en rouge. F. 2 et 177^v, l'estampille rouge. *R. F.*, de la Bibliothèque nationale de Paris. Demi-reliure, dos en maroquin fauve, avec le titre doré : *Beati Bernardi Sermones super cantica anticorum, XV saec.*, plus bas le monogramme couronné de Léopold I^{er}.

1464. (1176). — S. BERNARDUS. Sermones de tempore et de sanctis.

1. (F. 1-2^v, 156-157^v). Fragments d'un ordinaire.

2. (F. 3-154). Sermones beati BERNARDI de tempore hyemali. — A savoir les sermons. = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 35-56, 87-126; puis (f. 41-42^v) un sermon *de nativitate Domini* qui commence : *Puer natus est nobis*, ensuite les sermons col. 126-162 (1), 359-371; puis f. 69^v-75, le sermon de GUERRIC : *Adorna thalamum tuum Syon et suscipe regem Christum* = *PL.*, t. CLXXXV, col. 79 sqq; puis *PL.*, t. CLXXXIII, col. 161-174, 181-183, 173-181, 185, 254, 375-398, 253-74.

Papier et parchemin; 157 feuillets; 0^m,285 × 0^m,195; XV^e siècle, deux colonnes. F. 2, on lit : *Pro conventu sororum sancte Clare in Bruzello ex dono confessoris f. Henrici de Beringhen*, plus bas : *Frater Henricus Lupi. S. Franciscus fundator noster 1666*. Demi-reliure moderne; au dos, le titre doré : *Beati Bernardi. Sermones de tempore et de sanctis, XV saec.*

1465. (1373-81). — S. BERNARDUS. Opera.

1. (F. 1). Metra pulcherrima de sancto et mellifluo doctore Bernardo. *Inc.* Mira loquor, sed digna fide, Bernarde, quid hoc est?

2. (F. 2-21). Omelia beati BERNARDI abbatis super evangelio *Missus est Gabriel angelus*. = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 55 sqq.

3. (F. 22-40^v). Liber beati BERNARDI abbatis de praecepto et dispensatione. = *PL.*, t. CLXXXII, col. 859 sqq.

4. (F. 40^v-56^v). Liber sancti BERNARDI abbatis de gratia et libero arbitrio. = *Ibid.* col. 1001 sqq.

5. (F. 56^v-71). Liber beati BERNARDI abbatis de diligendo Deo. = *Ibid.*, col. 973 sqq.

6. (F. 72-79). Liber beati BERNARDI (2) abbatis de amore. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 367-80.

7. (F. 79-79^v). Soliloquium beati BERNARDI de amore Dei. = *Ibid.*, col. 365-67.

(1) L'ordre des sermons I et II, col. 131-137 est interverti.

(2) Au dessus de la ligne, on a ajouté : *Vel Guilhelmi abbatis sancti Theodorici*.

8. (F. 80-98). Liber beati BERNARDI abbatis de XII gradibus humilitatis. = *PL.*, t. CLXXXII, col. 941-71.

9. (F. 98-98^v). Retractatio beati BERNARDI abbatis in libro praeecedenti. = *Ibid.*, col. 939.

10. (F. 98^v-109^v). Liber beati BERNARDI abbatis ad milites templi de laude nove milicie. = *PL.*, t. CLXXXII, col. 921 sqq.

11. (F. 109^v-138). Epistola beati BERNARDI abbatis ad fratres de Monte Dei de vita solitaria. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 298 sqq.

Parchemin; 138 feuillets; 0^m,28 × 0^m,185; XV^e siècle; initiales rouges et bleues, signatures *a-i*; F. 1, on lit la note : *Est liber hic sancti Martini Lovaniensis, ex parte confratris nostri f. Henrici Francx quem sibi comparaverat quinque renensibus*; f. 65 : *Est liber hic sancti Martini lovaniensis*. L'estampille rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris, se trouve f. 2 et f. 138^v. Reliure ancienne restaurée, veau brun estampé; sous corne, une étiquette encadrée de cuivre avec les titres des divers traités contenus dans ce volume.

1466. (1458-59). — S. BERNARDUS, PETRUS BLESENSIS. Epistolae.

1. (F. 1-2). Index des lettres de S. Bernard.

Les feuillets 2^v-3 sont blancs.

2. (F. 3^v). Miraculum de prima epistola [sancti Bernardi]. = *PL.*, t. CLXXXV, col. 255-56.

3. (F. 4-177). Insigne opus epistolarum eximie doctrine viri beati Bernardi primi Clarevallensis abbatis in inclito Bruxellensium ducatus brabantiae oppido impressum ac anno Domini M.CCCC.lxxx. tercio ydus aprilis in festo sancti Leonis primi pape feliciter terminatum (1).

De cet incunable les feuillets 4-13, 23, 48, 49, 69-78, 159-168 sont manuscrits.

Les feuillets 177^v-178^v sont blancs.

4. (F. 179-247^v). [PETRUS BLESENSIS. Epistolae]. — A savoir *PL.*, t. CCVII, les lettres nn. 1-13, 159, 32, 164, 15, 17, 21, 22, 24, 136, 173, 162, 26, 156, 163, 153, 28, 30, 33, 154, 34-38, 158, 39, 130, 40-46, 66, 50-55, 128, 56, 58-62, 65-68, 238, 69-75. *Des. mutil.* de quorum manibus populi perditio

Papier, divers filigranes, la licorne, la main, l'ancre; 247 feuillets, dont le dernier est à moitié lacéré; 0^m,285 × 0^m,21; XV^e siècle, les ff. 1-177 sont à deux colonnes. F. 4, il y a cette note : *Bibliot. Vilvord[ensis] ordinis Praedicatorum*, et dans la première letrine : *Frater Martinus Vrints*. Demi-reliure moderne, dos en basane rouge.

1467. (1520-42). — S. BERNARDUS. Opera.

1. (F. 1^v). Contenta in hoc libro.

2. (F. 2-12^v). Quedam decretalis copulata, importata, lecta et

(1) C'est le volume signalé par M. F. A. G. CAMPBELL, *Annales de la typographie néerlandaise*, La Haye, 1874, p. 70-71, n. 268.

pronuntiata per reverendum magistrum domnum Redorphum de Berenghen decretorum doctorem eximium (1).

3. (F. 13-16). Disputatio inter spiritum Guidonis et priorem (2).

4. (F. 17-33). Quatuor novissima (3).

5. (F. 33-48). [HENRICUS DE COESVELD]. Tractatus de votis substantialibus monastice vite (4).

6. (F. 48-48^v). Terribile prodigium multis inauditum. *Inc.* In toto regno Catholonie a die secunda ante carnisprivium usque ad feriam quartam infra octavas pasche.

7. (F. 48^v). Epistola multum amorosa. *Inc.* Quidam religiosus scire desiderabat quomodo magis expediretur ad fruendum Deo.

8. (F. 48^v-49). [S. BONAVENTURA]. Alphabetum parvum monachi in scola Dei (5).

9. (F. 49-55). Doctrinale magistri IOHANNIS DE ALMANIA sacre theologie professoris eximii ordinis fratrum heremitarum sancti Augustini (6).

10. (F. 55-73). Soliloquium anime. *Inc.* Consolationis gratia aliquas sententias devotas in unum coacervari libellum.

11. (F. 73-74). Admonitio utilis ad religiosos. *Inc.* Quoniam omnes creature serviunt suo Creatori.

12. (F. 74-76^v). Tractatus de quatuor gradibus spiritualis exercicii qui dicitur scala claustralium. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 475-84.

13. (F. 76^v-81^v). Itinerarius mentis ad seipsum sive parvum bonum BONAVENTURAE (7).

14. (F. 81^v-87). Libellus HUGONIS DE SANCTO VICTORE de conscientia. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 507 sqq.

15. (F. 87-104^v). Instructio pie vivendi (8).

16. (F. 104^v-108^v). Liber et regula sancti BERNARDI abbatis de disciplina noviciorum. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 1189-98.

17. (F. 108^v-109). Ammonitio regularis discipline. — Extraits.

18. (F. 109-109^v). Speculum sancti BERNARDI. — Extrait.

19. (F. 109^v). De humilitate. BERNARDUS. — Extrait.

(1) Sur Raoul de Beringhen, voir FOPPENS, *Bibl. belg.*, p. 1071.

(2) Au sujet de cette pièce, voir HAURÉAU, *Notices et extraits des manuscrits de la Bibliothèque nationale de Paris*, t. II, p. 379 sqq.

(3) Au sujet des nombreuses éditions de ce traité, voir HAIN, *Repertorium bibliographicum*, t. II, p. 197-98, nn. 5691-704.

(4) Cf. PETREIUS, *Bibl. cartusiana*, p. 126-27.

(5) *Sancti Bonaventurae opera omnia*, Romae, 1596, t. VII, p. 564-65.

(6) Cf. FABRICIUS-MANSI, *Bibl. med. et inf. lat.*, t. IV, p. 47.

(7) Cf. *Sancti Bonaventurae opera*, Romae, 1596, t. VII, p. 134-45.

(8) Sous ce titre il y a la pièce *Audi filia et vide et inclina*. Cf. *Initia librorum patrum latinorum*, p. 14.

20. (F. 110-155^v). Horologium eterne sapientie (1).
 21. (F. 155^v-162^v). Instructio religiosa et perfecta. *Inc.* Ascendam in palmam et apprehendam fructus eius.
 22. (F. 162^v-182). Stimulus amoris BONAVENTURE (2).
 23. (F. 182^v-190^v). Liber sancti THOME DE AQUINO de puritate conscientie et de modo confitendi (3).
 24. (F. 190^v-208^v). Epistola beati BERNARDI abbatis ad fratres carthusienses de Monte Dei. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 298.
 25. (F. 208^v-216^v). Liber beati AUGUSTINI de vera et falsa penitencia. = *PL.*, t. XL, col. 1113 sqq.
 26. (F. 216^v-218^v). Sermo sancti AUGUSTINI episcopi de periurio. = *Ibid.*, t. XXXVIII, col. 972.

Papier, aux filigranes de la lettre *P*, de l'écu de France et de la tête de bœuf surmontée d'une croix; 218 feuillets; 0^m,29 × 0^m,21; XV^e siècle; deux colonnes, sauf les feuillets 1-48, ancienne pagination à l'encre rouge 1-cccvi, signatures *A-S*. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris, au chiffre *R.F.*, se trouve f. 1 et f. 218^v. Reliure ancienne restaurée, ais de bois recouverts de veau brun estampé; au dos, en maroquin brun, les titres dorés des différents traités; en dessous, le chiffre couronné de Léopold I^{er}.

- 1468.** (2196-215). — S. BERNARDUS. Opera.
1. (F. 1). Diverses sentences.
 2. (F. 2^v). Table des matières.
 3. (F. 3-9). [*S. BONAVENTURA*]. Devota meditacio vel contemplatio spiritualis anime ad excitandum amorem Dei in se facta ad comparationem nature Phylomene (4).
 4. (F. 9-10). Quomodo temptatio de predestinatione premi debeat.
 5. (F. 10-17^v). Summa HUGONIS. — Extraits.
 6. (F. 17^v-22^v). Contemplatio beati BERNARDI de diversis auctoritatibus. — Extraits.
 7. (F. 22^v-23^v). De vera religione et obedientia.
 8. (F. 23^v-25^v). De miseria huius vite.
 9. (F. 25^v-40^v). Oratio devotissima ad Dominum; orationes de beata Virgine, oratio composita per beatum BERNARDUM de virginitate, orationes sancti AUGUSTINI.
 10. (F. 40^v-60^v). Alie devote orationes.
 11. (F. 61-72^v). [*HENRICUS DE HASSIA*]. Speculum anime (5).
 12. (F. 72^v-88^v). HUGO. De arra anime. = *PL.*, t. CLXXVI, col. 591 sqq.

(1) Cf. supra, p. 174, note 1.

(2) *Sancti Bonaventurae opera*, Romae, 1596, t. VII, p. 207 sqq.

(3) QUÉTIF-ECHARD, *Scriptores ordinis praedicatorum*, t. I, p. 341, n. 64.

(4) *Sancti Bonaventurae opera omnia*, t. VI, p. 445-48.

(5) Cf., pour les éditions de ce traité, HAIN, *Repert. bibliogr.*, t. III, nn. 8401, 8402,

13. (F. 88^v-91). Formula vite honeste sancti BERNARDI. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 1167 sqq.

14. (F. 91-103^v). [S. BERNARDUS]. Liber noviciorum et regula de disciplina. = *Ibid.*, col. 1189 sqq.

15. (F. 103^v-109). Collatio quedam exhortans quemlibet peccatorum ad celeriter pro peccatis penitentiam peragendam. *Inc.* Tollite iugum meum super vos. Hec sunt verba Salvatoris qui nec mortem peccatoris desiderat.

16. (F. 109-113^v). [Quaedam exhortatio pro celebrantibus]. *Inc.* Quidam mecum conferens de statu cuiusdam mei aliquando socii me interrogavit.

17. (F. 113^v-116). [Quoddam exercitium spirituale]. *Inc.* Volens purgari a peccatis, gratiam impetrare et indulgentiam consequi.

18. (F. 116^v-120). Sermo de siti Domini nostri Ihesu Christi. *Inc.* Sicio. Iohannis 19. Quaedam vero locutus est Dominus in cruce specialiter ad patrem.

19. (F. 120-122). [Sermo de compassione beate Marie Virginis]. *Inc.* Stabat iuxta crucem Ihesu mater eius. ... Inter omnia que pie meditantibus. ... solent occurrere.

20. (F. 122-124^v). Sermo de passione Domini nostri Ihesu Christi. *Inc.* Nisi granum frumenti cadens in terram mortuum fuerit. ... karissimi, sapientia docente.

21. (F. 124^v-149). [S. ANSELMUS]. Humilis et vera confessio ac devota meditatio et oratio penitentis psalmum quinquagesimum exponendo. = *PL.*, t. CLVIII, col. 821.

22. (F. 149-160^v). Stella clericorum. *Inc.* Quasi stella matutina in medio nebule et peccatorum.

23. (F. 160^v-166^v). BERNARDUS. De 4^{or} gradibus scale claustralis. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 475-84.

24. (F. 166^v-171^v). Tractatus magistri HUGONIS DE SANCTO VICTORE de laude caritatis. = *PL.*, t. CLXXVI, col. 969.

25. (F. 172). [Brevis expositio in orationem dominicam].

26. (F. 173-183^v). Tractatulus super materiam celebrationis misse (1).

27. (F. 183^v-187^v). [GERSON]. Tractatulus per modum conclusionum super resolutionem materie presentis scismatis tollendi (2).

28. (F. 187^v-192^v). [De horis canonicis]. *Inc.* Septies in die laudem dixi tibi etc. Quamvis Deus semper a nobis sit laudandus.

29. (F. 192^v-193). [De S. Augustino].

(1) Sous ce titre vague, il y a le traité *De pollutione diurna* de Jean Gerson. Cf. ELLIES DU PÎX, *Iohannis Gersonii opera*, t. III, p. 335 sqq.

(2) Voir *ibid.*, t. II, p. 3 sqq.

30. (F. 193-195). [Instructio ad neomystas]. *Inc.* Sacerdotes de novo celebraturi multa indigent circumspectione.

31. (F. 195-197). BONAVENTURA. De modo vivendi qualiter homo possit amplius in bono proficere (1).

32. (F. 197^v-201). Sermo de modo vivendi. *Inc.* Quicumque es qui per fidem, spem et caritatem vis ad salutem pertingere.

33. (F. 201-202). Quod homo fervere debet ad opera Dei.

34. (F. 202-204). Quomodo contemplativus non iudicat alios (2).

35. (F. 204-205^v). Sentences diverses.

Parchemin; 205 feuillets; 0^m,21 × 0^m,15; XV^e siècle. Le f. 3 est très élégamment encadré; initiales rouges et bleues. F. 2, on lit cette note : *Liber monasterii canoniorum regularium vallis sancti Martini in locano collatus eidem a venerabili domno et magistro magistro Karolo Viruli . Orate pro eo.* L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 2 et f. 205^v. Reliure ancienne très soignée, veau brun estampé de cinq fers différents (3). Au verso de la couverture, il y a l'ancienne étiquette placée sous corne : *Rigmus spiritualis de philomena cum diversis devotis opusculis*, et la cote C.XXVI.

1469. (3075-83). — S. BERNARDUS. Opera.

1. (F. 1-6^v). Sentences extraites des œuvres des saints Pères, en latin et en flamand.

2. (F. 6^v-14^v). Formula honeste vite beati BERNARDI abbatis. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 1167 sqq.

3. (F. 15-27). Speculum peccatorum beati IHERONIMI presbiteri. = *PL.*, t. XL, col. 983 sqq.

4. (F. 27-28^v). Status et vita cuiuslibet religiosi proficere volentis. — Extraits.

5. (F. 28^v-29^v). HUGO DE SANCTO VICTORE super regulam beati Augustini. — Court extrait.

6. (F. 30-89^v). Speculum peccatricis anime. *Inc.* Vanitas vanitatum et omnia vanitas.... quoniam, ut ait egregius doctor beatus Gregorius.

7. (F. 90-98^v). S. AUGUSTIN. Extraits. — A la fin une fable : *Due capre venerunt ut transirent artum pontem.*

8. (F. 99-104^v). Hymnes. *Salve virgo mater Dei*, puis *RH.*, n. 7040. *Ave pulcherrima regina ; Ave tu virgo singularis..*

9. (F. 104^v-105). Vers flamands.

Inc. Ic sie myns levens eynde
En sterven dat moet syn.

Des. Dan ondert cruys ons heeren
Die ic minne nacht ende dach.

(1) *Sancti Bonaventurae opera*, t. VII, pp. 206 et 209.

(2) *Ibid.*, p. 237 sqq.

(3) Voir [J. WEALE], *Bookbindings*, p. 172, n. 334.

10. (F. 105^v). Fable. *Philomela et cuculus*.
 11. (F. 105^v-106^v). Notes diverses.
 12. (F. 106^v-109). Préparation à la communion.
 13. (F. 109^v-114). Prières à la Vierge. = *RH.*, n. 7021.
 14. (F. 115-115^v). Vers mnémotechniques sur les saints du calendrier.

Inc. Cisio ianus ephi sibi vendicat oc ponti maran.

Des. Sanctus ab inde Thomas mon nat stef io pu thome sil.

15. (F. 116-116^v). Vers flamands sur l'humilité.

Inc. Een vraghe es wyen God meest mint

Den ghenen die hi ootmoedich vint.

Des. Wie syn die best vrede vercrighen

Die connen sien, hooren ende swighen.

16. (F. 117-117^v). *Cur Beda dictus sit venerabilis*. — Sentences des Pères.

17. (F. 118-124). Formula honeste vite beati BERNARDI abbatis Clarevallensis. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 1167 sqq.

18. (F. 124-128^v). Breve epitaphium monachorum ostendens rectam viam ad regnum celorum editum a fratre THOMA KEMPIS (1).

19. (F. 128^v-130^v). Sermo consolatorius editus a fratre THOMA KEMPIS (2).

20. (F. 130^v-138^v). Sentences et extraits divers.

21. (F. 139-140). De paciencia rigmus, en flamand.

Inc. Ach heere God hoe mach syn

Dat wy ummers yet willen syn.

Des. Want die rechte wech te hemelryc

Dat is liden om God verduldelyck.

22. (F. 140-144). De monastica vita. — Ad inveniendum pascha. — De XV signis ante diem iudicii, et autres extraits.

23. (F. 144^v-152^v). [De passione Christi]. *Inc.* Ad hoc quod passionem Domini nostri cum interna ac perceptibili compassione consideremus.

24. (F. 152^v-155^v). Quatuor consideranda a quolibet sacerdote missam celebrare volente devote. *Inc.* In omni sacrificio secundum Augustinum sunt quatuor pensanda.

25. (F. 155^v-161). De venerabili sacramento. — Extraits des Pères.

26. (F. 161-216^v). Extraits des Pères.

(1) Voir H. SOMMALIUS, *Ven. viri Thomae Malteoli a Kempis ... opera omnia*, Antverpiae, 1615, p. 745-49.

(2) *Ibid.*, p. 772-74.

Papier et parchemin; 216 feuillets; 0^m,14 × 0^m,67; XV^e siècle. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 1 et f. 216^v. Demi-reliure moderne, dos en maroquin rouge; titre doré, au dos : *Excerpta e dictis variorum SS. Patrum. XV siècle*; plus bas, le monogramme couronné de Léopold I^{er}.

1470. (21865). — S. BERNARDUS. Opera.

1. (F. 1^v). Index contentorum.
2. (F. 2-4). Prophetie Sibille tyburtine (1).
3. (F. 4-4^v). De signis quindecim dierum praecedentium iudicii diem ex HIERONYMO.
4. (F. 4^v-5^v). Excerpta ultime partis libri beati METHODII martiris (2).
5. (F. 5^v-7^v). Vita Antichristi ad Karolum magnum ab ALCUINO edita. = *PL.*, t. CI, col. 1291 (3).
6. (F. 7^v-8). Extrait de S. AUGUSTIN.
7. (F. 8-11). [Regulae theologiae].
8. (F. 11-34). [IOHANNES DE RUPELLA. De articulis fidei] (4).
9. (F. 34^v-56^v). [S. BERNARDUS. Homelieae super *Missus est*]. = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 55 sqq.
10. (F. 57-70^v). [SENECA. Excerpta ex variis operibus]. — A savoir extraits des lettres à Lucilius.
11. (F. 71-73^v). De libro SENECE ad Neronem de clemencia.
12. (F. 73). SENECA in libro de beneficiis.
13. (F. 73^v). BERNARDUS III^o libro ad Eugenium papam. — Autres courts extraits, entre autres *Epitaphium Seneca*.
14. (F. 74-75). Epistole PAULI ad Senecam et SENECE ad Paulum (5).
15. (F. 75^v-77^v). SENECA. De remediis fortuitorum.
16. (F. 77^v-80^v). Excerpta de libro SENECE de beneficiis.
17. (F. 81-81^v). Epistola EUSEBII de memoria mortis. *Inc.* Ortamur vos, fratres carissimi, ut paratos vos inveniat.
18. (F. 82-86^v). Liber de paupertate compositus sub dialogo. *Inc.* Nihil habenti bona voluntas sufficiat ad gratiam.
19. (F. 87-92). [Tractatus de passionibus et fortuna]. *Inc.* Ex omnibus que vel michi lecta placuerunt.

(1) Sur cette pièce et ses éditions voir le récent travail de M. E. SACKUR, *Sibyllische Texte und Forschungen*, Leipzig, 1898, p. 177-87.

(2) Cf. *ibid.*, p. 80-96, n. 11-14; mais, dans ce manuscrit, le texte est fortement résumé.

(3) Ce texte a été l'objet de récentes études de la part de M. E. SACKUR, *op. cit.*, p. 98 sqq. Dans ce manuscrit, la pièce a le début signalé par SACKUR, *op. cit.*, p. 105, note a.

(4) Cf. FABRICIUS-MANSI, *Bibl. lat. med. et inf. aet.*, t. IV, p. 216.

(5) Cf. supra, pp. 29, 153.

20. (F. 93-109^v). De colloquio Simonis ad Iesum. BERNARDUS. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 435 sqq.

21. (F. 110-123). [De passione Christi]. *Inc.* Ultima Christi verba que cruce affixus (1).

Papier, aux filigranes du cerf, de la fleur de lis, de l'arc et de la flèche, du cygne, de la lettre *P* surmontée d'une croix; de-ci de-là quelques feuillets en parchemin; 123 feuillets; 0^m,277 × 0^m,255; XV^e siècle; les feuillets 2-34, 57-80 sont à deux colonnes. Le manuscrit provient de l'abbaye de Parc, car au verso de la couverture, il y a la cote de cette bibliothèque : *I. theca III*, et les armoiries grattées de cette abbaye se trouvent sur les deux plats. Reliure veau; au dos, le titre doré : *Tractat. morales diversi, vol. I*; tranche rouge (2).

1471. (II. 2207). — S. BERNARDUS. Opera.

1. (F. 2). Index.

2. (F. 2). Vers sur S. Bernard.

3. (F. 3-4). Tabula rubricarum cum initiis sermonum beati Bernardi abbatis in hoc volumine contentorum.

Les feuillets 4^v-5^v) sont blancs.

4. (F. 6-218). Sermones beati BERNARDI abbatis de tempore et sanctis. = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 35-56, 87-109, 343-49, 109-27; t. CLXXXV, col. 29-32 (sermo GUERRICI), t. CLXXXIII, col. 127-63, 359-72, 163-81, 183-270, 375-82, 271-74, 383-98, 273-316, 665-66, 316-34, 353-59, 397-416, 337-44, 415-30; t. CLXXXIV, col. 1001-10; t. CLXXXIII, col. 634-37, 447-86; t. CLXXXII, col. 578-80; t. CLXXXIII, col. 513-18, 499-514, 517-35, 644-47, 639-44, 637-39, 609-12, 571-73.

5. (F. 219-222). Epistola beati BERNARDI ad fratres Cartusienses. = *PL.*, t. CLXXXII, col. 108-16, ep. XI et XII.

6. (F. 222-225). Epistola sancti BERNARDI abbatis ad Robertum nepotem suum. = *Ibid.*, col. 67-79.

7. (F. 225-226). Item epistola ad Eugenium papam. = *Ibid.*, col. 427-31.

8. (F. 226^v). Quedam visio sancti Augustini.

9. (F. 227-227^v). Visio cuiusdam monachi in extremis. *Inc.* Quidam cenobita clarevallensis in vesperé vite positus occasus facturus erat cum vesperé vite.

Parchemin; 227 feuillets; 0^m,29 × 0^m,21; XV^e siècle; deux colonnes; quelques belles initiales rouges et bleues. F. 1^r, une belle miniature représente S. Bernard. Ce volume, à en juger par la reliure, semble provenir de Tongerlo. F. 1, il y a la cote *Phillipps MS. 416A*. Ce volume a été acquis à Londres en 1898, à une vente

(1) Cf. supra, p. 345, n. 1436 (596-600).

(2) Au sujet de ce volume, cf. P. THOMAS, *Catalogue des manuscrits de classiques latins de la Bibliothèque royale de Bruxelles*, p. 102-3.

chez Sotheby, pour fr. 437,50 (1). Reliure du XVII^e siècle, veau brun estampé sur ais de bois, restes de fermoirs et de coins en cuivre; au dos, le titre doré : *S. Bernardi sermones et epistolae*.

1472. (II. 2510). — S. BERNARDUS. Meditationes.

1. (F. 2-23^v). Speculum anime venerabilis magistri domni HENRICI DE ASSIA sacre pagine doctoris eximii ac professoris Parisiis compilati (2).

Les feuillets 24 et 25 sont blancs.

2. (F. 26-53^v). Tractatus de III instinctibus anime editus a venerabili doctore magistro HENRICO DE ASSIA (3).

3. (F. 53^v-83^v). Tractatus ALBERTI de fine religiose perfectionis. *Inc.* Cogitanti michi aliquid ultimate in quantum possibile est.

4. (F. 83^v-117^v). Meditationes beati BERNARDI abbatis. = *PL*, t. CLXXXIII, col. 485 sqq.

5. (F. 118-147). Devotissimus tractatus de missa sive de sacramento altaris (4).

6. (F. 147-158). Tractatus a BONAVENTURA compositus de misterio crucis et redemptione nostra valde utilis. *Inc.* Ut aliquatenus possis comprehendere cum omnibus sanctis.

7. (F. 158-171^v). Speculum peccatoris editum a beato AUGUSTINO unicuique utilissimum. = *PL*, t. XL, col. 983 sqq.

Papier, au filigrane de la tête de bœuf; 0^m,145 × 0^m,105; XV^e siècle. F. 1, il y a cette note : *Frater Iohannes Urentisferri Cartusienensis scripsit. De domo Vallisbenedictionis prope Avinionem* (5). F. 3, au bas de la page, on lit : *Vallisbenedictionis*. F. 1, en caractères imprimés : *Carthusiae Villenoveae*, et en dessous, d'une écriture du XIX^e siècle : *R. J. Pottier*. Ce volume a été acheté, en 1900, à Bruxelles, à une vente chez Fiévez, pour fr. 121. Très jolie reliure du XV^e siècle; ais de bois recouverts de veau estampé, à fers très élégants; restes de fermoirs en cuivre.

1473. (11285-86). — GAUFRIDUS CLARAVALLENSIS. Excerpta Bernardina.

1. (F. 1^v). Index et notes diverses.

2. (F. 2-25^v). Exceptiones ex opusculis beati Bernardi super evangelium *Ecce nos reliquimus* collecte a domino GAUFRIDO Clarevallensi

(1) Cf. *Bibliotheca Philippica*, London, 1898, p. 12, n. 102.

(2) F. 1, on lit la note suivante au sujet de Henri de Hassia : *Hic magister Henricus de Hassia floruit Parisiis ab anno 1360 ad an. 1397, quo eius obitus reperitur in charta cap. generalis*.

(3) Voir FABRICIUS-MANSI, *Bibl. lat. med. et inf. aet.*, t. II, p. 216 sqq.

(4) Sous ce titre se trouve ici le quatrième livre *De Imitatione Christi* de THOMAS A KEMPIS.

(5) Au sujet de ce scribe, il y a, f. 1, la note : *Hic Ioannes Urentis-Ferri sive Brulefer e domo Vallis Benedictionis ad maiorem Cartusiam evocatus fuit per chartam cap. gen. an. 1465*.

abbate et directe ad Henricum romane curie cardinalem. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 435 sqq.

3. (F. 25^v-33^v). Sermo domni Bernardi abbatis de conversione ad clericos. = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 833-847. *Des. mutil.* n. 25 : cuius et umbra sponsam refrigerat et fructus ...

Parchemin; 33 feuillets; 0^m,192 × 0^m,13; XIII^e siècle. F. 1^v, on lit : *Pertinet monasterio fratrum sancte crucis in Namurco*, et plus bas : *Collegii Societatis Iesu Lovanii. M. B. Y. A.* Reliure moderne, peau de truie estampée; très jolis fers; en relief, l'inscription : *Regia bibl. Belgica.*

1474. (II. 1394). — GUILLIELMUS. Bernardinum (1).

1. (F. 1-93). [GUILLIELMUS TORNACENSIS]. Exceptiones collecte de diversis operibus beati Bernardi egregii abbatis Clarevallensis.

2. (F. 93^v-94^v). Extraits de S. BERNARD et de S. AUGUSTIN.

3. (F. 95-96^v). [De lapidibus pretiosis].

4. (F. 97-99). Extraits divers.

5. (F. 99^v-102^v). Table alphabétique des matières du *Bernardinum*.

6. (F. 103-109^v). Additions au *Bernardinum*.

Parchemin; 109 feuillets, plus huit de garde; 0^m,159 × 0^m,112; XIV^e siècle; les feuillets 97-102 sont à deux colonnes; initiales rouges et bleues; titre courant en rouge; ancienne pagination i-xci. F. 1, il y a la note : *Liber monasterii canonicorum regularium vallis sancti Martini in Lovanio*, et f. 66^v : *Est liber hic sancti Martini Lovaniensis*. Sur le troisième feuillet de garde, en tête, il y a l'ex-libris *Sir T[homas] P[hilippus] Middle Hill 881*. Ce volume a été acquis par la Bibliothèque royale en 1891. Reliure maroquin vert, gaufré, à filets d'or; au dos, le titre doré : *Liber monasterii canonicum (sic) manuscrit sur velin du 14^e siècle*.

1475. (II. 944). — GUILLIELMUS. Flores sancti Bernardi.

1. (F. 1-120^v). Exceptiones collectae de diversis opusculis beati Bernardi.

2. (F. 120^v-121^v). Auctoritates quedam memoria digne excepte de opusculis beati Bernardi.

3. (F. 122-222^v). [IACOBUS DE VITRIACO]. Historia ierosolimitana abbreviata (2).

Parchemin; 124 feuillets; 0^m,325 × 0^m,23; XIV^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et bleues. F. 1, il y a la note : *Liber Sancte Marie de Camberone*, et au bas

(1) Cf. les deux volumes suivants. Sur Guillaume de Tournai, moine de Saint-Martin, voir FABRICIUS, *Bibl. inf. et med. lat.*, t. III, p. 154. L'œuvre de Guillaume se trouve encore à la bibliothèque Mazarine à Paris, MOLINIER, *Catalogue des manuscrits de la bibliothèque Mazarine*, t. I, p. 358, et à celle de Cambrai, *Catalogue général des manuscrits des bibliothèques publiques de France*. Départements, t. XVII, A. MOLINIER, Cambrai, pp. 84-85, 354.

(2) Au sujet des manuscrits et des éditions de ce texte, voir POTTHAST, *Bibl. hist. med. aevi*, t. I, p. 634.

d'un certain nombre de pages, on lit l'inscription : *De Camberone* (1). L'ex-libris *Sir T. P. Middle Hill 338* se trouve au verso de la couverture. Reliure moderne, toile et veau au dos et aux coins.

1476. (II. 1139). — GUILLIELMUS. Bernardinum.

Guillielmi monachi Sancti Martini Tornacensis in Bernardino quem idem excepit et compilavit de libris et dictis sancti Bernardi Clarevallensis.

Parchemin; 169 feuillets; 0^m.23 × 0^m.155; XIV^e siècle; initiales rouges et bleues; signatures I-III. Ce manuscrit provient de l'abbaye d'Alne (2); plus tard, il fit partie de la collection Phillipps avec le n. 4720; il fut acquis par la Bibliothèque royale en 1888. Demi-reliure, toile anglaise; au dos, le titre doré : *Guillelmus Tornacensis in Bernardino ex libris S. Bernardi Clarevallensis*.

1477. (4236-39). — S. BERNARD. Sermons, en flamand.

1. (F. 1-9^v). Expositie ghemaect van S. BERNAERT op devangelie *Missus est*.

2. (F. 10-24). Die tweede omelia van sinte BERNART super *Missus est*.

3. (F. 24-35). Die derde omelia van sinte BERNART super *Missus est*.

4. (F. 36-48^v). Die vierde omelia van sinte BERNAERT super *Missus est*.

5. (F. 48^v-53). Een devote meditatie op dat woert dat onse lieven heere sprac aen den heylighen cruce tot synder ghebenedyde moeder.

6. (F. 54^v-63). Een sonderlinge scoen sermoen van onser lieve vrouwe hemelvaert ... ghepredicht by meester HUGHE saligher ghedachten onse biechtvader eerwerdighen.

7. (F. 64-74). Van der glorioser assumptie ende intronijzatie van Maria die hemelsche coniginne.

Les feuillets 74^v-77^v sont blancs.

8. (F. 78-94). Meester HUGHE onsen werdighen biechtvader, een suverlijke ende scoen sermoen van der ghebornen der werdigher moeder ende maghet Maria.

9. (F. 94-99^v). [Miracles de la S^{te} Vierge, en flamand].

Papier. au filigrane du pot ansé; 99 feuillets; 0^m.22 × 0^m.15; XV^e siècle. F. 54^v, il y a la note : *Tien ave Maria ut liefde voer die ziele van vrouwe Franchoyse van buillemon die dit sermoen utscraeff*. Demi-reliure moderne, dos en parchemin.

1478. (11085). — S. BERNARD. Sermons, en flamand.

1. (F. 1). Vers latins.

Inc. Velle iuvat, dat posse Deus, coepta ardua supplet.

Des. Prima voluntas, vis materies hinc operis.

(1) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. manuscr.*, part. I, p. 359.

(2) *Ibid.*, p. 244.

2. (F. 2). De tafel der sermonen des heylighen leeraers sinte Bernaerdus.

3. (F. 3-241). [Sermonen sinte BERNAERTS].

Version flamande des sermons qui se trouvent *PL.*, t. CLXXXIII, col. 501-12, col. 33-50, 52-56, 429-38, 87-116, 115-19, 119-26, 131-37, 141-47, 155-62, 359-69, 167-71, 173-81, 183-86, 375-82, 392-98, 383-92, 253-59, 263-70, 273-92, 291-324, 323-334, 337-43, 397-404, 403-16, 415-30, 437-54, 517-33, 433-78, 489-502, 513-18, 333-37, 644-47, 637-44.

4. (F. 241-242^v). Sinte BERNARDUS parabol (1).

5. (F. 244). Vers.

Inc. Christe potens rerum, rerum imperiosa potestas.

Des. Una salus, medicina una est amor unus amanti.

Parchemin; 244 feuillets; 0^m,295 × 0^m,20; XV^e siècle (1479), car f. 243, on lit la note : *Dit boeck is gheeynt anno Domini dusent vierhondert ende neghen en tseventich op des heilighen cruys avent verheffinghe 1479*. Quelques jolies lettrines; initiales bleues et rouges, ancienne pagination à l'encre rouge i-cxli. F. 1, on lit : *Dit boeck hoert toe den cloester van sinte [Franciscus] te thabor by Mechelen*, et plus bas : *Dyt boeck hort touwe brueder Chrystiaen Kemkems Cobbrener tot Syntruyden anno 1583*, puis f. 2 : *Domus professe Societatis Iesu Antverpiae 1639*, et f. 3 : *Bibliothece Domus Prof. Societatis Iesu Antv.* Reliure moderne veau raciné; au dos, le titre doré reproduit à l'intérieur sur une étiquette en maroquin rouge : *Sermons de S. Bernard en Belgique*; plus bas, les armes de Belgique et l'inscription *Bibl. royale*.

1479. (364). — S. BERNARD. Sermons sur le Cantique des cantiques, en flamand, par GILLE ZEGHERS (2).

1. (F. 1-436^v). Die lxxxvj sermoonen van S. BERNAERT op het boeck van Cantica. *Inc.* U liede, beminde broeders, behoort me. *Des.* Wandelt (seijt hij) gelijk kinderen des lichts. Deo gracias semper.

2. (F. 436^v-437). Préface du traducteur ÉGIDE ZEGHERS. *Inc.* Den oversetter totten leser. Ten begerten van sommige religieusen ende geestelijcke maechden hebbe ic mij vervoerdert om desen grooten arbeyt ende moeijte te aenverden. *Des.* ende nu overgezet int jaer Mcccc.lxx, op h. cruys verheffinghe dach doer brueder Gielis Zeghers Minderbrueder Pater des Cloosters van onser liever vrouwe bootschap orde tot loeven.

3. (F. 437-437^v). Note sur une autre version des sermons de S. Bernard sur le Cantique des cantiques, faite à Maegdendaele, à Audenarde, par un religieux de Boneffe.

(1) Cf. *PL.*, t. CLXXXII, col. 737 sqq.

(2) Voici ce que SANDERUS, *Chorographia conventus Bruxellensis ff. Min.*, dit de Gille Zeghers, p. 96 : *Caput VI. De Guardianis qui hunc conventum rexerunt... V. A. P. Aegidius Zegerus magna cum laude rexit. Obiit in ordine iubilarius anno 1588, 6 februarii.*

Papier; 437 feuillets, plus six de garde; 0^m,31 × 0^m,20; XVII^e siècle (1612), car on lit, f. 437^v, la note suivante : *Dit boeck es volschreven int jaer ons heeren 1612 den 20 van Augustus op Sinte Bernaerts dach van mij suster Jenneken della faille.*

*Si hevet gedaen om der sielen profylt,
Godt wilt haer daer voer geven dat ewich jolijt.
Sij bidt dat men haer gedachtich wilt wesen
Met voer haer eenen Ave Maria te lesen,
Op dat Godt haer wilde genadich sijn
Ende haer siele verlossen wt alle druck en pijn.
Deo gratias semper. Amor omnia vincit.*

Deux colonnes. Au verso du troisième feuillet de garde, on lit : *Desen boeck hoort toe aen de bublioteque van S^e Elysabeth op den bergh Sion.* L'estampille rouge, R. F., de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 1 et f. 437^v. Reliure du XVII^e siècle, veau raciné et estampé, restes de fermoirs en cuivre.

1480. (3093-95). — S. BERNARD. Méditations, en flamand.

1. (F. 1-36^v). De gaert der minnen dien maecte de ertschebisscop ANGELMUS.

A la fin du traité, se trouve le nom du traducteur : *dien ic verdietschte Vranke Callaert.*

2. (F. 37-98^v). Sente AUGUSTYNS waerde van den scouwene ons heren Ihesus Kersts (1).

3. (F. 99-158). S. BERNAERTS overpeysingen van den menscheleke cativetheit (2).

4. (F. 158-160). Hoe sente BERNAERT raedt sinen vrient te peisene on de weldaden die hem God gedaen hadde.

5. (F. 160^v-182). S. BOENAVANTURE. Dat Ihesus dbegherde endde es.

6. (F. 182^v-186^v). De vorredene van den houte slevens dat BONAVONTURE in latine maect.

Le feuillet 187 est blanc.

7. (F. 188). Index.

Parchemin; 188 feuillets; 0^m,10 × 0^m,065; XV^e siècle. F. 187^v. il y a la note : *Dit boec es des cloesters van rodendale in Zonien bij Bruessele.* Reliure ancienne, peau de truie estampée sur ais de bois, fermoirs en cuivre.

1481. (9620-22). — GUERRICUS. Sermones.

1. (F. 1). De Guerrico abbate Igniacensi. = *PL.*, t. CLXXXV, col. 10.

2. (F. 1^v-2^v). Sermo domini GERRICI abbatis [de adventu Domini]. = *Ibid.*, col. 11-14.

3. (F. 2^v-4^v). Sermo unde supra de adventu Domini. = *Ibid.*, col. 14-17.

4. (F. 4^v-6). Sermo de adventu Domini. = *Ibid.*, col. 18-21.

(1) Traduction du *Manuale*, voir *PL.*, t. XL, col. 951.

(2) Version du traité, *PL.*, t. CLXXXIII, col. 485-508.

5. (F. 6-8). Sermo unde supra. = *Ibid.*, col. 21-25.
6. (F. 8-9^v). Sermo unde supra. = *Ibid.*, col. 26-30.
7. (F. 9^v-11). Sermo de die nativitalis Domini. = *Ibid.*, col. 30-32.
8. (F. 11-12). Sermo unde supra. = *Ibid.*, col. 32-34.
9. (F. 12-13^v). Sermo unde supra. = *Ibid.*, col. 35-38.
10. (F. 13^v-15^v). De nativitate Domini sermo GERRICI. = *Ibid.*, col. 38-43.
11. (F. 15^v-17). Sermo de nativitate Domini nostri Ihesu. = *Ibid.*, col. 43-46.
12. (F. 17-19). In epyphania Domini sermo GERRICI. = *Ibid.*, col. 46-50.
13. (F. 19-20^v). Sermo unde supra. — *Ibid.*, col. 51-54.
14. (F. 20^v-22^v). Sermo de epyphania Domini. = *Ibid.*, col. 54-59.
15. (F. 22^v-24^v). Sermo de epyphania Domini. = *Ibid.*, col. 59-64.
16. (F. 24^v-26). Sermo in purificatione beate Marie virginis. = *Ibid.*, col. 64-67.
17. (F. 26-28). Sermo de purificatione. = *Ibid.*, col. 69-71.
18. (F. 28-29^v). Sermo in purificatione. = *Ibid.*, col. 71-75.
19. (F. 29^v-31^v). Sermo in purificatione. = *Ibid.*, col. 75-79.
20. (F. 31^v-33). Sermo in purificatione. = *Ibid.*, col. 89-92.
21. (F. 33-34^v). Sermo in sexagesima. = *Ibid.*, col. 92-96.
22. (F. 34^v-35^v). In quinquagesima sermo. = *Ibid.*, col. 96-100.
23. (F. 35^v-37). In translatione beati Benedicti abbatis et per octavas et in octavis eius. = *Ibid.*, col. 99-103.
24. (F. 37^v-39^v). Sermo de S. Benedicto. = *Ibid.*, col. 103-7.
25. (F. 39^v-41). De sancto Benedicto sermo GERRICI. = *Ibid.*, col. 107-111.
26. (F. 41-43). Item de sancto Benedicto sermo GERRICI. = *Ibid.*, col. 111-16.
27. (F. 43-44). De annuntiatione dominica sermo GERRICI. = *Ibid.*, col. 116-19.
28. (F. 44-45). Dominica in passione Domini sermo GERRICI. = *Ibid.*, col. 127-30.
29. (F. 45-46^v). Sermo GERRICI unde supra. = *Ibid.*, col. 130-34.
30. (F. 46^v-48). Dominica in palmis. = *Ibid.*, col. 134-37.
31. (F. 48-49^v). Sermo unde supra GERRICI. = *Ibid.*, 137-42.
32. (F. 49^v-50^v). Sermo GERRICI de resurrectione Domini. = *Ibid.*, col. 142-44.
33. (F. 50^v-52^v). Sermo unde supra. = *Ibid.*, col. 144-48.
34. (F. 52^v-54). Sermo de resurrectione Domini nostri Ihesu. = *Ibid.*, col. 148-52.
35. (F. 54-55). In rogationibus ante ascensionem Domini sermo. = *Ibid.*, col. 151-54.

36. (F. 55-56). De ascensione Domini sermo GERRICI abbatis. = *Ibid.*, col. 153-56.

37. (F. 56-57^v). De sancto Spiritu sermo GERRICI. = *Ibid.*, col. 157-60.

38. (F. 57^v-59). De sancto Spiritu sermo GERRICI. = *Ibid.*, col. 160-64.

39. (F. 59-60). Sermo beati AUGUSTINI de nativitate Domini nostri Ihesu Christi. *Inc.* Merito... miranda est Salvatoris nostri nativitas.

40. (F. 60-61). De sancto Vincentio sermo beati AUGUSTINI. = *PL.*, t. XXXVIII, col. 1255-57.

41. (F. 61-61^v). Item sermo AUGUSTINI (1) de sancto Vincentio. = *PL.*, t. XXXIX, col. 2095.

42. (F. 61^v). [Hymnus de S. Vincentio]. = *RH.*, n. 11276; neumes gothiques allemands.

Parchemin; 61 feuillets; 0^m,32 × 0^m,22; XIII^e siècle; deux colonnes; grandes et belles capitales; ancienne pagination à l'encre rouge 1-lx. F. 1, il y a la cote *MM, 4-8* et la note : *Iste liber pertinet monasterio sancti Laurentii extra muros leodienses et notatur in ordine chori : secundus liber sermonum.* L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 1, 2 et 61^v. Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré : *Guerrici sermones*, qui se trouve aussi à l'intérieur sur une étiquette de maroquin rouge; plus bas, les armes de Belgique et l'inscription : *Bibl. royale.*

1482. (II. 977). — GUERRICUS. Sermones.

1. (F. 1). Index des sermons de Guerry.

2. (F. 1). Vers léonins du scribe Lambert.

Inc. Baruch scriptoris comes in celestibus oris.

Des. Huic is iungatur a quo liber iste paratur.

3. (F. 1^v-82). Sermones domni GUERRICI abbatis Igniacensis viri sanctissimi numero l. lxxxii. = *PL.*, t. CLXXXV, col. 11-214.

4. (F. 82^v-115). Liber ROBERTI, venerabilis abbatis Tuscensis, de victoria verbi Dei. = *PL.*, t. CLXIX, col. 1217 sqq.

5. (F. 115). Epistola MEINGOZ canonici ad Robertum Tuitiensem. = *PL.*, t. CLXX, col. 701.

Parchemin; 115 feuillets; 0^m,29 × 0^m,18; XIII^e siècle; deux colonnes; superbes lettrines en toutes couleurs ornées de dessins et d'arabesques; signatures 1-xv. Ce volume provient de Saint-Ghislain, et il portait dans cette bibliothèque la cote *EEE* (2). Au revers du premier plat de la couverture, il y a l'ex-libris : *Sir T. P. Middle Hill, 368.* Ce volume a été acquis à Cheltenham par la Bibliothèque royale en 1888 pour 125 francs. Reliure moderne; veau estampé, avec l'inscription en relief : *Regia Bibl. Belgica.*

(1) Correction du XVII^e siècle, le ms. avait d'abord en rubrique : *Leonis pp.*

(2) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. I, p. 247; A. PONCELET, S. I., *Les Annales de l'abbaye de Saint-Ghislain*, p. 384.

1483. (458-63). — GUERRICUS. Opera.

1. (F. 1^v-76^v). Sermones GUERRICI abbatis igniacensis in purificatione B. M. V. (quartus *Inc. mutil.* Dominus Ihesus misit in terram vehementer. *Des.* contuentes eum facie ad faciem ... in secula seculorum Amen. = *PL.*, t. CLXXXV, col. 76); puis sextus in quadragesima, in sabbato secundae ebdomade quadragesime, in festivitate sancti Benedicti (quatuor), in annunciatione dominica (tres), in dominica palmarum (quatuor), in resurrectione Domini (tres), in rogationibus, in ascensione Domini, in die sancto penthecostes (duo), in nativitate sancti Iohannis Baptiste (quatuor), in solempnitate sanctorum Petri et Pauli apostolorum (duo), de eo quod dictum est : *Donec aspiret dies et inclinentur umbrae*, in assumptione beate Marie Virginis (quatuor), in nativitate beate Marie Virginis (duo), in festivitate omnium sanctorum, ad excitandam devotionem in psalmodia. = *Ibid.*, col. 90-214.

2. (F. 76^v-94). Exhortationes beati CESARII Arelatensis episcopi ad monachos. = *PL.*, t. LXVII, col. 1154, 1056, 869, 1062, 1089, 1069 (1).

3. (F. 94-113^v). Sermones EIUSDEM generales. = *PL.*, t. XXXIX, col. 2280, 2285, 2287; t. L, col. 837; t. XXXIX, col. 2245, 1931, 2253.

Les feuillets 114-116^v sont blancs.

4. (F. 117-122^v). Epistola beati BERNARDI abbatis ad Matheum Albinensem. = *PL.*, t. CLXXXII, col. 661-62.

5. (F. 122^v-148^v). Sermo sancti BERNARDI abbatis in die sancte Lucie, de dominica secunda post Pascha, de David et Golia, ad sacerdotes de sacramento altaris, de conversione sancti Pauli (sermo secundus), in purificatione B. M. Virginis, in eodem festo, in ieiunio de versu *Fiat voluntas tua*. = *PL.*, t. CLXXXIII.

6. (F. 149-180). Admonitiones sancti EFFREM dyaconi ad monachos (2).

Parchemin; 180 feuillets; 0^m,325 × 0^m,23; XV^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et bleues; ancienne pagination xli-ccxix; signatures. F. 180^v, on lit cette note : *Iste codex pertinet monasterio Rubeevallis in Zonia prope Bruxellam civitatem Brabancie*. L'estampille rouge, *R. F.*, de la Bibliothèque nationale de Paris se voit f. 180^v. Demi-reliure moderne, dos en maroquin rouge avec les titres des différents traités; plus bas, le monogramme couronné du roi Léopold I^{er}.

1484. (II. 1073). — RICARDUS DE SANCTO VICTORE. Liber exceptionum. = *PL.*, t. CLXXVII, col. 191-284; t. CLXXV, col. 633-750; t. CLXXVII, col. 899-1210.

Parchemin; 364 feuillets; 0^m,337 × 0^m,25; XIII^e siècle; deux colonnes; lettrines très élégantes; capitales rouges et vertes; signatures I-XXII. Ce volume provient de

(1) Cf. supra, pp. 226-27.

(2) Cf. supra, p. 25, n. 934 (21205-09).

l'abbaye d'Alne; f. 11, il y a la cote : 4653 *Ph[illipps]*. Demi-reliure, toile anglaise; au dos, le titre : *Ricardi de Sancto Victore Chronicon*.

1485. (4929-32). — RICARDUS DE SANCTO VICTORE. Opera.

1. (F. 1-59^v). Incendium amoris RICHARDI heremite (1). *Inc. Admirabar amplius quam enuncio quantum siquidem sentivi cor meum primitus incalescere*.

2. (F. 59^v-75). Tractatus quidam sancti THOME DE AQUINO qui intitulatur de divinis moribus (2).

3. (F. 75-80). RICHARDUS, super Beniamin. *Des. mutil.* absque omni auditore referre et ... = *PL.*, t. CXCVI, col. 1-5.

Les feuillets 81-83^v sont blancs.

4. (F. 84-127^v). Liber apologeticus beati Gregorii Nazianzeni episcopi (3).

Parchemin; 127 feuillets, plus trois de garde; 0^m,135 × 0^m,095; XIV^e siècle. Au verso du premier feuillet de garde, il y a la note : *Liber domus capelle b. Marie iuxta Angiam*. Reliure du XVII^e siècle; veau raciné, avec le titre doré : *Richardi incendium*.

1486. (1610-28). — RICARDUS DE SANCTO VICTORE. Super Apocalypsim.

1. (F. 1^v). Contenta.

2. (F. 2-4^v). Courts extraits des Pères.

3. (F. 5-126^v). Liber qui intitulatur Eruditio religiosorum editus ab HUMBERTO ordinis praedicatorum (4).

4. (F. 126^v-140). Epistola ad religiosos et tractatus de diligendo Deum ex toto corde et de tribus votis religiosorum magistri HUMBERTI ordinis praedicatorum (5).

5. (F. 140-143). Ordinarium vite religiose editum a sancto BONAVENTURA cardinali de ordine fratrum minorum. *Inc. Religio munda et immaculata apud Deum*.

6. (F. 143^v-146). Contemplatio beati ANSELMI [Lucensis] episcopi super vita Cristi. = *PL.*, t. CXLIX, col. 591-7; cf. *RH.*, n. 4394.

7. (F. 146-148^v). Alia tabula super Eruditionem religiosorum.

8. (F. 149-244^v). Opus magistri RICARDI DE SANCTO VICTORE super Apocalypsin beati Iohannis apostoli. = *PL.*, t. CXCVI, col. 683 sqq.

(1) Ce traité n'est pas de Richard de Saint-Victor. On le trouve parfois sous son nom dans les manuscrits. Cf. *PL.*, t. CXCVI, col. xxix.

(2) QUÉTIF-ECHARD, *Script. ordin. praed.*, t. I, p. 341, n. 62.

(3) Sur les éditions de cet ouvrage traduit en latin par RUFIN, voir *PL.*, t. XXI, col. 39-40.

(4) Cf. QUÉTIF-ECHARD, *Script. ord. praed.*, t. I, p. 148.

(5) *Ibid.*, p. 147.

9. (F. 245-283). Electuarium confortativum anime devote. *Inc.* Sicut Iohannes Crisostomus ait : Oportuerat nos quidem nichil indigere auxilio litterarum.

10. (F. 283-283^v). Prologus magistri GHERARDI MAGNI in librum qui intitulum Ornatus spiritualis desponsationis (1).

11. (F. 283^v-337^v). [IOHANNIS RUYSBROEC]. Ornatus spiritualis desponsationis (2).

12. (F. 337^v-364^v). Liber magistri GERARDI MAGNI domni IOHANNIS RUYSBROEK de duodecim virtutibus (3).

13. (F. 364^v-382). Libellus domni IOHANNIS RUYSBROECK de septem gradibus scale amoris quem quidem idem in theutonica dictavit, venerandus vere vir magister GHERARDUS GROET eundem in latinum transtulit (4).

14. (F. 382-394^v). Courts extraits des Pères.

15. (F. 394^v-395). BERNARDUS. De contemptu mundi et iudicio. = *RH.*, n. 4102.

16. (F. 395-403^v). Autre suite d'extraits des Pères, de sentences et de maximes ascétiques.

17. (F. 403^v-406). Tractatus PETRI DAMIANI de commendatione vite solitarie. = *PL.*, t. CXLV, col. 246-51.

18. (F. 406-407^v). Versus de commendatione ordinis carthusiensis, de commendatione celle et solitudinis. *Inc.* Hoc sonat Carthusia inclusa quod caro tusa.

19. (F. 407^v-408^v). Epistola URBANI quinti ut persone recipiantur absque omni pactione (5).

20. (F. 408^v). De vanitate mundi.

21. (F. 409-412). Epistola excusationis simul et commendationis ordinis carthusiensis. *Inc.* Sanctissimo domino Clementi... Iohannes eius servus inutilis.

22. (F. 412-414^v). De electione [priorum]. *Inc.* Scire debent priores qui vocantur ad electiones faciendas in domibus ordinis.

23. (F. 414^v-419). Decretalis declaratio INNOCENTII pape tercii in generali Lateranensi de faciendis electionibus (6).

24. (F. 419-422^v). Decreta electionis edita ab episcopo Hostiensi.

25. (F. 422^v-424). Ex libro de illustribus viris ordinis cisterciensis. = *PL.*, t. CXXXV, col. 442-44, cap. xxvi et xxv.

(1) L. SURIUS, *Rusbrochii opera omnia*, Coloniae, 1692, p. 228.

(2) *Ibid.*, p. 229-80.

(3) *Ibid.*, p. 164 sqq.

(4) *Ibid.*, p. 213 sqq.

(5) LE COUTEUX, *Annales ordinis cartusiensis*, Monstrolii, 1889, t. IV, p. 86-88.

(6) Cf. LABBE, *Sacrosancta concilia*, t. XI, col. 176 sqq.

26. (F. 424^v-425). Oratio de sancta Dympna, de decem millibus martyribus.

27. (F. 425-425^v). De meditatione cotidiana.

28. (F. 425^v-435^v). Divers extraits des Pères.

29. (F. 436-441). Meditatio VILHELMI Parisiensis ad audiendum vel celebrandum divinum officium misse. *Inc.* Sublimis ac celestis est sapientie scire discumbere ad sanctissimam altaris missam.

30. (F. 441^v). Divers extraits. — Suffragium de S. Rocho.

Papier, aux filigranes du gantelet et de la tête de bœuf surmontée de la croix; 441 feuillets, plus deux de garde en parchemin; 0^m,28 × 0^m,20; XV^e siècle; deux colonnes. F. 1^v, il y a la note : *Iste liber pertinet Carthusiensibus domus Sophie prope Buscum ducis* (1). L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris, aux faisceaux, se trouve f. 1^v et f. 441^v. Demi-reliure moderne.

1487. (II. 2313). — RICARDUS DE SANCTO VICTORE. Opera.

1. (F. 1). Index.

2. (F. 2^v-49^v). RICARDUS. De sancta Trinitate. = *PL.*, t. CXCVI, col. 987 sqq.

3. (F. 49^v). [De scriptis Ricardi a sancto Victore].

Le feuillet 50 est blanc.

4. (F. 51-57^v). Tractatus RICHARDI super canonem misse. = *PL.*, t. CLXXVII, col. 455 sqq.

5. (F. 58-76^v). RICHARDUS. De exterminatione mali et promotione boni. = *PL.*, t. CXCVI, col. 1073 sqq.

6. (F. 76^v-81^v). Opusculum RICHARDI quod vocatur fructus fructuum.

7. (F. 81^v-89^v). Tractatus compendiosus de septem affectibus bene ordinatis ... ex libro venerabilis RICHARDI de XII patriarchis. = *PL.*, t. CXCVI, col. 6, cap. VII - col. 64. Extraits.

8. (F. 89^v-94). Tractatus RICHARDI de verbis Ysaye : *In die illa nutriet homo*, etc.

9. (F. 94-99). Tractatus EIUDEM de sacrificio David prophete. = *Ibid.*, col. 1043 sqq.

10. (F. 99-100). Tractatus EIUDEM de lacu miserie et luto fecis.

11. (F. 100-102). Tractatus RICHARDI de multiplici pane sacrificii legalis.

Les feuillets 102^v-103^v sont blancs.

12. (F. 104-114). Exhortationes devote et bone.

13. (F. 114^v-119^v). Conflictus viciorum et virtutum. = *PL.*, t. XL, col. 1091 sqq.

(1) Sur ce monastère, voir MIRAEUS, *Origines Cartusianorum monasteriorum*, p. 32-34.

14. (F. 120-135^v). Magistri ADELREDI speculum amoris. = *PL.*, t. CXCIV, col. 659 sqq.

15. (F. 135^v-152^v). Tractatus HUGONIS de conscientia. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 507 sqq.

16. (F. 153-160^v). Liber magistri HUGONIS DE SANCTO VICTORE de disciplina. = *PL.*, t. CLXXVI, col. 935, cap. x - col. 952 (1).

17. (F. 160^v-185^v). Tractatus de professione monachorum. *Inc.* Tractatus iste qui est de professione monachorum tres habet partes.

18. (F. 185^v-192). Tractatus sancti BASILII episcopi de milicia cristiana (2).

Les feuillets 192^v-198^v sont blancs.

19. (F. 199-205). Miracula fratris HENRICI DE CALSTRIS ordinis fratrum praedicatorum. = *BHL.*, n. 3810 (3).

20. (F. 205-208^v). Alia diversa exempla patrum.

21. (F. 209-213). Liber de viciis et virtutibus HUGONIS DE SANCTO VICTORE. = *PL.*, t. CLXXVI, col. 997-1010.

22. (F. 213-218^v). HUGONIS DE SANCTO LAURENCIO ad fratrem Renerrum, qui inscribitur columba deargentata. = *PL.*, t. CLXXVII, col. 15 sqq.

23. (F. 219-233). Tractatus de viciis et virtutibus. *Inc.* Quoniam, ut ait apostolus Petrus, Spiritu sancto affati locuti sunt Dei homines.

24. (F. 234-239^v). [IOHANNIS CLIMACI sermo ad pastorem]. = *PG.*, t. LXXXVIII, col. 1165 sqq.

25. (F. 239^v-241). Commendacio Iohannis Clymaci et sermonis huius edita a Iohanne abbate Raythu.

26. (F. 241-243). Vita sub compendio Iohannis abbatis sancti montis Synai dicti scholastici ... edita a DANIELE humili monacho Raythu. = *BHL.*, n. 4380.

27. (F. 243). Notes diverses : Epygramma Iohannis Climaci. — Nota de glossa maiore et minore. — Sententia Gersonis.

28. (F. 243^v). Prefatiuncula magistri Io. THEODERIGI HERXEN (4).

29. (F. 243^v-244). Bonum exemplum. *Inc.* Quidam homo sensit frequenter afflictionem spiritus omni VI feria. *Des.* quam posset, si vellet, in vulneribus Cristi invenire. Amen.

(1) En tête de ce traité, f. 153, on lit la note: *Principium istius tractatus hic deficit. Require in alio papireo volumine cuius tytilus talis est: Epistole Petri Ble-sensis. Albertus de officio misse.*

(2) C'est le traité *Audi, filia, et vide et inclina*. Cf. plus haut, p. 366, note 8.

(3) Le texte de ce manuscrit est beaucoup plus complet que celui publié par Choquetius.

(4) Deuxième prieur de Zwolle. Voir Acquoy, *Het Klooster te Windesheim*, t. I, p. 88 et passim.

30. (F. 244^v). Transcriptum de phizonomia Salvatoris (1).

Le feuillet 245 est blanc.

31. (F. 246-253^v). Sanctus THOMAS DE AQUINO ... de corpore Christi (2).

32. (F. 253^v-255^v). Epistola fratris THOMA DE AQUINO ordinis Praedicatorum ad ducissam Brabantie (3).

33. (F. 255^v-256^v). Epistola EIUSDEM [Gherardo Bisantino] (4).

Parchemin, à partir du f. 121, il y a un grand nombre de feuillets en papier aux filigranes de l'écu de France et de la lettre *P*; 256 feuillets, plus six de garde; 0^m.29 × 0^m.21; XV^e siècle; deux colonnes; titre courant; signatures *a-r-f.* F. 239^v, dans une initiale on lit le nom propre *Arnold*. Sur le premier feuillet de garde, il y a l'ex-libris *Sir T. P. Middle Hill, 1165*. Ce volume a été acheté à Londres en 1899, à une vente chez Sotheby, pour fr. 475 (5). Reliure ancienne, veau brun estampé sur ais de bois, jolis fers; restes de fermoirs en cuivre. Les fers, avec l'agneau pascal et le nom *MARIA*, font penser au prieuré de Bethleem. Au dos, quatre titres dorés des principaux traités.

1488. (2665-66). — RICARDUS DE SANCTO VICTORE. En flamand.

1. (F. 1-2). Tafele der capitelen meester Richaerdus van sinte Victor op cantica canticorum.

2. (F. 3-215). Meester RICHARDUS VAN SINTE VICTOERS tractaet op cantica canticorum (6).

Papier, au filigrane de l'écu, et parchemin; 215 feuillets; 0^m.21 × 0^m.14; XV^e siècle. F. 1, on lit : *Dit boeck hoert toe den ghesloten regularissen cloester te Bergen op ten Zoom*, et f. 2^r : *Dit boeck hoert toe den susteren te Berghen opten Zoom int besloten cloester tsinte Margrieten int dal van Iozaphat*. L'estampille rouge, *R. F.*, de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f.1 et f. 215. Demi-reliure moderne; au dos, le titre doré : *Richaerdus van sinte Victor. Tractatus op cantica canticorum*; plus bas, le chiffre couronné de Léopold I^{er}.

1489. (8536-43). — HUGO FOLIOTUS. Opera.

1. (F. 1-72). [NENNIUS]. Hystoria Britonum (7).

2. (F. 73-98). Magistri HUGONIS prioris sancti Laurentii de naturis avium. = *PL.*, t. CLXXVII, col. 15-55.

3. (F. 98-116). [De naturis animalium]. = *Ibid.*, col. 55 sqq.

4. (F. 116-126^v). Magistri HUGONIS prioris sancti Laurentii de medicina anime. = *PL.*, t. CLXXVI, col. 1183 sqq.

(1) Cf. E. VON DOBSCHÜTZ, *Christusbilder*, p. 308-30, et t. I de ce Catalogue, p. 518.

(2) Voir QUÉTIF-ECHARD, *Script. ord. praed.*, t. I, p. 341, n. 60.

(3) Cf. *ibid.*, t. I, p. 337, n. 21.

(4) *Ibid.*, t. I, p. 334, n. 12.

(5) Voir *Bibliotheca Philippica*, London, 1899, p. 32, n. 306.

(6) Cf. *PL.*, t. CXCVI, col. 523 sqq.

(7) Pour les éditions de l'*Historia Britonum*, voir POTTHAST, *Bibl. hist. med. aevi*, 2^e éd., t. II, p. 842.

5. (F. 127-128^v). Extrait. *Inc.* Aiunt namque doctores quod Moyses qui ... omni sapientia Egyptiorum fuerat eruditus.
6. (F. 128^v-134). Passio sancte Theodosie virginis. = *BHL.*, n. 8090.
7. (F. 134-135^v). Passio beate Barbare virginis. = *BHL.*, n. 913.
8. (F. 136-140). Sermo domni Odonis Cantuarie monachi in honore sancte crucis. *Inc.* Ita vos hodie, fratres, erga crucem Christi, ut verum palam fatear, exhibetis.

Parchemin; 140 feuillets; 0^m,24 × 0^m,163; XIII^e siècle; les feuillets 136-140 sont à deux colonnes; il y a quelques belles letrines rehaussées d'or et à personnages; initiales rouges et vertes; signatures 1-ix. F. 72^v, on lit : *Hunc librum dedit magister Martinus de Lyra domui loci sancti Bernardi. Retribuat illi Deus vitam aeternam. Amen. Quicumque eum abstulerit vel aliquid ab eo defraudaverit, noverit se esse excommunicatum. Nec remittetur peccatum donec restituatur ablatum. Anima magistri Martini supradicti de Lira datoris huius pulcherrime historiae per misericordiam Dei requiescat in pace. Amen.* L'ex-libris de la bibliothèque des anciens bollandistes, *N. MS. 16*, se trouve en tête du volume. Reliure ancienne restaurée; ais de bois recouverts de veau brun estampé (1).

1490. (II. 936). — HUGO FOLIOTUS. De quatuor claustris.

1. (F. 1-1^v). Fragment de l'Exode, IX^e siècle.
2. (F. 1^v-92). Liber magistri HUGONIS de quatuor claustris. = *PL.*, t. CLXXVI, col. 1017 sqq.
3. (F. 92-92^v). [GODEFRIDUS MUNMETENSIS. Historia Britonum]. Fragment du livre VII. *Inc.* [S]edente Wortigirno Britonum rege super ripam exausti stagni. *Des.* Calamistrati varia.....

Parchemin; 92 feuillets; 0^m,313 × 0^m,207; XIII^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et vertes; signatures 1-xi. Ce volume a appartenu à Sir Phillipps, car f. 1, il y a l'ex-libris : *Sir T. P. Middle Hill, 329*. Il a été acquis par la Bibliothèque royale en 1888 pour fr. 35. Demi-reliure moderne, toile et peau de truie.

1491. (II. 1076). — HUGO FOLIOTUS. Opera.

1. (F. 1). [Translatio S. Livini Gandavum]. = *BHL.*, 4962. — Fragment de la fin. *Inc.* mutil ... nebatur usque ad terminum vite. *Des.* ubi plurima prestantur fidelibus beneficia ad laudem... Amen.
2. (F. 2^v). Index.
3. (F. 3-20). EUSEBII IHERONIMI liber virorum illustrium. = *PL.*, t. XXIII, col. 601.
4. (F. 20-31). GENNADIUS. De viris illustribus = *PL.*, t. LVIII, col. 1053 sqq.
5. (F. 31-44^v). Catalogus illustrium virorum digestus a domno SIGEBERTO Gemblacensi. = *PL.*, t. CLX, col. 547 sqq.

(1) Voir une description de ce volume dans *Cat. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. II, p. 215 16.

6. (F. 45-45^v). [De scriptoribus post Sigebertum] (1).
7. (F. 45^v-57^v). Omelia sancti IOHANNIS ... quod nemo potest ledi ab alio nisi a semetipso. = *PG.*, t. LI, col. 459 sqq.
8. (F. 57^v-59^v). Omelia EIUSDEM cum de expulsionem eius ageretur. = *Ibid.*, col. 427 sqq.
9. (F. 60-78). De reparatione lapsi. = *PG.*, t. XLVII, col. 277 sqq.
10. (F. 78-81^v). [De psalmo quinquagesimo]. = *PG.*, t. LV, col. 565 sqq.
11. (F. 82-93). [HUGO FOLIOTUS]. Liber de rota vere religionis.
12. (F. 93-104^v). Magistri HUGONIS, prioris sancti Laurentii, liber de pastoribus et ovibus (2).
13. (F. 104^v-113^v). Libellus magistri HUGONIS prioris sancti Laurentii ad socium volentem nubere. = *PL.*, t. CLXXVI, col. 1201 sqq.
14. (F. 113^v-124). Magistri HUGONIS prioris sancti Laurentii liber de medicina anime. = *PL.*, t. CLXXVI, col. 1183 sqq.
15. (F. 124-144). Libellus magistri HUGONIS ... de significatione avium. = *PL.*, t. CLXXVII, col. 15 sqq.

Parchemin ; 144 feuillets ; 0^m,315 × 0^m,23 ; XIII^e siècle ; deux colonnes ; très belles lettrines ; initiales rouges et vertes. F. 82 et f. 87, de curieuses miniatures dessinées à la plume représentent le sujet du traité d'Hugues de Fouilloy, des dessins du même genre se trouvent ff. 124, 124^v, 125, 127^v, 129, 129^v, 131, 132^v. F. 2^v, il y a la note : *Liber sancte Marie de Abna*, et f. 144^v : *Liber beate Marie de Abna, servanti benedictio* ; f. 93^v, on lit les noms propres : *Benedictus Preatle, 1590 et Lannoy*. Plus tard, ce volume a appartenu à sir Thomas Phillipps, n^o 4657 ; la Bibliothèque royale l'a acquis en 1888. Reliure, cuir de Russie estampé ; au dos, les titres dorés des divers traités (3).

1492. (11568). — S. HILDEGARDIS. Opera.

1. (F. 1). IACOBUS A CASTRO. Note sur S^{te} Hildegarde (XVII^e siècle).
2. (F. 1^v-2^v). Capitula.
3. (F. 2^v-174). Liber Scivias simplicis hominis. = *PL.*, t. CXCVII, col. 383 sqq.
4. (F. 174^v). [Nota de revelationibus privatis], de la même main que la première note.

Parchemin ; 174 feuillets ; 0^m,275 × 0^m,20 ; XII^e siècle ; deux colonnes ; jolies lettrines ; signatures I-XII. F. 174, on lit : *Liber fratrum de Parcho*. — *Iste liber est monasterii de Parcho ordinis praemonstratensium prope Lovanium* (4). Au revers de

(1) Voir plus haut, p. 102.

(2) Sur ce traité et le précédent, cf. *Hist. litt. de la France*, t. XIII, p. 504-7.

(3) Ce volume est cité par MABILLON, *Ann. Ord. S. Ben.*, t. VI, p. 461.

(4) Voir SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 168-69, où Sanderus, contre son habitude, décrit longuement ce manuscrit, qu'il croit avoir été écrit en 1147, et où il publie intégralement la note de Jacques de Castro.

la couverture, il y a la cote *I. theca III*. Reliure veau brun; sur les deux plats, les armoiries de l'abbaye de Parc ont été grattées; au dos, le titre doré : *Hildegard. Revelatio*.

1493. (II. 950). — S. HILDEGARDIS. Opera.

1. (Deux feuillets de garde). Fragments d'un traité de droit canon.
2. (F. 1-93^v). [HUMBERTUS]. Liber eruditionis religiosorum (1).
3. (F. 94). Epistola quam scripsit dominus PHILIPPUS decanus maioris ecclesie Coloniensis ... beate Hildegardi. = *PL.*, t. CXCVII, col. 243-44.
4. (F. 94-98^v). Epistola sancte HILDEGARDIS ad Colonienses de futura turbatione clericorum et de secundo tempore. = *Ibid.*, col. 244-53.
5. (F. 98^v-117^v). Speculum futurorum temporum (2).
6. (F. 118-179). PETRUS COMESTOR in laude beate Virginis (3).
7. (F. 179^v). Vers sur des abbés de Cambron.

Inc. Annum dant mater, calcar, cancer simul et ter.

Des. Abba minemque fuit Nicasius obsequiose.

8. (F. 180-188^v). Meditationes beati AUGUSTINI. = *PL.*, t. XL, col. 847.

9. (F. 189-189^v). Fragment de missel, avec notes de musique.

Parchemin; 189 feuillets; 0^m,332 × 0^m,23; XIV^e (les feuillets 1-93) et XV^e siècle (1410), car f. 179, on lit : *Iste liber de laudibus gloriose Dei genitricis Marie fuit scriptus in monasterio septem fontium Ordinis Sancti Augustini (4) anno dominice incarnationis millesimo quadringentesimo et decimo. Sed et meditationes beati Augustini que subsequuntur fuerunt scripte in eodem anno et in eodem monasterio et ab eodem scriptore*. Les feuillets 1-117^v sont à deux colonnes; initiales rouges et bleues. La première partie de ce volume provient de Cambron, car f. 1, il y a la note : *Liber Sancte Marie de Camberone*, et f. 93^v : *Liber Sancte Marie de Camberone*; et ff. 6, 13, 20, 25, 32, 37, 44, 51, 57, 61, 68, 74, 78, 86, 92, on lit : *De Camberone*. F. 1^r, se trouve l'ex-libris *Sir T. P. Middle Hill, 344*. Ce volume a été acquis en 1888 pour fr. 100. Reliure moderne, veau brun estampé; avec l'inscription sur les plats : *Regia Bibl. Belgica*; fermoirs en cuivre ciselé.

1494. (2551). — S. HILDEGARDIS. Opera.

1. (F. 1-2^v). Index.
2. (F. 3-124). [HILDEGARDIS. De rebus physicis]. = *PL.*, t. CXCVII, col. 1125 sqq.
3. (F. 124-129^v). Recettes médicales.

(1) Cf. supra, p. 381.

(2) Extraits des œuvres de S^{te} Hildegarde arrangés par Gebenon, prieur d'Eberbach. Sur ce travail encore inédit, voir FABRICIUS-MANSI, *Bibl. lat. med. et inf. aet.*, t. III, p. 27.

(3) En réalité, ce traité est de Vincent de Beauvais; cf. BRUNET, *Manuel du libraire*, 5^e éd., t. V, col. 1256.

(4) Sur ce monastère, voir J. ACQUOY, *Het Klooster te Windesheim*, t. III, p. 8.

Papier, au filigrane de la fleur de lotus; 130 feuillets; 0^m,22 × 0^m,145; XV^e siècle; ancienne pagination *a-z*, *aa-az*, *ba-bz*, *ca-cz*, *da-dz*, *ea-eo*. F. 130^v, il y a la note suivante : *Der Sinte Mertens liberarie ad manus domini Nicolai Winge* (1). L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris, *R. F.*, se trouve f. 129^v. Demi-reliure; dos en maroquin rouge avec le titre doré : *Beatae Hildegardis prophetissae. De fructibus terrae, animalibus, etc., XI^e siècle*; en dessous, le chiffre couronné de Léopold I^{er} (2).

1495. (II. 1685). — S. HILDEGARDIS. Opera.

1. (F. 1). Indicia ante scisma illud sub quo episcopi et clerici de locis propriis expellerentur.
2. (F. 1-3). [Epistola et prologus GEBENONIS de operibus S. Hildegardis].
3. (F. 3-64^v). Prophecia sancte HILDEGARDIS.
4. (F. 64^v-66). Epistola S. BERNARDI ad sanctam Hildegardem et epistola sancte HILDEGARDIS ad sanctum Bernardum. = *PL.*, t. CXCVII, col. 189-90.
5. (F. 66-67). Quando futurum sit magnum scisma ex epistola ad Treverenses. = *Ibid.*, col. 254-55.
6. (F. 68-93^v). [IOHANNES DE BRUGIS. De veritate astronomica] (3).

Papier, au filigrane de la lettre *P*; 93 feuillets; 0^m,186 × 0^m,138; XV^e siècle (1456), pour les feuillets 1-67, car on lit f. 67 : *Per Egidium de Fine anno Domini. 1456. 10 ianuarii*. Le reste a été écrit au commencement du XVI^e siècle. Reliure parchemin.

1496. (647-50). — PETRUS BLESENSIS. Epistolae et opera.

Les feuillets 1^v-8^v sont blancs.

1. (F. 9-13). Epistola D. PETRI Cluniacensium abbatis ad Gisibertum Sylvanectis inclusum. = *PL.*, t. CLXXXIX, col. 89-100.
2. (F. 14^v-16). Tituli epistolarum [Petri Blesensis].
3. (F. 16^v-117^v). Epistole magistri PETRI BLESENSIS Bathoniensis archidiaconi. — A savoir les lettres 1-127, *PL.*, t. CCVII. Sont omises les lettres nn. 43 et 103, et f. 94 est ajoutée une lettre du pape Alexandre *soldano Iconii*. = *PL.*, t. CCVII, col. 1070.
4. (F. 117^v-122^v). De instructione episcopalis officii. = *Ibid.*, col. 1097-1112.
5. (F. 122^v-129). [Suite des lettres]. Lettres nn. 143, 131-135.

(1) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part, II, p. 217. Sur Nicolas van Wingehe, voir ACQUOY, *Het Klooster te Windesheim*, t. II, pp. 270-71, 321.

(2) Voir une description de ce volume par PAUL KAISER, *Die naturwissenschaftlichen Schriften der Hildegard von Bingen*, Berlin, 1901. *Wissenschaftliche Beilage zur Jahresbericht des königstädtischen Gymnasiums zu Berlin*, p. 4.

(3) Sur l'auteur qui florissait vers 1610 et son traité imprimé à Anvers et à Venise, voir l'article de J. LIAGRE dans la *Biographie nationale*, t. X, col. 365-66.

6. (F. 129-133). *Invectiva in quendam qui opera sua depravabat.* = *Ibid.*, col. 1113-25.

7. (F. 133-157^v). [Suite des lettres]. Lettres nn. 137-42, 152, 144-51, 153-55, 128, 157, 98, 161-63, 136, 124, 129, 167, 197, 180, 168, 201, 169, 202, 170-72, 205, 174-79.

8. (F. 157^v-160^v). *De transfiguratione Domini.* = *PL.*, t. CCVII, col. 777 sqq.

9. (F. 160^v-161^v). *Conquestio super dilacionem itineris Iherosolimitani.* = *Ibid.*, col. 1057-1070. Suit une lettre ad sanctimonialiam.

10. (F. 162-175^v). *Compendium super Iob.* = *Ibid.*, col. 795, puis lettre n. 130.

11. (F. 175^v-182^v). *Tractatus PETRI BLESENSIS ... de confessione facienda.* = *PL.*, tom. cit., col. 1077 sqq.

Le feuillet 183 est blanc.

12. (F. 184-189^v). Table des matières par ordre alphabétique.

Le dernier feuillet de garde, en parchemin, contient un fragment de bréviaire, d'une écriture du XIV^e siècle.

Papier, filigrane du bœuf passant et de la tête de bœuf surmontée de la croix; 189 feuillets; 0^m,295 × 0^m,21; plus six de garde à la fin; XV^e siècle; deux colonnes. F. 1, on lit cette note : *Pertinet ad monasterium canonicorum regularium vallis sancti Martini in locano emptum et comparatum pro quibusdam parvis scolasticibus ex collatione venerabilis viri magistri Iohannis De Brande dicto monasterio datis. Oretis Deum pro anima sua.* L'estampille rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris, se trouve f. 9 et f. 189^v. Reliure ancienne veau raciné et estampé.

1497. (899-901). — PETRUS BLESENSIS. *Epistolae.*

1. (F. 1^v). Table des matières.

2. (F. 2-95^v). *Epistole PETRI BLESENSIS Bathoniensis archiepiscopi.* — Savoir de l'édition *PL.*, t. CCVII, les lettres nn. 1-13, 15, 17, 19, 21, 22, 24, 136, 175, 162, 159, 26, 156, 163, 153, 28, 30, 32, 33, 154, 34-38, 158, 39, 130, 155, 40-45, 143, 47-55, 128, 56, 205, 59-61, 65-75, 77-85, 88, 150, 90-95, 86, 96-98.

3. (F. 95^v). Extrait. *Inc. Communis fere principum et nobilium morbus est cito credere. Des. gratiam pro gracia redditurus.*

4. (F. 95^v-150). [Epistole STEPHANI abbatis sancte Genovefe]. — A savoir de la collection de lettres publiée *PL.*, t. CCXI, les lettres nn. 6, 7, 10, 11, 13-22, 25, 29-38, 174, 39, 41, 44, 45, 2, 26-28, 47, 51-53, 55-57, 83, 64, 65, 68, 70, puis une lettre inédite f. 106 : *Priori suo. Est tamen unum quod timere debeam*, nn. 74-79, 87, 285, 88, 91, 99, 100, 104, 105, 110-12, 114, 1, 115-18, 171, 119, 120, 122-29, 131, 133, 157, suppl. 5, suppl. 6, 141, 142, 134, 136-138, 55, 42, 40, 24, 48, 50, 54, 58, 61, 66, 82, 182, 86, 89, 90, 91, 95, 96, 97, 67, 101, 107, 108, 121, suppl. 2, suppl. 3, 140, 144, 43, 49, 62, 85, 46, 69-72, 92, 94, 106, 109, 88, 132, 135, 103,

102, 229-251, 216 ; puis f. 132^v, *sanctissimo ... domno G. clarevallensi abbati ... Certa reddimus pro incertis* ; nn. 165-167 ; puis f. 134 : *Domno pape. Ecclesia sancti Victoris* ; f. 134^v : *Remensi decano. Inter confidentiam spei et timoris* ; nn. 172, 255, 173, suppl. 4, 143, 145, 139, 252-54, puis f. 139^v : *Cuidam amico. Inciescere (sic) solent aliqui*, nn. 146-48, puis f. 141 : *Regi Danorum. Salutem, vitam et victoriam* ; nn. 155, 175, 156, 158, 154, 168, 169, 177, 170, 159, 160, 162, puis f. 148^v : *Turonensi archiepiscopo. Inter filias Syon*, nn. 163, 205, 178, 276.

5. (F. 150-162^v). [ADAMI abbatis Perseniae epistolae]. Les lettres éditées *PL.*, t. CCXI, n. 16, 27, 8.

Les feuillets 163-167 sont blancs.

6. (F. 168-219). [Dialogus S. IOHANNIS CHRYSOSTOMI et Basillii de dignitate sacerdotii]. = *PG.*, t. XLVII, col. 623-92.

7. (F. 219-229^v). [Exhortatio LUDOVICI Allemanni pro concilio Basileensi ad ducem Sabaudiae] (1).

Papier, divers filigranes, l'arbalète, la tête de bœuf surmontée de la croix, et le *tau* ; 229 feuillets, plus deux de garde au commencement et six à la fin du volume ; 0^m,275 × 0^m,20 ; XV^e siècle. La provenance est indiquée sur le second feuillet de garde en tête : *Cartusiae Capellae* et f. 1^v : *Iste liber pertinet domui capelle beate Marie prope Angiam ordinis Carthusiensium quem contulit frater Henricus de Loc monachus professus eiusdem domus. Oretis pro eo propter Deum*. L'estampille rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris, se trouve f. 2 et f. 239^v. Reliure du XVII^e siècle, veau raciné ; au dos, le titre doré : *Petri Bles. epist. M. S.* ; tranche rouge.

1498. (9608-19). — PETRUS BLESENSIS. Opera.

1. (F. 1^v). Table des matières.

2. (F. 2-93^v). *Compilatio epistolarum magistri PETRI BLESENSIS Bathoniensis archiepiscopi*.

Les lettres, *PL.*, t. CCVII, nn. 1-11, 12, 13, 15, 17, 19, 21, 22, 24, 136, 175, 162, 159, 26, 156, 153, 28, 30, 33, 154, 34, 36, 158, 39, 130, 155, 40-46, 57, 94, 95, 86, 90-93, 97, 59, 47-55, 128, 56, 58, 60-62, 65, 82, 83, 85, 150, 66-75, 78-80, 98, 96, 126, 116, 18, 144, 117-125, 127, 99-101, 14, 16, 129, 20, 23, 25, 3, 27, 29, 77, 81. Dans cette série sont insérées une lettre qui ne se trouve pas dans l'édition de MIGNE, f. 9^v : *Reverendissimis dominis et amicis omnibus clericis de capella domini regis ... qui oportunitatem deserit ...*, et f. 41 : *Alexander ... soldano*. = *PL.*, t. CCVII, col. 1069-78.

3. (F. 93^v-94^v). *Rithmi pulcherrimi de vita clericorum in plurimis reprobata*. = *Ibid.*, col. 1129-36.

4. (F. 94^v-103). [Epistolae]. = *Ibid.*, nn. 104-108, 229, 110, 237, 112-115, 102, 103.

(1) Cf. *Acta SS.*, Sept. t. V, p. 444.

5. (F. 103-105). Doctrina penitentialis et misericordie insinuatio. = *Ibid.*, col. 1091-98; puis la lettre n. 89 (f. 105-105^v).

6. (F. 105^v-110). Quid deceat officium pastorale. = *Ibid.*, col. 1097-1111.

7. (F. 110-124). [Epistolae]. = *Ibid.*, nn. 87, 143, 145-138, 139, 131, 132, 137, 138, 160, 135, 133, 134.

8. (F. 124-128). [Invectiva in depravatores operum Blesensis]. = *Ibid.*, col. 1113-26.

9. (F. 128-133^v). Lamentatio super occupatione et devastatione terre sancte. = *Ibid.*, col. 1057-70. — Suit la lettre n. 76.

10. (F. 133^v-139). [Liber de confessione sacramentali]. = *Ibid.*, col. 1077-98.

11. (F. 139-140). [Petri Blesensis epistolae]. = *Ibid.*, nn. 164, 64, 63.

12. (F. 140-141). Quatre lettres inédites.

a) Mag. G. electo Laudunensi Iohannes... sancti Nycholai in carcere Tulliano dyaconi cardinalis (1).

b) G. electo Laudunensi. ... Iacobus ... sancte Yerosolimitane ecclesie patriarcha.

c) Guillelmo Laudunensi episcopo H. episcopus Vasatensis.

d) G. Laudunensi episcopo prior Mansi.

13. (F. 141-142). Index des lettres précédentes.

14. (F. 142^v-151^v). Moralitates PETRI BLESENSIS super Iob. = *PL.*, t. CCVII, col. 795-826.

15. (F. 151^v-153). Liber SENECE de copia verborum.

16. (F. 153-156). Extraits des lettres à Lucilius. *Inc.* Primum augmentum composite mentis existimo. *Des.* Turpissima instantia que per negligentiam fit.

17. (F. 156). HIERONYMUS ... de Seneca. = *PL.*, t. XXIII, col. 629.

18. (F. 156^v-166). Tractatus GUILLIELMI Parisiensis de collatione beneficiorum (2).

19. (F. 166^v-191). Tractatus quadripartus (*sic*) de penitentia a bone memorie GUILLELMO (3) episcopo Parisiensi compositus bonus et utilis.

20. (F. 191-198^v). Tractatus GUILLIELMI Parisiensis episcopi de confessione (4).

21. (F. 198^v-211). Quaestio utilis utrum per Scripturas a Iudeis receptas possit probari misterium Christi in lege et prophetis pro-

(1) Voir CRISTOFORI, *Storia dei Cardinali della santa romana Chiesa*, p. 246.

(2) Pour les diverses éditions, voir *Hist. litt. de la France*, t. XVIII, p. 363.

(3) Pp. 451-512 de l'édition de 1674, t. I; cf. *Hist. litt. de la France*, t. XVIII, p. 367-68.

(4) *Ibid.*, p. 570-92.

missi iam esse impletum determinata a fratre NICHOLAO DE LIRA de ordine fratrum minorum (1).

22. (F. 211-223). Responsio fratris NICHOLAY DE LIRA ad quendam Iudeum ex verbis evangelii secundum Matheum nequiter arguentem (2).

23. (F. 223^v-232). De clastro anime. Episcopus Parisiensis H. G[UILLIELMUS] Alvernansis (3).

24. (F. 232). Commendatio magistri Guillermi Parisiensis actoris huius precedentis libri.

25. (F. 232^v-237^v). [Tractatus magistri THOME DE YBERNIA de ecclesiastica ierarchia] (4).

26. (F. 238-239). Septem psalmi egregii et excellentissimi vatis domni FRANCISCI PETRARCHAE poete laureati (5).

27. (F. 239^v-249^v). Epistole de nobili sompno Pharaonis moraliter exposito quas magister IOHANNES dictus Lemovicensis prothocathedratus Parisiensis misit illustri regi Navarre (6).

28. (F. 249^v-250). Epistola Elye monachi ad parentes suos a sancto BERNARDO edita. = *PL.*, t. CLXXXII, n. 111.

Les feuillets 250^v-251^v sont blancs.

29. (F. 252-252^v). Fin du livre II, chapitres et commencement du livre III des *Dialogi SEVERI de vita S. Martini*.

Parchemin; 252 feuillets, plus cinq de garde; 0^m,316 × 0^m,212; XV^e siècle, sauf le f. 252 qui est du XIII^e; quelques jolies lettrines rehaussées d'or; initiales rouges et bleues; pagination ancienne à l'encre rouge 1-238; signatures A'-S; 1-3. F. 2 et 249^v, il y a la note: *Liber domus silve sancti Martini ordinis Carthusiensis prope Geraldimontem ex donatione fratris Gossuini de Beka huius domus monachi professi condam canonici Curtracensis*, et sur le troisième feuillet de garde, en tête: *Collegii Societatis Iesu, 1623, Y2*, de même, f. 2: *Nunc Collegii Societatis Iesu Lovaniij*. Le timbre rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris, se voit f. 2 et f. 250^v. Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré reproduit à

(1) On trouve ce traité de Nicolas de Lyre imprimé à la suite de sa *Postilla* dans l'édition de Lyon de 1529.

(2) *Ibid.*

(3) Publié à Paris, in-4^o, en 1507. Cf. *Hist. litt. de la France*, t. XVIII, p. 363.

(4) Sur cet auteur, voir FABRICIUS-MANSI, *Bibl. lat. med. et inf. aet.*, t. VI, p. 254-55. L'opuscule que donne ce manuscrit n'est point cité.

(5) Cf. FABRICIUS-MANSI, *Bibl. lat. med. et inf. aet.*, Patavii, 1754, t. V, p. 228, et *Francisci Petrarchae opera*, Basileae, p. 416.

(6) Les dix-huit premières lettres ont été publiées, entre autres par FABRICIUS, *Codex pseudepigraphicus veteris Testamenti*, t. I, p. 441, et les deux dernières, qui sont aussi dans ce manuscrit, dans *Bibl. latina med. et inf. aetatis*, Patavii, 1754, t. IV, p. 91-94. Le mot qui manque, dans cette dernière partie, p. 91, 2^o col., l. 44, est *ille*. Le manuscrit de Bruxelles fournirait d'excellentes leçons pour une nouvelle édition. Cf. t. I de ce catalogue, p. 99.

l'intérieur sur une étiquette en maroquin rouge : *Petri Blesensis epistolae, etc.* ; plus bas, les armes de Belgique et l'inscription : *Bibl. royale* (1).

1499. (21948). — PETRUS BLESENSIS. Epistolae.

1. (F. 1-53^v). Epistole PETRI BLESENSIS. = *PL.*, t. CCVII, nn. 1-11, 14, 12, 13, 15, 17, 19, 18, 20-22, 24, 26, 28, 29, 32-34, 36-38, 40, 42, 44-51, 54-57.

2. (F. 53^v-55^v). [PETRUS BLESENSIS]. Dictamen rigmaticum contra clerum. = *Ibid.*, col. 1127-36.

3. (F. 55^v-64^v). [PETRUS BLESENSIS]. De officio episcopali. = *Ibid.*, col. 1097-1112.

4. (F. 64^v-95^v). [Epistolae PETRI BLESENSIS]. = *Ibid.*, nn. 76, 73, 66, 69, 79, 80, 82, 84-86, 88-96, 98.]

5. (F. 95^v-98^v). ALEXANDER ad soldanum Iconii. = *Ibid.*, col. 1070 sqq.

6. (F. 98^v-162^v). [Epistole PETRI BLESENSIS]. = *Ibid.*, nn. 112, 113, 115-119, 107-111, 126, 127, 143-148, 131, 132, 137, 52, 30, 58-61, 64, 68, 75, 13, 102, 15, 16, 23, 25, 27, 31, 35, 139.

7. (F. 162^v-165). Tabula praedictarum epistolarum quoad rubricas.

8. (F. 165-171). Tabula omnium contentorum in praedictis epistolis.

Papier; 171 feuillets; 0^m,206 × 0^m,14; XV^e siècle. Le manuscrit provient de l'abbaye de Parc, car la cote *I. theca III* de cette bibliothèque se trouve au verso de la couverture et les armoiries de l'abbaye ont été grattées sur les deux plats. Reliure veau; au dos, le titre doré : *Pet. Bles. epistol.* ; tranche rouge.

1500. (II. 2535). — PETRUS BLESENSIS. Opera.

1. (F. 2). Vers sur la prise de Liège.

Inc. Plaga Dei cecare malos consueta flagellis.

Des. Annus tui casus metro reperitur in alto.

Les feuillets 3 et 4 sont blancs.

2. (F. 5-7). Capitula epistolarum magistri Petri Blesensis.

3. (F. 7-86^v). Epistolae PETRI BLESENSIS Bathoniensis ecclesie archidiaconi. = *PL.*, t. CCVII, les lettres nn. 1-98.

4. (F. 86^v-88^v). Instructio fidei. Epistola ALEXANDRI pape. = *Ibid.*, col. 1069-78.

5. (F. 88^v-91). [Epistola PETRI BLESENSIS]. = *Ibid.*, nn. 99-101.

6. (F. 91-91^v). Summo pontifici HENRICUS rex Anglie.

7. (F. 91^v-114^v). [PETRI BLESENSIS epistole]. = *PL.*, t. CCVII, nn. 159, 156, 165, 175, 153, 154, 130, 155, 102-127.

8. (F. 114^v-120). [PETRUS BLESENSIS]. De institutione episcopi. = *Ibid.*, col. 1097-1112.

(1) Cf. sur ce manuscrit, P. THOMAS, *Catal. des manuscrits de classiques latins de la Bibliothèque royale de Belgique*, p. 33.

9. (F. 120-127^v). [PETRI BLESENSIS epistolae]. = *Ibid.*, nn. 143, 134-135.

10. (F. 127^v-131^v). Invectiva in quendam qui opera sua depravat. = *Ibid.*, col. 1113-26.

11. (F. 132-147). [PETRI BLESENSIS epistolae]. = *Ibid.*, nn. 137-142, 152, 144-151.

12. (F. 147^v-150^v). Tractatus EIUSDEM de transfiguratione Domini. = *Ibid.*, col. 777-91.

13. (F. 150^v-152). Sermo EIUSDEM de conversione beati Pauli apostoli. = *Ibid.*, col. 791-95.

14. (F. 152-159^v). Tractatus EIUSDEM de confessione et penitencia. = *Ibid.*, col. 1077-97.

15. (F. 159^v-164). Opusculum EIUSDEM de iherosolimitana peregrinatione. = *Ibid.*, col. 1057-67.

16. (F. 164-175^v). Compendium super Iob magistri PETRI BLESENSIS. = *Ibid.*, col. 795-825.

17. (F. 175^v-179^v). Tractatulus beatissimi IHERONIMI doctoris ecclesie orthodoxe ... Rustico monacho missus. = *PL.*, t. XXII, col. 1072.

18. (F. 179^v-183). Diversa notabilia scripta beatorum IERONIMI, AUGUSTINI, etc.

19. (F. 183^v-184^v). Rigmus de instabilitate et mundi miserabili condicione.

[mundo

Inc. Heu, quam vana vanitas, quam fallax inanitas, quidquid est in
Si quid habet placidum, totum reddit acidum ve quod est in fundo.

Des. Fidei sinceritas et verborum veritas mundum reliquerunt,
Simulata gratia, fallax et fallacia locum intraverunt.

20. (F. 184^v). Index.

21. (F. 184^v). Sauf-conduit de l'empereur SIGISMOND pour assister au concile de Constance.

22. (F. 185). Traduction anglaise du début du traité de Pierre de Blois sur le pèlerinage à Jérusalem (XIX^e siècle).

Papier, au filigrane de l'écu abbatial, mais tous les cahiers sont entourés d'un feuillet en parchemin; 185 feuillets; 0^m,288 × 0^m,21; XV^e siècle. F. 147, on lit le nom du scribe : *Frater Karolus de Claravalle me fecit*, et f. 1 il y a ces notes successives de provenance : *Iste liber pertinet Martino de tongris alias Groetians minimo organistarum quem scripsit presbiter dompnus Karolus de Claravalle, digressus tunc venerabilis confessor de venerabili cynobio Herkenrodensi. Martinus. — Perempto capitulo ecclesie sancti Sulpicii (1) modo est bibliothecae Tongerloensis. — Phillipps ms. 6218.* La Bibliothèque royale a acquis ce manuscrit en 1900. Reliure

(1) Il s'agit sans doute du chapitre de l'église de Saint-Sulpice à Diest, fondé en 1457 et supprimé en 1802. Voir F. J. RAYMAEKERS, *Het kerkelijk Diest*, pp. 8 et 153.

ancienne, dont il ne reste qu'un plat; ais de bois recouverts de veau estampé; restes de fermoirs en cuivre.

1501. (1770-77). — INNOCENTIUS III PAPA. De canone missae. — Vies de saints.

1. (F. 1-41^v). INNOCENTIUS papa III. Super *Te igitur*. = *PL.*, t. CCXVI, col. 773 sqq.

2. (F. 42-70). Vita pie Lutgardis de Aquiria sanctissime monialis. = *BHL.*, n. 4950.

3. (F. 71-76). Exordium de vita et honestate beate Ide comitisse Bolonie et eius miraculis. = *BHL.*, n. 4141.

4. (F. 76-91^v). [Vita S. Gudile virginis]. = *BHL.*, n. 3684.

5. (F. 91^v-92). Qualis debeat esse confessor. *Inc.* Confessor vicarius Christi medici et iudicis summi. *Des.* aliud expedire consulentem.

6. (F. 93-106^v). Vita beate Elisabeth lantgravie Thuringie. = *BHL.*, n. 2493.

7. (F. 107-108). [Miraculum S^{ae} Elisabeth]. = *BHL.*, n. 2511.

8. (F. 109-120^v). [Vita altera S^{ae} Elisabeth]. = *BHL.*, n. 2508.

9. (F. 121-125). [HENRICUS DE GANDAVO. Catalogus scriptorum ecclesiasticorum] (1).

Parchemin; 125 feuillets; 0^m,28 × 0^m,20; XIV^e siècle; deux colonnes, sauf f. 1 et 121-125; initiales rouges et bleues. F. 1, on lit : *Collegii Societatis Iesu Brugis ex dono R^{mi} D. Jacobi Pamelii*. Reliure ancienne, ais de bois recouverts de peau de truie estampée; sur le premier plat, fer à froid des armoiries de Pamele avec la devise : *Daultrui te pas mesle* (2).

1502. (II. 1088). — GUILLIELMUS AUTISIODORENSIS. Opera.

1. (F. 1-270). Summa magistri GUILLIELMI Autisiodorensis de fide (3).

2. (F. 270^v-297). Summa de officiis ecclesiasticis. *Inc.* Ierusalem autem de libera est 1. ad gal. III^o. mater nostra dicitur propter tria.

3. (F. 297^v-300^v). [Tabula summae magistri Guillielmi].

4. (F. 301-301^v). Commentaire sur le texte *vani sunt ... homines in quibus non subest Dei sapientia*. Sap. XIII.

Parchemin; 301 feuillets; 0^m,327 × 0^m,212; XIV^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et bleues; signatures i-xxiii. F. 298^v, il y a la note : *VIII lib. et demi parisienses*. Serait-ce le prix du volume? Ce volume provient de l'abbaye d'Alne (4), mais tout indice extérieur de cette provenance a disparu. F. 1, il y a la cote : 4669 Ph[illips]. Demi-reliure toile anglaise; au dos, les titres dorés des deux traités.

(1) Publié par FABRICIUS, *Biblioth. eccles.*, part. II, p. 118.

(2) Sur ce manuscrit, voir *AA. SS.*, Ian. t. I, p. 514; April. t. II, p. 141; Iun. t. III, p. 234, et *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Brux.*, t. I, p. 293-97.

(3) Sur les éditions de ce traité, voir HAIN, *Repert. bibliogr.*, t. II, p. 561.

(4) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 246, decuria septima.

1503. (3672-90). — ADAMUS DE SANCTO VICTORE. Opera.

1. (F. 1-64). Lectura ... de summa ... et fide catholica expleta in studio Heydelbergensi per CONRARDUM DE SOLTANO sacre theologie doctore anno Domini 1388^o die 19^a mensis aprilis (1).

2. (F. 65-66^v). Table du précédent traité.

Les feuillets 67 et 68 sont blancs.

3. (F. 69-125^v). Explications de divers passages de l'Écriture. *Inc.* Vadam et videbo hanc visionem magnam.

Les feuillets 126-127^v sont blancs.

4. (F. 128-132). Epistola de fuga mundi. *Inc.* Nolite diligere mundum neque ea que in mundo sunt.

5. (F. 132-132^v). Extraits divers.

6. (F. 133-153). Expositiones prologorum super libros bible per literatum Britonem collecte [ADAMUM DE SANCTO VICTORE] (2).

7. (F. 153^v-155). Algorismus metrificatus.

8. (F. 155^v-156). Poème chronologique sur l'année 1366.

Inc. Doctor et hortator animum vult eger egentem.

Des. Lux egrum quaerit heros iustum metuendo.

9. (F. 156). Courts extraits de S. BERNARD et de S. AMBROISE.

10. (F. 156^v). Extrait, en flamand. *Inc.* Na dat wi wt der leeraers sententien ghemerken connen. *Des.* Die ghene die dese materie bat verstaen ceft dat wi jet ghescreven hebben dat te begripene es.

11. (F. 157-160^v). Quidam tractatus de horis canonicis dicendis. *Inc.* Sepcies in die laudem dixi tibi, scilicet in psalmo. *Des.* Sic qui devote septem horas cotidie Deo dicit vitam eternam pro qua laborat habebit. Quam nobis concedat Deus in secula seculorum benedictus. Amen (3).

12. (F. 160^v). Ex libro de erudicione religiosorum.

13. (F. 160^v-166). Capitulum XIII HUBERTI super regulam sancti Augustini de laudibus caritatis (4).

14. (F. 167-168). Epistole due magistri GERARDI GROOT doctoris (5).

15. (F. 168-170^v). Extraits de divers traités ascétiques.

Les feuillets 171-172^v sont blancs.

16. (F. 173-174). Copia bulle domni EUGENI pape de confirmatione et additione indulgentiarum in festo venerabilis sacramenti (6).

(1) Sur cet auteur et ce traité encore inédit, voir K. KRAUSE, dans *Forschungen zur Deutschen Geschichte*, 1879, t. XIX, p. 600-8.

(2) Ce traité est signalé dans *PL.*, t. CXCVI, col. 1421.

(3) Cf. supra, p. 368, n. 28.

(4) Cf. QUÉTIF-ECHARD, *Script. ord. praed.*, t. I, p. 145, n. 2.

(5) Cf. J. G. ACQUOY, *Gerardi magni epistolae XIV*, Amstelodami, 1857, p. 12-13.

(6) *Bullarium diplomatum et privilegiorum sanctorum romanorum pontificum*, August. Taurin., 1859, t. V, p. 14. Cf. supra, p. 341.

17. (F. 175-176). Bulla [MARTINI V] super festo sacramenti (1).
 18. (F. 177-178). Bulla [BONIFACII IX] super novo festo visitationis beate Marie (2).
 19. (F. 178-179). Sermo [in festo visitationis]. *Inc.* Quamquam, fratres carissimi, huius diei sollempnitas et festi mira sublimitas.
 20. (F. 179-180). Questio cur natalicia sanctorum in leticia, Paraseven vero in tristitia celebremus a BEDA edita. *Inc.* Questionem a tua dilectione mihi propositam.
 21. (F. 180^v-186). Originalia sanctorum. — Catalogue des ouvrages de SS. Denis, Augustin, Ambroise, Jérôme, Grégoire, Bernard, Hilaire, Isidore, Chrysostome, etc.
 22. (F. 185-187^v). Bulle de NICOLAS IV aux frères et sœurs de l'ordre de la Pénitence (3).
 Le feuillet 188-188^v est blanc.
 23. (F. 189-194^v). Speculum anime editum a magistro HENRICO DE HASSIA (4).

Papier, aux filigranes de la tête de bœuf, de l'oiseau, de l'ancre, de la lettre P, du rabot, de l'*Agnus Dei*; 194 feuillets, plus quatre de garde; 0^m,295 × 0^m,202; XV^e siècle; deux colonnes; signatures a-gz. F. 1, on lit dans la lettrine *Bethleem*, et au bas de la page : *Liber monasterii de Bethleem prope Lovanium canonicorum regularium ordinis sancti Augustini*, et f. 194^v : *Pertinet monasterio B. Marie in Bethleem prope Lovanium*. Demi-reliure moderne; dos en maroquin fauve, avec le titre doré : *Conrardi de Soltano de scientia divina cum aliis opusculis Bⁱ Hieronymi, Bⁱ Bernardi, Bⁱ Augustini et aliorum, XV^e sacc.*; plus bas, le chiffre couronné de Léopold I^{er}.

1504. (2603-19). — RECUEIL.

1. (F. 1). Table des matières.
 2. (F. 2-52). Tractatus GERARDI MAGNI contra Focaristas (5).
 3. (F. 53-68^v). Fragment d'un commentaire sur S. Matthieu XXI-XXVI. *Inc.* Cum appropinquasset Ihesus Ierosolymam etc. Matth. XXI. Notandum quod evangelium illud inservit duabus dominicis.
 4. (F. 69-79^v). Collationes fratris EGIDI socii sancti Francisci (6).
 5. (F. 80-90). Stella clericorum. *Inc.* Quasi stella matutina in medio nebule, id est peccatorum (7).

(1) *Ibid.*, t. IV, p. 731.

(2) *Ibid.*, t. IV, p. 602.

(3) *Ibid.*, t. IV, p. 90.

(4) Cf. supra, pp. 366 et 373, note 3.

(5) Publié par J. CLARISSE dans *Archief voor kerkelijke Geschiedenis*, t. I, p. 364-79, t. II, p. 307-95, t. VIII, p. 5-107.

(6) Voir WADDING, *Script. ord. Min.*, p. 5.

(7) Cf. supra, p. 368, n. 22.

Les feuillets 90^v-92^v sont blancs.

6. (F. 93-96^v). *Quedam dicta beati GREGORII extracta de moralibus, quedam de vitiis, quedam de virtutibus, quedam de exercitiis ad virtutes etc.*

7. (F. 97-100^v). [HUGO DE SANCTO VICTORE]. *Quedam expositio mistica canonis misse. = PL., t. CLXXVII, col. 455 sqq.*

8. (F. 100-104). *Extraits des Pères.*

9. (F. 105-127^v). *Moniciones sancti EFFREM dyaconi ad monacos (1).*

10. (F. 127^v-133). *Quedam visio. Inc. In quodam cenobio quidam monachus iuvenis. Des. Locus vulneris pilis tantum nudus erat. Expliciunt visiones.*

11. (F. 133). *Copia determinationis domini IOHANNIS episcopi Cameracensis de tribus punctis.*

12. (F. 133^v-154^v). *Liber de gradibus divini amoris in thetonico ydiomate compilatus per fratrem IOHANNEM DE RUYSBROEC primum priorem monasterii Viridis Vallis, sed postea a magistro dicto GROOT in latinum translatus (2).*

13. (F. 154^v-155^v). *Epistola domini GWIDONIS DE CHUSI monachi ordinis Carthusiensis qua increpatur novicius qui cum fervidus et devotus ordinem intrasset tepidus cupit ad ordinem suum priorem reverti (3). — Il n'y a ici que le prologue.*

Les feuillets 156-158 sont blancs.

14. (F. 159-193). [Sermones].

a) *Dominica prima adventus Domini. [FULGENTIUS]. = PL., t. LXV, col. 947.*

b) *Dominica secunda adventus Domini. Inc. Vocat nos divina pietas.*

c) *Dominica tertia adventus Domini. Sermo MAXIMI. = PL., t. LVII, col. 843.*

d) *Dominica quarta adventus. Inc. Appropinquante nobis, dilectissimi fratres, die desiderata.*

e) *Sermo beati LEONIS pape de natali Domini. = PL., t. LIV, col. 199.*

f) *Item EIUSDEM unde supra. = Ibid., col. 208.*

g) *Sermo beati MAXIMI episcopi de natali Domini. = PL., t. LVII, col. 251.*

h) *Sermo beati MAXIMI episcopi de natali Domini. = Ibid., col. 541.*

i) *Sermo SEVERIANI episcopi unde supra. = PL., t. XXXIX, col. 1990.*

k) *Sermo sancti AUGUSTINI episcopi. = Ibid., col. 1001.*

(1) Cf. supra, pp. 25 et 380.

(2) Voir plus haut, p. 382, n. 13.

(3) Cf. J. VAN DEN GHEYN, *Catalogue des manuscrits de la Bibliothèque royale de Belgique*, t. I, p. 210 et plus haut, t. II, p. 22.

- l) Sermo AUGUSTINI cuius supra. = *Ibid.*, col. 1987.
- m) Sermo AUGUSTINI cuius supra. = *Ibid.*, col. 1655.
- n) Sermo sancti AUGUSTINI episcopi unde supra. = *Ibid.*, col. 1997.
- o) In natali sancte Agnetis sermo MAXIMI. = *PL.*, t. LVII, col. 643.
- p) Sermo sancti AMBROSII unde supra. = *PL.*, t. XVII, col. 701.
- q) In cathedra sancti Petri omelia sancti AMBROSII. *Inc.* Hec turbe quidem ociosa est opinio.
- r) In capite ieiunii omelia beati MAXIMI. = *PL.*, t. LVII, col. 301.
- s) In dominica prima in XL^a sermo sancti LEONIS pape. = *PL.*, t. LIV, col. 268.
- t) Infra octavam epyphanie sermo beati LEONIS. = *Ibid.*, col. 244.
- u) Sermo AUGUSTINI episcopi in octava die epyphanie. = *PL.*, t. XXXIX, col. 2011.
- v) In octava epyphanie sermo beati MAXIMI episcopi. = *PL.*, t. LVII, col. 272.
- w) CRISOSTOMUS super Mattheum de opere imperfecto. — Court extrait.
- x) De sancta cruce sermo IOHANNIS CRISOSTOMI. = *PG.*, t. XLIX, col. 399.
- y) SERMO EIUSDEM unde supra. = *PL.*, t. L, col. 815.
- z) Table des homélie de S. JEAN CHRYSOSTOME *super Matthaëum.*
- aa) In die cinerum sermo latinus.
- bb) De omnibus sanctis sermo latinus.
Les feuillets 186-187^v sont blancs.
- cc) Plans et notes de sermons.
Les feuillets 193^v-196^v sont blancs.
15. (F. 197-245). [Postille compendiose super Lucam].
16. (F. 245^v-250). Tabula secundum ordinem alphabeticum postille compendiose super Lucam.
17. (F. 250^v). Notes diverses.
18. (F. 251-263). Compendium de ortu nativitatis Ihesu Christi et beate Marie virginis. *Inc.* Nostis, karissimi, qualiter Sathanas subintravit viscera Iude.
Les feuillets 263^v-264^v sont blancs.
19. (F. 265-267^v). Ordinarius cantus et lecture sororum ordinis sancti Salvatoris in horis diurnis pariter et nocturnis immutabiliter observandus.
20. (F. 267^v). Revelatio facta per Dominum nostrum Ihesum Christum beate Birgitte vidue.
21. (F. 268-272^v). Regula sancti Salvatoris mundi.
22. (F. 272^v-275). Missa cotidiana beate virginis Marie secundum ordinem sororum ordinis beate Birgitte. Missa de commendatione beate Marie que observatur VI^{ta} feria post *Iubilate*.

23. (F. 275-275^v). [Bulla Urbani VI] (1).
24. (F. 276). Oratio de sancta Byrgitta.
25. (F. 276-288). [PETRUS DE ALAVASTRA]. Sermo angelicus de excellentia beate Marie virginis (2).
26. (F. 289-294). Additiones ordinis sancti Salvatoris.
27. (F. 294-294^v). Copia bulle confirmationis.
28. (F. 295-301^v). Suite de l'ordinaire (n. 19, p. 400).
29. (F. 302-302^v). Qualiter regula sancti Salvatoris beate Birgittæ erat tradita de benedicto ore Christi (3).

Papier, filigrane de la tête de bœuf surmontée de la croix; de-ci de-là quelques feuillets de parchemin; 302 feuillets, plus six de garde; 0^m,21 × 0^m,135; XV^e siècle. F. 154^r, on lit : *Qui me scribebat Egidius Gerardi nomen habebat*. F. 1, il y a la note : *Liber cenobii sancti Pauli in Zonia ordinis sancti Augustini cameracensis dyocesis, pro libraria* ; f. 104^v : *Liber monasterii sancti Pauli in Zonia quod dicitur vulgariter Rodencloester canonicorum regularium ordinis sancti Augustini apud Bruxellam cameracensis dyocesis* ; f. 154 : *Liber cenobii beati Pauli de rubea valle in Zonia*, et f. 197 : *Liber sancti Pauli in Zonia ordinis sancti Augustini cenobii*. F. 288^v, il y a cette note : *Cont sy allen liden dat ic joffer Margarete*. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris, *R. F.*, se trouve f. 1 et f. 302^v. Demi-reliure moderne, dos en maroquin brun avec le titre doré : *Gerardi magni de clericis concubinariis cum aliorum opusculis, XV saec.* ; plus bas, le monogramme couronné de Léopold I^{er}.

1505. (2285-301). — FLORETUS.

1. (F. 1^v). Table des matières.
2. (F. 2-45^v). [Magister EVERARDUS FOECK, decanus Traiectensis. *Resolutiones certorum dubiorum*] (4).
3. (F. 45-46^v). HUGO DE SANCTO VICTORE. Extrait.
4. (F. 47-48). [De septem capitalibus viciis].
5. (F. 48^v-52^v). *Speculum peccatorum beati AUGUSTINI*. = *PL.*, t. XL, col. 983 sqq.
6. (F. 53-53^v). Sentences diverses.
Le feuillet 54 est blanc.
7. (F. 55-76^v). Summa ALBERTI de laudibus beate Marie (5).
Les feuillets 77 et 78 sont blancs.
8. (F. 79-104^v). Floretus. *Inc.* Nomine floretus liber incipit ad vota setus, semper erit tutus eius documenta secutus. *Des.* Laus tibi rex datur, nam libri finis habetur.
9. (F. 105-106). Tabula floreti.

(1) Publiée *Act. SS.*, Oct. t. IV, p. 466.

(2) Cf. C. DE VISCH, *Bibl. script. sacri ord. cisterc.*, p. 259.

(3) Cf. *Act. SS.*, Oct. t. IV, p. 419.

(4) Cf. FOPPENS, *Bibl. Belgica*, p. 271.

(5) *Alberti Magni opera omnia*, Lugduni, 1651, t. XX, p. 157.

10. (F. 107-138^v). Tractatus de tribus votis substantialibus, authore HENRICO A COESVELDIA priore Carthusianorum prope montem S. Gertrudis (1).

11. (F. 139-139^v). Epistola Urbani quinti pridie nonas aprilis pontificatus anno septimo.

Le feuillet 140 est blanc.

12. (F. 141-170). Tractatus magistri ALANI super cantica cantorum. = *PL.*, t. CCX, col. 51 sqq.

13. (F. 171-182^v). Stella clericorum (2).

14. (F. 183-183^v). Hymnus de beata Waldetrude electa. = *RH.*, n. 19276.

15. (F. 184-192). Legenda sancte Waldetrudis electe. = *BHL.*, n. 8777.

16. (F. 192^v). Sequentia de beata Waldetrude electa. *Inc.* Laudet Deum plebs devota.

Le feuillet 193 est blanc.

17. (F. 194-200). Legenda sancti Iudoci. = *BHL.*, n. 4505. — L'épître dédicatoire et le prologue manquent.

18. (F. 200^v-204^v). [Office de S. Josse] (3).

19. (F. 205-219). Liber AMBROSII episcopi Mediolanensis de Thobia. = *PL.*, t. XIV, col. 759 sqq.

Les feuillets 219^v-220^v sont blancs.

20. (F. 221-240). Meditationes venerabilis patris domni GUIGONIS prioris Cartusie de veritate et pace (4).

Le dernier feuillet de garde contient un fragment de l'évangile de S. Matthieu, chap. xx.

Papier, avec nombreux feuillets de parchemin intercalés; 240 feuillets; 0^m,217 × 0^m,147; XV^e siècle. F. 1^r, on lit : *Iste liber pertinet monasterio canonicorum regularium in Korsendonc*; f. 140^v et 182^v : *Iste liber est monasterii de Korsendonc prope Turnout in Brabantia*. La cote de cette bibliothèque, X. 4, se trouve f. 1^v. Reliure ancienne restaurée, veau brun estampé.

1506. (1711-12). — CORRECTORIUM BIBLICUM.

1. (F. 1). Prologus. *Inc.* Litterarum sacrarum latine interprete beato Ieronimo in epistola ad Sunnam et Fretelam fratres. *Des.* Ubi evidens est rivulum a suo fonte procedere praeceptis approbare.

(1) Sur Henri van Coesveldt † 1410, au Val-de-Grâce près de Bruges, voir A. J. VAN DER AA, *Biographisch Woordenboek der Nederlanden*, t. III, p. 597. Cf. supra, p. 366, n. 5.

(2) Cf. supra, pp. 368, 398.

(3) Cf. supra, p. 332. Cependant cet office est différent de celui du manuscrit n. 1409 (9737-38) qui a été publié par les Bollandistes, *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruvell.*, t. II, p. 350-55.

(4) Voir *PL.*, t. CLIII, col. 592.

2. (F. 1-82). [Correctorium biblicum]. *Inc.* E genesi. 1. ca. a. terra autem erat inanis et vacua. *Des.* anti. vilibus isto infra partem eius de libro vite.

3. (F. 83-122). [Grammatica graeca et hebraica]. *Inc.* Quoniam quaedam glose mencionem faciunt de litteris et vocabulis hebreis et grecis. *Des.* thisselen. november.

Parchemin; 122 feuillets; 0^m,268 × 0^m,185; XIV^e siècle; deux colonnes. F. 1, on lit: *Augustini Hunaei codex fuit*, et *Societatis Iesu Ant. D.P.* Reliure moderne, veau raciné,

1507. (II. 1144). — COMMENTARIJ BIBLICI.

1. (F. 1-50). [Commentarius in Genesim]. *Inc.* In principio tabernaculum Moysi coopertum erat cortinis.

2. (F. 51-148). [Commentarius in Isaiam]. *Inc.* Audite, celi, et auribus percipe terra.

Parchemin; 148 feuillets, plus deux de garde; 0^m,274 × 0^m,19; XIV^e siècle; deux colonnes; signatures I-VI, I-XII. Au verso du feuillet de garde, on lit : *Liber ecclesie sancte Marie de Aina. Qui eum abstulerit vel aliqua fraude alienaverit. Anathema sit*, et f. 148 : *Liber sancte Marie de Aina, servanti benedictio. Amen* (1). Au premier feuillet de garde, il y a la cote 4726 de la collection Phillipps, d'où ce volume a été acquis par la Bibliothèque royale en 1888. Demi-reliure, toile anglaise; au dos, le titre doré : *De tabernaculo Moysi*.

1508. (20030-32). — FLORES PARADISI. Extraits des œuvres des Pères.

1. (F. 1-18^v). Prologue et tables.

2. (F. 19^v-49). Excerpta sententiarum de libris beati AUGUSTINI episcopi.

3. (F. 49-55). [Excerpta ex HIERONYMO].

4. (F. 55-66). [Ex AMBROSIO].

5. (F. 66^v). Epistola sancte HILDEGARDIS ad Colonienses de futura turbatione clericorum. = *PL.*, t. CXCVII, col. 244-53.

6. (F. 66^v). Epistola sancte Hildegardis ad sanctum Bernardum. = *Ibid.*, col. 189-90.

7. (F. 67-80). [Excerpta ex GREGORIO].

8. (F. 80-109). Ex opusculis sancti BERNARDI.

9. (F. 109-110^v). [Ex AMBROSIO].

10. (F. 111-117^v). [Ex AUGUSTINO].

11. (F. 117^v-126^v). [Ex HIERONYMO, HILARIO, ISIDORO, CASSIDORO].

12. (F. 126^v-133). [Ex diversis Patribus et SENECA].

13. (F. 133-137^v). [Ex CHRYSOSTOMO].

(1) C'est probablement le volume désigné par SANDERUS, *Bibl. belg. mss.*, part. II, p. 238, dans la *prima classis, decuria nona*, sous le titre *Glossa in Genesim et Isayam, sine Auctore*.

14. (F. 137^v-147^v). [EX GILLEBERTO super *Canticum*, sermonibus PETRI RAVENNATIS, LEONE papa, ORIGENE].
 15. (F. 147^v-157^v). [EX IOHANNE CHRYSOSTOMO].
 16. (F. 157^v-187^v). [EX SENECA, BOETIO, CICERONE].
 17. (F. 187^v-191^v). [EX diversis].
 18. (F. 191^v-206^v). EX OVIDIO, HORATIO, CLAUDIANO, IUVENALI, LUCANO, etc.
 19. (F. 206^v-230^v). [EX BERNARDO et AUGUSTINO].

Parchemin; 231 feuillets; 0^m,35 × 0^m,245; XIV^e siècle; deux colonnes. F. 231, on lit: *Liber sancte Marie de Villari in Brabantia*. Reliure veau raciné; au dos, le titre doré: *Flores Patrum*.

1509. (10001-02). — Extraits des Pères, sous le titre de *Manipulus florum*.

Ce traité est divisé en trois livres.

1. (F. 1-4^v). De Deo in communi, de Trinitate, de Christo, de Sancto Spiritu, de Corpore Christi, de beata virgine Maria, de bonis angelis, de malis angelis, de prelatiis, de predicatoribus, de bonis religiosis, de malis religiosis, de iudicibus, de advocatis, de dignitate, de contemptu mundi, de morte, de iudicio ultimo.

2. (F. 22-46). Ordinatio secundi voluminis. De mala societate, de temptatione, de cogitatione, de delectatione, de consensu, de superbia, de avaricia, de luxuria, de ira, de gula, de invidia, de accidia, de odio, de malitia, de simulatione, de duricia cordis, de ingratitude, de periurio, de blasphemia, de mendacio, de falso testimonio, de excusatione, de maledicto, de verbis ociosis, de multiloquio, de murmuratione, de detractione, de adulatione, de contumelia, de negociatoribus, de usurariis, de raptoribus, de fornicatoribus, de peccato contra naturam, de adulteriis, de homicidio, de furto, de symonia, de sortilegiis, de penis inferni.

3. (F. 47-69). Ordinatio tertii voluminis. De gratia, de voluntaria paupertate, de fide, de spe, de caritate, de quatuor virtutibus, de iustitia, de prudentia, de fortitudine, de temperantia, de virginitate, de humilitate, de obedientia, de penitentia, de contritione, de confessione, de satisfactione, de elemosina, de oratione, de ieiunio, de contritione, de pace, de patientia, de disciplina, de laude crucis, de perseverantia, de gaudiis paradisi.

4. (F. 70-106). [ALEXANDER DE VILLA DEI. Compendium] (1).

Parchemin; 106 feuillets, plus cinq de garde; 0^m,192 × 0^m,125; XV^e siècle; très jolies initiales rouges et bleues rehaussées d'or. F. 1. on lit: *Societatis Iesu Mechliniae P. ex dono de testamento D. Barentij ex Bibl. Mai.* L'estampille rouge,

(1) Cf. FABRICIUS-MANSI, *Bibl. lat. med. et inf. aet.*, Patavii, 1754, t. I, p. 68.

aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale, se trouve f. 1 et f. 106^v. Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré : *Manipulus florum*, qui se trouve aussi à l'intérieur sur une étiquette de maroquin rouge; en dessous, les armes de Belgique et l'inscription *Bibl. royale*.

1510. (II. 1766). — FRAGMENTS.

Ce volume est composé de fragments de feuillets de garde d'anciens manuscrits.

1. (F. 1-1^v). [De propheta]. — Ce fragment est en écriture anglo-saxonne.

2. (F. 2-3^v). Fragments d'un commentaire sur la Genèse.

3. (F. 4-4^v). [De baptismo].

4. (F. 5^v-6^v). Tractatus AURELI AUGUSTINI episcopi primus de psalmo centesimo primo.

5. (F. 7). Table des matières d'un volume d'œuvres de S. Augustin, puis

a) Vox libri.

Inc. Barbara quid prodest aut quid romana trophea

Nosse, quid ethereas solis adire vias?

b) Vox librarii.

Inc. Quid prodest homini celi lustrasse meatus?

6. (F. 8-9^v). [BEDA. De aetatibus mundi].

7. (F. 9-9^v). Omelia sexta.

8. (F. 10-10^v). Commentaire biblique.

9. (F. 11-12^v). Commentaire biblique.

10. (F. 13-14^v). [Vitae patrum].

11. (F. 15-16^v). [De abbate].

12. (F. 17-17^v, 20-20^v). De quatuor virtutibus cardinalibus.

13. (F. 18-19^v). Fragments de droit canon : *de bigamis, de clericis peregrinis*.

14. (F. 21-22^v). [De confessione].

15. (F. 23-24^v). [De sacramentis].

16. (F. 25-25^v). Liber sancti AUGUSTINI episcopi de fide et operibus.

17. (F. 26-26^v). [De paupertate religiosa].

18. (F. 27-27^v). [De filio prodigo].

19. (F. 28-29^v). Décrétales.

20. (F. 30-33^v). Fragment d'un traité de théologie.

21. (F. 34-34^v). De taciturnitate, de humilitate.

22. (F. 35-36^v). Circa prologum libri summarum.

23. (F. 37-37^v). Fragment de droit canon.

24. (F. 38-39^v). Fragment d'un ordinaire de monastère (de chanoines de Saint-Augustin?) *ad missam conventualem, de processio-nibus*.

25. (F. 40-40^v). [CASSIANI collationes]. De providentia sive contemplatione.

26. (F. 41-42^v). [Sermo de circumcissione Christi].

27. (F. 43-44^v). Fragment de commentaire sur l'Écriture.

28. (F. 45-46^v). Fragments de droit canon *Liber secundus de iudiciis*.

29. (F. 47-48^v). Décrétales.

30. (F. 49-51^v). [Sermo de penitentia].

Dans les marges du f. 49^v, il y a une recette : *Cura qualiter contra ablationem urine seu eius diminutionem*.

31. (F. 52-53^v). Fragment d'un commentaire sur l'Apocalypse.

32. (F. 54-56^v). Extraits de droit canonique.

33. (F. 57-57^v, 59-59^v). *De proximo brevis doctrina*.

34. (F. 58-58^v). Extraits de commentaire sur l'Écriture.

35. (F. 60-61^v). Courts extraits.

36. (F. 62-68^v). Fragments de droit canon.

37. (F. 69-69^v). Extrait de la Vie de S. Augustin.

38. (F. 70-71^v). De iustificatione.

39. (F. 72-73^v). [De diabolo].

40. (F. 74). *Encomion et laus scripturae sacrae*.

41. (F. 75-77). [De sacramentis].

Parchemin; 77 feuillets de diverses dimensions; X^e-XVI^e siècle. F. 1, on lit : *Istum librum dedit nobis Wilhelmus de Mommalia canonicus sancti Lamberti Leodiensis. Oretis Deum pro anima ipsius quia benefactor et amicus noster magnus fuit. — Sum de Molinis. Hoc volumen est monasterii Molinensis*. F. 8, il y a le nom propre : *Niclaus de Cueninck anno 1590*, et f. 13, la note : *Liber monasterii Stabulensis*, et f. 23 : *Franciscus de Leeuw I. N. 1*. Demi-reliure parchemin.

SUPPLÉMENT (1)

1511. (5339-44). — PRUDENTIUS. Opera (2).

1. (F. 1-19). Liber cathemerinon. = *PL.*, t. LIX, col. 775 sqq.
2. (F. 19^v-70). Liber peristephanon. = *PL.*, t. LX, col. 275-591.
3. (F. 70^v-75). Ymnus natalis Domini, Epiphaniae. = *PL.*, t. LIX, col. 888-914.
4. (F. 75-92). Liber apotheseos. = *Ibid.*, col. 921-1006.
5. (F. 92-106^v). Amartigenia. = *Ibid.*, col. 1007-78.
6. (F. 106^v-120^v). Psychomachia. = *PL.*, t. LX, col. 4-90.
7. (F. 120^v-148). Liber contra Symmachum. = *Ibid.*, col. 118-258.
8. (F. 148). [PRUDENTIUS]. De opusculis suis.
9. (F. 148-150^v). Capitula quaedam de veteri et novo testamento.

Parchemin ; 150 feuillets ; 0^m,243 × 0^m,16 ; XI^e siècle ; plusieurs feuillets sont écrits sur deux colonnes. Ce manuscrit provient de l'abbaye de Gembloux, bien qu'il n'y ait aucun indice extérieur de cette provenance. Reliure veau brun ; au dos, le titre doré : *L. Metric. Prudenti.*

1512. (310). — S. AUGUSTINUS. Ultima quinquagena psalterii. = *PL.*, t. XXXVII, col. 1293 sqq. (3).

Parchemin ; 238 feuillets, plus trois de garde ; 0^m,388 × 0^m,275 ; XV^e siècle (1421), car on lit, f. 238^r : *Iste liber est fratrum canonicorum monasterii Rubee vallis alias sancti Pauli in Zonia et a quodam fratre eiusdem monasterii regulari concanonico scriptus est et finitus anno Domini M^o. CCCC. XXI, XVIII die february secundum morem et modum dyocesis Cameracensis.* Deux colonnes ; initiales rouges et bleues ; titre courant, signatures *a-A-F*. F. 1, une petite miniature représente le Christ

(1) Ce supplément comprend la description d'un certain nombre de volumes de Patrologie qui, pour des circonstances diverses, n'ont pu être insérés à leur rang. Nous avons décrit dans ce tome deuxième du Catalogue tous les ouvrages de Patrologie qui se trouvaient à la Bibliothèque royale à la date du 1^{er} juillet 1902.

(2) Voir plus haut, p. 46-52.

(3) Voir plus haut, p. 115-23.

au jardin des Oliviers. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris *R.F.*, se trouve f. 1 et f. 238^v. Reliure ancienne restaurée, ais de bois recouverts de veau brun estampé.

1513. (9137). — S. AUGUSTINUS. De civitate Dei (1).

1. (F. 1). Fragment. *Inc. mutil.* cum mundus ipse in maligno positus sit. *Des. mutil.* nobis utendum esse cognoscimus.

2. (F. 1^v-215). Libri AURELII AUGUSTINI de gloriosissima civitate Dei numero XXII. = *PL.*, t. XLI, col. 315 sqq.

Parchemin; 215 feuillets; 0^m,402 × 0^m,28; XII^e siècle; deux colonnes; superbes lettrines en toutes couleurs à entrelacs et à personnages. F. 1, il y a la note : *Iohannes Livineus canonicus sancti Petri Leodiensis*, et en dessous : *Collegii Societatis Iesu, Antverpiae 1599 D. P.* Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré, reproduit à l'intérieur sur une étiquette en maroquin rouge : *S. Augustinus. De Civitate Dei.*

1514. (20942). — S. GREGORIUS MAGNUS. Excerpta (2).

1. (F. 1-1^v). Extraits.

2. (F. 2-99^v). Ex operibus b. GREGORII pape, ex moralibus, ex dyalogo, etc.

3. (F. 100-115). Ex CHRISOSTOMO.

4. (F. 115^v-116). Minutiones et pitantiae conventus. — Dans l'énumération des fêtes, on distingue S. Eucher, S. Libert, S. Remi, S. Martin, S. Trond, S. Nicolas.

5. (F. 116^v). De confortantibus stomachum, nocentia stomacho.

6. (F. 118-164). Ex libro moralium.

7. (F. 164^v-195^v). Ex AUGUSTINO de verbis Domini. — Extraits.

Papier; 195 feuillets; 0^m,145 × 0^m,098; XVI^e siècle. Reliure moderne, peau de chamois.

1515. (II. 192). — S. ISIDORUS. De summo bono (3).

C'est le traité intitulé *Liber sententiarum*. = *PL.*, t. LXXXIII, col. 537-733. *Des. mutil.* Si iam caveat peccare, qui misericordiam impertitur... (n. 6).

Il y a d'assez grandes lacunes dans le livre III.

Parchemin; 93 feuillets; 0^m,19 × 0^m,115; XII^e siècle. Les 23 derniers feuillets sont intervertis. Au verso de la couverture, il y a la cote *I. theca IX* de l'abbaye de Parc, dont les armoiries ont été grattées sur les deux plats. On lit aussi : *De Ram Lov. Presb. 1837.* Reliure veau brun; au dos, le titre doré : *Isidor. de sum. bono*; tranche rouge.

(1) Voir plus haut, p. 175-78.

(2) Voir plus haut, p. 237 sqq.

(3) Cf. plus haut, p. 279-81.

1516. (8732). — S. ISIDORUS. De summo bono (1).

1. (F. 1^v et 93). Fragment, en flamand. *Inc.* Die seven *pater nostris* (sic) leest in syn doots bedde.

Les feuillets 2-5 sont blancs.

2. (F. 6-93). Liber YSIDORI de summo bono. = *PL.*, t. LXXXIII, col. 537 sqq.

Papier, au filigrane de la tête de bœuf surmontée de la croix; 93 feuillets; 0^m,21 × 0^m,145; XV^e siècle (1483). car on lit f. 93 : *Finitus et scriptus per manus fratris Adriani de Moye, professi huius domus, a prima fundatione quintus in ordine, anno etatis sue lxxvi^o, professionis vero sue liiii^o. Scriptus finitus ut supra anno Domini M^o cccc^o. lxxxi^o circa festum Epyphanie Domini anno quo supra.* F. 1^v, il y a la note : *Pertinet monasterio regularium in Elzeghem prope Aldenardam in flandria.* Reliure ancienne, veau brun estampé, fers; fermoirs en cuivre.

1517. (5321-22). — BEDA. Opera (2).

1. (F. 1-93^v). Liber expositionis BEDE presbiteri de tabernaculo Dei. = *PL.*, t. XCI, col. 393 sqq.

2. (F. 94-157^v). Liber BEDE presbiteri de edificatione templi. = *Ibid.*, col. 735-808.

Parchemin; 157 feuillets; 0^m,22 × 0^m,155; XII^e siècle; quelques initiales en toutes couleurs; signatures *A.-L.* Ce volume provient de l'abbaye de Gembloux, mais tout indice extérieur de cette provenance a disparu, sauf la reliure caractéristique, en veau raciné; au dos, le titre doré : *Expositio Bedae de taberna. Dei;* tranche rouge.

1518. (9668). — S. AMBROSIUS AUTPERTUS. In Apocalypsim.

1. (F. 1-142^v). Liber AUPERTI in Apocalypsim (3).

2. (F. 142^v-143). Catalogue d'une bibliothèque de XLV volumes, probablement de Saint-Laurent, à Liège (4).

Parchemin; 143 feuillets; 0^m,31 × 0^m,24; XII^e siècle. F. 1, il y a la note : *Liber sancti Laurentii in Leodio.* Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré, reproduit sur une étiquette en maroquin rouge : *Ambrosius Autpertus in Apocalypsim XII saec. pars 2^{da}.*

1519. (4164-66). — ALDHELMUS. De virginitate.

1. (F. 1-10^v). Notes diverses sur Aldhelme et les manuscrits de ses œuvres (5).

(1) Voir plus haut, p. 279.

(2) Cf. supra, p. 299.

(3) Cf. *P. L.*, t. LXXXIX, col. 1265.

(4) Ce catalogue a été publié par F. X. KRAUS, *Jahrbücher des Vereins von Alterthumsfreunden im Rheinlande*; cf. G. BECKER, *Catalogi*, n. 60, et TH. GOTTLIEB, *Ueber Mittelalterliche Bibliotheken*, 1890, p. 259.

(5) Ces notes semblent être de l'écriture du P. Rosweyde.

2. (F. 11-74^v). D. ALDHELMUS occidentalium Saxonum episcopi de laudibus virginitatis libri duo. = *PL.*, t. LXXXIX, col. 103 sqq.

3. (F. 75-87). Notes explicatives sur le texte d'Aldhelme.

Les feuillets 87^v-88^v sont blancs. La fin du volume est occupée par un exemplaire de *Sancti Aldhelmi Schireburnensis apud occidentales Saxones episcopi libri duo, ... nunc primum ex membranis m. s. celeberrimi monasterii S. Galli editi*. Dans les marges se trouvent des variantes *ex manuscripto Gandensi et manuscripto Bertiniano*.

Papier; 87 feuillets pour la partie manuscrite; 0^m,20 × 0^m,155; XVII^e siècle. Ce volume provient de l'ancienne bibliothèque des Bollandistes, car f. 1, on en voit la cote ✕ *Ms. 9*. Demi-reliure moderne.

1520. (1650). — ALDHELMUS. De virginitate.

1. (F. 1^v-2). Notes d'ANDRÉ SCHOTT et de JEAN BALEUS sur Aldhelme.

2. (F. 3-57^v). [ALDHELMUS. De virginitate]. = *PL.*, t. LXXXIX, col. 103 sqq.

Le texte est surchargé de gloses interlinéaires en latin et en anglo-saxon, qui ont été publiées par M. HAUPT, *Zeitschrift für deutsches Alterthum*, t. IX, 1853, p. 401-530 (1).

Parchemin; 58 feuillets; 0^m,285 × 0^m,215; X^e siècle. F. 3, il y a la note : *Collegii Soc. Iesu Antwerp. D. P.* Reliure moderne, veau estampé, avec l'inscription en relief : *Regia Bibl. Belgica*.

1521. (9935). — RUPERTUS. Super Iob (2).

1. (F. 1-96^v). Liber Iob = *PL.*, t. CLXVIII, col. 961 sqq.

Entre f. 25 et f. 26, il y a une lacune depuis le milieu du chap. XIV jusqu'au milieu du chap. XV, et au XVII^e siècle f. 25^v, on a ajouté la note : *Quae hic desiderantur, vide in moralib. B. Gregorij lib. xij. cap. 6. post principium usque ad xvij cap. eiusdem libri.*

2. (F. 96^v). Hymne de S^{te} Marie-Madeleine. = *RH.*, n. 10210.

Parchemin; 96 feuillets; 0^m,275 × 0^m,18; XII^e siècle. F. 2, on lit la note : *Liber sancti Laurentii prope Leodium* et f. 96^v : *Liber sancti Laurentij in Leodio . Si quis abstulerit vel furatus fuerit, anathema sit . fiat . fiat . fiat . Amen*. F. 1, il y a la note : *LL, 2-10*. L'estampille rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris, se trouve f. 2 et f. 96^v. Reliure moderne, veau raciné aux filets d'or; au dos, le titre doré, reproduit à l'intérieur sur une étiquette en maroquin rouge : *Rupertus super Iob XII saec.*; plus bas, les armes de Belgique et l'inscription : *Bibl. royale*.

1522. (9739-40). — RUPERTUS TUITIENSIS. Opera.

1. (F. 1^v-102). [RUPERTUS TUITIENSIS]. De glorificatione Trinitatis et processione Spiritus sancti. = *PL.*, t. CLXIX, col. 13 sqq.

(1) Cf. *ibid.*, t. V, p. 204, et MONE, *Quellen und Forschungen*.

(2) Voir plus haut, p. 331.

2. (F. 103-110^v). De incendio et meditatione mortis. = *PL.*, t. CLXX, col. 333 sqq. *Des. mutil.* et venter meus intremuit ad tactum eius.

Parchemin; 110 feuillets; 0^m,27 × 0^m,17; XIII^e siècle; superbes lettrines en toutes couleurs. F. 1, il y a la note: *Liber monasterii sancti Laurentii prope leodium*, et f. 102^v: *Liber sancti Laurentii Leodii. Si quis hunc furatus fuerit, anathema sit, fiat, fiat, amen.* L'estampille rouge, aux faisceaux, de la Bibliothèque nationale de Paris se trouve f. 1^r et f. 110^v. Reliure moderne, veau raciné; au dos, le titre doré, reproduit à l'intérieur sur une étiquette en maroquin rouge: *Rupertus de glorificatione Trinitatis etc.*; en dessous, les armes de Belgique et l'inscription: *Bibl. royale.*

1523. (II. 1089). — GUIBERTUS DE NOVIGENTO (1). De incarnatione contra Iudeos.

1. (F. 1^v-22^v). [GUIBERTUS]. Liber de virgine matre. = *PL.*, t. CLVI, col. 489.

2. (F. 22^v-102). Liber iustificationum ecclesie sub figura vidue Sareplane (2).

3. (F. 102-165^v). [HONORIUS AUGUSTODUNENSIS]. Expositio super cantica canticorum. = *PL.*, t. CLXXII, col. 347 sqq.

4. (F. 165^v-170). Liber magistri HUGONIS de sapientia Christi ad magistrum Gualterium de Mauritania. = *PL.*, t. CLXXVI, col. 845-56.

Parchemin; 170 feuillets; 0^m,312 × 0^m,223; XIII^e siècle; quelques belles lettrines. F. 102, une miniature représente le Christ et l'épouse du cantique des cantiques. F. 1, on lit: *Liber sancte Marie de Alna* (3), et 4670. *Ph[ilippus]*. Ce volume est entré dans la Bibliothèque royale en 1888. Demi-reliure, toile anglaise; au dos, les titres dorés des différents traités.

1524. (11446-47). — EMMO. De vita futura.

1. (F. 1-75). [EMMO. De vita futura] (4).

2. (F. 76-97). Sermo domni Odonis* monachi Cantuarie de muliere chananea (5).

* *cod.*
Dodonis.

Parchemin; 97 feuillets, plus deux de garde; 0^m,195 × 0^m,128; XIII^e siècle; signatures à l'encre rouge 1-x. F. 97, il y a la note: *Liber sancte Marie in parcho dominorum ordinis praemonstratensis. Si quis eum abstulerit, anathema sit, fiat, fiat. Amen.* Au verso du premier feuillet de garde, à la fin du volume, on lit: *Liber sancte Marie in parcho.* Sur le premier plat intérieur de la couverture, il y a

(1) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, qui, part. II, p. 248, appelle cet auteur: *Libertus abbas Tongentinus!*

(2) Cet ouvrage a été publié à Douai en 1634 par Dom Georges Galopin, religieux de Saint-Ghislain. Il s'en conserve un autre exemplaire manuscrit à la Bibliothèque royale sous la cote II. 979; voir plus bas, p. 412, n. 1525.

(3) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 248, *decuria tertia.*

(4) Voir plus haut, p. 306.

(5) Sur Odon de Cantorbéry, voir FABRICIUS-MANSI, *Bibl. lat. med. et inf. act.*, t. V, p. 155-56.

la cote *I. theca X*, les armoiries de l'abbaye de Parc qui se trouvaient sur les deux plats, ont été grattées. Reliure, veau brun; au dos, le titre doré : *Emmo de vita futura*, tranche rouge.

1525. (II. 979). — HONORIUS AUGUSTODUNENSIS. Expositiones super canticum canticorum.

1. (F. 1). Diverses notes et exercices de plume.

2. (F. 1^v-75^v). Vidua Sareptana (1).

3. (F. 75^v-129). [HONORIUS AUGUSTODUNENSIS]. Expositiones super canticum canticorum. = *PL.*, t. CLXII, col. 347 sqq.

F. 129, il y a dans la marge inférieure, une note de GEORGES GALOPIN, au sujet d'un manuscrit de Hautmont contenant aussi la *Vidua Sareptana*.

4. (F. 129-180). Evangelica historia. *Inc.* Designantur quatuor evangeliste quatuor figuris.

5. (F. 180-186^v). Divers extraits.

Parchemin; 186 feuillets; 0^m,329 × 0^m,21; XIII^e siècle; deux colonnes; f. 1^v, une jolie lettrine représente la veuve de Sarepta. Ce manuscrit provient de l'abbaye de Saint-Ghislain (2); plus tard, il a appartenu à Sir Thomas Phillipps, l'ex-libris de sa bibliothèque *Sir T. P. Middle Hill 370* se trouve au verso de la couverture. La Bibliothèque royale a acquis ce volume en 1888 pour fr. 100. Reliure moderne, veau estampé, avec l'inscription en relief : *Regia Bibl. Belgica*.

1526. (21210-14). — HUGO DE SANCTO VICTORE. Opera (3).

1. (F. 1-40). Dialogus fidei christiane. Christianus contra Saracenum. *Inc.* Sic Deus dilexit mundum ut filium suum unigenitum daret... Saracenus ait.

2. (F. 40-58). Speculum peccatorum. = *PL.*, t. XL, col. 983 sqq.

3. (F. 59-93). Apologeticus liber PETRI DAMIANI humilis monachi de contemptu seculi. = *PL.*, t. CXLV, col. 251 sqq.

4. (F. 93-109^v). Liber HUGONIS DE SANCTO VICTORE de contemplacione mundi sive de operibus trium dierum. = *PL.*, t. CLXXVI, col. 811 sqq.

5. (F. 109^v-121). Tractatus brevis et utilis de virtutibus.

6. (F. 121-122). De caritate ex libro HUGONIS DE SANCTO VICTORE.

7. (F. 122-125). [De anima]. — Extrait.

8. (F. 125^v-126^v). Speculum monachorum beati BERNARDI. = *PL.*, t. CLXXXIV, col. 1175.

9. (F. 126^v-127^v). Beatus BERNARDUS abbas. — Extraits.

10. (F. 127^v-133). Notabilia de confessione, de penitencia, de virginibus, de angustia reproborum, de gula, de contricione, de continencia gustus, de amore Dei, de caritate. — Extraits des Pères.

(1) Cf. supra, n. 1523 (II. 1089), p. 411.

(2) Cf. A. PONCELET, S. I., *Les Annales de Saint-Ghislain*, p. 372, cf. p. 246.

(3) Cf. supra, p. 335.

Papier au filigrane de la lettre *P*; 133 feuillets; 0^m,293 × 0^m,20; XV^e siècle; deux colonnes. F. 1 et f. 40, deux miniatures représentant le chrétien et le mahométan, le juste et le pécheur. Demi-reliure moderne; au dos, le titre doré: *Christianus contra Sarracenum et varia historica*.

1527. (3401). — S. BERNARD. Sermons sur le cantique des cantiques traduits en flamand, par LUC VAN EYCK (1).

TITRE. Sermoen dat de hoonichvloeyende doctoor santte Barnaert abt van Clareval des ordens van Cystercien gemaect heeft ... op cantica canticorum (2). *Des. mutil.* (sermo XXX). Nochtans bey gader hebben haar geprofitteert.

Les feuillets 77^v-78 sont blancs, mais il n'y a pas d'interruption dans le texte.

Papier, au filigrane de l'aigle; 128 feuillets, plus cinq de garde; 0^m,30 × 0^m,195; XVI^e siècle, (1590-91) car f. 8, on trouve la date: *Anno 1590*, f. 51^v: *Het eynde vant XIIIj sermoen met Gods hulp ende eer anno 1591. Broeder Lucas van Eyck*; f. 56^v: *Hier eyndet XV^{ste} sermoen, hier broeder Lucas van Eyck anno 1591*; f. 73 et f. 124, il y a le nom propre: *Broeder Luycas van Eyck*, et f. 92^v, on lit: *Broeder Lucas van Eyck heeft dit overgeset totter lattyn in duysen*. Deux colonnes. Au troisième feuillet de garde, en tête, se trouve la note: *Dit boeck heeft gheschreven suster Katherijna van Eyck ende begert nae haer doot die eerverdige paters der societeyt Jesus sullen hebben ende bidt om Gods wil voor haer te willen bidden wt caritaten dat ons lieve heer haer wil barmhertich sijn*, et f. 1, on lit: *Collegii Societatis Iesu Sytvaeducis anno 1626*. B. M. Demi-reliure moderne.

1528. (1950-53). — GUERRICUS. Sermones (3).

1. (F. 1^v-2^v). De domno Guerrico quondam monacho Clarevallis postea abbate Igniaci qui fuit horum sermonum editor devotus. = *PL.*, t. CLXXXV, col. 10.

2. (F. 2^v-3^v). Quanta districtione domnus abbas Guerricus conscientiam suam in obitu suo discussit = *Ibid.*, col. 1059-60.

3. (F. 4-133). Sermones GUERRICI abbatis Igniacensis. = *PL.*, t. CLXXXV, col. 11-214.

4. (F. 133-133^v). Sermo beati BERNARDI de triplici genere cogitationum. = *PL.*, t. CLXXXIII, col. 623-24.

5. (F. 134-134^v). Fragments de vers flamands, " *het boekexemplaar* (?). "

Inc. Die beter es dan al dat goet.

Des. Ocht die dat selve dat hi heeft (4).

(1) Cf. supra, p. 376.

(2) Cf. *PL.*, t. CLXXXIII, col. 785 sqq.

(3) Cf. supra, p. 377.

(4) Ce fragment a été publié par VERWIJS dans *Taal en Letterbode*, t. III, p. 71-75.

Parchemin; 134 feuillets; 0^m,235 × 0^m,173; XV^e siècle, sauf le feuillet 134, qui est du XIV^e. Au verso du premier feuillet de garde, on lit la note : *In Corsendonck prope Turnaudt, canonici regulares sancti Augustini*, et f. 1 : *Liber canonicorum regularium in Korsendonck prope turnout*. L'estampille rouge de la Bibliothèque nationale de Paris, R.F., se trouve f. 1 et f. 133^v. Reliure du XVII^e siècle, veau brun estampé.

1529. (1819). — GUERRICUS. Sermones (1).

C'est la série de sermons publiée *PL.*, t. CLXXXV, col. 11-214.

Parchemin; 114 feuillets; 0^m,25 × 0^m,19; XV^e siècle; deux colonnes. F. 1, on lit la note : *Est liber hic sancti Martini Lovaniensis ex parte fratris Henrici Vranx eiusdem monasterii professi. Hic fuit ex primoribus huius oppidi Lovaniensis professus anno Domini xiiii^vl^{viii} ordine professorum nonus. Obiit vero primus iubilaearius anno xv^{viii}o*; de même, f. 59 : *Est liber hic sancti Martini lovaniensis*, et f. 114^v : *Liber canonicorum regularium callis sancti Martini in lovanio in de grimstraten ex parte fratris Henrici Vranx*.

1530. (518-20). — RICARDUS DE SANCTO VICTORE. Liber exceptio-num (2).

1. (F. 1^v). Index.

2. (F. 2-111^v). [RICARDUS DE SANCTO VICTORE. Liber exceptionum]. = *PL.*, t. CLXXVII, col. 191-284; t. CLXXV, col. 633-750; t. CLXXVII, col. 899-1210.

3. (F. 112-249). Moralizationes super quosdam libros biblie scilicet super Genesim, Exodum, Leviticum, Numerum, Deuteronomium, Iosue, Iudicum, Ruth, primo, secundo et tertio Regum.

Les feuillets 249^v-250^v sont blancs.

4. (F. 251-299). Exceptio quedam satis bona et praedicabilis super passionem Domini. *Inc.* Postquam cena facta fuit circa initium noctis scilicet hora completorii. *Des.* Illi autem abeuntes munierunt sepulcrum signantes lapidem cum custodibus. Deo gratias.

Papier, au filigrane de la lettre *P* et de l'écu de Champagne; de-ci de-là quelques feuillets de parchemin; 299 feuillets, plus deux de garde; 0^m,295 × 0^m,208; XV^e siècle (1459), car on lit f. 299 : *Finitum et completum nec inceptum per me Arnoldum Ghissen* (3) *de prope Buscoducis in Korsendonck monasterio canonicorum regularium sub proba stante nondum tamen ad habitum receptum, anno Domini millesimo quadringentesimo quinquagesimo nono feria sexta infra octavas pasche penultima videlicet die marcii hora quinta post prandium vel circiter*. Deux colonnes, quelques jolies initiales. F. 1^v, il y a la note : *Iste liber pertinet beate Marie virginis in Korsendonck* (4). Reliure ancienne restaurée, veau brun estampé.

(1) Cf. supra, p. 377.

(2) Cf. supra, p. 380.

(3) Cf. J. VAN DEN GHEYN, *L'Obituaire de Corsendonck*, p. 10, 14 janvier, où j'ai eu le tort de lire : *Fratris nostri Arnoldi de Ghissen presbiteri*.

(4) Cf. SANDERUS, *Bibl. belg. ms.*, part. II, p. 67.

1531. (1399-404). — RICARDUS DE SANCTO VICTORE (1). Opera.

1. (F. 1^v). Contenta libri.

2. (F. 2-117). Opus magistri RICHARDI DE SANCTO VICTORE super apocalipsim beati Iohannis apostoli et evangeliste. = *PL.*, t. CXCVI, col. 683 sqq.

3. (F. 117-132). [RICARDUS DE SANCTO VICTORE. De eruditione hominis interioris]. Extraits. = *Ibid.*, col. 1347 (lib. III); col. 1366; col. 1299 sqq. (lib. II).

4. (F. 132-136^v). Tractatus magistri RICHARDI DE SANCTO VICTORE de iudiciaria potestate a Christo Domino apostolis tradita = *Ibid.*, col. 1177 sqq.

5. (F. 136^v-153). Obiectiones magistri Andree secundum quod Iudei solent nobis opponere de nostro Emmanuele. = *Ibid.*, col. 601 sqq.

6. (F. 153-156). Meditatio et devota collatio cum domino Ihesu Christo domini RICHARDI DE SANCTO VICTORE (2). = *PL.*, t. CLVIII, col. 773 sqq.

Parchemin; 156 feuillets, plus cinq de garde; 0^m,285 × 0^m,19; XV^e siècle; deux colonnes; initiales rouges et bleues; ancienne pagination 1-156; signatures *ar-p.*. Reliure ancienne restaurée, veau brun estampé; sur le premier plat, l'étiquette: *Ricardus de sancto Victore super apocalipsim cum diversis ... et tr.*

1532. (14370-71). — ALANUS DE INSULIS. Opera.

1. (F. 1-42^v). ALANUS. De fide catholica contra hereticos, contra Valdenses, contra Iudeos, contra paganos in 4 libris. = *PL.*, t. CCX, col. 305 sqq.

2. (F. 43-60^v). Dyalogus quidam de calamitate regni Francie compositus a magistro ALANO SARTIER (3).

Papier; 60 feuillets; 0^m,20 × 0^m,14; XV^e siècle. La seconde partie du volume a été écrite par Gilles de Crespin, car on lit, f. 60: *Scriptus per me Egidium de Crespin*. Ce volume provient de l'abbaye de Parc, car au verso de la couverture, on lit la cote: *I. theca V*, et les armoiries de l'abbaye ont été grattées sur les deux plats. Reliure veau brun; au dos, le titre doré: *Alanus. De Fide*; tranche rouge.

1533. (3598). — ALANUS DE INSULIS. Opera.

1. (F. 1^v-2). Note sur le traité suivant.

2. (F. 2-86). ALANUS. De planctu nature. = *PL.*, t. CCX, col. 436 sqq.

Papier; 86 feuillets; 0^m,275 × 0^m,202; XVI^e siècle. Reliure du même temps, parchemin rose.

(1) Voir plus haut, p. 380 sqq.

(2) En fait, cette méditation est de S. Anselme.

(3) Sur Alain Chartier et son œuvre, voir G. JORET-DESCLOSIÈRES, *Alain Chartier*, Paris, 1899.

ADDITIONS ET CORRECTIONS

P. 8, l. 10, au sujet de Lambert van den Bulcke, voir B. VAN DORNINCK, *Obituarium monasterii Loci sancti Bernardi*, 1901, p. 73, ad diem 24 maii.

P. 10, n. 27, le *Cordiale quatuor novissimorum* a été souvent publié. Cf. plus haut, p. 318, note 5, à propos du manuscrit **1338** (2475-81).

P. 11, n. 33, la lettre de Florent Radewijns est publiée dans SOMMALIUS, *Ven. viri Thomae Malleoli a Kempis opera omnia*. Duaci, 1625, p. 964-65.

P. 22, l. 3, a fine, au lieu de t. XXVII. lire t. XXVII.

P. 25, l. 6, a fine, au lieu de *Patrum*, lire *Patres*.

P. 26, voir sur le manuscrit 21205-09, notre étude *Un Manuscrit de l'ancienne version du Pasteur d'Hermas* dans LE MUSÉON, Louvain, 1902.

P. 55, nn. 4 et 13, les deux lettres d'Innocent II ont été éditées par CH. RUELENS, *Le Bibliophile belge*, t. VI, 1871, p. 130-32.

P. 151, l. 22, au lieu de **1120** (20760-82), lire **1120** (20760-83).

P. 163, l. 34, au lieu de *PL.*, t. IV, col., lire col. 602.

P. 332, l. 16, au lieu de *Zuphre*, lire *Zuytre*.

P. 332, l. 26, au lieu de t. CLXXX, lire t. CLXX.

P. 332, l. 28, l'office et la messe de S. Josse ont été publiés par les Bollandistes dans *Catal. cod. hagiogr. bibl. reg. Bruxell.*, t. II, p. 350-55.

P. 335, l. 6, au lieu de **1417** (II. 2535), lire **1417** (II. 2533).

P. 349, l. 3, a fine, au lieu de *sancti Rictrudis*, lire *sancte Rictrudis*.

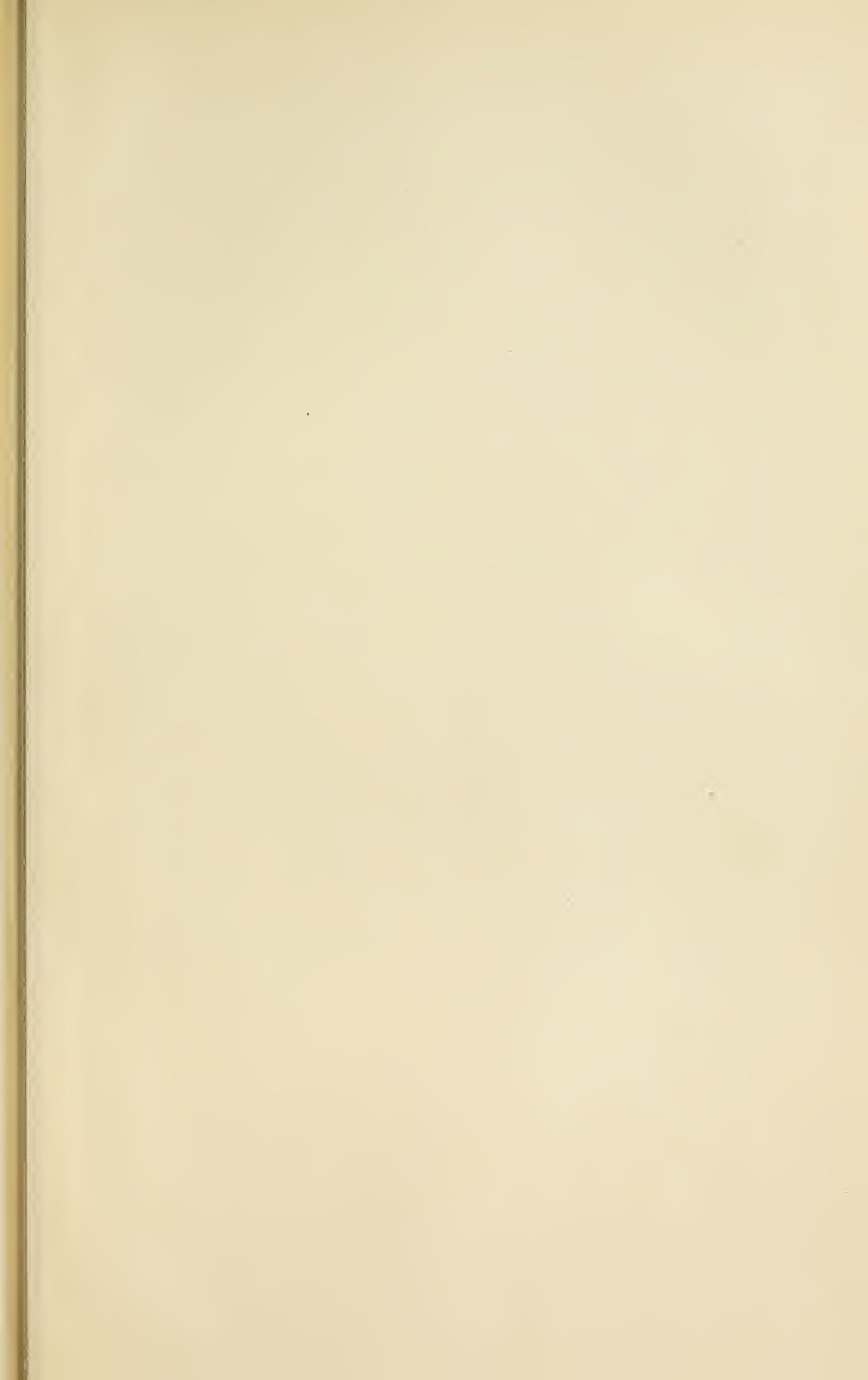
P. 370, n. 14, les vers mnémotechniques sur les saints du calendrier sont connus sous le nom de *Cisioianus*, et ont été publiés diverses fois. Voir ERSCH und GRUBER, *Allgemeine Encyclopädie*, t. XVII p. 295-300; *Anzeiger für Kunde der deutschen Vorzeit*, 1870, p. 280; H. GROTEFEND, *Zeitrechnung des deutschen Mittelalters*, t. I, p. 24; t. II, 2, p. 192.

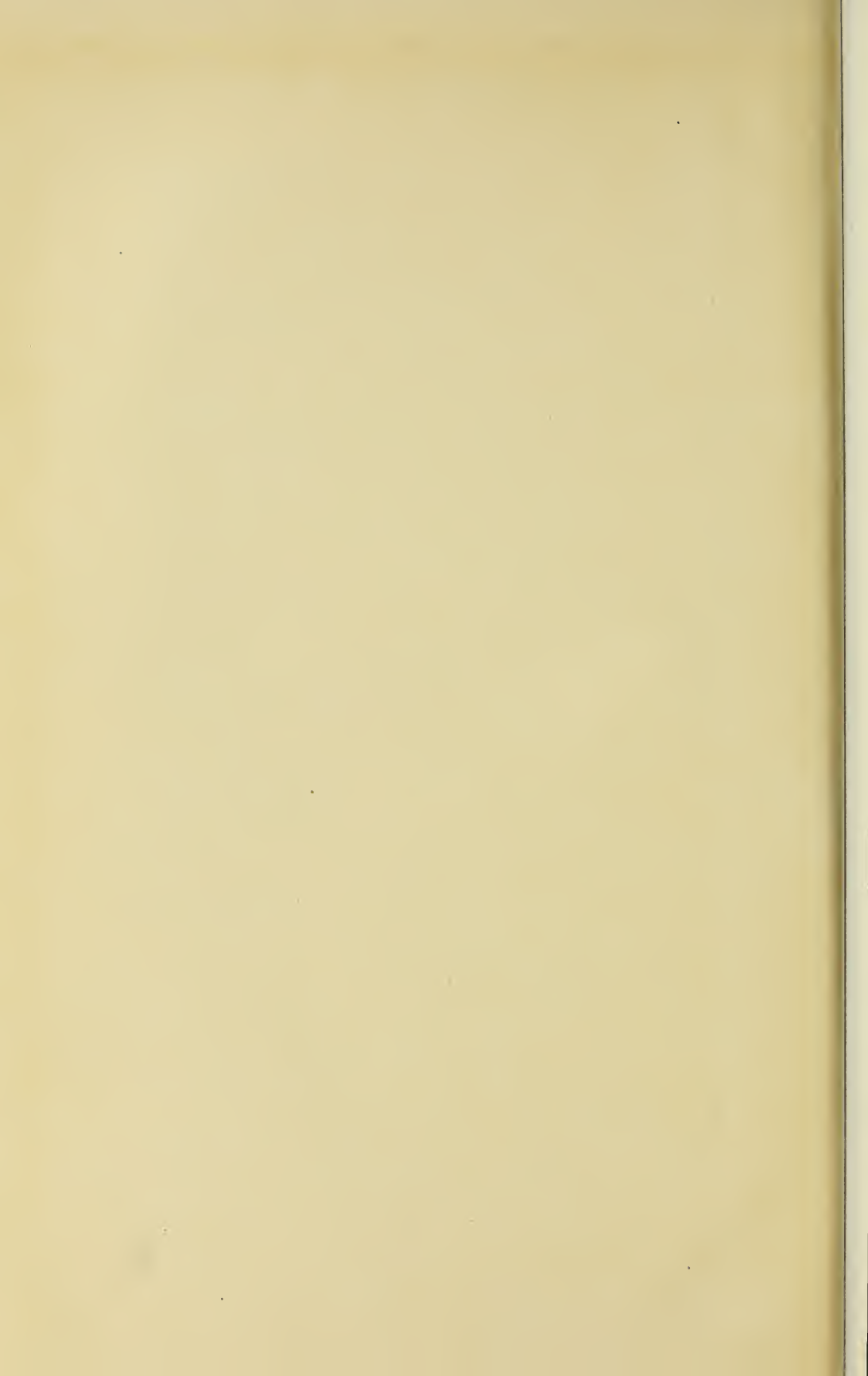
P. 376, au sujet de la version flamande des sermons de S. Bernard sur le cantique des cantiques, voir notre travail intitulé *Pour la Biographie nationale*, dans les ANNALES DE L'ACADÉMIE ROYALE D'ARCHÉOLOGIE DE BELGIQUE, Anvers, 1902.

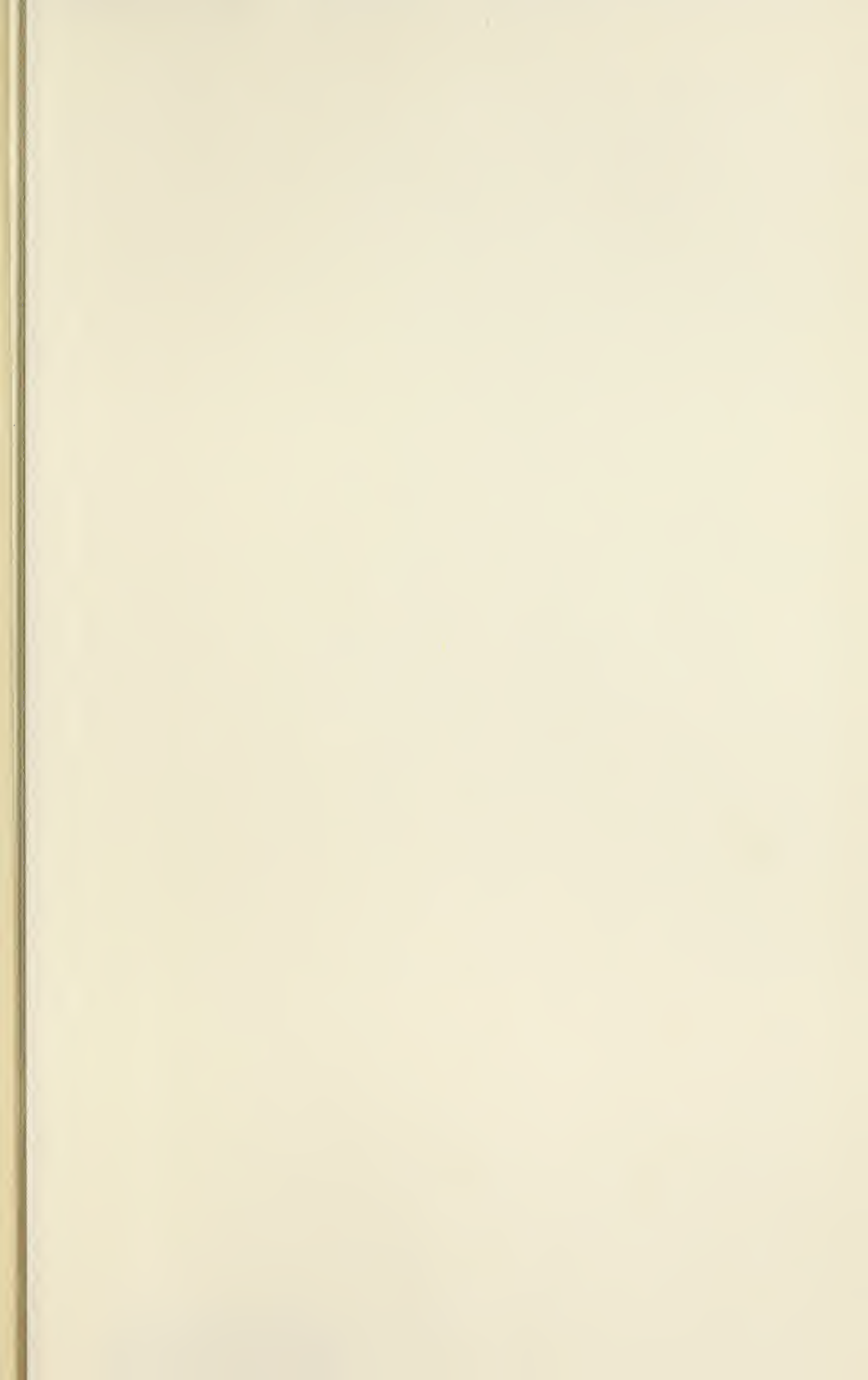
TABLE DES MATIÈRES

| | PAGES |
|-----------------------------------|----------|
| III. PATROLOGIE | 1 |
| Denis l'Aréopagite | 1 |
| Hégésippe | 5 |
| Origène | 6 |
| S. Cyprien | 12 |
| Eusèbe | 21 |
| S. Ephrem | 23 |
| S. Basile | 27 |
| S. Grégoire de Nazianze | 31 |
| S. Grégoire de Nysse | 32 |
| S. Ambroise | 34 |
| Prudence | 46, 407 |
| Rufin | 53 |
| S. Jérôme | 55 |
| S. Augustin | 104, 408 |
| Cassien | 189 |
| Sedulius | 192 |
| S. Cyrille d'Alexandrie | 195 |
| S. Prosper | 198 |
| Isaac d'Antioche | 200 |
| S. Jean Chrysostome | 203 |
| Ennodius | 222 |
| S. Césaire d'Arles | 224 |
| Pélage | 232 |
| Cassiodore | 234 |

| | PAGES |
|--|----------|
| S. Grégoire le Grand | 237, 408 |
| Jean Climaque | 271 |
| S. Isidore | 273, 408 |
| Fortunat | 289 |
| Bède | 292, 409 |
| S. Jean Damascène | 300 |
| Alcuin | 303 |
| Albin | 309 |
| S. Anselme | 311 |
| Sigebert de Gembloux | 323 |
| Odon de Cambrai | 324 |
| Yves de Chartres | 327 |
| Hildebert de Lavardin | 329 |
| Rupert de Deutz | 331, 410 |
| Honorius d'Autun | 333, 412 |
| Hugues de Saint-Victor | 335, 412 |
| S. Bernard | 344, 413 |
| Guerry | 379, 413 |
| Richard de Saint-Victor | 381, 414 |
| S ^{te} Hildegarde | 387 |
| Pierre de Blois | 389 |
| Adam de Saint-Victor | 397 |
| Recueils de patrologie | 399 |
| SUPPLÉMENT | 407 |
| ADDITIONS ET CORRECTIONS | 416 |







84-B12836

GETTY CENTER LIBRARY



3 3125 00109 8025

